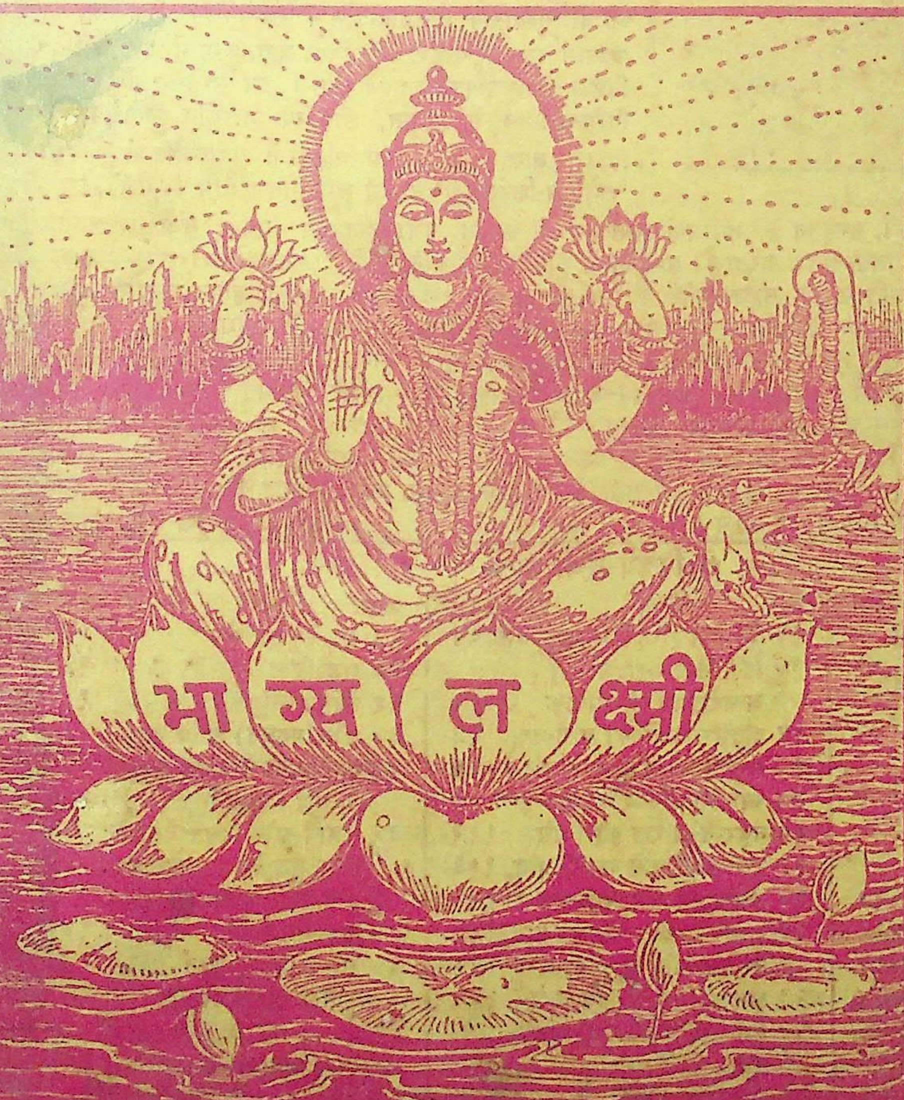
श्रीगणेशायनमः

चिन्ताहरणजंत्री

प्रवर्तक-पं. बचान प्रसाद त्रिपाठी, रमलसम्राट्, तांत्रिक शिरोमणि
कसमण्डा राज्य (सीतापुर)



अर्थात्

भाग्योदय पञ्चाङ्ग

सम्वत्
२०३३-२०३४वि०

सन् १९७७ई.

प्रकाशक- ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर, राजादरवाजा, वाराणसी

मूल्य ४)२५ चार रुपया पचीस पैसा

…द्ध स्व० पं० श्रीबचानप्रसाद त्रिपाठी
ज्योतिष-शिरोमणि, रमल-सम्राट्, कसमण्डा राज्य
प्रवर्तक—चिन्ताहरण जंत्री

अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान-सम्मेलन—

…न जो अधिवेशन सहारनपुर उ०प्र०)में अक्टूबर सन् १९७… हुआ था, उसका संक्षिप्त विवरण सन् १९७५ ई० की 'चि…हरण जंत्री' के पृष्ठ २ पर प्रकाशित किया गया था। इस स…लन का द्वितीय अधिवेशन सन् '७६ की ता० १६ जून से १८ जून तक देहरादून (उ०प्र०)में अत्यन्त सफलता… सानन्द सम्पन्न हुआ। इस त्रिदिवसीय सम्मेलन के प्रथम… का प्रथम अधिवेशन फलित ज्योतिष के अन्तरराष्ट्रीय ख्या… प्राप्त विद्वान् श्री प्रो. बी. वी. रमन, संपादक 'एस्ट्रालॉजि… मैगजीन' के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ था। दूसरे दि… प्रथम अधिवेशन इन पंक्तियों के लेखक के सभापतित्व में… मध्याह्नोत्तर दूसरी सभा मद्रास की सुप्रसिद्ध महिला ज्योति… सुश्री के. एन. सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। त… दिन के प्रथम अधिवेशन के सभापति थे वाराणसी के प्र… ज्योतिषी डॉ. जीवनाथ ओझा तथा मध्याह्नोत्तर की दूसरी… इस सम्मेलन के स्थायी सभापति भारत-प्रसिद्ध ज्योतिष-वि… श्री डी. सुब्बाराव के सभापतित्व में सञ्चालित होकर अ… उल्लास एवं पारस्परिक स्नेहसिक्त वातावरण में इस ज्यो…विज्ञान-सम्मेलन का समापन हुआ। इस सम्मेलन में दे… विभिन्न प्रान्तों से समागत, त्रिस्कन्ध भारतीय ज्योतिष… विभिन्न शाखाओं के विशेषज्ञ विद्वानों ने सर्वसम्मति से मु… 'ज्योतिष-शिरोमणि' की जो सम्मानित उपाधि प्रदान की, … लिए मैं उन सभी सम्मान्य विद्वानों, सम्मेलन के संयोजकों तथा सभा में समवेत सभी सम्माननीया बहनों तथा आदर… बन्धुओं के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। सम्मेलन से काशी वापस आने पर मेरा स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बिग… गया और समुचित चिकित्सा के प्रति अपनी सहज उपेक्षावृत्ति के कारण अंततः मैं अत्यन्त अशक्त होकर रुग्ण-शैय्या… आश्रित हो गया। इस जंत्री के प्रकाशक-फर्म बा. ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स के वरिष्ठ संचालक श्रीगणेशप्रसादजी गुप्त… मेरे साथ उक्त सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे; उनकी तथा मेरी हार्दिक इच्छा रही कि सम्मेलन में समागत समस्त वि… का चित्र-परिचय, भाषण, लेखादि की एक 'स्मारिका' ज्योतिष-जगत के उपकारार्थ यथाशीघ्र प्रकाशित की जाय तथा … सम्मेलन का विशद विवरण भी इस जंत्री में छापा जाय; किन्तु मेरे स्वास्थ्य की दशा चिंताजनक हो जाने के कारण… सब कार्य अबतक नहीं हो पाया, जिसके लिये हम तथा जंत्री के प्रकाशक महोदय समस्त ज्योतिष-जगत से खेदपूर्वक क्ष…प्रार्थी हैं। अब मेरा स्वास्थ्य क्रमशः सुधर रहा है और हमें आशा है कि सम्मेलन तथा ज्योतिष-जगत को हमसे जो अपे… हैं, उन्हें हम विश्वनाथजी की कृपा से पुरी कर सकेंगे।

—जगजीवनदास गुप्त, संप…

✻ विषय-सूची ✻

* नित्य-प्रार्थना *

मनुष्य अपने सच्चिदानन्द स्वरूप को भूल कर संसार में अनेक प्रकार के कष्ट सहता है और अविद्या के कालपाश में आबद्ध होकर असंख्य यन्त्रणाएँ भोगता रहता है। प्राणीमात्र को उसके दुःख से मुक्ति दिलानेवाली अमोघ शक्ति केवल "प्रार्थना" है जिसके द्वारा वह आत्म-शान्ति प्राप्त करता तथा अपने हृदयस्थ चेतन-केन्द्र में अवस्थित होकर चिर-काल के लिए मुक्त हो जाता है। इसलिए जो व्यक्ति चिन्ताओं से छुटकारा और अपने क्लेशों से मुक्ति चाहता है, लोक में सुख-समृद्धि अथवा भगवत्-प्राप्ति का अभिलाषी है, वह इस प्रार्थना को प्रतिदिन किया करे।

हिन्दूमात्रको निम्नलिखित प्रार्थना नित्य सायंकाल को सूर्यास्तके समय कर लेनी चाहिए। निश्चित समय पर, जिस स्थान पर जो जहाँ उपस्थित हों, उन्हें सात मिनट की प्रार्थनाका नियम अवश्य पूरा कर लेना चाहिए। सभी जातिकी स्त्री, पुरुष तथा बालकों के लिए प्रार्थना का व्रत लेना सब प्रकार से कल्याणकारी है। (पूज्यपाद महामना मालवीयजी)

साथ ही प्रत्येक पुरोहित, पुजारी का कर्त्तव्य है कि इस प्रार्थना का घर-घर में व्रत धारण करायें, व्यापक प्रचार करें। विशेष जानकारी के लिए 'प्रार्थना-समिति', ब्रह्मचर्य-आश्रम, नैमिषारण्य (सीतापुर) उ.प्र. को लिखें। प्रार्थना यह है—

* प्रार्थना *

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता। गो-द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु-सुता प्रिय-कंता ॥
पालन सुर-धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई। जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ॥
जय जय अविनासी सब घटवासी व्यापक परमानंदा। अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनि बृंदा। निसि बासर ध्यावहिं गुन-गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा। सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा ॥
सो भव-भय-भंजन मुनि-मन-रंजन गंजन बिपति बरूथा। मन बच क्रम बानी छाँडि सयानी सरन सकल सुरजूथा ॥
सारद श्रुति-सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना। जेहि दीन पियारे बेद पुकारे द्रवौ सो श्रीभगवाना ॥
भव-बारिधि मंदर सब बिधि सुन्दर गुनमंदिर सुख-पुंजा। मुनि सिद्धि सकल सुर परम भयातुर नमत नाथपद-कंजा ॥

* श्रीप्रयागराज में कुम्भमहापर्व *

चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि (अथर्ववेद ४।३४।७) पूर्णः कुम्भोऽधिकाल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधानु सन्तः। स इमा विश्वा भुवनानि कालं तमाहु परमे व्योमन्॥ (अथर्ववेद १९।५३।३) प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जयिनी(अवन्तिका) और नासिक इन चारों में-से प्रत्येक स्थान पर प्रायः हर बारहवें वर्ष विशिष्ठ ग्रहयोगवशात् कुम्भ महापर्व पड़ा करता है—देवानां द्वादशाहोभिर्मर्त्यैर्द्वादशवत्सरैः। जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादश संख्यया॥ (शंकर-संहिता) इस परम पवित्र पर्व का उल्लेख वेदों तक में मिलने से सिद्ध है कि यह वैदिक सनातन धर्म का अत्यन्त प्राचीन महान् पर्व है। ऋग्वेद का एक मंत्र है—जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदन्न सिन्धून्। बिभेद गिरिं नवमिन्न कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः॥ अर्थात् कुम्भपर्व में जानेवाला व्यक्ति स्वयं अपने में फलरूप से प्राप्त होनेवाले स्नान-दान होमादि सत्कर्मों से काष्ठ काटनेवाले कुठारादि की भाँति अपने पापों का प्रक्षालन करता है। प्रयागराजमें कुम्भपर्व कब पड़ता है, इसके विषय में शास्त्र-वचन है—"मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे चातिदुर्लभे॥" इस वचनानुसार विगत सन् १८८२ ई० से सन् १९६६ ई० तक प्रत्येक १२ वर्ष के बाद प्रयागराज में कुम्भपव होता रहा है एवं प्रत्येक कुम्भ के अवसर पर माघी अमावस्या को स्पष्टगुरु वृषराशि में था; विगत सन् १९६६ ई० के कुम्भपर्व पर भी दृश्यगणित के अलावा सबीज सूर्यसिद्धान्तीय एवं मकरन्दीय-गणितानुसार भी स्पष्ट गुरु वृष में था; वस्तुतः मकरन्द की रचना सूर्यसिद्धान्त में बीज-संस्कार देकर की गई है; उपर्युक्त शंकर-संहिता के वचन नुसार विगत सन् १९६६ ई० के कुम्भ के १२ वर्ष बाद अब प्रयागराज मे अगला कुम्भपर्व सन् १९७८ ई० में होना चाहिए था; किन्तु उस वर्ष की माघ-अमावस्या को चंद्र-सूर्य के मकरस्थ रहने पर स्पष्टगुरु वृषराशि मे न होकर मिथुन राशि में रहेगा। सन् १९७७ ई० की माघी अमावस्या को मकरस्थ सू. चं. के योग मे मध्यम गुरु यद्यपि वृषराशि में ही रहेगा; किन्तु स्पष्ट गत्या वह मेष के २७°।४०'।१५" पर रहेगा। उक्त माघ की अमावस्या को मिथुन के गुरु मे प्रयागराज में कुम्भपर्व को मान्यता प्रदान करने-वाला कोई शास्त्रीय वचन नहीं मिलता, प्रत्युत् सौरवर्षमानापेक्षा गुरु का वर्षमान ४·२३ दिन कम अर्थात् सूर्य के द्वादश-भगणकाल की अपेक्षा गुरु का भगणकाल ५०·५ दिन कम होने के कारण गत ८ कुम्भपर्वों के बाद यह ९वाँ कुम्भपर्व १२ वर्ष के बजाय ११ वर्ष पर माघी अमावस्या को मेषस्थ गुरु में मनाने का आदेश शास्त्रकारों ने दिया है; यथा—माघे मेषगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ। अमावस्या तदा योगः कुम्भाख्य तीर्थनायके॥ मकरे च दिवानाथे अजगे च बृहस्पतौ। कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यतिदुर्लभः॥ यह योग सन् १९७७ ई० में सं. २०३३ की माघ कृष्ण अमावस्या बुधवार को पड़ रहा है। कुम्भपर्व पर त्रिवेणी-स्नान और त्रिवेणी-जलपान करने से समस्त पापों से मुक्ति होती है और कुल की सात पीढ़ियाँ पवित्र होती हैं; यथा—"कुम्भे स्नात्वा च पीत्वा च त्रिवेण्यां च युधिष्ठिरं। सर्वपापविनिर्मुक्तः पुनात्यासप्तमं कुलम्॥ श्रीप्रयागराज में कुम्भमहापर्व के ३ स्नान होते हैं जिनकी तिथि तारीखें नीचे दी जाती रही हैं—१—प्रथम स्नान—श्रीसंवत् २०३३ माघ कृष्ण अष्टमी गुरुवार को मकर-संक्रान्ति होगी, उसके द्वितीय दिन नवमी शुक्रवार को मकर-संक्रान्ति के पुण्यकाल में ता. १४ जनवरी सन् १९७७ ई० को कुम्भमहापर्व का प्रथम स्नान होगा। २—द्वितीय मुख्य स्नान—माघ कृष्ण ३० बुधवार मौनी अमावस्या ता. १९ जनवरी '७७ को होगा। ३—तृतीय स्नान—माघ शुक्ल ५ सोमवार बसन्त-पञ्चमी ता. २४ जनवरी'७७ को होगा। उपर्युक्त कुम्भ-स्नान में सर्वप्रथम स्नान निरञ्जनी अखाड़े का, द्वितीय स्नान निर्वाणी और तृतीय स्नान जूना अखाड़े का होता है। अनेक धर्मप्राण महानुभाव तो पूरे माघमास भर

तीर्थराज प्रयाग में कल्पवास कर कुम्भ-महापर्व के उपर्युक्त तीनों स्नान का अक्षय पुण्य-लाभ करते हैं। इस सुदुर्लभ अवसर पर देश के कोने-कोने एवं गिरि-कन्दराओं से सिद्ध महात्मागण, महामण्डलेश्वर, सर्व अखाड़ों के महन्तगण, नागा वैरागी वैष्णवादि संप्रदायों के धर्माचार्य एवं पूज्य साधु-सन्तों का अपूर्व समागम होता तथा विविध यज्ञानुष्ठान, भगवत्कथा प्रवचन कीर्तनादि का आयोजन होता है जिसमें अधिकाधिक जनता को सम्मिलित होकर तीर्थ-सेवन के नियमों का पूर्णतया पालन करते हुए अक्षय पुण्यार्जन करना चाहिए।

❁ पुरुषोत्तम मास के कर्तव्य ❁

संवत् २०३४ में अधिक मास 'श्रावण' है। अधिक मास को 'मलमास' और 'पुरुषोत्तम मास' भी कहते हैं। 'मलमास' के रूप में निन्दित इस मास को भगवान पुरुषोत्तम ने अपना नाम देकर कहा है कि अब मैं इस मास का स्वामी हो गया हूँ और इसके नाम से सारा जगत पवित्र होगा। मेरी साहश्यता प्राप्त कर यह मास अन्य सब मासों का अधिपति होगा। यह जगत्पूज्य एवं जगत्वंदनीय होगा और इसकी पूजा करनेवाले सब लोगों के दारिद्रय का यह नाश करनेवाला होगा। पुरुषोत्तम मास में नियम से रहकर भगवान् की विधिपूर्वक पूजा करने से भगवान अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। भगवान् का यह पूजन करनेवाला यहाँ सब प्रकार के सुख भोगकर मृत्यु के बाद भगवान् के दिव्य लोक में वास करता है। महर्षि वाल्मीकि ने पुरुषोत्तम मास के नियमों के सम्बन्ध में कहा है कि इस मास में गेहूँ, चावल, सफेद धान, मूँग, जौ, तिल, मटर, बथुआ, शहतूत, पालक, ककड़ी, केला, घी, कटहल, आम, हर्रे, पीपल, जीरा, सोंठ, इमली, सुपारी, आंवला सेंधा नमक आदि हविष्यान्न का भोजन करना चाहिये। सब प्रकार के अभक्ष्य मांस, शहद, चावल का मांड़ चौलाई उड़द, राई, प्याज, लहसुन, नागरमोथा, नशे की चीजें, छत्री, गाजर, मूली, दाल, तिल का तेल, दूषित अन्न का त्याग करना चाहिये। किसी प्राणी से द्रोह नहीं करना चाहिये। पर-स्त्री का भूलकर भी सेवन नहीं करना चाहिये। देवता, वेद, ब्राह्मण, गुरु, गाय, साधु-संन्यासी, स्त्री और बड़े लोगों की निन्दा नहीं करनी चाहिये। ताँबे के वर्तन में गाय का दूध, चमड़े में रक्खा हुआ पानी और केवल अपने लिए पकाया हुआ अन्न दूषित माना गया है। अतएव इनका त्याग करना चाहिए। हो सके तो पूरे मास जमीन पर सोना और एक ही समय भोजन करना चाहिये। प्रातःकाल सूर्योदय से पहले अवश्य उठ जाना चाहिए। शौच, स्नान, सन्ध्या आदि अपने-अपने अधिकारानुसार नित्यकर्म कर भगवान का पूजन-भजन करना चाहिए। पुरुषोत्तम मास में श्रीमद्भागवत का पाठ करना महान् पुण्यदायक है। एक लाख तुलसी-पत्र से शालिग्राम भगवान् का पूजन करने से अनन्त पुण्य होता है। पुरुषोत्तम मास में 'गोवर्द्धनधरं बन्दे गोपालं गोपरूपिणम्। गोकुलोत्सवमीशानं गोविन्दं गोपिकाप्रियम्।' इस मन्त्र का एक महीने तक भक्तिपूर्वक बार-बार जप करने से पुरुषोत्तम भगवान् की प्राप्ति होती है। मन्त्र जपते समय श्रीराधिकाजी सहित द्विभुज, मुरलीधर, पीत-वस्त्रधारी श्रीपुरुषोत्तम भगवान् का ध्यान करना चाहिए।

श्रद्धा, भक्तिपूर्वक भगवान् का नाम-जप, स्थान-स्थान में भगवन्नाम-कीर्तन, गो-रक्षा के लिए दान, विधवा, अनाथ, असहाय लोगों की निष्काम सेवा तथा धर्माचरण का दृढ़तापूर्वक पालन इस मास में विशेषरूप से करना चाहिए, जिससे अपना और विश्व का सर्वविध कल्याण हो।

✻ सरकारी छुट्टियाँ सन् १९७७ ई० ✻

क्र. सं.	छुट्टी	दिन सं.	तारीख	वार
१	नववर्ष-दिवस	१	१ जनवरी	शनिवार
२	*मुहर्रम (ताजिया)	१	१ ,,	शनिवार
३	मकर-संक्रान्ति	१	१४ ,,	शुक्रवार
४	मौनी अमावस्या	१	१९ ,,	बुधवार
५	बसन्त-पंचमी	१	२४ ,,	सोमवार
६	भारतीय गणतंत्र-दिवस	१	२६ ,,	बुधवार
७	सन्त रविदास-जयंती	१	४ फरवरी	शुक्रवार
८	*चेहल्लुम	१	९ ,,	बुधवार
९	महाशिवरात्रि	१	१६ ,,	बुधवार
१०	*बारावफात (मिलादुवन्नवी)	१	३ मार्च	गुरुवार
११	होली	२	५-६ ,,	शनि. रविवार
१२	श्रीरामनवमी	१	२९ ,,	मंगलवार
१३	*ग्यारहवीं शरीफ	१	१ अप्रैल	शुक्रवार
१४	महावीर-जयंती	१	२ ,,	शनिवार
१५	गुडफ्राइडे	१	८ ,,	शुक्रवार
१६	वैशाखी	१	१३ ,,	बुधवार
१७	सूर्य-ग्रहण	१	१८ ,,	सोमवार
१८	बुद्ध-पूर्णिमा	१	३ मई	मंगलवार
१९	बैंकोंकी अर्धवार्षिकलेखाबंदी	१	३० जून	गुरुवार
२०	*शबेबरात	१	१ अगस्त	सोमवार
२१	स्वतंत्रता-दिवस	१	१५ ,,	सोमवार
२२	*रमजान (रोजा)	१	१७ ,,	बुधवार
२३	श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी	१	५ सितम्बर	सोमवार
२४	*जमातुलविदा (रमजानका आखरी जुम्मा)	१	९ ,,	शुक्रवार
२५	*ईद-उल-फितर	१	१६ ,,	शुक्रवार
२६	विश्वकर्मा-पूजा	१	१७ ,,	शनिवार
२७	महात्मा गांधी-जयंती	१	२ अक्टूबर	रविवार
२८	पितृ-विसर्जन (महालया अमावस्या)	१	१२ ,,	बुधवार
२९	दशहरा (विजय दशमी)	१	२१ ,,	शुक्रवार
३०	भरत-मिलाप	१	२२ ,,	शनिवार
३१	दीपावली	३	१०,११,१२ नव.	गु.शु.श.
३२	*ईदुजुहा (बकरीद)	१	२२ ,,	मंगलवार
३३	कार्तिकी पूर्णिमा एवं गुरुनानक जन्म-दिवस	१	२५ ,,	शुक्रवार
३४	गुरुतेगबहादुर बलिदान-दि.	१	१४ दिसम्बर	बुधवार
३५	*मुहर्रम (ताजिया)	१	२१ ,,	बुधवार
३६	बड़ा-दिन	१	२५ ,,	रविवार
३७	बैंकोंकी वार्षिक लेखाबंदी	१	३१ ,,	शनिवार

नोट—*१. इन मुसलिम छुट्टियोंकी तारीख जिलाधीश स्थानीय चंद्र-दर्शन के अनुसार फिर से निर्धारित कर सकते हैं;
२. उपर्युक्त छुट्टियों को सरकारी गजट से मिला लेना चाहिए। किसी भूल का उत्तरदायित्व संपादक पर नहीं है।

❀ संवत्सर का फल ❀

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्त जगदाधार-मूर्तये ब्रह्मणे नमः ।।
तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः । प्रयान्ति तत् प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात् ।। (सूर्य-सिद्धान्त स्प.।।१४।।)
यस्मिन्पक्षे यत्रकाले येन दृग्गणितैक्यकम् । दृश्यते तेन पक्षेणकुर्यातिथ्यादि निर्णयम् ।। (महर्षि वशिष्ठ)

नवीनधारामवलम्ब्य चिन्ताहन्त्रीं नवां दृग्गणितैक्यसिद्धाम् ।
संभूय जन्त्रीममलां चकार बचान् प्रसादौ जगजीवनेन ।।
श्रेयसा-प्रेयसा चेयं नित्यं लोकहिते रता । शास्त्रमार्गमनुसृत्य ज्योतिः चक्रे विराजते ।।
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद ध्वजारोपणं, स्नानं मंगलमाचरेद् द्विजवरैः साकं सुपूजोत्सवः ।
देवानां गुरुयोषितां च विभवाऽलङ्कारवस्त्रादिभिः सम्पूज्यो गणकः फलं च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ।।
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समादाय चूर्णं कृत्वा विधानतः ।।
मरीचि लवणं हिंगु जीरकेण च संयुतम्, अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये ।।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन संवत्सर का आरम्भ होता है । इस दिन सबको चाहिये कि अपने घर अपने-अपने सम्प्रदायानुसार अथवा सन '५७ की जंत्री में जैसा चित्र छपा था, वैसा ध्वज लगावें । तोरणादि से गृह सुशोभित करें । मंगल-स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु और धर्म-ध्वजा की पूजा करें और उसके नीचे पंक्तिबद्ध बैठकर सभी एक स्वर से धर्म-ध्वजा-गीत का गायन करें । स्त्रियाँ शिशु आदि वस्त्राभूषणादि परिधान धारण कर उत्सव मनायें । ज्योतिषीजी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें ।

प्रातःकाल कटुनिम्ब की कोमल पत्तियाँ और फूल लावें । उनमें कालीमिर्च, हींग, सेंधा नमक, अजवाइन, जीरा और शक्कर मिलाकर चूर्ण बनायें ; कुछ इमली भी मिलायें और उसे भक्षण करें । इसके प्रयोग से अनेक रोगों का शमन होता है ।

पञ्चांगस्थ श्रीगणेश, ब्राह्मण और ज्योतिषीजी की पूजा और दक्षिणादि से सत्कार करें । याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें । मिष्ठान्न आदि भोजन करायें । गायन-वादन, कथा-श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें । गृहस्थों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ का दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है ।

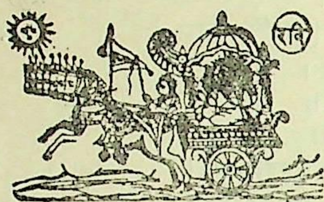
सृष्टि कालक्रम—सृष्टि (समस्त जगत) की उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण ब्रह्माजी हैं । ४ युग एक हजार बार निकल जाने पर ब्रह्माजी का एक दिन होता है ; इन्हीं दिनों के मान से उनकी आयु एक सौ वर्ष की होती है । इस समय ब्रह्माजी की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर ५१वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है और इस दिन की १३ घटी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिविपल बीत चुके हैं । मनुष्य-मान से ब्रह्माजी की आयु का विस्तार इस प्रकार है—चार युगों का एक महायुग होता है । उसकी सौर-मान से वर्ष-संख्या ४३,२०,००० है । इस प्रकार ब्रह्मा का एक दिन, एक हजार महायुगों का होता है । ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें-से १ स्वायंभुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष ये ६ मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चालू है ; उसमें भी २७ महायुग गत होकर २८वें महायुग के ३ युग सतयुग, त्रेता, द्वापर व्यतीत हो गये हैं और यह २८वाँ कलियुग है ।

सतयुग—की उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को हुई । उसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की थी । इसमें भगवान् के १ मत्स्य, २ कच्छप, ३ वराह और ४ नृसिंह ये चार अवतार हुए । **त्रेतायुग**—वैशाख शुक्ल ३ सोमवार को आरम्भ हुआ । इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष की रही । इसमें भगवान के वामन, परशुराम, रामचन्द्र ये तीन अवतार हुए । **द्वापरयुग**—का आरम्भ माघ कृष्ण ३० शुक्रवार को हुआ था । इसकी आयु ८,६४,००० वर्ष की थी । इसमें भगवान के श्रीकृष्ण, बलदेव ये दो अवतार हुए । **कलियुग**—का आरम्भ भाद्रपद कृष्ण १३ रविवार की अर्धरात्रि में हुआ । इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष की है । इसमें भगवान के अवतार श्रीबुद्ध और श्रीकल्कि निष्कलंक हैं जिसमें श्रीबुद्धावतार तो हो चुका ; कल्कि-अवतार कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहने पर सम्भल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा । इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर विलुप्त धर्म की पुनः संस्थापना होगी । कलियुग के ५०७८ वर्ष बीत चुके; अब ४,२६,९२२ वर्ष शेष रहे । कल्प के आरम्भ से १९,७,२९,४९,०७७ वर्ष, सृष्टि के आरम्भ से १,९५,५८,८५,-७८ वर्ष, विक्रम-राज्यकालीन संवत्सर से २०३४ वर्ष, शकारम्भ से १८९९ वर्ष, मुक्त हुए हैं । (कलिसंवत् और शके की भक्त संख्या ही वर्तमान कलियुगाब्द और शकाब्द कहलाती है ।) जंत्री में तिथ्यादि यावत् गणित सूक्ष्म दृग्गणितानुसार दिया गया है । यह बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय सिद्ध हुआ है ; अतः आगे भी जंत्री इसी गणितानुसार निर्मित होगी । गुरुमान से चान्द्र वर्षादि में 'प्रमोद' नामक संवत्सर प्रवर्तित है जिसके मेषार्ककालीन भक्त सौर मासादि ६।१२।५०।११ एवं भोग्य मासादि ५।१७।९।४९ हैं ; तदनुसार आश्विन कृष्ण ७ मंगलवार को काशी में इष्ट घट्यादि २।२४।४५ पर अर्थात् ता० ४ अक्टूबर १९७७ को भा. प्र. समय (स्टें. टा.) से घं. ६ मि. ५२ से. १३ बजे सौरपक्षीय मध्यम गुरु के मिथुन राशि-चारवशात 'प्रजापति' नामक संवत्सरारम्भ होगा । * वर्षादि ता० १-१-१९७७ ई० में स्वस्वीकृत चित्रापक्षीय दृश्य स्पष्ट अयनांश २३°-३२'-१७'' है । वार्षिक अयन-गति ५०''·२७ और सूक्ष्म शुद्ध निरयण सार वर्षमान ३६५ दि.६ घं.९ मि. ९·७ से. है । संवत्सर का फल अग्रिमोक्त है :—

* वर्ष-शुद्धि-विचारार्थ सन् १९६६ ई० की जंत्री अथवा "ज्योतिष-रहस्य" द्वितीय खण्ड पृष्ठ ३० देखिये ।

॥ सम्वत्सर का फल ॥

सम्वत्सर का फल--इस विक्रमीय सम्वत्सर २०३४ का नाम 'प्रमोद' है। यह प्रभवादि षष्ठि-सम्वत्सर-चक्र का और ब्रह्मबीसी का चौथा सम्वत्सर है। इसका स्वामी सूर्य है। वर्षा अल्प होगी। वर्षफल मध्यम होगा। कहीं छत्र-भंग हो।





पर्वतीय तलेटी में प्रजावृद्धि में न्यूनता होगी। तैलंगदेश में राज-विग्रह होगा। कोई देश में सत्ता परिवर्तन, देशोद्वास होगा। म्लेच्छ वर्ण का ह्रास होगा। चैत्र वैशाख में मँहगाई रहे। ज्येष्ठ में रोग-पीड़ा होगी। आषाढ़ श्रावण भाद्रपद में वर्षा अल्प होगी। आश्विन में कहीं कुछ वर्षा होगी। कार्तिक आदि चार महीनों में सब रसकस तेज होंगे। फाल्गुन में मध्यम फल होगा। राजासूर्य, मंत्री बुध में परस्पर सम मैत्री है। अतः इस सम्वत् में मैत्री-संचार में वृद्धि होगी। राज-प्रजा में प्रसन्नता बनी रहेगी।

१. **राजा सूर्य हैं**--अतः मेघ अल्प वर्षा करेंगे। देश में अन्नोत्पादन साधारण होगा। फलदार वृक्षों में फल भी कम लगेंगे। गायों के दूध कम हो। पशुओं में बिमारी फैले। चोर-डाकुओं एवं अग्निकांडों से जनता त्रस्त होगी। प्रशासन में कठोरता, उग्रता आयेगी। किसी बड़े नेता का अवसान होगा। पश्चिमी भाग में महाकष्ट, युद्धादि का योग है। कोई भू-खंड (देश) नष्ट भी हो जायेगा। वर्षान्त में ओला-पाला से कृषि में हानि होगी। व्यापारियों को जौ गेहूं चावल आदि वैशाख में क्रय करके श्रावण भादों में विक्रय करने से लाभ होगा। लाल रंग की वस्तुएँ खरीद कर रखने से भी लाभ होगा।

२. **मंत्री बुध हैं**--अतः स्त्रियां अपने पतियों के साथ बड़े आनन्दपूर्वक भोग-विलास में निरत होंगी। पृथ्वी पर बादल-वर्षा बहुत होगी। धन-धान्य की वृद्धि होगी। व्यापार में अच्छी घटा-बढ़ी चलेगी जिससे व्यापारियों को लाभ होगा। जौ चना मसूर आदि में तेजी रहे। किराना की वस्तुओं में मंदी हो।

३. **सस्येश (पूर्वधान्य) खरीफ के स्वामी शनि हैं**--अतः जनवर्ग राष्ट्रनेताओं से शोषित, पीड़ित और क्षुब्ध रहे एवं पारस्परिक विग्रह हो। राज-प्रजा संघर्ष, रोग-पीड़ा में वृद्धि एवं जनोपद्रव हों। दुष्टजनों का प्रभाव बढ़े। पृथ्वी पर धन-धान्य तृण आदि की कमी हो। श्रमिकों की शरारत से उत्पादन में कमी हो। जनता व्यर्थ के वाद-विवाद में लिप्त रहे।

४. **धान्येश (पश्चात् धान्य) रबी के स्वामी गुरु हैं**--अतः देश में सर्वत्र विप्रगण यजन-याजन और ब्रह्मविचार धर्मप्रचार में तत्पर रहें। मंगल-कार्य अधिक हों। कृषि-विकास एवं भूमि-सुधार कार्य में राज्य और जनता के सहयोग से अच्छी प्रगति होगी। जौ गेहूं चावल मूंग उड़द बकुनी तथा कोदो आदि अन्न की पैदावार में अधिकता और सस्ताई हो।

५. **मेघेश मंगल हैं**--अतः कहीं घोर वर्षा, कहीं अल्प वृष्टि हो। विप्रगण वेद-विचार से विहीन हों। जनता अनेक कष्टों से युक्त रहे। गर्मी बहुत अधिक पड़ेगी। जनवर्ग में अधार्मिक भावना और क्रोध कलह की वृद्धि होगी। सरकारी उद्योगों में अपव्यय की अधिकता से देश की आर्थिक स्थिति कमजोर हो। अनाज की पैदावार कम होगी और विदेशों से अन्नायात करना होगा। कृषि-कार्यों में अनेक विघ्न-बाधायें लगी रहें।

६. **रसेश चन्द्र हैं**--अतः मनुष्यों में कामवासना और नवीन युवतियों को प्राप्त करने की इच्छा बढ़ेगी। वर्षा अच्छी होने से रस-पदार्थ और धान्यादि का उत्पादन उत्तम होगा। गुड़ खांड़ आदि रसपदार्थ कभी तेज, कभी मंदे होंगे। विवाहादि शुभ कार्य अधिक होंगे।

७. **नीरेश शनि हैं**--अतः कच्चा लोहा एवं खनिज पदार्थ, काले रंग के वस्त्र, मशीनरी का सामान, काष्ठ, तृण, स्टेनलेस स्टील के बर्तनादि लौह पदार्थ, काले उड़द और काले रंग की वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होगी।

८. **फलेश मंगल हैं**--अतः वृक्ष लता पौधों में फल-फूल की कमी रहे। जनता में रोग-प्रकोप एवं द्वेषभावना से अशान्ति बढ़े। राज्यों में विग्रह होगा। अन्नादि का उत्पादन कम होगा जिससे जनमानस दुःखित होगा। यत्र-तत्र रोग-भय होगा। खाद्यपदार्थ तेज रहें।

९. **धनेश शुक्र हैं**--पृथ्वी पर सभी मनुष्यों को समान सुख की प्राप्ति होगी। व्यापार में लाभ अच्छा होगा। शासन का कार्य सुव्यवस्थित सुचारुरूप से चलेगा। सुख-शान्ति तथा आनन्द का विस्तार होगा। राज-प्रजा में शुभ भावना जाग्रत होगी।

१०. **दुर्गेश (दुर्ग या किलः का स्वामी) मंगल हैं**--अतः मनुष्य अनेक प्रकार के दुःख और वियोग से व्यथित होंगे। माल-सामान और रुपये-पैसे के लेन-देन में जोखिम और लाभ भी नहीं के तुल्य रहे। जन-विग्रह अधिक होंगे। विशेषतः पूर्वीय देशों में राज-प्रजा विग्रह, संघर्ष और अराजकता बढ़े। पृथ्वी पर धन-धान्य की कमी हो। सुरक्षा व्यय में वृद्धि हो।

स्तम्भ चतुष्टय-फल—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग रुपये में १४ पैसा है। अतः जलस्तम्भ साधारण रूप से बना है। वर्षा समय-समय पर साधारण हो संभव है। कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि एवं असामयिक वर्षा होगी। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का योग रुपये में ३३ पैसा है। अतः तृण का स्तम्भ भी सामान्य रूप से बना है। घास चारा पाट जूट सन का उत्पादन मध्यम होगा। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र का योग नहीं हैं। अतः वायु-स्तम्भ नहीं बना हैं। वायु का वेग कम रहेगा; समयानुकूल वायु नहीं चलेगी। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का योग भी नहीं हैं। अतः अन्न का स्तम्भ टूट जाने से खाद्य-समस्या नहीं सुधरेगी। प्राकृतिक विपत्तियों के कारण कृषि में पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं होगा। अन्न-समस्या के समाधानार्थ में विदेशों से आयात करना पड़ेगा।

नाग-फल—इस वर्ष द्वादश नागों में 'वासुकी' नाम का नागराज हैं। वर्षा समयानुकूल अच्छी होगी जिससे अन्न के उत्पादन में वृद्धि होगी। विदेशों से संधियाँ होंगी; मैत्री-व्यवहार बढ़ेगा।

मेघ-फल—नौ मेघों में इस वर्ष 'तम' नाम का मेघ है। धान्य में पोषक तत्व की कमी हो। मनुष्यों में क्रोध की मात्रा बढ़े और व्यर्थ का विरोध हो। राज-कर्मचारियों को लाभ हो।

रोहिणी-निवास—इस वर्ष रोहिणी का निवास 'समुद्र' में है। फल—अतीव वर्षणं भवेत्समस्त धान्यवर्द्धनम्। यह योग उत्तम है। दुर्भिक्ष का नाश हो। सुख-शान्ति एवं सुभिक्ष में वृद्धि हो। सूखाग्रस्त क्षेत्रों में भी देर-सबेर वर्षा हो जायेगी। कहीं बाढ़ से कृषि एवं जन-धन की हानि होगी। लिखा है—समुद्रे तु महावृष्टिः। अतः कहीं महावृष्टि होगी।

समय-निवास—इस वर्ष सम्वत् का निवास माली के घर में है। फल—सर्ववस्तु समर्घं स्यान्मालाकार गृहेऽब्दके। सभी प्रकार की वस्तुओं के भाव मंदी की तरफ रहे। वर्षा श्रेष्ठ हो। तृण रूई पाट शाक-सब्जी की उत्पत्ति बढ़े।

समय-वाहन—'अश्व' है। अतः इस वर्ष जनता और व्यापारी वर्ग पर शासकों का प्रभाव बढ़ेगा। जनता को दैनिक उपयोग की चीजें उपलब्ध कराने का शासक लोग पूर्णरूप से प्रयत्न करेंगे। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुरु कृत्तिका नक्षत्र में होने से सम्वत्सर(वर्ष) का नाम कार्तिक है। फल—मनुष्यों की बुद्धि पाप-परायण हो। देव-ब्राह्मणों की मान्यता कम हो। तस्करों द्वारा राज्य-कर का अपहरण हो। समय (वर्ष) विश्वा ५ है। यह शुभफलप्रद नहीं है। अन्नादि तेज रहें। शनि की दृष्टि दक्षिण दिशा में है। अतः दक्षिण दिशा में आधिभौतिक उपद्रवों की अधिकता रहे।

गुर्रा-फल—ता० २२ दिसम्बर सन् १९७६ गुरुवार को हिजरी सन् १३९७ के नये साल की पहली तारीख प्रारम्भ होगी। इसका स्वामी गुरु है। अतः गुर्रा का फलाधिपति गुरु के फलस्वरूप वर्षा उत्तम होगी जिससे कृषि-उत्पादन अच्छा होगा। वनस्पति तिल कपास दुग्ध खरबूजा अगर तगर आदि सुगंधित वस्तुओं की उत्पत्ति श्रेष्ठ होगी। पशु-पक्षी सुखी रहें। शीतवायु और बादलों का जोर रहे। व्यापारियों को लाभ प्राप्त हो। राज्यकर्मचारियों की उन्नति हो। प्रजा में सुख-समृद्धि बढ़े।

वर्षा आदि के विश्वा—वर्षा १७, धान्य ११, तृण ७, शीत १७, तेज ५, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ५, तृषा ३, निद्रा ७, आलस्य ७, उद्यम ९, शान्ति १३, क्रोध ५, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १, पाप ९, पुण्य ७, व्याधि १७, व्याधि-नाश ९ आचार ३, अनाचार ३, मृत्यु १३; जन्म १, देशोपद्रव ३, देशस्वास्थ्य ५, चोर-भय ९, चोर-भय-नाश १७, उद्‌भिज ९, जरायुज ३, अंडज ११, स्वेदज ५।

नं० १ विन्ध्योत्तर निवासियों के लिये—विंशोत्तरी मतानुसार लाभ-खर्च का विवरण।

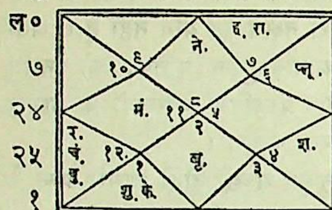
राशि	मे·	वृ·	मि·	क·	सि·	कं·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	योग
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११	१२३
खर्च	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२	७५

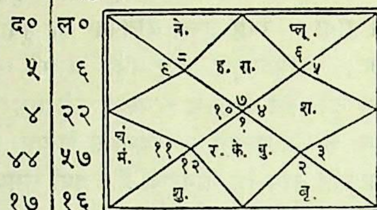
नं० २ विन्ध्य से दक्षिण निवासियों के लिये—अष्टोत्तरी मतानुसार लाभ-खर्च का विवरण।

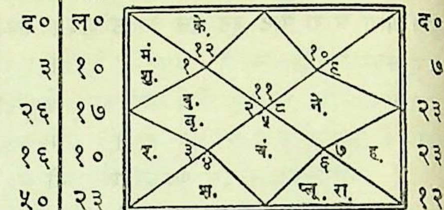
राशि	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	कं·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	योग
लभ	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५	९९
खर्च	१४	५	२	५	११	२	५	१४	५	१४	१४	५	९३

लाभ-खर्च मालूम करने की रीति—अपनी राशि के उपरोक्त लाभ-खर्च के अंकों को जोड़ें। जोड़ में १ अंक कम करके शेष को ८ से भाग दें। १ शेष बचे तो लाभ, २ से सौख्य, ३ से क्लेश, ४ से रोग, ५ से लोकापवाद, ६ से सम्मान, ७ से विजय, ८ से यानी ० से हानि का योग वर्ष में होता है। सारांश १, २, ६ या ७ बचे तो इस वर्ष में लाभ; भाग्योदय, नौकरी-धन्धे में तरक्की होगी। यदि ३, ४, ५ अथवा ० शेष रहे तो वर्ष में खर्च बढ़ेगा, मानसिक चिन्ता बनी रहेगी।

वर्ष-लग्न-कुण्डली, काशी, शनिवार	जगल्लग्न-कुण्डली, काशी, बुधवार	आर्द्रा-प्रवेश-लग्न-कुण्डली, काशी, मंगल.
ता.२०।३।७७ई.भा.स्टैं.टा. घं.० मि.३	ता.१३।४।७७ई.भा.स्टैं.टा. घं.२०मि.०	ता.२१।६।७७ई.भा.स्टैं.टा. घं.२३ मि.२
इष्ट सांपातिक काल घं.११मि.५३से.४५	इष्ट सांपातिक काल घं.९ मि. २८ से.५८	इष्ट सांपातिक काल घं.१७ मि.३ से.११







आर्द्रा-प्रवेश-फल—श्रीसंवत् २०३४ शके १८९९ आषाढ़ शुक्ल ४ मंगलवार को काशी के स्पष्टार्कोदयात् इष्ट घट्यादि ४४।३२।३०पर, तदनुसार दिनांक २१ जून सन् १९७७ई० को भा.प्र. समय (स्टैं. टा.)से घं.२३मि.२२ बजे कुम्भ लग्न के १७°अंश पर भगवान् भुवनभास्कर आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। उस समय तात्कालिक वार मंगल, तिथि पञ्चमी, नक्षत्र मघा, योग वज्र, करण बालव होगा एवं चंद्रमा सिंह राशि में रहेगा। तिथि-फल उत्तम, नक्षत्र-फल एवं करण-फल नेष्ट, योगफल राष्ट्रों में विग्रहकारक एवं वार के फलस्वरूप राष्ट्रनायकों की शस्त्राघात से मृत्यु हो। समय फल—'रात्री-स्थिता सर्वसुखामलोके', लग्न-कुण्डली की ग्रहस्थिति-जन्य फल—सूर्य त्रिकोण में, चं. सप्तम कृषि-स्थान में शुभ फलकारक है; किन्तु लग्नेश छठे वारेश मं. की नीच राशि (कर्क) में मं. से पूर्णतः दृष्ट भी है; अतः सन् ७७ में भी वर्षा-बाढ़ की विभीषिका का सरकार तथा उससे भी अधिक स्वयंसेवी संस्थाओं को बड़ा मुकाबिला करना होगा। कृषि-सिंचाई एवं बाढ़-नियंत्रण में भारी धन व्यय से कृषि-उत्पादन में पूर्वापेक्षा सामान्य वृद्धि होगी।

* सन् १९७७ ई० के ग्रहण *

सन् '७६ की भाँति सन् १९७७ ई० में भी कुल ३ ग्रहण हैं, जिनमें दो सूर्य-ग्रहण और एक चन्द्र-ग्रहण है; इनके अतिरिक्त इस वर्ष भी एक मांद्य चन्द्र-ग्रहण पड़ रहा है। **चन्द्र-ग्रहण** ता. ४ अप्रैल को खण्डग्रास होगा जो भारत में दिखाई न देगा। उसके स्पर्शकालादि का विवरण निम्न तालिका में दिया जा रहा है।

श्रीसंवत् २०३४ शके १८९९ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा सोमवार ता० ४ अप्रैल १९७७ ई० को भारत में अदृश्य

* खण्डग्रास चन्द्र-ग्रहण का स्पर्शादि एवं पर्वान्तकालीन गणित *

भारतीय प्रमाणित समय (स्टैं.टा.) से—	घं.	मि.
ग्रहण-स्पर्श	९	०
ग्रहण-मध्य (परम ग्रास)	९	४८
ग्रहण-मोक्ष	१०	३६
ग्रहण-पर्वकाल	१	३६
चंद्र-बिम्बमान	१२ अंगुल	० व्यंगुल
खण्डग्रासमान	२ अंगुल	२३ व्यंगुल
पर्वान्तकाल स्टैं. टा.		घं. ९ मि. ३९
चंद्र-शर (कलादि)	दक्षिण	५५'।२१"
चंद्र-भोग (राश्यादि)		५।२०°।४४'
विराहु-चंद्र (अंशादि)		११°।२०'।०३"
चंद्र-सूर्य का विषुवांतिश-प्रयुति-काल स्टैं. टा.		घं. १० मि.१८
चंद्र-क्रांति (अंशादि)	दक्षिण	६°।३६'।११"
चंद्र-क्रांति की होरागति (कलादि)		−११'।९"
सूर्य-क्रांति (अंशादि)	उत्तर	५°।३८'।२५"
सूर्य-क्रांति की होरागति (कलादि)		+०'।५७"
चंद्र-परम लम्बन (कलादि)		६०'।२०"
सूर्य-परम लम्बन (कलादि)		०'।८"'·८
स्फुट चंद्र-बिम्बार्ध (कलादि)		१६'।२६"
स्फुट सूर्य-बिम्बार्ध (कलादि)		१५'।५९"
स्फुट भू-भा-बिम्बार्ध (कलादि)		४५'।१७"
चंद्र-विषुवांश		१९३°।१०'।००"
सूर्य-विषुवांश		१३°।१०'।००"
चंद्र-विषुवांश की होरागति (कलादि)		३५'।२५"'·६
सूर्य-विषुवांश की होरागति (कलादि)		२'।१६"'·८
ग्रहण-मध्यकालीन क्षति (कलादि)		५५'।१०"

पहला सूर्य-ग्रहण ता. १८ अप्रैल को सार्वभौमिक दृष्ट्या कंकणाकृति तथा दूसरा सूर्य-ग्रहण ता. १२-१३ अक्टूबर को खग्रास होगा। ता. १८ अप्रैल के **सूर्य-ग्रहण** की कंकणाकृति पोर्चगीज, पूर्वीय अफ्रीका और रोडेशिया के कई स्थानों से दृश्य होगी। इनके अलावा हिंद महासागर और दक्षिण अटलांटिक महासागर के भागों से भी उक्त ग्रहण की कंकणाकृति दिखलाई देगी; बाकी भू-मण्डल के अति उत्तर-पश्चिमी भाग, श्रीलंका में, भारत में २४-२५ अक्षांश के दक्षिणी भाग में तथैव पाकिस्तान के भी २४-२५ अक्षांश के दक्षिणी इलाकों में, बंगला देश तथा बर्मा के सुदूर दक्षिण-पश्चिमी भाग, ईरान के दक्षिणी भाग, परशियन गल्फ, अरब के दक्षिणी भाग, माडागास्कर, मॉरिशस, मिश्र के दक्षिणी हिस्से, अबिसीनिया, युगांडा, केनिया, जांबिया, अंगोला, दक्षिणी अफ्रीका, अफ्रीका के दक्षिण-पश्चिम किनारे एवं दक्षिण-अमेरिका के दक्षिण-पूर्वीय किनारे के प्रदेशों में यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में दृश्य होगा।

भारतवर्ष में यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा; उसमें भी लखनऊ, दिल्ली, देहरादून, शिमला, सिलीगुड़ी, गौहाटी, इत्यादि उत्तर अक्षांश के प्रदेशों में यह बिल्कुल दृश्य न होगा। गत वर्ष (१९७६) की कंकणाकृति सूर्य-ग्रहण की

भाँति इस सूर्य-ग्रहण के खण्डग्रास की भी स्पर्श, मध्य और मोक्ष तीनों स्थितियां संपूर्ण भारत में नहीं दिखाई देंगी। कहीं केवल ग्रहण का स्पर्श और मध्य दृश्य होगा और ग्रहण-मोक्ष के पहले ही सूर्यास्त हो जायेगा। कई स्थानों में ग्रहण की स्पर्श, मध्य और मोक्ष तीनों ही स्थितियां दृश्य होंगी। ऐसे ही स्थानों में वाराणसी भी है। उपर्युक्त दोनों प्रकार के मुख्य शहरों की सूची आगे दी जा रही है, जिनमें ग्रहण के स्पर्शादि पर्व-काल एवं परम ग्रास के अंगुलादि मान दिये गये हैं। वाराणसी में इस ग्रहण के स्पर्श-कालादि का विवरण निम्न तालिका में दिये जा रहे हैं :—

* ता० १८ अप्रैल १९७७ ई० का सूर्य-ग्रहण *

जिन मुख्य शहरों में सूय-ग्रहण का केवल स्पर्श, मध्य दृश्य होगा और ग्रहण-मोक्ष के पहले ही सूर्यास्त हो जायेगा, उन शहरों के नाम एवं ग्रहण के स्पर्शादि-काल का विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया जा रहा है—

शहर	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	पर्व-काल घं. मि.	ग्रासमान अं. व्यं.
अगरतला	१७–४४	— —	१७–४४	०– ०	– —
कलकत्ता	१७–२९	— —	१७–५४	०–२५	– —
कांचीपुरम्	१६–५५	१७–५४	१८–२१	१–२६	४–३४
कोदाइकनाल	१६–४८	१७–५४	१८–२८	१–४०	५–३७
कोलम्बो	१६–४६	१७–५४	१८–१६	१–३०	६–३७
चटगांव	१७–३२	— —	१७–४१	०– ९	– —
ढाका	१७–४०	— —	१७–४८	०– ८	– —
त्रिवेन्द्रम्	१६–४५	१७–५३	१८–२८	१–४३	६–१४
पांडिचेरी	१६–५३	१७–५४	१८–२०	१–२७	४–५२
पोर्टब्लेअर	१७– ३	— —	१७–२८	०–२५	– —
बंगलौर	१६–५३	१७–५३	१८–२९	१–३६	४–३९
भुवनेश्वर	१७–१८	१७–५२	१८– २	०–४४	१–३७
मद्रास	१६–५६	१७–५२	१८–१९	१–२३	४–२७
हैदराबाद	१७– ३	१७–५३	१८–३०	१–२७	३– २

टिप्पणी–(१) इस तालिका में प्रत्येक शहर के लिए ग्रहण का स्पर्श, मध्य एवं सूर्यास्त-काल भारतीय प्रमाणित समय (स्टैं. टा.) में दिये गये हैं। (२) जिन स्थानोंके लिए ग्रहण का मध्य-काल नहीं दिया गया है, वहाँ ग्रहण-मध्यसे पूर्व ही सूर्यग्रस्त हो जायेगा। (३) इस तालिका में प्रत्येक शहर का जो सूर्यास्त-काल दिया गया है, वह किरण-वक्रीभवन-संस्कार रहित सूर्य-अर्धबिम्ब के अस्त का स्टैं. टा. है। इस प्रकार का स्पष्टार्कोदयास्त ही धर्मकृत्योपयोगी होता है। अतः तदनुसार ही तालिका के प्रत्येक शहर के लिए इस ग्रहण के पर्व-काल घं. मि. में दिये गये हैं। (४) तालिका में दिए गए प्रत्येक शहर के लिए इस ग्रहण का ग्रासमान ग्रहणके मध्य-काल का अर्थात् वहाँ दिखाई देनेवाला अधिकतम ग्रासमान अंगुल, व्यंगुल में है। 'नादेश्योऽङ्गुलाल्पो रविन्दोः' (ग्रहलाघव) अर्थात् किसी शहरमें ग्रहणका शुद्ध दृग्गणितागत ग्रासमान एकअङ्गुलसे अल्प होनेपर वहाँ ग्रहणपरक स्नान दानादि धार्मिक विधि-विधान मान्य नहीं होते।

जिन मुख्य शहरों में सूर्य-ग्रहण का स्पर्श, मध्य और मोक्ष की तीनों ही स्थितियां दृश्य होंगी, उन शहरों के नाम एवं ग्रहण के स्पर्शादि-काल का विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया जा रहा है—

शहर	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	ग्रासमान अं. व्यं.
अहमदाबाद	१७–१३	१७–५०	१८–२४	१–११	१–२३
इलाहाबाद	१७–४३	१७–५०	१७–५८	०–१५	०–४३
उज्जैन	१७–१८	१७–५०	१८–२१	१– ३	१–११
करांची	१७–१४	१७–४६	१८–१६	१– २	०–५८
जबलपुर	१७–२३	१७–५१	१८–१८	०–५५	०–५८
जोधपुर	१७–३४	१७–४८	१८– ३	०–२९	०–१२
नागपुर	१७–१४	१७–५२	१८–२७	१–१३	१–४२
पणजी	१६–५३	१७–५२	१८–४५	१–५२	३–५८
पूना	१७– ०	१७–५१	१८–३८	१–३८	२–५४
बम्बई	१७– ०	१७–५१	१८–३७	१–३७	२–४७
भोपाल	१७–२०	१७–५१	१८–२०	१– ०	१– ४
वाराणसी	१७–४३	१७–५०	१७–५७	०–१४	०– ३

श्रीसंवत् २०३४ शके १८९९ वैशाख कृष्ण ३०
सोमवती अमावस्या को

* काशी में खण्डग्रास अङ्गुलाल्पसूर्य-ग्रहण *

समय	भारतीय प्रमाणित समय स्टैं. टा. से घं. मि.	काशी में सूर्य घड़ी से घं. मि. से.	काशी में स्पष्टार्कोदयात् इष्ट घटी पल
स्पर्श	१७-४३	१७-४५-५२	३०-१५
मध्य	१७-५०	१७-५३-४	३०-३३
मोक्ष	१७-५६	१७-५९-१०	३०-४८

सूर्य बिम्बांगुल १२, काशी में दृश्य अधिकतम ग्रासांगुल० व्यं.३

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि वाराणसी में इस ग्रहण के स्पर्श से मोक्ष-काल तक की अधिकतम स्थिति ३३। पल तक रहेगी और सूर्य-बिम्ब पर मात्र ३ व्यंगुल (१ अंगुल = ६० व्यं.) ग्रास दिखाई देगा। सूर्य-सिद्धान्त के छेद्यकाधिकार का वचन है—**स्वच्छत्वाद् द्वादशांशोऽपि ग्रस्तश्चंद्रस्य दृश्यते। लिमात्रयमपि ग्रस्तं तीक्ष्णत्वान्न विवस्वतः ॥** अर्थात्—चन्द्र-बिम्ब कीस्वच्छता के कारण उसका यदि १२वाँ भाग ग्रहण से ग्रस्त होता है तो सामान्य दृष्टि से दिखाई देता है और सूर्य-तेज की तीक्ष्णता के कारण सूर्य-बिम्ब पर ३ कला का ग्रहण-ग्रास होने पर भी वह दृष्टिगोचर नहीं होता; ऐसा ही बृद्ध वसिष्ठ का भी वचन है—**ग्रस्तं शशांकस्य कलाद्वय चेत्कलात्रयं भानुमतो न लक्ष्यम्** . . . . . । श्रीम[illegible] में लिखते हैं—

इंदोर्भाग: षोडश: खण्डितोऽपि तेज:पुञ्जच्छन्न भावान्न लक्ष्यः । तेजस्तैक्ष्ण्यात्तीक्ष्णगोर्द्वादशांशो नादेश्योऽतोऽल्पो ग्रहो, बुद्धिमद्भिः ॥३७॥ ब्रह्मस्फुट-सिद्धान्त के सूर्य-ग्रहणाधिकार में आचार्य ब्रह्मगुप्त लिखते हैं—वक्रनादि शशिवदन्यद् ग्रहणं तैक्ष्ण्याद्रवेरनादेश्यम् । द्वादश भागादूतं स्वच्छत्वात् षोडशादिन्दो: ॥ २० ॥ श्रीगणेश दैवज्ञ ग्रहलाघव के सूर्य-ग्रहणाधिकार में लिखते हैं—मर्दादेवं मीलन्मीलने स्तो ग्रासो नादेश्योऽङ्गुलाल्पो रवीन्द्वोः ॥ ६ ॥ उपर्युक्त भास्कराचार्य और ब्रह्मगुप्त के वचनानुसार सूर्यबिंब का बारहवां भाग ग्रहण से ग्रस्त होने पर भी उसके तीक्ष्ण प्रकाश के कारण नहीं देखा जा सकता । अतः उससे अल्प ग्रासवाले ग्रहण का आदेश न करे तथा गणेश दैवज्ञके कथनानुसार सूर्य-चंद्र-बिंब पर अंगुलाल्प ग्रहणग्रास होने पर उस ग्रहण का आदेश न करना चाहिए । प्रस्तुत सूर्य-ग्रहण का काशी में ग्रासमान ·८४७७ अर्थात् सूर्य बिम्बांगुल १२ तो ग्रासमान २·९ व्यंगुल अथवा सूर्य-बिम्बमान ३२' कला तो ग्रासमान ७''·७ विकला-मात्र है ; अतएव उपर्युक्त समस्त वचनानुसार इस सूर्य-ग्रहणपरक स्नान दानादि यावत् धार्मिक कृत्य केवल उन्हीं स्थानों पर शास्त्रविहित हैं जहाँ सूर्य पर १ अंगुल या उससे अधिक ग्रासमान दृश्य होगा । जिन स्थानों में सूर्य पर १ अंगुल से अल्प ग्रास लगेगा अथवा ग्रहण की दृश्य-सीमा से परे होने के कारण जिन स्थानों में ग्रहण बिलकुल दिखाई न देगा, वहाँ तत्सम्बन्धी कोई धार्मिक विधि-विधान मान्य नहीं होगा । वाराणसी में भी इस सूर्य-ग्रहण सम्बन्धी कोई धार्मिक विधि निषेध मान्य नहीं होगा ; किन्तु उस दिन सोमवती अमावस्या का अति पुनीत पर्व भी पड़ रहा है जो स्नानादि में महत्पुण्यदायी माना गया है—अमावस्या भौम सोमवारयुता स्नानदानादौ महापुण्यदा (धर्मसिंधु) । स्त्रियों के लिये तो विशेषतः इस पर्व का महत्त्व है ; उन्हें पीपल-वृक्ष के मूल में विष्णु भगवान की मूर्ति स्थापित कर उसकी विधिवत् पूजा एवं प्रदक्षिणा करनी चाहिए । इससे उनके पति की आयु-वृद्धि होती है तथा सर्व प्रकार के सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है । काशी में तो इस दिन कपिलधारा तीर्थ में पितृश्राद्ध करने का अत्यधिक महत्त्व है । स्वयं भगवान् शंकर का वचन है—सोमवार अमावस्या तिथि को यहाँ (कपिलधारा तीर्थ में) श्राद्ध करने से अक्षय फल प्राप्त होता है । प्रलय-काल में समुद्र का भी जल सूख जाता है ; परन्तु सोमवती अमावस्या में इस कपिलधारा तीर्थ पर अनुष्ठित श्राद्ध का कभी क्षय नहीं होता । यदि सोमवती अमावस्या में यहाँ श्राद्ध किया जाय तो फिर गया-क्षेत्र अथवा पुष्कर(अजमेर) में श्राद्धानुष्ठान का क्या प्रयोजन है ? बहुत क्या कहूँ, स्वर्ग, अन्तरिक्ष क्या भू-मण्डल के जितने तीर्थ हैं, सो सब सोमवती अमावस्या के पर्व पर कपिलधारा-तीर्थ में विराजमान रहते हैं । सूर्य-ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और गंगासागर के संगम में पिण्डदान करने से जो फल मिलता है, वही फल इस वृषभध्वज तीर्थ (कपिलधारा) में भी मिलता है ; प्रत्युत सोमवती अमावस्या को यहाँ श्राद्ध करने से गयाश्राद्ध का आठ गुणा अधिक पुण्य होता है और जो लोग इस पर्व पर पितरों की तृप्ति-कामना से यहाँ ब्राह्मण-भोजन करायेंगे, उनका किया हुआ श्राद्ध तो अनन्त फल-दायक होगा—सूर्येन्दुसङ्गमे यत्र पितृणां तृप्ति कामकाः । ब्राह्मणान्भोजयिष्यन्ति तेषां श्राद्धममन्तकम् । (काशी-खण्ड अ० ६२) अतः इस दिन सूर्य-ग्रहण यहाँ दृश्य न होने पर भी उपर्युक्त सर्व धर्मकृत्य के विधिवत् अनुष्ठान द्वारा अक्षय पुण्यार्जन करना चाहिए । इस कंकणाकृति सूर्य-ग्रहण के आद्य-भू-मण्डलीय स्पर्शादि का सब विवरण आगे दिया गया है । यह ग्रहण अश्विनी नक्षत्र, मेष राशि पर लग रहा है ; तदनुसार इसका १२ राशियों का फल निम्नांकित है—

रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
ग्रहण-फल	घात	हानि	लाभ	सिद्धि	मानभंग	रोग	स्त्री-चिन्ता	सौख्य	चिन्ता	क्लेश	धन-लाभ	हानि

श्रीसंवत् २०३४ शके १८९९ वैशाखकृष्ण ३० सोमवार ता० १८ अप्रैल सन् १९७७ ई० को कङ्कणाकृति(काशी में खण्ड-ग्रास दृश्य)

* सूर्य-ग्रहण का पर्वान्तकालीन गणित *

सूर्य-चंद्र का विषुवांश-युतिकाल स्टैं. टा. घं. १५ मि. ४७से. ५९		
सूर्य-चंद्र का विषुवांश		२९°।१५'।१८"
सूर्य-विषुवांश की स्फुट होरागति		२'।२०"
चंद्र-विषुवांश की स्फुट होरागति		२९'।३०"
सूर्य-क्रांति	उत्तर	१०°।५१'।२६"
चंद्र-क्रांति	उत्तर	१०°।२८'।५८"
सूर्य-क्रांति की होरागति		+०'।५२"
चंद्र-क्रांति की होरागति		+८'।७"
स्पष्ट-पर्वान्तकाल	स्टैं. टा. घं. १६ मि. ५	
सूर्य-चंद्र का राश्यादि भोग		०।४°।४४'
चंद्र-शर कलादि	दक्षिण	२१'।४५"
विराहु चंद्र राश्यादि		६।४°।०'
सूर्य का क्षैतिज लम्बन		

चंद्र का क्षैतिज लम्बन	५४'।२८"·१
सूर्य-बिम्बार्ध	१५'।५५"
चंद्र-बिम्बार्ध	१४'।५१'
ग्रहण का भू-मण्डलीय आद्य-स्पर्श स्टैं. टा.	घं. १३ मि. ३
ग्रहण का भू-मण्ड. सम्मीलन (कंकणाकृति)	घं. १४ मि. १३
ग्रहण का भू-मण्डलीय मध्य(परम-ग्रास)	घं. १६ मि. १
ग्रहण का भू-मण्डलीय उन्मीलन	घं. १७ मि. ४९
ग्रहण का भू-मण्डलीय मोक्ष	घं. १८ मि. ५९
कंकणाकृति की परमावधि	मि. ६ से. ५९
परम ग्रासमान	११ अंगुल २१ व्यंगुल
सूर्य-बिम्बमान	१२ अंगुल
काशी में दृश्य अधिकतम खण्डग्रासमान	० अंगुल ३ व्यंगुल

श्रीसंवत् २०३४ शके १८९९ आश्विन कृष्ण ३० बुधवार ता. १२/१३ अक्टूबर '७७ को

❀ भारत में अदृश्य खग्रास सूर्य-ग्रहण का पर्वान्तकालीन गणित ❀

सूर्य-चंद्र का विषुवांश-युतिकाल स्टैं.टा. घं. १ मि.४४ से.२८		
सूर्य-चंद्र का विषुवांश		१९७°।५३'।४२"
सूर्य-विषुवांश की स्फुट होरागति		२'।१९"
चंद्र विषुवांश की स्फुट होरागति		३४'।३७"
सूर्य-क्रांति	दक्षिण	७°।३५'।१८"
चंद्र-क्रांति	दक्षिण	७°।११'।३३"
सूर्य-क्रांति की होरागति		– ०'।५९"
चंद्र-क्रांति की होरागति		–१०'।२९"
स्पष्ट पर्वान्त-काल स्टैं. टा.		घं. २ मि. १
सूर्य-चंद्र का राश्यादि भोग		५।२५°।५१'
चंद्र-शर कलादि	उत्तर	२२'।५१"
विराहु-चंद्र अंशादि		४°।१२"
सूर्य का क्षैतिज-लम्बन		०'।८"।८

चंद्र का क्षैतिज-लम्बन		५९'।२९"
सूर्य-विम्बार्घ		१६'।२"
चंद्र-विम्बार्घ		१६'।१३"
ग्रहण का भू-मण्डलीय आद्य-स्पर्श स्टैं. टा.		घं. २३ मि. १८
ग्रहण का भू-मण्डलीय सम्मीलन		घं. ० मि. १९
ग्रहण का भू-मण्डलीय मध्य (परमग्रास)		घं. १ मि. ५७
ग्रहण का भू-मण्डलीय उन्मीलन		घं. ३ मि. ३५
ग्रहण का भू-मण्डलीय मोक्ष		घं ४ मि. ३६
खग्रास की परमावधि		मि. २ से. ३७
परम ग्रासमान		१२ अंगुल ८ व्यंगुल
सूर्य-विम्ब		१२ अंगुल
खग्रासाङ्गुल		० अंगुल ८ व्यंगुल

दूसरा सूर्य-ग्रहण ता. १२ अक्टूबर १९७७ ई० आश्विन कृष्ण ३० सर्वपैत्री अमावस्या को राहुकृत खग्रास ग्रहण होगा। आज से १९ वर्ष पूर्व सन् १९५८ ई० में भी राहुदेव की कृपा से खग्रास सूर्य-ग्रहण हुआ था ; वह भी ठीक इसी ता. १२ अक्टूबर एवं इसी तिथि सर्वपैत्री अमावस्या को लगा था। उसका अमान्त-काल अर्ध-रात्रि के बाद स्टैं. टा. घं. २ मि. २२ बजे था ; इस सूर्य-ग्रहण का अमान्तकाल यानी चन्द्र सूर्य की भू-केंद्रीय युति का भा. स्टैं. समय अर्ध-रात्रि के बाद घं. २ मि. १ बजे है ; उस समय सूर्य भूगोल के पश्चिमी गोलार्घ में होने के कारण यह पृथ्वी के पूर्वीय गोलार्ध में कहीं भी दृश्य न होगा। इसके भू-मण्डलीय आद्य स्पर्शादि का यावत् विवरण निम्न तालिका में दिया गया है, वहाँ देखिए। यह ग्रहण उत्तरी अमेरिका और दक्षिण-अमेरिका के उत्तरी भाग में, एशिया खण्ड के साइबेरिया में उत्तर ध्रुव के निकटवर्ती अति पूर्वीय भाग में ही दृश्य होगा। खग्रास-ग्रहण का छाया-पथ अधिकांशतः प्रशांत महासागर तथा दक्षिण-अमेरिका के कुछ भाग से गुजरता है। अतः दक्षिण-अमेरिका के अति उत्तर-पश्चिमी किनारे पर सूर्यास्त के समय कतिपय स्थानों से इस ग्रहण का खग्रास रूप दिखाई देगा।

सन् १९७७ ई० में उपर्युक्त ग्रहणों के अलावा ता. २७ सितंबर, भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार को चंद्रमा का एक मांद्य-ग्रहण भी होगा जिसे छायाकल्प ग्रहण भी कहते हैं; सूर्य के प्रकाश में पृथ्वी की जो छाया अंतरिक्ष में गिरती है उसे घनछाया या भूभा कहते हैं ; उसमें चंद्रबिंब के पूर्णतया प्रविष्ट होने पर चंद्र का सर्वग्रास या खग्रास ग्रहण लगता है और यदि चंद्रबिंब का कुछ भाग उक्त भूभा के बहिर्गत रहता है तो संपूर्ण चंद्रबिंब ग्रस्त न होने के कारण खण्डग्रास चंद्र-ग्रहण लगता है; इसी भाँति उक्त भूभा के चारो तरफ उसकी जो प्रतिच्छाया यानी विरल छाया फैली रहती है, उसमें चंद्रबिंब के पूर्णतः प्रविष्ट होने से संपूर्ण चंद्रबिंब पर धूसर छाया आती है अर्थात् पूरे चंद्रबिंब का कांतिमालिन्य होता है। किन्तु कभी-कभी चंद्रबिंब का कुछ भाग उक्त विरल छाया यानी भू-भाभा के बहिर्गत रहता है तब खण्ड मांद्य-ग्रहण लगता है अर्थात् संपूर्ण चंद्रबिंब का कांतिमालिन्य नहीं होता, उसका भू-भाभा से बहिर्गत भाग स्वच्छ प्रकाशमान रहता है ; यह मांद्य चन्द्र-ग्रहण भी इसी प्रकार का है जिसका संपूर्ण विवरण निम्न तालिका में दिया गया है। उक्त दिन चं. सू. की भू-गर्भीय युति अर्थात् पूर्णिमान्त-काल भा. स्टैं. टा. से घं. १३ मि. ४७ बजे (दिन में) होने के कारण भारत के दृश्याकाश में चन्द्रमा के न रहने से यह मांद्य-ग्रहण भी यहाँ दिखाई न देगा।

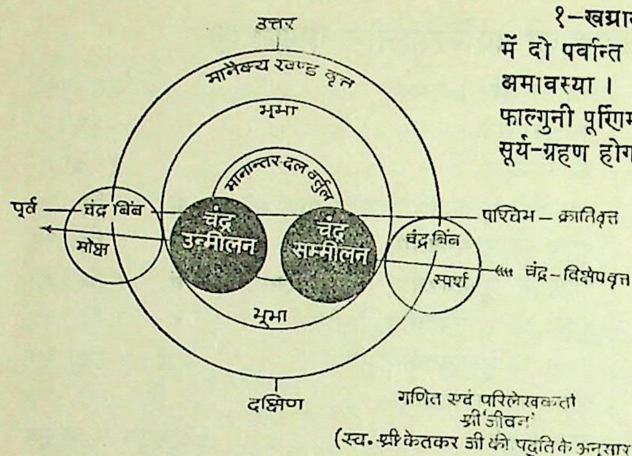
श्रीसंवत् २०३४ शके १८९९ भाद्रपद शुक्ल १५ मंगलवार ता० २७ सितम्बर १९७७ ई० को

❊ काशी में अदृश्य मांद्य चंद्र-ग्रहण ❊

भा. स्टैं. टा. से—	घं.	मि.	काशी के स्पष्टार्कोदयात् इष्ट घटी	पल
कांति-मालिन्यारम्भ	११	४८	१४	५०
परम कांति-मालिन्य	१३	५९	२०	१८
निर्मला-कांति	१६	१०	२५	४५

चंद्र-बिम्बांगुल १२, अधिकतम मलिन चंद्र-बिम्बांगुल ११, व्यंगुल ७

❀ सन् १९७७ ई० के बाद संवत् २०३४ के ग्रहण ❀



१–खग्रास चन्द्रग्रहण–सन् १९७७ ई० के बाद संवत् २०३४ वि० में दो पर्वान्त पड़ते हैं, १. फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तथा २. चैत्र कृष्ण अमावस्या। दोनों ही दिन क्रमशः चन्द्र और सूर्य-ग्रहण पड़ रहे हैं; फाल्गुनी पूर्णिमा को खग्रास चन्द्र-ग्रहण तथा चैत्री अमावस्या को खण्डग्रास सूर्य-ग्रहण होगा। फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार ता. २४ मार्च सन् १९७८ ई० को उ. फा. एवं हस्त नक्षत्र तथा कन्याराशि में खग्रास चंद्र-ग्रहण होगा। उक्त दिन चंद्र-सूर्य का भू-गर्भीय प्रतियोग यानी पूर्णिमान्त भा. स्टैं. टा. से घं.२१मि.५० बजे होगा एवं चंद्र-बिम्ब के भारतीय दृश्याकाश में उदित रहने के कारण इस ग्रहण की स्पर्श, सम्मीलनादि संपूर्ण चमत्कृति यहाँ दृश्य होगी जिसके समयादि का विवरण ग्रहण-परिलेख सहित ऊपर दिया गया है।

ता० २४–३–१९७८ ई०			
समय	काशी में इष्ट घटी पल	काशी में सूर्य घटी घं. मि.	भा.स्टैं. टाइम घं.मि.
स्पर्श	३५।३	१९।५८	२०।३
सम्मीलन	३७।४३	२१।२	२१।७
मध्य	३९।३५	२१।४७	२१।५२
उन्मीलन	४१।३०	२२।३३	२२।३८
मोक्ष	४४।१०	२३।३७	२३।४२
पर्वकाल	९।७	३।३९	३।३९

❀ ग्रहण का राशिफल ❀

राशियाँ	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
ग्रहण-फल	सौख्य	चिन्ता	व्यथा	श्री-क्षति	क्षति	घात	हानि	लाभ	सुख	मान-नाश	मृत्यु	स्त्री-पीड़ा

२–खण्डग्रास सूर्य-ग्रहण–चैत्र कृष्ण अमावस्या शुक्रवार ता. ७ अप्रैल सन् १९७८ ई० को रेवती नक्षत्र एवं मीन-राशि में खण्डग्रास सूर्य-ग्रहण होगा। उस दिन भा. प्र. समय (स्टैं. टा.) से घं. १७ मि. ३० बजे केतकरीय अहर्गण १८२८, सूर्य-क्रांति उत्तर ६°।४८', चन्द्रक्रांति उत्तर ५°।२३' चन्द्रशर दक्षिण ०°।४४' तथा सूर्य का राश्यादि भोग ११।२३°।४५'।२३'' उसकी तात्कालिक अर्धदैनिक गति २९'।३०'' एवं चन्द्रमा का राश्यादि भोग ११।२२°।५'।४६'' उसकी तात्कालिक अर्धदैनिक गति ९°।३४'।१०'' होगी; तदनुसार सूर्य-चन्द्र की भू-गर्भीय युति अर्थात् अमान्त भा. स्टैं.टा. से घं. २० मि. ४५ बजे होगा। उस समय सूर्य पश्चिम-क्षितिज के नीचे (अस्त) रहनेके कारण यह ग्रहण यहाँ दृश्य न होगा; सन् १९७८ ई० के उपर्युक्त दोनों ग्रहणों का विशेष विवरण अगले वर्ष '७८ ई० की जंत्री में दिया जायेगा।

॥ श्रीसंवत् २०३४ सन् १९७७ ई० में खाता(बसना) और श्रीमहालक्ष्मी-पूजन-मुहूर्त ॥

श्रीरामनवमी—इस वर्ष मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रघुकुलभूषण विश्व-नियन्ता विष्णु-रूप श्रीरामचन्द्र की जन्म-तिथि परमपुण्यमयी मध्याह्न कालव्यापिनी रामनवमी ता० २९ मार्च सन् १९७७ भौमवार को पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त लग-भग सूर्यास्त तक रहेगी। इस पुनीत तिथि को बहुत व्यापारीगण खाता(बसना) का पूजन करते हैं। पुनर्वसु नक्षत्र **"स्वात्यादित्ये श्रुति स्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्"** इत्यादि वचनों से चरसंज्ञक नक्षत्र है, अतएव व्यापार-कार्य में यह नक्षत्र और भौमवार भी विहित नहीं है तथापि अनेक व्यापारीगण इस परम पवित्र तिथि रामनवमी के दिन अपनी परम्परा के अनुसार खाता(बसना) का पूजन करते हैं। तब उन्हें तिथि और वार का दान करके पूजन करना चाहिये। इससे अपनी परम्परा-निर्वाह के साथ भगवत् तिथि में पूजन पूर्ण फलदायी होगा। सुमुहूर्त-विचार से व्यापारादि कार्य में स्थिर लग्न उत्तम होता है। 'वृष' स्थिर लग्न है। उसका भोग उस दिन घं. ८ मि. २० बजे प्रारम्भ होकर घं. १० मि. १७ बजे तक रहेगा। वृष राशि का गुरु उत्तम फलदायक है। **"ये ये भावाः सिताज्ञा मरपतिभि संयुता विचिता वा नान्यैः दृष्टा न युक्ताः यदि भवति यदा तस्य भावस्य वृद्धिः"** इत्यादि वचनानुसार लग्न बलयुक्त है। लग्न-स्वामी शुक्र यद्यपि वक्री है; किंतु अपनी उच्च राशि में एवं उच्चाभिलाषी सूर्य तथा नीचगत बुध से युक्त होकर लाभ भाव में स्थित है। सूर्य केन्द्रेश एवं बुध त्रिकोणेश के साथ लग्नेश शुक्र का स्थान-संबंध राजयोगकारक अर्थात् लग्नेश द्वितीयेश और चतुर्थेश का यह योग शुभ फलकारक है। तृतीया भाव का शनि, छठे राहु उत्तम है। व्यापारेश भौम यद्यपि लग्नेश भी है; किंतु राज्य में बैठकर लग्नस्थ मित्र गुरु को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। केवल द्वादश स्थान शुद्ध नहीं है; अतः द्वादस्थ केतु का दान कर खाता(बसना) पूजन करना चाहिये। उसके बाद स्थिर लग्न "सिंह" घं. १४ मि. ४८ बजे से घं. १७ मि. २ बजे तक रहेगा। सिंह लग्न पर सप्तम भौम की पूर्ण दृष्टि उत्तम नहीं है। लग्नेश सूर्य, द्वितीयेश लाभेश बुध, तृतीयेश शुक्र का अष्टम (मृत्यु) भाव में चले जाना नेष्ट है; किंतु दशम का गुरु सभी दोषों का विनाशक है—**"किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः। मत्तमातंग यूथानां शतं हन्ति च केशरी॥"** नवम केतु मध्यम है। द्वादश शनि चन्द्र उत्तम नहीं है। अतः इनका

दान करके ही इस लग्न में खाता(बसना) का पूजन हितावह होगा। बहुत लोग 'अभिजिन्मुहूर्त' में पूजन करते हैं; इस दिन अभिजिन्मुहूर्त घं. ११ मि. १७ बजे से घं. १२ मि. ३ बजे तक रहेगा जिसमें यावत् शुभकृत्य सिद्ध होता है; परन्तु इसमें मध्याह्न-काल का ८ मिनट त्याग कर देना चाहिये। चौघड़िया के विचार से घं. १० मि. ३१ बजे से घं. १२ मि.३ बजे तक 'लाभ' बेला रहेगी। इसमें यद्यपि द्विस्वभाव मिथुन लग्न रहेगा; किंतु घं. ११ मि. १७ बजे अभिजिन्मुहूर्त आरंभ हो जायेगा। अतः तब से घं.१२ मि.३ बजे तक दोनों का संयुक्त काल खाता(बसना)पूजनार्थ स्वर्ण में सुगन्ध के समान है। उसके बाद घं. १२ मि. ३ बजे से घं. १३ मि. ३४ बजे तक 'अमृत' बेला भोग करेगी। इसमें घं. १२ मि. ३० बजे से कर्क लग्न का प्रवेश हो जायेगा। कर्क चर लग्न है; उसमें वक्री शनि स्थित है, साथ में चन्द्रमा भी चर राशि में है; अतः इस चौघड़िया का उपयोग न करना ही उत्तम पक्ष है। तत्पश्चात् पूर्वोक्त स्थिर लग्न सिंह में घं. १५ मि. ६ बजे से घं. १६ मि. ३७ बजे तक शुभ चौघड़िया का संयोग विशेष फलदायक होगा। दोनों ही व्यापार कार्यार्थ अति उत्तम हैं। अतः इस 'शुभ' बेला और सिंह लग्न के संयुक्त काल में खाता(बसना) का पूजन विशेष लाभप्रद एवं शुभकारी होगा।

अक्षय तृतीया—श्रीरामनवमी की भाँति अक्षय तृतीया भी भगवदावतार की तिथि होने से इस दिन विशेषतः खाता(बसना) का पूजन किया जाता है। इसी अक्षय पुण्य-तिथि को भगवान का श्रीपरशुरामजी के रूप में अवतार हुआ था। अक्षय तृतीया युगादि तिथि होने से भी परम पुनीत है। इस वर्ष यह ता० २१ अप्रैल सन् १९७७ ई०, वैशाख शुक्ल ३ गुरुवार को पड़ रही है, वार अति शुभद है; किंतु नक्षत्र कृत्तिका साधारण है जो उस दिन घं. १५ मि.१९ बजे तक रहेगा, उसमें वणिक-वर्ग को परम्परया खाता(बसना) पूजनार्थ स्थिर लग्न 'वृष' घं. ६ मि. ५० बजे से घं. ८ मि. ४६ बजे तक प्राप्त होगा। लग्न में आयेश, पराक्रमेश का गुरु-चांद्री योग हो रहा है—**"सर्वाभिमान् स्पृदंश माली लग्नस्थित प्रशमयेत्सुरराज मंत्री। एको बहूनि दुरितः सुदुस्तराणि भक्त्या प्रयुक्त शूलधर प्रणाम"** इस वचनानुसार लग्न का गुरु सभी प्रकार के दोषों को नष्ट कर सर्वविध कार्यसाधक होगा। उसमें भी गुरु के साथ उच्च का चन्द्र होने से गुरु-चान्द्री योग का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। तृतीय(उपचय-स्थान) में गया शनि शुभ फल को अधिक प्रबल बना रहा है। उसी तरह षष्ट भाव में राहु, एकादश में स्वोच्च राशि का शुक्र और मित्र-राशि का मंगल भी शुभफल के अभिवृद्धिकारक हैं। अष्टम स्थान शुद्ध है; किंतु द्वादश में सूर्य एवं वक्री बुध और केतु का योग उत्तम नहीं है। अतः इनका दान कर उक्त 'वृष' लग्नकाल में खाता(बसना) का पूजन अति उत्तम शुभफल-विधायक होगा। इसके बाद स्थिर लग्न 'सिंह' घं. १३ मि. १७ बजे से घं. १५ मि ३१ बजे तक रहेगा। सिंह लग्न में तृतीयस्थ राहु की स्थिति व्यवसाय को बढ़ानेवाली है, परन्तु अष्टम में वक्री शुक्र मंगल तथा द्वादश में शनि का योग उत्तम नहीं है; इनका दानादि करना चाहिये। इससे इन ग्रहों की शान्ति हो जायगी। नवम भाव में केतु का योग मध्यम, किन्तु लग्नेश का आयेश-घनेश बुध से योग शुभद है। दशम भाव में गुरु चान्द्री योग सभी प्रकार के दोषों को विनष्ट करनेवाला है। अतः अपनी परम्परा के अनुसार इस स्थिर 'सिंह' लग्न में खाता(बसना)पूजनादि कृत्य लाभ शुभकारक होगा। इस दिन अभिजिन्मुहूर्त घं.११ मि.९ बजे से घं.११ मि.५७ बजे तक प्राप्त होगा। चौघड़िया-बेला के विचार से से प्रथम 'शुभ' बेला घं. ५ मि. ३५ बजे से प्रारम्भ होकर घं. ७ मि. ११ बजे तक रहेगी। इसमें स्थिर लग्न 'वृष' का भी योग घं. ६ मि. ५० बजे से आरम्भ हो जायेगा; अतः इन दोनों के संयुक्त काल का महत्व गत वर्षों की जंत्री में सप्रमाण बताया जा चुका है; अतः पुनरुक्ति अनावश्यक है; इस दिन खाता (बसना) पूजन अत्युत्तम रहेगा। उसके बाद 'लाभ' बेला घं. ११ मि. ५७ बजे से घं.१३ मि. ३३ बजे तक रहेगी अर्थात् अभिजिन्मुहूर्त के बाद ही यह लाभ-बेला आरम्भ होकर १॥ घंटे तक रहेगी जिसमें खाता(बसना) पूजनादि कृत्य भलीभाँति सुसम्पन्न किया जा सकता है। इसमें भी बहुत वणिक्-वर्ग खाता(बसना) का पूजन करते हैं; तत्पश्चात् 'अमृत' बेला घं. १३ मि. ३३ बजे से घं. १५ मि. ८ बजे तक रहेगी जो स्थिर लग्न सिंह से पूर्णतः व्याप्त रहेगी। अतः सिंह लग्न में 'अमृत' बेला का योग खाता(बसना)पूजनार्थ स्वर्ण में सुगन्ध के समान है। इसके बाद चौघड़िया-मुहूर्त के प्रेमियों को घं. १६ मि. ४३ बजे से घं. १८ मि.१९ बजे तक पुनः 'शुभ' बेला प्राप्त होगी, उसके बाद गोधूलि भी रहेगी। **'गोधूलि' सा मुनिभिरुक्ता सर्वकार्येषु शस्ता"** इत्यादि वचनानुसार अति प्रशस्त है तथा प्रदोषकाल श्रीपरशुराम भगवान् के जन्मोत्सव का समय होने से वह काल भी खाता(बसना)पूजनार्थ अति उत्तम होगा।

रथयात्रा—इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल २ शनिवार ता० १८ जून १९७७ ई० को है। द्वितीया उस दिन सूर्योदय से आधी रात के बाद घं. ३ मि. ४७ बजे तक रहेगी; किंतु उस दिन वार शनि एवं आर्द्रा नक्षत्र घं. ११ मि. ५९ बजे तक उत्तम नहीं है। अतएव इन दोनों का विधिवत दान पूजा करके स्थिर लग्न सिंह में खाता(बसना) पूजन करना चाहिए। 'सिंह' लग्न घं.९ मि.२७ बजे से आरम्भ होकर घं. ११ मि. ४५ बजे तक रहेगा। लग्नेश सूर्य उपचय लाभ-भाव में स्थित है। अतः व्यापार में उत्तम लाभदायक है। द्वितीय धन भाव में राहु नेष्ट है; अतः इसका दान करना चाहिये। अष्टम द्वादश दोनों शुद्ध नहीं है; अतः अष्टमस्थ केतु का भी दान कर देना आवश्यक है। लक्ष्मी-स्थान में स्वगृही बलवान भाग्येश केंद्रेश मंगल का राज्येश शुक्र का योग, केन्द्रस्थान व्यापार-भाव में बुध एवं गुरु का योग सभी प्रकार के दोषों का विनाशक है। **"केन्द्रे कोणे मदनरहितं दोषशतकं हरेत्सौम्यो द्विगुणमपि भृगु तथा लक्षं सुरगुरु"** इत्यादि वचनानुसार ये समस्त प्रकार के दोषों को शमन कर व्यापारोन्नति में सहायक होंगे। एकादश उपचय में सूर्य के साथ चंद्र की स्थिति भी उत्तम है। अतः इस लग्न में पूर्वोक्त दान पूजा करके खाता(बसना) का पूजन श्रेयस्कर होगा। अभिजिन्मुहूर्त के विचार से

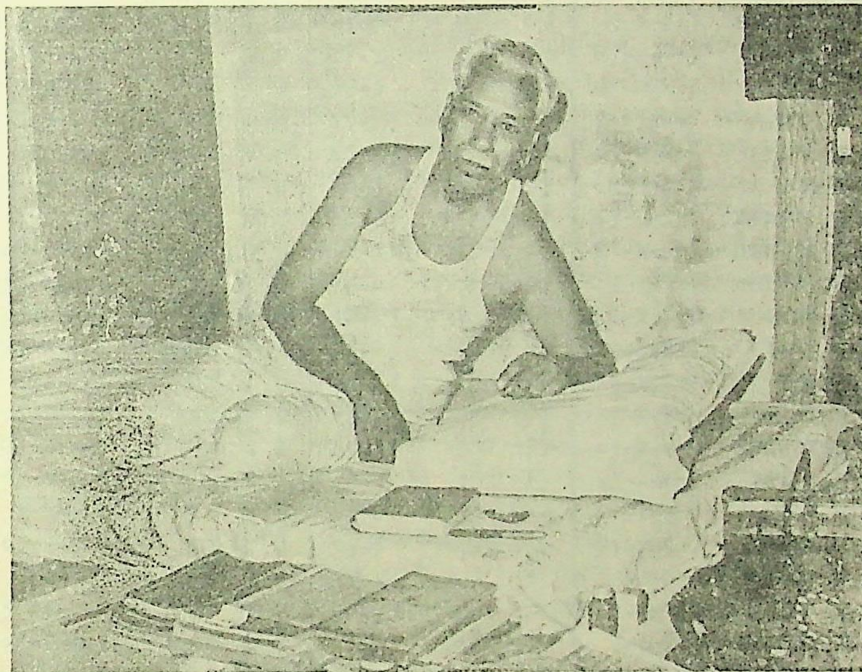
इस दिन घं. ११ मि. ८ बजे से घं. ११ मि. ५६ बजे तक 'अभिजिन्मुहू" भोग करेगा; लेकिन ठीक इसी समय आर्द्रा नक्षत्र भी पूर्ण (समाप्त) होता है, अतः इस दिन का अभिजिन्मुहूर्त संपूर्णतः आर्द्रा के अन्तर्गत आ जाने से इस मुहूर्त का उपयोग न करना ही उत्तम पक्ष है। इसके बाद पुनर्वसु नक्षत्र आरम्भ हो जायेगा ; यह चर-चल-संज्ञक नक्षत्र वाणिज्य-कर्म में मध्यम है, किंतु खाता(बसना)पूजन के साथ ही बकाया धन और विक्रेय वस्तुओं का लेन-देन व्यापारियों में होता ही है जिसके लिए पुनर्वसु नक्षत्र शुभद है, यथा—"हस्तांश्वि पुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तदा। तस्मिन् पण्य रतिज्ञानं भूषाशिष्यकलादिकम् ॥" अतः भद्रकारिणी द्वितीया तिथि एवं पुनर्वसु नक्षत्र के योग-काल में स्थिर लग्न 'वृश्चिक' घं.१६मि.१२ बजे से घं.१८मि.२६ बजे तक प्राप्त होगा। लग्नेश मं. उपचय में स्वगृही होकर लग्न को पूर्ण दृष्ट्या बलवान बना रहा है, साथ में व्यापारेश शुक्र भी है। व्यापार-स्थान में भी दो शुभ ग्रह गुरु बुध स्थित होकर लग्न को पूर्णतः देख रहे हैं। उपचय (लाभ) में राहु व्यापार में लाभ-वृद्धिकारक है और उसको धनेश-त्रिकोण गुरु की पूर्ण दृष्टि का भी बल मिल रहा है। द्वादश स्थान शुद्ध है; केवल अष्टमस्थ सू. और चं. का दान करके इस वृश्चिक लग्नमें खाता(बसना)का पूजन करना लाभ, शुभप्रद होगा। चौघड़िया-मुहूर्त के प्रेमियों को प्रातःकाल ही घं. ६ मि. ५४ बजे से घं. ८ मि. ३५ बजे तक 'शुभ' बेला का समय प्राप्त होगा। उसके बाद घं. १३ मि. ४० बजे से घं. १७ मि. ४ बजे तक 'लाभामृत' बेलाओं का संयुक्त-काल प्राप्त होगा ; इसमें घं. १३ मि.५६ बजे से घं.१६ मि.१२ बजे तक चर लग्न तुला व्यतीत होगा ; तत्पश्चात् स्थिर लग्न वृश्चिक का आरम्भ हो जायेगा। अतः घं. १६ मि. १२ बजे से घं. १७ मि. ४ बजे तक वृश्चिक लग्न एवं 'अमृत' बेला के संयुक्त-काल में परमोत्तम मुहूर्त प्राप्त होगा। वृश्चिक लग्न की ग्रह-स्थिति का विवेचन ऊपर किया ही जा चुका है। अतएव उक्त मुहूर्त में खाता(बसना) का पूजन सर्वथा कल्याणप्रद एवं श्रीवृद्धिकारक होगा।

दीपावली—इस वर्ष कार्तिक कृष्ण उदया चतुर्दशी गुरुवार ता. १० नवम्बर १९७७ ई० को दीपावली पड़ रही है। चतुर्दशी घं. १५ मि. ५२ बजे तक है, उसके बाद अमावस्या लग जायेगी। उसी दिन चित्रा नक्षत्र घं. ६ मि. ३३ बजे तक है, तत्पश्चात् स्वाती नक्षत्र का आरम्भ हो जायेगा और आयुष्मान् योग घं. २० मि. ५१ बजे तक रहेगा। स्वाती, अमावस्या और आयुष्मान् का संयोग परम पुण्यप्रद है। इसमें अभ्यंग स्नान अवश्य करना चाहिये। प्रदोषकालव्यापिनी अमावस्या में ही दीप-दान करना चाहिये और उसी समय लक्ष्मीजी की पूजा करनी चाहिये। निर्णयसिन्धु का वचन है—'प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीपवृक्षाश्च दातव्याःशक्त्यादेवगृहेषु च।' अत्यधिक व्यापारी-वर्ग श्रीमहालक्ष्मी इन्द्रादि देवताओं तथा महाकाली की पूजा बड़ी धूम-धाम के साथ करते हैं। उसके बाद खाता(बसना)आदि का पूजन करते हैं। लक्ष्मी एवं खाता(बसना)पूजन का मुख्यकाल प्रदोषकाल धर्म-ग्रन्थों में निर्दिष्ट है। इस वर्ष अमावस्या, स्वाती एवं आयुष्मान योग तीनों के संयुक्तकाल में प्रदोषकाल घं.१७ मि. ६ बजे से घं. १९ मि. ४६ बजे तक प्राप्त होगा। प्रदोषकालारम्भ के १६ मि. बाद ही स्थिर लग्न वृष घं.१७ मि.२८ बजे से आरम्भ होकर घं.१९ मि. २४ बजे तक रहेगा। ऐसा परमोत्तम समय अनेक वर्षों के बाद मिलता है। वृष लग्न में द्वितीय (धन) भाव में उच्चाभिलाषी गुरु विशेष शुभदायक है; धनेश त्रिकोणेश बुध वाणिज्य-भाव में बैठकर लग्न को अपनी पूर्ण दृष्टि से बल प्रदान कर रहा है। लग्नेश स्वगृही(बली) होकर उपचय में है, साथ में चं. और सूर्य भी हैं ; अन्य उपचय स्थान(तृतीय) में मंगल तथा एकादश(लाभ) में केतु पराक्रम एवं आय-वृद्धिकारक हैं ; अष्टम और द्वादशभाव भी शुद्ध है ; केवल चतुर्थ में शनि नेष्ट हैं ; वह लग्नेश, लग्न और राज्यभाव तीनों पर पूर्ण दृष्टि डाल रहा है ; अतः इसका दान कर इस सुलग्न में श्रीमहालक्ष्मीजी एवं खाता(बसना) का श्रद्धाभक्तिपूर्वक पूजन करना सर्वविध कल्याणकारी एवं व्यापार में लाभोन्नतिकारक होगा। इस वर्ष प्रदोष-काल के आरम्भ के साथ ही 'अमृत' चौघड़िया भी आरम्भ हो जायेगी जो घं. १८ मि.४७ बजे तक रहेगी। अतएव चौघड़िया-मुहूर्त के आस्थावानों के लिए भी यह पूजनार्थ सर्वोत्तम काल है।

महानिशीथ-काल इस वर्ष घं. २३ मि. १७ बजे से घं. ० मि. ६ बजे तक रहेगा ; इसमें अन्य स्थिर लग्न 'सिंह' घं. २३ मि.५५बजे से शुरू हो जायेगा जो अगली ता. ११ नवम्बर के घं. २ मि. १३ बजे तक रहेगा। बहुत सज्जन आधी रात में महालक्ष्मी का पूजन करते हैं। चौघड़िया-मुहूर्त के विचार से इस समय घं. २३ मि. ४२ से घं. १ मि. २० बजे तक "लाभ" बेला भी रहेगी। अर्धरात्रि, स्थिर लग्न सिंह और "लाभ" बेला का संयोग अति उत्तम है। सिंह लग्न का स्वामी सूर्य, स्वगृही बलवान शुक्र एवं चन्द्र के साथ पराक्रम भाव में लाभस्थ गुरु से पूर्णतः दृष्ट है। केन्द्र में बुध और आय भाव में गुरु भी शुभद है; द्वितीयाष्टम और द्वादश में रा.के. और नीचका मंगल नेष्ट है ; लग्नस्थ शनि वाणिज्यको देख रहा है ; यद्यपि गुरु की पूर्ण दृष्टि भी वाणिज्य भाव पर पड़ रही है तथापि श.रा.के.मं. का दान कर सर्व पूजनादि कृत्य-संपादन करना चाहिए। उसके बाद चौघड़िया-प्रेमियों को उत्तर-रात्रि में घं. २ मि. ५८ से. २६ बजे से घं. ६ मि.१४ से.५६ बजे यानी सूर्योदय समय तक 'शुभ' और 'अमृत' बेलाओं का संयुक्तकाल प्राप्त होगा। यह समय द्विस्वभाव कन्या लग्न एवं चर-लग्न तुला से व्याप्त रहेगा। यद्यपि चौघड़िया-मुहूर्त में लग्न-विचार गौण होता है ; तथापि कन्या लग्न में स्थिर 'वृष' नवांश का आरम्भ घं. ३ मि. ८ से. २० बजे आरम्भ होगा और शुभाधिक्य षड्वर्ग-काल मि. १४ से. ४३ तक अर्थात् घं. ३ मि. २३ से. ३ बजे तक रहेगा। अतः इस श्रेष्ठतम बेला में श्रीमहालक्ष्मी के पूजनार्थ संकल्पादि कृत्य आरम्भ कर सर्वविधि लक्ष्मी एवं खाता(बसना) का पूजन सुख, लाभ एवं श्री-वृद्धिकारक होगा।

सन् १९७७ ई० के अति नेष्ट-काल

जिन लोगों को शनि की साढ़ेसाती और ढैया या अशुभ दशा-अन्तर्दशा के कारण किसी तरह के अशुभ फल का सामन करना पड़ रहा है, उनको इस वर्ष १९७७ ई० में आगे लिखी तारीखों को बड़ी सावधानी रखनी चाहिए; कोई महत्त्वपूर्ण कार्य भी न करना चाहिये; बड़ी शान्ति, संयमपूर्वक यथासंभव एक ही स्थान पर भगवत्स्मरण में अशुभ समय व्यतीत कर देना चाहिये। नीचे प्रत्येक मास की अशुभ तारीखों का जो समय लिखा गया है, उस समय से करीब ५ घण्टा पहले से ५ घण्टा बाद तकका अति नेष्ट-काल समझें। ज्योतिष का यह नवीन विषय काशी के प्रतिष्ठित नागरिकों में अत्यधिक सम्मानित हमारे शुभैषी श्रीमहावीर प्रसादजी माथुर एस्ट्रॉलॉजर की देन है जो काशी में 'जोशीजी' के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह अति महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी विषय सन् १९६६ ई० की जंत्री में छापना आरम्भ किया गया था। तब से बराबर इसकी प्रशंसा में अनेकशः पाठकों के पत्र आते रहे हैं। सन् १९६८ ई० की जंत्री में इन तारीखों के निकालने का तरीका भी श्रीजोशीजी ने समझा दिया था; किन्तु अधिकतर पाठकों को ग्रहों के दैनिक दृष्टियोगों के द्वारा इन तारीखों तथा उनके अशुभ समय को संकलित करने में कठिनाई का अनुभव होता था। अतः उनका आग्रह था कि तारीखों एवं समयों की तैयारशुदा तालिका (Ready Reckoner) ही पाठकों के सुविधापूर्वक उपयोग के लिये जंत्री में छापा जाय। तदनुसार सन् १९७७ ई० के लिये नेष्ट-काल के योग के साथ उन राशियों के अंक भी दे दिये गये हैं जिन पर उक्त नेष्ट-काल का विशेष तीव्र प्रभाव पड़ेगा। इन जन्म एवं लग्न-राशियों से प्रभावित व्यक्तियों के निजी फल के अलावा मेदिनी और व्यापारिक ज्योतिष एवं सट्टा रेस-लॉटरी के अंक-विज्ञान की दृष्टि से भी इन राश्यङ्कों का अधिक महत्त्व है। इससे लेख की उपयोगिता और भी बढ़ गयी है।



[फलित के निगूढ़ तत्वों की अनुचिंतन-मुद्रा में श्रीमहावीर प्रसाद माथुर 'जोशीजी']

ता.	मास	घं. मि.	योग	विशेष प्रभावित राशियाँ	ता.	मास	घं. मि.	योग	विशेष प्रभावित राशियाँ
*५	जनवरी	४-३५	सू. श. षडा.	१-३-५-९	*२०	जनवरी	११-३६	मं. श. षडा.	१-३-५-९
*६	,,	३-२९	चं. श. क्रांतिसा.	१-३-८-९	,,	,,	२१-३७	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९
,,	,,	१७-४०	चं. सू. प्रतियोग	१-२-६-८	२३	,,	३-९	चं. श. षडा.	१-४-१०-११
*८	,,	२-१९	चं. श. युति	१-३-५-९	२८	,,	०-२४	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०
,,	,,	१४-२	चं. श. क्रांतिसा.	१-३-८-९	*२९	,,	९-५४	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-४-११
१४	,,	१५-३३	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०	,,	,,	१५-७	सू. चं. क्रांतिसा.	२-३-७-९
१५	,,	१२-७	चं. श. क्रांतिसा.	१-५-८-१२	३०	,,	१५-५४	सू. श. क्रांतिसा.	१-२-४-११
१८	,,	१८-५३	चं. श. षडाष्टक	१-४-९-१०	*२	फरवरी	२४-१०	चं. श. क्रांतिसा.	३-४-८-१२
*१९	,,	०-४६	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-६-९	,,	,,	१५-६	सू. श. प्रतियोग	१-३-७-९
,,	,,	८-२७	सू. राहु केन्द्र	४-५-६-७	,,	,,	१३-४०	चं. सू. क्रांतिसा.	३-४-८-१२
,,	,,	१८-५३	चं. राहु केन्द्र	४-५-६-७	,,	,,	१९-४७	चं. मं. प्रतियोग	१-४-९-१०
,,	,,	१९-४१	चं. सू. युति	२-३-७-९	*४	,,	५-५८	चं. श. युति	१-३-५-९

ता.	मास	घं. मि.	योग	विशेष प्रभावित राशियाँ	ता.	मास	घं. मि.	योग	विशेष प्रभावित राशियाँ
४	फरवरी	९-२६	चं. सू. प्रतियोग	२-३-७-९	२६	अप्रैल	२०-५७	सू. चं. क्रांतिसा.	५-६-१०-१२
९	,,	१५-४७	चं. रा. युति	४-७-८-१२	२७	,,	३-४०	चं. श. युति	१-३-५-९
*१०	,,	१७-१६	सू. चं. क्रांतिसा.	२-३-७-९	१	मई	०-१०	सू. श. केन्द्र	५-७-९-१०
,,	,,	१७-२१	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०	*३	,,	१४-२६	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०
१२	,,	५-५८	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-१२	,,	,,	१८-३३	चं. सू. प्रतियोग	५-६-१०-१२
*१४	,,	२३-०	चं. श. षडा.	१-४-९-१०	४	,,	८-५६	चं. सू. क्रांतिसा.	४-७-११-१२
,,	,,	२२-१६	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-६-९	५	,,	२१-३३	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-१२
*१७	,,	२-४२	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९	७	,,	१-१४	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-६-९
,,	,,	५-१	चं. सू. क्रांतिसा.	१-२-४-१०	*८	,,	४-१	चं. सू. क्रांतिसा.	५-६-१०-१२
१८	,,	९-७	चं. सू. युति	३-४-८-१०	,,	,,	९-२६	चं. मं. केन्द्र	१-६-९-१२
१९	,,	८-२१	चं. श. षडा.	१-४-१०-११	,,	,,	१४-४८	चं. श. षडा.	१-४-९-१०
२२	,,	२१-१२	सू. चं. क्रांतिसा.	३-४-८-१०	९	,,	१८-१०	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९
*२४	,,	४-१७	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०	१२	,,	१-८	चं. श. षडा.	१-४-१०-११
,,	,,	२०-११	मं. श. प्रतियोग	१-४-७-१०	१३	,,	१९-५६	सू. श. क्रांतिसा.	१-४-६-१०
२६	,,	१०-४४	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-४-११	१६	,,	२३-५६	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०
२८	,,	२०-५८	चं. श. क्रांतिसा.	२-३-४-९	१८	,,	८-२१	चं. सू. युति	१-६-७-११
*२	मार्च	६-२१	सू. श. षडा.	१-३-५-११	१९	,,	१३-१९	चं. श. क्रांतिसा.	२-४-७-११
,,	,,	८-४४	चं. रा. केन्द्र	१-४-७-१२	२१	,,	१६-५५	चं. श. क्रांतिसा.	३-४-८-१२
३	,,	११-३२	चं. श. युति	१-३-५-९	२४	,,	१३-९	चं. श. युति	१-३-५-९
*५	,,	४-२२	चं. सू. क्रांतिसा.	२-४-५-१०	३१	,,	३-४८	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०
,,	,,	२२-४३	चं. सू. प्रतियोग	३-४-८-१०	१	जून	२०-५७	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-१२
७	,,	१७-२	चं. सू. क्रांतिसा.	३-४-८-१०	२	,,	२-१	चं. सू. प्रतियोग	१-६-७-११
९	,,	२०-१४	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०	*४	,,	०-३८	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-४-९
१२	,,	१-५५	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-१२	,,	,,	३-२५	चं. श. षडा.	१-४-९-१०
१३	,,	१४-०	चं. श. क्रातिसा.	१-४-६-९	५	,,	५-२९	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९
१४	,,	१-३५	चं. श. षडा.	१-४-९-१०	८	,,	११-२९	चं. श. षडा.	१-४-१०-११
१६	,,	६-१९	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९	१३	,,	१०-१४	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०
१८	,,	१२-५९	चं. श. षडा.	१-४-१०-११	१५	,,	५-५६	चं. श. क्रांतिसा.	२-४-६-७
*१९	,,	१०-३५	सू. चं. क्रांतिसा.	३-४-१०-११	१६	,,	२३-५३	चं. सू. युति	२-७-८-१२
,,	,,	१७-२	सू. चं. क्रांतिसा.	४-५-९-११	१८	,,	१४-३५	चं. श. क्रांतिसा.	३-४-८-१२
२०	,,	०-३	चं. सू. युति	४-५-९-११	२०	,,	२३-२९	चं. श. युति	१-३-५-९
२३	,,	९-१२	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०	*२६	,,	१-५	चं. रा. युति	६-७-११-१२
२६	,,	१२-३०	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-४-११	,,	,,	२-२०	मं. श. केन्द्र	२-४-५-१०
२७	,,	१२-४२	चं. श. क्रांतिसा.	२-३-४-१२	*२७	,,	१७-६	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०
*३०	,,	१५-९	चं. मं. षडा.	४-८-११-१२	,,	,,	१९-१९	च. मं. प्रतियोग	१-२-७-१०
,,	,,	१८-५९	चं. श. युति	१-३-५-९	२८	,,	२१-३५	चं. श. क्रांतिसा.	४-७-८-१२
१	अप्रैल	२२-४२	सू. चं. क्रांतिसा.	४-५-९-११	*१	जुलाई	८-५४	चं. सू. प्रतियोग	२-७-८-१२
२	,,	४-२९	मं श. षडा.	४-८-११-१२	,,	,,	१८-२९	चं. श. षडा.	१-४-९-१०
४	,,	९-३९	चं. सू. प्रतियोग	४-५-९-११	,,	,,	२३-२६	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-४-९
६	,,	३-१७	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०	३	,,	२०-३	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९
८	,,	२१-४	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-१२	६	,,	०-५७	चं. श. षडा.	१-४-१०-११
९	,,	७-३९	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-१२	१०	,,	२२-४५	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०
१०	,,	६-३	चं. श. षडा.	१-४-९-१०	१२	,,	१-७	चं. श. क्रांतिसा.	२-४-७-११
१२	,,	१०-४१	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९	*१६	,,	१४-६	चं. सू. युति	१-३-८-९
१३	,,	१३-५	सू. चं. क्रांतिसा.	४-५-९-११	,,	,,	१०-४०	चं. श. क्रांतिसा.	३-४-८-१२
१४	,,	१८-१	चं. श. षडा.	१-४-१०-११	१८	,,	११-९	चं. श. युति	१-३-५-९
*१८	,,	१६-५	चं. सू. युति	५-६-१०-१२	*२५	,,	६-२३	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०
,,	,,	१८-५७	चं. सू. क्रांतिसा.	१-४-६-१०	,,	,,	२१-३	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-१२
१९	,,	१५-३९	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०	*२९	,,	९-४६	चं. श. षडा.	१-४-९-१०
२२	,,	२२-३	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-४-११	,,	,,	[illegible]	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-४-१०
२३	,,	१८-१०	चं. श. क्रांतिसा.	१-२-४-११	३१	,,	११-४६	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९

ता.	मास	घं. मि.	योग	विशेष प्रभावित राशियाँ
२	अगस्त	१६-२६	चं. श. षडा.	१-४-१०-११
७	,,	२२-२१	चं. श. क्रांतिसा.	२-४-७-११
*८	,,	३-९	सू. चं. क्रांतिसा.	२-३-८-९
,,	,,	१३-२	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०
९	,,	१८-१३	सू. श. क्रांतिसा.	२-४-७-११
*१३	,,	११-५८	सू. श. युति	१-३-५-९
,,	,,	५-४५	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-९
,,	,,	१६-९	चं. सू. क्रांतिसा.	१-४-८-९
*१५	,,	०-२८	चं. श. युति	१-३-५-९
,,	,,	३-१	चं. सू. युति	१-३-८-९
२०	,,	१९-०	चं. सू. क्रांतिसा.	२-४-९-१०
*२१	,,	१७-५८	चं. श. केन्द्र	१-३-४-१०
,,	,,	१८-३७	चं. श. क्रांतिसा.	४-७-११-१२
,,	,,	२१-२६	चं. मं. षडा.	२-३-७-१०
*२५	,,	१६-१	चं. रा. केन्द्र	३-६-७-९
,,	,,	२३-४५	चं. श. षडा.	१-[illegible]-९-१०
२६	,,	१४-२४	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-६-१०
*२८	,,	२-५६	चं. श. प्रतियोग	१-३-७-९
,,	,,	४-५८	चं. सू. क्रांतिसा.	३-४-१०-११
२९	,,	१-४०	चं. सू. प्रतियोग	२-४-९-१०
*३०	,,	८-८	चं. श. षडा.	१-४-१०-११
,,	,,	२०-१०	चं. मं. केन्द्र	३-४-८-१२
१	सितम्बर	१६-१८	सू. चं. क्र तिसा.	२-४-९-१०
३	,,	२०-५०	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-१०-१२
४	,,	४-१०	चं. श. केन्द्र	५-७-९-१०
१०	,,	०-१२	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-८-९
११	,,	१५-८	चं. श. युति	२-४-६-१०
*१३	,,	२-१४	चं. सू. क्रांतिसा.	२-४-५-१०
,,	,,	१४-५२	चं. सू. युति	२-४-९-१०
१४	,,	१८-५८	सू. चं. क्रांतिसा.	२-४-९-१०
१७	,,	१६-१४	सू. श. क्रांतिसा.	४-७-११-१२
१८	,,	५-१५	चं. श. केन्द्र	२-४-५-११
२२	,,	११-४२	चं. श. षडा.	२-५-१०-११
*२३	,,	५-२३	चं. श. क्रांतिसा.	२-५-७-१०
,,	,,	१६-१३	चं. श. प्रतियोग	२-४-८-१०
*२६	,,	१५-२५	सू. चं. क्रांतिसा.	३-५-१०-११
,,	,,	२२-३२	चं. श. षडा.	२-५-११-१२
*२७	,,	७-४३	चं. सू. क्रांतिसा.	३-५-१०-११
,,	,,	१३-४७	चं. सू. प्रतियोग	३-५-१०-११
३०	,,	२०-५	चं. श. क्रांतिसा.	१-५-६-१२
१	अक्टूबर	१८-४७	चं. श. केन्द्र	६-८-१०-११
७	,,	१७-४३	चं. श. क्रांतिसा.	४-५-८-९
*९	,,	२१-१५	चं. सू. क्रांतिसा.	३-५-१०-११
,,	,,	६-८	चं. श. युति	२-४-६-१०
*१३	,,	२-१	चं. सू. युति	३-५-१०-११
,,	,,	४-१५	चं. सू. क्रांतिसा.	५-६-१०-११
१४	,,	१६-५७	चं. श. क्रांतिसा.	५-७-११-१२
१५	,,	१७-१४	चं. रा. केन्द्र	२-४-५-११
*१९	,,	१९-३८	चं. मं. प्रतियोग	१-४-९-१०
,,	,,	२१-५४	चं. श. षडा.	२-५-१०-११
२०	,,	१७-५१	चं. श. क्रांतिसा.	३-५-९-१०

ता.	मास	घं. मि.	योग	विशेष प्रभावित राशियाँ
२१	अक्टूबर	१२-९	चं. सू. क्रांतिसा.	४-६-११-१२
*२२	,,	२-४	चं. मं. षडा.	१-४-५-११
,,	,,	२-५३	चं. श. प्रतियोग	२-४-८-१०
*२३	,,	७-५१	चं. रा. षडा.	३-६-७-११
,,	,,	१०-१५	चं. श. षडा.	२-५-११-१२
*२७	,,	५-५	चं. सू. प्रतियोग	४-६-११-१२
,,	,,	१९-७	चं. सू. क्रांतिसा.	१-७-१०-१२
,,	,,	२०-२७	चं. श. क्रांतिसा.	१-५-१०-१२
२८	,,	५-३५	सू. श. क्रांतिसा.	५-७-११-१२
*२९	,,	७-२०	चं. श. केन्द्र	६-८-१०-११
,,	,,	२१-४७	चं. सू षडा.	२-४-७-८
३	नवम्बर	१२-१९	सू. चं. क्रांतिसा.	४-६-११-१२
४	,,	९-२	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-५-९
*५	,,	१७-५५	चं. रा. अर्ध-केन्द्र	२-४-५-११
,,	,,	१९-३७	चं. श. युति	२-४-६-१०
१०	,,	२२-३७	चं. श. क्रांतिसा.	५-७-११-१२
११	,,	१२-३९	चं. सू. युति	४-६-११-१२
*१२	,,	३-४१	चं. रा. अर्ध-केन्द्र	६-७-८-११
,,	,,	२३-४६	चं. सू. क्रांतिसा.	१-७-८-१२
,,	,,	६-९	चं. श. केन्द्र	२-४-५-११
,,	,,	२३-४७	सू. चं. क्रांतिसा.	४-६-११-१२
१४	,,	१४-३५	सू. चं. क्रांतिसा.	४-६-११-१२
१६	,,	७-२७	चं. श. षडा.	२-५-१०-११
१७	,,	४-५२	चं. श. क्रांतिसा.	१-५-६-१०
१८	,,	११-३६	चं. श. प्रतियोग	२-४-८-१०
*२०	,,	११-३	सू. रा. अर्धकेन्द्र	६-७-८-११
,,	,,	१९-३	चं. श. षडा.	२-५-११-१२
२२	,,	२०-४०	सू. श. केन्द्र	२-४-५-११
२३	,,	२३-१७	चं. श. क्रांतिसा.	१-५-१०-१२
*२५	,,	१६-५६	चं. श. केन्द्र	६-८-१०-११
,,	,,	२३-१	चं. सू. प्रतियोग	१-५-७-१२
१	दिसम्बर	२०-२१	चं. श. क्रांतिसा.	४-५-८-९
३	,,	५-३१	चं. श. युति	२-४-६-१०
८	,,	८-५०	चं. श. क्रांतिसा.	५-७-९-१०
*९	,,	१२-३८	चं. रा. अर्धकेन्द्र	६-७-८-११
,,	,,	१८-४०	चं. श. केन्द्र	२-४-५-११
१०	,,	२३-३	चं. सू. युति	१-५-७-१२
*१३	,,	१०-४२	सू. श. क्रांतिसा.	४-५-८-९
,,	,,	१७-२८	चं. श. षडा.	२-५-१०-११
१४	,,	१५-१०	चं. श. क्रांतिसा.	२-५-९-१०
१५	,,	१९-४१	चं. श. प्रतियोग	२-४-८-१०
*१८	,,	१-४१	चं. श. षडा.	२-५-११-१२
,,	,,	२२-३	चं. रा. प्रतियोग	६-७-११-१२
२१	,,	६-२३	चं. श. क्रांतिसा.	१-५-१०-१२
*२२	,,	२३-१५	चं. श. केन्द्र	६-८-१०-११
,,	,,	२३-५८	चं. सू. षडा.	२-६-९-१०
२५	,,	१८-१९	चं. सू. प्रतियोग	१-२-६-८
२९	,,	-३७२	चं. श. क्रांतिसा.	१-४-५-९
*३०	,,	११-१०	चं. श. युति	२-४-६-१०
,,	,,	[illegible]-४२	सू. श. क्रांतिसा.	१-५-६-८

*संपूर्ण दिन-रात नेष्ट है।

पौष शुक्ल ११ से माघ शुक्ल ११ तक, सम्वत् २०३३, शके १८९८, उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु ।

वार ३१ दिन	जनवरी १९७७ ई०	पौष शुक्लपक्ष तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	चं. राशि-प्रवेश राशि	घं. मि.	दिनमान घटी प.	काशी सूर्य उ.म.अ. भारतीय स्टें. टा. उ. घं. मि.	मध्याह्न घं.	मि.	से.	अ. घं. मि.
श.	१	११	९	०	१०	२३	कृति.	६०	०	२४	०	साध्य	४१	५५	२३	३३	भ.	१०	२३	बव	२३	३८	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	१	३१	[illegible]
र.	२	१२	१५	१०	१२	५२	कृति.	३	५०	८	२०	शुभ	४३	३३	०	१३	बा.	१२	५२	कौ.	१	५५			१२	४८	१२	२	०	१६
चं.	३	१३	२०	२५	१४	५८	रोहि.	१०	२३	१०	५७	शुक्ल	४४	२०	०	३२	तै.	१४	५८	ग.	३	४			१३	४८	१२	२	२७	१७
मं.	४	१४	२४	२५	१६	३४	मृग.	१५	४५	१३	६	ब्रह्म	४४	१३	०	२९	व.	१६	३४	भ.	५	७	मि.	[illegible]	१४	४८	१२	२	५५	१७
बु.	५	१५	२७	१०	१७	४०	आर्द्रा	१९	५८	१४	४७	ऐन्द्र	४३	८	०	३	बव	१७	४०	बा.	५	५९			१५	४८	१२	३	२२	१८
		माघ कृष्णपक्ष																												
गु.	६	१	२८	४५	१८	१८	पुन.	२२	५८	१५	५९	वैधृति	४१	१०	२३	१६	कौ.	१८	१८	तै.	६	२३	क.	[illegible]	१६	४८	१२	३	४८	१९
शु.	७	२	२९	७	१८	२८	पुष्य	२४	५३	१६	४६	विष्कुं.	३८	२०	२२	९	ग.	१८	२८	व.	६	२२			१७	४९	१२	४	१४	२०
श.	८	३	२८	३८	१८	१६	आश्ले.	२५	५५	१७	११	प्रीति	३४	५०	२०	४५	भ.	१८	१६	बव	५	५९	सिं.	[illegible]	१९	४९	१२	४	४०	२०
र.	९	४	२७	१५	१७	४३	मघा	२६	५	१७	१५	आयु.	३०	३८	१९	४	बा.	१७	४३	कौ.	५	१७			२०	४९	१२	५	५	२१
चं.	१०	५	२५	८	१६	५२	पू. फा.	२५	३०	१७	१	सौभा.	२५	५०	१७	९	तै.	१६	५२	ग.	४	१७	कं.	[illegible]	२२	४९	१२	५	२९	२२
मं.	११	६	२२	१३	१५	४२	उ. फा.	२४	१३	१६	३०	शोभन	२०	३०	१५	१	व.	१५	४२	भ.	२	५८			२४	४९	१२	५	५३	२२
बु.	१२	७	१८	३५	१४	१५	हस्त	२२	१०	१५	४१	अति.	१४	३३	१२	३८	बव	१४	१५	बा.	१	२२			२५	४९	१२	६	१७	२३
गु.	१३	८	१४	१३	१२	३०	चित्रा	१९	२५	१४	३५	सुकर्मा	८	०	१०	१	कौ.	१२	३०	तै.	२३	३०	तु.	[illegible]	२७	४९	१२	६	४०	२४
शु.	१४	९	९	१०	१०	२९	स्वाती	१६	०	१३	१३	धृति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग.	१०	२९	व.	२१	२०			२९	४९	१२	७	२	२४
श.	१५	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	विशा.	११	५५	११	३५	गण्ड	४५	१०	०	५३	भ.	८	११	बव	[illegible]	[illegible]	वृ.	[illegible]	३१	४९	१२	७	२३	२५
र.	१६	१२	५०	३८	३	४	अनु.	७	२३	९	४६	वृद्धि	३६	४८	२१	३२	कौ.	१६	२३	तै.	३	४			३३	४९	१२	७	४४	२६
चं.	१७	१३	४४	५	०	२७	ज्येष्ठा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्रुव	२८	२०	१८	९	ग.	१३	४५	व.	०	२७	ध.	[illegible]	३५	४९	१२	८	५	२७
मं.	१८	१४	३७	४८	२१	५६	पू. षा.	५३	२३	४	१०	व्या.	२०	३	१४	५०	भ.	११	११	श.	२१	५६			३७	४९	१२	८	२४	२८
बु.	१९	३०	३२	१०	१९	४१	उ. षा.	४९	४५	२	४३	हर्षण	१२	१३	११	४२	च.	८	४८	ना.	[illegible]	[illegible]	म.	[illegible]	३९	४९	१२	८	४३	२९
		माघ शुक्लपक्ष																												
गु.	२०	१	२७	३८	१७	५२	श्रवण	४७	२०	१	४५	वज्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बव	१७	५२	बा.	५	१४			४१	४९	१२	९	१	२९
शु.	२१	२	२४	३०	१६	३७	धनि.	४६	२३	१	२२	व्यती.	५४	१०	४	२९	कौ.	१६	३३	तै.	४	१८	कुं.	[illegible]	४४	४९	१२	९	१९	३०
श.	२२	३	२३	१०	१६	४	शत.	४७	१८	१	४३	वरीया	५०	५०	३	८	ग.	१६	४	व.	५	११			४६	४८	१२	९	३५	३१
र.	२३	४	२३	४५	१६	१८	पू. भा.	५०	५	२	५०	परिघ	४९	०	२	२४	भ.	१६	१८	बव	४	४८	मी.	[illegible]	४९	४८	१२	९	५१	३२
चं.	२४	५	२६	१८	१७	१९	उ. भा.	५४	४३	४	४१	शिव	४८	४०	२	१६	बा.	१७	१९	कौ.	६	११			५१	४८	१२	१०	६	३३
मं.	२५	६	३०	४०	१९	४	रेवती	६०	०	२४	०	सिद्धि	४९	३५	२	३८	तै.	१९	४	ग.	६	४७			५४	४८	१२	१०	२०	३३
बु.	२६	७	३६	३०	२१	२३	रेवती	०	५८	७	१०	साध्य	५१	३०	३	२३	ग.	८	१३	व.	२१	२३	मे.	[illegible]	५६	४७	१२	१०	३४	३४
गु.	२७	८	४३	८	०	२	अश्वि.	८	१८	१०	६	शुभ	५३	५३	४	२०	भ.	१०	४२	बव	०	२			५९	४७	१२	१०	४६	३५
शु.	२८	९	४९	५५	२	४५	भरणी	१६	८	१३	१४	शुक्ल	५६	१८	५	१८	बा.	१३	२३	कौ.	२	४५	वृ.	[illegible]	[illegible]	४७	१२	१०	५८	३५
श.	२९	१०	५६	१०	५	१४	कृति.	२३	४५	१६	१६	ब्रह्म	५८	१८	६	५	तै.	१५	५९	ग.	५	१४			४	४६	१२	११	९	३६
र.	३०	११	६०	०	२४	०	रोहि.	३०	३५	१९	०	ऐन्द्र	५९	२५	६	३२	व.	१८	१५	भ.	६	४५			७	४६	१२	११	१९	३७
चं.	३१	११	१	२०	७	१७	मृग.	३६	१३	२१	१४	वैधृति	५९	३०	६	३३	भ.	७	१७	बव	२०	१	मि.	[illegible]	१०	४५	१२	११	२८	३८

[पृष्ठ ४८ का शेषांश]घं. १५ मि. ३६ बजे तक। [Mमध्याह्नकाल में पूजा। **व्रत की पूर्णिमा** १५ पुण्यतमा। महा(व्यती) पात घं. १२ मि. ३९ बजे से घं. १८ मि. ११ बजे तक। ⊙सूर्य हस्त में घं. २३ मि. ५४ बजे। सूर्य-सूर्य, स्त्री-पुरुष योग, मेष वाहन, नीरा नाड़ी, तदीश शुक्र-तीव्र वायु-वेग से सामान्य वर्षा हो। [Nअथर्ववेदियों का उपाकर्म। उमामहेश्वर १५ व्रत, अनन्त-व्रत की तरह विधि। प्रौष्ठपदी-श्राद्ध। महालयारम्भ। भद्रावती-स्नान। लोकपाल-पूजा। भागवत सप्ताह-समाप्ति। यायिजय योग घं. ० मि. २६ बजे से घं. ५ मि.५२बजे तक। भारत में अदृश्य मान्य चन्द्र-ग्रहण, कान्ति-मालिन्यारंभ घं. ११ मि. ४८ बजे, निर्मलाकान्ति घं. १६ मि १० बजे।

अनिष्टस्थानस्थोऽपि क्रूरो न दोषकृत्—अनिष्टस्थान संस्थोपि लग्नात्क्रूरो न दोषकृत्। बुधभार्गव जीवैश्चेद दृष्टः केन्द्र त्रिकोणगैः ॥ बुधभार्गव जीवैश्चेद्दृष्टाः केंद्रत्रिकोणगैः। पापा भवन्ति सौम्याः सौम्यादिगुण फलं दद्युः ॥

लग्न से अनिष्ट स्थान में स्थित क्रूरग्रह भी हो तो वह दोषकारक नहीं होता है, यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र [illegible] अथवा गुरु की दृष्टि पापग्रहों पर हो तो पापग्रहों का फल शुभ हो जाता है। शुभ ग्रहों पर दृष्टि हो तो उनका फल द्विगुणित हो जाता है।

जनवरी सन् १९७७ ई०। पौष शुक्ल ११ से माघ शुक्ल ११ तक, सं० २०३३ विक्रमीय।
राष्ट्रीय पौष मास ११ से राष्ट्रीय माघ मास ११ तक, शके १८९८ शालिवाहन।
महर्रम १० से सफर ११ तक, १३९७ हिजरी।

Sसुभिक्षकरी। प्रयाग में या काशी के दशाश्वमेध घाट पर स्नान। अन्वाधान। द्वापर-युगादि। **श्रीप्रयागराज में कुम्भ-महापर्व का द्वितीय(मुख्य)स्नान।** सूर्य सायन कुम्भ में घं.९मि.४५बजे। ◡चंद्र-दर्शन मु. ३०साम्यार्घ। Mसे ३ दिन अवश्य स्नान करना चाहिये।

वार	उदित तिथि	सौर(धनु) पौष मा. २९ दिन	मोहर्रम २९ दि. हिजरी	राष्ट्रीय पौष मास ३० दि.	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि(मार्गी)स्थायी(मन्दलेह)जय योग, सन्धिकर, योगादि।
श.	११	१७	१०	११	१	–भद्रा घं. १० मि. २३ बजे समाप्त। पुत्रदा ११ **एकादशी व्रत** सबका। मन्वादि ११। ईसाई नव-A
र.	१२	१८	११	१२	२	–प्रदोष १२ व्रत। यायिजय योग घं. १२ मि. ५२ बजे प्रारम्भ। त्रिपुष्कर योग घं.६ मि. ४८ बजे सेB
चं.	१३	१९	१२	१३	३	–यायिजय योग घं. १० मि. ५७ बजे समाप्त। [Bघं. ८ मि. २० बजे तक।
मं.	१४	२०	१३	१४	४	–भद्रा घं. १६ मि.३४ बजे प्रारम्भ। स्थायिज योग घं. ६ मि. ४८ बजे से घं. १३ मि. ६ बजे तक।
बु.	१५	२१	१४	१५	५	–भद्रा घं.५ मि.७ बजे समाप्त। अन्वाधान। स्नान-दान **व्रत की पौषी पूर्णिमा १५।** माघ-स्नान-व्रत यम-
						नियमादि प्रारम्भ। समुद्र, नदी में या काशी में दशाश्वमेध घाट पर स्नान। शाकम्भरी-जयन्ती १५।
गु.	१	२२	१५	१६	६	–इष्टि। माघ मास प्रारम्भ। माघ भर प्रयाग में या काशी में दशाश्वमेध घाट पर स्नान करना चाहिये।N
शु.	२	२३	१६	१७	७	– [Nयायिजय योग घं. ६ मि. ४८ बजे से घं. १५ मि. ५९ बजे तक।
श.	३	२४	१७	१८	८	–भद्रा ६ मि.२२ बजे से घं. १८ मि.१६ बजे तक। **संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत; चन्द्रोदय घं.२० मि.१७**
						बजे। श्रीगणेशजी की उत्पत्ति। यायिजय योग घं. ६ मि. ४९ बजे से घं. १७ मि. ११ बजे तक।
र.	४	२५	१८	१९	९	–रविवती ४। [Aवर्षारम्भ। मुहर्रम(ताजिया)। चं.☌गु. पिधान घं.७मि.३८ बजे, चं. से गु.०°९ उत्तर।
चं.	५	२६	१९	२०	१०	–सोमवती ५। [E६ मि. ४९ बजे से घं. २१ मि. ५६ बजे तक। रटन्ती कालिका-पूजा।
मं.	६	२७	२०	२१	११	–भद्रा घं० १५ मि.४२ बजे प्रारम्भ। त्रिपुष्कर योग घं.१५ मि. ४५ बजे से घं. १६ मि.३० बजे तक।
बु.		२८	२१	२२	१२	–भद्रा घं. २ मि. ५८ बजे समाप्त। स्वामी रामानन्दाचार्य-जयन्ती। अष्टका। लोहड़ी (पंजाब)।
गु.	८	२९	२२	२३	१३	–कालाष्टमी ८। यायिजय योग घं. १४ मि. ३५ बजे प्रारम्भ। श्रीप्रयागराज में कुम्भ महापर्व काC
शु.	९	१	२३	२४	१४	–भद्रा घं. २१ मि.२० बजे प्रारम्भ। यायिजय योग घं.६ मि.४९ बजे तक। ⊙सूर्य की मकर-संक्रान्ति
						(खिचड़ी) घं.१ मि.३० बजे; मु०१५ महर्घ, विशेष पुण्यकाल घं. ७ मि. ५४ बजे तक, सामान्य पुण्य-
						काल दिनभर। काष्ठ अन्न-दान, प्रयाग में या काशी के दशाश्वमेध घाट पर स्नान, गंगासागर-यात्रा,
						सकल्पादि में प्रयोजनीय शिशिरऋतु शुरू। धनु(खर)मास समाप्त। सौर माघ मास शुरू। करिदिन।
श.	१०	२	२४	२५	१५	–भद्रा घं. ८ मि. ११ बजे समाप्त। अनुदया **षट्तिला ११ एकादशी व्रत** स्मार्तों का। यायिजय योगD
र.	१२	३	२५	२६	१६	–षट्तिला एकादशी व्रत वैष्णवों का। यायिजय योग घं. ५ मि. ४५ बजे तक।
चं.	१३	४	२६	२७	१७	–सोमप्रदोष १३ व्रत, धन पुत्र की इच्छावालों को व्रतारम्भ करना चाहिये। मेरु त्रयोदशी(जैन)।
मं.	१४	५	२७	२८	१८	–भद्रा घं. ० मि. २७ बजे से घं.११ मि. ११ बजे तक। मास शिवरात्रि १४ व्रत। स्थायीजय योग घं.E
बु.	३०	६	२८	२९	१९	–मौनी ३० अमावस्या। गंगा-स्नान। स्नान-दान श्राद्ध की दर्श अमावस्या ३०; शुभवारी प्रजासुखकरीF
गु.	१	७	२९	३०	२०	–इष्टि। श्रीवल्लभावतार १। वल्लभ-जयन्ती। पूरे सालभर स्नान करने में अशक्त व्यक्तियों को आजM
शु.	२	८	१	१	२१	–पंचक प्रारम्भ घ.१३मि. २८ बजे। सफर२माह सन१३९७हिजरी शुरू। राष्ट्रीय माघ मास शुरू।
श.	३	९	२	२	२२	–पचक। तिल ४। कुन्द ४। कुन्द-पुष्प से देव-जपूा।
र.	४	१०	३	३	२३	–पचक। भद्रा घं. ५ मि. ११ बजे से घं. १६ मि. १८ बजे तक। **वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत।** गणेश-
						जयन्ती ४। ढण्ढिराज-व्रत ४। सोपपदा ४ वेदारम्भ में।
						अनध्याय। रविवती ४। नेताजी-जन्म-दिवस। [Gबापू-निर्वाण-दिवस। सर्वोदय-पखवारा शुरू।
चं.	५	११	४	४	२४	–पंचक। **बसंत पंचमी ५।** श्री-पञ्चमी ५। बसन्तोत्सव। सोमवती ५। यायिजय योग घं. ६ मि.४८
						बजे से घं. १७ मि. १९ बजे तक। श्रीप्रयागराज में कुम्भ महापर्व का तृतीय(अंतिम)स्नान।
मं.	६	१२	५	५	२५	–पचक। [Dघं. ११ मि. ३५ बजे प्रारम्भ। ११ तिथि-क्षय।
बु.	७	१३	६	६	२६	–पंचक समाप्त घं. ७ मि. १० बजे। भद्रा घं. २१ मि. २३ बजे प्रारम्भ। भारतीय गणतंत्र-दिवस।
						आरोग्य सप्तमी ७। रथ सप्तमी ७। अचला सप्तमी ७, अरुणोदय में स्नान। माकरी ७।
						मन्वादि ७। विधान सप्तमी ७। श्रीमाधवाचार्य-जयन्ती। [Hतिल से विष्णु-पूजा। ११ तिथि-वृद्धि।
गु.	८	१४	७	७	२७	–भद्रा घं.१० मि.४२ बजे समाप्त। **श्रीदुर्गाष्टमी ८।** भीष्माष्टमी ८; भीष्मोद्देश्य से श्राद्ध-तर्पण।
शु.	९	१५	८	८	२८	–यायिजय योग घं. ९ मि. २ बजे से घं. ६ मि. ४७ बजे तक। लाला लाजपतराय-जयन्ती।
श.	१०	१६	९	९	२९	–महा(वैधृति)पात घ. ८ मि. ९ बजे से घं. २३ मि. ६ बजे तक। [Cप्रथम स्नान। अन्वष्टका।
र.	११	१७	१०	१०	३०	–भद्रा घं. १८ मि. १५ बजे प्रारम्भ। यायिजय योग घ. ५ मि.१४ बजे से घ. १९ मि. ० बजे तक।G
चं.	११	१८	११	११	३१	–भद्रा घं. ७ मि. १७ बजे समाप्त। जया एकादशी ११ व्रत सबका। भैमी एकादशी। पूर्वयुता
						भीष्म-द्वादशी व्रत, भीष्मोद्देश्य से श्राद्ध तर्पण। तिल १२। तिलोत्पत्ति। तिल-स्नान। तिल-होम।H

ता. ग्रह रा.नक्ष.चरण(नवां)प्रवे.स्टें.टा.

जनवरी	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
१	मं.	♂	मूल	३	मि.	१२	४६
१	शु.	♀	धनिष्ठा	४	वृ.	२३	३५
३	बु.R	☿	पू. षा.	४	वृ.	२	२७
४	सू.	⊙	पू. षा.	३	तु.	५	५५
४	शु.	♀	शतभिषा	१	ध.	२३	४
५	बु.R	☿	पू. षा.	३	तु.	२०	१०
५	मं.	♂	मूल	४	क.	२३	३६
७	सू.	⊙	पू. षा.	४	वृ.	१२	२[illegible]
७	शु.	♀	शतभिषा	२	म.	२२	५७
८	बु.R	☿	पू. षा.	२	कं.	८	१३
१०	मं.	♂	पू. षा.	१	सिं.	९	५८
१०	सू.	⊙	उ. षा.	१	ध.	१८	५७
१०	शु.	♀	शतभिषा	३	कुं.	२३	४५
११	बु.R	☿	पू. षा.	१	सिं.	५	६
१४	शु.	♀	शतभिषा	४	मी.	१	२७
१४	सू.	⊙	म.उ.षा.	२	म.	१	३०
१४	मं.	♂	पू. षा.	२	कं.	२२	६
१५	गु.	♃	मार्गी	—	—	१६	२१
१६	प्लूटो	P.	वक्री	—	—	११	४७
१७	शु.	♀	पू. भा.	१	मे.	४	१०
१७	सू.	⊙	उ. षा.	३	कुं.	८	२
१७	बु	☿	मार्गी	—	—	१३	४२
१९	मं.	♂	पू. षा.	३	तु.	५	२५
२०	शु.	♀	पू. भा.	२	वृ.	८	३
२०	सू.	⊙	ऽभिउषा	४	मी.	१४	३६
२३	शु.	♀	पू. भा.	३	मि.	१३	२२
२३	मं.	♂	पू. षा.	४	वृ.	१४	३३
२३	सू.	⊙	श्रवण	१	मे.	२१	१३
२४	बु.	☿	पू. षा.	२	कं.	१६	५४
२४	सू.	⊙	अभि.नि.	—	—	१८	११
२६	शु.	♀	मीपू.भा	४	क.	२०	२२
२७	सू.	⊙	श्रवण	२	वृ.	३	५२
२७	मं.	♂	उ. षा.	१	ध.	२३	२०
२८	बु.	☿	पू. षा.	३	तु.	२१	४६
३०	शु.	♀	उ. भा.	१	सिं.	५	१४
३०	सू.	⊙	श्रवण	३	मि.	१०	३९
३१	बु.	☿	पू. षा.	४	वृ.	२०	३४

ता. २ जनवरी को बुध अस्त पश्चिम में।
ता. १० जनवरी को बुध उदय पूर्व में।

किरण-वक्रीभवन-संस्कार रहित सूर्य का अर्धं बिम्बोदय ही स्पष्टार्कोदय होता है; किरण-वक्रीभवन-संस्कार-युक्त सूर्य-बिम्बके ऊपरी कोर का उदय-काल प्रत्यक्ष (Apparent) सूर्योदय-काल होता है जो पाश्चात्य पञ्चांगों में व्यवहृत होता है; किन्तु वह भारतीय त्रिस्कन्धज्योतिष एवं धर्मशास्त्र में ग्राह्य नहीं है; स्पष्टार्कोदय काल ही जन्मेष्ट-साधन तथा कर्म-कृत्योपयोगी होता है।

स्था.काशी प्रातःस्टैं.टा.५।२९बजेसूर्यका — चित्रापक्षीय अर्धदैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट

जनवरी		केन्द्र ० बजेका सांपा का			दैनिक स्पष्ट ⊙				दैनिक गति		दै.क्रा. दक्षिण		चं.स्पष्ट घं.५ मि.२९बजेका				अर्धदैनिक गति			चं.स्पष्ट घं.१७ मि.२९बजेका				अर्धदैनिक गति		
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	वि.
१	श.	६	४१	१३	८	१६	५५	२८	६१	९	२३	२	०	२६	४३	२१	५	५५	१०	१	२	३८	३१	५	५६	३०
२	र.	६	४५	९	८	१७	५६	३७	६१	८	२२	५७	१	८	३५	१	५	५८	४६	१	१४	३	४७	६	१	५
३	चं.	६	४९	६	८	१८	५७	४५	६१	८	२२	५१	१	२०	३४	५२	६	३	५४	१	२६	३८	४६	६	६	४८
४	मं.	६	५३	२	८	१९	५८	५३	६१	८	२२	४५	२	२	४५	३४	६	९	५९	२	८	५५	३३	६	१३	[illegible]
५	बु.	६	५६	५९	८	२१	०	१	६१	८	२२	३९	२	१५	८	४४	६	१६	३१	२	२१	२५	१५	६	१९	[illegible]
६	गु.	७	०	५५	८	२२	१	९	६१	८	२२	३२	२	२७	४४	५९	६	२२	५९	३	४	७	५८	६	२६	७
७	शु.	७	४	५२	८	२३	२	१७	६१	८	२२	२५	३	१०	३४	५	६	२९	९	३	१७	३	१४	६	३२	५
८	श.	७	८	४८	८	२४	३	२५	६१	८	२२	१७	३	२३	३५	१९	६	३४	५१	४	०	१०	१०	६	३७	[illegible]
९	र.	७	१२	४५	८	२५	४	३३	६१	८	२२	९	४	६	४७	४३	६	४०	९	४	१३	२७	५२	६	४२	४
१०	चं.	७	१६	४२	८	२६	५	४१	६१	७	२२	०	४	२०	१०	३६	६	४५	१४	४	२६	५५	५०	६	४७	४
११	मं.	७	२०	३८	८	२७	६	४८	६१	७	२१	५१	५	३	४३	३६	६	५०	२०	५	१०	३३	५६	६	५२	[illegible]
१२	बु.	७	२४	३५	८	२८	७	५५	६१	७	२१	४२	५	१७	२६	५४	६	५५	३९	५	२४	२२	३३	६	५८	२
१३	गु.	७	२८	३१	८	२९	९	२	६१	७	२१	३२	६	१	२०	५४	७	१	८	६	८	२२	२	७	३	५
१४	शु.	७	३२	२८	९	०	१०	९	६१	७	२१	२२	६	१५	२५	५२	७	६	३२	६	२२	३२	२४	७	८	५
१५	श.	७	३६	२४	९	१	११	१६	६१	७	२१	११	६	२९	४१	२०	७	११	१२	७	६	५२	३२	७	१२	[illegible]
१६	र.	७	४०	२१	९	२	१२	२३	६१	७	२१	०	७	१४	५	३०	७	१४	२१	७	२१	१९	५१	७	१५	[illegible]
१७	चं.	७	४४	१७	९	३	१३	३०	६१	७	२०	४८	७	२८	३४	५१	७	१५	३	८	५	४९	५४	७	१७	१
१८	मं.	७	४८	१४	९	४	१४	३७	६१	७	२०	३६	८	१३	४	११	७	१२	४१	८	२०	१९	५२	७	१०	१
१९	बु.	७	५२	११	९	५	१५	४४	६१	६	२०	२४	८	२७	२७	७	७	६	५७	९	४	३४	४	७	२	५
२०	गु.	७	५६	७	९	६	१६	५०	६१	५	२०	११	९	११	३७	३	६	५८	१२	९	१८	३५	१५	६	५३	[illegible]
२१	शु.	८	०	४	९	७	१७	५५	६१	४	१९	५८	९	२५	२८	१८	६	४७	१७	१०	२	१५	३५	६	४१	[illegible]
२२	श.	८	४	०	९	८	१८	५९	६१	३	१९	४५	१०	८	५७	४	६	३५	२१	१०	१५	३२	२५	६	२९	[illegible]
२३	र.	८	७	५७	९	९	२०	२	६१	२	१९	३१	१०	२२	१	५१	६	२३	३१	१०	२८	२५	२२	६	१८	[illegible]
२४	चं.	८	११	५३	९	१०	२१	४	६१	१	१९	१७	११	४	४३	२६	६	१२	५३	११	१०	५६	१९	६	८	[illegible]
२५	मं.	८	१५	५०	९	११	२२	५	६१	०	१९	२	११	१७	४	३७	६	४	११	११	२३	८	४८	६	०	[illegible]
२६	बु.	८	१९	४६	९	१२	२३	५	६०	५९	१८	४७	११	२९	९	३५	५	५७	५८	०	५	७	३३	५	५५	[illegible]
२७	गु.	८	२३	४३	९	१३	२४	४	६०	५८	१८	३२	०	११	३	२७	५	५४	३०	०	१६	५७	५७	५	५३	[illegible]
२८	शु.	८	२७	४०	९	१४	२५	२	६०	५७	१८	१७	०	२२	५१	४७	५	५३	५२	०	२८	४५	३९	५	५४	[illegible]
२९	श.	८	३१	३६	९	१५	२५	५९	६०	५६	१८	१	१	४	४०	१२	५	५६	०	१	१०	३६	१२	५	५७	[illegible]
३०	र.	८	३५	३३	९	१६	२६	५५	६०	५५	१७	४५	१	१६	३३	५८	६	०	२५	१	२२	३४	२३	६	३	[illegible]
३१	चं.	८	३९	२९	९	१७	२७	५०	६०	५३	१७	२८	१	२८	३७	४८	६	६	५४	२	४	४४	४२	६	१०	[illegible]

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

जन. तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध सम्मुख	वाम +	दक्षिण R	पञ्चशला का-वेध	लत्ता
चालू	प्लूटो	हस्त	उ. भा.	पू. षा. ⊙	आर्द्रा	उ. भा.	—
,,	हर्शल	स्वाती	शतभिषा	ज्येष्ठा ♆ ☿	रोहिणी	शतभिषा	—
,,	नेप्च्यू.	ज्येष्ठा	पुष्य	अश्विनी ☋	स्वाती ♅	पुष्य	—
,,	राहु	चित्रा	पू. भा	मूल ♂	मृगशिरा	पू. भा.	श्रवण
,,	केतु	अश्विनी	पू. फा.	रोहिणी	ज्येष्ठा ♆ ☿	पू. फा.	आश्ले.
,,	शनि	आश्लेषा	अनु ♂ ⊙	मघा	धनिष्ठा ♀	धनिष्ठा ♀	विशा
,,	गुरु	कृत्तिका	श्रवण ⊙	विशाखा	भरणी	विशाखा	पुष्य
३	बुधR	पू. षा.	आर्द्रा	उ. भा.	हस्तP	आर्द्रा	चित्रा ☋
४	शुक्र	शतभिषा	स्वाती ♅	पुष्य	अभिजित्	स्वाती ♅	पू.षा.
१०	मंगल	पूर्वाषाढ़ा	आर्द्रा	उ. भा.	हस्तP	आर्द्रा	श्रवण
१०	सूर्य	उ. षा.	मृगशिरा	पू. भा.	उ. फा.	मृगशिरा	मृगशि
१७	शुक्र	पू. भा.	चित्रा ☊	पुनर्वसु	उ. भा.	चित्रा ☊	उ.षा.
२३	सूर्य	श्रवण	कृत्ति ♃	धनिष्ठा	मघा	मघा	आर्द्रा
२७	मंगल	उ. षा.	मृगशिरा	पू. भा. ♀	उ. फा.	मृगशिरा	धनिष्ठा
३०	शुक्र	उ. भा.	हस्त P	आर्द्रा	पू. षा. ☿	हस्तP	श्रवण

आकाशी-लक्षण—ता. २, ३, ४, ५, १० को पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात एवं यत्र-तत्र छिटफुट वर्षा होगी। मकर-संक्रान्ति वायु-मंडल में पड़ गयी है। तीव्र वायु-सञ्चार शीत-प्रकोप एवं तज्जन्य रोगों की वृद्धि होगी। ता. १४, १५, १६, १७, १९, २३, २६, २७, ३० को अनेक स्थानों में वर्षा से प्यासी फसलों की प्यास बुझेगी।

स्पष्ट ग्रह एवं दै. गति प्रातः ५|३० स्टैं.टा.

ता.	♂ मं.			ग.	☿ बु. R			ग.	♃ गु. R			ग.	♀ शु.			ग.	♄ श. R			ग.	☊ रा.			♅ ह.			♆ ने.			P प्लू.		
जन.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	८	६	२७	४५	८	२८	२३	५०	०	२८	०	३	१०	२	२९	६८	३	२२	१८	४	६	६	२१	६	१७	२२	७	२१	७	५	२०	३५
४	८	८	४१	४५	८	२५	२४	७५	०	२७	५२	२	१०	५	५२	६७	३	२२	७	४	६	६	११	६	१७	२८	७	२१	१३	५	२०	३७
७	८	१०	५६	४५	८	२१	२९	८०	०	२७	४६	२	१०	९	१२	६६	३	२१	५५	४	६	६	२	६	१७	३४	७	२१	१९	५	२०	३८
१०	८	१३	१२	४५	८	१७	४२	६३	०	२७	४१	१	१०	१२	३०	६६	३	२१	४३	४	६	५	५२	६	१७	४०	७	२१	२५	५	२०	३९
१३	८	१५	२८	४५	८	१४	५९	३५	०	२७	३९	०	१०	१५	४६	६५	३	२१	३०	४	६	५	४२	६	१७	४६	७	२१	३१	५	२०	३९
१६	८	१७	४४	४५	८	१३	४२	+८	०	२७	३+	+०	१०	१९	०	६४	३	२१	१७	४	६	५	३३	६	१७	५१	७	२१	३७	५	२०	३९
१९	८	२०	०	४६	८	१३	४५	१७	०	२७	४०	१	१०	२२	११	६३	३	२१	४	४	६	५	२३	६	१७	५६	७	२१	४२	५	२०	३९
२२	८	२२	१७	४	८	१४	५५	३५	०	२७	४३	१	१०	२५	१८	६२	३	२०	५०	४	६	५	१४	६	१८	०	७	२१	४७	५	२०	३९
२५	८	२४	३५	४६	८	१६	५५	४९	०	२७	४८	२	१०	२८	२३	६०	३	२०	३५	५	६	५	४	६	१८	३	७	२१	५२	५	२०	३८
२८	८	२६	५१	४६	८	१९	३२	५९	०	२७	५५	३	११	१	२३	[illegible]	३	२०	२१	५	६	४	५५	६	१८	६	७	२१	५७	५	२०	३७
३१	८	२९	१०	४६	८	२२	३८	६७	०	२८	३	३	११	४	१९	५८	३	२०	६	५	६	४	४५	६	१८	९	७	२२	२	५	२०	३५

पौष पूर्णिमान्त ◡ ☍ ☉ काशी, बुधवार
ता.५।१।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं. १७ मि.४०
इष्ट सांपातिक काल घं.० मि.४१से.५३

ल०	द०
२	११
२६	१७
१८	५५
३१	१३

श. ४ ५ चं. ३ २ १ बृ. के.
प्लू. ६ ३ ९ १२
रा. ह. ७ ८ मं. र. बु. ११ शु. १०
ने.

☉ मकर-संक्रांति, काशी, शुक्रवार
ता.१४।१।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.१ मि.३०
इष्ट सांपातिक काल घं.९ मि.४ से. ४३

ल०	द०
६	३
१७	२०
४१	१०
१३	११

ने. प्लू.
बु. मं. ९ ८ ह. चं. रा. ६ ५
र. १० ७ ४ श.
गु. ११ १ के. बृ. १२ २ ३

माघ अमान्त ◡ ☌ ☉ काशी, बुधवार
ता.१९।१।७७ई. भा.स्टैं.टा. घं.१९ मि.४१
इष्ट सांपातिक काल घं.३ मि.३८से.२५

ल०	द०
४	१
४	३
४२	२१
४१	५२

प्लू. श.
रा. ह. ७ ६ ४ ३
ने. ८ ५ २ ११
बु. मं. चं. ९ १० शु. १२ १ बृ. के.
र.

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदय का समय भा स्टैं टा में)

जन.		मेष			वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	श.	१२	२४	३३	१४	३	१५	५९	१८	१३	२०	३०	२२	४४	१	१	३	१७	५	३४	७	४०	९	२५	१०	५६
२	र.	१२	२०	३७	१३	५९	१५	५५	१८	९	२०	२६	२२	४०	०	५७	३	१३	५	३०	७	३६	९	२१	१०	५२
३	चं.	१२	१६	४१	१३	५५	१५	५१	१८	५	२०	२२	२२	३६	०	५३	३	९	५	२६	७	३२	९	१७	१०	४८
४	मं.	१२	१२	४५	१३	५१	१५	४७	१८	१	२०	१८	२२	३२	०	४९	३	५	५	२२	७	२८	९	१३	१०	४४
५	बु.	१२	८	४९	१३	४७	१५	४३	१७	५७	२०	१४	२२	२८	०	४५	३	१	५	१८	७	२४	९	९	१०	४०
६	गु.	१२	४	५३	१३	४३	१५	३९	१७	५३	२०	१०	२२	२४	०	४१	२	५७	५	१४	७	२०	९	५	१०	३६
७	शु.	१२	०	५७	१३	३९	१५	३५	१७	४९	२०	६	२२	२०	०	३७	२	५३	५	१०	७	१६	९	१	१०	३२
८	श.	११	५७	१	१३	३५	१५	३१	१७	४५	२०	२	२२	१६	०	३३	२	४९	५	६	७	१२	८	५७	१०	२८
९	र.	११	५३	५	१३	३१	१५	२७	१७	४१	१९	५८	२२	१२	०	२९	२	४५	५	२	७	८	८	५३	१०	२४
१०	चं.	११	४९	९	१३	२७	१५	२३	१७	३७	१९	५४	२२	८	०	२५	२	४१	४	५८	७	४	८	४९	१०	२०
११	मं.	११	४५	१३	१३	२३	१५	१९	१७	३३	१९	५१	२२	४	०	२१	२	३७	४	५४	७	०	८	४५	१०	१६
१२	बु.	११	४१	१८	१३	१९	१५	१५	१७	२९	१९	४७	२२	०	०	१७	२	३३	४	५०	६	५	८	४१	१०	१३
१३	गु.	११	३७	२२	१३	१५	१५	११	१७	२५	१९	४३	२१	५६	०	१३	२	२९	४	४६	६	५२	८	३७	१०	९
१४	शु.	११	३३	२६	१३	११	१५	८	१७	२१	१९	३९	२१	५२	०	९	२	२५	४	४३	६	४८	८	३३	१०	५
१५	श.	११	२९	३०	१३	७	१५	४	१७	१७	१९	३५	२१	४८	०	५	२	२२	४	३९	६	४४	८	३०	१०	१
														*	०	२										
१६	र.	११	२५	३४	१३	३	१५	०	१७	१३	१९	३१	२१	४५	२३	५८	२	१८	४	३५	६	४०	८	२६	९	५७
१७	चं.	११	२१	३८	१२	५९	१४	५६	१७	९	१९	२७	२१	४१	२३	५४	२	१४	४	३१	६	३६	८	२२	९	५३
१८	मं.	११	१७	४२	१२	५५	१४	५२	१७	५	१९	२३	२१	३७	२३	५०	२	१०	४	२७	६	३२	८	१८	९	४९
१९	बु.	११	१३	४६	१२	५१	१४	४८	१७	१	१९	१९	२१	३३	२३	४६	२	६	४	२३	६	२८	८	१४	९	४५
२०	गु.	११	९	५०	१२	४७	१४	४४	१६	५७	१९	[illegible]	२१	२९	२३	४२	२	२	४	१९	६	२४	८	१०	९	४१
२१	शु.	११	५	५४	१२	४३	१४	४०	१६	५४	१९	११	२१	२५	२३	३८	१	५८	४	१५	६	२०	८	६	९	३७
२२	श.	११	१	५८	१२	४०	१४	३६	[illegible]	५०	१९	७	२१	२१	२३	३४	१	५४	४	११	६	१६	८	२	९	३३
२३	र.	१०	५८	२	१२	३६	१४	३२	१६	४६	१९	३	२१	१७	२३	३०	१	५०	४	७	६	१२	७	५८	९	२९
२४	चं.	१०	५४	६	१२	३२	१४	२८	१६	४२	१८	५९	२१	१३	२३	२६	१	[illegible]	४	३	६	९	७	५४	९	२५
२५	मं.	१०	५०	११	१२	२८	१४	२४	१६	३८	१८	५५	२१	९	२३	२२	१	४२	३	५९	६	५	७	५०	९	२१
२६	बु.	१०	४६	१५	१२	२४	१४	२०	[illegible]	३४	१८	५२	२१	५	२३	१८	१	३८	३	५५	६	१	७	४६	९	१७
२७	गु.	१०	४२	१९	१२	२०	१४	१६	[illegible]	३०	१८	४८	२१	२	२३	१४	१	३४	३	५१	५	५७	७	४२	९	१४
२८	शु.	१०	३८	२३	१२	१६	१४	१३	१६	२६	१८	४४	२०	५८	२३	१०	१	३०	३	४७	५	५३	७	३८	९	१०
२९	श.	१०	३४	२७	१२	१२	१४	९	१६	२२	१८	४०	२०	५४	२३	६	१	२६	३	४४	५	४[illegible]	७	३४	९	६
३०	र.	१०	३०	३१	१२	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	चं.	१०	२६	३५	१२	४	१४	१	१६	१४	१८	३२	२०	४६	२२	५९	१	१९	३	३६	५	४१	७	२७	८	५८

भविष्यवाणी–वर्षारम्भ

गुरु चन्द्र युतिके सा[illegible] हो रहा है; माघ मासमें ५ गुरुवार तथा संक्रान्ति भी गुरुवारी है; किंतु मासार्ध तक गुरु वक्र रहेंगे जो पश्चिमी राष्ट्रोंके लिए अनेकशः अनिष्टकारी हैं–यत्र मासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पते। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धञ्च च जायते॥ अतएव दक्षिणीअफ्रिका पाकिस्तान इज़राइल अरब-राष्ट्रोंमें आपसी विग्रह सैन्य-संघर्ष आन्तरिक विप्लव एवं प्राकृतिक आपदाओंसे जन-धन की हानि होगी। आश्लेषा का शनि भारतीय उपमहाद्वीप, चीन एवं पूर्वेशिया की स्थिति सामान्य रखेगा। संक्रान्तिफल–सूर्य मकर पर गत सं. से २ बार ३ नक्षत्र मु.१५ पर प्रवेश करते हैं। ता. १३ को श. △ नेप्च्यून ता.२० को श मं. षडाष्टक, ता. २४ को श ✳ P त्रिरेकादश होगा; ये सब प्रायः सभी जिंसों में असाधारण तेजी के योग हैं। प्रथम और अंतिम सप्ताह में शेयर्स–में भी तेजी के पक्के चांस मिलेंगे।

* ता० १६ को तुला लग्न का उदय दो बार होगा।

माघ शुक्ल १२ से फाल्गुन शुक्ल १० तक, सम्वत् २०३३, शके १८९८, उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

वार २८ दिन	फरवरी १९७७ ई०	माघ शुक्लपक्ष					नक्षत्र					योग					करण						चं. राशि-प्रवेश		दिनमान	काशी सूर्य उ.म.अ. भारतीय स्टैं. टा. उ.	मध्याह्न			अ.
वार	फरवरी	तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	राशि	घं. मि.	घ. पल	घं. मि.	घण्टा	मिनट	सेकेण्ड	घं. मि.
सं.	१	१२	४	५८	८	४५	आर्द्रा	४०	१५	२२	५२	विष्कु.	५८	८	६	१	बा.	८	४५	कौ.	२१	१०			२७/१३	६/४६	१२	११	३७	१७/३८
बु.	२	१३	७	५	९	३५	पुन.	४२	५३	२३	५४	प्रीति	५६	३	५	१०	तै.	९	३५	ग.	२१	४१	क.	१७/४२	१६	४५	१२	११	४४	३९
गु.	३	१४	७	३८	९	४८	पुष्य	४४	३	०	२२	आयु.	५२	३५	३	४७	व.	९	४८	भ.	२१	३७			१९	४५	१२	११	५१	४०
शु.	४	१५	६	४५	९	२६	आश्ले.	४३	५८	०	१९	सौभा.	४८	१०	२	०	बव	९	२६	बा.	२१	१			२२	४४	१२	११	५७	४०
		फाल्गुन कृष्णपक्ष																												
श.	५	१	४	४३	८	३७	मघा	४२	५३	२३	५३	शोभन	४२	५८	२३	५५	कौ.	८	३७	तै.	२०	१	सिं.	१०/१	२५	४४	१२	१२	२	४१
र.	६	२	१/५६	४५/१८	७/८	२५/५६	पू.फा.	४१	५	२३	९	अति.	३७	१३	२१	३६	ग.	७	२५	व.	१/८	१०/८६			२८	४३	१२	१२	६	४२
चं.	७	४	५२	५३	४	१६	उ.फा.	३८	४३	२२	१२	सुकर्मा	३०	५८	१९	६	बव	१६	६	बा.	४	१६	कं.	८४/६	३१	४३	१२	१२	१०	४२
सं.	८	५	४९	२५	२	२८	हस्त	३६	३	२१	७	धृति	२४	२८	१६	२९	कौ.	१५	२२	तै.	२	२८			३४	४२	१२	१२	१३	४३
बु.	९	६	४४	४३	०	३४	चित्रा	३३	५	१९	५५	शूल	१७	४३	१३	४६	ग.	१३	३१	व.	०	३४	तु.	८/३१	३८	४१	१२	१२	१५	४४
गु.	१०	७	३९	५०	२२	३७	स्वाती	२९	५८	१८	४०	गण्ड	१०	४८	११	०	भ.	११	३५	बव	२२	३७			४१	४१	१२	१२	१६	४५
शु.	११	८	३४	५३	२०	३७	विशा.	२६	४५	१७	२२	वृद्धि	३/५७	५०/५	८/८	१२/२२	बा.	९	३७	कौ.	२०	३७	वृ.	११/४१	४४	४०	१२	१२	१६	४५
श.	१२	९	२९	५०	१८	३६	अनु.	२६	२५	१६	२	व्या.	४९	३८	२	३१	तै.	७	३७	ग.	१/८	३६/३६			४७	४०	१२	१२	१६	४६
र.	१३	१०	२४	५३	१६	३६	ज्येष्ठा	२०	१०	१४	४३	हर्षण	४२	३८	२३	४२	भ.	१६	३६	बव	३	३७	ध.	१४/४३	५१	३९	१२	१२	१५	४७
चं.	१४	११	२०	३	१४	३९	मूल	१७	५	१३	२८	वज्र	३५	४८	२०	५७	बा.	१४	३९	कौ.	१	४४			५४	३८	१२	१२	१३	४७
मं.	१५	१२	१५	३०	१२	५०	पू.षा.	१४	१३	१२	१९	सिद्धि	२९	१३	१८	१९	तै.	१२	५०	ग.	२३	३२	म.	१८/४	५७	३८	१२	१२	११	४८
बु.	१६	१३	११	३३	११	१४	उ.षा.	११	५८	११	२४	व्यती.	२३	१०	१५	५३	व.	११	१४	भ.	२२	३५			२६/२	३७	१२	१२	८	४८
गु.	१७	१४	८	२३	९	५७	श्रवण	१०	३०	१०	४८	वरीया.	१७	४८	१३	४३	श.	९	५७	च.	२१	३२	कुं.	२२/३१	४	३६	१२	१२	४	४९
शु.	१८	३०	६	२०	९	७	धनि.	१०	५	१०	३७	परिघ	१३	२०	११	५५	ना.	९	७	किं.	२०	५८			८	३५	१२	११	५९	५०
		फाल्गुन शुक्लपक्ष																												
श.	१९	१	५	३५	८	४९	शत.	१०	५७	१०	५८	शिव	९	५३	१०	३२	बव.	८	४९	बा.	२०	५८			११	३५	१२	११	५४	५०
र.	२०	२	६	२३	९	७	पू.भा.	१३	२५	११	५६	सिद्धि	७	४३	९	३९	कौ.	९	७	तै.	२१	३६	मी.	५/३८	१४	३४	१२	११	४८	५१
चं.	२१	३	८	५३	१०	६	उ.भा.	१७	२५	१३	३१	साध्य	६	५३	९	१६	ग.	१०	६	व.	२२	५४			१८	३३	१२	११	४२	५१
मं.	२२	४	१२	५५	११	४२	रेवती	२२	५८	१५	४३	शुभ	७	५	९	२२	भ.	११	४२	बव	०	४७	मे.	१५/४३	२१	३२	१२	११	३४	५२
बु.	२३	५	१८	२३	१३	५२	अश्वि.	२९	४५	१८	२५	शुक्ल	८	२५	९	५३	बा.	१३	५२	कौ.	३	७			२५	३१	१२	११	२६	५३
गु.	२४	६	२४	४०	१६	२३	भरणी	३७	१५	२१	२५	ब्रह्म	१०	२८	१०	४२	तै.	१६	२३	ग.	५	४२			२९	३१	१२	११	१८	५३
शु.	२५	७	३१	२०	१९	२	कृति.	४५	३	०	३१	ऐन्द्र	१२	५५	११	४०	व.	१९	२	भ.	६	२९	वृ.	४/१२	३२	३०	१२	११	८	५४
श.	२६	८	३७	४३	२१	३४	रोहि.	५२	२३	३	२६	वैधृति	१५	१८	१२	३६	भ.	८	१०	बव	२१	३४			३६	२९	१२	१०	५९	५४
र.	२७	९	४३	५	२३	४२	मृग.	५८	४३	५	५७	विष्कु.	१७	५	१३	१८	बा.	१०	३८	कौ.	२३	४२	मि.	१६/४१	३९	२८	१२	१०	४८	५५
चं.	२८	१०	४७	३	१	१६	आर्द्रा	६०	०	२४	०	प्रीति	१७	५५	१३	३७	तै.	१२	२९	ग.	१	१६			४३	२७	१२	१०	३७	५५

बाण-विचार—सूर्य के गत अंश से यह अभिप्राय है कि जिस दिन का मुहूर्त ठहराना हो, उससे पहले दिन जितने अंश बीत चुके हैं, उनसे गिनती करनी चाहिए । सूर्य-गतांश ८।१७।२६ को रोगबाण, ४।१३।२२ को नृपबाण, ६।११।१५।२४ को चोर-बाण, १।१०।१९।२८ को मृत्युबाण, २।११।२०।२९ को अग्निबाण होता है; शेष अंश ३।५।७।९।१२।१४।१६।१८।२१।२३।२५।२७।३०, ये बाणरहित होते हैं ।

मर्मादिवेधः—मर्मकंटकवेधं च शल्यं छिद्रं यो न जानाति । नार्हति विवाहदीक्षा लग्नं दातुं स दैवज्ञः ।
लग्ने पापे मर्मवेधः कंटको नव पंचके । चतुर्थे दशमे शल्यं छिद्रं भवति सप्तमे ।
मरणं मर्मवेधे स्यात्कंटके च कुलक्षयः । शल्ये च नृपतेर्भीतिः पुत्रनाशश्च छिद्रके ।।

जो ज्योतिषी मर्म कण्टकवेध शल्य और छिद्र को नहीं जानता है, वह विवाह-लग्न का निश्चय करने योग्य नहीं है । लग्न में पापग्रह हो तो मर्मवेध होता है । ९।५ में पापग्रह हो तो कण्टकवेध होता है । ४।१० में पापग्रह हो तो शल्यवेध होता है । सप्तम में पापग्रह हो तो छिद्रवेध होता है । मर्म-वेध का फल मृत्यु है, कण्टक का फल कुलक्षय, शल्य में राज-भीति होती है, छिद्र में पुत्र-नाश होता है ।

फरवरी सन् १९६७ ई० । माघ शुक्ल १२ से फाल्गुन शुक्ल १० तक, स. २०२३ विक्रमीय ।
राष्ट्रीय माघ मास १२ से राष्ट्रीय फाल्गुन मास ९ तक, शके १८९८ शालिवाहन ।
सफर १२ से रबि-उल-अव्वल ९ तक, १३८७ हिजरी ।

A घं. ८ मि. ७ बजे से संक्रान्तिकाल तक, गो, अन्न-दान, गोदावरी में स्नान । यायिजय योग घं. ६ मि. ४० बजे से घं. १६ मि. २ बजे तक । समर्थ गुरु श्रीरामदास-जयन्ती । बापू-श्राद्ध-दिवस, भू-दान, सम्पत्ति-दान, सूताजलिअर्पण, सर्वोदय मेला और पक्ष समाप्त । दीनबन्धु एण्ड्रयूज-जयन्ती ।

वार	तारीखें: उदित तिथि	सौर(मकर) माघ प्र. ३० दि.	सफर ३० दिन हिजरी	राष्ट्रीय माघ मास ३० दि.	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि(मुद्दई) स्थायी(मुद्दालेह) जय योग, सन्धिकर, योगादि ।
सं.	१२	१९	१२	१२	१	—भौमप्रदोष १२ व्रत, ऋणमोचन के लिये श्रेयस्कर है । एकादशी व्रत का पारण घं. ८ मि. ४५ बजे तक । सोमपदा १२, विद्यारम्भ में अनध्याय ।
बु.	१३	२०	१३	१३	२	—कल्पादि १३ ।
गु.	१४	२१	१४	१४	३	—भद्रा घं. ९ मि. ४८ बजे से घं. २१ मि. ३७ बजे तक । अन्वाधान । व्रत की पूर्णिमा १५ ।
शु.	१५	२२	१५	१५	४	—इष्टि । स्नान दान की माघी पूर्णिमा, पुण्यकाल घं. ९ मि. २६ बजे तक । तिल-दान, ऊनी कम्बलादि-दान । माघ व्रत यम नियमादि समाप्त । भक्त रविदास-जयन्ती । भैरवी-जयन्ती । यायिजय योग घं. ० मि. २२ बजे से घं. ६ मि. ४४ बजे तक ।
श.	१	२३	१६	१६	५	—माघमासीय व्रत का पारण । फाल्गुन मास आरम्भ ।
र.	२	२४	१७	१७	६	—भद्रा घं. १८ मि. १० बजे प्रारम्भ । यायिजय योग घं. २३ मि. ९ बजे प्रारम्भ । ३ तिथि-क्षय ।
चं.	४	२५	१८	१८	७	—भद्रा घं. ५ मि. ५६ बजे समाप्त । संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय घं. २१ मि. ५ बजे । यायिजय योग घं. ५ मि. ५६ बजे समाप्त ।
मं.	५	२६	१९	१९	८	—यायिजय योग घं. ४ मि. १६ बजे से घं. ६ मि. ४२ बजे तक ।
बु.	६	२७	२०	२०	९	—चेहल्लुम ।
गु.	७	२८	२१	२१	१०	—भद्रा घं. ० मि. ३४ बजे से घं. ११ मि. २५ बजे तक । यायिजय योग घं. ६ मि. ४१ बजे से घं. १८ मि. ४० बजे तक । महा(व्यती)पात घं. १३ मि. २९ बजे से घं. २१ मि. ३ बजे तक ।
शु.	८	२९	२२	२२	११	—सीताष्टमी ८ । जानकी-जयन्ती ८ मध्याह्न में । कालाष्टमी ८ । अष्टका ८ । अन्य अष्टका में असमर्थ व्यक्तियों को इसमें श्राद्ध अवश्य करना चाहिये । स्थायीजय योग घं. ६ मि. ४० बजे से घं. १७ मि. २२ बजे तक ।
श.	९	३०	२३	२३	१२	—अन्वष्टका । ⊙ सूर्य की कुम्भ-संक्रान्ति घ. १४ मि. ३१ बजे ; म. ३० साम्यार्घ, विशेष पुण्यकाल A
र.	१०	१	२४	२४	१३	—भद्रा घं. ५ मि. ३६ बजे से घं. १६ मि. ३६ बजे तक । रविदशमी १० । सौर फाल्गुन मास प्रारम्भ ।
चं.	११	२	२५	२५	१४	—विजया ११ एकादशी व्रत सबका ।
मं.	१२	३	२६	२६	१५	—भौमप्रदोष १२ व्रत ; ऋणापकरण के लिए श्रेयस्कर है । स्थायीजय योग घं. ६ मि. ३८ बजे से घ. १२ मि. ५० बजे तक । त्रिपुष्कर योग घं. १२ मि. १६ बजे से घ. १२ मि. ५० बजे तक ।
बु.	१३	४	२७	२७	१६	—भद्रा घं. ११ मि. १४ बजे से घ. २२ मि. ३५ बजे तक । महाशिवरात्रि १३ व्रत, महानिशीथ-काल घं. २३ मि. ४७ बजे से घ० मि. ३८ बजे तक । कृतिवासेश्वर-दर्शन-पूजन, चतुर्दश लिङ्ग-पूजा, श्रीवैद्यनाथ-जयन्ती । स्वामी दयानन्द सरस्वती-जन्म-दिवस । ऋषि-बोधोत्सव । आर्यसमाज-सप्ताह आरम्भ । आखरी चहारशम्बा ।
गु.	१४	५	२८	२८	१७	—पचक प्रारम्भ घं. २२ मि. ३९ बजे । अन्वाधान । श्राद्ध की सिनीवाली अमावस्या । शहादत-ए-इमामहुसेन ।
शु.	३०	६	२९	२९	१८	—पचक । इष्टि । स्नान-दान की कुहू अमावस्या ३०, पुण्यकाल घं. ९ मि. ७ बजे तक; शुभवारी प्रजा-सुखकरी, सुभिक्षकरी ।
श.	१	७	३०	३०	१९	—पचक । ◡ चन्द्र-दर्शन मु. ३० साम्यार्घ । सूर्य सायन मीन में घं. ० मि. १ बजे । वसन्तऋतु आरम्भ ।
र.	२	८	१	१	२०	—पंचक । राष्ट्रीय फाल्गुन मास प्रारम्भ । रबि-उल-अव्वल ३ माह शुरू । यायिजय योग घं. १९ मि. ५६ बजे प्रारम्भ । त्रिपुष्कर योग घं. ६ मि. ३४ बजे से घं. ९ मि. ७ बजे तक । श्रीरामकृष्ण परमहंस-जयन्ती ।
चं.	३	९	२	२	२१	—पंचक । भद्रा घं. २२ मि. ५४ बजे प्रारम्भ । वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत । यायिजय योग घं. १० मि. ६ बजे तक । पण्डित लेखरामवीर तृतीया-जयन्ती ।
मं.	४	१०	३	३	२२	—पंचक समाप्त घं. १५ मि. ४३ बजे । भद्रा घं. ११ मि. ४२ बजे समाप्त । महा(वैधृति)पात घं. १७ मि. ५१ बजे प्रारम्भ । भौमवती ४ । आर्यसमाज-सप्ताह समाप्त ।
बु.	५	११	४	४	२३	—महा(वैधृति)पात घ. ० मि. ३३ बजे समाप्त ।
गु.	६	१२	५	५	२४	—यायिजय योग घं. १६ मि. २३ बजे से घं २१ मि. २५ बजे तक ।
शु.	७	१३	६	६	२५	—भद्रा घं. १९ मि. २ बजे प्रारम्भ । स्थायीजय योग घं. १९ मि. २ बजे प्रारम्भ ।
श.	८	१४	७	७	२६	—भद्रा घं. ८ मि. १० बजे समाप्त । दुर्गाष्टमी ८ । अन्नपूर्णाष्टमी ८ । होलाष्टक प्रारम्भ ; विवाहार्थ केवल पञ्जाब और पुष्कर में वर्ज्य है । स्थायीजय योग घं. ६ मि. २९ बजे समाप्त । यायिजय योग B
र.	९	१५	८	८	२७	—यायिजय योग घं. ३ मि. २६ बजे समाप्त । B घं. २१ मि. ३४ बजे प्रारम्भ ।
चं.	१०	१६	९	९	२८	—श्रीराजेन्द्रप्रसाद निर्वाण-दिवस ।

ता. ग्रह रा. नक्ष. चरण (नवां) प्रवे. स्टैं. टा.

फरव.	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
१	मं.	♂	म.उ.ष..	२	म.	७	४९
१	श.R	♄	आश्ले.	१	ध.	९	२९
२	शु.	♀	उ.भा.	२	कं.	१६	४०
२	सू.	☉	श्रवण	४	क.	१७	२९
३	बु.	☿	उ.षा.	१	ध.	१७	२२
५	मं.	♂	उ.षा.	३	कुं.	१६	०
६	सू.	☉	धनिष्ठा	१	सिं.	०	२६
६	शु.	♀	उ. भा.	३	तु.	[illegible]	१०
६	बु	☿	म.उ.ष..	२	म.	९	२९
८	बु.	☿	उ. षा.	३	कुं.	२२	२[illegible]
९	सू.	☉	धनिष्ठा	२	कं.	७	२५
९	मं. +	♂	ऽभि.उषा	४	मी.	२[illegible]	५३
१०	शु.	♀	उ. भा.	४	वृ.	१	३९
११	बु	☿	ऽभि.उषा	४	मी.	८	५९
१२	सू.	☉	कुं.धनि.	३	तु.	१४	३१
१३	बु.	☿	श्रवण	१	मे.	१९	३९
१३	ह.	♅	वक्री	—	—	१	५
१४	शु.	♀	रेवती	१	ध.	१	२३
१४	मं. +	♂	श्रवण	१	मे.	७	२८
१४	बु.	☿	अभि.नि.	—	—	८	२८
१५	मं.	♂	अभि.नि.	—	—	११	४
१५	सू.	☉	धनिष्ठा	४	वृ.	२१	४१
१६	बु.	☿	श्रवण	२	वृ.	०	१४
१८	बु.	☿	श्रवण	३	मि.	६	२१
१८	शु.	♀	रेवती	२	म.	८	३०
१८	मं. +	♂	श्रवण	२	वृ.	१४	४७
१९	सू.	☉	शतभिषा	१	ध.	४	५[illegible]
२०	बु.	☿	श्रवण	४	क.	१०	४५
२२	सू.	☉	शतभिष.	२	म.	१२	१९
२२	बु.	☿	धनिष्ठा	१	सिं.	१३	५९
२२	गु.	♃	व.कृति.	२	म.	१८	३
२२	मं. +	♂	श्रवण	३	मि.	२१	५९
२३	शु.	♀	रेवती	३	कुं.	३	७
२४	बु.	☿	धनिष्ठा	२	कं.	१६	७
२५	सू.	☉	शतभिषा	३	कुं.	१९	४९
२६	बु.	☿	कुं. धनि.	३	तु.	१७	१४
२७	रा.	☊	चित्रा	३	तु.	०	४५
२७	के.	☋	अश्विनी	१	मे.	०	४५
२७	मं. +	♂	श्रवण	४	क.	४	५९
२८	बु.	☿	धनिष्ठा	४	वृ.	१७	२२
२८	शु.	♀	रेवती	४	मी.	१९	१०

ता. ७ फरवरी को मंगल उदय पूर्व में।

ता. २० फरवरी को बुध अस्त पूर्व में।

सर्वतोभद्र के मुख्य वेध के नक्षत्र तथा पञ्चशलाका एवं लत्ता के वैवाहिक नक्षत्र किञ्चित स्थूल अक्षरों में मुद्रित किये गये हैं।

फरवरी — स्थानीय काशी प्रातः स्टैं.टा. ५-२९ बजे सूर्य का / चित्रापक्षीय अर्धदैनिक ☽ चन्द्र पष्ट

ता.	वा.	के ० बजे का सांपा.का. घं.	मि.	से.	दैनिक पष्ट ☉ रा.	अं.	क.	वि.	दैनिक गति क.	वि.	दै.क्रां. दक्षिण अं.	क.	चं.स्पष्ट घं.५ मि.२९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्धदैनिक गति अं.	क.	वि.	चं. पष्ट घं.१७ मि २९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्धदैनिक गति अं.	क.
१	मं.	८	४३	२६	९	१८	२८	४२	६०	५२	१७	११	२	१०	५५	२८	६	१४	४८	२	१७	१०	१६	६	१९
२	बु.	८	४७	२२	९	१९	२९	३४	६०	५१	१६	५४	२	२३	२९	३०	६	२३	२९	२	२९	५२	५९	६	२८
३	गु.	८	५१	१९	९	२०	३०	२५	६०	५०	१६	३७	३	६	२१	४	६	३१	५४	३	१२	५२	५८	६	३६
४	शु.	८	५५	१५	९	२१	३१	१[illegible]	६०	४८	१६	१९	३	१९	२९	५२	६	४०	५८	३	२६	१०	५०	६	४३
५	श.	८	५९	१२	९	२२	३२	३	६०	४७	१६	१	४	२	५४	१[illegible]	६	४७	१०	४	९	४१	२८	६	५०
६	र.	९	३	९	९	२३	३२	५०	६०	४६	१५	४[illegible]	४	१६	३१	४५	६	५२	४१	४	२३	२४	२६	६	५४
७	चं.	९	७	५	९	२४	३३	३६	६०	४५	१५	२४	५	०	१९	१६	६	५६	[illegible]	५	७	१५	५२	६	५८
८	मं.	९	११	२	९	२५	३४	२१	६०	४४	१५	६	५	१४	१३	५८	६	५९	१६	५	२१	१[illegible]	१४	७	०
९	बु.	९	१४	५८	९	२६	३५	५	६०	४[illegible]	१४	४७	५	२८	१३	३१	७	१	४	६	५	१४	३५	७	१
१०	गु.	९	१८	५५	९	२७	३५	४८	६०	४२	१४	२७	६	१२	१६	१९	७	२	१७	६	१९	१८	३६	७	२
११	शु.	९	२२	५१	९	२८	३६	३०	६०	४१	१४	८	६	२६	२१	१८	७	३	४	७	३	२४	२२	७	३
१२	श.	९	२६	४८	९	२९	३७	११	६०	४०	१[illegible]	४८	७	१०	२७	४०	७	३	१९	७	१७	३०	५९	७	३
१३	र.	९	३०	४४	१०	०	३७	५१	६०	३९	१३	२८	७	२४	३४	२४	७	३	२	८	१	३७	२६	७	१
१४	चं.	९	३४	४१	१०	१	३८	३०	६०	३८	१३	८	८	८	३९	१०	७	१	५१	८	१५	४१	१	७	०
१५	मं.	९	३८	३८	१०	२	३९	८	६०	३७	१२	४७	८	२२	४१	२६	६	५८	२६	८	२९	३९	५२	६	५६
१६	बु.	९	४२	३४	१०	३	३९	४५	६०	३५	१२	२७	९	६	३५	५७	६	५३	२६	९	१३	२९	२३	६	५०
१७	गु.	९	४६	३१	१०	४	४०	२०	६०	३[illegible]	१२	६	९	२०	१९	४१	६	४६	४०	९	२७	६	२१	६	४२
१८	शु.	९	५०	२७	१०	५	४०	५३	६०	३२	११	४५	१०	३	४९	७	६	३८	२५	१०	१०	२७	३२	६	३४
१९	श.	९	५४	२४	१०	६	४१	२५	६०	[illegible]०	११	२[illegible]	१०	१७	१	३२	६	२९	१२	१०	२[illegible]	३०	४४	६	२४
२०	र.	९	५८	२०	१०	७	४१	५५	६०	२९	११	२	१०	२९	५५	२८	६	१९	५६	११	६	१५	२४	६	१५
२१	चं.	१०	२	१७	१०	८	४२	२४	६०	२७	१०	४०	११	१२	[illegible]०	५[illegible]	६	११	१४	११	१८	४२	११	६	७
२२	मं.	१०	६	१३	१०	९	४२	५१	६०	२५	१०	१९	११	२४	४९	३३	६	३	४९	०	०	५३	२२	६	०
२३	बु.	१०	१०	१०	१०	१०	४३	१६	६०	२[illegible]	९	५९	०	६	५४	१०	५	५८	१४	०	१२	५२	२४	५	५६
२४	गु.	१०	१४	७	१०	११	४३	३९	६०	२१	९	३५	०	१८	४८	४५	५	५४	५८	०	२४	४३	४३	५	५४
२५	शु.	१०	१८	३	१०	१२	४४	०	६०	१९	९	१	१	०	३८	१	५	५४	१५	१	६	३२	१६	५	५४
२६	श.	१०	२२	०	१०	१३	४४	१९	६०	१७	८	५०	१	१२	२७	९	५	५६	१०	१	१८	२३	१९	५	५८
२७	र.	१०	२५	५६	१०	१४	४४	३६	६०	१६	८	२८	१	२४	२१	२६	६	०	४४	२	०	२२	१०	६	३
२८	चं.	१०	२९	५३	१०	१५	४४	५२	६०	१४	८	५	२	६	२६	५	६	७	४३	२	१२	३३	४८	६	११

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

फरव. तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सम्मुख	सर्वतोभद्र-वेध वाम +	दक्षिण R	पञ्चशलाका-वेध	लत्ता
चालू	गुरु	कृत्तिका	श्रवण ☉	विशाखा	भरणी	विशाखा	पुष्य
,,	राहु	चित्रा	पू. भा.	मूल	मृगशिरा	पू. भा.	श्रवण
,,	केतु	अश्विनी	पू. फा.	रोहिणी	ज्येष्ठा ♆	पू. फा.	आश्ले.
,,	शनि	आश्लेषा	अनुराधा	मघा	धनिष्ठा	धनिष्ठा	विशा
३	बुध	उ. षा.	मृगशिरा	पू. भा.	उ. भा. ♀	मृगशिरा	स्वाती
६	सूर्य	धनिष्ठा	विशाखा	आश्लेषा ♄	श्रवण	आश्ले. ♄	पुनर्व
१३	बुध	श्रवण	कृत्ति. ♃	धनिष्ठा ☉	मघा	मघा	विशाख
१४	शुक्र	रेवती	उ. फा.	मृगशिरा	मूल	उ. फा.	धनिष्ठा
१४	मंगल+	श्रवण	कृत्ति. ♃	धनिष्ठा ☉	मघा	मघा	शतभि
१९	सूर्य	शतभिषा	स्वाती ♅	पुष्य	अभिजित्	स्वाती ♅	पुष्य
२२	बुध	धनिष्ठा	विशाखा	आश्लेषा ♄	श्रवण ♂	आश्ले. ♄	अनुरा

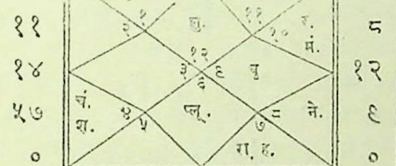
आकाशी-लक्षण—वसन्त-ऋतु के इस काल में जबकि शीत के प्रभाव में उत्तरोत्त कमी होनी चाहिए, इस वर्ष शीत की नई लहर आने का ग्रहयोग है। सुदूर पूर्वीय एशि में भीषण तूफानी हिमपात होगा ; कहीं-कहीं विचित्र रंगीन बर्फ गिरेगी। ता. १,३,४, ७,१२,१३ को यत्र-तत्र हल्की वर्षा होगी। हिमालय प्रदेश, अरुणाचल, मेघालय, असम पञ्जाब एवं पश्चिमी उ० प्र० में गरज के साथ छींटे पड़ेंगी। कुछ प्रदेशों में लगातार दिनतक तेज पछुआ हवा चलती रहने से फसल सुचारुरूप से गदरा नहीं पायेगी। कुम संक्रान्ति माहेन्द्र-मण्डल में पड़ गयी है; अतएव ता. १४,१८,१९,२०,२२,२६ आदि दि में रुक-रुक कर वर्षा होगी जिससे फाल्गुन के महीने में भी फसल को हानि के बजाय ल ही होगा। समय सुहावना हो जायेगा। वसन्त की विमल-विभूति के दर्शन होने लगेंगे खेत अनाज से भरपूर दिखाई देने लगेंगे।

स्पष्ट ग्रह एवं दै. गति प्रातः ५।३० स्टै. टा.

ता.	♂ मं.			ग.	☿ बु.			ग.	♃ गु.			ग.	♀ शु.			ग.	♄ श. R			ग.	☊ रा.			♅ ह.			♆ ने.			P प्लू. R		
फरव.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	८	२९	५६	४६	८	२३	४४	६९	०	२८	६	४	११	५	१७	५७	३	२०	१	५	६	४	४२	६	१८	१०	७	२२	३	५	२०	३५
४	९	२	१४	४६	८	२७	१७	७५	०	२८	१७	४	११	८	७	५५	३	१९	४६	५	६	४	३३	६	१८	१२	७	२२	७	५	२०	३३
७	९	४	३३	४६	९	१	५	७९	०	२८	३०	४	११	१०	५१	५३	३	१९	३२	५	६	४	२३	६	१८	१४	७	२२	११	५	२०	३१
१०	९	६	५१	४७	९	५	६	८२	०	२८	४४	५	११	१३	२९	५१	३	१९	१७	५	६	४	१३	६	१८	१५	७	२२	१५	५	२०	२९
१३	९	९	१०	४७	९	९	१७	८६	०	२९	०	६	११	१६	०	४९	३	१९	३	५	६	४	४	६	१८	१५	७	२२	१८	५	२०	२६
१६	९	११	२९	४७	९	१३	१८	८९	०	२९	१७	६	११	१८	२४	४६	३	१८	४९	५	६	३	५४	६	१८	१५	७	२२	२१	५	२०	२३
१९	९	१३	४८	४६	९	१८	८	९२	०	२९	३६	७	११	२०	३९	४३	३	१८	३५	४	६	३	४५	६	१८	१५	७	२२	२४	५	२०	२०
२२	९	१६	८	४६	९	२२	४७	९५	०	२९	५७	७	११	२२	४५	३९	३	१८	२२	४	६	३	५	६	१८	१४	७	२२	२७	५	२०	१७
२५	९	१८	२८	४६	९	२७	३४	९८	१	०	१८	७	११	२४	४०	३५	३	१८	९	४	६	३	२६	६	१८	१३	७	२२	२९	५	२०	१३
२८	९	२०	४८	४६	१०	२	३१	१००	१	०	४१	८	११	२६	२३	३१	३	१७	५६	४	६	३	१६	६	१८	११	७	२२	३१	५	२०	९

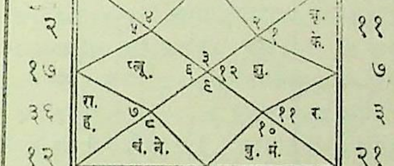
माघ पूर्णिमान्त ☽ ☍ ☉ काशी, शुक्रवार
ता. ४।२।७७ ई. भा. स्टैं. टा. घं. ९ मि. २६
इष्ट सांपातिक काल घं. १८ मि. २४ से. ४८

ल० ११ १४ ५७ ० — द० ८ १२ ९ ०



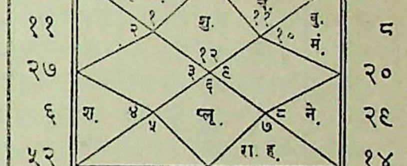
☉ कुम्भ-संक्रांति, काशी, शनिवार
ता. १२।२।७७ ई. भा. स्टैं. टा. घं. १४ मि. ३१
इष्ट सांपातिक काल घं. ० मि. २ से. ११

ल० २ १७ ३६ १२ — द० ११ ७ ३ २१



फाल्गुन अमान्त ☽ ☌ ☉ काशी, शुक्रवार
ता. १८।२।७७ ई. भा. स्टैं. टा. घं. ९ मि. ७
इष्ट सांपातिक काल घं. १९ मि. ० से. ५७

ल० ११ २७ ६ ५२ — द० ८ २० २९ १४



दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदय का समय भा. स्टैं. टा. में)

फर.		मेष			वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	मं.	१०	२२	४०	१२	०	१३	५७	१६	१०	१८	२८	२०	४२	२२	५५	१	१५	३	३२	५	३७	७	२३	८	५४
२	बु.	१०	१८	४४	११	५६	१३	५३	१६	६	१८	२४	२०	३८	२२	५१	१	११	३	२८	५	३३	७	१९	८	५०
३	गु.	१०	१४	४८	११	५२	१३	४९	१६	२	१८	२०	२०	३४	२२	४७	१	७	३	२४	५	२९	७	१५	८	४६
४	शु.	१०	१०	५२	११	४८	१३	४५	१५	५८	१८	१६	२०	३०	२२	४३	१	३	३	२०	५	२५	७	११	८	४२
५	श.	१०	७	५६	११	४४	१३	४१	१५	५४	१८	१२	२०	२६	२२	३९	०	५९	३	१६	५	२१	७	७	८	३८
६	र.	१०	३	०	११	४०	१३	३७	१५	५१	१८	८	२०	२२	२२	३५	०	५५	३	१२	५	१७	७	३	८	३४
७	चं.	९	५९	४	११	३६	१३	३३	१५	४७	१८	४	२०	१८	२२	३१	०	५१	३	८	५	१३	६	५९	८	३०
८	मं.	९	५५	८	११	३२	१३	२९	१५	४३	१८	०	२०	१४	२२	२७	०	४७	३	४	५	१०	६	५५	८	२६
९	बु.	९	५१	१२	११	२८	१३	२५	१५	३९	१७	५६	२०	१०	२२	२३	०	४३	३	०	५	६	६	५१	८	२२
१०	गु.	९	४७	१६	११	२४	१३	२१	१५	३५	१७	५३	२०	६	२२	१९	०	३९	२	५६	५	२	६	४७	८	१८
११	शु.	९	४३	२०	११	२०	१३	१७	१५	३१	१७	४९	२०	३	२२	१५	०	३५	२	५२	४	५८	६	४३	८	१५
१२	श.	९	३९	२५	११	१६	१३	१४	१५	२७	१७	४५	१९	५९	२२	११	०	३१	२	४९	४	५४	६	३९	८	११
१३	र.	९	३५	२९	११	१२	१३	१०	१५	२३	१७	४१	१९	५५	२२	७	०	२८	२	४५	४	५०	६	३६	८	७
१४	चं.	९	३१	३३	११	८	१३	६	१५	१९	१७	३७	१९	५१	२२	३	०	२४	२	४१	४	४६	६	३२	८	३
१५	मं.	९	२७	३७	११	४	१३	२	१५	१५	१७	३३	१९	४७	२१	५९	०	२०	२	३७	४	४२	६	२८	७	५९
१६	बु.	९	२३	४१	११	०	१२	५८	१५	११	१७	२९	१९	४३	२१	५६	०	१६	२	३३	४	३८	६	२४	७	५५
१७	गु.	९	१९	४५	१०	५६	१२	५४	१५	७	१७	२५	१९	३९	२१	५२	०	१२	२	२९	४	३४	६	२०	७	५१
१८	शु.	९	१५	४९	१०	५२	१२	५०	१५	३	१७	२१	१९	३५	२१	४८	०	८	२	२५	४	३०	६	१६	७	४७
१९	श.	९	११	५३	१०	४९	१२	४६	१५	०	१७	१७	१९	३१	२१	४४	०	४	२	२१	४	२६	६	१२	७	४३
२०	र.	९	७	५७	१०	४५	१२	४२	१४	५६	१७	१३	१९	२७	२१	४०	०	०	२	१७	४	२२	६	८	७	३९
																	*२३	५६								
२१	चं.	९	४	१	१०	४१	१२	३८	१४	५२	१७	९	१९	२३	२१	३६	२३	५२	२	१३	४	१८	६	४	७	३५
२२	मं.	९	०	५	१०	३७	१२	३४	१४	४८	१७	५	१९	१९	२१	३२	२३	४८	२	९	४	१५	६	०	७	३१
२३	बु.	८	५६	१०	१०	३३	१२	३०	१४	४४	१७	१	१९	१५	२१	२८	२३	४४	२	५	४	११	५	५६	७	२७
२४	गु.	८	५२	१४	१०	२९	१२	२६	१४	४०	१६	५८	१९	११	२१	२४	२३	४०	२	१	४	७	५	५२	७	२३
२५	शु.	८	४८	१८	१०	२[illegible]	१२	२२	१४	३६	१६	५४	१९	८	२१	२०	२३	३६	१	५७	४	३	५	४८	७	२०
२६	श.	८	४४	२२	१०	२२	१२	१८	१४	३२	१६	५०	१९	४	२१	१६	२३	३२	१	५३	३	५९	५	४४	७	१६
२७	र.	८	४०	२६	१०	१[illegible]	१२	१५	१४	२८	१६	४६	१९	०	२१	१२	२३	२९	१	५०	३	५५	५	४०	७	१२
२८	चं.	८	३६	३०	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भविष्यवाणी—माघ मास में ५ शनिवार तथा संक्रांति भी शनिवारी है। मेष में गुरु-चाण्डाल (गु. के.) योग चल रहा है जिसकी केंद्रीय राशियों में शनि और उच्च का मंगल परस्पर प्रतियोग में है—दोनों की गुरु पर पूर्ण दृष्टि भी है तथा ता. २४ को श. मं. की अंशात्मक प्रतियुति होगी। उसी दिन श. और मं. से वक्री हर्षल का □ केंद्र-योग होगा। अतः अप्रत्याशित अन्तरराष्ट्रीय अनर्थकारी घटनाओं से प्रायः समूचा विश्व उद्वेलित होगा—**पाताले कम्पते फणी ...ईशान देश भङ्गश्च...अग्नि दाहो....**इत्यादि दुष्परिणाम प्रत्यक्ष दृष्ट होंगे। **संक्रान्ति-फल**—सूर्य कुंभ पर गत सं. से ३वार ३नक्षत्र मु. ३० पर प्रवेश करते हैं। गत तेजी की प्रतिक्रियास्वरूप अब प्रबल मंदी प्रवाहित होगी। माल रोकनेवाले गहरी मार खा जायेंगे। **शेयर्स**—ता. १३ तक पोते से निकलकर हर उछाले बेचो।

ता० २० फरवरी को वृश्चिक लग्न का उदय दो बार होगा।

फाल्गुन शुक्ल ११ से चैत्र शुक्ल ११ तक, सम्वत् २०३३-३४, शके १८९८-९९, उत्तरायण, दक्षिणगोल, बसन्तऋतु।

वार	मार्च १९७७ ई०	फाल्गुन शुक्लपक्ष तिथि	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	च. राशि प्रवेश राशि	घं. मि.	दिनमान घटी प.	काशी सूर्य उ. घं. मि.	मध्याह्न घं.	मि.	से.	अ. घं. मि.
मं.	१	११	४९	१५	२	८	आर्द्रा	३	३५	७	५२	आयु.	१७	३३	१३	२७	व.	१३	४२	भ.	२	८			२९/४६	६/३६	१२	१०	२	१८/५६
बु.	२	१२	४९	३५	२	१५	पुन.	६	४३	९		सौभा.	१५	४५	१२	४३	बव	१४	१२	बा.	२	१७	क.	८	५०	२५	१२	१०	१४	५६
गु.	३	१३	४७	४०	१	५०	पुष्य	८	३	९	३७	शोभन	१२	३३	११	२५	कौ.	१३	५८	तै.	१	४०			५४	२४	१२	१०	२	५७
शु.	४	१४	४५	१०	०	२७	आश्ले.	७	४३	९	२८	अति.	८	३	९	३६	ग.	१३	३	व.	०	२७	सिं.	९/२८	५७	२३	१२	९	४९	५७
श.	५	१५	४०	५३	२२	४३	मघा	५	५५	८	४४	सुकर्मा	२/५	२०/१८	७/४	१८/३७	भ.	११	३५	बव	२२	४३			२९/१	२२	१२	९	३५	५८
		चैत्र कृष्णपक्ष																												
र.	६	१	३५	३८	२०	३६	पू. फा.	२/५९	१/०	७/९	३/३	शूल	४८	१५	१	९	बा.	९	३९	कौ.	२०	३	कं.	१३/११	५	२१	१२	९	२१	५८
चं.	७	२	२९	४३	१८	१३	हस्त	५४	५३	४	१७	गण्ड	४०	२५	२२	०	तै.	७	२४	ग.	१९/४	१३/५७			८	२०	१२	९	७	५८
मं.	८	३	२३	२५	१५	४१	चित्रा	५०	२०	२	२७	वृद्धि	३२	२०	१९	१५	भ.	१५	४१	बव	२	२४	तु.	१५/२२	१२	१९	१२	८	५३	१५
बु.	९	४	१७	५	१३	८	स्वाती	४६	२३	०	३९	ध्रुव	२४	१३	१५	५९	बा.	१३	८	कौ.	२३	५३			१९	१८	१२	८	३८	०
गु.	१०	५	१०	५३	१०	३८	विशा.	४१	४०	२२	५७	व्या.	१९	१५	१२	४७	तै.	१०	३८	ग.	२१	२९	वृ.	१७/२२	१९	१७	१२	८	२२	०
शु.	११	६	४/५३	८/३८	९	१५/५८	अनु.	३७	५०	२१	२४	हर्षण	८	२५	९	४२	व.	८	१५	भ.	१९/६	१०/५८			२३	१६	१२	८	७	१
श.	१२	८	५४	४३	४	८	ज्ये.	३४	३५	२०	५	वज्र	१/५३	१८/१०	६/४	४६/२	बा.	१७	६	कौ.	४	८	ध.	२०/५८	२७	१५	१२	७	५१	१
र.	१३	९	५०	३५	२	२८	मूल	३१	५८	१९	१	व्यती	४८	१३	१	३१	तै.	१५	१८	ग.	२	२८			३०	१४	१२	७	३४	२
चं.	१४	१०	४७	१०	१	५	पू. षा.	३०	३	१८	१४	वरीया	४२	३३	२३	१४	व.	१३	४६	भ.	१	५			३४	१३	१२	७	१८	२
मं.	१५	११	४४	३८	०	३	उ. षा.	२८	५८	१७	४७	परिघ	३७	३३	२१	१३	बव	१२	३४	बा.	०	३	म.	९	३८	१२	१२	७	१	३
बु.	१६	१२	४३	०	२३	२३	श्रवण	२८	४५	१७	४१	शिव	३३	१८	१९	३०	कौ.	११	४३	तै.	२३	२३			४१	११	१२	६	४४	३
गु.	१७	१३	४२	२८	२३	९	धनि.	२९	३०	१७	५८	सिद्धि	२९	५०	१८	६	ग.	१०	१६	व.	२३	९	कुं.	५/४	४५	१०	१२	६	२७	४
शु.	१८	१४	४३	०	२३	२१	शत.	३१	२३	१८	४२	साध्य	२७	१५	१७	३	भ.	१०	१५	श.	२३	२१			४९	९	१२	६	१०	४
श.	१९	३०	४४	४८	०	३	पू. भा.	३४	२५	१९	५४	शुभ	२५	३८	१९	२३	च.	११	४२	ना.	०	३	मी.	१३/३३	५३	८	१२	५	५२	५
		चैत्र शुक्लपक्ष																												
र.	२०	१	४७	५०	१	१५	उ. भा.	३८	४०	२१	३५	शुक्ल	२४	५८	१९	६	किं.	१२	३९	बव	१	१५			५९	७	१२	५	३५	५
चं.	२१	२	५२	५	२	५६	रेवती	४४	८	२३	४५	ब्रह्म	२५	१५	१९	१२	बा.	१४	५	कौ.	२	५६	मे.	२३/४५	३०/०	६	१२	५	१७	६
मं.	२२	३	५७	३०	५	४	अश्वि.	५०	४३	२	२१	ऐन्द्र	२६	३८	१९	३९	तै.	१६	०	ग.	५	४			४	४	१२	४	५९	६
बु.	२३	४	६०	०	२४	०	भरणी	५८	३	५	१६	वैधृति	२८	२३	१७	२४	व.	१८	१७	भ.	६	२			७	३	१२	४	४१	६
गु.	२४	४	३	४३	७	३१	कृत्ति.	६०	०	२४	०	विष्कुं	३०	४५	१८	२०	भ.	७	३१	बव	२०	४९	वृ.	१२/१	११	२	१२	४	२३	७
शु.	२५	५	१०	१८	१०	८	कृत्ति.	५	४८	८	२०	प्रीति	३३	१८	१९	२०	बा.	१०	८	कौ.	२३	२४			१५	१	१२	४	५	७
श.	२६	६	१९	४३	१२	४१	रोहि.	१३	२८	११	२३	आयु.	३५	३५	२०	१४	तै.	१२	४१	ग.	१	४९			१८	०	१२	३	४७	८
र.	२७	७	२२	२८	१४	५८	मृग.	२०	३०	१४	११	सौभा.	३७	१५	२०	५३	व.	१४	५८	भ.	३	५२	मि.	२/५८	२२	५/५८	१२	३	२८	८
चं.	२८	८	२७	०	१६	४९	आर्द्रा	२९	२५	१६	३२	शोभन	३७	५५	२१	८	बव	१६	४६	बा.	५	२०			२६	५८	१२	३	१०	९
मं.	२९	९	२९	५५	१[illegible]	५५	पुन.	३०	४५	१८	१५	अति.	३७	२०	२०	५३	कौ.	१७	५५	तै.	५	५९	क.	१९/५३	३०	५७	१२	२	५२	९
बु.	३०	१०	३०	५५	१८	१८	पुष्य	३३	१५	१९	१४	सुकर्मा	३५	१५	२०	२	तै.	६	६	ग.	१८	१८			३३	५९	१२	२	३४	९
गु.	३१	११	२९	५८	१७	५४	आश्ले.	३३	५०	१९	२७	धृति	३१	३८	१८	३४	व.	६	६	भ.	१७/५८	५४/१	सिं.	१९/२७	३७	५५	१२	२	१९	१

[C] (धुरड्डी) श्वपच-स्पर्श। सायंकाल चतुःषष्ठी (चौसट्टीदेवी) यात्रा पूजन। होलाष्टक समाप्त। वसन्तोत्सव। मृत्तिका-स्नान। करिदिन। गोविन्द-दोलोत्सव। दोल-यात्रा। वसन्त नवसस्येष्ठि। यायिजय योग घ.७ मि. ३३ बजे से घ.२० मि. ३६ बजे तक। त्रिपुष्कर योग घं. २० मि.३६ बजे प्रारम्भ। [D]चन्द्रोदय घं.२०मि.५७ बजे। ईद-ए-मौलाद। यायिजय योग घं.४मि.१७ बजे समाप्त। स्थायीजय योग घं. १५ मि. ५१ बजे प्रारम्भ। श्रीशिवाजी-जयन्ती (नवीन मत से)। [K]पूजा ८। बलिदानादि। वासन्ती दुर्गा-पूजा प्रारम्भ। भास्करदमनक-पूजा ७। भानु-सप्तमी ७ पर्व। द्विपुष्कर योग घं. १४ मि. ११ बजे समाप्त। आयंबील ओली प्रारम्भ (जैन)। [L]८ व्रत। अष्टमी पुनर्वसु-योग घ. १६ मि. ३२ बजे से घं. १६ मि. ४६ बजे तक। अशोक-कलिका-प्राशन। भवानी-उत्पति ८। कुमारी-पूजा। मेला बहूफोर्ट (जम्मू)। यायिजय योग घं.१६मि.४६ बजे प्रारंभ। [M]परिक्रमा-दर्शन-पूजन। महानवमी ९ व्रत। देवी-दमनक-पूजा। नवरात्र प्रयुक्त नवमी में हवनादि करना चाहिये। मेला मनसा देवी। श्रीस्वामीनारायण-जयन्ती। यायिजय योग घं. ५ मि. ५७ बजे समाप्त। [N] श्रीविष्णु-दोलोत्सव। सायं दोलाधिरूढ़ श्रीलक्ष्मीनारायण का पूजन। यायिजय योग घं.५मि.५५ बजे से घं.१७मि.५४ बजे। चन्दन शहीद बाबा का मेला। [O]भी व्रत अवश्य करें। त्रिपुष्कर योग घ.२मि.८बजे से घ.६मि.२५बजे तक। [B]स्थायिजय योग घं.० मि.२७ बजे समाप्त।

मार्च सन् १९७७ ई० । फाल्गुन शुक्ल ११ से चैत्रशुक्ल ११ तक, सं. २०३३-३४ विक्रमीय ।
राष्ट्रीय फाल्गुन मास १० से राष्ट्रीय चैत्र मास १० तक, शके १८९८-९९ शालिवाहन ।
रवि-उल-अव्वल १० से रवि-उल-आखर १० तक, १३९७ हिजरी । [Fमि. १० बजे से घं. १७‡

Pजयन्ती । महा (व्यती)पात घ. १४ मि.२३ बजे से घ.१९ मि. ४२ बजे तक । [‡मि. ५८ तक ।
Gपति-पूजा । धर्म घटादि-दान । पनिसरा चलाना । आरोग्य व्रत१। तिलक व्रत १। विद्याव्रत १। कल्पादि१।
तैलाभ्यंगादि । आर्यसमाज स्थापना-दिवस । सूर्य सायन मेष में घं.२३ मि.१२ बजे; वसन्त-सम्पात, सूर्य का उत्तरगोल-प्रवेश । दैत्यों की रात्रि, देवताओं का दिनोदय । यायिजय योग घं.० मि.३ बजे प्रारम्भ।

वार	तारीखें: उदित तिथि	सौर(कुंभ) फाल्गु.मा. ३० दिन	रवि-उल-अव्वल ३० दिन हि.	राष्ट्रीय फाल्गुन मास ३० दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात,पञ्चक,व्रत, पर्व, त्योहार,जयन्ती, यायि (मुद्दई) स्थायी(मुद्दालेह) जय योग,सन्धिकर, योगादि ।
मं.	११	१७	१०	१०	१	–भद्रा घ. १३ मि. ४२ बजे प्रारम्भ । आमलकी ११ एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवों का । श्रीकाशीA
बु.	१२	१८	११	११	२	–भद्रा घं.२ मि.८ बजे समाप्त । आमलकी११ एकादशी व्रत चक्रांकित महाभागवतों का । शुक्लपक्ष में बुधवार एवं पुनर्वसु नक्षत्र के योग से सुदुर्लभ जयन्ती नामक महाद्वादशी व्रत, इस परमपुण्यप्रद योग में वैष्णवों के अतिरिक्त गृहस्थ भी गाय की दही से एकादशी व्रत का पारण करके इस द्वादशी काO
गु.	१३	१९	१२	१२	३	–प्रदोष १३ व्रत । यायिजय योग घं.९ मि.३७ बजे प्रारम्भ । फातिहा-दुआजदहूम । बारावफात ।
शु.	१४	२०	१३	१३	४	–यायिजय योग घं.१ मि.४० बजे तक। स्थायीजय योग घ.९मि.२८ बजे शुरू। ईद-ए-मिलाद,मिलादुन्नवी ।
श.	१५	२१	१४	१४	५	–भद्रा घं. ० मि. २७ बजे प्रारम्भ । अन्वाधान। प्रदोष-कालमें (सूर्यास्त से घं. २० मि. २७ बजे तक) होलिकादाह । स्नानदान व्रत की फाल्गुनी पूर्णिमा १५ । मन्वादि१५। श्रीचैतन्य महाप्रभु-जयन्ती ।B
र.	१	२२	१५	१५	६	–भद्रा घं.११मि.३५ बजे समाप्त । इष्टि। चैत्रमास आरम्भ । होली । होलिका विभूति-धारण । धूलिवन्दनC
चं.	२	२३	१६	१६	७	–यायिजय योग घ.१८ मि.१३ बजे प्रारम्भ । त्रिपुष्कर योग घं.६ मि. १ बजे समाप्त। सन्त तुकारामP
मं.	३	२४	१७	१७	८	–भद्रा घं.४ मि.५७ बजे से घं.१५ मि.४१ बजे तक । कल्पादि ३ । भौमवती संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत ,D
बु.	४	२५	१८	१८	९	–स्थायीजय योग घं. २ मि. २७ बजे समाप्त । [Aविश्वनाथ-शृङ्गार-दिन । रंगभरी११एकादशी । R
गु.	५	२६	१९	१९	१०	–रङ्ग-पञ्चमी ५ । [Iहय-व्रत ५ । श्री ५, पूजन-कर्म-काल-व्यापिनी ५ में । ४ तिथि-वृद्धि ।
शु.	६	२७	२०	२०	११	–भद्रा घ.८मि.१५बजे से घं.१९मि.१०बजे तक। ७तिथि-क्षय।[Rशुक्र की परम तेजस्विता घं.८मि.३०बजे।
श.	८	२८	२१	२१	१२	–श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत, पर्युषितान्न(बासी)भोजन करना विहित है । कालाष्टमी ८ । अष्टका ।
र.	९	२९	२२	२२	१३	–अन्वष्टका । [Eसंकल्पादि में प्रयोजनीय वसन्तऋतु प्रारम्भ । मीन(खर)मास प्रारम्भ ।
चं.	१०	३०	२३	२३	१४	–भद्रा घं. १३ मि.४६ बजे प्रारम्भ । ⊙सूर्य की मीन-सक्रान्ति घं.११ मि.२७ बजे, मु. ३० साम्यार्घ, सामान्य पुण्य-काल सूर्योदय से संक्रान्ति-काल तक । भूमि माला गो अन्नादि-दान, गोदावरी में स्नान;E
मं.	११	१	२४	२४	१५	–भद्रा घ. १ मि. ५ बजे समाप्त । पापमोचनी ११ एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवों का । यायिजय योग घं. १ मि. ५ बजे से घं.६ मि.१२ तक । सौर चैत्र मास प्रारम्भ । [H(रवि-उस्सानी)४ माह शुरू ।
बु.	१२	२	२५	२५	१६	–पापमोचिनी एकादशी व्रत चक्रांकित महाभागवतों का । स्थायीजय योग घं.०मि.३बजेसे घ.६मि.११बजे तक।
गु.	१३	३	२६	२६	१७	–पंचक प्रारम्भ घ.५मि.४५ बजे । भद्रा घ.२३मि.९ बजे प्रारम्भ । प्रदोष १३ व्रत । मास शिवरात्रि-१३ व्रत । वारुणी-पर्व सायं घं. १७ मि. ५८ बजे से, राजघाट किले के गंगा-वरुणा-संगम पर स्नान अथवा गंगा में स्नान करना विहित है । आदिकेशव भगवान का दर्शन तथा पूजन। यायिजय योग घं.६F
शु.	१४	४	२७	२७	१८	–पचक । भद्रा घं.१०मि.१५ बजे समाप्त । स्थायीजय योग घ.१८मि.४२ बजे से घं.२३मि.२१बजे तक
श.	३०	५	२८	२८	१९	–पचक। अन्वाधान। मन्वादि ३०। स्नान-दान श्राद्ध की दर्श३०अमावस्या, पापवारी प्रजाक्षयकरी, दुर्भिक्ष-करी । चान्द्र सम्वत्सर समाप्त । महा(वैधृति)पात घ.१२ मि.१४ बजे से घं.१९ मि. ५१ बजे तक ।
र.	१	६	२९	२९	२०	–पंचक । इष्टि । श्रीसंवत् २०३४शके १८९९ प्रारम्भ । 'प्रमोद' सवत्सर का संकल्पादि में प्रयोगारम्भ । चान्द्र सवत्सर शुरू । नव सम्वत्सरोत्सव । वासन्त नवरात्र प्रारम्भ। कलश-स्थापन,ध्वजारोपण, वर्षG
चं.	२	७	३०	३०	२१	–पचक समाप्त घं. २३ मि. ४५ बजे । ◡चंद्र-दर्शन मु. ३० साम्यार्घ । चन्द्र-व्रत । यायिजय योग घं. १ मि. १५ बजे समाप्त । सिन्धी सम्प्रदाय के श्रीझूलेलाल-जयन्ती महोत्सव ।
मं.	३	८	१	१	२२	–मत्स्य-जयन्ती ३ । सौभाग्य ३ व्रत । गणगौरी व्रत ३ । मन्वादि ३ । साय शिवगौरी-पूजन । दोलारूढ़ गौरी-शिव-पूजन । श्रीरामदोलोत्सव । राष्ट्रीय चैत्र मास शके १८९९ आरम्भ । रवि-उल-आखरH
बु.	४	९	२	२	२३	–भद्रा घं. १८ मि.१७ प्रारम्भ । वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत, दमनक (दवना) से श्रीगणेशजी का पूजन ।
गु.	४	१०	३	३	२४	–भद्रा घ. ७ मि. ३१ बजे समाप्त । मध्याह्नव्यापिनी पञ्चमी में श्रीरामराज्य-महोत्सव कर्कलग्न में ।I
शु.	५	११	४	४	२५	–नाग-व्रत ५। कल्पादि ५। अनन्तादि नाग-पूजन ५। [Jद्विपुष्कर योग घं. १२ मि. ४१ बजे प्रारम्भ ।
श.	६	१२	५	५	२६	–श्रीसूर्यषष्ठी ६ व्रत (गया में प्रसिद्ध है) । कुमार-व्रत, स्कन्दषष्ठी ६ व्रत । स्कन्द-दमनकोत्सव ६ ।J
र.	७	१३	६	६	२७	–भद्रा घं. १४ मि.५८ बजे प्रारम्भ । श्रीभवानी अन्नपूर्णा-परिक्रमा घं.१४ मि.५८ बजे से । महानिशा-K
चं.	८	१४	७	७	२८	–भद्रा घ.३ मि.५२ बजे समाप्त । श्रीभवानी अन्नपूर्णा-परिक्रमा घं.१६ मि. ४६ बजे तक । दुर्गाष्टमीL
मं.	९	१५	८	८	२९	–श्रीरामनवमी९व्रत सबका । श्रीरामजन्म-महोत्सव मध्याह्न कर्क लग्न में । श्रीरामावतार । अयोध्या-M
बु.	१०	१६	९	९	३०	–रामनवमी व्रत का पारण । दशदिनात्मक नवरात्र व्रत समाप्त । शुक्र-वृद्धत्व दोषारम्भ आवश्यकीय ।
गु.	११	१७	१०	१०	३१	–भद्रा घं. १ मि. [illegible] बजे से [illegible] मि. [illegible] बजे तक । [illegible] ११ एकादशी व्रत सबका ।

ता. ग्रह रा. नक्ष. चरण (नवां) प्रवे. स्टैं. टा.

मार्च	ग्रह	चिन्ह	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
१	सू.	☉	शत.	४	मी.	३	२७
२	बु.	☿	शत.	१	ध.	१६	२५
३	मं. +	♂	धनिष्ठा	१	सिं.	११	५०
४	सू.	☉	पू.भा.	१	मे.	११	१४
४	बु.	☿	शत.	२	म.	१४	४४
६	बु.	☿	शत.	३	कुं.	१२	५
६	प्लू. R	P	हस्त	३	मि.	२०	४५
७	मं. +	♂	धनिष्ठा	२	कं.	१८	२९
७	सू.	☉	पू.भा.	२	वृ.	१९	१२
८	बु.	☿	शत.	४	मी.	८	३५
९	शु.	♀	मे.अश्वि	१	मे.	२	८
१०	बु.	☿	पू.भा.	१	मे.	४	१३
११	सू.	☉	पू.भा.	३	मि.	३	१७
११	बु.	☿	पू.भा.	२	वृ.	२३	४
१२	मं. +	♂	कुं.धनि.	३	तु.	१	१२
१३	बु. +	☿	पू.भा.	३	मि.	१७	१२
१४	सू.	☉	मी.पूभा.	४	क.	११	२७
१५	बु. +	☿	मी.पूभा.	४	क.	१०	४१
१६	मं. +	♂	धनिष्ठा	४	वृ.	७	४४
१६	शु.	♀	वक्री	—	—	८	२७
१६	नेप.	♆	वक्री	—	—	१३	४१
१७	बु. +	☿	उ.भा.	१	सिं.	३	२४
१७	गु.	♃	कृत्तिका	३	कुं.	१८	४३
१७	सू.	☉	उ.भा.	१	सिं.	१९	३५
१८	बु. +	☿	शत.	१	ध.	१९	५५
२०	बु. +	☿	उ.भा.	२	कं.	११	५५
२०	मं. +	♂	उ.भा.	३	तु.	१४	१३
२१	सू.	☉	उ.भा.	२	कं.	४	१४
२२	बु. +	☿	उ.भा.	४	वृ.	३	४२
२३	शु. R	♀	मी.रेव.	४	मी.	९	४६
२३	बु. +	☿	रेवती	१	ध.	१९	२५
२४	सू.	☉	उ.भा.	३	तु.	१३	२
२४	मं. +	♂	शत.	२	म.	२०	४०
२५	बु. +	☿	रेवती	२	म.	११	१८
२५	श. R	♄	पुष्य	४	वृ.	१४	१
२७	बु.	☿	रेवती	३	कुं.	३	३८
२७	सू.	☉	उ.भा.	४	वृ.	२२	१
२८	बु. +	☿	रेवती	४	मी.	२०	५३
२९	मं. +	♂	शत.	३	कुं.	३	११
३०	बु.	☿	मे.अश्वि	१	मे.	१५	२४
३१	शु. R	♀	रेवती	३	कुं.	३	२
३१	सू.	☉	रेवती	१	ध.	६	३५

ता. २८ मार्च को बुध उदय पश्चिम में।

जंत्री में जहाँ भी घण्टा, मिनट दिये गये हैं, वे भारतीय प्रमाणित समय (स्टैं.टा., रेलवे-रेडियो-समय) सूचित करते हैं, घटी-पल काशी के स्पष्टार्कोदयात् दिये गये हैं।

स्था. काशी प्रातः स्टैं. टा ५।२९ बजे सूर्य का — चित्रापक्षीय अर्ध दैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट

ता.	वा.	स्था. काशी के ० बजे का सांपा.का. घं.	मि.	से.	दैनिक स्पष्ट ☉ रा.	अं.	क.	वि.	दैनिक गति क.	वि.	दै. क्रां. दक्षिण अं.	क.	चं. स्पष्ट घं. ५ मि. २९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्ध दैनि. गति अं.	क.	वि.	चं. स्प. घं. १७ मि. २९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्धदैनि गति अं.	क.	वि.
१	मं.	१०	३३	४९	१०	१६	४५	६	६०	११	७	४३	२	१८	४५	४२	६	१६	४१	२	२५	२	२४	६	२१	[illegible]
२	बु.	१०	३७	४६	१०	१७	४५	१७	६०	१०	७	२०	३	१	२४	२	६	२७	३	३	७	५१	[illegible]	६	३२	[illegible]
३	गु.	१०	४१	४२	१०	१८	४५	२७	६०	७	६	५७	३	१४	२३	३०	६	३८	१	३	२१	१	३१	६	४३	[illegible]
४	शु.	१०	४५	३९	१०	१९	४५	३४	६०	६	६	३४	३	२७	४४	५२	६	४८	४२	४	४	३३	३४	६	५३	[illegible]
५	श.	१०	४९	३६	१०	२०	४५	४०	६०	३	६	११	४	११	२७	५	६	५८	६	४	१८	२५	११	७	२	[illegible]
६	र.	१०	५[illegible]	३२	१०	२१	४५	४३	६०	२	५	४८	४	२५	२७	१६	७	५	४८	५	२	३३	४	७	८	[illegible]
७	चं.	१०	५७	२९	१०	२२	४५	४५	५९	५९	५	२४	५	९	४१	७	७	१०	२९	५	१६	५१	३६	७	११	[illegible]
८	मं.	११	१	२५	१०	२३	४५	४४	५९	५८	५	१	५	२४	३	३२	७	१२	३७	६	१	१६	९	७	१३	[illegible]
९	बु.	११	५	२२	१०	२४	४५	४२	५९	५७	४	३८	६	८	२९	२०	७	१२	४१	६	१५	४२	१	७	११	[illegible]
१०	गु.	११	९	१८	१०	२५	४५	३९	५९	५५	४	१४	६	२२	५३	५५	७	१०	४३	७	०	४	८	७	९	[illegible]
११	शु.	११	१३	१५	१०	२६	४५	३४	५९	५३	३	५१	७	७	१३	४१	७	७	१२	७	१४	२०	५३	७	५	[illegible]
१२	श.	११	१७	११	१०	२७	४५	२७	५९	५२	३	२७	७	२१	२६	०	७	२	४७	७	२८	२८	४७	७	०	[illegible]
१३	र.	११	२१	८	१०	२८	४५	१९	५९	५०	३	३	८	५	२९	८	६	५७	४७	८	१२	२[illegible]	५५	६	५५	[illegible]
१४	चं.	११	२५	५	१०	२९	४५	९	५९	४८	२	४०	८	१९	२१	५९	६	५२	१८	८	२६	१४	१७	६	४९	[illegible]
१५	मं.	११	२९	१	११	०	४४	५	५९	४६	२	१६	९	३	३	४०	६	४६	२५	९	९	५०	५	६	४३	[illegible]
१६	बु.	११	३२	५८	११	१	४४	४४	५९	४५	१	५२	९	१६	३३	२६	६	४०	१२	९	२३	१३	३८	६	३[illegible]	५
१७	गु.	११	३६	५४	११	२	४४	२९	५९	४३	१	२९	९	२९	५०	३२	६	३३	३५	१०	६	२४	७	६	३०	[illegible]
१८	शु.	११	४०	५१	११	३	४४	१२	५९	४२	१	५	१०	१२	५४	१८	६	२६	४४	१०	१९	२१	२	६	२३	[illegible]
१९	श.	११	४४	४[illegible]	११	४	४३	५४	५९	३[illegible]	०	४१	१०	२५	४४	१४	६	१९	४४	११	२	३	५८	६	१८	[illegible]
२०	र.	११	४[illegible]	४४	११	५	४३	३२	५९	३७	०	१८	११	८	२०	१६	६	१२	५६	११	१४	३३	१२	६	९	४
२१	चं.	११	५२	४०	११	६	४३	९	[illegible]	[illegible]	उ०	६	११	२०	४२	५५	६	६	३९	११	२६	४९	३४	६	३	५
२२	मं.	११	५६	३७	११	७	४२	४४	५९	३३	०	३०	०	३	५३	२४	६	१	१७	०	८	५४	४१	५	५९	[illegible]
२३	बु.	१२	०	३४	११	८	४२	१७	५९	३१	०	५४	०	१४	५३	४४	५	५७	१२	०	२०	५०	५६	५	५५	४
२४	गु.	१२	४	३०	११	९	४१	४८	५९	२८	१	१७	०	२६	४६	४१	५	५४	४७	१	२	४१	२८	५	५४	[illegible]
२५	शु.	१२	८	२७	११	१०	४१	१६	५९	२७	१	४१	१	८	३५	४५	५	५४	२०	१	१४	३०	५	५	५४	५
२६	श.	१२	१२	२३	११	११	४०	४[illegible]	५९	२४	२	४	१	२०	२५	१	५	५६	७	१	२६	२१	८	५	५७	५
२७	र.	१२	१६	२०	११	१२	३९	७	५९	२२	२	२८	२	२	१९	३	६	०	१७	२	८	१९	१९	६	३	[illegible]
२८	चं.	१२	२०	१६	११	१३	३९	२[illegible]	५९	१८	२	५१	२	१४	२२	३३	६	६	५१	२	२०	२९	२४	६	१०	५
२९	मं.	१२	२४	१३	११	१४	३८	४७	५९	१८	३	१५	२	२६	४०	२२	६	१५	३९	३	२	५६	१	६	२०	५
३०	बु.	१२	२८	९	११	१५	३८	५	५९	१४	३	३८	३	९	१६	५१	६	२५	२५	३	१५	४३	१६	६	३२	[illegible]
३१	गु.	१२	३२	६	११	१६	३७	१९	५९	१३	४	१	३	२२	१५	३७	६	३८	३३	३	२९	५४	१०	६	४४	५

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

मार्च तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध सम्मुख	वाम+	दक्षिण R	पंचशला का-वेध	लत्ता
चालू	राहु	चित्रा	पू. भा.	मूल	मृगशिर	पू.भा.	श्रवण ♂
,,	केतु	अश्विनी	पू. भा.	रोहिणी	ज्येष्ठा ♆	पू.फा.	आश्ले. ♄
,,	गुरु	कृत्तिका	श्रवण ♂	विशाखा	भरणी	विशाखा	पुष्य
२	बुध	शतभिषा	स्वाती ♅	पुष्य	अभिजित्	स्वाती ♅	ज्येष्ठा ♆
३	मंगल+	धनिष्ठा	विशाखा	आश्ले. ♄	श्रवण	आश्ले ♄	पू.भा.
४	सूर्य	पू. भा.	चित्रा ☊	पुनर्वसु	उ.भा.	चित्रा ☊	आश्ले. ♄
९	शुक्र	अश्विनी	पू. फा.	रोहिणी	ज्येष्ठा ♆	पू.फा.	शतभि☿
१०	बुध	पू. भा.	चित्रा ☊	पुनर्वसु	उ.भा.	चित्रा ☊	मूल
१७	बुध	उ. भा.	हस्त P	आर्द्रा	पूर्वाषाढ़ा	हस्त P	पू.षा.
१७	सूर्य	उ. भा.	हस्त P	आर्द्रा	पूर्वाषाढ़ा	हस्त P	मघा।
२०	मंगल+	शतभिषा	स्वाती ♅	पुष्य	अभिजित्	स्वाती ♅	उभा ☉
२३	बुध	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल	उ.फा.	उ.षा.
२३	शुक्र R	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल	उ.फा.	धनिष्ठा
२५	शनि R	पुष्य	ज्येष्ठा ♀	पू. फा.	शत. ♂	ज्येष्ठा ♆	स्वाती ♅
३०	बुध	अश्विनी	पू. फा.	रोहिणी	ज्येष्ठा ♆	पू.फा.	श्रवण
३१	सूर्य	रेवती	उ. फा.	मृगशिर्ष	मूल	उ.फा.	पू.फा.

आकाशी-लक्षण—मासारम्भ में ही चंद्र-शनि-युति से तेज हवा पानी बदली से खड़ी फसल को हानि पहुँचेगी। ता २,३,४,५,[illegible]१०,१२को वर्षा वायु-सम्बन्धी उपद्रव के योग हैं। संक्रान्ति वक्रप-अन्तर में पड़ जाने से ता. १४,१५,१६,१७,२०,२३,२५,२८,३०,३१ को प्रायः सभी प्रदेशों में न्यूनाधिक वृष्टि होगी।

स्पष्ट ग्रह एवं दै. गति प्रा ता:५।२९२ई. को

ता.	♂ मं.			ग.	☿ बु.			ग.	♃ गु.			ग.	♀ शु.			ग.	♄ श. R			ग.	☊ रा.			♅ ह. R			♆ ने.			P प्लू. R		
मार्च	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	९	२१	३५	४६	१०	४	११	१०२	१	०	४	८	११	२६	५४	३०	३	१७	५२	४	६	३	१३	६	१८	१०	७	२२	३३	५	२०	८
४	९	२३	५५	४	१०	९	२०	१०५	१	१	१४	९	११	२८	१८	२५	३	१७	४१	४	६	३	४	६	१८	७	७	२२	३४	५	२०	४
७	९	२६	१५	४६	१०	१४	३८	१०८	१	१	४०	९	११	२९	२७	१९	३	१७	३०	३	६	२	५४	६	१८	४	७	२२	३५	५	२०	०
१०	९	२८	३५	४६	१०	२०	६	११२	१	२	७	९	०	०	१८	१३	३	१७	२०	३	६	२	४४	६	१८	१	७	२२	३६	५	१९	५६
१३	१०	०	५६	४६	१०	२५	४४	११४	१	२	३५	१०	०	०	५०	६	३	१७	१०	३	६	२	३५	६	१७	५७	७	२२	३६	५	१९	५१
१६	१०	३	१६	४७	११	१	३२	११८	१	३	५	१०	०	१	१	०	३	१७	२	३	६	२	२५	६	१७	५३	७	२२	३७	५	१९	४६
१९	१०	५	३७	४७	११	७	२८	१२०	१	३	३५	१०	०	०	५१	८	३	१६	५४	३	६	२	१६	६	१७	४८	७	२२	३७	५	१९	४१
२२	१०	७	५७	४७	११	१३	२९	१२१	१	४	६	११	०	०	१९	१६	३	१६	४७	२	६	२	६	६	१७	४३	७	२२	३६	५	१९	३६
२५	१०	१०	१७	४७	११	१९	३१	१२०	१	४	३८	११	११	२९	२४	२३	३	१६	४१	१	६	१	५७	६	१७	३८	७	२२	३६	५	१९	३१
२८	१०	१२	३८	४७	११	२५	२६	११५	१	५	११	११	११	२८	९	२९	३	१६	३६	१	६	१	४७	६	१७	३३	७	२२	३५	५	१९	२६
३१	१०	१४	५८	४७	०	१	५	१०७	१	५	४५	११	११	२६	३७	३४	३	१६	३१	१	६	१	३८	६	१७	२८	७	२२	३४	५	१९	२१

फाल्गुनपूर्णिमान्त ☽ ☍ ☉ काशी, शनिवार
ता. ५।३।७७ई. भा. स्टैं. टा. घं. २२मि. ४३
इष्ट सांपातिक काल घं. ९ मि. ३८ से. २०

ल०	द०
६	३
२५	२८
५०	४०
४२	९

ने. प्लू. ९ ८ ह. रा. ६ ५ चं. मं. ७ १० ४ श. १ बु. र. ११ १२ के. ३ २ शु बृ.

☉ मीन-संक्रांति, काशी, सोमवार
ता. १४।३।७७ई० भा. स्टैं. टा. घं. ११ मि. २७
इष्ट सांपातिक काल घं. २२मि. ५५से. ५८

ल०	द०
२	१०
२	१९
३१	५
२७	३०

शु. बृ. ४ ५ २ १ के. शु. प्लू. ६ ३ ९ १२ र. रा. ह. ७ ८ चं. ११ १० बृ. मं. ने.

चैत्र अमान्त ☽ ☌ ☉ काशी, शनिवार
ता. २०।३।७७ ई० भा. स्टैं. टा. घं. ०मि. ३
इष्ट सांपातिक काल घं. ११ मि. ५३ से. ४५

ल०	द०
७	५
२४	४
२५	४४
१	१७

ह. रा. ९ ने. ८ ७ १० ६ प्लू. ११ मं. ५ र. चं. १२ २ बृ. ४ श. बु. १ ३ शु के.

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदय का समय भा. स्टै. टा. में)

मार्च		मेष			वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	मं.	८	३२	३४	१०	१०	१२	७	१४	२०	१६	३८	१८	५२	२१	४	२३	२१	१	४२	३	४७	५	३३	७	४
२	बु.	८	२८	३८	१०	६	१२	३	१४	१५	१६	३४	१८	४८	२१	०	२३	१७	१	३८	३	४३	५	२९	७	०
३	गु.	८	२४	४२	१०	२	११	५९	१४	१२	१६	३०	१८	४४	२०	५७	२३	१३	१	३४	३	३९	५	२५	६	५६
४	शु.	८	२०	४६	९	५८	११	५५	१४	८	१६	२६	१८	४०	२०	५३	२३	९	१	३०	३	३५	५	२१	६	५२
५	श.	८	१६	५१	९	५४	११	५१	१४	४	१६	२२	१८	३६	२०	४९	२३	५	१	२६	३	३१	५	१७	६	४८
६	र.	८	१२	५५	९	५०	११	४७	१४	१	१६	१८	१८	३२	२०	४५	२३	१	१	२२	३	२७	५	१३	६	४४
७	चं.	८	८	५९	९	४७	११	४३	१३	५७	१६	१४	१८	२८	२०	४१	२२	५७	१	१८	३	२३	५	९	६	४०
८	मं.	८	५	३	९	४३	११	३९	१३	५३	१६	१०	१८	२४	२०	३७	२२	५३	१	१४	३	१९	५	५	६	३६
९	बु.	८	१	७	९	३९	११	३५	१३	४९	१६	६	१८	२०	२०	३३	२२	४९	१	१०	३	१६	५	१	६	३२
१०	गु.	७	५७	११	९	३५	११	३१	१३	४५	१६	२	१८	१६	२०	२९	२२	४५	१	६	३	१२	४	५७	६	२८
११	शु.	७	५३	१५	९	३१	११	२७	१३	४१	१५	५९	१८	१२	२०	२५	२२	४१	१	२	३	८	४	५३	६	२४
१२	श.	७	४९	१९	९	२७	११	२३	१३	३७	१५	५५	१८	९	२०	२१	२२	३७	०	५८	३	४	४	४९	६	२१
१३	र.	७	४५	२३	९	२३	११	२०	१३	३३	१५	५१	१८	५	२०	१७	२२	३४	०	५४	३	०	४	४५	६	१७
१४	चं.	७	४१	२७	९	१९	११	१६	१३	२९	१५	४७	१८	१	२०	१३	२२	३०	०	५१	२	५६	४	४१	६	१३
१५	मं.	७	३७	३१	९	१५	११	१२	१३	२५	१५	४३	१७	५७	२०	९	२२	२६	०	४७	२	५२	४	३८	६	९
१६	बु.	७	३३	३५	९	११	११	८	१३	२१	१५	३९	१७	५३	२०	५	२२	२२	०	४३	२	४८	४	३४	६	५
१७	गु.	७	२९	४०	९	७	११	४	१३	१७	१५	३५	१७	४९	२०	२	२२	१८	०	३९	२	४४	४	३०	६	१
१८	शु.	७	२५	४४	९	३	११	०	१३	१३	१५	३१	१७	४५	१९	५८	२२	१४	०	३५	२	४०	४	२६	५	५७
१९	श.	७	२१	४८	८	५९	१०	५६	१३	९	१५	२७	१७	४१	१९	५४	२२	१०	०	३१	२	३६	४	२२	५	५३
२०	र.	७	१७	५२	८	५५	१०	५२	१३	६	१५	२३	१७	३७	१९	५०	२२	६	०	२७	२	३२	४	१८	५	४९
२१	चं.	७	१३	५६	८	५१	१०	४८	१३	२	१५	१९	१७	३३	१९	४६	२२	२	०	२३	२	२८	४	१४	५	४५
२२	मं.	७	१०	०	८	४८	१०	४४	१२	५८	१५	१५	१७	२९	१९	४२	२१	५८	०	१९	२	२४	४	१०	५	४१
२३	बु.	७	६	४	८	४४	१०	४०	१२	५४	१५	११	१७	२५	१९	३८	२१	५४	०	१५	२	२०	४	६	५	३७
२४	गु.	७	२	८	८	४०	१०	३६	१२	५०	१५	७	१७	२१	१९	३४	२१	५०	०	११	२	१७	४	२	५	३३
२५	शु.	६	५८	१२	८	३६	१०	३२	१२	४६	१५	३	१७	१७	१९	३०	२१	२६	०	७	२	१३	३	५८	५	२९
२६	श.	६	५४	१६	८	३२	१०	२८	१२	४२	१५	०	१७	१३	१९	२६	२१	४२	०	३	२	९	३	५४	५	२५
																		*	२३	५९						
२७	र.	६	५०	२१	८	२८	१०	२४	१२	३८	१४	५६	१७	१०	१९	२२	२१	३	२३	५५	२	५	३	५०	५	२२
२८	चं.	६	४६	२५	८	२४	१०	२१	१२	३४	१४	५२	१७	६	१९	१८	२१	३५	२३	५२	२	१	३	४६	५	१८
२९	मं.	६	४२	२९	८	२०	१०	१७	१२	३०	१४	४८	१७	२	१९	१४	२१	३१	२३	४८	१	५७	३	४२	५	१४
३०	बु.	६	३८	३३	८	१६	१०	१३	१२	२६	१४	४४	१६	५८	१९	१०	२१	२७	२३	४४	१	५३	३	३९	५	१०
३१	गु.	६	३४	३७	८	१२	१०	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भविष्यवाणी—शनि वक्री है; किन्तु युद्धक ग्रह मंगल अतिचारी होगया है, अतः युद्ध-क्षेत्रके विस्तारसे विश्वशांति भंग नहीं हो पायेगी। अमेरिकी सद्प्रयास और मददके बावजूद मुसलिम देशोंके स्वयमें सुधारके लक्षण नहीं हैं। ता. २५को गुरुका राहुसे षडाष्टक तथा ता. १५को मंगलसे महाकेंद्र योग □ होगा; क्योंकि म. की गु. पर पूर्ण दृष्टि भी है। ये कुयोग तटस्थ, शांतिप्रिय, विकासशील देशों के लिए भी नेष्ट और नानाप्रकार की विषम समस्याएँ पैदा करनेवाले हैं।

संक्रान्तिफल—सूर्य मीनमें गत स.से ३वार ४नक्षत्र मु. ३०पर ता. १४ को प्रवेश करते हैं। ता. १६को शुक्र और नेप. वक्री हो जायेंगे। धान्य चावल गेहूँ चना जौ अरहर एवं मोटे अनाज सस्ता हों, घी, गुड़ खाँड़ आदि रसकस व किराना तेज हो। सोना चाँदी और शेयर्स— में संक्रान्ति तक घटाबढ़ीसे तेजी, पश्चात् मंदी चल पड़े।

ता० २६ मार्च को धनु-लग्न का उदय दो बार होगा।

चैत्र शुक्ल १२ से वैशाख शुक्ल ११ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, उत्तरायण, उत्तरगोल, बसन्त ऋतु।

वार ३० दिन	अप्रैल १९७७ ई०	चैत्र शुक्लपक्ष तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	च. राशि-प्रवेश राशि	घं.मि.	दिनमान घ. पल	काशी सूर्य उ.म.अ. भारतीय स्टैं. टा. उ. घं.मि.	मध्याह्न घण्टा	मिनट	सेकेण्ड	अ. घं.मि.
शु.	१	१२	२७	५	१	४४	मघा	२२	३५	१८	५६	शूल	२६	३०	१८	३०	बा.	१६	४४	कौ.	३	४८			३०/४१	५८/४	१२	१	५८	१९/१०
श.	२	१३	१२	३०	१४	५३	पू.फा.	२९	४०	१७	४५	गण्ड	२०	३	१३	५४	तै.	१४	५३	ग.	१	४१	क.	२ ३/९	४४	५२	१२	१	४०	११
र.	३	१४	१६	३३	१२	२९	उ.फा.	२५	२८	१५	१	वृद्धि	१२	२३	१०	४९	व.	१२	२९	न.	२३	४			४८	५२	१२	१	२२	११
चं.	४	१५	९	३०	९	३९	हस्त	२०	५	१३	५३	ध्रुव	८ ३/०	५३/४८	०/७	२४/४३	बव	९	३९	बा.	२०	५			५१	५१	१२	१	४	१२
		वैशाख कृष्णपक्ष																												
मं.	५	१	८ १/१	४५/५०	६/३	३२/१६	चित्रा	१४	१०	११	३०	हर्षण	४५	१३	२२	५५	कौ.	६	३२	तै.	१६/३	५४/१६	तु.	०/४३	५५	५०	१२	०	४७	१२
बु.	६	३	४५	२०	०	१	स्वाती	७	५८	९	०	वज्र	३५	४३	२०	६	व.	१३	३८	भ.	०	१			५६	४९	१२	०	२९	१२
गु.	७	४	२०	४८	२०	५५	विशा.	८ १/४	२५/३	६/४	३४/१२	सिद्धि	२१	२८	१६	२२	बव	१०	२८	बा.	२०	५५	वृ.	९ १/०	३ १/२	४८	१२	०	१२	१३
शु.	८	५	२०	४३	१८	४	ज्येष्ठा	५१	२५	२	२१	व्यती.	१७	४३	१२	५२	कौ.	७	२९	तै.	१८/४	८ ४/०			६	४७	११	५९	५५	१३
श.	९	६	२४	३५	१५	३६	मूल	४७	३५	०	४८	वरी.	९	४०	९	३८	व.	१५	३५	भ.	२	३५	ध.	२/२१	९	४६	११	५९	३९	१४
र.	१०	७	१९	३२	१३	३४	पू.षा.	४४	५८	२२	४४	परिघ	८ २/३	३०/४८	६/४	६५/१६	बव	१३	२४	बा.	१	४८			१३	४५	११	५९	२२	१४
चं.	११	८	१५	४८	१२	३	उ.षा.	४२	३८	२२	११	सिद्धि	५१	१२	२	१२	कौ.	१२	२	तै.	२२	३३	म.	३ ५/२	१७	४४	११	५९	६	१५
मं.	१२	९	१३	२५	११	५	श्रवण	४२	३८	२२	१०	साध्य	४६	५०	०	३७	ग.	११	५	व.	२२	५२			२०	४३	११	५८	५०	१५
बु.	१३	१०	१२	२५	१०	४०	धनि.	४५	३	२३	४२	शुभ	४४	२३	२३	२७	भ.	१०	४०	बव	२२	४४	कुं.	११/२२	२४	४२	११	५८	३५	१[illegible]
गु.	१४	११	१२	४८	१०	४८	शत.	४७	४३	०	४[illegible]	शुक्ल	४२	३३	२२	४२	बा.	१०	४८	कौ.	२३	८			२७	४१	११	५८	२०	१६
शु.	१५	१२	१४	३०	११	२८	पू.भा.	५१	२८	२	१९	ब्रह्म	४१	४३	२२	२१	तै.	११	२८	ग.	०	१	मी.	१९/८३	३१	४०	११	५८	५	१६
श.	१६	१३	१७	३०	१२	३५	उ.भा.	५६	३५	४	१७	ऐन्द्र	४१	४५	२२	२१	व.	१२	३५	भ.	१	२२			३४	३९	११	५७	५१	१७
र.	१७	१४	२१	१८	१४	९	रेवती	६०	०	२४	०	वैधृति.	४२	३३	२२	३९	श.	१४	९	च.	३	७			३८	३८	११	५७	३७	१७
चं.	१८	३०	२६	१०	१[illegible]	५	रेवती	२	३५	६	३९	विष्कु.	४४	५	२३	१५	ना.	१६	५	किं.	५	१२	मे.	३ ६/९	४१	३७	११	५७	२३	१८
		वैशाख शुक्लपक्ष																												
मं.	१९	१	३१	५०	१८	२०	अश्वि.	९	२०	९	२०	प्रीति	४६	८	०	३	बव	१८	२०	बा.	५	३६			४४	३६	११	५७	१०	१८
बु.	२०	२	३८	०	२०	४८	भरणी	१[illegible]	३८	१२	१५	आयु.	४८	३०	१	०	बा.	७	३४	कौ.	२०	४८	वृ.	१९/१	४८	३६	११	५६	५७	१९
गु.	२१	३	४४	२८	२३	२२	कृत्ति.	२४	२०	१५	१९	सौभा.	५१	५	२	१	तै.	१०	५	ग.	२३	२२			५१	३५	११	५६	४४	१९
शु.	२२	४	५०	५०	१	५४	रोहि.	३२	५	१८	२४	शोभन	५३	३५	३	०	व.	१२	३८	भ.	१	५४			५४	३४	११	५[illegible]	३२	२०
श.	२३	५	५६	४५	४	१५	मृग.	२९	२८	२१	२०	अति.	५५	४५	३	५१	बव	१५	४	बा.	४	१५	मि.	५ ७/३	५८	३३	११	५६	२१	२०
र.	२४	६	६०	०	२४	०	आर्द्रा	४९	८	२२	५९	सुकर्मा	५७	१३	४	२५	कौ.	१७	१५	तै.	५	२१			३ २/१	३२	११	५[illegible]	१०	२१
चं.	२५	६	१	४८	६	१४	पुन.	५१	३८	२	१०	धृति	५७	४५	४	३७	तै.	६	१४	ग.	१८	५८	क.	११/४०	४	३१	११	५५	५९	२१
मं.	२६	७	५	३०	७	४२	पुष्य	५५	३५	३	४४	शूल	५७	३	४	१९	व.	७	४२	भ.	२०	६			८	३०	११	५५	४९	२१
बु.	२७	८	७	३३	८	३१	आश्ले.	५७	४५	४	३६	गण्ड	५४	५०	३	२६	बव	८	३१	बा.	२०	३३			११	३०	११	५५	३९	२२
गु.	२८	९	७	४५	८	३५	मघा	५८	३	४	४२	वृद्धि	५१	८	१	५६	कौ.	८	३५	तै.	८	१४	सिं.	३ ४/६	१४	२९	११	५५	३०	२२
शु.	२९	१०	९	०	७	५२	पू.फा.	५६	२५	४	२	ध्रुव	४५	५३	२३	४९	ग.	७	५२	व.	१९	७			१७	२८	११	५५	२१	२३
श.	३०	११	८ २/४	१८/३३	६/४	२२/११	उ. फा.	५३	०	२	३९	व्या.	३९	१३	२१	८	भ.	६	२२	बव	१७/४	१९/११	कं.	४ ०/८	२०	२७	११	५५	१३	२३

[G] सुभिक्षकरी। **सोमवती अमावस्या ३०** पुण्यतमा, पीपल वृक्ष के नीचे श्रीविष्णु की प्रतिमा की अभीष्ट फलादि से प्रदक्षिणा करने से पति की आयु और सुख की वृद्धि होती है। कपिलधारा तीर्थ (काशी) में श्राद्ध। कङ्कणाकृति(काशी में खण्डग्रास-दृश्य) सूर्य-ग्रहण, काशी में स्पर्श घं. १७ मि. ४३ बजे, मोक्ष घं. १७ मि. ५७ बजे, पर्वकाल १४ मिनट; काशी में ग्रासमान अंगुलाल्प(मात्र ३ व्यंगुल)होने से यहाँ ग्रहणपरक स्नान दानादि विहित नहीं है।

[J] धर्म-घटादि-दान। श्रीपरशुराम-जयन्ती ३। प्रदोष-काल में भगवान की यात्रा पूजा दर्शन अर्घ्य-दान। श्रीबद्री केदार-यात्रा। कल्पादि ३। त्रेतायुगादि ३। सागर-स्नान। चन्दन से श्रीविष्णु-पूजा। त्रिलोचन-यात्रा। मातङ्गी-जयन्ती ३। यायिजय योगघं. १५ मि. १६ बजे से घ. २३ मि. २२ बजे तक। राष्ट्रीय वैशाखमास प्रारम्भ। वर्षीतप-समापन(जैन)।

[पृष्ठ ५२ का शेषांश] पूर्णिमा में कोजागरी १५ व्रत। रात्रि में लक्ष्मीन्द्र कुबेरादि देवों का पूजन। स्नान दान व्रत की आश्विनी पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। शरद पूर्णिमा १५। कार्तिक-स्नान व्रत यम-नियमादि प्रारम्भ। कार्तिक में आकाश-दीप-दान करना चाहिये। आग्रयण, नवान्न-भक्षण। ओली समाप्त (जैन)। महर्षि बाल्मीकि-जयन्ती।

अप्रैल सन् १९७७ ई०। चैत्र शुक्ल १२ से वैशाख शुक्ल ११ तक, संवत् २०३४ विक्रमीय।
राष्ट्रीय चैत्र मास ११ से राष्ट्रीय वैशाख मास १० तक, शके १८९९ शालिवाहन।
रबि-उल-आखर ११ से जमादि-उल-अव्वल ११ तक, १३९७ हिजरी।

[D संक्रान्ति घं. २० मि. ० बजे, मु. ३० साम्यार्घ, सामान्य पुण्यकाल घं.१३ मि. ३६ बजे से घं.१९मि. ० बजे तक, पश्चात् सूर्यास्त तक विशेष पुण्यकाल। वैशाखी। सतुआ जल कुम्भादि दान, हरिद्वार में या काशी के असी-संगम पर स्नान। मीन(खर)मास समाप्त। महा(वैधृति)पात घं. ९ मि. ५८ से घं. १६ मि. ११ बजे तक। [C घं. ११ मि. ५ बजे से घं. २३ मि. १० बजे तक।

वार	उदित तिथि	सौर(मीन) चैत्र मा. ३० दि.	रबि-उल-आखर २९ दिन	राष्ट्रीय चैत्र मास ३० दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, य यि(मु ई)स्थ यी(मु ालेह)जय योग, सन्धिकर, योगादि।
शु.	१२	१८	११	११	१	–प्रदोष १२ व्रत। श्रीहरिदमनकोत्सव। स्थायीजय योग घं. ५ मि. ५४ बजे से घं. १६ मि.४४ बजे तक। एप्रिल फूल। फातिहा-यजदहम(ग्यारहवीं शरीफ), महा(व्यती)पात घं. १९ मि. ५९ बजे प्रारम्भ।
श.	१३	१९	१२	१२	२	–अनङ्ग १३ व्रत। जैन श्रीमहावीर-जयन्ती। प्रदोषव्यापिनी चतुर्दशी में श्रीनृसिंह-दोलोत्सव। श्रीशिव-दमनकोत्सव। साय दमनक से पूजा। महा(व्यती)पात घं. १ मि. २५ बजे समाप्त। ♀ शुक्र अस्त पश्चिम में घं. २० मि. ५२ बजे। [A योग घं.१२ मि. २९ बजे प्रारम्भ।
र.	१४	२०	१३	१३	३	–भद्रा घं. १२ मि. २९ बजे से घं.२३ मि.४ बजे तक। अन्वाधान। व्रत की पूर्णिमा १५। यायिजय A
चं.	१५	२१	१४	१४	४	–इष्टि। सर्वदेव-दमनकोत्सव१५। स्नान-दान की चैत्री पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। भारत में अ श्य खण्डग्रास चन्द्र-ग्रहण। वैशाख स्नान-प्रारम्भ। वैशाख व्रत यम नियमादि प्रारम्भ। श्रीहनुमान-जयन्ती १५। सूर्योदय में हनुमान-दर्शन, दक्षिण में प्रसिद्ध है। देवी-यात्रा। चित्र व त्र-दान से सौभाग्य-प्राप्ति। यायिजय योग घं.२०मि.५ बजे समाप्त। मन्वादि१५। दीनबन्धु एण्ड्र्यूज की पुण्य-तिथि। ओली समाप्त (जैन)।
मं.	१	२२	१५	१५	५	–कच्छपावतार१। मास पर्यन्त पनिसरा चलाना चाहिये। अशक्ति में जल कुम्भादि-दान। तुलसी-पत्र से श्रीविष्णु-पूजा। वैशाखमास प्रारम्भ। द्विपुष्कर योग घं. ६ मि.३२ बजे से घं.११ मि. ३० बजे तक। २ तिथि-क्षय।
बु.	३	२३	१६	१	६	–भद्रा घं. १३ मि. ३८ बजे प्रारम्भ। [B घ. १२ मि. ३ बजे प्रारम्भ।
गु.	४	२४	१	१७	७	–भद्रा घ.० मि. १ बजे तक। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय घं. २१ मि. ५४ बजे। यायिजय योग घं. २० मि. ५५ बजे प्रारम्भ। ♀ शुक्र उदय पूर्व में घं. २ मि. २ बजे।
शु.	५	२५	१८	१८	८	–यायिजय योग घं. ४ मि. १९ बजे समाप्त। गुड-फ्राइडे। [E श्रीवल्लभाचार्य-जयन्ती।
श.	६	२	१९	१९	९	–भद्रा घं.१५मि.३६बजे प्रारम्भ। [L घं. मि.४४बजे समाप्त। महा(व्यती)पात घं.०मि.५२बजे समाप्त।
र.	७	२७	२०	२०	१०	–भद्रा घं.२मि.३५बजे समाप्त। भानु-सप्तमी पर्व। ईस्टर-सण्डे। शुक्र-बालत्वदोष-निवृत्ति आवश्यकीय।
चं.	८	२८	१	२१	११	–श्रीशीतलाष्टमी ८, पर्युषितान्न(बासी)भोजन ग्रहण करना विहित है। कालाष्टमी ८। यायोजय योग B
मं.	९	२९	२	२२	१२	–भद्रा घ. २२ मि. ५२ बजे प्रारम्भ। यायिजय योग घं. २३ मि. ११ बजे समाप्त। स्थायिजय योग C
बु.	१०	३०	२३	२३	१३	–पंचक प्रारम्भ घं. ११ मि. २२ बजे। भद्रा घ. १० मि. ४० बजे समाप्त। ⊙सूर्यकी मे (सतुआ) D
गु.	११	१	२४	२४	१४	–पंचक। बरूथिनी ११ एकादशी व्रत सबका। सौर वैशाख मास आरम्भ। बंग-संवत् १३८४ प्रारम्भ। E
शु.	१२	२	२५	२५	१५	–पंचक। प्रदोष १२ व्रत। स्थायीजय योग घ. २ मि. ४० बजे से घं. ११ मि. २८ बजे तक।
श.	१३	३	२६	६	१	–पचक। भद्रा घं. १२ मि. ३५ बजे प्रारम्भ। मास शिवरात्रि १३ व्रत। यायिजय योग घं. ५ मि. F
र.	१४	४	२७	२७	१७	–पंचक। भद्रा घं. १ मि. २२ बजे समाप्त। [F ९ बजे से घं. १२ मि. ३५ बजे तक।
चं.	३०	५	२८	२८	१८	पंचक समाप्त घं. ६ मि. ३९ बजे। अन्वाधान। स्नान दान श्राद्ध की दर्श ३०; शुभवारी प्रजासुखकरी G
मं.	१	६	२९	२९	१९	–इष्टि। ◡ चंद्र-दर्शन मु. १५, महर्घ। ग्रहण-करिदिन। [H मि. २७ बजे। ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ।
बु.	२	७	१	३०	२०	–जमादि-उल-अव्वल ५ माह शुरू। श्रीशिवाजी-जयन्ती (प्राचीन मत से)। सूर्य सायन वृषभ में घं.१० H
गु.	३	८	२	१	२१	–अक्षय तृतीया ३। पितृ पितामहादि के निमित्त उन्हीं के उद्देश्य से सक्तु चीनी पंखा फलादि द्रव्यसहित J
शु.	४	९	३	२	२२	–भद्रा घं. १२ मि.३८ बजे प्रारम्भ। **वैनायकी श्रीगणेश** ४ व्रत। स्थायीजय योग घं.१८ मि.२४ बजे प्रारम्भ।
श.	५	१०	४	३	२३	–भद्रा घ. १ मि. ५४ बजे समाप्त। श्रीआद्य शंकराचार्य-जयन्ती ५। स्थायीजय योग घं. १ मि. ५४ K
र.	६	११	५	४	२४	–श्रीरामानुजाचार्य-जयन्ती। [K बजे समाप्त। श्रीसूरदास-जयन्ती। बीर कुंवर सिंह-दिवस।
चं.	६	१२	६	५	२५	–श्रीगङ्गासप्तमी७, गंगोत्पत्ति, मध्याह्नव्यापिनी सप्तमी में। श्रीगङ्गा का पूजनार्चन, स्नान। यायिजय योग घं. ६ मि. १४ बजे प्रारम्भ। ६ तिथि-वृद्धि।
मं.	७	१३	७	६	२६	–भद्रा घ. ७ मि. ४२ बजे से घं. २० मि. ६ बजे तक। यायिजय योग घं. २ मि, १० बजे समाप्त। स्थायीजय योग घ. ७ मि. ४२ बजे प्रारम्भ। महा(व्यती)पात घं. १६ मि. ५६ बजे प्रारम्भ।
बु.	८	१४	८	७	२७	–**श्रीदुर्गाष्टमी** ८। श्रीबगलामुखी-जयन्ती। बुधाष्टमी ८ पर्व, सूर्य-ग्रहण सन्निभ। स्थायीजय योग L
गु.	९	१५	९	८	२८	–वैष्णव-मतानुसार **जानकी(सीता)नवमी व्रत** ९। [M प्राप्त न होने से।
शु.	१०	१६	१०	९	२९	–भद्रा घं.१९ मि.७ बजे प्रारम्भ। **मोहिनी ११ एकादशी व्रत** स्मार्तों का, अग्रिम दिन पारणार्थ द्वादशी M
श.	११	१७	११	१०	३०	–भद्रा घं. ६ मि.२२ बजे समाप्त। महत्पुण्यदायिका त्रिस्पृशा **मोहिनी ११ एकादशी व्रत** वैष्णवों का। स्मार्तों के एकादशी व्रत का पारण, घ. ६ मि.२२ बजे के बाद। त्रिस्पृशा महाद्वादशी व्रत। यायिजय योग घं.२ मि.२७ बजे से घं.६ मि.२२ तक। त्रिपुष्कर योग घं.६ मि.२२ बजे प्रारम्भ।

ता. | ग्रह रा. नक्ष. चरण (नवां) प्रवे. स्टैं. टा.

अप्रैल	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घंटा	मिनट
१	बु.	☿	अश्विनी	२	वृ.	११	५९
२	मं. +	♂	शतभिषा	४	मी.	९	४५
३	बु.	☿	अश्विनी	३	मि.	११	४१
३	सू.	☉	रेवती	२	म.	१५	४३
४	गु.	♃	कृत्तिका	४	मी.	२२	३६
५	बु.	☿	अश्विनी	४	क.	११	४८
५	शु. R	♀	रेवती	२	म.	१५	४९
६	मं. +	♂	पू. भा.	१	मे.	१६	२५
७	सू.	☉	रेवती	३	कुं.	१	१
८	बु.	☿	भरणी	१	सिं.	३	११
१०	सू.	☉	रेवती	४	मी.	१०	२७
१०	मं. +	♂	पू. भा.	२	वृ.	२२	५८
११	शु. R	♀	रेवती	१	ध.	१	७
११	बु.	☿	भरणी	२	कं.	४	९
११	श.	♄	मार्गी	--	—	११	१३
१३	सू.	☉	अश्वि. मे	१	मे.	२०	०
१५	मं. +	♂	पू. भा.	३	मि.	५	५९
१५	बु.	☿	भरणी	३	तु.	२३	१८
१७	सू.	☉	अश्विनी	२	वृ.	५	४४
१७	शु. R	♀	उ. भा.	४	वृ.	१७	१६
१९	मं. +	♂	मी पू. भा.	४	क.	१३	१
१९	ह. R	♅	स्वाती	३	कुं.	२३	२६
२०	सू.	☉	अश्विनी	३	मि.	१५	३४
२०	बु.	☿	वक्री	—	—	७	४७
२१	गु.	♃	रोहिणी	१	मे.	२	३२
२३	मं. +	♂	उ. भा.	१	सिं.	२०	१५
२४	सू.	☉	अश्विनी	४	क.	१	३५
२४	बु. R	☿	भरणी	२	कं.	२२	०
२७	सू.	☉	भरणी	१	सिं.	११	४७
२७	शु.	♀	मार्गी	—	—	१५	२१
२८	मं. +	♂	उ. भा.	२	कं.	३	४४
२८	श.	♄	आश्लेषा	१	ध.	८	१३
३०	सू.	☉	भरणी	२	कं.	२२	९
३०	बु. R	☿	भरणी	१	सिं.	२२	२४
३०	रा.	☊	कं. चि.	२	कं.	२३	०
३०	के.	☋	मी. रेव.	४	मी.	२३	०

ता. २ अप्रैल को शुक्र अस्त पश्चिम में।

ता. ७ ,, को शुक्र उदय पूर्व में।

ता. २४ ,, को बुध अस्त पश्चिम में।

अप्रैल ता	वा	स्था. काशी प्रातः स्टैं. टा. ५-२९ बजे सूर्य भा (के० बजे का सांपा. का.) घं.	मि	से.	दैनिक स्पष्ट ☉ रा.	अं.	क	वि.	दैनिक गति क	वि.	दै. क्रां. उत्तर अं.	क	चं. स्पष्ट घं. ५ मि. २९ बजे का रा.	अं.	क	वि.	अर्धदैनिक गति अं.	क	वि.	चं. स्पष्ट घं. १७ मि. २९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्धदैनिक गति अं.	क	वि
												चित्रापक्षीय अर्धदैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट														
१	शु.	१२	३६	३	११	१७	३६	३२	५९	१०	४	२५	४	५	३९	१	६	५१	११	४	१२	३०	१२	६	५७	[illegible]
२	श.	१२	३९	५९	११	१८	३५	४२	५९	८	४	४८	४	१९	२७	३४	७	३	१८	४	२६	३०	५२	७	८	[illegible]
३	र.	१२	४[illegible]	५६	११	१९	३४	५०	५९	६	५	११	५	३	३९	४१	७	१३	४५	५	१०	५३	२६	७	१८	[illegible]
४	चं.	१२	४७	५२	११	२०	३३	५६	५९	४	५	३४	५	१८	११	२७	७	२१	२९	५	२५	३२	५६	७	२४	[illegible]
५	मं.	१२	५१	४९	११	२१	३३	०	५९	२	५	५७	६	२	५६	५९	७	२५	४२	६	१०	२२	४१	७	२६	[illegible]
६	बु.	१२	५५	४५	११	२२	३२	२	५९	०	६	१९	६	१७	४९	३	७	२६	६	६	२५	१५	९	७	२४	[illegible]
७	गु.	१२	५९	४२	११	२३	३१	२	५८	९	६	४२	७	२	४०	५	७	२२	५४	७	१०	२	५९	७	२०	[illegible]
८	शु.	१३	३	३९	११	२४	३०	१	५८	५६	७	५	७	१७	२३	७	७	१६	४३	७	२४	३९	५०	७	१२	[illegible]
९	श.	१३	७	३५	११	२५	२८	५७	५८	५४	७	२७	८	१	५२	३८	७	८	२९	८	९	१	७	७	३	[illegible]
१०	र.	१३	११	३२	११	२६	२७	५१	५८	५४	७	४	८	१६	४	५८	६	५९	४	८	२३	४	२	६	५४	[illegible]
११	चं.	१३	१५	२८	११	२७	२६	४५	५८	५१	८	११	८	२९	५८	१५	६	४९	२२	९	६	४७	३७	६	४४	[illegible]
१२	मं.	१३	१९	२५	११	२८	२५	३६	५८	५०	८	३३	९	१३	३२	११	६	३९	५६	९	२०	१२	७	६	३५	[illegible]
१३	बु.	१३	२३	२१	११	२९	२४	२६	५८	४८	८	५५	९	२६	४७	३४	६	३१	१०	१०	३	१८	४४	६	२७	[illegible]
१४	गु.	१३	२७	१८	०	०	२३	१४	५८	४६	९	१७	१०	९	४५	५२	६	२३	१८	१०	१६	९	१०	६	१९	[illegible]
१५	शु.	१३	३१	१४	०	१	२२	०	५८	४४	९	३९	१०	२२	२८	५४	६	१६	२२	१०	२८	४५	१६	६	१३	[illegible]
१६	श.	१३	३५	११	०	२	२०	४४	५८	४३	१०	०	११	४	५८	३२	६	१०	२२	११	११	८	५४	६	७	[illegible]
१७	र.	१३	३९	८	०	३	१९	२७	५८	४१	१०	२१	११	१७	१६	३७	६	५	१६	११	२३	२१	५३	६	३	[illegible]
१८	चं.	१३	४३	४	०	४	१८	८	५८	३८	१०	४२	११	२९	२४	५५	६	१	३	०	५	२५	५८	५	५९	[illegible]
१९	मं.	१३	४७	१	०	५	१६	४६	५८	३७	११	३	०	११	२५	१५	५	५७	४५	०	१७	२३	०	५	५६	[illegible]
२०	बु.	१३	५०	५७	०	६	१५	२३	५८	३५	११	२४	०	२३	१९	२९	५	५५	२९	०	२९	१४	५८	५	५४	[illegible]
२१	गु.	१३	५४	५४	०	७	१३	५८	५८	३३	११	४५	१	५	९	४६	५	५४	२४	१	११	४	१०	५	५४	[illegible]
२२	शु.	१३	५८	५०	०	८	१२	३१	५८	३०	१२	५	१	१६	५८	३२	५	५४	४३	१	२२	५३	१५	५	५५	[illegible]
२३	श.	१४	२	४७	०	९	११	१	५८	२९	१२	२५	१	२८	४२	४१	५	५६	३७	२	४	४५	१८	५	५८	[illegible]
२४	र.	१४	६	४३	०	१०	९	[illegible]	५८	२७	१२	४५	२	१०	४३	३४	६	०	२२	२	१६	४३	५९	६	३	[illegible]
२५	चं.	१४	१०	४०	०	११	७	५७	५८	२४	१३	५	२	२२	४६	५६	६	६	८	२	२८	५३	४	६	९	[illegible]
२६	मं.	१४	१४	३७	०	१२	६	२१	५८	२[illegible]	१३	२४	३	५	७	५२	६	१४	०	३	११	१६	५२	६	१८	[illegible]
२७	बु.	१४	१८	३३	०	१३	४	४४	५८	२०	१३	४४	३	१७	३५	५	६	२३	५५	३	२३	५९	३०	६	२९	[illegible]
२८	गु.	१४	२२	३०	०	१४	३	४	५८	१८	१४	३	४	०	२९	५	६	३५	४०	४	७	४	४५	६	४२	[illegible]
२९	शु.	१४	२६	२६	०	१५	१	२२	५८	१६	१४	२१	४	१३	४६	४८	६	४८	४०	४	२०	३५	२८	६	५५	[illegible]
३०	श.	१४	३०	२३	०	१५	५९	[illegible]	५८	१४	१४	४०	४	२७	३०	५३	७	२	९	५	४	३३	२	७	८	[illegible]

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

अप्रैल तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध सम्मुख	वाम +	दक्षिण R	पञ्चशलाका-वेध	लत्ता
चालू	राहु	चित्रा	प. भा.	मूल	मृगशिरा	पू. भा.	श्रवण
६	मंगल +	पू. भा.	चित्रा ☊	पुनर्वसु	उ. भा.	चित्रा ☊	रे. ♀ [illegible]
८	बुध	भरणी	मघा	कृत्ति. ♃	अनुराधा	अनुराध.	धनिष्ठा
१३	सूर्य	अश्विनी	पू. फा.	रोहिणी	ज्येष्ठा ♆	पू. फा.	उ. फा.
१७	शुक्र R	उ. भा.	हस्त ♇	आर्द्रा	पू. षा.	हस्त ♇	श्रवण
२१	गुरु	रोहिणी	अभिचित	स्वाती ♅	अश्वि. ☋ ☉	अभिजित्	आश्ले
२३	मंगल +	उ. भा.	हस्त ♇	आर्द्रा	पू. षा.	हस्त ♇	अ. ☋ [illegible]
२७	सूर्य	भरणी	मघा	कृत्तिका	अनुराधा	अनुराधा	हस्त ♇
२८	शनि	आश्लेषा	अनुराधा	मघा	धनिष्ठा	धनिष्ठा	विशाखा
३०	केतु	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल	उ. फा.	पुष्य

आकाशी-लक्षण—मासारम्भ से ही अलमस्ती छायी रहेगी; गुलाबी जाड़ा और वासन्ती हवा से मौसम बड़ा सुखद सुहावना रहेगा। ता. २।४।[illegible]।७।८।११।१३ को कहीं-कहीं मामूली बूँदाबाँदी या हल्की वृष्टि की सम्भावना है। मेष-संक्रान्ति का भूमि-मण्डल में पड़ जाना शुभकारी है; परन्तु शुक्र शनि हर्शल नेप्च्यून प्लूटो पाँच ग्रहों के वक्रत्व से कहीं पर, विशेषतः पूर्वीय प्रान्तों में बिजली की कड़क, भारी वर्षा और भीषण तूफान आदि प्राकृतिक उपद्रवों का भय है; तथापि अधिकतर स्थानों में फसल संतोषजनक होगी। सार्वत्रिक सामान्य वृष्टियोग ता. १७,१८,१९,२०,२१,२[illegible],२४,२७,२८ और ३० को बने हैं।

विवाहादि कार्यों में पञ्चशला का चक्र का वेध और उससे अन्य कार्यों में सप्तशलाका चक्र का वेध देखा जाता है। सर्वतोभद्र चक्र में सप्तशलाका चक्र का अन्तर्भाव है। सप्तशलाका चक्र से विद्ध नक्षत्र ही सर्वतोभद्र चक्र में सम्मुख वेध से विद्ध नक्षत्र होते हैं। इसीलिये ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण में सप्तशलाका चक्र का वेध अलग से नहीं दिया गया है।

स्प. ग्रह एवं दै. गति प्रातः ५।२९ स्टैं.टा.

ता. अप्रैल	♂ मं· रा·	अं·	क·	ग. क·	☿ बु· रा·	अं·	क·	ग. क·	♃ गु· रा·	अं·	क·	ग. क·	♀ शु R रा·	अं·	क	ग. क	♄ श· R रा·	अं·	क·	ग. क·	☊ रा· रा·	अं·	क·	♅ ह· R रा·	अं·	क·	♆ ने· R रा·	अं·	क·	♇ प्लू· R रा·	अं·	क·
१	१०	१५	४५	४७	०	२	५२	१०४	१	५	५७	१२	११	२६	३	३५	३	१६	३०	१	६	१	३५	६	१७	२३	७	२२	३३	५	१९	२०
४	१०	१८	५	४७	०	७	५२	९१	१	६	३२	१२	११	२४	१४	३८	३	१६	२७	१	६	१	२५	६	१७	१७	७	२२	३२	५	१९	१५
७	१०	२०	२५	४७	०	१२	१२	७६	१	७	७	१२	११	२२	२०	३८	३	१६	२६	०	६	१	१५	६	१७	१०	७	२२	३०	५	१९	१०
१०	१०	२२	४६	४७	०	१५	४४	५९	१	७	४३	१२	११	२०	२९	३५	३	१६	+५	०	६	१	६	६	१७	३	७	२२	२८	५	१९	५
१३	१०	२५	६	४७	०	१८	२४	४१	१	८	२०	१२	११	१८	४६	३१	३	१६	२५	०	६	०	५६	६	१६	५६	७	२२	२६	५	१९	०
१६	१०	२७	२६	४७	०	२०	७	२२	१	८	५८	१३	११	१७	१८	२६	३	१६	२६	१	६	०	४७	६	१६	४९	७	२२	२३	५	१८	५५
१९	१०	२९	४५	४७	०	२०	४४	४	१	९	३६	१३	११	१६	७	१९	३	१६	२८	१	६	०	३७	६	१६	४२	७	२२	२०	५	१८	५०
२२	११	२	५	४६	०	२०	४८	१३	१	१०	१४	१३	११	१५	१७	१२	३	१६	३१	१	६	०	२८	६	१६	३५	७	२२	१७	५	१८	४५
२५	११	४	२४	४६	०	१९	५३	२७	१	१०	५४	१३	११	१४	४९	५	३	१६	३५	२	६	०	१८	६	१६	२७	७	२२	१४	५	१८	४०
२८	११	६	४६	४६	०	१८	२१	३६	१	११	३३	१३	११	१४	+४३	+३	३	१६	४०	२	६	०	९	६	१६	१९	७	२२	११	५	१८	३५

चैत्र पूर्णिमान्त ☾ ☍ ☉ काशी, सोमवार
ता. ४।४।७७ ई० भा.स्टैं.टा.घं.९मि.३९
इष्ट सांपातिक काल घं.२२मि.३०से.२७

ल०	द०
१	१०
२६	१२
३३	१६
४४	३९

बु. के. ३ १ १२ शु. र. श. ४ बृ. २ ५ ११ मं. ८ चं. ६ ७ नं. १० ९ रा ह

☉ मेष-संक्रांति, काशी, बुधवार
ता.१३।४।७७ ई० भा.स्टैं.टा. घं.२० मि.०
इष्ट सांपातिक काल घं.९ मि.२८ से.५८

ल०	द०
६	३
२२	२६
५७	१६
२६	५०

नं. ८ प्लू. ६ ९ ७ ह. रा. ५ १० ४ श. चं. मं. ११ १२ शु. १ र. के. बु. ३ २ बृ.

वैशाख अमान्त ☾ ☌ ☉ काशी, सोमवार
ता.१८।४।७७ ई० भा.स्टैं.टा. घं.१६ मि.५
इष्ट सांपातिक काल घं.५ मि.५२ से.४३

ल०	द०
५	२
४	४
४८	४७
५७	१७

ह रा. नं. ८ ७ प्लू. ५ ४ श. ६ ९ ३ १२ १० ११ गु. १ २ बृ मं. के. र. चं. बु.

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी(हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदय का समय भा.स्टैं.टा.में)

अप्रैल ता.	वा	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१	शु·	६	३०	४१	८	८	१०	५	१२	१८	१४	३६	१६	५०	१९	३	२१	१९	२३	३६	१	४५	३	३१	५	२
२	श·	६	२६	४५	८	४	१०	१	१२	१४	१४	३२	१६	४६	१८	५९	२१	१५	२३	३२	१	४१	३	२७	४	५८
३	र·	६	२२	४९	८	०	९	५७	१२	१०	१४	२८	१६	४२	१८	५५	२१	११	२३	२८	१	३७	३	२३	४	५४
४	चं·	६	१८	५३	७	५६	९	५३	१२	७	१४	२४	१६	३८	१८	५१	२१	७	२३	२४	१	३३	३	१९	४	५०
५	मं·	६	१४	५७	७	५२	९	४९	१२	३	१४	२०	१६	३४	१८	४७	२१	३	२३	२०	१	२९	३	१५	४	४६
६	बु·	६	११	२	७	४९	९	४५	११	५९	१४	१६	१६	३०	१८	४३	२०	५९	२३	१६	१	२५	३	११	४	४२
७	गु·	६	७	६	७	४५	९	४१	११	५५	१४	१२	१६	२६	१८	३९	२०	५५	२३	१२	१	२१	३	७	४	३८
८	शु·	६	३	१०	७	४१	९	३७	११	५१	१४	८	१६	२२	१८	३५	२०	५१	२३	८	१	१८	३	३	४	३४
९	श·	५	५९	१४	७	३७	९	३३	११	४७	१४	५	१६	१८	१८	३१	२०	४७	२३	४	१	१४	२	५९	४	३०
१०	र·	५	५५	१८	७	३३	९	२९	११	४३	१४	१	१६	१४	१८	२७	२०	४३	२३	०	१	१०	२	५५	४	२७
११	चं·	५	५१	२२	७	२९	९	२५	११	३९	१३	५७	१६	११	१८	२३	२०	३९	२२	५७	१	६	२	५१	४	२३
१२	मं·	५	४७	२६	७	२५	९	२२	११	३५	१३	५३	१६	७	१८	१९	२०	३६	२२	५३	१	२	२	४७	४	१९
१३	बु·	५	४३	३०	७	२१	९	१८	११	३१	१३	४९	१६	३	१८	१५	२०	३२	२२	४९	०	५८	२	४४	४	१५
१४	गु·	५	३९	३४	७	१७	९	१४	११	२७	१३	४५	१५	५९	१८	११	२०	२८	२२	४५	०	५४	२	४०	४	११
१५	शु·	५	३५	३८	७	१३	९	१०	११	२३	१३	४१	१५	५५	१८	७	२०	२४	२२	४१	०	५०	२	३६	४	७
१६	श·	५	३१	४३	७	९	९	६	११	१९	१३	३७	१५	५१	१८	४	२०	२०	२२	३७	०	४६	२	३२	४	३
१७	र·	५	२७	४७	७	५	९	२	११	१५	१३	३३	१५	४७	१८	०	२०	१६	२२	३३	०	४२	२	२८	३	५९
१८	चं·	५	२३	५१	७	१	८	५८	११	११	१३	२९	१५	४३	१७	५६	२०	१२	२२	२९	०	३८	२	२४	३	५५
१९	मं·	५	१९	५५	६	५७	८	५४	११	८	१३	२५	१५	३९	१७	५२	२०	८	२२	२५	०	३४	२	२०	३	५१
२०	बु·	५	१५	५९	६	५४	८	५०	११	४	१३	२१	१५	३५	१७	४८	२०	४	२२	२१	०	३०	२	१६	३	४७
२१	गु·	५	१२	३	६	५०	८	४६	११	०	१३	१७	१५	३१	१७	४४	२०	०	२२	१७	०	२६	२	१२	३	४३
२२	शु·	५	८	७	६	४६	८	४२	१०	५६	१३	१३	१५	२७	१७	४०	१९	५६	२२	१३	०	२३	२	८	३	३९
२३	श·	५	४	११	६	४२	८	३८	१०	५२	१३	९	१५	२३	१७	३६	१९	५२	२२	९	०	१९	२	४	३	३५
२४	र·	५	०	१५	६	३८	८	३४	१०	४८	१३	६	१५	१९	१७	३२	१९	४८	२२	५	०	१५	२	०	३	३१
२५	चं·	४	५६	१९	६	३४	८	३०	१०	४४	१३	२	१५	१६	१७	२८	१९	४४	२२	१	०	११	१	५६	३	२८
२६	मं·	४	५२	२३	६	३०	८	२७	१०	४०	१२	५८	१५	१२	१७	२४	१९	४०	२१	५८	०	७	१	५२	३	२४
२७	बु·	४	४८	२८	६	२६	८	२३	१०	३६	१२	५४	१५	८	१७	२०	१९	३७	२१	५४	०	३	१	४९	३	२०
																					* २३	५९				
२८	गु·	४	४४	३२	६	२२	८	१९	१०	३२	१२	५०	१५	४	१७	१६	१९	३३	२१	५०	२३	५५	१	४५	३	१६
२९	शु·	४	४०	३६	६	१८	८	१५	१०	२८	१२	४६	१५	०	१७	१२	१९	२९	२१	४६	२३	५१	१	४१	३	१२
३०	श·	४	३६	४०	६	१४	८	११	१०	२४	१२	४२	१४	५६	१७	९	१९	२५	२१	४२	२३	४७	१	३७	३	८

भविष्यवाणी—इस मास में गुरु अतिचारी होगया है; ता. १०तक शनि वक्री रहेगा। इसका शास्त्रीय फल है—हा! हा! भूतं जगत्सर्वं रुण्डमुण्डा च मेदिनी। गुरुग्रह धर्मगुरु आचार्य, कर्मकाण्डी, पंडा-पुजारी, धार्मिक संस्था, विश्वविद्यालय, न्यायपालिका का कारक-ग्रह है; अतः इन सबका सामाजिक मूल्य मर्यादा, प्रभाव-प्रभुत्व क्षीणतर होगा। खेतिहर किसान-मजूर नौकरी-चाकरी करनेवाले मेहनतकश तथा अधिनायकवादी प्रवृत्तिवालोंका कारक ग्रह शनि है जो इन सबका हर तरह से उत्कर्ष करेगा। संक्रांतिफल—सूर्य मेषपर गत सं. से ३ वार, ४ नक्षत्र मु. ३०पर प्रवेश करते हैं; धान्य-भाव सम, गुड़-खाँड़ घी आदि रसकस मंहगा, रूई कपास कपड़ा सस्ता हो। मासारम्भ से चलनेवाली तेजीका नफा ता.११ तक खाकर सौदा काटदेना चाहिए; सं. बाद प्रायःसभी जिंसोंमें तीव्र मंदीका योग है। शेयर्स—में चौथे हफ्ते एकतर्फा मंदीका चांस है।

ता० २७ अप्रैल को मकर-लग्न का उदय दो बार होगा।

वैशाख शुक्ल १३ से ज्येष्ठ शुक्ल १३ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

वार ३१ दिन	मई १९७७ ई०	वैशाख शुक्लपक्ष					नक्षत्र					योग					करण						च. राशि-प्रवेश		दिनमान	काशी सूर्य उ.म.अ. भारतीय स्टैं. टा.				
		तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	राशि	घं. मि.	घटी प.	उ. घं. मि.	मध्य घण्टा	मिनट	सेकेण्ड	अ. घं. मि.
र.	१	१३	४६	५०	१	२३	हस्त	४८	५	०	४१	हर्षण	३१	८	१७	५४	कौ.	१४	४७	तै.	१	२३			३२/२३	२७	११	५५	५	२
चं.	२	१४	४१	४५	२२	८	चित्रा	४१	३३	२२	१३	वज्र	२२	५	१४	१६	ग.	११	४६	व.	२२	८	तु.	१७/३०	२७	२६	११	५४	५८	२
मं.	३	१५	३२	५०	१८	३३	स्वाती	३५	५	१६	२७	सिद्धि	१२	१३	१०	१८	भ.	८	२०	बव	१८/४	३३/४२			३०	२५	११	५४	५१	२
		ज्येष्ठ कृष्णपक्ष																												
बु.	४	१	२३	३५	१४	५०	विशा.	२७	५०	१६	३२	व्यती.	१/४९	५५/३०	६/१	१०/५८	कौ.	१४	५०	तै.	०	५९	वृ.	११/१६	३३	२४	११	५४	४५	२
गु.	५	२	१४	१८	११	७	अनु.	२०	३८	१३	३९	परिघ	४१	१०	२१	५२	ग.	११	७	व.	२१	२०			३६	२४	११	५४	४०	२
शु.	६	३	५/५८	२८/०	०/५	३४/२२	ज्येष्ठा	१३	५८	१०	५८	शिव	३१	३०	१७	५९	भ.	७	३४	बव	१७/४	५८/२२	ध.	०/५८	३८	२३	११	५४	३५	२
श.	७	५	५०	४३	१	३९	मूल	८	१०	८	३८	सिद्धि	२२	४३	१४	२७	कौ.	१५	१	तै.	१	३९			४१	२२	११	५४	३०	२
र.	८	६	४५	२५	२३	३१	पू. षा.	३	४०	६	४९	साध्य	१५	०	११	२१	ग.	१२	३५	व.	२३	३१	म.	१२/२७	४४	२२	११	५४	२६	२
चं.	९	७	४१	५०	२२	५	उ. षा.	०/५८	४०/४८	५/५	३७/८	शुभ	८	३५	८	४७	भ.	१०	४८	बव	२२	५			४७	२१	११	५४	२३	२
मं.	१०	८	४०	८	२१	२३	धनि.	६०	०	२४	०	शुक्ल	३	४०	६	४८	बा.	९	४४	कौ.	२१	२३	कुं.	१७/९	५०	२०	११	५४	२१	२
बु.	११	९	४०	१३	२१	२५	धनि.	०	५	५	२२	ब्रह्म	०/५७	१३/५८	५/४	२५/३९	तै.	९	२४	ग.	२१	२५			५३	२०	११	५४	१९	२
गु.	१२	१०	४२	५	२२	९	शत.	२	३०	६	१९	वैधृति	५७	२८	४	१८	व.	९	४७	भ.	२२	९			५५	१९	११	५४	१७	२
शु.	१३	११	४५	२३	२३	२८	पू. भा.	६	३०	७	५५	विष्कु.	५७	५०	४	२७	बव	१०	४९	बा.	२२	२८	मी.	१/२८	५८	१९	११	५४	१६	३
श.	१४	१२	४९	५८	१	१७	उ. भा.	११	५०	१०	२	प्रीति	५९	८	४	५७	कौ.	१२	२३	तै.	१	१७			३३/१	१८	११	५४	१६	३
र.	१५	१३	५५	२०	३	२६	रेवती	१८	१५	१२	३६	आयु.	६०	०	२४	०	ग.	१४	२२	व.	३	२६	मे.	१२/३९	३	१८	११	५४	१६	३
चं.	१६	१४	६०	०	२४	०	अश्वि.	२५	२३	१५	२६	आयु.	१	५	५	४३	भ.	१६	३८	श.	५	१७			६	१७	११	५४	१७	३
मं.	१७	१४	१	२३	५	५०	भरणी	३२	५५	१८	२७	सौभा.	३	५५	६	३९	श.	५	५०	च.	१९	६			८	१७	११	५४	१९	३
बु.	१८	३०	७	४३	८	२१	कृत्ति.	४०	४०	२१	३२	शोभन	६	३	७	४१	ना.	८	२१	किं.	२१	३७	वृ.	१/१३	१०	१६	११	५४	२१	३
		ज्येष्ठ शुक्लपक्ष																												
गु.	१९	१	१४	३	१०	५३	रोहि.	४८	१८	०	३५	अति.	८	३८	८	४३	बव	१०	५३	बा.	०	७			१३	१६	११	५४	२३	३
शु.	२०	२	२०	१३	१३	२०	मृगशि.	५५	४०	२	३१	सुकर्मा	११	८	९	४२	कौ.	१३	२०	तै.	२	२९	मि.	१४/४	१५	१५	११	५४	२६	३
श.	२१	३	२५	५५	१५	३७	आर्द्रा	६०	०	२४	०	धृति	१३	१८	१०	३४	ग.	१५	३७	व.	४	३७			१७	१५	११	५४	३०	३
र.	२२	४	३०	५५	१७	३७	आर्द्रा	२	२५	६	१३	शूल	१४	५८	११	१४	भ.	१७	३७	बव	५	१४			२०	१५	११	५४	३४	३
चं.	२३	५	३४	५८	१९	१३	पुनर्वसु	८	२५	८	३६	गण्ड	१५	५८	११	३७	बव	६	२५	बा.	१९	१३	क.	३/२	२२	१४	११	५४	३९	३
मं.	२४	६	३७	४५	२०	२०	पुष्य	१३	१५	१०	३२	वृद्धि	१६	५	११	४०	कौ.	[illegible]	४७	तै.	२०	२०			२४	१४	११	५४	४४	३
बु.	२५	७	३९	३	२०	५०	आश्ले.	१६	४८	११	५६	ध्रुव	१५	५	११	१५	बा.	८	[illegible]	व.	२०	५०	सिं.	१/५९	२६	१३	११	५४	५०	३
गु.	२६	८	३८	३८	२०	४०	मघा	१८	४३	१२	४२	व्या.	१२	४८	१०	२०	भ.	८	४५	बव	२०	४०			२८	१३	११	५४	५६	३
शु.	२७	९	[illegible]	२३	१९	४६	पू. फा.	१८	५३	१२	[illegible]	हर्षण	९	८	८	५२	बा.	८	[illegible]	कौ.	१९	४६	कं.	१/४०	३०	१३	११	५५	२	३
श.	२८	१०	३२	२०	१८	९	उ. फा.	१७	१३	१२	६	वज्र	३/५८	५८/२८	६/४	४९/१०	तै.	६	५८	ग.	१८/५८	९/०			३२	१३	११	५५	९	३
र.	२९	११	२	३८	१५	५१	हस्त	१३	५३	१०	४५	व्यती.	४९	३०	१	०	भ.	१५	५१	बव	२	१९	तु.	२१/५८०	३४	१२	११	५५	१७	३
चं.	३०	१२	१९	२३	१२	५७	चित्रा	८	५८	८	४७	वरि.	४०	२८	२१	२३	बा.	१२	४७	कौ.	२	११			३५	१२	११	५५	३५	३
मं.	३१	१३	१०	५८	९	३५	स्वाती	२/५८	४९/५३	६/३	१९/२८	परिघ	३०	३०	१७	२४	तै.	९	[illegible]	ग.	१९	४४	वृ.	२२/१२	३७	१२	११	५५	३३	३

[F] काशी में गंगा दशहरा तक गंगा-स्नान। गंगास्तोत्र का नित्य वृद्धिक्रम से पाठ। यायिजय योग घ. ५ मि. १६ बजे से घं. १० मि. ५३ बजे तक। गुरु-वृद्धत्व दोषारम्भ आवश्यकीय।

[G] में रम्भा ३ व्रत। जमादि-उस्सानी ६ माह शुरू। पौराणिक अगस्त्यास्त घं. २२ मि. २० बजे। गुरु☌ रोहिणी युति घं. १८ मि. ३० बजे, रो. से गु. ५°-०′ उत्तर।

शुभकर्मसुसिद्धिदा तिथि—इषुमासिमितादशमी जयाशुभकर्मसुसिद्धिकरीमता। श्रवणर्क्षयुता नितरां शुभदा॥ आश्विन शुक्ल दशमी अर्थात् विजया दशमी सब शुभ कार्यों में सिद्धि देनेवाली होती है। यदि इस दिन श्रवण नक्षत्र भी पड़ा हो तो अत्यन्त शुभ देनेवाली होती है। यह श्लोक यात्रा-प्रकरण में पठित है; परन्तु इस दिन अन्नप्राशन, द्वितीय क्षौरादि का मुहूर्त भी देते हैं।

मई सन् १९७७ ई० । वैशाख शुक्ल १३ से ज्येष्ठ शुक्ल १३ तक, संवत् २०३४ विक्रमीय । राष्ट्रीय वैशाख मास ११ से राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास १० तक, शके १८९९ शालिवाहन । जमादि-उल-अव्वल १२ से जमादि-उस्सानी १२ तक, १३९७ हिजरी ।

Bमासीय व्रत यम नियमादि समाप्त । वैशाख मास स्नान समाप्त । कृष्णमृग-चर्म-दान । तिल-दान । धर्मराज के प्रीत्यर्थ जलकुम्भादि-दान । दृश्य अगस्त्यास्त घं. २१ मि. ५७ बजे । यायिजय योग घ. ० मि.४१ बजे समाप्त । कूर्म-जयन्ती । बुद्ध(पूर्णिमा)परिनिर्वाण-दिवस । [Aछिन्नमस्ता-जयन्ती ।

Lपूजन करना चाहिये । दाक्षिणात्यों का त्रिदिनात्मक वटसावित्री व्रतारम्भ । चम्पक द्वादशी १२ । यायिजय योग घं. १२ मि. ५७ बजे प्रारम्भ । द्विपुष्कर योग घं ५ मि. १२ बजे समाप्त ।

वार	उदित तिथि	सौर(मेष)वैशाख मा. ३१ दिन	जमादि-उल-अव्वल ३० दिन हि.	राष्ट्रीय वैशाख मास ३१ दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि (मुद्दई) स्थायी (मुद्दालेह) जय योग, सधिकर, योगादि ।
र.	१३	१८	१२	११	१	प्रदोष १३ व्रत । मई-दिवस, अखिल विश्व के मजदूरों का(दिवस)पर्व । यायिजय योग घं. ४ मि. ११ बजे प्रारम्भ । त्रिपुष्कर योग घं. २ मि. ३९ बजे समाप्त । १२ तिथि-क्षय ।
चं.	१४	१९	१३	१२	२	—भद्रा घं २२ मि.८ बजे प्रारम्भ । प्रदोष-कालव्यापिनी चतुर्दशी में नृसिंह-जयन्ती १४ चतुर्दशी व्रत ।A
मं.	१५	२०	१४	१३	३	—भद्रा घं. ८ मि. २० बजे समाप्त । अन्वाधान । स्नान दान व्रत की पूर्णिमा १५ पुण्यतमा । वैशाखB
बु.	१	२१	१५	१४	४	—इष्टि । ज्येष्ठ मास प्रारम्भ ।[Cजय योग घं.७मि.३४ बजे से घं.१० मि.५८ बजे तक । ४तिथि-क्षय ।
गु.	२	२२	१	१५	५	—भद्रा घं. २१ मि.२० बजे प्रारम्भ । यायिजय योग घं. ११ मि. ७ बजे से घं. १३ मि. ३९ बजे तक ।
शु.	३	२३	१७	१६	६	—भद्रा घं. ७ मि. ३४ बजे समाप्त । संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय घं. २१ मि.४२ बजे । स्थायी-C
श.	५	२४	१८	१७	७	—कवीन्द्र रवीन्द्र-जयन्ती । महा(वैधृति)पात घं. २३ मि. ३८ बजे प्रारम्भ ।
र.	६	२५	१९	१८	८	—भद्रा घं. २३ मि. ३१ बजे प्रारम्भ । यायिजय योग घं. २३ मि. ३१ बजे प्रारम्भ । त्रिपुष्कर योग घं. २३ मि. ३१ बजे प्रारम्भ । गाजी मियाँ का मेला । महा(वैधृति)पात घं. ६ मि.२२ बजे समाप्त ।
चं.	७	२६	२०	१९	९	—महापंचक प्रारम्भ घं. ५ मि. ८ बजे । भद्रा घं. १० मि. ४८ बजे समाप्त । यायिजय योग घं. ५ मि. ३७ बजे समाप्त । त्रिपुष्कर योग घं.५ मि. २१ बजे समाप्त । गंगावतार ७ ।
मं.	८	२७	२१	२०	१०	—महापंचक । पंचक प्रारम्भ घं. १७ मि. ९ बजे । श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत; पर्युषितान्न (बासी)भोजन ग्रहण करना विहित है । कालाष्टमी ८ । [Dबजे । सन्धिकर योग घं.५मि.१९ बजे समाप्त ।
बु.	९	२८	२२	२१	११	—महापंचक । सन्धिकर योग घं. २१ मि. २५ बजे प्रारम्भ । [Eदिन । मास शिवरात्रि १४ व्रत ।
गु.	१०	२९	२३	२२	१२	—महापंचक । भद्रा घं.९मि.४७बजे से घं.२२मि.९ बजे तक । ♀ शुक्र की परम तेजस्विता घं.४मि.३०D
शु.	११	३०	२४	२३	१३	—महापंचक । अचला ११ एकादशी व्रत सबका । यायिजय योग घं.७ मि.५५ बजे से घं.२३ मि.२८ बजे तक ।
श.	१२	३१	२५	२४	१४	—महापंचक । ⊙सूर्य की वृषभ-संक्रान्ति घं. १६ मि. ५४ बजे, मु० ३० साम्यार्घ, विशेष पुण्यकाल घं. १० मि. ३० बजे से संक्रान्ति-काल तक, पश्चात् सूर्यास्त तक सामान्य पुण्यकाल ; गो अन्न जल तिल-दान, गोदावरी में स्नान, संकल्पादि में प्रयोजनीय ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ ।
र.	१३	१	२६	२५	१५	—महापंचक । पंचक समाप्त घं. १२ मि. ३६ बजे । प्रदोष १३ व्रत । पंचगौड़ों का त्रिदिनात्मक वटसावित्री व्रत । यायिजय योग घं. १ मि. १७ बजे से घं. १२ मि. ३६ बजे तक । सौर ज्येष्ठ मास प्रारम्भ ।
चं.	१४	२	२७	२६	१६	—महापंचक । भद्रा घं. ३ मि. २६ बजे से घं. १६ मि. ३८ बजे तक । वटसावित्री व्रत का द्वितीयE
मं.	१४	३	२८	२७	१७	—महापंचक । अन्वाधान । पञ्चगौडों का वटसावित्री ३० व्रत । श्राद्ध की सिनीवाली अमावस्या । भावुका ३० । फलहारिणी कालिका-पूजा । १४ तिथि-वृद्धि । [Kघं. १५ मि. ५१ बजे प्रारम्भ ।
बु.	३०	४	२९	२८	१८	—महापंचक । इष्टि । स्नान-दान की कुहू अमावस्या ३०, शुभवारी प्रजा-सुखकरी, सुभिक्षकरी । करिदिन ।
गु.	१	५	३०	२९	१९	—महापंचक । ☽ चंद्र-दर्शन मु. ४५ समर्घ । करवीर-व्रत । गंगा दशहरा का १० दिनात्मक व्रतारम्भ ।F
शु.	२	६	१	३०	२०	—महापंचक समाप्त घं. ० मि. ३५ बजे । सोपपदा २, वेदारम्भ में अनध्याय । सायाह्नव्यापिनी तृतीयाG
श.	३	७	२	३१	२१	—श्रीमहाराणा प्रताप-जयन्ती । सूर्य सायन मिथुन में घं. ९ मि. ४४ बजे ।
र.	४	८	३	१	२२	—भद्रा घं. ४ मि. ३७ बजे से घं. १७ मि. ३७ बजे तक । वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत । यायिजय योग घं. १७ मि. ३७ बजे प्रारम्भ । राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास प्रारम्भ । गुरु अर्जुनदेव-बलिदान-दिवस ।H
चं.	५	९	४	२	२३	—सोमवती ५ । यायिजय योग घं. ८ मि. ३६ बजे तक । [Iजयन्ती । मेला क्षीरभवानी (कश्मीर) ।
मं.	६	१०	५	३	२४	—अरण्य-षष्ठी । विंध्यवासिनी-पूजा । [H ♃ गुरु अस्त पश्चिम में घं. ६ मि. १९ बजे ।
बु.	७	११	६	४	२५	—भद्रा घं. २० मि. ५० बजे प्रारम्भ । [Jघ. १८ मि. ९ बजे प्रारम्भ ।
गु.	८	१२	७	५	२६	—भद्रा घं. ८ मि.४५ बजे समाप्त । श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रत । अष्टमी में शुक्लादेवी का पूजन । धूमावती-I
शु.	९	१३	८	६	२७	—नवमी में उपोषण करके शुक्लादेवी का पूजन । श्रीजवाहरलाल नेहरू-निर्वाण-दिवस ।
श.	१०	१४	९	७	२८	—श्रीगंगादशहरा १० ; परमपुण्यकाल घं. १२ मि. ६ बजे से । गंगावतार । दस दिन का गंगादशहरा व्रत समाप्त । सेतुबंध रामेश्वर-प्रतिष्ठा-दिन । श्रीरामेश्वरजी का पूजन दर्शन यात्रा । यायिजय योगJ
र.	११	१५	१०	८	२९	—भद्रा घं. ५ मि. ० बजे से घं. १५ मि. ५१ बजे तक । निर्जला ११ एकादशी व्रत सबका । भीमसेनी एकादशी । चीनी सुवर्णसहित दान । यायिजय योग घं. १० मि. ४५ बजे समाप्त । द्विपुष्कर योगK
चं.	१२	१६	११	९	३०	—सोमप्रदोष १३ व्रत, धनार्थियों पुत्रार्थियों को व्रतारम्भ करना चाहिये । द्वादशी में श्रीत्रिविक्रम काL
मं.	१३	१७	१२	१०	३१	—वटसावित्री व्रत का द्वितीय संयम । यायिजय योग घ. ५ मि. १२ बजे समाप्त ।

ता०। ग्रह रा.नक्ष.चरण(नवां) प्रवे.स्टैं.टा.

मई	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
२	सं.+	♂	उ.भा.	३	तु·	११	३०
४	सू·	☉	भरणी	३	तु·	८	३७
६	गु·	♃	रोहिणी	२	वृ·	५	४३
६	बु·R	☿	अश्विनी	४	क·	६	३५
६	सं.	♂	उ.भा.	४	वृ·	१९	३३
७	सू·	☉	भरणी	४	वृ·	१९	१८
८	शु·	♀	रेवती	१	ध·	०	३
११	सं.	♂	रेवती	१	ध·	३	५०
११	सू·	☉	कृत्तिका	१	ध·	६	१
१४	बु.D	☿	मार्गी	—	—	२	२१
१४	सू·	☉	वृ. कृत्ति.	२	म.	१६	५४
१५	शु·	♀	रेवती	२	म·	५	५५
१५	सं.	♂	रेवती	२	म·	१२	४०
१८	सू·	☉	कृत्तिका	३	कुं·	३	५२
१९	सं.	♂	रेवती	३	कुं·	२१	४८
२०	शु·	♀	रेवती	३	कुं·	१७	३२
२०	गु·	♃	रोहिणी	३	मि·	१९	५१
२१	सू·	☉	कृत्तिका	४	मी·	१४	५८
२१	बु·	☿	भरणी	१	सिं·	१६	१५
२४	सं.	♂	रेवती	४	मी·	७	२३
२५	सू·	☉	रोहिणी	१	मे·	२	९
२५	शु·	♀	रेवती	४	मी·	११	४३
२६	बु·	☿	भरणी	२	कं·	९	२०
२८	सू·	☉	रोहिणी	२	वृ·	१३	२९
२८	मं·	♂	मे.अश्वि.	१	मे·	१७	३०
२९	शु·	♀	मे.अश्वि·	१	मे·	१८	३९
२९	बु·	☿	भरणी	३	तु·	२३	९

ता. १२ मई को बुध उदय पूर्व में।
ता. २२ मई को गुरु अस्त पश्चिम में।

वेद एव तदङ्गभूत ज्योतिष और धर्मशास्त्र में तिथि द्विधा प्रतिपादित है—(१) जंत्री-पंचांग में दिये जाने वाले भ-गर्भाभिप्रायिक सूर्य चन्द्र की द्वादश अंशान्तरात्मिका शुद्ध (केवल) अंतरलक्षणा (अदृश्य) तिथि, (२) दृक्कर्म, लम्बन-संस्कृत भू-पृष्ठीय (वास्तव दृश्य वा दृक्तुल्य) तिथि। लौकिक पारलौकिक पुण्यफलदायी समस्त श्रौत स्मार्त धर्मकृत्यानुष्ठानार्थं तथा जातकादि के द्वारा अदृष्ट फल-प्रकाशनार्थ अन्तरलक्षणा तिथि का उपयोग किया जाता है तथा ग्रहण ग्रहदर्शनादर्शन-निर्णय, चन्द्रशृङ्गोन्नति-साधन आदि भू-पृष्ठस्थ द्रष्टा के प्रत्यक्ष दृष्ट-फलार्थ कला तिथि अनिवार्यतः प्रयुक्त होती है।

स्था. काशी के० व मे का सांपा.का.; प्रातः स्टैं.टा.५।२९ बजे सूर्य का दैनिक स्पष्ट ☉, दैनिक गति, दै. क्रां. उत्तर; चित्रापक्षीय अर्ध दैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट: चं. स्पष्ट घं. ५ मि. २९ बजे का, अर्धदैनिक गति, चं. स्पष्ट घं. १७ मि. २९ बजे का, अर्धदैनिक गति

ता.	वा.	घं.	मि.	सै.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.
१	र·	१४	३४	१९	०	१६	५७	५२	५८	१२	१४	५८	५	११	४१	४४	७	१४	५४	५	१८	५६	३	७	२०
२	चं·	१४	३८	१६	०	१७	५६	४	५८	१०	१५	१७	५	२६	१७	१३	७	२५	३६	६	३	४२	४९	७	२९
३	मं·	१४	४२	१२	०	१८	५४	१४	५८	९	१५	३४	६	११	१२	३३	७	३२	५२	६	१८	४५	२५	७	३४
४	बु·	१४	४६	९	०	१९	५२	२३	५८	७	१५	५२	६	२६	२०	१७	७	३५	४१	७	३	५५	५	७	३५
५	गु·	१४	५०	६	०	२०	५०	३०	५८	५	१६	९	७	११	३१	१३	७	३३	३७	७	१९	४	५०	७	३०
६	शु·	१४	५४	२	०	२१	४८	३५	५८	४	१६	२६	७	२६	३५	४०	७	२७	१	८	४	२	४१	७	२२
७	श·	१४	५७	५९	०	२२	४६	३[illegible]	५८	२	१६	४३	८	११	२५	०	७	१६	५३	८	१८	४१	५३	७	१०
८	र·	१५	१	५५	०	२३	४४	४१	५८	१	१७	०	८	२५	५२	४८	७	४	३५	९	२	५७	२३	६	५८
९	चं·	१५	५	५२	०	२४	४२	४२	५८	०	१७	१६	९	९	५५	२७	६	५१	३२	९	१६	४६	५९	६	४५
१०	मं·	१५	९	४८	०	२५	४०	४२	५७	५९	१७	३२	९	२३	३२	४	६	३८	५३	१०	०	१०	५७	६	३२
११	बु·	१५	१३	४५	०	२६	३८	४१	५७	५७	१७	४७	१०	६	४३	४५	६	२७	२७	१०	१३	११	२२	६	२२
१२	गु·	१५	१७	४१	०	२७	३६	३८	५७	५६	१८	३	१०	१९	३३	४४	६	१७	४३	१०	२५	५१	२७	६	१३
१३	शु·	१५	२१	३८	०	२८	३४	३४	५७	५५	१८	१८	११	२	५	०	६	९	५२	११	८	१४	५२	६	६
१४	श·	१५	२५	३५	०	२९	३२	२९	५७	५३	१८	३३	११	१४	२१	३०	६	३	५१	११	२०	२५	२१	६	१
१५	र·	१५	२९	३१	१	०	३०	२२	५७	५२	१८	४७	११	२६	२६	४९	५	५९	३०	०	२	२६	१९	५	५७
१६	चं·	१५	३	२८	१	१	२८	१४	५७	५०	१९	१	०	८	२४	१२	५	५६	३७	०	१४	२०	४९	५	५५
१७	मं·	१५	३७	२४	१	२	२६	४	५७	४९	१९	१५	०	२०	१६	२८	५	५४	५९	०	२६	११	२७	५	५४
१८	बु·	१५	४१	२१	१	३	२३	५३	५७	४८	१९	२८	१	२	६	३	५	५४	२६	१	८	०	२९	५	५४
१९	गु·	१५	४५	१७	१	४	२१	४१	५७	४७	१९	४२	१	१३	५५	१	५	५४	५२	१	१९	४९	५३	५	५५
२०	शु·	१५	४९	१४	१	५	१९	२८	५७	४५	१९	५४	१	२५	४५	२०	५	५६	१६	२	१	४१	३६	५	५७
२१	श·	१५	५३	१०	१	६	१७	१३	५७	४४	२०	७	२	७	३८	५७	५	५८	४२	२	१३	३०	३९	६	०
२२	र·	१५	५७	७	१	७	१४	५७	५७	४१	२०	१९	२	१९	३८	१	६	२	२१	२	२५	४०	२२	६	४
२३	चं·	१६	१	४	१	८	१२	३८	५७	४१	२०	३१	३	१	४५	२	६	७	२३	३	७	५२	२५	६	१०
२४	मं·	१६	५	०	१	९	१०	१९	५७	३९	२०	४२	३	१४	२	५४	६	१४	२	३	२०	१६	५६	६	१८
२५	बु·	१६	८	५७	१	१०	७	५८	५७	३८	२०	५३	३	२६	३४	५६	६	२२	२५	४	२	५७	२१	६	२७
२६	गु·	१६	१२	५३	१	११	५	३६	५७	३८	२१	४	४	९	२४	३९	६	३२	३[illegible]	४	१५	५७	१५	६	३८
२७	शु·	१६	१६	५०	१	१२	३	१२	५७	३६	२१	१४	४	२२	३५	३४	६	४४	२३	४	२९	१९	५[illegible]	६	५०
२८	श·	१६	२०	४६	१	१३	०	४७	५७	३५	२१	२४	५	६	१०	४२	६	५७	१६	५	१३	७	५८	७	३
२९	र·	१६	२४	४३	१	१[illegible]	५८	२०	५७	३३	२१	३४	५	२०	११	५१	७	१०	२५	५	२७	२२	१६	७	१६
३०	चं·	१६	२८	३९	१	१४	५५	५२	५७	३२	२१	४३	६	४	३८	५७	७	२२	३१	६	१२	१	२८	७	२७
३१	मं·	१६	३२	३६	१	१५	५३	२२	५७	३०	२१	५२	६	१९	२९	११	७	३२	५	६	२७	१	१६	७	३५

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

मई तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध सम्मुख	सर्वतोभद्र-वेध वाम+	सर्वतोभद्र-वेध दक्षिण R	पञ्चशलाका-वेध	लत्त
चालू	राहु	चित्रा	पू. भा.	मूल	मृगशिरा	पू. भा.	श्रव
,,	केतु	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल	उ. फा.	पुष्य
,,	शनि	आश्लेषा	अनुराधा	मघा	धनिष्ठा	धनिष्ठा	विशा
,,	गुरु	रोहिणी	अभिजित्	स्वाती ♅	अश्विनी	अभिजित्	आश्ले.
६	बुधR	अश्विनी	पू. फा.	रोहिणी ♃	ज्येष्ठा ♆	पू. फा.	श्रव
८	शुक्र	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल	उ. फा.	धनि
११	मंगल	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल	उ. फा.	भर. ☾
११	सूर्य	कृत्तिका	श्रवण	विशाखा	भरणी ☿	विशाखा	चित्रा
२१	बुध	भरणी	मघा	कृत्तिका ☉	अनुराधा	अनुराधा	धनि
२५	सूर्य	रोहिणी	अभिजित्	स्वाती ♅	अश्विनी	अभिजित्	स्वाती
२८	मंगल	अश्विनी	पू. फा.	रोहि. ♃ ☉	ज्येष्ठा ♆	पू. फा.	कृत्तिक
२९	शुक्र	अश्विनी	पू. फा.	रोहि. ♃ ☉	ज्येष्ठा ♆	पू. फा.	शतभि

आकाशी-लक्षण—मासारम्भ में शनि से सूर्य का केन्द्रयोग, चं[illegible] का मंगल और [illegible] से प्रतियोग एवं ता. १२ को पूर्व में बुधोदय महोत्पातकारी है। (नोत्पात पा[illegible] कदाचिदपि चंद्रजो व्रजत्युदयम्) पूर्वदिशा के कई प्रदेशों में भीषण आँधी-[illegible] का प्रकोप होगा। ग्राम की क्षति होगी। कहीं भीषण गर्मी, लू-बवण्डर से [illegible] होगा तो कहीं तपन के बीच पुरुवा वायु-वेग, वर्षा और ठंड से ऋतु-विपय होगा। ३,६,८,११,१२,१४ को अंधड़ तूफान और वर्षा-योग है; संक्रान्ति [illegible] पड़ गया है, अतः ता. १८,२१,२२,२५,२८, को अनेक स्थानों में बिजली की चमक, मेघ-गर्जन और वर्षा से सावन-भादों का दृश्य दिखाई देगा।

स्पष्ट ग्रह एवं दै. गति प्रातः ५।२९ स्टैं.टा.

ता.	♂ मं.			ग.	☿ बु. R			ग.	♃ गु.			ग.	♀ शु.			ग.	♄ श.			ग.	☊ रा.			♅ ह. R			♆ ने. R			P प्लू. R		
मई	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	११	९	२	४६	०	१६	२९	३९	१	१२	१२	१३	११	१४	५७	९	३	१६	४६	२	५	२९	५९	६	१६	१२	७	२२	७	५	१८	३२
४	११	११	२१	४६	०	१४	३४	३६	१	१२	५३	१३	११	१५	३१	१६	३	१६	५२	२	५	२९	५०	६	१६	४	७	२२	३	५	१८	२८
७	११	१३	३९	४६	०	१२	५४	२७	१	१३	३३	१४	११	१६	२४	२१	३	१७	१	३	५	२९	४०	६	१५	५६	७	२१	५९	५	१८	२४
१०	११	१५	५७	४६	०	११	४४	१५	१	१४	१४	१४	११	१७	३२	२६	३	१७	९	३	५	२९	३१	६	१५	४८	७	२१	५५	५	१८	२०
१३	११	१८	१५	४६	०	११	[illegible]	[illegible]	१	१४	५५	१४	११	१८	५६	३१	३	१७	१८	३	५	२९	२१	६	१५	४१	७	२१	५१	५	१८	१६
१६	११	२०	३२	४६	०	११	२१	१२	१	१५	३६	१४	११	२०	३३	३५	३	१७	२८	४	५	२९	११	६	१५	३४	७	२१	४७	५	१८	१३
१९	११	२२	४९	४५	०	१२	१०	२५	१	१६	१८	१४	११	२२	२२	३९	३	१७	३९	४	५	२९	२	६	१५	२७	७	२१	४३	५	१८	१०
२२	११	२५	६	४५	०	१३	३९	३८	१	१६	५९	१४	११	२४	२०	४२	३	१७	५१	४	५	२८	५२	६	१५	२०	७	२१	३८	५	१८	७
२५	११	२७	२२	४५	०	१५	४३	४९	१	१७	४१	१४	११	२६	२८	४५	३	१८	४	४	५	२८	४३	६	१५	१३	७	२१	३३	५	१८	४
२८	११	२९	३७	४५	०	१८	१९	५९	१	१८	२२	१४	११	२८	४५	४७	३	१८	१७	५	५	२८	३३	६	१५	६	७	२१	२८	५	१८	१
३१	०	१	५३	४५	०	२१	२६	६८	१	१९	५	१४	०	१	८	४९	३	१८	३२	५	५	२८	२४	६	१५	०	७	२१	२३	५	१७	५९

वैशाखपूर्णिमान्त ☾ ☍ ☉ काशी, मंगलवार
ता. ३।५।७७ई० भा.स्टैं.टा.घं.१८ मि.३३
इष्ट सांपातिक काल घं.९ मि.२० से.१५

ल० ६ २१ ४ १८ — द० ३ २४ ४ १२

ने. / रा. प्लू. / ह. चं. / श. / बु. र. / मं. शु. के. / बृ.
९ ८ ६ ५ १० ७ ४ १ ११ १२ २ ३

☉ वृष-संक्रांति, काशी, शनिवार
ता. १४।५।७७ई० भा. स्टैं.टा.घं.१६ मि.५४
इष्ट सांपातिक काल घं. ६ मि. २२ से.८

ल० ५ ११ २७ ५९ — द० २ १२ २२ ५२

ह. / नें. / रा प्लू. / श / मं. शु. चं. के. / बु. र. / गु.
७ ८ ५ ४ ६ ३ १२ १० ११ १ २

ज्येष्ठ अमान्त ☾ ☌ ☉ काशी, बुधवार
ता० १८।५।७७ई० भा.स्टैं.टा. घं.८ मि.२१
इष्ट सांपातिक काल घं.० मि.५ से. ४४

ल० २ १८ २३ ३० — द० ११ ८ १ १६

श. / बृ. र चं. / गु. / प्लू. रा. / के. मं. शु. / ह. / नें.
४ ५ २ १ ३ ६ १२ ९ ७ ८ ११ १०

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदयका समय भा.स्टैं.टा.में)

मई		मेष			वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चि.		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.
१	र.	४	३२	४४	६	१०	८	७	१०	२०	१२	३८	१४	५२	१७	५	१९	२१	२१	३८	२३	४३	१	३३	३	४
२	चं.	४	२८	४८	६	६	८	३	१०	१६	१२	३४	१४	४८	१७	१	१९	१७	२१	३४	२३	३९	१	२९	३	०
३	मं.	४	२४	५२	६	२	७	५९	१०	१२	१२	३०	१४	४४	१६	५७	१९	१३	२१	३०	२३	३५	१	२५	२	५६
४	बु.	४	२०	५६	५	५८	७	५५	१०	९	१२	२६	१४	४०	१६	५३	१९	९	२१	२६	२३	३१	१	२१	२	५२
५	गु.	४	१७	०	५	५५	७	५१	१०	५	१२	२२	१४	३६	१६	४९	१९	५	२१	२२	२३	२७	१	१७	२	४८
६	शु.	४	१३	४	५	५१	७	४७	१०	१	१२	१८	१४	३२	१६	४५	१९	१	२१	१८	२३	२४	१	१३	२	४४
७	श.	४	९	९	५	४७	७	४३	९	५७	१२	१४	१४	२८	१६	४१	१८	५७	२१	१४	२३	२०	१	९	२	४०
८	र.	४	५	१३	५	४३	७	३९	९	५३	१२	११	१४	२४	१६	३७	१८	५३	२१	१०	२३	१६	१	५	२	३६
९	चं.	४	१	१७	५	३९	७	३५	९	४९	१२	७	१४	२०	१६	३३	१८	४९	२१	६	२३	१२	१	१	२	३३
१०	मं.	३	५७	२१	५	३५	७	३१	९	४५	१२	३	१४	१७	१६	२९	१८	४५	२१	३	२३	८	०	५७	२	[illegible]
११	बु.	३	५३	२५	५	३१	७	२८	९	४१	११	५९	१४	१३	१६	२५	१८	४२	२०	५९	२३	४	०	५३	२	२५
१२	गु.	३	४९	२९	५	२७	७	२४	९	३७	११	५५	१४	९	१६	२१	१८	३८	२०	५५	२३	०	०	५०	२	२१
१३	शु.	३	४५	३३	५	२३	७	२०	९	३३	११	५१	१४	५	१६	१७	१८	३४	२०	५१	२२	५६	०	४६	२	१७
१४	श.	३	४१	३७	५	१९	७	१६	९	२९	११	४७	१४	१	१६	१३	१८	३०	२०	४७	२२	५२	०	४२	२	१३
१५	र.	३	३७	४१	५	१५	७	१२	९	२५	११	४३	१३	५७	१६	१०	१८	२६	२०	४३	२२	४८	०	३८	२	९
१६	चं.	३	३३	४५	५	११	७	८	९	२१	११	३९	१३	५३	१६	६	१८	२२	२०	३९	२२	४४	०	३४	२	५
१७	मं.	३	२९	४९	५	७	७	४	९	१७	११	३५	१३	४९	१६	२	१८	१८	२०	३५	२२	४०	०	३०	२	१
१८	बु.	३	२५	५४	५	३	७	०	९	१४	११	३१	१३	४५	१५	५८	१८	१४	२०	३१	२२	३६	०	२६	१	५७
१९	गु.	३	२१	५	५	०	६	५६	९	१०	११	२७	१३	४१	१५	५४	१८	१०	२०	२७	२२	३२	०	२२	१	५३
२०	शु.	३	१८	२	४	५६	६	५२	९	६	११	२३	१३	३७	१५	५०	१८	६	२०	२३	२२	२९	०	१८	१	४९
२१	श.	३	१४	६	४	५२	६	४८	९	२	११	१९	१३	३३	१५	४६	१८	२	२०	१९	२२	२५	०	१४	१	४५
२२	र.	३	१०	१०	४	४८	६	४४	८	५८	११	१५	१३	२९	१५	४२	१७	५८	२०	१५	२२	२१	०	१०	१	४१
२३	चं.	३	६	१४	४	४४	६	४०	८	५४	११	११	१३	२५	१५	३८	१७	५४	२०	११	२२	१७	०	६	१	३७
२४	मं.	३	२	१८	४	४०	६	३६	८	५०	११	८	१३	२१	१५	३४	१७	५०	२०	७	२२	१३	०	२	१	३३
																					*		२३	५८		
२५	बु.	२	५८	२२	४	३६	६	३२	८	४६	११	४	१३	१८	१५	३०	१७	४६	२०	४	२२	९	२३	५४	१	३०
२६	गु.	२	५४	२६	४	३२	६	२९	८	४२	११	०	१३	१४	१५	२६	१७	४३	२०	०	२२	५	२३	५१	१	२६
२७	शु.	२	५०	३०	४	२८	६	२५	८	३८	१०	५६	१३	१०	१५	२२	१७	३९	१९	५६	२२	१	२३	४७	१	२२
२८	श.	२	४६	३४	४	२४	६	२१	८	३४	१०	५२	१७	६	१५	१८	१७	३५	१९	५२	२१	५७	२३	४३	१	१८
२९	र.	२	४२	३९	४	२०	६	१७	८	३०	१०	४८	१३	२	१५	१५	१७	३१	१९	४८	२१	५३	२३	३९	१	१४
३०	चं.	२	३९	४३	४	१६	६	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	मं.	२	३५	४७	४	१२	६	९	८	[illegible]	१०	४०	१२	५४	१५	७	१७	२३	१९	४०	२१	४५	२३	३१	१	६

भविष्यवाणी–शनि पुष्य नक्षत्र छोड़कर आश्लेपा में आ चुका है। अतः उसके अनिष्टकारी परिणामों से पूर्वेशिया भू-खण्ड, खासकर भारत चीन नेपाल बंगलादेश को राहत मिलेगी। रोहिणी पर गुरु-सञ्चरण का फल मध्यम है, किन्तु वह शनि के शुभद सम्बन्ध में आ गया है; ता. २७ को दोनों में अंशात्मक त्रिरेकादश)(योग भी बनेगा। अफ्रीका और पश्चिमी एशिया के परस्पर विरोधी राष्ट्रों में शांति-स्थापनार्थ रूस अड़ंगेबाजी त्यागकर रचनात्मक भूमिका अदा करेगा। **संक्रान्ति-फल**– सूर्य गत सं. से ४ वार ५ नक्षत्र मु. ३० पर प्रवेश करते हैं। यह तेजी का प्रबल योग है, अतएव संक्रान्ति से पहले मंदी जिंसों के संग्रह से आगे निश्चित लाभ होगा। **शेयर्स**–में मासारम्भ से ही तेजी के उछाले आवेंगे, संक्रान्ति के आसपास दुतर्फा घटा-बढ़ी के बाद इकतर्फा तेजी चल पड़ेगी।

ता. २४ मई को कुम्भ लग्न का उदय दो बार होगा।

ज्येष्ठ शुक्ल १४ से आषाढ़ शुक्ल १४ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु ।

वार ३० दिन	जून १९७७ ई०	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष					नक्षत्र					योग					करण						चं. राशि-प्रवेश		दिनमान	काशी सूर्य उ.म.अ. भारतीय स्टैं. टा.				
		तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	राशि	घं.मि.	घ.पल	उ. घं.मि.	मध्याह्न घण्टा	मिनट	सेकेण्ड	अ. घं.मि.
बु.	१	१४	१/५२	४३/५०	५/२	५३/१	अनु.	४८	८	०	२७	शिव	२०	०	१३	१२	व.	५	२९	अ.	१५/२	५७/१			३३/३८	५/१२	११	५५	४२	१८/३९
		आषाढ़ कृष्णपक्ष																												
गु.	२	१	४२	२३	२२	९	ज्येष्ठा	४०	३०	२१	२४	सिद्धि	१/४९	१८/२५	८/४	५५/४१	बा.	१२	१५	कौ.	२२	२९	ध.	२१/२५	४०	१२	११	५५	५१	४०
शु.	३	२	३३	१०	१८	२८	मूल	३३	२५	१८	३४	शुभ	४८	४०	०	४०	तै.	८	२९	ग.	१८/४	२८/४९			४१	१२	११	५६	१	४०
श.	४	३	२४	५५	१५	१०	पू.षा.	२७	१३	१६	५	शुक्ल	३९	२८	२०	५९	अ.	१५	१०	बव	१	४७	म.	२१/३४	४३	१२	११	५६	११	४१
र.	५	४	१८	३	१२	२४	उ.षा.	२२	२५	१४	९	ब्रह्म	३१	३३	१७	४८	बा.	१२	२४	कौ.	२३	२१			४४	११	११	५६	२१	४१
चं.	६	५	१२	४८	१०	१८	श्रवण	१९	२०	१२	५५	ऐन्द्र	२५	३	१५	१२	तै.	१०	१८	ग.	२१	३९			४५	११	११	५६	३१	४२
मं.	७	६	९	३३	९	०	धनि.	१८	१३	१२	२८	वैधृति	२०	१०	१३	१५	व.	९	०	अ.	२०	४६	कुं.	०/३५	४७	११	११	५६	४२	४२
बु.	८	७	८	२३	८	३२	शतभि.	१९	१०	१२	५१	विष्कु.	१७	०	११	५९	बव	८	३२	बा.	२०	४३			४८	११	११	५६	५४	४३
गु.	९	८	९	१८	८	५४	पू.भा.	२२	१०	१४	३	प्रीति	१५	२८	११	२२	कौ.	८	५४	तै.	२१	२८	मी.	७/४१	४९	११	११	५७	५	४३
शु.	१०	९	१२	८	१०	२	उ.भा.	२७	०	१५	५९	आयु.	१५	२५	११	२१	ग.	१०	२	व.	२२	५५			५०	११	११	५७	१७	४३
श.	११	१०	१६	३३	११	४८	रेवती	३३	१३	१८	२८	सौभा.	१६	३३	११	४८	अ.	११	४८	बव	०	५५	मे.	१८/२९	५१	११	११	५७	२९	४४
र.	१२	११	२२	५	१४	१	अश्वि.	४०	२३	२१	२०	शोभ.	१८	३३	१२	३६	बा.	१४	१	कौ.	३	१५			५१	११	११	५७	४१	४४
चं.	१३	१२	२८	१५	१६	२९	भरणी	४८	५	०	२५	अति.	२१	३	१३	३६	तै.	१६	२९	ग.	५	१२			५२	११	११	५७	५४	४४
मं.	१४	१३	३४	२५	१९	२	कृत्ति.	५५	५०	३	३२	सुकर्मा	२३	४३	१४	४१	ग.	५	४६	व.	१९	२	वृ.	७/१२	५३	१२	११	५८	७	४५
बु.	१५	१४	४०	५०	२१	३२	रोहि.	६०	०	२४	०	धृति	२६	२३	१५	४५	अ.	८	१७	श.	२१	३२			५३	१२	११	५८	१९	४५
गु.	१६	३०	४६	४३	२३	५३	रोहि.	३	२३	६	३३	शूल	२८	४५	१६	४२	च.	१०	४३	ना.	२३	५३	मि.	२०/०	५४	१२	११	५८	३२	४[illegible]
		आषाढ़ शुक्लपक्ष																												
शु.	१७	१	५१	५८	१	५९	मृग.	१०	३०	९	२४	गण्ड	३०	४३	१७	२९	किं.	१२	५६	बव	१	५९			५४	१२	११	५८	४५	४६
श.	१८	२	५६	२८	३	४७	आर्द्रा	१६	५८	११	५९	वृद्धि	३२	८	१८	३	बा.	१४	५३	कौ.	३	४७			५४	१२	११	५८	५८	४६
र.	१९	३	६०	०	२४	०	पुनर्व.	२२	४३	१४	१७	ध्रुव	३२	५८	१८	२३	तै.	१६	३१	ग.	५	१३	क.	७/४४	५५	१२	११	५९	१२	४७
चं.	२०	३	०	५	५	१५	पुष्य	२७	३०	१६	१३	व्याघा.	३३	०	१८	२५	ग.	५	१५	व.	१७	४८			५५	१३	११	५९	२५	४७
मं.	२१	४	२	४८	६	२०	आश्ले.	३१	२३	१७	४६	हर्षण	३२	१८	१८	८	अ.	६	२०	बव	१८	३९	सिं.	१७/५६	५५	१३	११	५९	३८	४७
बु.	२२	५	४	२३	६	५८	मघा	३४	५	१८	५१	वज्र	३०	४०	१७	२९	बा.	६	५८	कौ.	१९	२			५५	१३	११	५९	५१	४७
गु.	२३	६	४	४३	७	६	पू.फा.	३५	३०	१९	२५	सिद्धि	२८	०	१६	२५	तै.	७	६	ग.	१८	४३			५५	१३	१२	०	४	४७
शु.	२४	७	३	३८	६	४०	उ.फा.	३५	२८	१९	२४	व्यती.	२४	१०	१४	५३	व.	६	४०	अ.	१७	९	कं.	१/२८	५५	१३	१२	०	१७	४७
श.	२५	८	१/५२	३/३	५/३	३/५२	हस्त	३३	५५	१८	४७	वरी.	१९	५	१२	५१	बव	५	३८	बा.	१६/३	५९/२			५५	१३	१२	०	३०	४७
र.	२६	१०	५१	१८	१	४४	चित्रा	३०	५०	१७	३३	परिघ	१२	४८	१०	२०	तै.	१४	५२	ग.	१	४४	तु.	६/१४	५४	१३	१२	०	४२	४७
चं.	२७	११	४४	२०	२२	५७	स्वाती	२६	२३	१५	४६	शिव	५/५१	१८/२५	७/३	२०/५४	व.	१२	२१	अ.	२२	५७			५४	१३	१२	०	५५	४७
मं.	२८	१२	३६	१८	१९	४५	विशा.	२०	४०	१३	३०	साध्य	४७	१५	०	८	बव	९	२१	बा.	१९	४५	वृ.	६/६	५३	१४	१२	१		४८
बु.	२९	१३	२७	३०	१६	१४	अनु.	१४	८	१०	५३	शुभ	३७	१५	२०	८	कौ.	५	५९	तै.	१६/२	१४/२४			५३	१४	१२	१	१९	४८
गु.	३०	१४	१८	१५	१२	३३	ज्येष्ठा	७/५३	३/५५	८/५	४/१४	शुक्ल	२६	५८	१६	२	व.	१२	३३	अ.	२२	४४	ध.	६/४	५२	१५	१२	१	३१	४८

मघादिपादावर्ज्याः—मघायाः प्रथमे पादे मूलस्य प्रथमे तथा । रेवत्याश्च चतुर्थांशे विवाहप्राणनाशनः । मघा के प्रथम चरण में, मूल के प्रथम चरण में, रेवती के चौथे चरण में विवाह करना प्राणों का नाश करता है ।

विवाहादि सौरमासः प्रशस्तः—विवाहव्रतयज्ञेषु सौरमासः प्रशस्यते ॥ विवाह, व्रतवन्ध तथा यज्ञ में सौरमास (अर्थात् एक सक्रान्ति से अग्रिम सक्रान्ति पर्यन्त का मास) प्रशस्त होता है ।

क्रूरयुतक्रूरान्तर्गतेचंद्रे शुभकर्म न कार्यम्—शशिनि क्रूरसमेते क्रूरद्वय मध्यगते च । शुभकर्माणि सञ्चरतां न निर्देश्यं शुभं कर्म ॥ यदि चन्द्रमा क्रूरग्रह से युक्त हो अथवा दो क्रूर ग्रहों के मध्य में हो तो शुभ कर्म न करना चाहिए ।

चंद्रात्सप्तमं पापयुतं वर्ज्यम्— [illegible] त्यजेत् । विवाहयात्राचूडासु गृहकर्म प्रवेशने । विवाह यात्रा चूडाकर्म तथा गृह-प्रवेश में यदि चन्द्रमा से सप्तम स्थान में सूर्य, शनि अथवा मंगल हो तो वर्जित करना चाहिए ।

जून सन् १९७७ ई० । ज्येष्ठ शुक्ल १४ से आषाढ़ शुक्ल १४ तक, संवत २०३४ विक्रमीय ।
राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास ११ से राष्ट्रीय आषाढ़ मास ९ तक, शके १८९९ शालिवाहन ।
जमादि-उस्सानी १३ से रज्जब १२ तक, १३९७ हिजरी ।

Aव्रत १५ । स्नान-दान व्रत की अनुदया ज्येष्ठी पूर्णिमा, पुण्यकाल घं. ५मि. ५३ बजे से । देव-स्नान-पूर्णिमा १५ । १५ तिथि-क्षय । सन्त कबीरदास-जयन्ती । जल-यात्रा १५ । विल्वत्रिरात्रि व्रत १५ ।
Fपूजा १२ । प्रदोषैकदेश स्पर्शकारिणी त्रयोदशी में भौम प्रदोष १२ व्रत, ऋण-विमुक्तिके लिये श्रेयस्कर है । स्थायीजय योग घं. ५ मि. १४ बजे से घं.१३ मि. ३० बजे तक । त्रिपुष्कर योग घं. ५ मि. १४ बजे से घं. १३ मि. ३० बजे तक ।

वार	उदित तिथि	सौर(वृष) ज्येष्ठ मा. ३१ दिन	जमादि-उस्सानी ३० दि. हि.	राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास ३१ दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि (मुद्दई) स्थायी (मुद्दालेह) जय योग, सन्धिकर, योगादि।
	तारीखें					
बु.	१४	१८	१३	११	१	–भद्रा घं. ५ मि. २९ बजे से घं. १५ मि. ५७ बजे तक । अन्वाधान । दाक्षिणात्योंका वट साबित्रीA
गु.	१	१९	१४	१२	२	–इष्टि । आषाढ़ मास प्रारम्भ । गुरु गोविन्द सिंह-जयन्ती ।
शु.	२	२०	१५	१३	३	– [Bबजे से घं. १८ मि. २८ बजे तक ।
श.	३	२१	१६	१४	४	–भद्रा घं.४मि.४९बजे से घं.१५मि.१० बजे तक । संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत; चन्द्रोदय घं.२१मि.१९बजे।
र.	४	२२	१७	१५	५	–रविवती ४ । यायिजय योग घं. १२ मि. २४ बजे से घं. १४ मि. ९ बजे तक ।
चं.	५	२३	१८	१६	६	–सोमवती ५ ।
मं.	६	२४	१९	१७	७	–पंचक प्रारम्भ घं. ० मि. ३५ बजे । भद्रा घं.९ मि. ० बजे से घं. २० मि. ४६ बजे तक । द्विपुष्कर योग घं. ९ मि. ० बजे से घं. १२ मि. २८ बजे तक ।
बु.	७	२५	२०	१८	८	–पंचक । [Dअनुदया कन्दर्प नवमी । भड्डली नवमी ।
गु.	८	२६	२१	१९	९	–पंचक । श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत ; पर्युषितान्न(बासी)भोजन करना विहित है। कालाष्टमी ८ । बोहरा अष्टमी । यायिजय योग घं. १४ मि. ३ बजे प्रारम्भ ।
शु.	९	२७	२२	२०	१०	–पंचक । भद्रा घं. २२ मि. ५५ बजे प्रारम्भ । यायिजय योग घं. ५ मि. ११ बजे समाप्त ।
श.	१०	२८	२३	२१	११	–पंचक समाप्त घं.१८ मि.२८ बजे । भद्रा घं. ११ मि. ४८ बजे समाप्त । यायिजय योग घं.११ मि.४८B
र.	११	२९	२४	२२	१२	–योगिनी ११ एकादशी व्रत सबका ।
चं.	१२	३०	२५	२३	१३	–यायियज योग घं. १६ मि. २९ बजे प्रारम्भ ।
मं.	१३	३१	२६	२४	१४	–भद्रा घं.१९ मि. २ बजे प्रारम्भ । कृष्णेपरा इत्यादि वचनानुसार **भौम प्रदोष १३ व्रत** । मासशिवरात्रि १३ व्रत । यायिजय योग घं. २ मि.२५ बजे समाप्त । स्थायीजय योग घं. १९ मि. २ बजे प्रारम्भ । ☉सूर्य की मिथुन-संक्रान्ति घं. २३ मि. २९ बजे, मु. ३० साम्यार्घ, अग्रिम दिन परमपुण्यकाल ।
बु.	१४	१	२७	२५	१५	–भद्रा घं.८ मि. १७ बजे समाप्त । मिथुन-संक्रान्ति का परम पुण्यकाल सूर्योदय से घं. ५ मि.५३ बजे तक वस्त्रान्न गो-दान, मंदाकिनी में स्नान । स्थायीजय योग घं. ३ मि. २२ बजे समाप्त । सौर आषाढ़मास प्रारम्भ ।
गु.	३०	२	२८	२६	१६	–अन्वाधान । स्नान दान श्राद्ध की दर्श ३० अमावस्या, शुभवारी प्रजासुखकरी, सुभिक्षकरी । बुध ☌C
शु.	१	३	२९	२७	१७	–इष्टि । [Cरोहिणी युति घं. २० मि. १८ बजे, रोहिणी से बु. ४°–३०′ उ. ।
श.	२	४	३०	२८	१८	–☽चन्द्र-दर्शन मु. ४५ समर्घ, रथयात्रा २ । जगन्नाथपुरी की यात्रा दर्शन प्रदक्षिणा । श्रीराम(बलराम)-रथोत्सव । त्रिपुष्कर योग घं. ११ मि. ५९ बजे प्रारम्भ ।
र.	३	५	१	२९	१९	–यायिजय योग घं. १३ मि. ४७ बजे से घं. १४ मि. १७ बजे तक । त्रिपुष्कर योग घं ३ मि. .३७ बजे समाप्त । रज्जब ७ माह शुरू । ♃गुरु उदय पूर्व में घं. ११ मि. २२ बजे ।
चं.	३	६	२	३०	२०	–भद्रा घं. १७ मि. ४८ बजे प्रारम्भ । **वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत** । ३ तिथि-वृद्धि ।
मं.	४	७	३	३१	२१	–भद्रा घं. ६ मि. २० बजे समाप्त । भौमवती ४ । सूर्य सायन कर्क में घं. १७ मि. ४४ बजे, सूर्य दक्षिणायन और वर्षा ऋतु प्रारम्भ ; दैत्यों की मध्यरात्रि, देवताओं का मध्याह्न । ☉सूर्य आर्द्रा में घं. २३ मि. २ बजे ; चन्द्र चन्द्र, स्त्री स्त्री योग, मयूरवाहन अमृतानाड़ी, तदीशचन्द्र, खण्ड-वृष्टि हो ।
बु.	५	८	४	१	२२	–राष्ट्रीय आषाढ़ मास प्रारम्भ । कुमार-षष्ठी । गुरु बालत्व-दोष-निवृत्ति आवश्यकीय ।
गु.	६	९	५	२	२३	–यायिजय योग घं. १९ मि. २५ बजे प्रारम्भ । विवस्वत सूर्य-पूजा ७ ।
शु.	७	१०	६	३	२४	–भद्रा घं. ६ मि. ४० बजे से घं. १७ मि. ९ बजे तक । यायिजय योग घं. ५ मि. १३ बजे समाप्त ।
श.	८	११	७	४	२५	–**दुर्गाष्टमी ८ व्रत** । यायिजय योग घं. ५ मि.३८ बजे से घं. १८ मि. ४७ बजे तक । ९ तिथि-क्षय ।D
र.	१०	१२	८	५	२६	–मन्वादि १० । सोपपदा १० ; वेदारम्भ में अनध्याय । रविदशमी १० ।
चं.	११	१३	९	६	२७	–भद्रा घं. १२ मि. २१ बजे से घं.२२ मि. ५७ बजे तक । **हरिशयनी ११ एकादशी व्रत**, स्मार्त वैष्णवों का । रात्रिमें विष्णु-पूजा । शाक-त्याग । चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ । यायिजय योग घं. १E
मं.	१२	१४	१०	७	२८	–**हरिशयनी ११ एकादशी व्रत** चक्राङ्कित महाभागवतों का । द्वादशी में शयनोत्सव प्रारम्भ । वामनF
बु.	१३	१५	११	८	२९	– [Eमि. ४४ बजे से घं. १५ मि. ४६ बजे तक ।
गु.	१४	१६	१२	९	३०	–भद्रा घं. १२ मि. ३३ बजे से घं. २२ मि. ४४ बजे तक । अन्वाधान । **व्रत की पूर्णिमा १५** । सायाह्न-व्यापिनी पूर्णिमा में कोकिला १५ व्रत । कोकिलारूपिणी शिवा का पूजन । प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में [illegible] (कश्मीर) । बैंकों की अर्धवार्षिक लेखाबन्दी ।

ता. ग्रह रा. नक्ष. चरण (नवां) प्रवे. स्टैं. टा.

जून	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
१	सू.	☉	रोहिणी	३	मि.	४	५६
१	बु.	☿	भरणी	४	वृ.	२०	४३
२	मं.	♂	अश्विनी	२	वृ.	४	६
२	शु.	♀	अश्विनी	२	वृ.	२०	५८
४	गु.	♃	रोहिणी	४	क.	४	२७
४	बु.	☿	कृत्तिका	१	ध.	२१	४९
४	सू.	☉	रोहिणी	४	क.	१२	३०
६	मं.	♂	अश्विनी	३	मि.	१५	१५
६	शु.	♀	अश्विनी	३	मि.	१७	२१
६	बु.	☿	वृष कृ.	२	म.	२१	४९
८	सू.	☉	मृगशिरा	१	सिं.	०	७
९	बु.	☿	कृत्तिका	३	कुं.	२	४२
१०	शु.	♀	अश्विनी	४	क.	१०	०
११	मं.	♂	अश्विनी	४	क.	२	५९
११	बु.	☿	कृत्तिका	४	मी.	५	५६
११	सू.	☉	मृगशिरा	२	कं.	११	४५
१३	बु.	☿	रोहिणी	१	मे.	५	९
१३	शु.	♀	भरणी	१	सिं.	२३	४९
१४	सू.	☉	मि. मृग.	३	तु.	२३	२९
१५	बु.	☿	रोहिणी	२	वृ.	२	१
१५	मं.	♂	भरणी	१	सिं.	१४	३०
१६	श.	♄	आश्लेषा	२	म.	१४	३६
१६	बु.	☿	रोहिणी	३	मि.	२१	२८
१७	शु.	♀	भरणी	२	कं.	११	२०
१८	सू.	☉	मृगशिरा	४	वृ.	११	१३
१८	गु.	♃	मृगशिरा	१	सिं.	१३	३५
१८	बु. +	☿	रोहिणी	४	क.	१५	१
२०	मं.	♂	भरणी	२	कं.	४	२३
२०	बु. +	☿	मृगशिरा	१	सिं.	७	१३
२०	शु.	♀	भरणी	३	तु.	२०	५८
२१	प्लूटो	P	मार्गी	—	—	१८	२०
२१	बु. +	☿	मृगशिरा	२	कं.	२२	५२
२१	सू.	☉	आर्द्रा	१	ध.	२३	२
२३	बु. +	☿	मि. मृग.	३	तु.	१२	२८
२४	शु.	♀	भरणी	४	वृ.	५	३
२४	मं.	♂	भरणी	३	तु.	१८	११
२५	बु. +	☿	मृगशिरा	४	वृ.	१	५७
२५	सू.	☉	आर्द्रा	२	म.	१०	५४
२६	बु. +	☿	आर्द्रा	१	ध.	१४	५७
२७	शु.	♀	कृत्तिका	१	ध.	११	४३
२८	बु. +	☿	आर्द्रा	२	म.	३	३९
२८	सू.	☉	आर्द्रा	३	कुं.	२२	४९
२९	मं.	♂	भरणी	४	वृ.	८	४८
२९	बु. +	☿	आर्द्रा	३	कुं.	१६	१८
३०	शु.	♀	वृष कृ.	२	म.	१७	१९

ता. १९ जून को गुरु उदय पूर्व में।
ता. ,, ,, को बुध अस्त पूर्व में।

जून ता.	वा.	स्था: काशी के० बजे का सांपा. का. घं.	मि.	से.	प्रातः स्टैं. टा. ५-२९ बजे सूर्य स्पष्ट — दैनिक स्पष्ट ☉ रा.	अं.	क.	वि.	दैनिक गति क.	वि.	दै. क्रां. उत्तर अं.	क.	चित्रापक्षीय अर्धदैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट — चं. स्पष्ट घं. ५ मि. २९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्धदैनिक गति अं.	क.	वि.	चं. स्पष्ट घं. १७ मि. २९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्धदैनिक गति अं.	क.	वि.
१	बु.	१६	३६	३३	१	१६	५०	५१	५७	२८	२२	०	७	४	३६	३९	७	३७	३५	७	१२	१४	१४	७	३८	२७
२	गु.	१६	४०	२९	१	१७	४८	१९	५७	२८	२२	८	७	१९	५२	४१	७	३७	५७	७	२७	३०	३८	७	३६	६
३	शु.	१६	४४	२६	१	१८	४५	४७	५७	२६	२२	१६	८	५	६	४४	७	३२	५७	८	१२	३९	४१	७	२८	३६
४	श.	१६	४८	२२	१	१९	४३	१३	५७	२५	२२	२३	८	२०	८	१७	७	२३	१५	८	२७	३१	३२	७	१७	३
५	र.	१६	५२	१९	१	२०	४०	३८	५७	२५	२२	३०	९	४	४८	३५	७	१०	१५	९	११	५८	५०	७	३	३
६	चं.	१६	५६	१५	१	२१	३८	३	५७	२४	२२	३७	९	१९	१	५३	६	५५	४१	९	२५	५७	३४	६	४८	१८
७	मं.	१७	०	१२	१	२२	३५	२७	५७	२४	२२	४२	१०	२	४५	५२	६	४१	५	१०	९	२६	५७	६	३४	१२
८	बु.	१७	४	८	१	२३	३२	५१	५७	२३	२२	४९	१०	१६	१	९	६	२७	४५	१०	२२	२८	५४	६	२१	४६
९	गु.	१७	८	५	१	२४	३०	१४	५७	२३	२२	५४	१०	२८	५०	४०	६	१६	२३	११	५	७	३	६	११	३५
१०	शु.	१७	१२	२	१	२५	२७	३७	५७	२२	२२	५९	११	११	१८	३८	६	७	२४	११	१७	२६	२	६	३	५०
११	श.	१७	१५	५८	१	२६	२४	५९	५७	२१	२३	४	११	२३	२९	५२	६	०	५२	११	२९	३०	४४	५	५८	२८
१२	र.	१७	१९	५५	१	२७	२२	२०	५७	२१	२३	८	०	५	२९	१२	५	५६	३८	०	११	२५	५०	५	५५	१७
१३	चं.	१७	२३	५१	१	२८	१९	४१	५७	२०	२३	११	०	१७	२१	७	५	५४	२७	०	२३	१५	३४	५	५४	१
१४	मं.	१७	२७	४८	१	२९	१७	१	५७	२०	२३	१५	०	२९	९	३५	५	५३	५७	१	५	३	३२	५	५४	१५
१५	बु.	१७	३१	४४	२	०	१४	२१	५७	२०	२३	१८	१	१०	५७	४७	५	५४	५१	१	१६	५२	३८	५	५५	४१
१६	गु.	१७	३५	४१	२	१	११	४१	५७	१९	२३	२०	१	२२	४८	१९	५	५६	४६	१	२८	४५	५	५	५८	२
१७	शु.	१७	३९	३७	२	२	९	०	५७	१८	२३	२२	२	४	४३	७	५	५९	२९	२	१०	४२	३६	६	१	६
१८	श.	१७	४३	३४	२	३	६	१८	५७	१७	२३	२४	२	१६	४३	४२	६	२	५३	२	२२	४६	३५	६	४	५०
१९	र.	१७	४७	३१	२	४	३	३५	५७	१७	२३	२५	२	२८	५१	२५	६	६	५५	३	४	५८	२०	६	९	१२
२०	चं.	१७	५१	२७	२	५	०	५२	५७	१	२३	२६	३	११	७	३२	६	११	४२	३	१७	१९	१४	६	१४	२५
२१	मं.	१७	५५	२४	२	५	५८	९	५७	१६	२३	२६	३	२३	३३	३९	६	१७	२३	३	२९	५१	२	६	२०	३८
२२	बु.	१७	५९	२०	२	६	५५	२५	५७	१५	२३	२६	४	६	११	४०	६	२४	१३	४	१२	३५	५३	६	२८	७
२३	गु.	१८	३	१७	२	७	५२	४०	५७	१५	२३	२६	४	१९	४	०	६	३२	२२	४	२५	३६	२२	६	३६	५९
२४	शु.	१८	७	१३	२	८	४९	५५	५७	१३	२३	२५	५	२	१३	२१	६	४१	५५	५	८	५५	१६	६	४७	१०
२५	श.	१८	११	१०	२	९	४७	८	५७	१३	२३	२४	५	१५	४२	२६	६	५२	४१	५	२२	३५	७	६	५८	२३
२६	र.	१८	१५	६	२	१०	४४	२१	५७	१३	२३	२२	५	२९	३३	३०	७	४	९	६	६	३७	३९	७	९	५२
२७	चं.	१८	१९	३	२	११	४१	३४	५७	१२	२३	२०	६	१३	४७	३१	७	१५	२२	६	२१	२	५३	७	२०	३०
२८	मं.	१८	२३	०	२	१२	३८	४६	५७	१२	२३	१८	६	२८	२३	२३	७	२५	४	७	५	४८	२७	७	२८	५३
२९	बु.	१८	२६	५६	२	१३	३५	५८	५७	१२	२३	१५	७	१३	१७	२०	७	३१	४३	७	२०	४९	३	७	३३	३०
३०	गु.	१८	३०	५३	२	१४	३३	१०	५७	१०	२३	१२	७	२८	२२	३३	७	३४	१	८	५	५६	३४	७	३३	१७

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

जून ता.	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र वेध — सम्मुख	वाम+	दक्षिणR	पंचशलाका-वेध	लत्ता
चालू	राहु	चित्रा	पू. भा.	मूल	मृगशिरा	पू. भा.	श्रवण
,,	केतु	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल	उ. फा.	पुष्य
,,	शनि	आश्लेषा	अनुराधा	मघा	धनिष्ठा	धनिष्ठा	विशाखा
४	बुध	कृत्तिका	श्रवण	विशाखा	भरणी	विशाखा	शतभिषा
८	सूर्य	मृगशिरा	उ. षा.	चित्रा ☊	रेवती ☋	उ. ष..	विशाखा
१३	बुध	रोहिणी	अभिजित्	स्वाती ♅	अश्वि. ♀ ♂	अभिजित्	पू. भा.
१३	शुक्र	भरणी	मघा	कृत्तिका	अनुराधा	अनुराधा	पू. भा.
१५	मंगल	भरणी	मघा	कृत्तिका	अनुराधा	अनुराधा	रोहि. ♃ ☿
१८	गुरु	मृगशिरा	उ. षा.	चित्रा ☊	रेवती ☋	उ. षा.	मघा
२०	बुध+	मृगशिरा	उ. षा.	चित्रा ☊	रेवती ☋	उ. षा.	उ. भा.
२१	सूर्य	आर्द्रा	पू. षा.	हस्त P	उ. भा.	पू. षा.	अनुराधा
२६	बुध+	आर्द्रा	पू. षा.	हस्त P	उ. भा.	पू. षा.	रेवती ☋
२७	शुक्र	कृत्तिका	श्रवण	विशाखा	भरणी ♂	विशाखा	उ. भा.

आकाशी-लक्षण—ता. ३ को शुक्र मंगल एवं ता. ४ को सूर्य गुरु की युति महोत्पातकारक है। ता. २,४,६,८,१३,१४ को कहीं प्रचण्ड वायु-वेग, चक्रवात तथा तीव्र तापलहरी का प्रकोप, कहीं मेघ-गर्जन, वज्रपात, आँधी-पानी के अलावा ओले भी पड़ेंगे। इस दुर्योग से जहाँ असामयिक वर्षा हो जायेगी, वहाँ आर्द्रा के सूर्य में सूखा पड़ने का भय होगा। अतएव बुआई के विषय में कृषक सतर्क रहें; वर्ना बीज मारे जायेंगे। ता. १४ को मिथुन सं. के समय चंद्र अग्नि-मण्डल में [illegible] वर्षा भी होगी। ता. १५,१६ १८,१९,२०,२१,२३,२६,२७ को कई प्रांतों में पावस (मानसून) विशेष सक्रिय होगा।

स्पष्टग्रहएवं ३.गति प्रातः५।२९स्टै.टा.

ता. जून	♂ मं. रा.	अं.	क.	ग. क.	☿ बु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♃ गु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♀ शु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♄ श. रा.	अं.	क.	ग. क.	☊ रा. रा.	अं.	क.	♅ ह. R रा.	अं.	क.	♆ ने. R रा.	अं.	क.	♇ प्लू. R रा.	अं.	क.
१	०	२	३८	४५	०	२२	३५	७२	१	१९	१९	१४	०	१	५७	५०	३	१८	३६	५	५	२८	२१	६	१४	५८	७	२१	२२	५	१७	५८
४	०	४	५२	४५	०	२६	१८	८०	१	२०	१	१४	०	४	२९	५२	३	१८	५१	५	५	२८	११	६	१४	५२	७	२१	१७	५	१७	५६
७	०	७	६	४५	१	०	२७	८९	१	२०	४२	१४	०	७	७	५४	३	१९	७	५	५	२८	१	६	१४	४६	७	२१	१२	५	१७	५५
१०	०	९	२०	४४	१	५	२	९७	१	२१	२४	१४	०	९	५०	५५	३	१९	२३	६	५	२७	५२	६	१४	४१	७	२१	७	५	१७	५४
१३	०	११	३३	४४	१	१०	२	१०५	१	२२	६	१४	०	१२	३७	५७	३	१९	४०	६	५	२७	४२	६	१४	३६	७	२१	२	५	१७	५३
१६	०	१३	४६	४४	१	१५	२५	११३	१	२२	४८	१४	०	१५	२८	५८	३	१९	५८	६	५	२७	३३	६	१४	३२	७	२०	५७	५	१७	५१
१९	०	१५	५८	४४	१	२१	११	१२०	१	२३	२९	१४	०	१८	२	५९	३	२०	१६	६	५	२७	२३	६	१४	२८	७	२०	५२	५	१७	५२
२२	०	१८	१०	४४	१	२७	१७	१२६	१	२४	११	१४	०	२१	२१	६०	३	२०	३४	६	५	२७	१४	६	१४	२४	७	२०	४७	५	१७	५२
२५	०	२०	२०	४३	२	३	३९	१३०	१	२४	५२	१४	०	२४	२२	६१	३	२०	५३	६	५	२७	४	६	१४	२०	७	२०	४३	५	१७	५२
२८	०	२२	३१	४३	२	१०	१०	१३१	१	२५	३३	१४	०	२७	२५	६२	३	२१	१३	७	५	२६	५५	६	१४	१७	७	२०	३९	५	१७	५२

ज्येष्ठ पूर्णिमान्त ◡ ☍ ☉ काशी, बुधवार
ता. २।६।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.२ मि. १
इष्ट सांपातिक काल घं.१८मि.४ से.४९

ल० ११ २१ २३ २६ — द० ८ १६ ३१ ३४

☉मिथुन-संक्रांति, काशी, मंगलवार
ता.१४।६।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.२३मि.२९
इष्ट सांपातिक काल घं.१७ मि.२से.४०

ल० १० १७ २ ७ — द० ७ २३ १६ २

आषाढ़ अमान्त ◡ ☌ ☉काशी, गुरुवार
ता.१६।६।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.२३ मि.५३
इष्ट सांपातिक काल घं.१७मि.३४से.२७

ल० १० २७ ४२ ४० — ० ८ ० ३५ ४०

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी(हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदयका समय भा.स्टैं.टा.में)

जून ता	वा.	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चिक घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१	बु.	२	३०	५१	४	८	६	५	८	१८	१०	३६	१२	५०	१४	३	१७	१९	१९	३६	२१	४१	२३	२७	०	२
२	गु.	२	२६	५५	४	४	६	१	८	१५	१०	३२	१२	४६	१४	५९	१७	१५	१९	३२	२१	३७	२३	२३	०	५८
३	शु.	२	२२	५९	४	१	५	५७	८	११	१०	२८	१२	४२	१४	५५	१७	११	१९	२८	२१	३३	२३	१९	०	५४
४	श.	२	१९	३	३	५७	५	५३	८	७	१०	२४	१२	३८	१४	५१	१७	७	१९	२४	२१	३०	२३	१५	०	५०
५	र.	२	१५	७	३	५३	५	४९	८	३	१०	२०	१२	३४	१४	४७	१७	३	१९	२०	२१	२६	२३	११	०	४६
६	चं.	२	११	१२	३	४९	५	४५	७	५९	१०	१६	१२	३०	१४	४३	१६	५९	१९	१६	२१	२२	२३	७	०	४२
७	मं.	२	७	१६	३	४५	५	४१	७	५५	१०	१३	१२	२६	१४	३९	१६	५५	१९	१२	२१	१८	२३	३	०	३८
८	बु.	२	३	२०	३	४१	५	३७	७	५१	१०	९	१२	२३	१४	३५	१६	५१	१९	८	२१	१४	२२	५९	०	३५
९	गु.	१	५९	२४	३	३७	५	३४	७	४७	१०	५	१२	१९	१४	३१	१६	४८	१९	५	२१	१०	२२	५५	०	३१
१०	शु.	१	५५	२८	३	३३	५	३०	७	४३	१०	१	१२	१५	१४	२७	१६	४४	१९	१	२१	६	२२	५२	०	२७
११	श.	१	५१	३२	३	२९	५	२६	७	३९	९	५७	१२	११	१४	२३	१६	४०	१८	५७	२१	२	२२	४८	०	२३
१२	र.	१	४७	३६	३	२५	५	२२	७	३५	९	५३	१२	७	१४	१९	१६	३६	१८	५३	२०	५८	२२	४४	०	१९
१३	चं.	१	४३	४०	३	२१	५	१८	७	३१	९	४९	१२	३	१४	१५	१६	३२	१८	४९	२०	५४	२२	४०	०	१५
१४	मं.	१	३९	४४	३	१७	५	१४	७	२७	९	४५	११	५९	१४	१२	१६	२८	१८	४५	२०	५०	२२	३६	०	११
१५	बु.	१	३५	४८	३	१३	५	१०	७	२३	९	४१	११	५५	१४	८	१६	२४	१८	४१	२०	४६	२२	३२	०	७
१६	गु.	१	३१	५२	३	९	५	६	७	१९	९	३७	११	५१	१४	४	१६	२०	१८	३७	२०	४२	२२	२८	०	३
																								*	२३	५९
१७	शु.	१	२७	५७	३	५	५	२	७	१६	९	३३	११	४७	१४	०	१६	१६	१८	३३	२०	३८	२२	२४	२३	५५
१८	श.	१	२४	१	३	२	४	५८	७	१२	९	२९	११	४३	१३	५६	१६	१२	१८	२९	२०	३४	२२	२०	२३	५१
१९	र.	१	२०	५	२	५८	४	५४	७	८	९	२५	११	३९	१३	५२	१६	८	१८	२५	२०	३१	२२	१६	२३	४७
२०	चं.	१	१६	९	२	५४	४	५०	७	४	९	२१	११	३५	१३	४८	१६	४	१८	२१	२०	२७	२२	१२	२३	४३
२१	मं.	१	१२	१३	२	५०	४	४६	७	०	९	१८	११	३१	१३	४४	१६	०	१८	१७	२०	२३	२२	८	२३	४०
२२	बु.	१	८	१७	२	४६	४	४२	६	५६	९	१४	११	२७	१३	४०	१५	५६	१८	१३	२०	१९	२२	४	२३	३६
२३	गु.	१	४	२१	२	४२	४	३८	६	५२	९	१०	११	२४	१३	३६	१५	५२	१८	१०	२०	१५	२२	०	२३	३२
२४	शु.	१	०	२५	२	३८	४	३५	६	४८	९	६	११	२०	१३	३२	१५	४९	१८	६	२०	११	२१	५७	२३	२८
२५	श.	०	५६	२९	२	३४	४	३१	६	४४	९	२	११	१६	१३	२८	१५	४५	१८	२	२०	७	२१	५३	२३	२४
२६	र.	०	५२	३३	२	३०	४	२७	६	४०	८	५८	११	१२	१३	२४	१५	४१	१७	५८	२०	३	२१	४९	२३	२०
२७	चं.	०	४८	३७	२	२६	४	२३	६	३६	८	५४	११	८	१३	२०	१५	३७	१७	५४	१९	५९	२१	४५	२३	१६
२८	मं.	०	४४	४२	२	२२	४	१९	६	३२	८	५०	११	४	१३	१७	१५	३३	१७	५०	१९	५५	२१	४१	२३	१२
२९	बु.	०	४०	४	२	१८	४	१५	६	२८	८	४६	११	०	१३	१३	१५	२९	१७	४३	१९	५१	२१	३७	२३	८
३०	गु.	०	३६	५०	२	१४	४	११	६	२४	८	४२	१०	५६	१३	९	१५	२५	१७	४२	१९	४७	२१	३३	२३	४

भविष्यवाणी–ता. ९ को गु. नेप्. से प्रतियोग करेगा ; किंतु गुरु अस्त तथा नेप्. वक्री है। ता. १९ को गुरु पूर्व में उदय होगा और ता. २३ को शनि से अंशात्मक त्रिकोण △ योग बनायेगा। यह विश्व की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति के लिए बहुत शुभकारी है। शत्रु राष्ट्रों के आपसी सम्बन्ध सामान्य बनेंगे; बड़े राष्ट्र तनाव-शैथिल्य की दिशा में प्रगति करने के अलावा विश्व की अर्थ-व्यवस्था मजबूत बनाने में नई पहल करेंगे। **संक्रान्ति-फल**–सूर्य गत सं. से ४ वार ४ नक्षत्र मु. ३० पर प्रवेश करते हैं; गत सं. शनिवारी यह मंगलवारी है–बाजार में मंदी को नहीं टिकने देगी। शनि और मंगलाधीन वस्तुओं के भाव हर मंदी की प्रतिक्रिया के बाद बढ़ जाया करेंगे! **शेयर्स**–में संक्रान्ति से पहले मंदी का योग है ; वहाँ सोना चाँदी शेयर्स आदि हर मंदी वस्तुओं की खरीद ता. २५ तक लाभ दे जायेगा।

* ता० १६ जून को मीन-लग्न का उदय दो बार होगा।

आषाढ़ शुक्ल १५ से अधिक श्रावण कृष्ण १ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु

दिन ३१	जुलाई १९७७ ई०	आषाढ़ शुक्लपक्ष					नक्षत्र					योग					करण						चं. राशि-प्रवेश		दिनमान	काशी सूर्यउ.म.अ. भारतीय स्टैं. टा. उ.	मध्याह्न		
वार		तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	राशि	घं. मि.	घ. पल	घं. मि.	घण्टा	मिनट	सेकेण्ड
शु.	१	१५	९	८	८	५४	पू. षा.	५३	१५	२	३३	ब्रह्म	१६	५०	११	५९	बव	८	५४	बा.	१९	११			३३/५२	१५	१२	१	४३
		शुद्ध श्रावण कृष्णपक्ष																											
श.	२	१	०/५२	३०/१८	५/२	२७/२५	उ. षा.	४७	३०	०	१५	ऐन्द्र	७/५१	८/१०	८/४	६/४४	कौ.	५	२७	तै.	१५/२	४५/२२	ध.	७/५६	५१	१५	१२	१	५४
र.	३	३	४६	२५	२३	५०	श्रवण	४३	०	२२	२८	विष्कु.	५०	३८	१	३१	व.	१२	५६	भ.	२३	५०			५०	१६	१२	२	५
चं.	४	४	४१	५०	२२	०	धनि.	४०	१८	२१	२२	प्रीति	४४	२५	२३	२	बव	१०	५५	बा.	२२	०	कुं.	९/५०	४९	१६	१२	२	१६
मं.	५	५	३९	१५	२०	५९	शत.	३९	३३	२१	६	आयु.	३९	५०	२१	१३	कौ.	९	३०	तै.	२०	५९			४८	१७	१२	२	२७
बु.	६	६	३८	५३	२०	५०	पू. भा.	४०	५८	२१	४०	सौभा.	३७	०	२०	५	ग.	८	५५	व.	२०	५०	मी.	१५/२०	४७	१७	१२	२	३७
गु.	७	७	४०	३३	२१	३१	उ. भा.	४४	२५	२३	४	शोभ.	३५	५०	१९	३८	भ.	९	११	बव	२१	३१			४६	१८	१२	२	४७
शु.	८	८	४४	१०	२२	५८	रेवती	४९	४५	१	१२	अति.	३६	१०	१९	४६	बा.	१०	१५	कौ.	२२	५८			४५	१८	१२	२	५७
श.	९	९	४९	१३	०	५९	अश्वि.	५६	२३	३	५१	सुकर्मा	३७	४०	२०	२२	तै.	११	५९	ग.	०	५९	मे.	१/२	४३	१८	१२	३	६
र.	१०	१०	५५	१०	३	२२	भरणी	६०	०	२४	०	धृति	३९	५७	२१	१७	व.	१४	११	भ.	३	२२			४२	१८	१२	३	१५
चं.	११	११	६०	०	२४	०	भरणी	३	५०	६	५१	शूल	४२	३५	२२	२१	बव	१६	३८	बा.	५	१९	वृ.	१७/३०	४१	१९	१२	३	२३
मं.	१२	११	१	२८	५	५४	कृत्ति.	११	३५	९	५७	गण्ड	४५	१३	२३	२४	बा.	५	५४	कौ.	१९	९			३९	१९	१२	३	३१
बु.	१३	१२	७	४०	८	२३	रोहि.	१९	८	१२	५८	वृद्धि	४७	३३	०	२०	तै.	८	२३	ग.	२१	३१			३८	१९	१२	३	३८
गु.	१४	१३	१३	१५	१०	३८	मृग.	२६	३	१५	४५	ध्रुव	४९	१५	१	२	व.	१०	३८	भ.	२३	३६	मि.	२/२४	३६	२०	१२	३	४५
शु.	१५	१४	१८	३	१२	३३	आर्द्रा	३२	१०	१८	१२	व्या.	५०	१८	१	२७	श.	१२	३३	च.	१	२०			३४	२०	१२	३	५२
श.	१६	३०	२१	४३	१४	६	पुन.	३७	२३	२०	१८	हर्षण	५०	३५	१	३५	ना.	१४	६	किं.	२	४१	क.	१५/४१	३३	२१	१२	३	५८
		अ. श्रावण शुक्लपक्ष																											
र.	१७	१	२४	४८	१५	१६	पुष्य	४१	४०	२२	१	वज्र	५०	१०	१	२५	बव	१५	१६	बा.	३	४०			३१	२१	१२	४	३
चं.	१८	२	२६	४५	१६	३	आश्ले.	४५	०	२३	२१	सिद्धि	४९	५८	०	५६	कौ.	१६	३	तै.	४	१५	सिं.	२३/२१	२९	२१	१२	४	८
मं.	१९	३	२७	४०	१६	२६	मघा	४७	२०	०	१८	व्यती.	४६	५५	०	९	ग.	१६	२६	व.	४	२६			२७	२२	१२	४	१३
बु.	२०	४	२७	४०	१६	२६	पू. फा.	४८	४५	०	५२	वरीया	४४	१८	२३	३	भ.	१६	२६	बव	४	१४			२५	२२	१२	४	१७
गु.	२१	५	२६	३८	१६	२	उ. फा.	४९	८	१	२	परिघ.	४०	३८	२१	३८	बा.	१६	२	कौ.	३	३७	कं.	५/५०	२३	२३	१२	४	२०
शु.	२२	६	२४	३३	१५	१२	हस्त	४८	३०	०	४७	शिव	३६	१५	१९	५३	तै.	१५	१२	ग.	२	३४			२१	२३	१२	४	२३
श.	२३	७	२१	२०	१३	५६	चित्रा	४६	४३	०	५	सिद्धि	३०	५५	१७	४९	व.	१३	५६	भ.	१	५	तु.	१२/३०	१९	२४	१२	४	२५
र.	२४	८	१६	४८	१२	१३	स्वाती	४३	५३	२२	५७	साध्य	२४	४०	१५	१६	बव	१२	१३	बा.	२३	९			१६	२४	१२	४	२७
चं.	२५	९	११	४०	१०	४	विशा.	३९	५७	२१	२३	शुभ	१७	३५	१२	२	कौ.	१०	४	तै.	२०	४८	वृ.	५/४८	१४	२४	१२	४	२८
मं.	२६	१०	५/५२	१५/५०	७/४	३१/३९	अनु.	३५	५	१९	२७	शुक्ल	९	३८	९	१६	ग.	७	३१	व.	१८/४	५/३९			१२	२५	१२	४	२८
बु.	२७	१२	५०	२३	१	३४	ज्येष्ठा	२९	३५	१७	१५	ब्रह्म	१/५०	५८	५/२	५१/१४	बव	१५	७	बा.	१	३४	ध.	१७/५२	९	२५	१२	४	२८
गु.	२८	१३	४२	२३	२२	२३	मूल	२३	४३	१४	५५	ऐन्द्र	४२	५०	२२	३४	कौ.	११	५९	तै.	२२	२३			७	२६	१२	४	२७
शु.	२९	१४	३४	३५	१९	१६	पू. षा.	१७	५०	१२	३४	विष्कु	३३	४८	१८	५७	ग.	८	५०	व.	१९	१६	म.	१८/०	५	२६	१२	४	२५
श.	३०	१५	२७	१८	१६	२२	उ. षा.	१२	२३	१०	२४	प्रीति	२५	८	१५	३०	भ.	५	४९	बव	१६/३	२२/७			२	२७	१२	४	२३
[F]		अ. श्रावण कृष्णपक्ष																											
र.	३१	१	२१	०	१३	५२	श्रवण	७	४८	८	३५	आयु.	१७	१८	१२	२३	कौ.	१३	५२	तै.	०	५२	कुं.	११/५१	३२/५९	२८	१२	४	२०

[F]संक्रान्ति-काल तक विशेष पुण्यकाल। घृत धेनु-दान, मन्दाकिनी में स्नान, संकल्पादि में प्रयोजनीय वर्षा ऋतु प्रारम्भ वर्ष-विश्वा ५, वर्षा कम, मँहगी हो और मनुष्यों की बुद्धि नीच हो जाय। शुक्र ○ रोहिणी युति घं. ० मि. ३९ बजे रोहिणी से शु. २°-५६′ उ.।

विवाहादौ निर्ग्रहस्थानम्—सप्तमशुद्धमुद्वाहे यात्रायामष्टमं तथा। दशमं च गृहारम्भे चतुर्थं सन्निवेशने। अन्नप्राशने च शुद्धम् पञ्चममुपनयने। द्वादशं नामकर्मणि अष्टमं सर्वत्रशुद्धम्(ग्राह्यम्)॥

विवाह में सप्तम स्थान, यात्रा में अष्टम स्थान, गृहारम्भ में दशम स्थान, गृह-प्रवेश में चतुर्थ स्थान, अन्नप्राशन में दशम स्थान, उपनयन में पंचम स्थान, नामकरण में द्वादश स्थान, सब कार्यों में अष्टम स्थान शुद्ध अर्थात् ग्रह-रहित होने चाहिएं (ज्योतिषचन्द्रार्क ग्रंथ में अन्नप्राशन के विषय में लिखा है कि पापग्रह न होना चाहिए, शुभग्रह का दोष नहीं है।)

जुलाई सन् १९७७ ई० । आषाढ़ शुक्ल १५ से अधिक श्रावण कृष्ण १ तक, संवत २०३४ विक्रमीय । राष्ट्रीय आषाढ़ मास १० से राष्ट्रीय श्रावण मास ९ तक, शके १८९९ शालिवाहन । रजब १३ से सावान १३ तक, १३९७ हिजरी ।

A घं. ८ मि. ५४ बजे तक । गुरु व्यास-पूजा १५ । मन्वादि १५ 'शुक्लेपूर्वा' । अन्नपानादि-दान । कर्णघण्टा कनखल तीर्थ में स्नान । संन्यासियों का चातुर्मासारम्भ । सारनाथ में बौद्धों का धर्मचक्र प्रवर्तन-दिवस । बौद्ध-भिक्षुओं का वर्षावास-ग्रहण । बौधायन श्रावणी (उपा) कर्म । हजरत अली का जन्म-दिन, उर्स बहराइच । B श्रावण में शाक-त्याग करना चाहिये । यायिजय योग घं. ५ मि. १५ बजे से घं. ५ मि. २ बजे तक । त्रिपुष्कर योग घं. २ मि. २० बजे प्रारम्भ । २ तिथि-क्षय । श्रीलोकमान्यतिलक पुण्य-तिथि ।

वार	उदित तिथि	सौर (मिथु.) आषा. मा. ३२ दिन	रजब ३० दिन हिजरी	राष्ट्रीय आषाढ़ मास ३१ दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि (मुद्दई), स्थायी (मुद्दालेह) जय योग, सन्धिकर, योगादि ।
शु.	१५	१७	१३	१०	१	–इष्टि । त्रिमुहूर्तव्यापिनी पूर्णिमा में स्नान दान की पू.षा.युता आषाढ़ी पूर्णिमा १५, परम पुण्यकाल A
श.	१	१८	१४	११	२	–इष्टि । शुद्ध श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ । अशून्यशयन २ व्रत, चन्द्रोदय घं. १९ मि. ५७ बजे । B
र.	३	१९	१५	१२	३	–भद्रा घं. १२ मि. ५६ बजे से घं. २३ मि. ५० बजे तक । यायिजय योग घं. २२ मि. २८ बजे से C
चं.	४	२०	१६	१३	४	–पंचक प्रारम्भ घं. ९ मि. ५० बजे । श्रावण सोमवार व्रत, प्रदोष व्रत की तरह विधि । संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय घं. २१ मि. ३१ बजे । [D मि. २२ बजे से घं. ६ मि. ५१ बजे तक ।
मं.	५	२१	१७	१४	५	–पंचक । भौमव्रत, दुर्गा-पूजा । संकटमोचन दुर्गा यात्रा पूजन दर्शन । नागपंचमी (मरुस्थले) । ⊙सूर्य पुनर्वसु में घं. २२ मि. ३९ बजे । चन्द्र सूर्य स्त्री पुरुष योग, अश्ववाहन, नीरानाडी, तदीश शुक्र–व्यापक वर्षा हो ।
बु.	६	२२	१८	१५	६	–पंचक । भद्रा घं. २० मि. ५० बजे प्रारम्भ । श्रीलोकमान्यतिलक-जयन्ती ।
गु.	७	२३	१९	१६	७	–पंचक । भद्रा घं. ९ मि. ११ बजे समाप्त । यायिजय योग घं. ५ मि. १८ बजे से घं. २१ मि. ३१ बजे तक ।
शु.	८	२४	२०	१७	८	–पंचक । कालाष्टमी ८ । [C घं. २३ मि. ५० बजे तक । त्रिपुष्कर योग घं. ० मि. १५ बजे समाप्त ।
श.	९	२५	२१	१८	९	–पंचक समाप्त घं. १ मि. १२ बजे ।
र.	१०	२६	२२	१९	१०	–भद्रा घं. १४ मि. ११ बजे प्रारम्भ । रवि दशमी १० ।
चं.	११	२७	२३	२०	११	–भद्रा घं. ३ मि. २२ बजे समाप्त । श्रावण सोमवार व्रत, प्रदोष व्रतवत् विधि । यायिजय योग घं. ३ D
मं.	११	२८	२४	२१	१२	–भौमव्रत दुर्गापूजा । संकटमोचन दुर्गाजी की यात्रा दर्शन पूजन । कामदा ११ एकादशी व्रत सबका । उन्मीलनी महाद्वादशी व्रत । स्थायीजय योग घं. ५ मि. ५४ बजे से घं. ९ मि. ५७ बजे तक । त्रिपुष्कर योग घं. ५ मि. ५४ बजे से घं. ९ मि. ५७ बजे तक । ११ तिथि-वृद्धि ।
बु.	१२	२९	२५	२२	१३	–प्रदोष १२ व्रत । एकादशी व्रत का पारण घं. ८ मि. २३ बजे तक ।
गु.	१३	३०	२६	२३	१४	–भद्रा घं. १० मि. ३८ बजे से घं. २३ मि. ३६ बजे तक । मास शिवरात्रि १३ व्रत । शबेमिराज ।
शु.	१४	३१	२७	२४	१५	– [K बजे, मघा से बु. ०°-८' द. । [E क्रांतिजन्य महा(वैधृति)पात घं. १३ मि. ३३ बजे प्रारम्भ ।
श.	३०	३२	२८	२५	१६	–अन्वाधान । स्नान-दान श्राद्ध की दर्श अमावस्या ; पापवारी प्रजाक्षयकरी दुर्भिक्षकरी । हरिता (हरियाली) अमावस्या ३० । यायिजय योग घं. १४ मि. ६ बजे से घं. २० मि. १८ बजे तक । मन्वादि ३० । जैन-पर्वोत्सव । ⊙सूर्य की कर्क-सक्रान्ति घं. १० मि. १८ बजे; मु. ४५ समर्घ, सूर्योदय से F
र.	१	१	२९	२	१७	–इष्टि । अधिक श्रावण शुक्लपक्ष (मलमास का प्रथम पक्ष) प्रारम्भ । सौर श्रावण मास प्रारम्भ । करिदिन ।
चं.	२	२	३०	२७	१८	–श्रावण सोमवार व्रत, प्रदोष व्रत की तरह विधि । ◡चंद्र-दर्शन मु. १५ महर्घ । यायिजय योग G
मं.	३	३	१	२८	१९	–संकटमोचन दुर्गाजी की यात्रा, दर्शन पूजन । भौमव्रत, दुर्गा-पूजा । स्थायीजय योग घं. १६ मि. २६ बजे प्रारम्भ । सावान ८ माह शुरू । ⊙ सूर्य पुष्य में घं. २२ मि. ६ बजे; चन्द्र चन्द्र स्त्री स्त्री योग, मण्डूक वाहन, अमृता नाड़ी, तदीश चन्द्र—बहुत वायु बादल, विषम वृष्टि हो ।
बु.	४	४	२	२९	२०	–भद्रा घं. ४ मि. २६ बजे से घं. १६ मि. २६ बजे तक । वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत । स्थायीजय योग H
गु.	५	५	३	३०	२१	–यायिजय योग घं. ५ मि. २३ बजे से घं. १६ मि. २ बजे तक । [I मि. ५७ बजे तक ।
शु.	६	६	४	३१	२२	– [G घं. १६ मि. ३ बजे से घं. २३ मि. २१ बजे तक । [H घं. ० मि. १८ बजे समाप्त ।
श.	७	७	५	१	२३	–भद्रा घं. १३ मि. ५६ बजे प्रारम्भ । द्विपुष्कर योग घं. ५ मि. २४ बजे से घं. १३ मि. ५६ बजे तक । N
र.	८	८	६	२	२४	–भद्रा घं. १ मि. ५ बजे समाप्त । श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रत । यायिजय योग घं. १२ मि. १३ बजे से घं. २२ I
चं.	९	९	७	३	२५	– [N राष्ट्रीय श्रावण मास प्रारम्भ । सूर्य सायन सिंह में घं. ४ मि. ३४ बजे ।
मं.	१०	१०	८	४	२६	–भद्रा घं. १८ मि. ५ बजे प्रारम्भ । अनुदया पुरुषोत्तमी ११ एकादशी व्रत स्मार्तों का । ११ तिथि-क्षय ।
बु.	१२	११	९	५	२७	–भद्रा घं. ४ मि. ३९ बजे समाप्त । पुरुषोत्तमी ११ एकादशी व्रत वैष्णवों का । अयन संधिगत चन्द्र E
गु.	१३	१२	१०	६	२८	–प्रदोष १३ व्रत । महा(वैधृति)पात घं. ११ मि. १७ बजे समाप्त । बुध ☌ मघा युति घं. ८ मि. १० K
शु.	१४	१३	११	७	२९	–भद्रा घं. १९ मि. १६ बजे प्रारम्भ । स्थायीजय योग घं. ५ मि. २६ बजे से घं. १२ मि. ३४ बजे तक ।
श.	१५	१४	१२	८	३०	–भद्रा घं. ५ मि. ४९ बजे समाप्त । अन्वाधान । स्नान दान व्रत की पुरुषोत्तमी पूर्णिमा १५, पुण्यतमा । यायिजय योग घं. ५ मि. २७ बजे से घं. १० मि. २४ बजे तक ।
र.	१	१५	१३	९	३१	–इष्टि । पचक प्रारम्भ घं. १९ मि. ५१ बजे । अधिक श्रावण कृष्णपक्ष (मलमास का द्वितीय पक्ष) प्रारम्भ । अशून्यशयन २ व्रत, चन्द्रोदय घं. १६ मि. ३१ बजे । यायिजय योग घं. ८ मि. ३५ बजे से घं. १३ मि. ५२ बजे तक । द्विपुष्कर योग घं. १३ मि. ५२ बजे प्रारम्भ ।

ता. ग्रह रा. नक्ष. चरण (नवां) प्रवे. स्टैं. टा.							
जुलाई	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
१	बु· +	☿	आर्द्रा	४	मी·	५	०
२	सू·	☉	आर्द्रा	४	मी·	१०	४४
२	बु· +	☿	पुनर्वसु	१	मे·	१८	०
२	रा·	☊	चित्रा	१	सिं·	२०	३३
२	के·	☋	रेवती	३	कुं·	२०	३३
३	गु·	♃	मृगशिरा	२	कं·	५	१८
३	शु·	♀	कृत्तिका	३	कुं·	२१	४९
४	मं·	♂	कृत्तिका	१	ध·	०	१४
४	बु· +	☿	पुनर्वसु	२	वृ·	७	२४
५	बु· +	☿	पुनर्वसु	३	मि·	२१	२४
५	सू·	☉	पुनर्वसु	१	मे·	२२	३९
७	शु·	♀	कृत्तिका	४	मी·	१	२५
७	बु· +	☿	क.पुन.	४	क·	१२	६
८	मं·	♂	वृ.कृत्ति.	२	म·	१६	३८
९	बु· +	☿	पुष्य	१	सिं·	३	३७
९	सू·	☉	पुनर्वसु	२	वृ·	१०	३४
१०	शु·	♀	रोहिणी	१	मे·	४	११
१०	बु· +	☿	पुष्य	२	कं·	२०	९
१२	बु· +	☿	पुष्य	३	तु·	१३	४४
१२	सू·	☉	पुनर्वसु	३	मि·	२२	२९
१३	शु·	♀	रोहिणी	२	वृ·	६	१३
१३	मं·	♂	कृत्तिका	३	कुं·	९	४५
१४	बु·	☿	पुष्य	४	वृ·	८	२८
१४	हर्शल	♅	मार्गी	—	—	१४	१४
१६	बु· +	☿	आश्लेषा	१	ध·	४	४०
१६	शु·	♀	रोहिणी	३	मि·	७	३७
१६	सू·	☉	क.पुन.	४	क·	१०	१८
१६	श·	♄	आश्लेषा	३	कुं·	१२	४१
१८	बु·	☿	आश्लेषा	२	म·	२	१८
१८	मं·	♂	कृत्तिका	४	मी·	३	५९
१८	गु·	♃	मि.मृग.	३	तु·	१०	५३
१९	शु·	♀	रोहिणी	४	क·	८	२६
१९	सू·	☉	पुष्य	१	सिं·	२२	७
२०	बु·	☿	आश्लेषा	३	कुं·	०	४८
२२	बु·	☿	आश्लेषा	४	मी·	२	३८
२२	शु·	♀	मृगशिरा	१	सिं·	८	४३
२२	मं·	♂	रोहिणी	१	मे·	२३	२३
२३	सू·	☉	पुष्य	२	कं·	९	५३
२४	बु·	☿	सिं. मघा	१	मे·	५	४७
२५	शु·	♀	मृगशिरा	२	कं·	८	३१
२६	बु·	☿	मघा	२	वृ·	११	३१
२६	सू·	☉	पुष्य	३	तु·	२१	३९
२७	मं·	♂	रोहिणी	२	वृ·	१९	५७
२८	शु·	♀	मि.मृग.	३	तु·	७	५२
२८	बु·	☿	मघा	३	मि·	१९	३०
३०	सू·	☉	पुष्य	४	वृ·	९	२२
३१	ने.	♆	ज्येष्ठा	१	ध·	२	४८
३१	शु·	♀	मृगशिरा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	बु·	☿	मघा	४	क·	७	१

जुलाई		स्था. काशी के ० बजे का सापां.का.			प्रातः स्टै. टा ५।२९ बजे सूर्य का दैनिक स्पष्ट ☉				दैनिक गति		दै. क्रां. उत्तर		चित्रापक्षीय अर्घ दैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट: चं.स्पष्ट घं.५ मि.२९ बजे का				अर्धदैनिक गति			चं.स्प. घं.१७ मि.२९ बजे का				अर्धदैनिक गति	
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.
१	शु·	१८	३४	४९	२	१५	३०	२०	५७	१२	२३	८	८	१३	२९	५१	७	३१	१५	८	२१	१	६	७	२७
२	श·	१८	३८	४६	२	१६	२७	३२	५७	११	२३	४	८	२८	२९	५	७	२३	३३	९	५	५२	३७	७	१८
३	र·	१८	४२	४२	२	१७	२४	४३	५७	११	२२	५९	९	१३	१०	४५	७	११	५७	९	२०	२२	४२	७	५
४	चं·	१८	४६	३९	२	१८	२१	५४	५७	११	२२	५४	९	२७	२७	५१	६	५७	५९	१०	४	२५	५०	६	५०
५	मं·	१८	५०	३५	२	१९	१९	५	५७	११	२२	४९	१०	११	१६	२९	६	४३	२१	१०	१७	५९	५०	६	३६
६	बु·	१८	५४	३२	२	२०	१६	१६	५७	१२	२२	४२	१०	२४	३६	४	६	२९	२९	११	१	५	३३	६	२[illegible]
७	गु·	१८	५८	२९	२	२१	१३	२८	५७	१२	२२	३७	११	७	२८	४२	६	१७	२३	११	१३	४६	५	६	१२
८	शु·	१९	२	२५	२	२२	१०	४०	५७	१३	२२	३१	११	१९	५८	१८	६	७	४१	११	२६	५	५९	६	३
९	श·	१९	६	२२	२	२३	७	५३	५७	१३	२२	२४	०	२	९	४८	६	०	३८	०	८	१०	२६	५	५८
१०	र·	१९	१०	१८	२	२४	५	६	५७	१३	२२	१७	०	१४	८	३२	५	५६	१४	०	२०	४	४६	५	५४
११	चं·	१९	१४	१५	२	२५	२	१९	५७	१४	२२	९	०	२५	५९	४४	५	५४	१८	१	१	५४	२	५	५४
१२	मं·	१९	१८	११	२	२५	५९	३३	५७	१४	२२	१	१	७	४८	११	५	५४	३१	१	१३	४२	४२	५	५५
१३	बु·	१९	२२	८	२	२६	५६	४७	५७	१४	२१	५३	१	१९	३८	०	५	५६	२८	१	२५	३४	२८	५	५७
१४	गु·	१९	२६	४	२	२७	५४	१	५७	१५	२१	४४	२	१	३२	२७	५	५९	४७	२	७	३२	१४	६	१
१५	शु·	१९	३०	१	२	२८	५१	१६	५७	१६	२१	३५	२	१३	३४	३	६	४	०	२	१९	३८	३	६	६
१६	श·	१९	३३	५८	२	२९	४९	३२	५७	१६	२१	२५	२	२५	४४	२४	६	८	४८	३	१	५३	१२	६	११
१७	र·	१९	३७	५४	३	०	४५	४८	५७	१६	२१	१५	३	८	४	३१	६	१३	५२	३	१४	१८	२३	६	१६
१८	चं·	१९	४१	५१	३	१	४३	४	५७	१[illegible]	२१	५	३	२०	३४	५२	६	१९	८	३	२६	५४	०	६	२१
१९	मं·	१९	४५	४७	३	२	४०	२०	५७	१७	२०	५४	४	३	१५	५०	६	२४	३६	४	९	४०	२६	६	२७
२०	बु·	१९	४९	४४	३	३	३७	३७	५७	१७	२०	४३	४	१६	७	५१	६	३०	२४	४	२२	३८	१५	६	३३
२१	गु·	१९	५३	४०	३	४	३४	५४	५७	१७	२०	३२	४	२९	११	४४	६	३६	४५	५	५	४८	२९	६	४०
२२	शु·	१९	५७	३७	३	५	३२	११	५७	१८	२०	२१	५	१२	२८	४१	६	४३	४९	५	१९	१२	३०	६	४७
२३	श·	२०	१	३३	३	६	२९	२९	५७	१८	२०	९	५	२६	०	१०	६	५१	३९	६	२	५१	४९	६	५५
२४	र·	२०	५	३०	३	७	२[illegible]	४७	५७	१९	१९	५६	६	९	४७	३७	७	०	१	६	१६	४७	३८	७	४
२५	चं·	२०	९	२७	३	८	२४	६	५७	१[illegible]	१९	४४	६	२३	५१	५३	७	८	२३	७	१	०	१६	७	१२
२६	मं·	२०	१३	२३	३	९	२१	२५	५७	१९	१९	३१	७	८	१२	३४	७	१५	५२	७	१५	२८	२६	७	१८
२७	बु·	२०	१७	२०	३	१०	१८	४४	५७	१९	१९	१७	७	२२	४७	२१	७	२१	२०	८	०	८	४१	७	२२
२८	गु·	२०	२१	१६	३	११	१६	३	५७	२०	१९	४	८	७	३१	३८	७	२३	४१	८	१४	५५	१९	७	२३
२९	शु·	२०	२५	१३	३	१२	१३	२३	५७	२१	१८	५०	८	२२	१८	४५	७	२२	८	८	२९	४०	५३	७	१९
३०	श·	२०	२९	९	३	१३	१०	४४	५७	२१	१८	३६	९	७	०	४२	७	१६	२९	९	१४	१७	११	७	१२
३१	र·	२०	३३	६	३	१४	८	५	५७	२३	१८	२१	९	२१	२९	२८	७	७	१६	९	२८	३६	४४	७	१

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

जुलाई तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध: सम्मुख	वाम+	दक्षिणR	पञ्चशलाका-वेध	लत्ता
चालू	राहु	चित्रा	पू. भा.	मूल	मृगशिरा ♃	पू. भा.	श्रवण
,,	केतु	रेवती	उ. फा.	मृग. ♃	मूल	उ. फा.	पुष्य
,,	शनि	आश्लेषा	अनुराधा	मघा	धनिष्ठा	धनिष्ठा	विशाखा
,,	गुरु	मृगशिरा	उ. षा.	चित्रा ☊	रेवती ☋	उ. षा.	मघा
२	बुध+	पुनर्वसु	मूल	उ. फा.	पू. भा.	मूल	अश्विनी
४	मंगल	कृत्तिका	श्रवण	विशाखा	भरणी	विशाखा	मृगशीर्ष ♃
५	सूर्य	पुनर्वसु	मूल	उ. फा.	पू. भा.	मूल	ज्येष्ठा ♆
९	बुध+	पुष्य	ज्येष्ठा ♆	पू. फा.	शतभिषा	ज्येष्ठा ♆	भरणी
१०	शुक्र	रोहिणी	अभिजित्	स्वाती ♅	अश्विनी	अभिजित्	रेवती ☋
१६	बुध	आश्लेषा	अनुराधा	मघा	धनिष्ठा	धनिष्ठा	कृत्तिका ♂
१९	सूर्य	पुष्य	ज्येष्ठा ♆	पू. फा.	शतभिषा	ज्येष्ठा ♆	मूल
२२	शुक्र	मृगशिरा	उ. षा.	चित्रा ☊	रेवती ☋	उ. षा.	अश्विनी
२२	मंगल	रोहिणी	अभिजित्	स्वाती ♅	अश्विनी	अभिजित्	आर्द्रा
२४	बुध	मघा	भरणी	श्रवण	आश्लेषा ♄	श्रवण	रोहिणी ♂

ता. १० जुलाई को बुध उदय पश्चिम में। ता. २४ जुलाई को शनि अस्त पश्चिम में।

आकाशी-लक्षण—दूर-दूर तक भारी वर्षा के ग्रह-योग ता. १,२,४,५,७,८,९,१०,१[illegible] [illegible] वायु मण्डल में पड़ जाने से वर्षा के साथ झंझावात, तूफानों के उपद्रव होंगे, विशेषतः ता. १६,१८,१९,२२,२४ एवं २८ को प्रबल वृष्टि-योग है।

स्पष्ट ग्रह एवं दै. गति प्रातः ५।२९ स्टैं. टा.

ता.	♂ मं.			ग.	☿ बु.			ग.	♃ गु.			ग.	♀ शु.			ग.	♄ श.			ग.	☊ रा.			♅ ह. R.			♆ ने. R			P प्लू.		
जुला.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	०	२४	४०	४३	२	१६	४३	१३०	१	२६	१३	१३	१	०	३२	६३	३	२१	३३	७	५	२६	४५	६	१४	१५	७	२०	३४	५	१७	५३
४	०	२६	४९	४३	२	२३	१०	१२७	१	२६	५४	१३	१	३	४०	६३	३	२१	५३	७	५	२६	३६	६	१४	१३	७	२०	३०	५	१७	५४
७	०	२८	५८	४३	२	२९	२६	१२२	१	२७	३४	१३	१	६	११	६४	३	२२	१४	७	५	२६	२६	६	१४	११	७	२०	२६	५	१७	५५
१०	१	१	५	४२	३	५	२८	११७	१	२८	१३	१३	१	१०	४	६५	३	२२	३५	७	५	२६	१७	६	१४	१०	७	२०	२२	५	१७	५७
१३	१	३	१३	४२	३	११	१४	११२	१	२८	५३	१३	१	१३	१८	६५	३	२२	५६	७	५	२६	७	६	१४	९	७	२०	१८	५	१७	५९
१६	१	५	१९	४२	३	१६	४४	१०६	१	२९	३१	१३	१	१६	३४	६६	३	२३	१८	७	५	२५	५[illegible]	६	१४	८	७	२०	१४	५	१८	१
१९	१	७	२४	४२	३	२१	५६	१००	२	०	१०	१३	१	१९	५२	६६	३	२३	४०	७	५	२५	४८	६	१४	९	७	२०	११	५	१८	४
२२	१	९	२९	४१	३	२६	५१	९५	२	०	४८	१३	१	२३	११	६७	३	२४	२	७	५	२५	३८	६	१४	९	७	२०	८	५	१८	७
२५	१	११	३३	४१	४	१	३०	८९	२	१	२५	१२	१	२६	३२	६७	३	२४	२४	८	५	२५	२९	६	१४	१०	७	२०	५	५	१८	१०
२८	१	१३	३६	४१	४	५	५१	८३	२	२	२	१२	१	२९	५३	६८	३	२४	४७	८	५	२५	१९	६	१४	१२	७	२०	२	५	१८	१३
३१	१	१५	३९	४१	४	९	५५	७७	२	२	३८	१२	२	३	१६	६८	३	२५	१०	८	५	२५	१०	६	१४	१४	७	२०	०	५	१८	१७

आषाढ़ पूर्णिमान्त ◡ ☍ ⊙ काशी, शुक्रवार
ता. १।७।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.८ मि. ५४
इष्ट सापातिक काल घं.३ मि.३२ से.१७

ल० ४ ३ २० ४३ — द० १ १ ५२ १३

ग. प्लू. ६, श. ४, ह. ७, बु. र. ३, ने. ८, ५, २, बृ. शु., ११, चं. ९, १०, १, मं., १२, के.

⊙ कर्क-संक्रांति, काशी, शनिवार
ता. १६।७।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.१० मि.१८
इष्ट सांपातिक काल घं.५ मि.५५ से.३६

ल० ५ ५ २७ ५१ — द० २ ५ २६ ५०

ह. ७, ने. ८, ग. प्लू., ५, ४, श. बु. र., ६, ९, ३, चं., १२, के., १०, ११, १, २, बृ. शु. मं.

शुद्ध श्रावण अमान्त ◡ ☌ ⊙ काशी, शनि.
ता. १६।७।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.१४ मि.६
इष्ट सांपातिक काल घं.९ मि.४[illegible] से.१७

ल० ६ २६ १७ ३८ — द० ४ ० १२ ६

ने. ९ ८, ह., ग. प्लू. ६ ५, श. बु. र. चं., १० ७ ४ १, ११, १२, के., २ ३, मं. शु. बृ.

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारिणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदय का समय भा.स्टैं.टा. में)

जुलाई		मेष			वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्च.		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	शु.	०	३२	५४	२	१०	४	७	६	२०	८	३८	१०	५२	१३	५	१५	२१	१७	३८	१९	४३	२१	२९	२३	०
२	श.	०	२८	५८	२	६	४	३	६	१६	८	३४	१०	४८	१३	१	१५	१७	१७	३४	१९	३९	२१	२५	२२	५६
३	र.	०	२५	२	२	२	३	५९	६	१२	८	३०	१०	४४	१२	५७	१५	१३	१७	३०	१९	३५	२१	२१	२२	५२
४	चं.	०	२१	६	१	५८	३	५५	६	८	८	२६	१०	४०	१२	५३	१५	९	१७	२६	१९	३१	२१	१७	२२	४८
५	मं.	०	१७	१०	१	५४	३	५१	६	४	८	२२	१०	३६	१२	४९	१५	५	१७	२२	१९	२७	२१	१३	२२	४४
६	बु.	०	१३	१४	१	५०	३	४७	६	०	८	१८	१०	३२	१२	४५	१५	१	१७	१८	१९	२३	२१	९	२२	४०
७	गु.	०	९	१९	१	४६	३	४३	५	५६	८	१४	१०	२९	१२	४१	१४	५७	१७	१४	१९	१९	२१	५	२२	३६
८	शु.	०	५	२३	१	४३	३	४०	५	५३	८	११	१०	२५	१२	३७	१४	५३	१७	११	१९	१६	२१	१	२२	३३
९	श.	०	१	२७	१	३९	३	३६	५	४९	८	७	१०	२१	१२	३३	१४	५०	१७	७	१९	१२	२०	५८	२२	२९
		*	५७	३१																						
१०	र.	२३	५३	३५	१	३५	३	३२	५	४५	८	३	१०	१७	१२	२९	१४	४६	१७	३	१९	८	२०	५४	२२	२५
११	चं.	२३	४९	३९	१	३१	३	२८	५	४१	७	५९	१०	१३	१२	२५	१४	४२	१६	५९	१९	४	२०	५०	२२	२१
१२	मं.	२३	४५	४३	१	२७	३	२४	५	३७	७	५५	१०	९	१२	२२	१४	३८	१६	५५	१९	०	२०	४६	२२	१७
१३	बु.	२३	४१	४७	१	२३	३	२०	५	३३	७	५१	१०	५	१२	१८	१४	३४	१६	५१	१८	५६	२०	४२	२२	१३
१४	गु.	२३	३७	५१	१	१९	३	१६	५	२९	७	४७	१०	१	१२	१४	१४	३०	१६	४७	१८	५२	२०	३८	२२	९
१५	शु.	२३	३३	५५	१	१५	३	१२	५	२५	७	४३	९	५७	१२	१०	१४	२६	१६	४३	१८	४८	२०	३४	२२	५
१६	श.	२३	२९	५९	१	११	३	८	५	२२	७	३९	९	५३	१२	६	१४	२२	१[illegible]	३९	१८	४४	२०	३०	२२	१
१७	र.	२३	२६	४	१	८	३	४	५	१८	७	३५	९	४९	१२	२	१४	१८	१६	३५	१८	४०	२०	२६	२१	५७
१८	चं.	२३	२२	८	१	४	३	०	५	१४	७	३१	९	४५	११	५८	१४	१४	१६	३१	१८	३७	२०	२२	२१	५३
१९	मं.	२३	१८	१२	१	०	२	५६	५	१०	७	२७	९	४१	११	५४	१४	१०	१६	२७	१८	३३	२०	१८	२१	४९
२०	बु.	२३	१४	१६	०	५६	२	५२	५	६	७	२३	,	३७	११	५०	१४	६	१६	२३	१८	२९	२०	१४	२१	४५
२१	गु.	२३	१०	२०	०	५२	२	४८	५	२	७	२०	९	३३	११	४६	१४	२	१६	१९	१८	२५	२०	१०	२१	४२
२२	शु.	२३	६	२४	०	४८	२	४४	४	५८	७	१६	९	३०	११	४२	१३	५८	१६	१५	१८	२१	२०	६	२१	३८
२३	श.	२३	२	२८	०	४४	२	४१	४	५४	७	१२	९	२६	११	३८	१३	५४	१६	१२	१८	१७	२०	२	२१	३४
२४	र.	२२	५८	३२	०	४०	२	३७	४	५०	७	८	९	२२	११	३४	१३	५१	१६	८	१८	१३	१९	५९	२१	३०
२५	चं.	२२	५४	३६	०	३६	२	३३	४	४६	७	४	९	१८	११	३०	१३	४७	१६	४	१८	९	१९	५५	२१	२६
२६	मं.	२२	५०	४०	०	३२	२	२९	४	४२	७	०	९	१४	११	२[illegible]	१३	४३	१६	०	१८	५	१९	५१	२१	२२
२७	बु.	२२	४६	४४	०	२८	२	२५	४	३८	६	५६	९	१०	११	२३	१३	३९	१५	५६	१८	१	१९	४७	११	१८
२८	गु.	२२	४२	४८	०	२४	२	२१	४	३४	६	५२	९	६	११	१९	१३	३५	१५	५२	१७	५७	१९	४३	२१	१४
२	शु.	२२	३८	५३	०	२०	२	१७	४	३०	६	४८	९	२	११	१५	१३	३१	१५	४८	१७	५३	१९	३९	२१	१०
३०	श.	२२	३४	५७	०	१६	२	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	र.	२२	३१	१	०	१२	२	९	४	२३	६	४०	८	५४	११	७	१	२३	१५	४०	१७	४५	१९	३१	२१	२

ता० ९ जुलाई को मेष-लग्न का उदय दो बार होगा।

श्रा. पूर्णिमान्त ◡ ☍ ⊙ [illegible]ाशी शनि.
ता. ३०।७।७७ई. स्टैं.टा. घं१६ मि.२१
सापातिककाल घं.१२ मि. ५५ से.५१
ल. ८।८।२४।४४
द. ५।२१।३७।१३

चं. १०, ने. ८, ११, ७, ह., के., १२, ९, ६, रा. प्लू., ३, १, २, बृ. शु., ५, ४, बु., मं., र. श.

भविष्यवाणी—शनि आश्लेषा पर सञ्चरणशील है। इस नक्षत्र का हिन्दमहासागर पर विशेष प्रभाव है। अतः हिन्दमहासागर को शांति-क्षेत्र बनाने के निमित्त विश्व-जनमत जाग्रत होगा। विश्व-शांतिका मसीहा बनने की प्रतिस्पर्धा में अमेरिका से बाजी मार-ले जाने का रूस पूर्ण प्रयास करेगा।

संक्रान्ति-फल—सूर्य गत संक्रांति से ५ वार ५ नक्षत्र मु. ४५ पर प्रवेश करते हैं। सोना चाँदी मंदी में खरीदना और हर प्रकार का गल्ला तेजी में बेचना लाभदायक होगा। गुड में तेजी और चाँदी में मंदी का जोर रहेगा। संक्रांति पर आयी मंदी में खरीददारी मासांत तक अच्छा [illegible] दे जायेगी। शेयर्स में तेजड़ियों की कृत्रिम तेजी के धोखे से बचकर हर उछाले मत्थे करना लाभदायक रहेगा।

अधिक श्रावण कृष्ण २ से भाद्रपद कृष्ण ३ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

वार	अगस्त १९७७ ई०	अधिक श्रावण कृष्ण पक्ष: तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र: नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग: योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण: करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	चं. राशि-प्रवेश: राशि	घं. मि.	दिनमान: घ. पल	काशी सूर्यउ.स. भारतीय स्टैं.टा: उ. घ. मि.	मध्याह्न: घण्टा	मिनट	सेकेण्ड
चं.	१	२	१६	०	११	५३	धनि.	४	२५	७	१५	सौभा.	१०	३०	९	४१	ग.	११	५३	व.	२३	१४			३२/८७	५/२९	१२	४	१७
मं.	२	३	१२	४५	१०	३५	शत.	२	४५	६	३५	शोभन	५	८	७	३२	भ.	१०	३५	बव	२२	२०			५४	२९	१२	४	१३
बु.	३	४	११	२५	१०	४	पू.भा.	२	५३	६	३९	अति.	१/८७	१५/४८	६/८	०/६	बा.	१०	४	कौ.	२२	१३	मी.	०/३४	५१	३०	१२	४	९
गु.	४	५	१२	८	१०	२१	उ. भा.	५	३	७	३१	धृति	५८	१८	४	४९	तै.	१०	२१	ग.	२२	५३			४९	३०	१२	४	३
शु.	५	६	१४	४३	११	२४	रेवती	९	५	९	९	शूल	५८	५५	५	५	व.	११	२४	भ.	०	१६	मे.	०/१	४	३१	१२	३	५८
श.	६	७	१९	०	१३	७	अश्वि,	१४	४८	११	२६	गण्ड	६०	०	२४	०	बव	१३	७	बा.	२	१३			४३	३१	१२	३	५१
र.	७	८	२४	३०	१५	१९	भरणी	२१	४०	१४	११	गण्ड	०	३८	५	४६	कौ.	१५	१९	तै.	४	३२	वृ.	२०/८८	४०	३१	१२	३	४५
चं.	८	९	३०	३३	१७	४५	कृत्ति.	२९	८	१७	११	वृद्धि	२	५३	६	४१	ग.	१७	४५	व.	५	३२			३७	३२	१२	३	३७
मं.	९	१०	३६	१५	२०	१२	रोहि.	३६	३८	२०	११	ध्रुव	५	२५	७	४२	व.	६	५९	भ.	२०	१२			३४	३२	१२	३	२९
बु.	१०	११	४२	१३	२२	२६	मृग.	४३	३५	२२	५९	व्याघा.	७	४०	८	३७	बव	९	१९	बा.	२२	२६	मि.	०/३७	३२	३३	१२	३	२१
गु.	११	१२	४६	५३	०	१८	आर्द्रा	४९	४३	१	२६	हर्षण	९	२३	९	१८	कौ.	११	२२	तै.	०	१८			३०	३३	१२	३	११
शु.	१२	१३	५०	२३	१	४२	पुनर्व.	५४	४३	३	२६	वज्र	१०	२०	९	४१	ग.	१३	०	व.	१	४२	क.	२०/८९	२६	३३	१२	३	२
श.	१३	१४	५२	३५	२	३६	पुष्य	५८	२५	४	५६	सिद्धि	१०	१८	९	४१	भ.	१४	९	श.	२	३६			२३	३४	१२	२	५२
र.	१४	३०	५३	३५	३	१	आश्ले.	६०	०	२४	०	व्यती.	९	१५	९	१७	च.	१४	४९	ना.	३	१			१९	३५	१२	२	४१
		शुद्धश्रावण शुक्लपक्ष																											
चं.	१५	१	५३	३०	२	५९	आश्ले.	०	५८	५	५८	वरी.	७	२०	८	३१	किं.	१५	०	बव	२	५९	सिं.	५/८९	१६	३५	१२	२	३०
मं.	१६	२	५२	२३	२	३२	मघा	२	२८	६	३४	परिघ	४	३०	७	२३	बा.	१४	४६	कौ.	२	३२			१३	३५	१२	२	१८
बु.	१७	३	५०	२०	१	४४	पू.फा.	२	५५	६	४६	शिव	०/८८	५३/४३	५/४	५७/१४	तै.	१४	८	ग.	१	४४	कं.	१२/४६	१०	३६	१२	२	५
गु.	१८	४	४७	२८	०	३५	उ.फा.	२	३५	६	३८	साध्य	५१	४०	२	१६	व.	१३	१०	भ.	०	३५			७	३६	१२	१	५२
शु.	१९	५	४३	५८	२३	१२	हस्त	१/५८	२५/१०	६/५	११/२७	शुभ	४६	८	०	४	बव	११	५४	बा.	२३	१२	तु.	१७/८१	४	३७	१२	१	३९
श.	२०	६	३९	४८	२१	३२	स्वाती	५७	८	४	२८	शुक्ल	४०	५	२१	३९	कौ.	१०	२२	तै.	२१	३२			०	३७	१२	१	२५
र.	२१	७	३४	५८	१९	३७	विशा.	५४	३	३	१५	ब्रह्म	३३	२८	१९	१	ग.	८	३५	व.	१९	३७	वृ.	२१/३४	३१/८७	३८	१२	१	११
चं.	२२	८	२९	३८	१७	२९	अनु.	५०	२८	१	४९	ऐन्द्र	२६	२८	१६	१३	भ.	६	३३	बव	१७/४	२९/१९			५४	३८	१२	०	५६
मं.	२३	९	२३	४८	१५	९	ज्येष्ठा	४६	२५	०	१२	वैधृति	१९	५	१३	१६	कौ.	१५	९	तै.	१	५६			५०	३८	१२	०	४०
बु.	२४	१०	१७	३८	१२	४२	मूल	४२	८	२२	३०	विष्कु.	११	२३	१०	१२	ग.	१२	४२	व.	२३	२६	ध.	०/१२	४७	३९	१२	०	२५
गु.	२५	११	११	२०	१०	११	पू.षा.	३७	४८	२०	४६	प्रीति.	३/८२	३३/१३	७/३	४/८७	भ.	१०	११	बव	२०	५७			४४	३९	१२	०	८
शु.	२६	१२	५/८४	५/१३	७/५	४२/२३	उ.षा.	३३	४३	१९	९	सौभा.	४८	१३	०	५७	बा.	७	४२	कौ.	१८/८	३३/२३	म.	२/२१	४०	४०	११	५९	५२
श.	२७	१४	५४	१०	३	२०	श्रवण	३०	८	१७	४३	शोभन	४१	१३	२२	९	ग.	१६	२२	व.	३	२०			३७	४०	११	५९	३५
र.	२८	१५	५०	०	१	४०	घनि.	२७	२८	१६	३९	अति.	३४	५८	१९	३९	भ.	१४	३०	बव	१	४०	कुं.	५/८	३४	४०	११	५९	१७
		भाद्रपद कृष्णपक्ष																											
चं.	२९	१	४७	८	०	३२	शत.	२५	५३	१६	२	सुकर्मा	२९	३८	१७	३२	बा.	१३	६	कौ.	०	३२			३०	४१	११	५८	५९
मं.	३०	२	४५	४८	२४	०	पू. भा.	२५	४८	१६	०	धृति	२५	३३	१५	५४	तै.	१२	१६	ग.	०	०	मी.	८७	२७	४१	११	५८	४१
बु.	३१	३	४६	८	०	९	उ. भा.	२७	१५	१६	३६	शूल	२२	४३	१४	४७	व.	१२	५	भ.	०	९			२३	४२	११	५८	२३

[E]मि. १३ बजे से सूर्यास्त तक विशेष पुण्यकाल; छत्र सुवर्ण-दान, गंगा में स्नान। चन्द्र-सूर्य, स्त्री-स्त्री योग, जम्बूक वाह जला नाड़ा, तदीश, बुध-छिटपुट वृष्टि हो। [Gकी पूजा; काशी में नागकूप-यात्रा। प्रत्येक ग्राम में विविध प्रकार के व्याय मादि का प्रदर्शन; मल्लयुद्ध का आयोजन। श्रीहनुमानजी का ध्वजारोपण, प्रसाद-वितरण। यायिजय योग घं. ० मि. ३५ ब से घं. ५ मि. ३७ बजे तक। भारतीय संगीत-पुनरुद्धारक श्रीविष्णु दिगम्बर-जयन्ती। [Hश्रीशिव-पवित्रारोपण। अमरना दर्शन-पूजन। यायिजय योग घं. १७ मि. २९ बजे प्रारम्भ। दृश्य अगस्तोदय घं. ९ मि. १५ बजे—"उदित अगस्त पंथज सोखा"—'तुलसी'। [I]शु. ०°–२६′ दक्षिण। राष्ट्रीय भाद्रपद मास आरम्भ। सूर्य सायन कन्या में घं. ११ मि. ३० बजे शरदऋतु प्रारम्भ। यायिजय योग घं. १ मि. ४९ बजे समाप्त।

शनिरिक्ता-फल—शनैश्चरदिने प्राप्ते यदि रिक्तातिथिर्भवेत्। तस्मिन्विवाहिताकन्या पतिसपत्तिवर्धिनी॥ यदि शनिवा के दिन रिक्ता (४।९।१४) तिथि हो और उसमें कन्या का विवाह किया जाय तो पति की सम्पत्ति की वृद्धि होती है; कारण य है कि शनिवार के दिन रिक्ता तिथि होने से सिद्धा तिथि हो जाती है और वह सब दोषों का नाश करती है।

वार	तारीखें					अगस्त सन् १९७७ ई०। अधिक श्रावण कृष्ण २ से भाद्रपद कृष्ण ३ तक, संवत् २०३४ विक्रमीय। राष्ट्रीय श्रावण मास १० से राष्ट्रीय भाद्रपद मास ९ तक, शके १८९९ शालिवाहन। सावान १४ से रमजान १५ तक, १३९७ हिजरी।
	उदित तिथि	सौर(कर्क) श्रावण मा. ३१ दि.	सावान २९ दिन हिजरी	राष्ट्रीय श्रावण मास ३१ दिन	अंग्रेजी तारीख	J पारण घं. ७ मि. ४२ बजे तक। प्रदोष १३ व्रत। १३ तिथि-क्षय। [K मि. ४३ बजे प्रारंभ। L तक। रक्षाबन्धन, भद्रा के बाद। राखी पूर्णिमा। नारली पूर्णिमा १५। स्नान-दान व्रत की श्रावणी पूर्णिमा १५। झूलन १५। पूर्णिमा में यजुर्वेदियों तथा सभी द्विजातियों का श्रावणी उपाकर्म। रात्रि में सर्पबलि; सायंकाल हयग्रीवोत्पति; भदैनी स्थित मंदिर में दर्शन-पूजन। यायिजय योग घं. १२ मि. ३९ बजे समाप्त। अमरनाथ दर्शन-पूजन(कश्मीर)। सत्याग्रह बलिदान-दिवस। संस्कृत-दिवस।
						महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि(मुद्दई) स्थायी(मुद्दालेह)जय योग, सन्धिकर, योगादि।
चं.	२	१६	१४	१०	१	पंचक। भद्रा घं.२३ मि.१४ बजे प्रारम्भ। श्रावण सोमवार व्रत, प्रदोषव्रतवत् विधि। त्रिपुष्कर योग घं.५ मि.२९बजे समाप्त। श्रीलोकमान्य तिलक पुण्य-तिथि। शब्बरात(शबे-बरात)मंगल ☌ रोहिणी युति घं. १७ मि. २९ बजे, रोहि. से मं. ५°–४′ उ.। [D बजे से घं. ५ मि. ५८ बजे तक।
मं.	३	१७	१५	११	२	पंचक। भद्रा घं.१० मि.३५ बजे समाप्त। भौमवती संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय घं.२० मि.४५ बजे। भौम-व्रत; दुर्गा-पूजा। संकटमोचन दुर्गा यात्रा। स्थायीजय योग घं.१०मि.३५ बजे प्रारम्भ। ⊙सूर्य आश्लेषा में घं. २१ मि. १ बजे; चन्द्र सूर्य स्त्री पुरुष योग, खरवाहन, नीरानाड़ी, तदीश शुक्र––कहीं A
बु.	४	१८	१६	१२	३	पंचक। स्थायीजय योग घं. ६ मि. ४९ तक। उर्स चन्दन शहीद बाबा।
गु.	५	१९	१७	१३	४	पंचक समाप्त घं. ९ मि. ९ बजे। यायिजय योग घं. ५ मि. ३० बजे प्रारम्भ।
शु.	६	२०	१८	१४	५	भद्रा घं. ११ मि. २४ बजे प्रारम्भ। यायिजय योग घं. ५ मि. ३० बजे समाप्त।
श.	७	२१	१९	१५	६	भद्रा घं. ० मि.१६ बजे समाप्त। यायिजय योग घं. ११ मि. २६ बजे से घं. १३ मि. ७ बजे तक।
र.	८	२२	२०	१६	७	कालाष्टमी ८। महा(व्यती)पात घं. २१ मि. ४३ बजे प्रारम्भ। कवीन्द्र-रवीन्द्र की पुण्य-तिथि।
चं.	९	२३	२१	१७	८	श्रावण सोमवार व्रत, प्रदोष व्रत की तरह विधि। महा(व्यती)पात घं. ८ मि. ५८ बजे समाप्त। B
मं.	१०	२४	२२	१८	९	भद्रा घं.६मि.५९ बजे से घं.२० मि.१२ बजे तक। भौमव्रत। दुर्गा-पूजा। संकटमोचन दुर्गा यात्रा दर्शन।
बु.	११	२५	२३	१९	१०	पुरुषोत्तमी ११ एकादशी व्रत सबका।
गु.	१२	२[illegible]	२४	२०	११	[B यायिजय योग घं. १७ मि. ११ बजे से घं. १७ मि. ४५ बजे तक। [C (मलमास) समाप्त।
शु.	१३	२७	२५	२१	१२	प्रदोष १३ व्रत। यायिजय योग घं. १ मि. २६ बजे से घं. ५ मि. ३३ बजे तक।
श.	१४	२८	२६	२२	१३	भद्रा घं. १ मि. ४२ बजे से घं. १४ मि. ९ बजे तक। मास शिवरात्रि १४ व्रत।
र.	३०	२९	२७	२३	१४	अन्वाधान। स्नान दान श्राद्ध की दर्श ३० अमावस्या, पापवारी प्रजाक्षयकरी दुर्भिक्षकरी। अधिमास C
चं.	१	३०	२८	२४	१५	इष्टि। शुद्ध श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ। नक्त व्रतारम्भ। श्रावण सोमवार व्रत, प्रदोष व्रत की तरह विधि। भारतीय स्वतन्त्रता-दिवस, आजादी की ३१वीं वर्षगांठ। यायिजय योग घं. ३ मि. ११ D
मं.	२	३१	२९	२५	१६	भौम व्रत, दुर्गा-पूजा। संकटमोचन दुर्गा यात्रा दर्शन। ◡चन्द्र-दर्शन मु. ३०, साम्यार्घ(श्रृङ्गार सिन्धारा-देशाचारे)। ⊙ सूर्य मघा में एवं सिंह-संक्रान्ति घं. १८ मि. ३७ बजे मु. ३० साम्यार्घ, घं. १२ E
बु.	३	१	१	२६	१७	हरितृतीया ३ (हरियाली तीज)। ठकुराइन-जयन्ती ३ पश्चिम में प्रसिद्ध है। मधुश्रवा ३, मैथिल गुर्जर में प्रसिद्ध। सौर भाद्रपद मास प्रारम्भ। रमजान ९ माह शुरू। रोजा शुरू।
गु.	४	२	२	२७	१८	भद्रा घं. १३ मि. १० बजे प्रारम्भ। वैनायकी श्री(वरद)गणेश ४ व्रत।
शु.	५	३	३	२८	१९	भद्रा घं. ० मि. ३५ बजे समाप्त। श्रीनागपञ्चमी ५ व्रत। गोबर आदि से भित्ति पर निर्मित नागों G
श.	६	४	४	२९	२०	कल्कि-जयन्ती ६। वर्ण-श्रृङ्खल षष्ठी। महा(व्यति)पात घं. १५ मि. ३२ बजे से घं. २२ मि. २७ बजे तक। यायिजय योग घ.२१ मि.३२ बजे शुरू। त्रिपुष्कर योग घं. २१ मि.३२ बजे शुरू।
र.	७	५	५	३०	२१	भद्रा घं. १९ मि. ३७ बजे प्रारम्भ। श्रीशीतला पूजन ७। भानु सप्तमी ७ पर्व। गोस्वामी तुलसीदास-जयन्ती ७। यायिजय योग घ.४ मि.२८ बजे समाप्त। त्रिपुष्कर योग घं. १९ मि. ३७ बजे समाप्त।
चं.	८	६	६	३१	२२	भद्रा घं. ६ मि. ३३ बजे समाप्त। दुर्गाष्टमी ८ व्रत। श्रावण सोमवार व्रत, प्रदोषवत की तरह विधि H
मं.	९	७	७	१	२३	भौम व्रत। दुर्गा-पूजा। संकटमोचन दुर्गा यात्रा दर्शन। शुक्र ☌ पुन. युति घं. २२ मि.३५ बजे पुन. से I
बु.	१०	८	८	२	२४	भद्रा घं. २३ मि. २६ बजे प्रारम्भ। दुर्लभ सन्धिकर योग घं.५ मि.३९ बजे से घं.१२मि.४२ बजेतक
गु.	११	९	९	३	२५	भद्रा घं.१० मि.११ बजे समाप्त। पुत्रदा ११ एकादशी व्रत सबका। [A मध्यम, कहीं भारी वर्षा हो।
शु.	१२	१०	१०	४	२६	श्रीविष्णु-पवित्रारोपण रात्रि में। शाक-दान। दधि-त्याग व्रतारम्भ। स्मार्तों के लिये एकादशी व्रत का J
श.	१४	११	११	५	२७	श्रीशिव-पवित्रारोपण। शुद्ध श्रवण नक्षत्र में ऋग्वेदियों का श्रावणी उपाकर्म। यायिजय योग घं. १७ K
र.	१५	१२	१२	६	२८	अन्वाधान। पचक प्रारंभ घं. ५ मि. ८ बजे। भद्रा घं. ३ मि. २० बजे से घं. १४ मि. ३० बजे L
चं.	१	१३	१३	७	२९	पंचक। इष्टि। इस मास में दधि-त्याग करना चाहिये; मट्ठा का निषेध नहीं है। भाद्रपद मास प्रारंभ।
मं.	२	१४	१४	८	३०	पंचक। अशून्यशयन २ व्रत; चन्द्रोदय घं. १९ मि. १८ बजे। कज्जलीनिमित्त जागरण। त्रिपुष्कर योग घं. ५ मि. ४१ बजे से घं. १६ मि. ० बजे तक। ⊙पू.फा. में घं. १० मि. ३९ बजे। सूर्य-सूर्य स्त्री-पुरुष योग मूषक वाहन [illegible] वर्षा हो।
बु.	३	१५	१५	९	३१	पचक। भद्रा घं. १२ मि. ५ बजे प्रारम्भ। कज्जली (कजरी) ३। गो-पूजा।

ता. | ग्रह रा.नक्ष. चरण(नवां) प्रवे.स्टैंटा.

अगस्त	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
१	मं.	♂	रोहि.	२	मि·	१७	४९
२	सू·	☉	आश्ले.	१	ध·	२१	२
२	बु·	☿	पू.फा.	१	सिं·	२२	५४
३	शु·	♀	आर्द्रा	१	ध·	५	१७
३	गु·	♃	मृग.	४	बृ·	१७	५९
५	बु·	☿	पू.फा.	२	कं·	२०	३४
६	शु·	♀	आर्द्रा	२	म·	३	२५
६	सू·	☉	आश्ले.	२	म·	८	३४
६	मं.	♂	रोहि.	४	क·	१६	५५
९	शु·	♀	आर्द्रा	३	कुं·	१	९
९	बु·	☿	पू.फा.	३	तु·	२	५७
९	सू·	☉	आश्ले.	३	कुं·	२०	२
११	मं.	♂	मृग.	१	सिं·	१७	३१
११	शु·	♀	आर्द्रा	४	मी·	२२	३५
१२	श·	♄	आश्ले.	४	मी·	१	३७
१३	बु·	☿	पू फा.	४	बृ·	२	३७
१३	सू·	☉	आश्ले.	४	मी·	७	२४
१४	शु·	♀	पुन.	१	मे·	१९	३९
१६	सू·	☉	सिं·मघा	१	मे·	१८	३७
१६	मं.	♂	मृग.	२	कं·	१९	४६
१७	शु·	♀	पुन.	२	बृ·	१६	२७
१९	बु·	☿	उ.फा.	१	ध·	६	३०
२०	सू·	☉	मघा	२	बृ·	५	४६
२०	शु·	♀	पुन.	३	मि·	१२	५८
२१	मं·	♂	मि·मृग	३	तु·	२३	४८
२२	गु·	♃	आर्द्रा	१	ध·	०	२५
२२	बु. R	☿	वक्री	—	—	१९	४६
२३	शु·	♀	क·पुन.	४	क·	९	१४
२३	सू·	☉	मघा	३	मि·	१६	४९
२३	नेप्.	♆	मार्गी	—	—	१७	४३
२६	शु·	♀	पुष्य	१	सिं·	५	१४
२६	बु·	☿	पू.फा.	४	बृ·	५	४५
२७	सू·	☉	मघा	४	क·	३	४५
२७	मं.	♂	मृग.	४	बृ·	५	५२
२९	शु·	♀	पुष्य	२	कं·	१	४
३०	सू·	☉	पू.फा.	१	सिं·	१४	३५
३१	बु·R.	☿	पू.फा.	३	बृ·	१९	२४
३१	शु·	♀	पुष्य	३	तु·	२०	२९

ता. २३ अगस्त को बुध अस्त पश्चिम में।
ता. २८ अगस्त को शनि उदय पूर्व में।

द्विजातियों के विवाह-मुहूर्त में यों तो ८१ दोष शास्त्र में बतलाये गये हैं; किन्तु उनमें लत्ता आदि १० दोष ही मुख्य हैं। उनमें भी वेध, मृत्यु-बाण, क्रान्तिसाम्य ये ३ दोष अपरिहार्य होने से सर्वत्र, सर्वथा वर्ज्य हैं। शेष ८ दोषों में ४ से अल्प दोष रहने पर वे विवाह-मुहूर्त की लग्न-शुद्धि से नष्ट हो जाते हैं।

स्था· काशी प्रातः स्टैं.टा ५-२९बजे सूर्य का													चित्रापक्षीय अर्धदैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट												
		केन्द्र·जेका सांपा.का.			दैनिक स्पष्ट ☉				दैनिक गति		दै.क्रां. उत्तर		चं. स्पष्ट घं.५ मि.२९बजेका				अर्धदैनिक गति			चं. स्पष्ट घं.१७ मि.२९बजेका				अर्धदैनिक गति	
ता	वा.	घं·	मि·	से·	रा·	अं·	क·	वि·	क·	वि·	अं·	क·	रा·	अं·	क·	वि·	अं·	क·	वि·	रा·	अं·	क·	वि·	अं·	क
१	चं·	२०	३७	२	३	१५	५	२८	५७	२३	१८	६	१०	५	३८	२२	६	५५	३२	१०	१२	३३	५४	६	४९
२	मं·	२०	४०	५९	३	१६	२	५१	५७	२४	१७	५१	१०	१९	२३	३	६	४२	३७	१०	२६	५	४०	६	३६
३	बु·	२०	४४	५६	३	१७	०	१५	५७	२५	१७	३६	११	२	४१	४८	६	२९	५२	११	९	११	४०	६	२३
४	गु·	२०	४८	५२	३	१७	५७	४०	५७	२७	१७	२०	११	१५	३५	३२	६	१८	१८	११	२१	५३	५०	६	१३
५	शु·	२०	५२	४९	३	१८	५५	७	५७	२८	१७	४	११	२८	७	४	६	८	४४	०	४	१५	४८	६	४
६	श·	२०	५६	४५	३	१९	५२	३५	५७	२९	१६	४८	०	१०	२०	३७	६	१	३४	०	१६	२२	११	५	५८
७	र·	२१	०	४२	३	२०	५०	४	५७	३०	१६	३१	०	२२	२१	१०	५	५७	३	०	२८	१८	१३	५	५५
८	चं·	२१	४	३८	३	२१	४७	३४	५७	३२	१६	१४	१	४	१३	५९	५	५५	८	१	१०	९	७	५	५५
९	मं·	२१	८	३५	३	२२	४५	६	५७	३४	१५	५७	१	१६	४	१३	५	५५	४०	१	२१	५९	५३	५	५६
१०	बु·	२१	१२	३१	३	२३	४३	४०	५७	३५	१५	४०	१	२७	५६	३९	५	५८	२२	२	०	५५	१	६	०
११	गु·	२१	१६	२८	३	२४	४०	१४	५७	३७	१५	२२	२	९	५५	२४	६	२	४७	२	१५	५८	११	६	५
१२	शु·	२१	२०	२५	३	२५	३७	४३	५७	३७	१५	४	२	२२	३	४२	६	८	२१	२	२८	१२	१३	६	११
१३	श·	२१	२४	२१	३	२६	५	२६	५७	३९	१४	४६	३	४	२३	५५	६	१५	१	३	१०	३८	५६	६	१८
१४	र·	२१	२८	१८	३	२७	३३	५	५७	३९	१४	२८	३	१६	५७	२१	६	२१	४९	३	२३	१९	१०	६	२५
१५	चं·	२१	३२	१४	३	२८	३०	४४	५७	४१	१४	९	३	२९	४४	२३	६	२८	३१	४	६	१२	५४	६	३१
१६	मं·	२१	३६	११	३	२९	२८	२५	५७	४२	१३	५१	४	१२	४४	३९	६	३४	५१	४	१९	१९	२०	६	३७
१७	बु·	२१	४०	७	४	०	२६	७	५७	४३	१३	३२	४	२५	५७	२०	६	४०	४२	५	२	३८	२	६	४३
१८	गु·	२१	४४	४	४	१	२३	५०	५७	४५	१३	१२	५	९	२१	२९	६	४६	६	५	१६	७	३५	६	४८
१९	शु·	२१	४८	०	४	२	२१	३५	५७	४५	१२	५३	५	२२	५६	१५	६	५१	११	५	२९	४७	२६	६	५३
२०	श·	२१	५१	५७	४	३	१९	२०	५७	४७	१२	३३	६	६	४१	४	६	५६	३	६	१३	३७	७	६	५८
२१	र·	२१	५५	५४	४	४	१७	७	५७	४८	१२	१४	६	२०	३५	३१	७	०	४३	६	२७	३६	१४	७	२
२२	चं·	२१	५९	५०	४	५	१४	५५	५७	४८	११	५४	७	४	३९	८	७	५	०	७	११	४४	८	७	६
२३	मं·	२२	३	४७	४	६	१२	४३	५७	५०	११	३३	७	१८	५०	५९	७	८	३०	७	२५	५९	२९	७	९
२४	बु·	२२	७	४३	४	७	१०	३३	५७	५१	११	१३	८	३	९	१७	७	१०	४२	८	१०	१९	५९	७	११
२५	गु·	२२	११	४०	४	८	८	२४	५	५२	१०	५३	८	१७	३१	५	७	१०	५६	८	२४	४२	१	७	१०
२६	शु·	२२	१५	३६	४	९	६	१६	५७	५४	१०	३२	९	१	५२	१३	७	८	४७	९	९	१	०	७	६
२७	श·	२२	१९	३३	४	१०	४	१०	५७	५५	१०	११	९	१६	७	४३	७	४	०	९	२३	११	४३	७	०
२८	र·	२२	२३	२९	४	११	२	५	५७	५७	९	५०	१०	०	१२	२४	६	५६	४६	१०	७	९	१०	६	५२
२९	चं·	२२	२७	२६	४	१२	०	२	५७	५८	९	२९	१०	१४	१	३५	६	४७	३९	१०	२०	४९	१४	६	४२
३०	मं·	२२	३१	२३	४	१२	५८	०	५७	०	९	७	१०	२७	३१	५१	६	३७	२६	११	४	९	१७	६	३२
३१	बु·	२२	३५	१९	४	१३	५६	०	५८	२	८	४६	११	१०	४१	२७	६	२६	५८	११	१७	८	२५	६	२१

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

अगस्त तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध सम्मुख	वाम+	दक्षिणR	पंचशला का-वेध	लत्त
चालू	राहु	चित्रा	पू.भा.	मूल	मृग.♃ ♀	पू.भा.	श्रवण
,,	केतु	रेवती	उ.फा.	मृगशी♃ ♀	मूल	उ.फा.	पुष्य
,,	शनि	आश्लेषा	अनुराधा	मघा ☿	धनिष्ठा	धनिष्ठा	विश
२	सूर्य	आश्लेषा	अनुराधा	मघा ☿	धनिष्ठा	धनिष्ठा	पू.षा.
२	बुध	पू.फा.	अश्विनी	अभिचित्	पुष्य	अश्विनी	मृग♃
३	शुक्र	आर्द्रा	पू.षा.	हस्तP	उ.भा.	पू.षा.	भर
११	मंगल	मृगशिरा	उ.षा.	चित्रा☊	रेवती☋	उ.षा.	पुनर्व
१४	शुक्र	पुनर्वसु	मूल	उ.फा.	पू.भा.	मूल	कृत्ति
१६	सूर्य	मघा	भरणी	श्रवण	आश्लेषा ♄	श्रवण	उ.फा
१९	बुध	उ.फा.	रेवती☋	उ.षा.	पुन. ♀	रेवती ☋	आ
२२	गुरु	आर्द्रा	पू.षा.	हस्तP	उ.भा.	पू.षा.	पू.फ
२६	शुक्र	पुष्य	ज्येष्ठा ♆	पू.फा.	शतभिषा	ज्येष्ठा ♆	रोहि
२६	बुधR	पू.फा.	अश्विनी	अभिजित्	पुष्य ♀	अश्विनी	मृगशी.
३०	सूर्य	पू.फा.	अश्विनी	अभिजित्	पुष्य ♀	अश्विनी	श्रवण

आकाशी-लक्षण—ता. २,३,११,१४,१५ को देश के कुछ राज्यों में सूखे का अभूतपू संकट पैदा होगा तो कई प्रान्तों के विस्तृत भू-भाग में अनवरत तीव्र वर्षा होगी। ता. १ की सिंह-संक्रान्ति अग्नि-मण्डल में पड़ गयी है। ता. १६,१९,२१,२२,२३,२६,२८,२९,३ को सूखाग्रस्त क्षेत्रों में सामान्य वर्षा तथा अन्यत्र व्यापक वृष्टि का योग है। मघा का अमृ जल तो बहुत थोड़े स्थानों को प्राप्त होगा।

स्पष्ट ग्रह एवं दै.गति प्रातः ५।३० स्टैं.टा.

ता. अग.	♂ मं. रा.	अं.	क.	ग. क.	☿ बु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♃ गु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♀ शु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♄ श. रा.	अं.	क.	ग. क.	☊ रा. रा.	अं.	क.	♅ ह. रा.	अं.	क.	♆ ने. R रा.	अं.	क.	P प्लू. रा.	अं.	क.
१	१	१६	१९	४१	४	११	१२	७५	२	२	५०	१२	२	४	२४	६८	३	२५	१७	८	५	२५	७	६	१४	१५	७	१९	५९	५	१८	१८
४	१	१८	२१	४०	४	१४	५०	६८	२	३	२६	१२	२	७	४८	६८	३	२५	४०	८	५	२४	५७	६	१४	१८	७	१९	५७	५	१८	२२
७	१	२०	२१	४०	४	१८	८	६१	२	४	०	११	२	११	१५	६९	३	२६	३	८	५	२४	४८	६	१४	२१	७	१९	५५	५	१८	२६
१०	१	२२	२१	४०	४	२१	१	५२	२	४	३४	११	२	१४	४२	६९	३	२६	२६	८	५	२४	३८	६	१४	२४	७	१	५३	५	१८	३१
१३	१	२४	१९	३९	४	२३	२७	४२	२	५	८	११	२	१८	९	७०	३	२६	४९	८	५	२४	२८	६	१४	२८	७	१९	५२	५	१८	३६
१६	१	२६	१७	३९	४	२५	२२	३०	२	५	४०	११	२	२१	३८	७०	३	२७	१२	८	५	२४	१९	६	१४	३३	७	१९	५१	५	१८	४१
१९	१	२८	१३	३९	४	२६	३९	१६	२	६	११	१०	२	२५	८	७०	३	२७	३५	८	५	२४	९	६	१४	३८	७	१९	५०	५	१८	४६
२२	२	०	११	३८	४	२७	१३	1	२	६	४२	१०	२	२८	३९	७०	३	२७	५८	८	५	२४	०	६	१४	४३	७	१९	५०+	५	१८	५१
२५	२	२	४	३८	४	२६	५७	१७	२	७	१२	१०	३	२	१०	७१	३	२८	२१	८	५	२३	५०	६	१४	४९	७	१९	५०	५	१८	५६
२८	२	३	५७	३८	४	२५	४८	३५	२	७	४१	९	३	५	४२	७१	३	२८	४४	८	५	२३	४१	६	१४	५५	७	१९	५०	५	१९	२
३१	२	५	४९	३७	४	२३	४९	५०	२	८	८	९	३	९	१६	७१	३	२९	६	८	५	२३	३१	६	१५	२	७	१९	५०	५	१९	८

अधि श्रावणअमान्त ◡ ☌ ⊙ काशी, रवि.
ता. १५।८।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.३ मि. १
इष्ट सांपातिक काल घं.० मि.३५ से.४४

ल०	द०
२	११
२४	१६
५७	१२
५९	२

⊙ सिंह-संक्रांति, काशी, मंगलवार
ता. १६।८।७७ई. भा.स्टैं.टा. घं१८ मि.३७
इष्ट सांपातिक काल घं.१६ मि.१८ से.१५

ल०	द०
१०	७
२	१२
३६	५४
३४	५९

शुद्ध श्राव.पूर्णिमांत ◡ ☍ ⊙ काशी, रवि.
ता. २९।८।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.१ मि. ४०
इष्ट सांपातिक काल घं.० मि.९ से.४३

ल०	द०
२	११
१८	९
१५	६
२५	१३

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारिणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदय का समय भा.स्टैं.टा.में)

अगस्त ता.	वा.	मेष घ.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१	चं.	२२	२७	५	०	९	२	५	४	१९	६	३६	८	५०	११	३	१३	१९	१५	३६	१७	४१	१९	२७	२०	५८
२	मं.	२२	२३	९	०	५	२	१	४	१५	६	३२	८	४६	१०	५९	१३	१५	१५	३२	१७	३८	१९	२३	२०	५४
३	बु.	२२	१९	१३	०	१	१	५७	४	११	६	२८	८	४२	१०	५५	१३	११	१५	२८	१७	३४	१९	१९	२०	५०
				*	२३	५७																				
४	गु.	२२	१५	१७	२३	५३	१	५३	४	७	६	२४	८	३८	१०	५१	१३	७	१५	२४	१७	३०	१९	१५	२०	४६
५	शु.	२२	११	२१	२३	४९	१	४९	४	३	६	२१	८	३४	१०	४७	१३	३	१५	२०	१७	२६	१९	११	२०	४३
६	श.	२२	७	२६	२३	४५	१	४५	३	५९	६	१७	८	३१	१०	४३	१२	५९	१५	१६	१७	२२	१९	७	२०	३९
७	र.	२२	३	३०	२३	४१	१	४२	३	५५	६	१३	८	२७	१०	३९	१२	५६	१५	१३	१७	१८	१९	३	२०	३५
८	चं.	२१	५९	३४	२३	३७	१	३८	३	५१	६	९	८	२३	१०	३५	१२	५२	१५	९	१७	१४	१९	०	२०	३१
९	मं.	२१	५५	३८	२३	३३	१	३४	३	४७	६	५	८	१९	१०	३१	१२	४८	१५	५	१७	१०	१८	५६	२०	२७
१०	बु.	२१	५१	४२	२३	२९	१	३०	३	४३	६	१	८	१५	१०	२७	१२	४४	१५	१	१७	६	१८	५२	२०	२३
११	गु.	२१	४७	४६	२३	२५	१	२६	३	३९	५	५७	८	११	१०	२४	१२	४०	१४	५७	१७	२	१८	४८	२०	१९
१२	शु.	२१	४३	५०	२३	२१	१	२२	३	३५	५	५३	८	७	१०	२०	१२	३६	१४	५३	१६	५८	१८	४४	२०	१५
१३	श.	२१	३९	५४	२३	१७	१	१८	३	३१	५	४९	८	३	१०	१६	१२	३२	१४	४९	१६	५४	१८	४०	२०	११
१४	र.	२१	३५	५८	२३	१४	१	१४	३	२८	५	४५	७	५९	१०	१२	१२	२८	१४	४५	१६	५०	१८	३६	२०	७
१५	चं.	२१	३२	२	२३	१०	१	१०	३	२४	५	४१	७	५५	१०	८	१२	२४	१४	४१	१६	४६	१८	३२	२०	३
१६	मं.	२१	२८	६	२३	६	१	६	३	२०	५	३७	७	५१	१०	४	१२	२०	१४	३७	१६	४३	१८	२८	१९	५९
१७	बु.	२१	२४	११	२३	२	१	२	३	१६	५	३३	७	४७	१०	०	१२	१६	१४	३३	१६	३९	१८	२४	१९	५५
१८	गु.	२१	२०	१५	२२	५८	०	५८	३	१२	५	२९	७	४३	९	५६	१२	१२	१४	२९	१६	३५	१८	२०	१९	५१
१९	शु.	२१	१६	१९	२२	५४	०	५४	३	८	५	२५	७	३९	९	५२	१२	८	१४	२५	१६	३१	१८	१६	१९	४८
२०	श.	२१	१२	२३	२२	५०	०	५०	३	४	५	२२	७	३६	९	४८	१२	४	१४	२१	१६	२७	१८	१२	१९	४४
२१	र.	२१	८	२७	२२	४६	०	४७	३	०	५	१८	७	३२	९	४४	१२	०	१४	१८	१६	२३	१८	८	१९	४०
२२	चं.	२१	४	३१	२२	४२	०	४३	२	५६	५	१४	७	२८	९	४०	११	५७	१४	१४	१६	१९	१८	५	१९	३६
२३	मं.	२१	०	३५	२२	३८	०	३९	२	५२	५	१०	७	२४	९	३६	११	५३	१४	१०	१६	१५	१८	१	१९	३२
२४	बु.	२०	५६	३९	२२	३४	०	३५	२	४८	५	६	७	२०	९	३२	११	४९	१४	६	१६	११	१७	५७	१९	२८
२५	गु.	२०	५२	४३	२२	३०	०	३१	२	४४	५	२	७	१६	९	२८	११	४५	१४	२	१६	७	१७	५३	१९	२४
२६	शु.	२०	४८	४७	२२	२६	०	२७	२	४०	४	५८	७	१२	९	२५	११	४१	१३	५८	१६	३	१७	४९	१९	२०
२७	श.	२०	४४	५१	२२	२२	०	२३	२	३६	४	५४	७	८	९	२१	११	३७	१३	५४	१५	५९	१७	४५	१९	१६
२८	र.	२०	४०	५६	२२	१८	०	१९	२	३२	४	५०	७	४	९	१७	११	३३	१३	५०	१५	५५	१७	४१	१९	१२
२९	चं.	२०	३७	०	२२	१५	०	१५	२	२८	४	४६	७	०	९	१३	११	२९	१३	४६	१५	५१	१७	३७	१९	८
३०	मं.	२०	३३	४	२२	११	०	११	२	२५	४	४२	६	५६	९	९	११	२५	१३	४२	१५	४७	१७	३३	१९	४
३१	बु.	२०	२९	८	२२	७	०	७	२	२१	४	३८	६	५२	९	५	११	२१	१३	३८	१५	४४	१७	२९	१९	०

भविष्यवाणी—शनि महाराज अस्त हो चुके हैं; ता. २८ को उदय होकर अगले महीने से शक्ति-संचय करेंगे। रूस चीन से सम्बन्ध-सुधार का सतत् प्रयास करेगा; लेकिन हर बार उसकी पेशकश चीन ठुकराता रहेगा। ब्रिटेन, जापान, ऑस्ट्रेलिया का भी रूस से विरोध वैमनस्य बढ़ेगा। भारतीय राजनीति एवं कूटनीति की विश्व-जनमत पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया होगी। **संक्रान्ति-फल**—सूर्य गत सं. ४ वार ५ नक्षत्र मु. ३० पर प्रवेश करते हैं। ता. २१ को मंगल के मिथुन में आ जाने से एक असाधारण ग्रहयोग बनता है; मिथुन से वृश्चिक पर्यन्त सभी ग्रह राशि-चक्रार्ध में आ जाते हैं; अतः यहाँ से विश्व की राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में एक नये अध्याय का आरम्भ होगा। प्रायः सभी चीजों में सं. से पहले मंदी, पश्चात तेजी जोर पकड़ती जायेगी। शेयर्स—पहले हफ्ते में मंदी, दूसरे में दुतर्फा घटा-बढ़ी, तीसरे में तेजी; चौथे हफ्ते बाजार पलटते ही सौदा काटकर मुनाफा खा लें!

ता० ३ अगस्त को वृष-लग्न का उदय दो बार होगा।

भाद्रपद कृष्ण ४ से आश्विन कृष्ण ३ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद ऋतु।

वार (दिन ३०)	सितम्बर १९७७ ई०	भाद्रपद कृष्णपक्ष					नक्षत्र					योग					करण						चं. राशि-प्रवेश		दिनमान	काशी सूर्य उ.स.अ. भारतीय स्टैं. टा.				
		तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	राशि	घं. मि.	घ. पल	उ. घं. मि.	मध्याह्न घण्टा	मिनट	सेकेण्ड	अ. घं. मि.
गु.	१	४	४८	१५	१	०	रेवती	३०	२८	१७	५३	गण्ड	२१	१५	१४	१२	बव	१२	३५	बा.	१	०	मे.	१७/३	३१/२०	५/४२	११	५८	४	१९
शु.	२	५	५१	५८	२	२९	अश्वि.	३५	१८	१९	४९	वृद्धि	२१	८	१४	९	कौ.	१३	४५	तै.	२	२९			१६	४२	११	५७	४५	१३
श.	३	६	५६	५५	४	२९	भरणी	४१	२५	२२	१७	ध्रुव	२२	५	१४	३३	ग.	१५	२९	व.	४	२९			१३	४३	११	५७	२५	१२
र.	४	७	६०	०	२४	०	कृत्ति.	४८	२८	१	६	व्या.	२३	५५	१५	१७	भ.	१७	३९	बव	५	४४	वृ.	४/८	९	४३	११	५७	६	११
चं.	५	७	२	४२	६	४९	रोहि.	५५	५३	४	५	हर्षण	२६	१०	१६	१२	बव	६	४९	बा.	२०	३			६	४४	११	५६	४६	१०
मं.	६	८	८	५०	९	१६	मृग.	६०	०	२४	०	वज्र	२८	२८	१७	७	कौ.	९	१६	तै.	२२	२६	मि.	१७/३३	२	४४	११	५६	२६	९
बु.	७	९	१४	३८	११	३५	मृग.	३	५	६	५८	सिद्धि	३०	२५	१७	५४	ग.	११	३५	व.	०	३४			३०/५९	४४	११	५६	५	८
गु.	८	१०	१९	२८	१३	३२	आर्द्रा	९	३३	९	३४	व्यती.	३१	३२	१८	२२	भ.	१३	३२	बव	२	१६			५५	४५	११	५५	४५	७
शु.	९	११	२३	८	१५	०	पुनर्वसु	१४	५२	११	४२	वरी.	३१	४३	१८	२६	बा.	१५	०	कौ.	३	२६	क.	५/१३	५२	४५	११	५५	२४	६
श.	१०	१२	२५	१८	१५	५२	पुष्य	१८	४५	१३	१५	परि.	३०	४३	१८	२	तै.	१५	५२	ग.	४	०			४८	४५	११	५५	४	५
र.	११	१३	२५	५३	१६	७	आश्ले.	२१	५	१४	१२	शिव	२८	२८	१७	९	व.	१६	७	भ.	३	५७	सिं.	१४/१२	४४	४६	११	५४	४३	३
चं.	१२	१४	२५	०	१५	४६	मघा	२२	३	१४	३५	सिद्ध	२५	५	१५	४८	श.	१५	४६	च.	३	२०			४१	४६	११	५४	२२	२
मं.	१३	३०	२२	४५	१४	५२	पू. फा.	२१	३५	१४	२५	साध्य	२०	३५	१४	१	ना.	१४	५३	कि.	२	१३	कं.	२०/१८	३७	४७	११	५४	१	१
		भाद्रपद शुक्लपक्ष																												
बु.	१४	१	१९	२३	१३	३२	उ. फा.	२०	३	१३	४८	शुभ	१५	१३	११	५२	बव	१३	३२	बा.	०	४२			३४	४७	११	५३	४०	०
गु.	१५	२	१५	१०	११	५१	हस्त	१७	४०	१२	५१	शुक्ल	९	८	९	२६	कौ.	११	५१	तै.	२२	५२			३०	४७	११	५३	१८	१९/५८
शु.	१६	३	१०	१३	९	५३	चित्रा	१४	३३	११	३७	ब्रह्म	५२/२	२५/५५	६/३	४६/६	ग.	९	५३	व.	२०	४७	तु.	०/१९	२६	४८	११	५२	५७	५८
श.	१७	४	५४/४	५३/२०	७/५	४५/२९	स्वाती	११	३	१०	१३	वैधृति	४८	०	१	०	भ.	७	४५	बव	१८/५	३७/२९			२३	४८	११	५२	३६	५
र.	१८	६	५३	३०	३	१२	विशा.	७	१८	८	४३	विष्कु.	४०	३५	२२	२	कौ.	१६	२०	तै.	३	१२	वृ.	३/९	१९	४८	११	५२	१५	५
चं.	१९	७	४७	४५	०	५५	अनु.	५३/९	२३/१८	७/८	१०/४०	प्रीति	३३	५	१९	३	ग.	१४	४	व.	०	५५			१५	४९	११	५१	५३	५
मं.	२०	८	४२	१३	२२	४२	मूल	५६	३	४	१४	आयु.	२५	४८	१६	८	भ.	११	४९	बव	२२	४२	ध.	५/४०	१२	४९	११	५१	३२	५
बु.	२१	९	३७	०	२०	३७	पू. षा.	५२	४५	२	५५	सौभा.	१८	४०	१३	१७	बा.	९	३९	कौ.	२०	३७			८	४९	११	५१	११	५
गु.	२२	१०	३२	१०	१८	४२	उ. षा.	४९	५५	१	४८	शोभ.	११	४८	१०	३३	तै.	३	४०	ग.	१८	४२	म.	६/३६	४	५०	११	५०	५०	५
शु.	२३	११	२७	५५	१७	०	श्रवण	४७	४५	०	५६	अति.	५५/४	२५/१०	८/८	१०/४०	व.	५	५१	भ.	१७/४	०/१८			१	५०	११	५०	२८	५
श.	२४	१२	२४	४८	१५	३६	धनि.	४६	१८	०	२२	धृति.	५४	२०	३	३५	बा.	१५	३६	कौ.	३	५	कुं.	१०/३७	२९/५६	५१	११	५०	८	४
र.	२५	१३	२१	२३	१४	३४	शत.	४५	५०	०	११	शूल	४९	५५	१	४९	तै.	१४	३३	ग.	२	१५			५३	५१	११	४९	४७	४
चं.	२६	१४	२०	१३	१३	५६	पू. भा.	४६	२८	०	२६	गण्ड	४६	२३	०	२४	व.	१३	५६	भ.	१	५२	मी.	१९/२०	५०	५१	११	४९	२६	४
मं.	२७	१५	१९	४८	१३	४७	उ. भा.	४८	१५	१	१०	वृद्धि	४३	४५	२३	२२	बव	१३	४७	बा.	१	५९			४६	५२	११	४९	५	४
		आश्विन कृष्णपक्ष																												
बु.	२८	१	२०	४५	१४	१०	रेवती	५१	२५	२	२६	ध्रुव	४२	१५	२२	४६	कौ.	१४	१०	तै.	२	३९			४२	५२	११	४८	४५	४
गु.	२९	२	२३	८	१५	७	अश्वि.	५५	५५	४	१४	व्याघा.	४१	५०	२२	३६	ग.	१५	७	व.	३	५१	मे.	२/२६	३९	५२	११	४८	२५	४
शु.	३०	३	२६	४५	१६	३५	भरणी	६०	०	२४	०	हर्षण	४२	२०	२२	४९	भ.	१६	३५	बव	५	३३			३५	५३	१०	४८	५	४

[A]युक्त; निशीथकाल घं.२३मि.४५बजे से घं.०मि.९बजे तक। शुद्ध रोहिणी नक्षत्रोपवासी किन्हीं वैष्णवों की श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी ८ व्रत। कालाष्टमी ८। यायिजय योग घं.१मि.६ बजे से घं.६मि.४९ बजे तक। त्रिपुष्कर योग घं. १ मि. ६ बजे समाप्त। ७ तिथि-वृद्धि। श्रीसन्तज्ञानेश्वर-जयन्ती। [E मंत्र से कुश-ग्रहण। स्नान-दान श्राद्ध की दर्श अमावस्या। भौमवती ३०। पोला(वृषभोत्सव)। ☉ सूर्य उ. फा. में घं. ८ मि. २६ बजे, सूर्य-सूर्य स्त्री-स्त्री योग, नाग वाहन, जला नाड़ी, तदीश बुध-कहीं खंड वर्षा, कहीं अनावृष्टि हो। [K व्रत। श्रवण में श्रीविष्णु-परिवर्तनोत्सव, सायंकाल पूजा। सूर्य सायन तुला में घं. ८ मि. ५९ बजे। शरद-सम्पात् (सूर्य का दक्षिणगोल-प्रवेश) देवताओं की रात्रि, दैत्यों का दिनोदय। राष्ट्रीय आश्विन मास आरम्भ। यायिजय योग घं. १ मि. ४८ बजे समाप्त। स्थायीजय योग घं. १७ मि. ० बजे शुरू। [L १२ व्रत, पुत्रार्थियों को व्रतारम्भ करना चाहिये। [illegible] न्ती। स्थायीजय योग घं. ० मि. ५६ बजे समाप्त। यायिजय योग घं.१५ मि.३६ बजे प्रारम्भ। द्विपुष्कर योग घं.५ मि. ५१ बजे से–[शेषांश पृष्ठ १६ पर]

सितम्बर सन् १९७७ ई० । भाद्रपद कृष्ण ४ से आश्विन कृष्ण ३ तक, संवत् २०३४ विक्रमीय । राष्ट्रीय भाद्रपद मास १० से राष्ट्रीय आश्विन मास ८ तक, शके १८९९ शालिवाहन । रमजान १६ से सव्वाल १५ तक, १३९७ हिजरी ।

Gगौरी-तृतीया ३ । वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रास्त घं.२० मि.४ बजे । पत्थर चौथ, आज चतुर्थी में चन्द्र-दर्शन का निषेध है । वाराहावतार ३ । मन्वादि ३ । स्थायीजय योग घं. ९ मि. ५३ बजे से घं. ११ मि. ३७ बजे तक । सव्वाल १० माह शुरू । सिद्ध विनायक व्रत, विश्वकर्मा-पूजा । सूर्य की कन्या-संक्रांति घं. १८ मि. ३० बजे मु. १५ महर्घ ; पुण्यकाल घं. १२ मि. ६ बजे से सूर्यास्त तक । गृह वस्त्र-दान, गोदावरी में स्नान, संकल्पादि में प्रयोजनीय शरद ऋतु आरम्भ । ईदुल-फितर (रमजान-ईद) ।

वार	उदित तिथि	सौर (सिंह) भाद्र.मास ३१ दिन	रमजान ३० दिन १३९७ हि०	राष्ट्रीय भाद्रपद मास ३१ दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि (मुद्दई) स्थायी (मुद्दालेह) जय योग, सन्धिकर, योगादि
गु.	४	१६	१६	१०	१	–पंचक समाप्त घं. १७ मि. ५३ बजे । भद्रा घं. ० मि. ९ बजे समाप्त । बहुला ४ व्रत । **संकष्टी** श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय घं. २० मि. ३६ बजे । गो-पूजा । गवान्न-दान । महा(व्यति)पात घं. १३
						– [मि. १० बजे से घं. १९ मि. २७ बजे तक । (B घं.९ मि.१६ बजे तक । शहादत-ए-हजरतअली ।
शु.	५	१७	१७	११	२	
श.	६	१८	१८	१२	३	–हलषष्ठी(ललहीछठ)६ । पुत्रार्थियों को व्रतारम्भ करना चाहिये ।
र.	७	१९	१९	१३	४	–भद्रा घं.४मि.२९बजे से घं.१७मि.३९बजे तक । भानुसप्तमी७पर्व । त्रिपुष्कर योग घं.४मि.२९ बजे प्रा. ।
चं.	७	२०	२०	१४	५	–श्रीशीतला ७ व्रत । निशीथव्यापिनी अष्टमी में श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रत स्मार्तों का, रोहिणीनक्षत्र-A
मं.	८	२१	२१	१५	६	–उदयव्यापिनी अष्टमी में किन्हीं वैष्णवों का जन्माष्टमी ८ व्रत । मन्वादि ८ । गोकुलाष्टमी ८ । श्री-जयन्ती (रामानुज) । पौराणिक अगस्त्योदय घं. ११ मि. ५० बजे । स्थायीजय योग घं. ५ मि. ४४ बजे सेB
बु.	९	२२	२२	१६	७	–गोगा-नवमी । सन्धिकर योग घं. ११ मि. ३ बजे प्रारम्भ ।
गु.	१०	२३	२३	१७	८	–भद्रा घं. ० मि. ३४ बजे से घं. १३ मि. ३२ बजे तक । सन्धिकर योग घं.५ मि. ४५ बजे समाप्त । यायिजय योग घं. १३ मि. ३२ बजे प्रारम्भ । [C का आखरी जुम्मा ।
शु.	११	२४	२४	१८	९	–जया११एकादशी व्रत सबका । यायिजय योग घं.५मि.४५ बजे समाप्त । जमात-उल-विदा । रमजानC
श.	१२	२५	२५	१९	१०	–शनि प्रदोष १२ व्रत, पुत्रार्थियों को व्रतारम्भ करना चाहिये । जैनों का महापर्व पर्युषण प्रारम्भ ।D
र.	१३	२६	२६	२०	११	–भद्रा घं.१६ मि.७ बजे प्रारम्भ । मास शिवरात्रि १३ व्रत । अघोरचतुर्दशी (कैलाश-यात्रा) । कलियुगादि-१३ पूर्वाह्णे । शबेकद्र । यायिजय योग घं. १४ मि. १२ बजे समाप्त । विनोबा जन्म-दिवस, भू-जयन्ती ।
चं.	१४	२७	२७	२१	१२	–भद्रा घं. ३ मि. ५७ बजे समाप्त । [D यायिजय योग घं. १५ मि. ५२ बजे प्रारम्भ ।
मं.	३०	२८	२८	२२	१३	–अन्वाधान । पिठोरा-व्रत ३० । मंगलागौरी-पूजन । **कुशोत्पाटनी अमावस्या** पुण्यतमा । 'ॐ हूं फट्' इसE
बु.	१	२९	२९	२३	१४	–इष्टि । श्रावणमासीय नक्त व्रत का अन्तिम दिन । राष्ट्रभाषा हिन्दी-दिवस । महा(वैधृति)पात घं. १६F
गु.	२	३०	३०	२४	१५	–◡चंद्र-दर्शन मु. ३० साम्यार्घ । सिंहार्क एवं हस्त नक्षत्र में सामवेदियों का उपाकर्म । यायिजय योग घं. ११ मि. ५१ बजे से घं. १२ मि. ५१ बजे तक । [F मि.१६ बजे से घं. २१ मि. ४१ बजे तक ।
शु.	३	३१	१	२५	१६	–भद्रा घं. २० मि. ४७ बजे प्रारम्भ । हरितालिका (तीज) व्रत ३, स्त्रियों को अवश्य करना चाहिये ।G
श.	४	१	२	२६	१७	–भद्रा घं. ७ मि. ४५ बजे समाप्त । आपस्तम्ब श्रावणी (अथर्ववेदीय-श्रावणी); **ऋषिपंचमी ५ व्रत** । मध्याह्न में सप्तर्षि-पूजा । यायिजय योग घं. ७ मि. ४५ बजे से घं. १० मि. १३ बजे तक । ५ तिथि-क्षय । सौर आश्विन मास प्रारम्भ । जैन-सम्वत्सरी ; पर्यूषण समाप्त ।
र.	६	२	३	२७	१८	–महारविवार व्रत । लोलार्क षष्ठी ६ व्रत (लोलारक छठ) ; पुत्रार्थियों को काशी के लोलार्क कुण्ड में स्नान करना चाहिये । स्वामी कार्तिकेय-दर्शन । सूर्य ६ । देव ६ । अनुराधा में ज्येष्ठागौरीका आवाहन ।
चं.	७	३	४	२८	१९	–अपराजिता ७ । सन्तान ७ । मुक्ताभरण ७ । ज्येष्ठा में ज्येष्ठागौरी का पूजन । यायिजय योग घं.५H
मं.	८	४	५	२९	२०	–भद्रा घं. ० मि. ५५ बजे से घं. ११ मि. ४९ बजे तक । **दुर्गाष्टमी ८ व्रत** । दूर्वाष्टमी ८ व्रत । राधाष्टमी ८ । काशी के लक्ष्मीकुण्ड में स्नान एवं सोलह दिनात्मक महालक्ष्मी-व्रतारम्भ । मूल में ज्येष्ठागौरी का विसर्जन ।
बु.	९	५	६	३०	२१	–श्रीचन्द्र नवमी ९ । अदुःख नवमी । गौरी-पूजन । भागवत सप्ताह आरम्भ । उदासीन सम्प्रदायमहोत्सव ।
गु.	१०	६	७	३१	२२	–दशावतार १० । यायिजय योग घं. १८ मि. ४२ बजे प्रारम्भ । शुक्र☌मघा युति घं. ८ मि. २ बजे, मघा से शुक्र ०°-२५′ उ. । [H मि. ४९ बजे से घं. ७ मि. १० बजे तक ।
शु.	११	७	८	१	२३	–भद्रा घ. ५ मि.५१ बजे से घं. १७ मि. ० बजे तक । **पद्मा ११ एकादशी व्रत** सबका । श्रवण-द्वादशी-K
श.	१२	८	९	२	२४	–पंचक प्रारम्भ घं.१२ मि.३७ बजे । **वामन द्वादशी व्रत** । वामनावतार । वामन-जयन्ती । **शनि प्रदोष**-L
र.	१३	९	१०	३	२५	–पंचक । मतान्तरसे महारविवार व्रत ; लवणरहित भोजन विहित है । यायिजय योग घं.०मि२२बजेतक ।
चं.	१४	१०	११	४	२६	–पंचक । भद्रा घं.१३ मि.५६ बजे प्रारम्भ । मध्याह्नव्यापिनी चतुर्दशी में **श्रीअनन्त चतुर्दशी १४ व्रत**M
मं.	१५	११	१२	५	२७	–पंचक । भद्रा घं.१ मि.५२ बजे समाप्त । अन्वाधान । स्नान-दान की भाद्रपदी पूर्णिमा १५पुण्यतमा ।N
बु.	१	१२	१३	६	२८	–पंचक । इष्टि । प्रतिपदा-श्राद्ध । आश्विन में दुग्ध-त्याग करना चाहिये । **अशून्य शयन २ व्रत**, चन्द्रोदय घं. १८ मि. ३२ बजे । फसली सन् १३८५ प्रारम्भ कृषिकार्यार्थ । आश्विन मास प्रारम्भ ।
गु.	२	१३	१४	७	२९	–पंचक समाप्त घं. २ मि. २६ बजे । द्वितीया-श्राद्ध ।
शु.	३	१४	१५	८	३०	–भद्रा घं. ३ मि. ५१ बजे से घं. १६ मि. ३५ बजे तक । तृतीया-श्राद्ध । भरणी-श्राद्ध । **संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत**, चन्द्रोदय घं. १९ मि. २१ बजे ।

ता. ग्रह र. नक्ष. चरण(नवां)प्रवे.स्टैं.टा.

सित.	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
१	मं.	♂	आर्द्रा	१	ध.	१४	७
३	सू.	⊙	पू. फा.	२	कं.	१	१
३	शु.	♀	पुष्य	४	वृ.	१५	४५
३	रा.	☊	हस्त	४	क.	१८	१७
३	के.	☋	रेवती	२	म.	१८	१७
४	बु. R	☿	पू. फा.	२	तु.	१०	३६
६	शु.	♀	आश्लेषा	१	ध.	१०	४७
६	सू.	⊙	पू. फा.	३	तु.	११	५०
७	मं.	♂	आर्द्रा	२	म.	०	४५
७	श.	♄	सिं.मघा	१	मे.	११	१७
८	बु. R	☿	पू. फा.	१	कं.	०	१४
९	शु.	♀	आश्लेषा	२	म.	५	३६
९	सू.	⊙	पू. फा.	४	वृ.	२२	१२
१२	शु.	♀	आश्लेषा	३	कुं.	०	१३
१२	मं.	♂	आर्द्रा	३	कुं.	१४	९
१३	सू.	⊙	उ.फा.	१	ध.	८	२६
१३	गु.	♃	आर्द्रा	२	म.	२१	४५
१४	बु.	☿	मार्गी	—	—	२०	३
१५	शु.	♀	आश्लेषा	४	मी.	१४	३१
१६	सू.	⊙	कं.उ.फा	२	म.	१८	३०
१७	शु.	♀	सिं.मघा	१	मे.	१२	५१
१८	मं.	♂	आर्द्रा	४	मी.	६	५८
२०	ने.	♆	ज्येष्ठा	२	म.	१	५०
२०	सू.	⊙	उ.फा.	३	कुं.	४	२५
२०	शु.	♀	मघा	२	वृ.	६	५५
२१	बु.	☿	पू. फा.	२	कं.	९	८
२३	शु.	♀	मघा	३	मि.	१	२५
२३	सू.	⊙	उ.फा.	४	मी.	१४	१४
२३	प्लू.	P	हस्त	४	क.	२२	१९
२४	मं.	♂	पुनर्वसु	१	मे.	३	३७
२४	बु.	☿	पू. फा.	३	तु.	७	४६
२५	शु.	♀	मघा	४	क.	१८	३६
२६	बु.	☿	पू. फा.	४	वृ.	१७	१३
२६	सू.	⊙	हस्त	१	मे.	२३	५३
२८	शु.	♀	पू. फा.	१	सिं.	१२	८
२८	बु.	☿	उ.फा.	१	ध.	२१	५
३०	मं.	♂	पुनर्वसु	२	वृ.	४	४७
३०	सू.	⊙	हस्त	२	[illegible]	९	२६
३०	बु.	☿	कं.उ.फा	२	म.	२१	२०

ता. ११ सितम्बर को बुध उदय पूर्व में

ग्रहों के लत्ता-नक्षत्र-निर्णय में प्राचीन ज्योतिषाचार्यों एवं पूर्ववर्ती पंचांगकारों की परम्परानुसार अभिजित् की गणना नहीं की गयी है। नवांश के खाने में वृष नवांश वृ से, वृश्चिक नवांश 'वृं' अक्षर से सूचित किया गया है।

सितम्बर		स्थ. काशी के० अजेका सांपा.का.			प्रातः स्टैं.टा.५-२९ बजे सूर्य का दैनिक स्पष्ट ⊙				दैनिक गति		दै.क्रां. उत्तर		चित्रापक्षीय अर्ध दैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट: चं. स्पष्ट घं.५ मि.२९ बजे का				अर्धदैनिक गति			चं.स्पष्ट घं.१७ मि.२९ बजे का				अर्धदैनिक गति		
ता	वा.	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	वि.
१	गु.	२२	३९	१६	४	१४	५४	२	५८	२	८	२४	११	२३	३०	२१	६	१७	१०	११	२९	४७	३१	६	१२	४२
२	शु.	२२	४३	१२	४	१५	५२	४	५८	५	८	२	०	६	०	१३	६	८	४१	०	१२	८	५४	६	५	८
३	श.	२२	४७	९	४	१६	५०	९	५८	८	७	४०	०	१८	१४	२	६	२	६	०	२४	१६	८	५	५९	३८
४	र.	२२	५१	५	४	१७	४८	१७	५८	९	७	१८	१	०	१५	४६	५	५७	४५	१	६	१३	३१	५	५६	२९
५	चं.	२२	५५	२	४	१८	४६	२६	५८	११	६	५६	१	१२	१०	०	५	५५	४९	१	१८	५	४	५	५५	४८
६	मं.	२२	५८	५८	४	१९	४४	३७	५८	१३	६	३४	१	२४	१	३७	५	५६	२३	१	२९	५८	०	५	५७	३३
७	बु.	२३	२	५५	४	२०	४२	५०	५८	१५	६	१२	२	५	५५	३३	५	५९	१९	२	११	५४	५२	६	१	३६
८	गु.	२३	६	५२	४	२१	४१	५	५८	१८	५	४९	२	१७	५६	२८	६	४	२३	२	२४	०	५१	६	७	३८
९	शु.	२३	१०	४८	४	२२	३९	२३	५८	१९	५	२७	३	०	८	२९	६	११	[illegible]	३	६	१३	४५	६	१५	१३
१०	श.	२३	१४	४५	४	२३	३७	४२	५८	२०	५	४	३	१२	३४	५८	६	१९	२७	३	१८	५४	२५	६	२३	४९
११	र.	२३	१८	४१	४	२४	३६	२	५८	२३	४	४१	३	२५	१८	१४	६	२८	२१	४	१	४६	३५	६	३२	५२
१२	चं.	२३	२२	३८	४	२५	३४	२५	५८	२५	४	१८	४	८	१९	२७	६	३७	२०	४	१४	५६	४७	६	४१	३९
१३	मं.	२३	२६	३४	४	२६	३२	५०	५८	२७	३	५५	४	२१	३८	२६	६	४५	४७	४	२८	२४	१३	६	४९	३८
१४	बु.	२३	३०	३१	४	२७	३१	१७	५८	२९	३	३२	५	५	१३	५१	६	५३	९	५	१२	७	०	६	६	१९
१५	गु.	२३	३४	२७	४	२८	२९	४६	५८	३०	३	९	५	१९	३	१९	६	५९	५	५	२६	२	२४	७	१	२८
१६	शु.	२३	३८	२४	४	२९	२८	१६	५८	३२	२	४६	६	३	३	५२	७	३	२४	६	१०	७	१६	७	४	५७
१७	श.	२३	४२	२१	५	०	२६	४८	५८	३४	२	२३	६	१७	१३	१३	७	६	७	६	२४	१८	२०	७	६	५३
१८	र.	२३	४६	१७	५	१	२५	२२	५८	३६	२	०	७	१	२५	१३	७	७	२०	७	८	३२	३३	७	७	२४
१९	चं.	२३	५०	१४	५	२	२३	५८	५८	३७	१	३७	७	१५	३९	५७	७	७	१२	७	२२	४७	९	७	६	४१
२०	मं.	२३	५४	१०	५	३	२२	३५	५८	३९	१	१३	७	२९	५३	५०	७	५	५४	८	६	५९	४४	७	४	५०
२१	बु.	२३	५८	७	५	४	२१	१४	५८	४०	०	५०	८	१४	४	३४	७	३	३०	८	२१	८	४	७	१	५३
२२	गु.	०	२	३	५	५	१९	५४	५८	४१	०	२७	८	२८	९	५७	७	०	२	९	५	९	५९	६	५७	५४
२३	शु.	०	६	०	५	६	१८	३५	५८	४४	द०	३	९	१२	७	५३	६	५५	३०	९	१९	३	२३	६	५२	५१
२४	श.	०	९	५६	५	७	१७	१९	५८	४६	०	२०	९	२५	५६	१४	६	४९	७	१०	२	४६	११	६	४६	४८
२५	र.	०	१३	५३	५	८	१६	५	५८	४७	०	४३	१०	९	३२	५९	६	४३	२७	१०	१६	१६	२६	६	३९	५३
२६	चं.	०	१७	५०	५	९	१४	५२	५८	४९	१	७	१०	२२	५६	१९	६	३६	११	१०	२९	३२	३०	६	३२	२१
२७	मं.	०	२१	४६	५	१०	१३	४१	५८	५२	१	३०	११	६	४	५१	६	२८	२८	११	१२	३३	१९	६	२४	३४
२८	बु.	०	२५	४३	५	११	१२	३३	५८	५३	१	५३	११	१८	५७	५३	६	२०	४१	११	२५	१८	३४	६	१६	५५
२९	गु.	०	२९	३९	५	१२	११	२६	५८	५५	२	१७	०	१	३५	२९	६	१३	१३	०	७	४८	४५	६	९	५१
३०	शु.	०	३३	३६	५	१३	१०	२१	५८	५८	२	४०	०	१३	५८	३६	६	६	४१	०	२०	५	१७	६	३	५०

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

सित. तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध: सम्मुख	वाम+	दक्षिणR	पञ्चशलाका-वेध	लत्ता
चालू	केतु	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष ♂	मूल	उ. फा.	पुष्य ♀
,,	गुरु	आर्द्रा	पू. षा.	हस्तP	उ. भा.	पू. षा.	पू.फा. ⊙☿
१	मंगल	आर्द्रा	पू. षा.	हस्तP	उ. भा.	पू. षा.	पुष्य ♀
३	राहु	हस्त	उ. भा.	पू. षा.	आर्द्रा ♃ ♂	उ. भा	उ. षा.
६	शुक्र	आश्लेषा	अनुराधा	मघ.	धनिष्ठा	धनिष्ठा	मृगशीर्ष
७	शनि	मघा	भरणी	श्रवण	आश्लेषा ♀	श्रवण	अनुराधा
१३	सूर्य	उ. फा.	रेवती ☋	उ. ष..	पुनर्वसु	रेवती ☋	धनिष्ठा
१७	शुक्र	मघा	भरणी	श्रवण	आश्लेषा	श्रवण	आ. ♃ ♂
२४	मंगल	पुनर्वसु	मूल	उ. फा. ⊙	पू. भा.	मूल	आश्लेषा
२६	सूर्य	हस्त	उ. भा.	पू. षा.	आर्द्रा ♃	उ. भा.	शतभिषा
२८	शुक्र	पू. फा.	अश्विनी	अभिजित्	पुष्य	अश्विनी	पुनर्वसु ♂
२८	बुध	उ. फा.	रेवती ☋	उ. षा.	पुनर्वसु ♂	रेवती ☋	आर्द्रा ♃

आकाशी-लक्षण—ता. ४ को मंगल गुरु युति वृष्टि-अवरोधक है तथापि पूर्वाफाल्गुनी में ता. १,३,६,७,११ को सामान्य वर्षा का योग बन गया है जो अच्छा ही है। पूर्वा के बाद उत्तरा का पानी करीब-करीब हानिकारक ही होता है। इसमें स्वच्छ धूप हुआ करे तो सौभाग्य की बात है; किंतु यहाँ कन्या-संक्रान्ति वायु-मण्डल में पड़ गयी है। गु.मं. से केंद्रस्थ सूर्य राहु पर मंगल की पूर्ण दृष्टि है। अतः तीव्र धूप के बाद ही अनिष्टकर वर्षा शुरू हो जाया करेगी। ता. [illegible] व ३० को विशेषतः वर्षा सम्भावित है। तीसरे हफ्ते से हवा में सर्दी भी आ जायेगी। सुदूर पूर्वोत्तरीय भाग में भारी तूफान की आशंका है।

स्पष्टग्रह एवं दै. गति प्रात: ५।२९ स्टैं. टा.

ता. सित.	♂ मं. रा.	अं.	क.	ग. क.	☿ बु. R रा.	अं.	क.	ग. क.	♃ गु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♀ शु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♄ श. रा.	अं.	क.	ग. क.	☋ रा. रा.	अं.	क.	♅ ह. रा.	अं.	क.	♆ ने. रा.	अं.	क.	♇ प्लू. रा.	अं.	क.
१	२	६	२७	३७	४	२२	५९	५३	२	८	१७	९	३	१०	२७	७१	३	२९	१४	७	५	२३	२८	६	१५	४	७	१९	५०	५	१९	११
४	२	८	१८	३७	४	२०	१२	५८	२	८	४३	९	३	१४	१	७२	३	२९	३६	७	५	२३	१९	६	१५	११	७	१९	५१	५	१९	१७
७	२	१०	७	३६	४	१७	२१	५२	२	९	९	८	३	१७	३६	७२	३	२९	५८	७	५	२३	९	६	१५	१८	७	१९	५२	५	१९	२३
१०	२	११	५६	३६	४	१४	५९	३५	२	९	३२	८	३	२१	१२	७२	४	०	२०	७	५	२२	५९	६	१५	२६	७	१९	५३	५	१९	२९
१३	२	१३	४३	३५	४	१३	३६+	१०+	२	९	५५	७	३	२४	४८	७२	४	०	४२	७	५	२२	५०	६	१५	३४	७	१९	५५	५	१९	३५
१६	२	१५	२८	३५	४	१३	३३	१८	२	१०	१७	७	३	२८	२५	७३	४	१	३	७	५	२२	४०	६	१५	४२	७	१९	५७	५	१९	४२
१९	२	१७	१२	३४	४	१४	५४	४५	२	१०	३६	६	४	२	३	७३	४	१	२४	७	५	२२	३१	६	१५	५१	७	१९	५९	५	१९	४९
२२	२	१८	५५	३४	४	१७	१	६७	२	१०	५५	६	४	५	४१	७३	४	१	४५	७	५	२२	२१	६	१६	०	७	२०	२	५	१९	५६
२५	२	२०	३६	३३	४	२१	१२	८५	२	११	१२	५	४	९	२०	७३	४	२	५	७	५	२२	१२	६	१६	९	७	२०	५	५	२०	३
२८	२	२२	१६	३३	४	२५	३८	९६	२	११	२८	५	४	१३	०	७३	४	२	२५	७	५	२२	२	६	१६	१९	७	२०	८	५	२०	१०

भाद्रपद अमान्त ◡☌☉ काशी, मंगलवार
ता. १३।९।७७ ई. भा. स्टैं. टा. घं. १४ मि. ५२
इष्ट सांपातिक काल घं. १४ मि. २३ से. १

ल० ८ / २९ / ३५ / ४५ — द० ६ / १४ / ५० / १६

(कुण्डली: १० ११ — ने. ८ ७ ह. — के. १२ ९ ३ ६ रा. प्लू. — १ २ बु. मं. — ५ ४ र. चं. शु. श. — गु)

☉ कन्या-संक्रांति, काशी, शुक्रवार
ता. १६।९।७७ ई. भा. स्टैं. टा. घं. १८ मि. ३०
इष्ट सांपातिक काल घं. १८ मि. १३ से. २७

ल० ११ / ११ / ३ / ४१ — द० ८ / ९ / ३२ / १४

(कुण्डली: २ १ के. ११ १० — बु. मं. ३ १२ ९ ६ — शु. ४ ५ र. प्लू. श. ७ ८ ने. — गु. श. — चं. ह.)

भाद्रपद पूर्णिमान्त ◡☍☉ काशी, मंगलवार
ता. २७।९।७७ ई. भा. स्टैं. टा. घं. १३ मि. ४७
इष्ट सांपातिक काल घं. १४ मि. १३ से. २

ल० ८ / २७ / ५ / २० — द० ६ / १२ / ० / ५४

(कुण्डली: ११ १० — ने. ८ ७ ह. — चं. के. १२ ९ ३ ६ श. प्लू. र. — १ २ बु. मं. — ५ ४ गु. शु.)

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदय का समय भा. स्टैं. टा. में)

सित. ता.	वा.	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१	गु.	२०	२५	१२	२२	३	० * २३	३ ५	२	१७	४	३४	६	४८	९	१	११	१७	१३	३४	१५	४०	१७	२५	१८	५६
२	शु.	२०	२१	१६	२१	५९	२३	५५	२	१३	४	३०	६	४४	८	५७	११	१३	१३	३०	१५	३६	१७	२१	१८	५२
३	श.	२०	१७	२०	२१	५५	२३	५२	२	९	४	२[illegible]	६	४०	८	५३	११	९	१३	२६	१५	३२	१७	१७	१८	४९
४	र.	२०	१३	२४	२१	५१	२३	४८	२	५	४	२३	६	३७	८	४९	११	५	१३	२२	१५	२८	१७	१३	१८	४५
५	चं.	२०	९	२८	२१	४७	२३	४४	२	१	४	१९	६	३३	८	४५	११	१	१३	१९	१५	२४	१७	९	१८	४१
६	मं.	२०	५	३३	२१	४३	२३	४०	१	५७	४	१५	६	२९	८	४१	१०	५८	१३	१५	१५	२०	१७	६	१८	३७
७	बु.	२०	१	३७	२१	३९	२३	३६	१	५३	४	११	६	२५	८	३७	१०	५४	१३	११	१५	१६	१७	२	१८	३३
८	गु.	१९	५७	४१	२१	३५	२३	३२	१	४९	४	७	६	२१	८	३३	१०	५०	१३	७	१५	१२	१६	५८	१८	२९
९	शु.	१९	५३	४५	२१	३१	२३	२८	१	४५	४	३	६	१७	८	३०	१०	४६	१३	३	१५	८	१६	५४	१८	२५
१०	श.	१९	४९	४९	२१	२७	२३	२४	१	४१	३	५९	६	१३	८	२६	१०	४२	१२	५९	१५	४	१६	५०	१८	२१
११	र.	१९	४५	५३	२१	२३	२३	२०	१	३७	३	५५	६	९	८	२२	१०	३८	१२	५५	१५	०	१६	४६	१८	१७
१२	चं.	१९	४१	५७	२१	१९	२३	१६	१	३४	३	५१	६	५	८	१८	१०	३४	१२	५१	१४	५६	१६	४२	१८	१३
१३	मं.	१९	३८	१	२१	१६	२३	१२	१	३०	३	४७	६	१	८	१४	१०	३०	१२	४७	१४	५३	१६	३८	१८	९
१४	बु.	१९	३४	५	२१	१२	२३	८	१	२६	३	४३	५	५७	८	१०	१०	२६	१२	४३	१४	४९	१६	३४	१८	५
१५	गु.	१९	३०	९	२१	८	२३	४	१	२२	३	३९	५	५३	८	६	१०	२२	१२	३९	१४	४५	१६	३०	१८	१
१६	शु.	१९	२६	१३	२१	४	२३	०	१	१८	३	३५	५	४९	८	२	१०	१८	१२	३५	१४	४१	१६	२६	१७	५७
१७	श.	१९	२२	१८	२१	०	२२	५६	१	१४	३	३२	५	४५	७	५८	१०	१४	१२	३१	१४	३७	१६	२२	१७	५४
१८	र.	१९	१८	२२	२०	५६	२२	५२	१	१०	३	२८	५	४१	७	५४	१०	१०	१२	२७	१४	३३	१६	१८	१७	५०
१९	चं.	१९	१४	२६	२०	५२	२२	४९	१	६	३	२४	५	३८	७	५०	१०	६	१२	२४	१४	२९	१६	१४	१७	४६
२०	मं.	१९	१०	३०	२०	४८	२२	४५	१	२	३	२०	५	३४	७	४६	१०	३	१२	२०	१४	२५	१६	११	१७	४२
२१	बु.	१९	६	३४	२०	४४	२२	४१	०	५८	३	१६	५	३०	७	४२	९	५९	१२	१६	१४	२१	१६	७	१७	३८
२२	गु.	१९	२	३८	२०	४०	२२	३७	०	५४	३	१२	५	२६	७	३८	९	५५	१२	१२	१४	१७	१६	३	१७	३४
२३	शु.	१८	५८	४२	२०	३६	२२	३३	०	५०	३	८	५	२२	७	३४	९	५१	१२	८	१४	१३	१५	५९	१७	३०
२४	श.	१८	५४	४६	२०	३२	२२	२९	०	४	३	४	५	१८	७	३१	९	४७	१२	४	१४	९	१५	५५	१७	२६
२५	र.	१८	५०	५०	२०	२८	२२	२५	०	४२	३	०	५	१४	७	२७	९	४३	१२	०	१४	५	१५	५१	१७	२२
२६	चं.	१८	४६	५४	२०	२४	२२	२१	०	३८	२	५६	५	१०	७	२३	९	३९	११	५६	१४	१	१५	४७	१७	१८
२७	मं.	१८	४२	५८	२०	२०	२२	१७	०	३५	२	५२	५	६	७	१९	९	३५	११	५२	१३	५७	१५	४३	१७	१४
२८	बु.	१८	३९	३	२०	१७	२२	[illegible]	०	[illegible]	२	४८	५	२	७	१५	९	३१	११	४८	१३	५३	१५	३९	१७	१०
२९	गु.	१८	३५	७	२०	१३	२२	९	०	[illegible]	२	४४	४	५८	७	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	शु.	१८	३१	११	२०	९	२२	५	०	२३	२	४०	४	५४	७	७	९	२३	११	४०	१३	४६	१५	३१	१७	२

भविष्यवाणी–ता. ५ को गु. ☌ मं. युति आर्द्रा में होगी। ता. ७ को शनि मघा नक्षत्र-सिंह राशि में प्रविष्ट होगा; उसी में ता. १३ को चतुर्ग्रही होगी। दक्षिण अफ्रीका में गोरे-कालों की सम्मिलित अंतरिम सरकार के संघटन में जिच उत्पन्न हो जायेगी; खूनी संघर्ष पुनः भड़क उठेगा। विश्वके अन्य अञ्चलोंमें भी जाति-भेद, रंग-भेदके उपद्रवोंसे खून-खराबी होगी। धार्मिक सांप्रदायिक मसलोंको लेकर भारतीय जनतामें भी तीव्र आक्रोश व्याप्त होगा। पश्चिमोत्तरीयभागमें विचित्र प्रकारका संक्रामक रोग फैलेगा। संक्रान्ति-फल-सूर्य कन्यामें गत सं. से ४ वार ५ नक्षत्र मु. १५ पर प्रवेश करते हैं। सट्टे-बाजार में भारी घटा-बढ़ी के कारण संकट-कालीन स्थिति उत्पन्न होगी; अस्थायी मंदी की प्रतिक्रिया के बाद प्रायः सभी जिंसों के भाव तेजी से बढ़ते जायेंगे। शेयर्स–प्रथम सप्ताह में प्रायः भाव टूट जाया करेंगे-दूसरे हफ्ते में दुतर्फी घटा-बढ़ी, तीसरे हफ्ते से हर मंदी की प्रतिक्रिया के बाद भाव बढ़ता जायेगा।

*ता. १ सितम्बर को मिथुन-लग्न का उदय दो बार होगा।

आश्विन कृष्ण ४ से कार्तिक कृष्ण ४ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु ।

वार ३१ दिन	अक्टूबर १९७७ ई०	आश्विन कृष्णपक्ष					नक्षत्र					योग					करण						चं. राशि-प्रवेश		दिनमान	काशी सूर्य उ.म.अ. भारतीय स्टैं. टा.				
		तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	राशि	घं. मि.	घ. पल	उ. घं. मि.	मध्याह्न घण्टा	मिनट	सेकेण्ड	अ. घं. मि.
श.	१	४	३१	३५	१८	३१	भरणी	१	३५	६	३१	वज्र	४३	४३	२३	२२	बा.	१८	३१	कौ.	५	५४	वृ.	१३/८	२९/३२	५/५३	११	४७	४६	१७/४२
र.	२	५	३७	१५	२०	४८	कृति.	८	१३	९	११	सिद्धि	४५	४०	०	१०	कौ.	७	४०	तै.	२०	४८			२८	५४	११	४७	२६	४१
चं.	३	६	४३	२५	२३	१६	रोहि.	१५	३०	१२	६	व्यती.	४७	५५	१	४	ग.	१०	२	व.	२३	१६			२४	५४	११	४७	७	४०
मं.	४	७	४९	३०	१	४३	मृग.	२२	५५	१५	५	वरीया.	५०	२५	१	५७	व.	१२	३०	बव	१	४३	सिं.	१/१६	२१	५५	११	४६	४९	३९
बु.	५	८	५४	५५	३	५३	आर्दा	२९	५८	१७	५४	परिघ	५१	४५	२	३७	बा.	१४	४८	कौ.	३	५३			१७	५५	११	४६	३१	३८
गु.	६	९	५९	१५	५	३७	पुनर्व.	३६	५	२०	२१	शिव	५२	३५	२	५७	तै.	१६	४५	ग.	५	३७	क.	१३/४७	१३	५५	११	४६	१३	३७
शु.	७	१०	६०	०	२४	०	पुष्य	४०	४८	२२	१५	सिद्धि	५२	१५	२	५०	व.	१८	११	अ.	५	५६			१०	५६	११	४५	५५	३६
श.	८	१०	२	०	६	४४	आश्ले.	४३	४५	२३	३०	साध्य	५०	३८	२	११	अ.	६	४४	बव	१८	५७	सिं.	२३/३७	६	५६	११	४५	३८	३५
र.	९	११	३	०	७	९	मघा	४५	२८	०	८	शुभ	४७	३०	०	५७	बा.	७	९	कौ.	१९	०			३	५७	११	४५	२२	३४
चं.	१०	१२	२/५७	१३/२८	६/५	५०/४९	पू. फा.	४४	५३	२३	५४	शुक्ल	४३	०	२३	९	तै.	६	५०	ग.	१९/५	२०/४९			२८/५९	५७	११	४५	६	३३
मं.	११	१४	५५	३०	४	१०	उ. फा.	४२	५०	२३	६	ब्रह्म	३६	५३	२०	५१	अ.	१७	०	श.	४	१०	कं.	४५	५५	५८	११	४४	५०	३२
बु.	१२	३०	५०	८	२	१	हस्त	३९	३३	२१	४७	ऐन्द्र	३०	१८	१८	५	च.	१५	६	ना.	२	१			५२	५८	११	४४	३५	३१
		आश्विन शुक्लपक्ष																												
गु.	१३	१	४३	४३	२३	२८	चित्रा	३०	८	२०	२	वैधृति	२२	२८	१४	५८	किं.	१२	४५	बव	२३	२८	तु.	८/५७	४८	५९	११	४४	२०	३०
शु.	१४	२	३६	४०	२०	३९	स्वाती	३५	५	१८	१	विष्कु.	१४	३	११	३६	बा.	१०	४	कौ.	२०	३९			४५	५९	११	४४	६	२९
श.	१५	३	२९	२०	१७	४४	विशा.	२४	३८	१५	५१	प्रीति	५/५१	१०/२८	६/४	४/३१	तै.	७	१२	ग.	१७/४	४४/१७	वृ.	१०/२४	४१	६/०	११	४३	५३	२८
र.	१६	४	२२	३	१४	४९	अनु.	१९	१३	१३	४१	सौभा.	४७	३३	१	१	अ.	१४	४९	बव	१	२६			३७	०	११	४३	३९	२७
चं.	१७	५	१५	५	१२	२	ज्येष्ठा	१४	३	११	३८	शोभन	३९	५	२१	३९	बा.	१२	२	कौ.	२२	४५	ध.	११/३८	३४	१	११	४३	२७	२६
मं.	१८	६	८	३८	९	२८	मूल	९	३३	९	५०	अति	३१	१५	१८	३१	तै.	९	२८	ग.	२०	२१			३०	१	११	४३	१५	२५
बु.	१९	७	३/५५	०/२९	७/५	१४/२३	पू. षा.	५	४५	८	२०	सुकर्मा	२४	५	१५	४०	व.	७	१४	अ.	१९/५	१९/२३	म.	१४/१	२७	२	११	४३	४	२
गु.	२०	९	५४	५३	३	५९	उ. षा.	३	०	७	१४	धृति	१७	४८	१३	९	बा.	१६	४१	कौ.	३	५९			२३	२	११	४२	५३	२
शु.	२१	१०	५२	२५	३	१	श्रवण	१	१५	६	३३	शूल	१२	२०	१०	५९	तै.	१५	३०	ग.	३	१	कुं.	१८/२३	२०	३	११	४२	४३	२
श.	२२	११	५१	१०	२	३२	धनि.	०	४०	६	२०	गण्ड	७	४८	९	११	व.	१४	४७	अ.	२	३२			१६	४	११	४२	३३	२
र.	२३	१२	५१	५	२	३०	शत.	१	१३	६	३३	वृद्धि	४	१०	७	४४	बव	१४	३१	बा.	२	३०			१३	४	११	४२	२५	२१
चं.	२४	१३	५२	१०	२	५६	पू.भा.	२	५५	७	१४	ध्रुव	१/५८	३०/१०	६/५	४०/५६	कौ.	१४	४३	तै.	२	५६	मी.	१/१	१०	४	११	४२	१७	२०
मं.	२५	१४	५४	१८	३	४८	उ.भा.	५	४०	८	२१	हर्षण	५८	४०	५	३३	ग.	१५	२२	व.	३	४८			६	५	११	४२	९	१९
बु.	२६	१५	५७	३०	५	५	रेवती	९	३०	९	५३	वज्र	५८	२८	५	२८	अ.	१६	२७	बव	५	५	मे.	६/५३	३	५	११	४२	२	१९
		कार्तिक कृष्णपक्ष																												
गु.	२७	१	६०	०	२४	०	अश्वि.	१४	१८	११	४९	सिद्धि	५९	०	५	४२	बा.	१७	५६	कौ.	६	७			२७/५९	६	११	४१	५६	१८
शु.	२८	१	१	४०	६	४७	भरणी	२०	०	१४	७	व्यती.	६०	०	२४	०	कौ.	६	४७	तै.	१८	४८	वृ.	२०/४५	५६	७	११	४१	५१	१७
श.	२९	२	६	४५	८	४९	कृत्ति.	२६	३३	१६	४४	व्यती.	०	१०	६	११	ग.	८	४९	व.	२१	५९			५३	७	११	४१	४७	१६
र.	३०	३	१२	३०	११	८	रोहि.	३३	४०	१९	३९	वरीय	१	५५	६	५४	अ.	११	८	बव	०	२४			४९	८	११	४१	४३	१५
चं.	३१	४	१८	४८	१३	३९	मृगशि.	४१	१०	२२	३६	परिघ.	४	३	७	४५	बा.	१३	३९	कौ.	२	५५	मि.	१/६	४६	८	११	४१	४०	१५

Cत्रयोदशी-श्राद्ध । **सोमप्रदोष १३ व्रत** ; धन, पुत्रार्थियों को व्रतारम्भ करना चाहिये । यायिजय योग घं. २३ मि. ५४ बजे प्रारम्भ । १३ तिथि-क्षय । ⊙सूर्य चित्रा में घं. १२ मि. ५५ बजे ; सूर्य सूर्य स्त्री स्त्री योग, महिष वाहन; जलानाड़ी, तदीश बुध–विरल वृष्टि हो । [Kवृष्टि । विजयादशमी १० । अश्व गज रथ शस्त्रादि-पूजन । सीमोल्लंघन, विजय-मुहूर्त घं. १३ मि. ८ बजे से घं. १३ मि. ५१ बजे तक । शमी-पूजा । अपराजिता-पूजा । नीलकण्ठ-दर्शन । जई-धारण । राजाओं का पट्टाभिषेक । करग्रहण-मुहूर्त ल. ८ । बौद्धावतार १० । श्रीमाधवाचार्य-जयन्ती । महा(व्यती)पात घं. ८ मि. ५१ बजे से घं. १५ मि. २६ बजे तक । [Lदुग्ध-दान । द्विदल(दाल)-त्याग-व्रतारम्भ । राष्ट्रीय कार्तिक मास आरम्भ । सूर्य सायन वृश्चिक में घं. १८ मि. ११ बजे । हेमन्त ऋतु आरम्भ । ⊙सूर्य स्वाती में घं. २२ मि. २१ बजे, सूर्य सूर्य स्त्री पुरुष योग, जम्बूक वाहन, नीरानाड़ी, तदीश शुक्र–कहीं अनावृष्टि, कहीं स्वल्प वृष्टि हो । [Mबजे तक । सायाह्ननिशीथोभयव्यापिनी [शेषांश पृष्ठ २८ पर]

अक्टूबर सन् १९७७ ई० । आश्विन कृष्ण ४ से कार्तिक कृष्ण ४ तक, संवत् २०३४ विक्रमीय । राष्ट्रीय आश्विन मास ९ से राष्ट्रीय कार्तिक मास ९ तक, शके १८९९ शालिवाहन । सव्वाल १६ से जिल्काद १७ तक, १३९७ हिजरी ।

D अभिजित् मुहूर्त में । ध्वजारोपण । चित्रा-वैधृति व्याप्त है । भगवती दोला पर आयीं, फल-मरण महामारी का भय हो । मातामह-श्राद्ध । दौहित्र-प्रतिपदा । यायिजय योग घं. २० मि. २ बजे से घं. २३ मि. २८ बजे तक । मंगल ☌ पुनर्वसु युति घं. १९ मि. ३५ बजे, पुन. से मं. ५°-५०' द. ।
G नादि । ८ तिथि-क्षय । श्रीभवानी अन्नपूर्णा-परिक्रमा घं. ७ मि. १४ बजे प्रारम्भ । अनुदया महादुर्गाष्टमी ८ व्रत । कुमारी-पूजा । महालक्ष्म्याष्टमी । अनुदया बुधाष्टमी ८ ।

वार	तारीखें: उदित तिथि	सौर(कं.) आश्वि.मा. ३१ दि.	सव्वाल २९ दिन हिजरी	राष्ट्रीय आश्विनमास ३० दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि(मुद्दई) स्थायी(मुद्दालेह) जय योग, सन्धिकर, योगादि ।
श.	४	१५	१६	९	१	—चतुर्थी-श्राद्ध । चरखा-जयन्ती । [A श्रीलालबहादुर शास्त्री-जयन्ती । [F गोदावरी में स्नान ।
र.	५	१६	१७	१०	२	—पंचमी-श्राद्ध । यायिजय योग घं. ९ मि. ११ बजे से घं. २० मि. १८ बजे तक । श्रीगांधी-जयन्ती । A
चं.	६	१७	१८	११	३	—भद्रा घं. २३ मि. १६ बजे प्रारम्भ । षष्ठी-श्राद्ध । चन्द्रषष्ठी ६ व्रत, चन्द्रोदय घं. २२ मि. २ बजे ।
मं.	७	१८	१९	१२	४	—भद्रा घं. १२ मि. ३० बजे समाप्त । सप्तमी-श्राद्ध । द्विपुष्कर योग घं. ५ मि. ५५ बजे से घं. १५ मि. ५१ बजे तक ।
बु.	८	१९	२०	१३	५	—अष्टमी-श्राद्ध । कालाष्टमी ८ । श्रीमहालक्ष्मी ८ व्रत; चन्द्रोदय घं. २३ मि. ४० बजे । **जीवत्पुत्रिका** ८ व्रत (जिउतिया) । गया-मध्याष्टमी ८ व्रत । अष्टका श्राद्ध । बुधाष्टमी ८ पर्व । काली-जयन्ती ।
गु.	९	२०	२१	१४	६	—मातृनवमी-श्राद्ध । सौभाग्यवती मरी हुई स्त्रियों का भी श्राद्ध आज ही करना चाहिये । जिउतिया व्रत का पारण । यायिजय योग घं. ५ मि. ५५ बजे से घं. २० मि. २१ बजे तक ।
शु.	१०	२१	२२	१५	७	—भद्रा घं. १८ मि. ११ बजे प्रारम्भ । दशमी-श्राद्ध । [B मि. ३० बजे तक । १० तिथि-वृद्धि ।
श.	१०	२२	२३	१६	८	—भद्रा घं. ६ मि. ४४ बजे समाप्त । एकादशी-श्राद्ध । यायिजय योग घं. ६ मि. ४४ बजे से घं. २३ B
र.	११	२३	२४	१७	९	—मघा-श्राद्ध । द्वादशी-श्राद्ध । वैष्णव यति(साधु)संन्यासी आदि का श्राद्ध आज ही करना चाहिये । इन्दिरा एकादशी व्रत सबका । महा(वैधृति)पात घं. १८ मि. १९ बजे से घं. २३ मि. १२ बजे तक ।
चं.	१२	२४	२५	१८	१०	—स्मार्तों की एकादशी व्रत का पारण जल या फल से घं. ६ मि. ५० बजे तक कर लेना चाहिये । C
मं.	१४	२५	२[illegible]	१९	११	—भद्रा घं. ५ मि. ४९ बजे से घं. १७ मि. ० बजे तक । चतुर्दशी-श्राद्ध ; आज ही शस्त्राग्नि आदि से आहतों का श्राद्ध करना चाहिये । मासशिवरात्रि १४ व्रत । यायिजय योग घं. ५ मि. ४९ बजे समाप्त ।
बु.	३०	२६	२७	२०	१२	—अन्वाधान । पितृ-विसर्जन । सर्वपैत्री ३० । अज्ञात तिथिवालों का आज श्राद्ध करना चाहिये । महालय समाप्त । स्नान दान श्राद्ध की दर्श अमावस्या ३० ; शुभवारी प्रजासुखकरी । गजच्छाया योग घं. २१ मि. ४७ बजे तक । भारत में अदृश्य खग्रास सूर्य-ग्रहण ।
गु.	१	२७	२८	२१	१३	—इष्टि । शारदीय नवरात्रारम्भ । कलश-स्थापन घं. ११ मि. १ बजे से घं. ११ मि. ४४ बजे तक D
शु.	२	२८	२९	२२	१४	—☽ चंद्र-दर्शन मु. १५ महर्घ । [E ५ व्रत ; अपराह्णैकदेशव्यापिनी पंचमी में । रविवती ४ ।
श.	३	२९	१	२३	१५	—यायिजय योग घं. १५ मि. ५१ बजे से घं. १७ मि. ४४ बजे तक । जिल्काद ११ माह शुरू ।
र.	४	३०	२	२४	१६	—भद्रा घं. ४ मि. १७ बजे से घं. १४ मि. ४९ बजे तक । **वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत** । उपाङ्गललिता E
चं.	५	३१	३	२५	१७	—मूल के प्रथम चरण में सरस्वती का आवाहन । सोमवती ५ । ☉ सूर्य की तुला-संक्रान्ति घं. ६ मि. २४ बजे मु. १५ महर्घ, सूर्योदय से घं. १० मि. २४ बजे तक विशेष पुण्यकाल । दीप तिल गो रसादि-दान, F
मं.	६	१	४	२६	१८	—पू. षा. नक्षत्र में सरस्वती देवी का पूजन । ओली प्रारम्भ । सौर कार्तिक मास प्रारम्भ ।
बु.	७	२	५	२७	१९	—भद्रा घं. ७ मि. १४ बजे से घं. १८ मि. १९ बजे तक । उ. षा. नक्षत्र में सरस्वती निमित्त बलिदा- G
गु.	९	३	६	२८	२०	—श्रीभवानी अन्नपूर्णादेवी की परिक्रमा घं. ५ मि. २३ बजे समाप्त । **श्रीमहानवमी ९ व्रत** । नवमी में हवनादि करना चाहिये । श्रवण में सरस्वती देवी का विसर्जन । यायिजय योग घं. ६ मि. २ बजे से H
शु.	१०	४	७	२९	२१	—पंचक प्रारम्भ घं. १८ मि. २३ बजे । नवरात्र व्रत का पारण । भगवती हाथी पर गयीं, फल जल K
श.	११	५	८	३०	२२	—पंचक । भद्रा घं. १४ मि. ४७ बजे प्रारम्भ । भरत-मिलाप । **पापांकुशा ११ एकादशी व्रत स्मार्तों** वैष्णवों का । यायिजय योग घं. ६ मि. ४ बजे से घं. ६ मि. २० बजे तक ।
र.	१२	६	९	१	२३	—पंचक । भद्रा घं. २ मि. ३२ बजे समाप्त । **पापांकुशा एकादशी व्रत** चक्रांकित महाभागवतों का । L
चं.	१३	७	१०	२	२४	—पंचक । **सोमप्रदोष १२ व्रत**, धन पुत्रार्थियों को व्रतारम्भ करना चाहिये । यायिजय योग घं. ७ मि. १४ बजे प्रा. ।
मं.	१४	८	११	३	२५	—पंचक । यायिजय योग घं. २ मि. ५६ बजे समाप्त । [H घं. ७ मि. १४ बजे तक । मन्वादि ९ ।
बु.	१५	९	१२	४	२६	—पंचक समाप्त । घं. ९ मि. ३० बजे । अन्वाधान । भद्रा घं. ३ मि. ४८ बजे से घं. १६ मि. २७ M
गु.	१	१०	१३	५	२७	—इष्टि । कार्तिक मास प्रारम्भ । कार्तिक मास में द्विदल(दाल) का त्याग करना चाहिये । यायिजय N
शु.	१	११	१४	६	२८	—**अशून्यशयन २ व्रत** ; चन्द्रोदय घं. १८ मि. २६ बजे । यायिजय योग घं. ६ मि. ७ बजे समाप्त । १ तिथि-वृद्धि ।
श.	२	१२	१५	७	२९	—भद्रा घं. २१ मि. ५९ बजे प्रारम्भ । यायिजय योग घं. १६ मि. ४४ बजे प्रारम्भ । द्विपुष्कर योग घं. ६ मि. ७ बजे से घं. ८ मि. ४९ बजे तक । [N योग घं. ११ मि. ४९ बजे प्रारम्भ ।
र.	३	१३	१६	८	३०	—भद्रा घं. ११ मि. ८ बजे समाप्त । संकष्टी **श्रीगणेश ४ व्रत** । करक ४(करवा चौथ) ; चन्द्रोदय घं. १६ मि. ५६ बजे । यायिजय योग घं. ११ मि. १८ बजे समाप्त । दशरथ-चतुर्थी ।
चं.	४	१४	१७	९	३१	—सरदार पटेल-जयन्ती ।

अक्टू.	ग्रह	चिह्न	राशि नक्षत्र	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
ता. ग्रह रा.नक्ष.चरण(नवां) प्रवे.स्टैं.टा.							
१	शु.	♀	पू.फा.	२	कुं.	५	३३
२	बु.	☿	उ.फा.	३	कुं.	२०	०
३	सू.	☉	हस्त	३	मि.	१८	४६
३	शु.	♀	पू.फा.	३	तु.	२२	५०
४	ह.	♅	स्वाती	४	मी	१२	१३
४	बु.	☿	उ.फा.	४	मी	१७	४०
६	मं.	♂	पुनर्वसु	३	मि.	११	२८
६	बु.	☿	हस्त	१	मे.	१४	५२
६	शु.	♀	पू.फा.	४	वृ.	१५	५७
६	श.	♄	मघा	२	वृ.	२१	५४
७	सू.	☉	हस्त	४	क.	३	५४
८	बु.	☿	हस्त	२	वृ.	११	५६
९	शु.	♀	उ.फा.	१	ध.	८	५८
१०	बु.	☿	हस्त	३	मि.	९	५
१०	सू.	☉	चित्रा	१	[illegible]	१२	५५
१२	शु.	♀	कं.उफा.	२	म.	१	५१
१२	बु.	☿	हस्त	४	क.	६	३२
१३	मं.	♂	क.पुन.	४	क.	१	१२
१३	सू.	☉	चित्रा	२	कं.	२१	४४
१४	बु.	☿	चित्रा	१	सिं.	४	[illegible]
१४	शु.	♀	उ.फा.	३	कुं.	१८	३७
१६	बु.	☿	चित्रा	२	कं.	२	४२
१७	सू.	☉	तु चि.	३	तु.	६	२४
१७	शु.	♀	उ.फा.	४	मी.	११	१६
१८	बु.	☿	तु चि.	३	तु.	१	[illegible]
२०	मं.	♂	पुष्य	१	सिं.	०	२३
२०	बु.	☿	चित्रा	४	वृ.	०	५९
२०	शु.	♀	हस्त	१	मे.	३	५१
२०	सू.	☉	चित्रा	४	वृ.	१५	५६
२२	बु.	☿	स्वाती	१	ध.	१	०
२२	शु.	♀	हस्त	२	वृ.	२०	२०
२३	सू.	☉	स्वाती	१	ध.	२३	२२
२४	बु.	☿	स्वाती	२	म.	१	३८
२४	गु.	♃	वक्री	—	—	१६	२४
२५	शु.	♀	हस्त	३	मि.	२	४३
२६	बु.	☿	स्वाती	३	कुं.	२	५२
२७	सू.	☉	स्वाती	२	म.	७	३६
२७	मं.	♂	पुष्य	२	कं.	१२	३३
२८	बु.	☿	स्वाती	४	मी.	४	३६
२८	शु.	♀	हस्त	४	क.	५	२
३०	बु.	☿	विशाखा	१	मे.	८	४३
३०	सू.	☉	स्वाती	३	कुं.	१५	४६
३०	शु.	♀	चित्रा	१	सिं.	२१	१६

ता. ३ अक्टूबर को बुध अस्त पूर्व में।

अक्टूबर ता.	वा.	स्था.काशी के ० बजे का सांपा.का. घं.	मि.	से.	प्रातः स्टैं.टा.५।२९ बजे सूर्य का दैनिक स्पष्ट ☉ रा.	अं.	क.	वि.	दैनिक गति क.	वि.	दै.क्रां. दक्षिण अं.	क.	चित्रापक्षीय अर्ध दैनिक ☽ चंद्रस्पष्ट — चं. स्पष्ट घं.५ मि.२९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्धदैनिक गति अं.	क.	वि.	चं.स्पष्ट घं.१७ मि.२९ बजे का रा.	अं.	क.	वि.	अर्धदैनिक गति अं.	क.
१	श.	०	३७	३२	५	१४	९	१९	५९	०	३	३	०	२६	९	७	६	१	२०	१	२	१०	२७	५	५९
२	र.	०	४१	२९	५	१५	८	१९	५९	२	३	२७	१	८	९	४२	५	५७	३७	१	१४	७	१९	५	५६
३	सो.	०	४५	२४	५	१६	७	२१	५९	४	३	५०	१	२०	३	४	५	५५	५०	१	२५	५९	७	५	५५
४	मं.	०	४९	२२	५	१७	६	२५	५९	७	४	१३	२	१	५५	२२	५	५६	१३	२	७	५१	३५	५	५७
५	बु.	०	५३	१९	५	१८	५	३२	५९	९	४	३६	२	१३	४८	५२	५	५८	५६	२	१९	४७	४८	६	१
६	गु.	०	५७	१५	५	१९	४	४१	५९	१०	४	५९	२	२५	४८	५६	६	३	५७	३	१	५२	५३	६	७
७	शु.	१	१	१२	५	२०	३	५१	५९	१४	५	२२	३	८	०	१०	६	११	११	३	१४	११	२१	६	१५
८	श.	१	५	८	५	२१	३	५	५९	१५	५	४५	३	२०	२६	५३	६	२०	२०	३	२६	४७	१३	६	२५
९	र.	१	९	५	५	२२	२	२०	५९	१८	६	८	४	३	१२	४३	६	३०	५८	४	९	४३	४१	६	३६
१०	चं.	१	१३	१	५	२३	१	३८	५	२१	६	३१	४	१६	२०	१७	६	४२	२१	४	२३	२	३८	६	४८
११		१	१६	५८	५	२४	०	५९	५९	२२	६	५४	४	२९	५०	४२	६	५३	४०	५	६	४४	२२	६	५८
१२	बु.	१	२०	५४	५	२५	०	२१	५९	२५	७	१६	५	१३	४३	२१	७	३	५६	५	२०	४७	१७	७	८
१३	गु.	१	२४	५१	५	२५	५९	४३	५९	२६	७	३९	५	२७	५५	३९	७	१२	१२	६	५	७	५१	७	१५
१४	शु.	१	२८	४	५	२६	५९	१२	५९	२९	८	१	६	१२	२३	१०	७	१७	४२	६	१९	४०	५२	७	१९
१५	श.	१	३२	४४	५	२७	५८	४१	५९	३०	८	२४	६	२७	०	६	७	१९	५९	७	४	२०	५	७	१९
१६	र.	१	३६	४१	५	२८	५८	११	५९	३२	८	४६	७	११	३९	५८	७	१९	२	७	१८	५९	०	७	१७
१७	चं.	१	४०	३७	५	२९	५७	४३	५९	३४	९	८	७	२६	१६	२९	७	१५	१६	८	३	३१	४५	७	१२
१८	मं.	१	४४	३४	६	०	५७	१७	५९	३५	९	३०	८	१०	४४	१७	७	९	२१	८	१७	५३	३८	७	५
१९	बु.	१	४८	३०	६	१	५६	५२	५९	३८	९	५२	८	२४	५९	२६	७	२	३	९	२	१	२९	६	५८
२०	गु.	१	५२	२७	६	२	५६	३०	५९	३९	१०	१३	९	८	५९	३६	६	५४	७	९	१५	[illegible]	४३	६	५०
२१	शु.	१	५६	२३	६	३	५६	९	५९	४१	१०	३२	९	२२	४३	४८	६	४६	५	९	२९	२९	५३	६	४२
२२	श.	२	०	२०	६	४	५५	५०	५९	४२	१०	५६	१०	६	१२	४	६	३८	२२	१०	१२	५०	२६	६	३४
२३	र.	२	४	१७	६	५	५५	३२	५९	४४	११	१७	१०	१९	२५	७	६	३१	७	१०	२५	५६	१४	६	२७
२४	चं.	२	८	१३	६	६	५५	१६	५९	४६	११	३८	११	२	२३	५७	६	२४	२५	११	८	४८	२२	६	२१
२५	मं.	२	१२	१०	६	७	५५	२	५९	४८	११	५९	११	१५	९	३९	६	१८	१६	११	२१	२७	५५	६	१५
२६	बु.	२	१६	६	६	८	५४	५०	५९	५०	१२	२०	११	२७	४३	१७	६	१२	३८	०	३	५५	५५	६	१०
२७	गु.	२	२०	३	६	९	५४	४०	५०	५२	१२	४०	०	१०	५	५५	६	७	३२	०	१६	१३	२७	६	५
२८	शु.	२	२३	५९	६	१०	५४	३२	५९	५४	१३	०	०	२२	१८	४०	६	३	४	०	२८	२१	४४	६	१
२९	श.	२	२७	५६	६	११	५४	२६	५९	५५	१३	२०	१	४	२२	५३	५	५९	२५	१	१०	२२	१८	५	५७
३०	र.	२	३१	५२	६	१२	५४	२१	५९	५७	१३	४०	१	१६	२०	१६	५	५६	४	१	२२	१७	५	५	५५
३१	चं.	२	३५	४९	६	१३	५४	१८	६०	०	१४	०	१	२८	१३	४	५	५५	३१	२	४	८	३५	५	५५

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

अक्टू. तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध सम्मुख	वाम+	दक्षिण R	पञ्चशाला का-वेध	लत्ता
चालू	राहु	हस्त	उ.भा.	पू.पा.	आर्द्रा♃	उ.भा.	उ.षा.
,,	केतु	रेवती	उ.फ.. ☿	मृगशीर्ष	मूल	उ.फा. ☿	पुष्य
,,	शनि	मघा	भरणी	श्रवण	आश्लेषा	श्रवण	अनुराध
,,	गुरु	आर्द्रा	पू.पा.	हस्त P ☊ ☉	उ.भा.	पू.पा.	पू.फा.
६	बुध	हस्त	उ.भा.	पू.पा.	आर्द्रा♃	उ.भ..	पुनर्वसु
९	शुक्र	उ.फा.	रेवती☋	उ.षा.	पुनर्वसु♂	रेवती☋	पुष्य
१०	सूर्य	चित्रा	पू.भा.	मूल	मृगशीर्ष	पू.भा.	पू.भा.
१४	बुध	चित्रा	पू.भा.	मूल	मृगशीर्ष	पू.भा.	पुष्य
२०	मंगल	पुष्य	ज्ये. ♆	पू.फा.	शतभिषा	ज्येष्ठा ♆	मघा ♄
२०	शुक्र	हस्त	उ.भा.	पू.पा.	आर्द्रा♃	उ.भ.	आश्लेष
२२	बुध	स्वाती	शतमिषा	ज्येष्ठा ♆	रोहिणी	शतभिषा	आश्लेष
२३	सूर्य	स्वाती	शतमिषा	ज्येष्ठा ♆	रोहिणी	शतभिषा	उ.भ.
३०	बुध	विशाखा	धनिष्ठा	अनुराधा	कृत्तिका	कृत्तिका	मघा ♄
३०	शुक्र	चित्रा	पू.भा.	मूल	मृगशीर्ष	पू.भ.	मघा ♄

आकाशी-लक्षण—ता.३ को बुध अस्त होकर ता.१८ को सूर्य से युति करेगा ; उस अवधि में वर्षा-बाढ़ से बरबादी का सिलसिला चलता रहे तो आश्चर्य नहीं; क्योंकि अमावस्या को पंचग्रही योग भी है। ता.३,६,९,१०,१२,१३,१४ को वृष्टि-योग उत्तम है। संक्रान्ति भूमि-मण्डल में पड़ गयी है, यह शुभद है। अतः ता.१८ के बाद जैसे-जैसे सूर्य से बुध आगे बढ़ने लगेगा, मौसम सुखद, सुहावना होता जायेगा। ता.२६ की पूर्णिमा [illegible] दिन में स्वच्छ धूप पड़ने से बुआई भी तेजी से प्रारम्भ हो जायेगी

स्पष्टग्रह एवं दै. गति प्रातः ५।३० स्टैं.टा.

ता.	♂ मं.			ग.	☿ बु.			ग.	♃ गु.			ग.	♀ शु.			ग.	♄ श.			ग.	☊ रा.			♅ ह.			♆ न.			♇ प्लु.		
अक्टू.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	२	२३	५३	३२	५	०	३५	१०३	२	११	४२	४	४	१६	४०	७३	४	२	४५	६	५	२१	५३	६	१६	२९	७	२०	११	५	२०	१७
४	२	२५	२९	३२	५	५	४६	१०६	२	११	५५	४	४	२०	२०	७४	४	३	३	६	५	२१	४३	६	१६	३९	७	२०	१५	५	२०	२४
७	२	२७	३	३१	५	११	५	१०७	२	१२	६	३	४	२४	२	७४	४	३	२२	६	५	२१	३४	६	१६	४९	७	२०	१९	५	२०	३१
१०	२	२८	३५	३०	५	१६	२४	१०६	२	१२	१५	३	४	२७	४३	७४	४	३	४०	६	५	२१	२४	६	१६	५९	७	२०	२३	५	२०	३८
१३	३	०	५	२९	५	२१	४०	१०४	२	१२	२३	२	५	१	२५	७४	४	३	५७	६	५	२१	१५	६	१७	१०	७	२०	२७	५	२०	४५
१६	३	१	३३	२९	५	२६	५२	१०३	२	१२	२९	२	५	५	८	७४	४	४	१४	६	५	२१	५	६	१७	२१	७	२०	३१	५	२०	५२
१९	३	२	५८	२८	६	१	५८	१०१	२	१२	३३	१	५	८	५१	७४	४	४	३०	५	५	२०	५५	६	१७	३२	७	२०	३६	५	२०	५९
२२	३	४	२१	२७	६	६	५९	९९	२	१२	३५	०	५	१२	३४	७४	४	४	४५	५	५	२०	४६	६	१७	४३	७	२०	४१	५	२१	६
२५	३	५	४१	२६	६	११	५४	९७	२	१२	३६	०	५	१६	१८	७५	४	५	०	५	५	२०	३६	६	१७	५४	७	२०	४	५	२१	१३
२८	३	६	५८	२५	६	१६	४३	९६	२	१२	३४	१	५	२०	१	७५	४	५	१४	५	५	२०	२७	६	१८	५	७	२०	५१	५	२१	२०
३१	३	८	१२	२४	६	२१	२९	९४	२	१२	३१	१	५	२३	४	७५	४	५	२६	४	५	२०	१७	६	१८	१६	७	२०	५७	५	२१	२७

आश्विन अमान्त ☽ ☌ ☉ काशी, बुधवार
ता. १३।१०।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.२ मि.१
इष्ट सांपातिक काल घं.३ मि. २८ से.११

ल०		द०
४	र.चं.रा.प्लु.बु.शु. / मं. / ६ / ४ / ह ७ / श. / ३ बृ. / ने. / ८ ५ २ / ११ / ९ १० / १ १२ के.	१
२		०
२६		५३
३२		२

☉ तुला-संक्रांति, काशी, सोमवार
ता. १७।१०।७७ई. भा.स्टैं.टा. घं.६ मि.२४
इष्ट सांपातिक काल घं. ८ मि.७ से. ४०

ल०		द०
६	चं. ने. / बु.रा.प्लु.शु. / ९ ८ ह. र. / ६ ५ श. / ७ १० ४ मं. / १ / ११ १२ के. / ३ बृ. २	२
५		६
६		११
३५		३३

आश्विनपूर्णिमान्त ☽ ☍ ☉ काशी, बुधवार
ता. २७।१०।७७ ई. भा.स्टैं.टा. घं.५ मि.५
इष्ट सांपातिक काल घं.७ मि.२७ से.५३

ल०		द०
५	ह.बु.र. / श. / ने. ८ ७ प्लू.रा.शु. ५ ४ मं. / ६ ९ ३ बृ. / १२ / १० ११ के. १ २ / चं.	२
२६		२६
१४		४५
४३		३९

दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदय का समय भा.स्टैं.टा.में)

अक्टू.		मेष			वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चि.		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
ता	वा	घं.	मि.	से	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	श.	१८	२७	१५	२०	५	२२	१	०	१९	२	३६	४	५०	७	३	९	१९	११	३६	१३	४२	१५	२७	१६	५८
२	र.	१८	२३	१९	२०	१	२१	५७	०	१५	२	३३	४	४६	६	५९	९	१५	११	३२	१३	३८	१५	२३	१६	५५
३	चं.	१८	१९	२३	१९	५७	२१	५४	०	११	२	२९	४	४३	६	५५	९	११	११	२८	१३	३४	१५	१९	१६	५१
४	मं.	१८	१५	२७	१९	५३	२१	५०	०	७	२	२५	४	३९	६	५१	९	७	११	२५	१३	३०	१५	१५	१६	४७
५	बु.	१८	११	३१	१९	४९	२१	४६	०	३	२	२१	४	३५	६	४७	९	४	११	२१	१३	२६	१५	१२	१६	४३
							*		२३	५९																
६	गु.	१८	७	३५	१९	४५	२१	४२	२३	५५	२	१७	४	३१	६	४३	९	०	११	१७	१३	२२	१५	८	१६	३९
७	शु.	१८	३	३९	१९	४१	२१	३८	२३	५१	२	१३	४	२७	६	३९	८	५६	११	१३	१३	१८	१५	४	१६	३५
८	श.	१७	५९	४४	१९	३७	२१	३४	२३	४७	२	९	४	२३	६	३६	८	५२	११	९	१३	१४	१५	०	१६	३१
९	र.	१७	५५	४८	१९	३३	२१	३०	२३	४३	२	५	४	१९	६	३२	८	४८	११	५	१३	१०	१४	५६	१६	२७
१०	चं.	१७	५१	५२	१९	२९	२१	२६	२३	३९	२	१	४	१५	६	२८	८	४४	११	१	१३	६	१४	५२	१६	२३
११	मं.	१७	४७	५६	१९	२५	२१	२२	२३	३६	१	५७	४	११	६	२४	८	४०	१०	५७	१३	२	१४	४८	१६	१९
१२	बु.	१७	४४	०	१९	२२	२१	१८	२३	३२	१	५३	४	७	६	२०	८	३६	१०	५३	१२	५८	१४	४४	१६	१५
१३	गु.	१७	४०	४	१९	१८	२१	१४	२३	२८	१	४९	४	३	६	१६	८	३२	१०	४९	१२	५४	१४	४०	१६	११
१४	शु.	१७	३६	८	१९	१४	२१	१०	२३	२४	१	४५	३	५९	६	१२	८	२८	१०	४५	१२	५१	१४	३६	१६	७
१५	श.	१७	३२	१२	१९	१०	२१	६	२३	२०	१	४१	३	५५	६	८	८	२४	१०	४१	१२	४७	१४	३२	१६	३
१६	र.	१७	२८	१६	१९	६	२१	२	२३	१६	१	३७	३	५१	६	४	८	२०	१०	३७	१२	४३	१४	२८	१५	५९
१७	चं.	१७	२४	२०	१९	२	२०	५८	२३	१२	१	३४	३	४७	६	०	८	१६	१०	३३	१२	३९	१४	२४	१५	५६
१८	मं.	१७	२०	२४	१८	५८	२०	५५	२३	८	१	३०	३	४४	५	५६	८	१२	१०	२९	१२	३५	१४	२०	१५	५२
१९	बु.	१७	१६	२९	१८	५४	२०	५१	२३	४	१	२६	३	४०	५	५२	८	९	१०	२६	१२	३१	१४	१६	१५	४८
२०	गु.	१७	१२	३३	१८	५०	२०	४७	२३	०	१	२२	३	३६	५	४८	८	५	१०	२२	१२	२७	१४	१३	१५	४४
२१	शु.	१७	८	३७	१८	४६	२०	४३	२२	५६	१	१८	३	३२	५	४४	८	१	१०	१८	१२	२३	१४	९	१५	४०
२२	श.	१७	४	४१	१८	४२	२०	३९	२२	५२	१	१४	३	२८	५	४०	७	५७	१०	१४	१२	१९	१४	५	१५	३६
२३	र.	१७	०	४५	१८	३८	२०	३५	२२	४८	१	१०	३	२४	५	३७	७	५३	१०	१०	१२	१५	१४	१	१५	३२
२४	चं.	१६	५६	४९	१८	३४	२०	३१	२२	४४	१	६	३	२०	५	३३	७	४९	१०	६	१२	११	१३	५७	१५	२८
२५	मं.	१६	५२	५३	१८	३०	२०	२७	२२	४०	१	२	३	१६	५	२९	७	४५	१०	२	१२	७	१३	५३	१५	२४
२६	बु.	१६	४८	५७	१८	२६	२०	२३	२२	३७	०	५८	३	१२	५	२५	७	४१	९	५८	१२	३	१३	४९	१५	२०
२७	गु.	१६	४५	१	१८	२३	२०	१९	२२	३३	०	५४	३	८	५	२१	७	३७	९	५४	११	५९	१३	४५	१५	१६
२८	शु.	१६	४१	५	१८	१९	२०	१५	२२	२९	०	५०	३	४	५	१७	७	३३	९	५०	११	५५	१३	४१	१५	१२
२९	श.	१६	३७	९	१८	१५	२०	११	२२	२५	०	४६	३	०	५	१३	७	२९	९	४६	११	५२	१३	३७	१५	८
३०	र.	१६	३३	१४	१८	११	२०	७	२२	२१	०	४२	२	५६	५	९	७	२५	९	४२	११	४८	१३	३३	१५	४
३१	चं.	१६	२९	१८	१८	७	२०	३	२२	१७	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भविष्यवाणी—मघा का शनि पूर्वेशिया के देशोंके लिए सर्वाधिक अनिष्टकारी है। म.ओने मरते समय जिस आंतरिक विग्रहकी चर्चा की थी, वह चीनकी हालत बदतर कर देगा। अन्य सुदूरपूर्वीय देशोंमें भी दक्षिण वामपंथियों के संघर्षकी ज्वाला फैलती जायेगी। मिथुनके गुरु का फल है: तस्करो पीड्यन्ते लोकः पापोहत मानसैः। तस्करोंका अन्तर्राष्ट्रीय संघटन पुनः अपनी पूरी ताकतमें आ कर भारत आदि विकासशील देशोंकी अर्थ-व्यवस्थाको संकटापन्न करेगा। संक्रान्ति-फल-सूर्य तुलापर गत सं.से ४ वार ४ नक्षत्र मु.१५पर प्रवेश करते हैं। ता.१२की पंचग्रही संक्रान्ति के सहयोग से व्यापारी जिंसों में भारी घटा-बढ़ी करेगी। मघा का शनि गेहूं चना जौ मसूर धान्यादि एवं मिर्च हींग सन कपास गुड़ शक्कर आदि रस-कसमें तेजीकारक है; किंतु दुनिया के स्वर्ण भंडारके लिए नेष्ट है। धनी देशोंको अपनी आर्थिक साख और सैनिक धाक बनाये रखनेके लिए भारी मात्रामें सोना बेचना पड़ेगा। शेयर्स-केभाव सीमित दायरे में घूमते रहेंगे; संक्रा. बाद हर उछाले बेचना ही लाभप्रद होगा।

ता० ५ अक्टूबर को बर्क- [illegible] उदय दो बार होगा।

कार्तिक कृष्ण ५ से मार्गशीर्ष कृष्ण ५ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

वार ३० दिन	नवम्बर १९७७ ई०	कार्तिक कृष्णपक्ष					नक्षत्र					योग					करण						चं.७ राशि-प्रवेश		दिनमान	काशी सूर्यउ.म.का भारतीय स्टै.टा			
		तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	राशि	घं. मि.	घ.पला	उ. घं. मि.	मध्याह्न घण्टा	मिनट	सेकेण्ड
मं.	१	५	२५	५	१६	११	आर्द्रा	४८	३३	१	३४	शिव	६	१५	८	३९	तै.	१६	११	ग.	५	२९			२७/४३	६/१०	११	४१	३८
बु.	२	६	३१	०	१८	३४	पुनर्वसु	५५	२५	४	२०	सिद्धि	८	१८	९	२९	व.	१८	३४	भ.	६	१०	क.	२१/४१	४०	१०	११	४१	३७
गु.	३	७	३६	८	२०	३८	पुष्य	६०	०	२४	०	साध्य	९	५३	१०	७	भ.	७	३६	बव	२०	३८			३७	१०	११	४१	३६
शु.	४	८	३९	३८	२२	१०	पुष्य	१	२०	६	४३	शुभ	१०	३३	१०	२४	बा.	९	२४	कौ.	२२	१०			३३	११	११	४१	३६
श.	५	९	४२	५	२३	१	आश्ले.	५	५३	८	३२	शुक्ल	१०	८	१०	१४	तै.	१०	३६	ग.	२३	१	सिं.	६/३२	३०	११	११	४१	३८
र.	६	१०	४२	१५	२३	६	मघा	८	३८	९	३९	ब्रह्म	८	१५	९	३०	व.	११	४	भ.	२३	६			२७	१२	११	४१	४०
चं.	७	११	४०	२३	२२	२२	पू. फा.	९	२५	९	५९	ऐन्द्र	८ ४/७	४ ८/३	८/६	८/२	बव	१०	४४	बा.	२२	२२	कं.	१५/८७	२४	१३	११	४१	४२
मं.	८	१२	३६	३८	२०	५२	उ. फा.	८	१८	९	३२	विष्कु	५३	२०	३	३३	कौ.	९	३७	तै.	२०	५२			२१	१३	११	४१	४६
बु.	९	१३	३१	३	१८	३९	हस्त	५	२०	८	२२	प्रीति	४५	२८	०	२५	ग.	७	४५	व.	१६/८	३१/१६	तु.	११/३२	१८	१४	११	४१	५१
गु.	१०	१४	२४	३	१५	५२	चित्रा	८०/७३	४५/१३	८/४	३३/१४	आयु.	३६	३०	२०	५१	श.	१५	५२	च.	२	१६			१५	१५	११	४१	५६
शु.	११	३०	१६	०	१२	३६	विशा.	४८	२३	१	३६	सोभा.	२६	४५	१६	५७	ना.	१२	३९	किं.	२२	५५	वृ.	२०/१७	१२	१५	११	४२	२
		कार्तिक शुक्लपक्ष																											
श.	१२	१	७/५१	१५/८	१/५	१०/३६	अनु.	४१	१८	२२	४७	शोभन	१६	३०	१२	५२	बव	९	१०	बा.	१९/८	१६/३६			९	१६	११	४२	१०
र.	१३	३	४९	३५	२	७	ज्येष्ठा	३४	२०	२०	१	अति.	८/४२	५/८३	६/४	४३/४६	तै.	१५	५१	ग.	२	७	ध.	२०/१	७	१७	११	४२	१८
चं.	१४	४	४१	२८	२२	५२	मूल	२७	५३	१७	२६	धृति	४६	२३	०	५०	व.	१२	३०	भ.	२२	५२			४	१७	११	४२	२६
मं.	१५	५	३४	१८	२०	१	पू. षा.	२२	१८	१५	१३	शूल	३७	३८	२१	२१	बव	९	२७	बा.	२०	१	म.	३०/४४	१	१८	११	४२	३६
बु.	१६	६	२८	२८	१७	४२	उ. षा.	१७	५५	१३	२९	गण्ड	२९	५३	१८	१६	कौ.	६	५२	तै.	१७/४	४२/५१			३९/८८	१९	११	४२	४७
गु.	१७	७	२४	८	१५	५९	श्रवण	१५	३	१२	२१	वृद्धि	२३	२५	१५	४२	व.	१५	५९	भ.	३	२८			५६	२०	११	४२	५८
शु.	१८	८	२१	३०	१४	५६	धनि.	१३	५०	११	५२	ध्रुव	१९	८	१३	३९	बव	१४	५६	बा.	२	४५	कुं.	०/१	५३	२०	११	४३	१०
श.	१९	९	२०	३३	१४	३४	शत.	१४	१३	१२	२	व्या.	१४	२८	१२	८	कौ.	१४	३४	तै.	२	४२			५१	२१	११	४३	२३
र.	२०	१०	२१	१०	१४	५०	पू. भा.	१६	१०	१२	५०	हर्षण	११	५३	११	७	ग.	१४	५०	व.	३	१६	मी.	८/३५	४८	२२	११	४३	३७
चं.	२१	११	२३	१८	१५	४१	उ. भा.	१९	३३	१४	११	वज्र	१०	२८	१०	३३	भ.	१५	४१	बव	४	२१			४६	२२	११	४३	५१
मं.	२२	१२	२६	३५	१७	१	रेवती	२४	५	१६	१	सिद्धि	९	५८	१०	२२	बा.	१७	१	कौ.	५	५३	मे.	१८/१	४३	२३	११	४४	६
बु.	२३	१३	३०	५०	१८	४४	अश्वि.	२९	३३	१८	१३	व्यती.	१०	१५	१०	३०	तै.	१८	४४	ग.	६	२५			४१	२४	११	४४	२३
गु.	२४	१४	३५	५३	२०	४६	भरणी	३५	४५	२०	४३	वरी.	११	८	१०	५२	ग.	७	४५	व.	२०	४६			३९	२५	११	४४	३९
शु.	२५	१५	४१	३०	२३	१	कृत्ति.	४२	३३	२३	२६	परिघ	१२	२०	११	२७	भ.	९	५४	बव	२३	१	वृ.	२ ३/३	३७	२५	११	४४	५७
		मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष																											
श.	२६	१	४७	३३	१	२७	रोहि.	४९	४०	२	१८	शिव	१४	१८	१२	९	बा.	१२	१४	कौ.	१	२७			३५	२६	११	४५	१५
र.	२७	२	५३	४८	३	५८	मृग.	५७	३	५	१६	सिद्धि	१६	१८	१२	५८	तै.	१४	४३	ग.	३	५८	मि.	१५/४७	३३	२७	११	४५	३५
चं.	२८	३	६०	०	२४	०	आर्द्रा	६०	०	२४	०	साध्य	१८	२३	१३	४९	व.	१७	१५	भ.	६	२८			३१	२८	११	४५	५४
मं.	२९	३	०	८	६	३१	आर्द्रा	४	२५	८	१४	शुभ	२०	२८	१४	३९	भ.	६	३१	बव	१९	४५			२९	२८	११	४६	१५
बु.	३०	४	६	१३	८	५८	पुनर्वसु	११	३५	११	७	शुक्ल	२२	१८	१५	२४	बा.	८	५८	कौ.	२२	५	क.	८ ४/५	२७	२९	११	४६	३६

[A] १३। श्रीधन्वन्तरी-जयन्ती १३, निशामुख में यम के लिये घर से बाहर दीप-दान। यम-पञ्चक प्रारम्भ। सायंकाल श्रीहनुमानजी का जन्म मेष लग्न में, जन्मोत्सव ; द्वितीय दिन अरुणोदय(प्रातः)काल में दर्शन पूजन। चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्दशी में नरकचतुर्दशी, चन्द्रोदय घं. ४ मि. ५६ बजे। सीता-लोष्ठापामार्ग चक्रमर्द शाखा का त्रिवार स्नान-मध्य में भ्रामण पूर्वक स्नान। काली १४। [Dविधि, मंगलमालिका। अपराह्णव्यापिनी द्वितीया में यम द्वितीया। यमुना-स्नान। भातृद्वितीया (भैयादूज), भगिनी-गृह-भोजन। वस्त्रादि से भगिनी-पूजन। अपराह्ण में चित्रगुप्त दूत सहित यम-पूजा। यम-पञ्चक-निवृत्ति काशी में गोवर्धन-पूजा। महा(व्यती)पात घं.१३मि.४३ बजे प्रारम्भ ; क्रांतिसाम्य घं.२३मि.४७ बजे। यायिजय योग घं.६मि.१ बजे से घं. ७ मि. १५ बजे तक। २ तिथि-क्षय। नेपाली संवत् १०९८ प्रारम्भ। गुर्जर-नवसम्वत्सरारम्भ। वीरनिर्वाण-संवत २५०४। महामना मालवीयजी की पुण्य-तिथि। [Eअर्घ्यदान। दुर्लभ सन्धिकर योग घं. ७ मि. २५ बजे से घं. १३ मि. २ बजे तक। ⊙सूर्य की वृश्चिक सक्रान्ति घं. ६ मि. ११ बजे म.४५ समर्घ, पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक। दीप वस्त्र-दान नर्मदामें स्नान; संकल्पादि में प्रयोजनीय हेमन्तऋतु आरभ। बुध♉ ज्येष्ठा युति घं. ० मि. ३९ बजे, [शेषांश पृष्ठ ६० पर।

नवम्बर सन् १९७७ ई० । कातिक कृष्ण ५ से मार्गशीर्ष कृष्ण ४ तक, सम्वत् २०३४ विक्रमीय । राष्ट्रीय कातिक मास १० से राष्ट्रीय अग्रहायण मास ९ तक, शके १८९९ शालिवाहन । जिलकाद १८ से जिल्हेज १८ तक, १३९७ हिजरी ।

Bका दर्शन पूजन । प्रसाद-ग्रहण । रूप १४ । दीपावली ३० । सायंकाल प्रदोष में देवालयों में दीप-दान उसके बाद घरमें दीप-दान करना चाहिये । प्रदोष-काल में लक्ष्मी कुबेर इन्द्रादि देवों का पूजन । खाता(बसना)का पूजन । निशीथ में महाकाली-पूजा ; महा निशीथकाल घं. २३ मि.१६ बजे से घं. ० मि. ८ बजे तक । शेषरात्रि में दरिद्रा-निःस्सारण । ऋषि दयानन्द-निर्वाणोत्सव । श्रीरामतीर्थ-जन्म एवं निर्वाण-दिवस ।

वार	तारीखें: उदित तिथि	सौर (तुला) कार्ति. मा. ३० दि.	जिलकाद २९ दिन हिजरी	राष्ट्रीय कार्तिक मास ३० दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात, पञ्चक, व्रत, पर्व, त्योहार, जयन्ती, यायि(मुद्दई) स्थायी(मुद्दालेह) जय योग, सन्धिकर, योगादि
मं.	५	१५	१८	१०	१	– [Cबलि-प्रतिपदा१ । गोवर्धन-पूजा १ । सायं गो-क्रीडा । गो-संवर्धन सप्ताह शुरू । मार्गपाली-बन्धन ।*
बु.	६	१६	१९	११	२	–भद्रा घं.१८मि.३४बजे प्रारम्भ ।[*यष्टिकाकर्षण। रात्रि में बलिपूजा । साभ्यंग स्नान । गोत्रिरात्र-निवृत्ति ।
गु.	७	१७	२०	१२	३	–भद्रा घं. ७ मि. ३६ बजे समाप्त । अहोई ८ व्रत ; चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में; चन्द्रोदय घं. २३ मि. १३ बजे (पश्चिम में प्रसिद्ध है) । महा(व्यती)पात घं. ७ मि. १८ बजे से घं. १७ मि. १ बजे तक । शनि ☌ मघा युति घं. १३ मि. २९ बजे, मघा से शनि ०°-४७′ उ. ।
शु.	८	१८	२१	१३	४	–कराष्टमी । राधाष्टमी ८ । अरुणोदय में मथुरा के राधाकुण्ड में स्नान । कालाष्टमी ८ । स्थायीजय योग घं. मि. ११ बजे से घं. ६ मि. ४३ बजे तक । शुक्र ☌ चित्रा युति घं. १ मि. २९ बजे, चित्रा से शु. ३°-५३′ उत्तर ।
श.	९	१९	२२	१४	५	–यायिजय योग घं. ६ मि. ११ बजे से घं. ८ मि. ३२ बजे तक ।
र.	१०	२०	२३	१५	६	–भद्रा घं. ११ मि. ४ बजे से घं. २३ मि. ६ बजे तक । रवि-दशमी १० ।
चं.	११	२१	२४	१६	७	–रम्भा ११ एकादशी व्रत सबका । यायिजय योग घं. ९ मि. ५९ बजे से घं. २२ मि. २२ बजे तक ।
मं.	१२	२२	२५	१७	८	–गोवत्स १२ द्वादशी प्रदोषव्यापिनी द्वादशी में । नारीकर्तृक नीराजन विधि, ५ दिन यावत् । गोत्रि-रात्र प्रारम्भ । वसुद्वादशी । त्रिपुष्कर योग घं. ६ मि. १३ बजे से घं. ९ मि. ३२ बजे तक ।
बु.	१३	२३	२६	१८	९	–भद्रा घं.१८ मि.३९ बजे प्रारम्भ । प्रदोष १३ व्रत । मास शिवरात्रि१३व्रत । **धनत्रयोदशी(धनतेरस)**A
गु.	१४	२४	२[illegible]	१९	१०	–भद्रा घं. ५ मि. १६ बजे समाप्त । अन्वाधान । यम तर्पण; साभ्यंग स्नान । अरुणोदय में श्रीहनुमानजीB
शु.	३०	२५	२८	२०	११	–इष्टि । अन्नकूट १ । स्नान दान श्राद्ध की दर्श ३० अमावस्या, शुभवारी प्रजासुखकरी सुभिक्षकरी ।C
श.	१	२६	२९	२१	१२	–◡चंद्र-दर्शन मु.३०साम्यार्घ । साभ्यंग स्नान । नव वस्त्रादिधारण । द्यूत-क्रीड़ा । नारीकर्तृक नीरांजनD
र.	३	२७	१	२२	१३	–जिल्हेज १२ माह शुरू । महा(व्यती)पात पूरे दिनाङ्क तक । [Iनेहरु-जयन्ती, बाल-दिवस ।
चं.	४	२८	२	२३	१४	–भद्रा घं.१२मि.३०बजे से घं.२२मि.५२ बजे तक । **वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत** । सूर्यषष्ठी (डालाछठ) का प्रथम संयम । महा(व्यती)पात पूरे दिनाङ्क तक, क्रांतिसाम्य घं. १४ मि. ३५ बजे । श्रीजवाहरलालI
मं.	५	२९	३	२४	१५	–सूर्यषष्ठी-व्रत का दूसरा संयम । एकमुक्त(खरना) । सौभाग्य पंचमी ५ । ज्ञान-पञ्चमी ५ (जैन) ।K
बु.	६	३०	४	२५	१६	–अग्नि-पूजा ६ । **सूर्यषष्ठी ६ व्रत(डालाछठ)**सायंकाल प्रथम अर्घ्य-दान । अरुणोदयकाल में द्वितीयE
गु.	७	१	५	२६	१७	–भद्रा घं. १५ मि. ५९ बजे प्रारम्भ । कल्पादि ७ । यायिजय योग घं. १२ मि. २१ बजे से घं. १५ मि. ५९ बजे तक । सौर मार्गशीर्ष मास प्रारम्भ । लाला लाजपतराय-पुण्यतिथि ।
शु.	८	२	६	२७	१८	–पंचक प्रारम्भ घं.० मि. १ बजे । भद्रा घं. ३ मि. २८ बजे समाप्त । दुर्गाष्टमी । गोपाष्टमी ८ । गो-पूजा-शृङ्गार, गायों को यवान्नादि दान । गायोंके पीछे अनुगमन । गो-सम्वर्धन सप्ताह समाप्त ।
श.	९	३	७	२८	१९	–पंचक । **अक्षयनवमी ९**; सुवर्णयुक्त कुष्माण्डादि दान । मथुरा-प्रदक्षिणा । कृतयुगादि ९ । श्रीविष्णुF
र.	१०	४	८	२९	२०	–पंचक । रविदशमी १० । यायिजय योग घं. १४ मि. ५० बजे प्रारम्भ ।
चं.	११	५	९	३०	२१	–पंचक । भद्रा घं. ३ मि. १६ बजे से घं.१५ मि.४१ बजे तक । **प्रबोधिनी ११ एकादशी व्रत सबका** । भीष्म पंचकारम्भ । यायिजययोग घं.१५मि.४१बजे समाप्त । हज्ज । भद्रा के बाद ईख-रस का प्राशन ।
मं.	१२	६	१०	१	२२	–पंचक समाप्त घं. १६ मि. १ बजे, मन्वादि १२ । तुलसी-विवाहोत्सव । श्रीविष्णु-त्रिरात्र समाप्त ।G
बु.	१३	७	११	२	२३	–**प्रदोष १३ व्रत** । निशीथव्यापिनी चतुर्दशीमें **श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी१४व्रत** । अरुणोदय में मणिकर्णिका-स्नान । निशीथमें महाविष्णु-पूजा । श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा-दिन । नर्मदेश्वर शिवलिंगको तुलसी-समर्पण ।
गु.	१४	८	१२	३	२४	–भद्रा घं. २० मि. ४६ बजे प्रारम्भ । [Kमहा(व्यतीपात) समाप्त घं. १ मि. १७ बजे ।
शु.	१५	९	१३	४	२५	–भद्रा घं. ९ मि. ५४ बजे समाप्त । भीष्म पञ्चक-निवृति । मन्वादि १५ । अन्वाधान । स्नान दानH
श.	१	१०	१४	५	२६	–इष्टि । मार्गशीर्ष मास प्रारम्भ ।
र.	२	११	१५	६	२७	–**अशून्यशयन व्रत** (भविष्य पुराणानुसार), चन्द्रोदय घं. १८ मि. ३९ बजे । यायिजय योग घं. १ मि. २७ बजे से घ. २ मि. १८ बजे तक । द्विपुष्कर योग घं. ६ मि. २७ बजे प्रारम्भ ।
चं.	३	१२	१६	७	२८	–भद्रा घं. १७ मि. १५ बजे प्रारम्भ । द्विपुष्कर योग घं. ३ मि. ५८ बजे समाप्त ।
मं.	३	१३	१७	८	२९	–भद्रा घं. ६ मि. ३१ बजे समाप्त । **भौमवती संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत** ; चन्द्रोदय घं. २०मि.१६बजे । ३ तिथि-वृद्धि ।
बु.	४	१४	१८	९	३०	–

{[F[illegible] । विष्णु-प्रतिमा सहित तुलसी-पूजा द्वादशी तक । उसके बाद प्रतिमा-दान । धातृ(आँवला)वृक्ष की परिक्रमा, पूजन, तर्पण, भोजन । }

ता. ग्रह रा.नक्ष.चरण(नवां)प्रवे.स्टैं.टा.

नव.	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घंटा	मिनट
१	बु.	☿	विशाखा	२	वृ.	९	४९
२	शु.	♀	चित्रा	२	कं.	१३	२५
२	सू.	☉	स्वाती	४	मी.	२३	४४
३	बु.	☿	विशाखा	३	मि.	८	२
४	मं.	♂	पुष्य	३	तु.	२०	१३
५	शु.	♀	तुला चि.	३	तु.	५	३१
५	रा.	☊	हस्त	३	मि.	१६	२३
५	के.	☋	रेवती	१	ध.	१६	२३
५	बु.	☿	वृश्चिवि.	४	क.	१७	५
६	सू.	☉	विशाखा	१	मे.		३
७	बु.	☿	अनुराधा	१	सिं.	२१	२७
७	शु.	♀	चित्रा	४	वृ.	२१	३१
९	सू.	☉	विशाखा	२	वृ.	१५	१४
१०	बु.	☿	अनुराधा	२	कं.	२	१६
१०	शु.	♀	स्वाती	१	ध.	१३	२९
१२	बु.	☿	अनुराधा	३	तु.	७	३५
१२	सू.	☉	विशाखा	३	मि.	२२	३७
१३	शु.	♀	स्वाती	२	म.	५	२४
१४	बु.	☿	अनुराधा	४	वृ.	१३	२७
१४	मं.	♂	पुष्य	४	वृ.	१५	२०
१५	शु.	♀	स्वाती	३	कुं.	२१	१५
१६	सू.	☉	वृश्चिवि.	४	क.	६	११
१६	बु.	☿	ज्येष्ठा	१	ध.	२०	१
१८	शु.	♀	स्वाती	४	मी.	१३	५
१९	बु.	☿	ज्येष्ठा	२	म.	३	४
१९	सू.	☉	अनुराधा	१	सिं.	१३	२९
२१	शु.	♀	विशाखा	१	मे.	४	५३
२१	बु.	☿	ज्येष्ठा	३	कुं.	११	१२
२२	श.	♄	मघा	३	मि.	१९	२२
२२	सू.	☉	अनुराधा	२	कं.	२०	४४
२३	शु.	♀	विशाखा	२	वृ.	२०	३९
२४	बु.	☿	ज्येष्ठा	४	मी.	१४	८
२६	सू.	☉	अनुराधा	३	तु.	३	५२
२६	बु.	☿	धनु मूल	१	मे.	७	४७
२६	शु.	♀	विशाखा	३	मि.	१२	२४
२८	ह.	♅	विशाखा	१	मे.	६	१७
२८	मं.	♂	आश्लेषा	१	ध.	९	५
२९	बु.	☿	मूल	२	वृ.	०	३३
२९	शु.	♀	वृश्चिवि.	४	क.	४	६
२९	सू.	☉	अनुराधा	४	वृ.	१०	५६

ता.१५ नवम्बर को बुध उदय पश्चिम में।

राशि-प्रवेशवाले ग्रह और उनके नक्षत्र, नवांश तथा ग्रहों का वक्र-मार्गत्व किंचित् स्थूल अक्षरों में मुद्रित हैं। वक्री ग्रह R चिह्न से, मार्गी D चिह्न से तथा अतिचारी ग्रह को + चिह्न से युक्त किया गया है।

नवम्बर		काशी प्रातः के० बजे का सापां. का.			टै.टा.५।२९ बजे सूर्य का दैनिक स्पष्ट ☉				दैनिक गति		दै. क्रां. दक्षिण		चित्रापक्षीय अर्ध दैनिक ☽ चन्द्र... चं. स्पष्ट घं. ५ मि. २९ बजे का				अर्धदैनिक गति			चं. स्पष्ट घं. १७ मि. २९ बजे का				अ...
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.
१	सं.	२	३९	४६	६	१४	५४	१८	६०	३	१४	१९	२	१०	४	३	५	५५	५०	२	१५	५९	५३	५
२	बु.	२	४३	४२	६	१५	५४	२१	६०	४	१४	३९	२	२१	५६	३४	५	५८	३	२	२७	५४	३७	५
३	गु.	२	४७	३९	६	१६	५४	२५	६०	६	१४	५७	३	३	५४	३४	६	२	२४	३	९	५६	५८	६
४	शु.	२	५१	३५	६	१७	५४	३१	६०	८	१५	१६	३	१६	२	२३	६	९	३	३	२२	११	२६	६
५	श.	२	५५	३२	६	१८	५४	३९	६०	११	१५	३५	३	२८	२४	३९	६	१७	५९	४	४	४२	३८	६
६	र.	२	५९	२८	६	१९	५४	५०	६०	११	१५	५३	४	११	५	५३	६	२९	२	४	१७	३४	५५	६
७	चं.	३	३	२५	६	२०	५५	१	६०	१५	१६	११	४	२४	१०	८	६	४१	४४	५	०	५१	५२	६
८	मं.	३	७	२१	६	२१	५५	१६	६०	१६	१६	२८	५	७	४०	२२	६	५५	२०	५	१४	३५	४२	७
९	बु.	३	११	१८	६	२२	५५	३२	६०	१९	१६	४६	५	२१	३७	४८	७	८	३८	५	२८	४६	२६	७
१०	गु.	३	१५	१५	६	२३	५५	५१	६०	२०	१७	३	६	६	१	१२	७	२०	१७	६	१३	२१	२	७
११	शु.	३	१९	११	६	२४	५६	११	६०	२२	१७	२०	६	२०	४६	२९	७	२८	४७	६	२८	१५	१६	७
१२	श.	३	२३	८	६	२५	५६	३३	६०	२३	१७	३६	७	५	४६	४४	७	३२	५७	७	१३	१९	४१	७
१३	र.	३	२७	४	६	२६	५६	५६	६०	२५	१७	५२	७	२०	५२	५३	७	३२	१५	७	२८	२५	८	७
१४	चं.	३	३१	१	६	२७	५७	२१	६०	२६	१८	८	८	५	५५	१३	७	२६	५४	८	१३	२२	७	७
१५	मं.	३	३४	५७	६	२८	५७	४७	६०	२८	१८	२४	८	२०	४४	५२	७	१७	५३	८	२८	२	४५	७
१६	बु.	३	३८	५४	६	२९	५८	१५	६०	३०	१८	३९	९	५	१५	११	७	६	३८	९	१२	२१	४	७
१७	गु.	३	४२	५०	७	०	५८	४५	६०	३०	१८	५४	९	१९	२२	२४	६	५४	३१	९	२६	१६	५५	६
१८	शु.	३	४६	४७	७	१	५९	१५	६०	३२	१९	९	१०	३	५	२७	६	४२	४६	१०	९	४८	१३	६
१९	श.	३	५०	४४	७	२	५९	४७	६०	३३	१९	२३	१०	१६	२५	२९	६	३२	८	१०	२२	५७	३७	६
२०	र.	३	५४	४०	७	४	०	२०	६०	३४	१९	३७	१०	२९	२५	०	६	२३	३	११	५	४८	३	६
२१	चं.	३	५८	३७	७	५	०	५४	६०	३४	१९	५०	११	१२	७	१२	६	१५	३८	११	१८	२२	५०	६
२२	मं.	४	२	३३	७	६	१	२८	६०	३७	२०	४	११	२४	३५	२०	६	९	४६	०	०	४५	६	६
२३	बु.	४	६	३०	७	७	२	५	६०	३८	२०	१६	०	६	५२	२७	६	५	१३	०	१२	५७	४०	६
२४	गु.	४	१०	२६	७	८	२	४३	६०	३९	२०	२९	०	१९	१	३	६	१	४६	०	२५	२	४९	६
२५	शु.	४	१४	२३	७	९	३	२२	६०	४१	२०	४१	१	१	३	११	५	५९	१०	१	७	२	२१	५
२६	श.	४	१८	१९	७	१०	४	३	६०	४२	२०	५३	१	१३	०	३१	५	५७	१८	१	१८	५७	४९	५
२७	र.	४	२२	१६	७	११	४	४५	६०	४३	२१	४	१	२४	५४	२८	५	५६	९	२	०	५०	३७	५
२८	चं.	४	२६	१३	७	१२	५	२८	६४	४४	२१	१५	२	६	४६	२९	५	५५	४८	२	१२	४२	१७	५
२९	मं.	४	३०	९	७	१३	६	१२	६०	४६	२१	२५	२	१८	३८	१४	५	५६	२७	२	२४	३४	४१	५
३०	बु.	४	३४	६	७	१४	६	५८	६०	४८	२१	३५	३	०	३१	५५	५	५८	२२	३	६	३०	१	५

ग्रहाक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र-ग्रह-विवरण

नव. ता.	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध सम्मुख	सर्वतोभद्र-वेध वाम+	सर्वतोभद्र-वेध दक्षिणR	पंचशलाका-वेध
चालू	राहु	हस्त	उ. भा.	पू. षा.	आर्द्रा♃	उ. भा.
,,	केतु	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल	उ. फा.
,,	शनि	मघा	भरणी	श्रवण	आश्लेषा	श्रवण
,,	गुरु	आर्द्रा	पू. षा.	हस्त P ☊	उ. भा.	पू. षा.
६	सूर्य	विशाखा	धनिष्ठा	अनुराधा	कृत्तिका	कृत्तिका
७	बुध	अनुराधा	आश्लेषा	भरणी	विशाखा ☉	भरणी
१०	शुक्र	स्वाती	शतभिषा	ज्येष्ठा ♆	रोहिणी	शतभिषा
१६	बुध	ज्येष्ठा	पुष्य ♂	अश्विनी	स्वाती ♆ ♀	पुष्य ♂
१९	सूर्य	अनुराधा	आश्लेषा	भरणी	विशाखा	भरणी
२१	शुक्र	विशाखा	धनिष्ठा	अनुराधा ☉	कृत्तिका	कृत्तिका
२६	बुध	मूल	पुनर्वसु	रेवती ☋	चित्रा	पुनर्वसु
२८	हर्शल	विशाखा	धनिष्ठा	अनुराधा ☉	कृत्तिका	कृत्तिका
२८	मंगल	आश्लेषा	अनुरा. ☉	मघा ♄	धनिष्ठा	धनिष्ठा

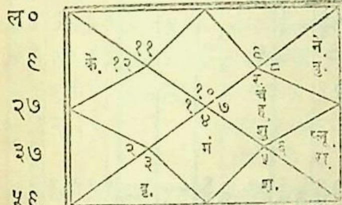
आकाशी-लक्षण—ता. ५,६,७,१०,११ को कहीं-कहीं मेघ-सञ्चार और थोड़ी भी हो जायेगी। ता. १६ को वृश्चिक-संक्रान्ति भूमि-मण्डल में पड़ गयी है। दक्षिण-पूर्वी भारत में अवर्षण से कृषि की विशेष हानि का योग है। ता. १६,१९,२१ को कतिपय में वृष्टि सम्भावित है; सर्दी की मात्रा बढ़ेगी। ता. २५,२६,२८,२९ को यत्र-तत्र और बूँदा-बादी हो सकती है। ... कुहरा पड़ा करेगा; किंतु बाद में धूप होने से खेती की हानि की आशंका नहीं रहेगी। हवा कुछ तेज चलेगी।

स्प. ग्रह एवं दै. गति प्रातः ५।२९ई.टा.

ता.	♂ मं.			ग.	☿ बु.			ग.	♃ गु. R			ग.	♀ शु.			ग.	♄ श.			ग.	☊ रा.			♅ ह.			♆ ने.			P प्लू.		
नव.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	३	८	३६	२४	६	२३	३	९४	२	१२	३०	२	५	२५	०	७५	४	५	३२	४	५	२०	१४	६	१८	२१	७	२०	५९	५	२१	२८
४	३	९	४६	२३	६	२७	४३	९२	२	१२	२५	२	५	२८	४५	७५	४	५	४४	४	५	२०	५	६	१८	३२	७	२१	५	५	२१	३५
७	३	१०	५३	२२	७	२	१९	९१	२	१२	१७	३	६	२	३०	७५	४	५	५५	४	५	१९	५५	६	१८	४३	७	२१	११	५	२१	४२
१०	३	११	५५	२०	७	६	५२	९०	२	१२	८	३	६	६	१५	७५	४	६	६	३	५	१९	४६	६	१८	५४	७	२१	१७	५	२१	४८
१३	३	१२	५४	१९	७	११	२२	८९	२	११	५७	४	६	१०	०	७५	४	६	१५	३	५	१९	३६	६	१९	५	७	२१	२३	५	२१	५४
१६	३	१३	४८	१[illegible]	७	१५	४७	८८	२	११	४५	४	६	१३	४६	७५	४	६	२४	३	५	१९	२६	६	१९	१६	७	२१	२९	५	२२	०
१९	३	१४	३८	१६	७	२०	९	८६	२	११	३१	५	६	१७	३१	७५	४	६	३२	२	५	१९	१७	६	१९	२७	७	२१	३५	५	२२	६
२२	३	१५	२३	१४	७	२४	२४	८४	२	११	१५	६	६	२१	१७	७५	४	६	३९	२	५	१९	७	६	१९	३८	७	२१	४२	५	२२	१२
२५	३	१६	४	१२	७	२८	३२	८०	२	१०	५८	६	६	२५	३	७५	४	६	४५	२	५	१८	५८	६	१९	४[illegible]	७	२१	४९	५	२२	१७
२८	३	१६	३८	१०	८	२	२९	७५	२	१०	४०	६	६	२८	४९	७५	४	६	५०	१	५	१८	४८	६	२०	०	७	२१	५६	५	२२	२२

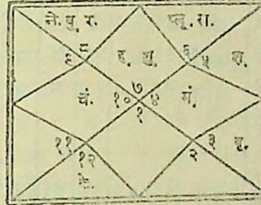
कार्तिक अमान्त ◡ ☌ ☉ काशी, शुक्रवार
ता. ११।११।७७ई. भा. स्टैं. टा. घं. १२ मि. ३९
इष्ट सांपातिक काल घं. १६. मि. २ से. १६

ल० ९ २७ ३७ ५९ | द० ० ७ ९ ५ १२



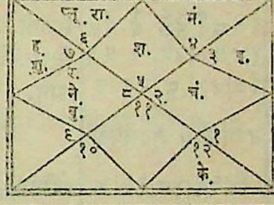
☉ वृश्चिक-संक्रांति, काशी, मंगलवार
ता. १६।११।७७ई. भा. स्टैं. टा. घं. मि. ११
इष्ट सांपातिक काल घं. ९ मि. ५२ से. ५५

ल० ६ २८ ९ ४७ | द० ४ २ २५ ३२



कार्तिक पूर्णिमान्त ◡ ☍ ☉ काशी, शुक्रवार
ता. २५।११।७७ई. भा. स्टैं. टा. घं. २३ मि. १
इष्ट सांपातिक काल घं. ३ मि. २१ से. १०

ल० ४ ० ५३ ५५ | द० ० २९ ९ ७



दैनिक लग्न-प्रवेश-सारणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदयका समय भा. स्टै. टा में)

नवम्ब.		मेष			वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चि.		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
ता.	वा.	घ.	मि.	से.	घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.
१	मं.	१६	२५	२२	१८	३	१९	५९	२२	१३	०	३५	२	४८	५	१	७	१७	९	३४	११	४०	१३	२५	१४	५७
२	बु.	१६	२१	२६	१७	५९	१९	५६	२२	९	०	३१	२	४५	४	५७	७	१३	९	३१	११	३६	१३	२१	१४	५३
३	गु.	१६	१७	३०	१७	५५	१९	५२	२२	५	०	२७	२	४१	४	५३	७	१०	९	२७	११	३२	१३	१८	१४	४९
४	शु.	१[illegible]	१३	३४	१७	५१	१९	४८	२२	१	०	२३	२	३७	४	४९	७	६	९	२३	११	२८	१३	१४	१४	४५
५	श.	१६	९	३८	१७	४७	१९	४४	२१	५७	०	१९	२	३३	४	४५	७	२	९	१९	११	२४	१३	१०	१४	४१
६	र.	१६	५	४२	१७	४३	१९	४०	२१	५३	०	१५	२	२९	४	४१	६	५८	९	१५	११	२०	१३	६	१४	३७
७	चं.	१[illegible]	१	४६	१७	३९	१९	३६	२१	४९	०	११	२	२५	४	३८	६	५४	९	११	११	१६	१३	२	१४	३३
८	मं.	१५	५७	५१	१७	३५	१९	३२	२१	४५	०	७	२	२१	४	३४	६	५०	९	७	११	१२	१२	५८	१४	२९
९	बु.	१५	५३	५५	१७	३१	१९	२८	२१	४२	०	३	२	१७	४	३०	६	४६	९	३	११	८	१२	५४	१४	२५
											* २३	५९														
१०	गु.	१५	४[illegible]	५९	१७	२८	१९	२४	२१	३८	२३	५५	२	१३	४	२६	६	४२	८	५९	११	४	१२	५०	१४	२१
११	शु.	१५	४[illegible]	३	१७	२४	१९	२०	२१	३४	२३	५१	२	९	४	२२	६	३८	८	५५	११	०	१२	४६	१४	१७
१२	श.	१५	४२	७	१७	२०	१९	१६	२१	३०	२३	४७	२	५	४	१८	६	३४	८	५१	१०	५६	१२	४२	१४	१३
१३	र.	१५	३८	११	१७	१६	१९	१२	२१	२६	२३	४३	२	१	४	१४	६	३०	८	४७	१०	५३	१२	३८	१४	९
१४	चं.	१५	३४	१५	१७	१२	१९	८	२१	२२	२३	४०	१	५७	४	१०	६	२६	८	४३	१०	४९	१२	३४	१४	५
१५	मं.	१५	३०	१९	१७	८	१९	४	२१	१८	२३	३६	१	५३	४	६	६	२२	८	३९	१०	४५	१२	३०	१४	२
१६	बु.	१५	२६	२३	१७	४	१९	०	२१	१४	२३	३२	१	५०	४	२	६	१८	८	३५	१०	४१	१२	२६	१३	५८
१७	गु.	१५	२२	२७	१७	०	१८	५७	२१	१०	२३	२८	१	४६	३	५८	६	१४	८	३२	१०	३७	१२	२२	१३	५४
१८	शु.	१[illegible]	१८	३१	१६	५६	१८	५३	२१	६	२३	२४	१	४२	३	५४	६	११	८	२८	१०	३३	१२	१९	१३	५०
१९	श.	१५	१४	३६	१६	५२	१८	४९	२१	२	२३	२०	१	३८	३	५०	६	७	८	२४	१०	२९	१२	१५	१३	४६
२०	र.	१५	१०	४०	१६	४८	१८	४५	२०	५८	२३	१६	१	३४	३	४६	६	३	८	२०	१०	२५	१२	११	१३	४२
२१	चं.	१५	६	४४	१६	४४	१८	४१	२०	५४	२३	१२	१	३०	३	४३	५	५९	८	१६	१०	२१	१२	७	१३	३८
२२	मं.	१५	२	४८	१६	४०	१८	३७	२०	५०	२३	८	१	२६	३	३९	५	५५	८	१२	१०	१७	१२	३	१३	३४
२३	बु.	१४	५८	५२	१६	३६	१८	३३	२०	४६	२३	४	१	२२	३	३५	५	५१	८	८	१०	१३	११	५९	१३	३०
२४	गु.	१४	५४	५६	१६	३२	१८	२९	२०	४३	२३	०	१	१८	३	३१	५	४७	८	४	१०	९	११	५५	१३	२६
२५	शु.	१४	५१	०	१६	२९	१८	२५	२०	३९	२२	५६	१	१४	३	२७	५	४३	८	०	१०	५	११	५१	१३	२२
२६	श.	१४	४७	४	१६	२५	१८	२१	२०	३५	२२	५२	१	१०	३	२३	५	३९	७	५६	१०	१	११	४७	१३	१८
२७	र.	१४	४३	८	१६	२१	१८	१७	२०	३१	२२	४८	१	६	३	१९	५	३५	७	५२	९	५८	११	४३	१३	१४
२८	चं.	१४	३९	१२	१६	१७	१८	१३	२०	२७	२२	४४	१	२	३	१५	५	३१	७	४८	९	५४	११	३९	१३	१०
२९	मं.	१४	३५	१६	१६	१३	१८	९	२०	२३	२२	४१	०	५८	३	११	५	२७	७	४४	९	५०	११	३५	१३	६
३०	बु.	१४	३१	२१	१६	९	१८	५	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	४०	९	४६	११	३१	१३	३

भविष्यवाणी—कार्तिक मास में ५ गुरुवार एवं ५ शुक्रवार हैं; यह पूर्वीय देशोंके लिए शुभद एवं पश्चिमी राष्ट्रोंके लिए अनिष्टकर है। ता. ५ से शुक्र स्वराशि तुला पर चलेगा। 'मेदिनां क्षेमसारोग्यं किञ्चित्किञ्चिद्विरोधकृत' अर्थात् विश्व में अधिकांशतः सुख-शांति क्षेमारोग्य रहेगा; केवल कुछ राष्ट्रोंमें समाजवाद, उपनिवेशवाद आर्थिक प्रभुत्वविस्तार एवं एकाधिकारस्थापनके लिए संघर्ष चलता रहेगा। ता. १० को गुरु नीच के मंगल से अशुभ द्विद्वादश ⊻ योग होगा। अतः विश्व के २४ विकासशील देशोंके आपसी आर्थिक विकास की योजनामें समृद्ध देशोंसे अपेक्षित सहायता न मिलेगी। संक्रांति-फल—सूर्य वृश्चिक में गत सं. से [illegible]वार ४ नक्षत्र मु. ४५पर प्रवेश करते हैं। ता. २२ को उनसे शनिका केंद्र □ योग होगा। धान्यभाव मंदा, मूंग मोठ बाजरा कपास बिनौला पाट बारदाना गुड़ घी तेल तिल सरसों अलसी मूंगफली मंदीमें संग्रहसे आगे निश्चित लाभ होगा। शेयर्स—सं. से पहले मामूली घट-बढ़से तेजी; तत्पश्चात हर उछालें बेचें; तीसरे हफ्ते में मंदीका पक्का चांस है।

ता० ९ नवम्बर को सिंह-लग्न का उदय दो बार होगा।

दिन ३१　दिसम्बर १९७७ ई०

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ से पौष कृष्ण ६ तक, सम्वत् २०३४, शके १८९९, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु

वार	दिसम्बर	तिथि	घटी	पल	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टा	मिनट	योग	घटी	पल	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	करण	घण्टा	मिनट	चं. राशि-प्रवेश राशि	घं. मि.	दिनमान घ. पल	काशी सूर्य उ. भारतीय स्टै. उ. घं. मि.	मध्याह्न घण्टा	मिनट	से.
		मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष																											
गु.	१	५	११	४५	११	१२	पुष्य	१८	१३	१३	४७	ब्रह्म	२३	३८	१५	५७	तै.	११	१२	ग.	०	८			२६/२८	६/३०	११	४६	५
शु.	२	६	१६	२३	१३	३	आश्ले.	२३	५३	१६	३	ऐन्द्र	२४	१५	१६	१२	व.	१३	३	भ.	१	४३	सिं.	१६/३	२३	३०	११	४७	२
श.	३	७	१९	३८	१४	२२	मघा	२८	१३	१७	४८	वैधृति	२३	४५	१६	१	बव	१४	२२	बा.	२	४१			२३	३१	११	४७	४
र.	४	८	२१	८	१४	५९	पू. फा.	३०	५३	१८	५३	विष्कु.	२१	५८	१५	१९	कौ.	१४	५९	तै.	२	५५			२०	३२	११	४८	८
चं.	५	९	२०	४३	१४	५०	उ. फा.	३१	३५	१९	११	प्रीति	१८	४३	१४	२	ग.	१४	५०	व.	२	२१	कं.	९/२	१९	३३	११	४८	३
मं.	६	१०	१८	१५	१३	५१	हस्त	३०	२०	१८	४१	आयु.	१३	४५	१२	३	भ.	१३	५१	बव	०	५८			१७	३३	११	४८	५
बु.	७	११	१३	४५	१२	४	चित्रा	२७	८	१७	२५	सौभा.	द२/७	१/३	६/६	२७/१६	बा.	१२	४	कौ.	२२	४९	तु.	६/०	१६	३४	११	४९	२
गु.	८	१२	द२/७	२८/१३	६/६	३४/२७	स्वाती	२२	८	१५	२६	अति.	४९	५८	२	३४	तै.	९	३४	ग.	२०/६	२७/१			१५	३५	११	४९	४
शु.	९	१४	५०	४५	२	५३	विशा.	१५	४८	१२	५४	सुकर्मा	३९	४५	२२	२९	भ.	१६	४०	श.	२	५३	वृ.	द३/७	१४	३५	११	५०	१
श.	१०	३०	४१	८	२३	३	अनु.	८	२८	९	५९	धृति	२८	५०	१८	८	च.	१२	५८	ना.	२३	३			१२	३६	११	५०	४
		मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष																											
र.	११	१	३१	१८	१९	८	ज्येष्ठा	द२/०	३५/१०	६/३	५१/४३	शूल	१७	४०	१३	४१	किं.	९	६	बव	१९/द	१९/द	ध.	द९/१	११	३७	११	५१	१
चं.	१२	२	२१	५०	१५	२१	पू. षा.	४५	२५	०	४७	गण्ड	४९/१	४०/३३	द९	१७/६	कौ.	१५	२१	तै.	१	३७			१०	३७	११	५१	३
मं.	१३	३	१३	५	११	५२	उ. षा.	३९	३	२२	१५	ध्रुव	४६	५	१	१६	ग.	११	५२	व.	२२	२२	म.	८/६	१०	३८	११	५२	७
बु.	१४	४	द५/४	३८/८	८/६	५३/३२	श्रवण	३४	८	२०	१७	व्या.	३८	१३	२१	५५	भ.	८	५३	बव	१/६	४३/३२			९	३८	११	५२	३
गु.	१५	६	५५	४५	४	५७	घनि.	३०	५८	१९	२	हर्षण	३१	१५	१९	९	कौ.	१७	४५	तै.	४	५७	कुं.	३७/४	८	३९	११	५३	४
शु.	१६	७	५३	४८	४	११	शत.	२९	४३	१८	३३	वज्र	२५	५३	१७	१	ग.	१६	३४	व.	४	११			८	४०	११	५३	३
श.	१७	८	५३	५८	४	१५	पू. भा.	३०	३३	१८	५३	सिद्धि	२२	१०	१५	३२	भ.	१६	१३	बव	४	१५	मी.	१२/४४	७	४०	११	५४	२
र.	१८	९	५५	५८	५	४	उ. भा.	३३	१५	१९	५९	व्यती.	१९	५८	१४	४०	बा.	१६	४०	कौ.	५	४			७	४१	११	५४	३
चं.	१९	१०	५९	३५	६	३२	रेवती	३७	३५	२१	४४	वरी.	१९	८	१४	२१	तै.	१७	४८	ग.	६	३२	मे.	२१/४४	६	४२	११	५५	१
मं.	२०	११	६०	०	२४	०	अश्वि.	४३	१८	०	१	परिघ.	१९	२५	१४	२८	व.	१९	३०	भ.	६	४३			६	४२	११	५५	३
बु.	२१	११	४	२५	८	२९	भरणी	४९	५३	२	४०	शिव	२०	३०	१४	५५	भ.	८	२९	बव	२१	३८			६	४३	११	५६	१
गु.	२२	१२	१०	८	१०	४६	कृत्ति.	५७	०	५	३१	सिद्धि	२२	१३	१५	३६	बा.	१०	४६	कौ.	०	०	वृ.	२२/२	६	४३	११	५६	३
शु.	२३	१३	१६	१५	१३	१४	रोहि.	६०	०	२४	०	साध्य	२४	८	१६	२३	तै.	१३	१४	ग.	२	३१			६	४४	११	५७	०
श.	२४	१४	२२	३५	१५	४७	रोहि.	४	१८	८	२८	शुभ	२६	३५	१७	१३	व.	१५	४७	भ.	५	३	मि.	२१/द७	६	४५	११	५७	३
र.	२५	१५	२८	५५	१८	१९	मृग.	११	४८	११	२६	शुक्ल	२८	१३	१८	२	बव	१८	१९	बा.	६	४५			६	४५	११	५८	०
		पौष कृष्णपक्ष																											
चं.	२६	१	३५	३	२०	४६	आर्द्रा	१८	५८	१४	२०	ब्रह्म	३०	८	१८	४८	बा.	७	३३	कौ.	२०	४६			७	४५	११	५८	२
मं.	२७	२	४०	४८	२३	५	पुनर्व.	२५	५३	१७	७	ऐन्द्र	३१	४५	१९	२८	तै.	९	५६	ग.	२३	५	क.	१०/२६	७	४६	११	५८	५
बु.	२८	३	४६	५	१	१२	पुष्य	३२	२५	१९	४४	वैधृति	३३	५	२०	०	व.	१२	९	भ.	१	१२			८	४६	११	५९	२
गु.	२९	४	५०	४०	३	२	आश्ले.	३८	२०	२२	६	विष्कु.	३३	५३	२०	१९	बव	१४	७	बा.	३	२	सिं.	२२/६	८	४६	११	५९	५
शु.	३०	५	५४	१५	४	२९	मघा	४३	१८	०	६	प्रीति	३४	०	२०	२३	कौ.	१५	४६	तै.	४	२९			९	४७	१२	०	२
श.	३१	६	५६	३५	५	२५	पू. फा.	४७	१०	१	३९	आयु.	३३	१५	२०	५	ग.	१६	५७	व.	५	२५			९	४७	१२	०	५

[पृष्ठ ५६ का शेषांश] ज्ये. से बु. २°.३४′ उ. [Gद्विदल-त्याग-व्रतारम्भ। द्विदल-दान। हरिवासर; अतः एकादशी व्रत पारण स्मार्तों को घं. ७ मि. २५ बजे तक कर लेना चाहिए, वैष्णवों को एकादशी द्वादशी दोनों का व्रत अवश्य कर्तव्य। मन्वादि १२। श्रीविष्णु-त्रिरात्र समाप्त। चातुर्मास व्रत यम नियमादि समाप्त। स्थायीजय योग घ.१६मि.१ बजे से घं.१७ मि. बजे तक। राष्ट्रीय अग्रहायण मास आरम्भ। कवि कुलगुरु कालिदास-जयन्ती। सूर्य सायन धनु में घं. १५ मि. ३७ ब ईदुज्जुहा (बकरीद)। Hव्रत की कृत्तिकायुता कार्तिकी पूर्णिमा १५, पुण्यतमा। रास १५। पुष्कर मेला (अजमेर)। रथ- (जैन)। कार्तिक स्नान दान व्रत यमनियमादि समाप्त। त्रिपुरोत्सव। सायं मत्स्यावतार १५। रासयात्रा वैष्णवों का। आश्रम वलिया में ददरी-मेला में स्नान का विशेष महत्त्व है। कार्तिकेय-दर्शन। कार्त्तिकी पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र हो कार्त्तिकेय स्वामी का जो दर्शन करता है, वह सात जन्म तक धनवान् और वेद-पारगत ब्राह्मण होता है। गुरु नानक-जयन्ती। श्रीनिम्बार्क-जयन्ती। जैन सप्ताह समाप्त।

दिसम्बर सन् १९७७ ई०। मार्गशीर्ष कृष्ण ५ से पौष कृष्ण ६ तक, संवत् २०३४ विक्रमीय। राष्ट्रीय अग्रहायण मास १० से राष्ट्रीय पौष मास १० तक, शके १८९९ शालिवाहन। जिलहेज १९ से मोहर्रम २० तक, १३९७-९८ हिजरी।

A☉ सूर्य सूल में एवं धनु-संक्रान्ति घं. २० मि.४६ बजे मु.१५ महर्घ, पुण्यकाल घं.१४ मि.२५ बजे से सूर्यास्त तक। वस्त्र-दान, गोदावरी में स्नान। धनु(खर)मास प्रारम्भ। सरदार पटेल की पुण्य-तिथि। Bकाशी में पिशाचमोचन पर पार्वण श्राद्ध करने पर पिशाच से मुक्ति मिलती है। प्रदोषकालव्यापिनी पूर्णिमा में दत्तात्रेय-जयन्ती १५। क्रिसमस-ईव।

वार	तारीखें: उदित तिथि	सौर(वृ.) मार्ग.मा. २९ दिन	जिलहेज २९दिन।१३९७ हि.	राष्ट्रीय अग्रहायण ३० दिन	अंग्रेजी तारीख	महापात,पञ्चक,व्रत,पर्व,त्योहार, जयन्ती, यायि(मुद्दई), स्थायी(मुद्दालेह)जय योग,सन्धिकर,योगादि।
गु.	५	१५	१९	१०	१	– [Eकालाष्टमी ८। यायिजय योग घं. १८ मि. ५३ बजे प्रारम्भ।
शु.	६	१६	२०	११	२	–भद्रा घं. १३ मि. ३ बजे प्रारम्भ।
श.	७	१७	२१	१२	३	–भद्रा घं. १ मि. ४३ बजे समाप्त। राजेन्द्र प्रसाद जन्म-दिवस।
र.	८	१८	२२	१३	४	–मध्याह्नव्यापिनी तथा सायाह्नस्पर्शमात्र अष्टमी में श्रीकालभैरवाष्टमी ८। कालभैरव-दर्शन-पूजा। E
चं.	९	१९	२३	१४	५	–यायिजय योग घं. १४ मि. ५० बजे समाप्त।
मं.	१०	२०	२४	१५	६	–भद्रा घं. २ मि. २१ बजे से घं. १३ मि. ५१ बजे तक।
बु.	११	२१	२५	१६	७	–उत्पन्ना ११ एकादशी व्रत सबका।
गु.	१२	२२	२६	१७	८	–एकादशी व्रत का पारण घं. ९ मि. ३४ बजे तक। **प्रदोष १२ व्रत**। यायिजय योग घं. ९ मि. ३४ बजे से घं. १५ मि. २६ बजे तक। १३ तिथि-क्षय।
शु.	१४	२३	२७	१८	९	–भद्रा घं. ६ मि. २७ बजे से घं. १६ मि. ४० बजे तक। मास शिवरात्रि १४ व्रत। स्थायीजय योग घं. ६ मि. ३५ बजे से घं. १२ मि. ५४ बजे तक।
श.	३०	२४	२८	१९	१०	–अन्वाधान। स्नान दान श्राद्ध की दर्श ३० अमावस्या, पापवारी प्रजाक्षयकरी दुर्भिक्षकरी। कमला-जयन्ती।
र.	१	२५	२९	२०	११	–इष्टि। ◡चंद्र-दर्शन मु. ३० साम्यार्घ। रुद्र-व्रत (**पिडिया व्रत**)। आधी रात के बाद अरुणोदय-काल में पिडिया का विसर्जन, नदी या तालाब में। शुक्र ☌ ज्येष्ठा युति घं. ४ मि. ७ बजे, ज्येष्ठा से शु. ५°-११′ उ.। [Cसे घं. ९ मि.३८ बजे तक। स्थायीजय योग घं.२२ मि.१५ बजे प्रारम्भ।
चं.	२	२६	१	२१	१२	–मोहर्रम १ माह सन् १३९८ हिजरी शुरू।
मं.	३	२	२	२२	१३	–भद्रा घं.२२ मि.२२ बजे प्रारम्भ। **वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत**। यायिजय योग घं. ० मि. ४७ बजेC
बु.	४	२८	३	२३	१४	–भद्रा घं. ८ मि. ५३ बजे तक। द्वितीय नागपंचमी ५ व्रत; पञ्चमी क्षय होने से। स्थायीजय योग घं. ९ मि. ३२ बजे समाप्त। ५ तिथि-क्षय। गुरु तेगबहादुर-बलिदान-दिवस।
गु.	६	२९	४	२४	१५	–पंचक प्रारम्भ घं.७ मि.१४ बजे। स्कन्दषष्ठी ६ व्रत। चम्पाषष्ठी ६ व्रत; महाराष्ट्र में प्रसिद्ध है।A
शु.	७	१	५	२५	१६	–पंचक। सौर पौष मास प्रारम्भ। भक्त नरसिंह मेहता-जयन्ती।
श.	८	२	६	२६	१७	–पंचक। भद्रा घं. ४ मि. ११ बजे से घं. १६ मि. १३ बजे तक। **श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रत**। स्थायीजय योग घं. ४ मि. ११ बजे से घं. ९ मि. ४० बजे तक।
र.	९	३	७	२७	१८	–पंचक। नवमी में नन्दा देवी का पूजन; इससे विष्णु लोक-प्राप्ति। कल्पादि ९। यायिजय योग घं. ४ मि. १५ बजे तक।
चं.	१०	४	८	२८	१९	–पंचक समाप्त घं. २१ मि. ४४ बजे। यायिजय योग घं. ५ मि. ४१ बजे समाप्त।
मं.	११	५	९	२९	२०	–भद्रा घं. १९ मि. ३० बजे प्रारम्भ।
बु.	११	६	१०	३०	२१	–भद्रा घं. ८ मि. २९ बजे समाप्त। **मोक्षदा ११ एकादशी व्रत सबका**। **श्रीगीता-जयन्ती ११**।D
गु.	१२	७	११	१	२२	–राष्ट्रीय पौष मास आरम्भ। **प्रदोष-व्रत**। अखण्ड द्वादशी व्रत। सूर्य सायन मकर में घं. ४ मि. ५४ बजे। सूर्य उत्तरायण और शिशिर ऋतु प्रारम्भ; दैत्यों का मध्याह्न एवं देवों की मध्य-रात्रि।
शु.	१३	८	१२	२	२३	–यायिजय योग घं. ५ मि. ३१ बजे से घं.६ मि. ४४ बजे तक। गुरु ग्रन्थ साहब का वार्षिकोत्सव।F
श.	१४	९	१३	३	२४	–भद्रा घं.१५ मि.४७ बजे प्रारम्भ। पिशाचमोचन १४। पिशाचमोचन-यात्रा। कपर्दीश्वर-दर्शन-पूजन;B
र.	१५	१०	१४	४	२५	–भद्रा घं. ५ मि. ३ बजे समाप्त। अन्वाधान। स्नान दान **व्रत की** मृगशीर्षयुता अग्रहायणी **पूर्णिमा** १५; पुण्यकाल घं.११मि.२६ बजे तक। मृगशीर्ष नक्षत्र-दर्शन से महत्पुण्य-प्राप्ति। षोडशी त्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या-जयन्ती। बड़ा दिन, ईसा-जयन्ती। महामना मालवीय-जयन्ती।
चं.	१	११	१५	५	२६	–इष्टि। **पौष मास प्रारम्भ**। यायिजय योग घं. १४ मि. २० बजे से घं. २० मि. ५६ बजे तक। **शुक्र ♀ अस्त पश्चिम में** घं. १७ मि. ५७ बजे।
मं.	२	१२	१६	६	२७	–त्रिपुष्कर योग घं. ६ मि. ४६ बजे से घं. १७ मि. ७ बजे तक।
बु.	३	१३	१७	७	२८	–भद्रा घं. १२ मि. ९ बजे प्रारम्भ।
गु.	४	१४	१८	८	२९	–भद्रा घं. १ मि. १२ बजे समाप्त। **संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत**, चन्द्रोदय घं. २० मि. ४६ बजे।
शु.	५	१५	१९	९	३०	– [D[illegible] एकादशी। मोती-एकादशी। ११ तिथि-वृद्धि। मुहर्रम(ताजिया)।
श.	६	१६	२०	१०	३१	–बैंकों की वार्षिक लेखाबन्दी। [Fश्रद्धानन्द बलिदान-दिवस। **शुक्र-वद्धत्व-दोषारम्भ आवश्यकीय**।

ता. ग्रह रा. नक्ष. चरण (नवां) प्रवे. स्टै. टा.							
दिस.	ग्रह	चिह्न	नक्षत्र राशि	चरण	नवांश	घण्टा	मिनट
१	शु.	♀	अनुराधा	१	सिं.	१९	३९
२	बु.	☿	मूल	३	मि.	१७	३१
२	सू.	☉	ज्येष्ठा	१	ध.	१७	५३
४	गु. R	♃	आर्द्रा	१	ध.	४	४[illegible]
४	शु.	♀	अनुराधा	२	कं.	११	२९
४	बु.	☿	मूल	४	क.	२१	२[illegible]
६	सू.	☉	ज्येष्ठा	२	म.	०	४[illegible]
७	शु.	♀	अनुराधा	३	तु.	३	४
९	सू.	☉	ज्येष्ठा	३	कुं.	७	२९
९	बु.	☿	पू. षा.	१	सिं.	१७	४१
९	शु.	♀	अनुराधा	४	वृ.	१८	४१
११	श.	♄	वक्री	—	—	१६	४८
१२	बु.	☿	वक्री	—	—	७	२४
१२	शु.	♀	ज्येष्ठा	१	ध.	१०	१७
१२	सू.	☉	ज्येष्ठा	४	मी.	१४	११
१३	मं.	♂	वक्री	—	—	०	[illegible]
१४	बु. R	☿	मूल	४	क.	१७	५९
१५	शु.	♀	ज्येष्ठा	२	म.	१	५२
१५	सू.	☉	धनु मूल	१	मे.	२०	४६
१७	शु.	♀	ज्येष्ठा	३	कुं.	१७	२७
१८	बु. R	☿	मूल	३	मि.	१८	४६
१९	सू.	☉	मूल	२	वृ.	३	२४
२०	शु.	♀	ज्येष्ठा	४	मी.	९	३
२१	बु. R	☿	मूल	२	वृ.	९	५
२२	सू.	☉	मूल	३	मि.	१०	०
२३	शु.	♀	ध. मूल	१	मे.	०	३७
२३	बु. R	☿	मूल	१	मे.	२०	३
२५	शु.	♀	मूल	२	वृ.	१६	१३
२५	सू.	☉	मूल	४	क.	१६	३४
२६	बु. R	☿	वृ. ज्ये.	४	मी.	१९	३०
२७	मं. R	♂	पुष्य	४	वृ.	१	५५
२८	शु.	♀	मूल	३	मि.	७	४८
२८	सू.	☉	पू. षा.	१	सिं.	२३	७
२९	गु. R	♃	मृगशीर्ष	४	वृ.	१४	८
३०	श. R	♄	मघा	२	वृ.	१६	१९
३०	शु.	♀	मूल	४	क.	२[illegible]	२[illegible]

ता. १६ दिसम्बर को बुध अस्त पश्चिम में।
ता. २६ दिसम्बर को शुक्र अस्त पूर्व में।
ता. २६ दिसम्बर को बुध उदय पूर्व में।

आकाशी-लक्षण—मासारम्भ से ही बादल-बूंदी, ओला-पाला का जोर रहेगा; ता. १,२,९,१०,११,१२,१[illegible],१४ को कहीं छिटफुट वर्षा भी हो जायेगी। कुछ प्रदेश शीतलहरी से आक्रान्त होंगे। धनु-संक्रान्ति वरुण-मण्डल में पड़ गयी है। अतः १५,१[illegible],२३,२५,२६ को अनेक स्थानों में वृष्टि की सम्भावना है। ता. २७,२८,२९ को तीव्र वायु-वेग तथा पश्चिमोत्तर भारत में कहीं-कहीं वर्षा भी होगी

दिनांक		स्था. काशी प्रातः स्टै. टा. ५-२९ बजे के ० बजे का सां. प. का.			सूर्य का दैनिक स्पष्ट ☉				दैनिक गति		दै. क्रां. दक्षिण		चित्रापक्षीय अर्ध-दैनिक ☽ चन्द्रस्पष्ट: चं. स्पष्ट घं. ५ मि. २९ बजे का				अर्धदैनिक गति			चं. स्पष्ट घं. १७ मि. २९ बजे का				अर्धदैनिक गति	
ता.	वा.	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.
१	गु.	४	३८	२	७	१५	७	४६	६०	४९	२१	४५	३	१२	०	१४	६	१	५६	३	१८	३२	१०	६	४
२	शु.	४	४१	५९	७	१६	८	३५	६०	५०	२१	५४	३	२४	३६	३५	६	७	२६	४	०	४४	१	६	१०
३	श.	४	४५	५५	७	१७	९	२५	६०	५२	२२	३	४	६	५५	०	६	१५	७	४	१३	१०	७	६	१[illegible]
४	र.	४	४९	५२	७	१८	१०	१७	६०	५३	२२	१२	४	१९	२९	५६	६	२५	६	४	२५	५	२	६	३०
५	चं.	४	५३	४८	७	१९	११	१०	६०	५५	२२	१९	५	२	२५	५८	६	३७	१७	५	९	३	१५	६	४५
६	मं.	४	५७	४५	७	२०	१२	३	६०	५६	२२	२७	५	१५	४७	१६	६	५१	९	५	२२	३८	२५	६	५[illegible]
७	बु.	५	१	४२	७	२१	१२	५	६०	५७	२२	३४	५	२९	३६	५१	७	५	४८	६	६	४२	३[illegible]	७	१[illegible]
८	गु.	५	५	३८	७	२२	१३	५६	६०	५८	२२	४१	६	१३	५[illegible]	३८	७	१९	४८	६	२१	१५	२६	७	२[illegible]
९	शु.	५	९	३५	७	२३	१४	५४	६१	०	२२	४७	६	२८	४१	२७	७	३१	२५	७	६	१२	५२	७	३[illegible]
१०	श.	५	१३	३१	७	२४	१५	५४	६१	०	२२	५३	७	१३	४८	३५	७	३८	४	७	२१	२७	२२	७	४०
११	र.	५	१७	२८	७	२५	१६	५४	६१	०	२२	५८	७	२९	७	४८	७	४०	३७	८	६	४८	२[illegible]	७	३[illegible]
१२	चं.	५	२१	२४	७	२६	१७	५५	६१	१	२३	३	८	१४	२[illegible]	४३	७	३६	३३	८	२२	४	१९	७	३[illegible]
१३	मं.	५	२५	२१	७	२७	१८	५६	६१	३	२३	७	८	२९	३६	४४	७	२७	१७	९	७	४	१	७	२[illegible]
१४	बु.	५	२९	१७	७	२८	१[illegible]	५९	६१	३	२३	११	९	१४	२५	१२	७	१४	२५	९	२१	३९	३७	७	७
१५	गु.	५	३३	१४	७	२९	२१	२	६१	३	२३	१५	९	२८	४६	५१	६	५९	५०	१०	५	४६	४१	६	५[illegible]
१६	शु.	५	३७	११	८	०	२२	५	६१	३	२३	१८	१०	१२	३९	८	६	४५	१६	१०	१९	२४	२४	६	३[illegible]
१७	श.	५	४१	७	८	१	२३	८	६१	४	२३	२१	१०	२६	२	४८	६	३१	५८	११	२	३४	४६	६	२[illegible]
१८	र.	५	४५	५	८	२	२४	१२	६१	४	२३	२३	११	९	०	४८	६	२०	४१	११	१५	२१	२९	६	१[illegible]
१९	चं.	५	४९	०	८	३	२५	१६	६१	५	२३	२४	११	२१	३७	२४	६	११	४४	११	२७	४९	८	६	८
२०	मं.	५	५२	५७	८	४	२६	२१	६१	५	२३	२५	०	३	५७	१५	६	५	६	०	१०	२	२१	६	२[illegible]
२१	बु.	५	५६	५३	८	५	२७	२[illegible]	६१	५	२३	२६	०	१६	४	५५	६	०	३३	०	२२	५	२८	५	५८
२२	गु.	६	०	५०	८	६	२८	३२	६१	५	२३	२६	०	२८	४	२५	५	५७	४५	१	४	२	१०	५	५६
२३	शु.	६	४	४६	८	७	२९	४७	६१	५	२३	२	१	९	५९	३	५	५६	२१	१	१५	५५	२४	५	५[illegible]
२४	श.	६	८	४३	८	८	३०	४२	६१	६	२३	२५	१	२१	५१	२५	५	५५	५८	१	२७	४७	२३	५	५[illegible]
२५	र.	६	१२	४०	८	९	३१	४८	६१	६	२३	२४	२	३	४३	२७	५	५६	२२	२	९	३९	४९	५	५[illegible]
२६	चं.	६	१६	३६	८	१०	३२	५४	६१	७	२३	२३	२	१५	३६	३५	५	५७	२२	२	२१	३३	५७	५	५[illegible]
२७	मं.	६	२०	३३	८	११	३४	१	६१	७	२३	२०	२	२७	३२	१	५	५८	५७	३	३	३०	५८	५	५[illegible]
२८	बु.	६	२४	२९	८	१२	३५	८	६१	७	२३	१८	३	९	३०	५७	६	१	१७	३	१५	३२	१४	६	[illegible]
२९	गु.	६	२८	२६	८	१३	३६	१५	६१	८	२३	१५	३	२१	३५	०	६	४	३४	३	२७	३९	३४	६	६
३०	शु.	६	३२	२२	८	१४	३७	२३	६१	९	२३	११	४	३	४६	१४	६	९	९	४	९	५५	२३	६	१[illegible]
३१	श.	६	३६	१९	८	१५	३८	३२	६१	९	२३	७	४	१६	७	२४	६	१५	२१	४	२२	२२	४५	६	१[illegible]

ग्रहाक्रान्त एवं विद्धनक्षत्र-ग्रह विवरण

दिस. तारीख	ग्रह	आक्रान्त नक्षत्र	सर्वतोभद्र-वेध: सम्मुख	वाम +	दक्षिण R	पञ्चशलाका-वेध	लत्ता
चालू	प्लूटो	हस्त	उ. भा.	पू. षा.	आर्द्रा ♃	उ. भा.	-
,,	नेप्च्यू.	ज्येष्ठा	पुष्य	अश्विनी	स्वाती	पुष्य	-
,,	हर्शल	विशाखा	धनिष्ठा	अनुराधा ☉	कृत्तिका	कृत्तिका	-
,,	राहु	हस्त	उ. भा.	पू. षा.	आर्द्रा ♃	उ. भा.	उ. पा[illegible]
,,	केतु	रेवती	उ. फा.	मृगशीर्ष	मूल ☿	उ. फा.	पुष्[illegible]
,,	शनि	मघा	भरणी	श्रवण	आश्लेषा ♂	श्रवण	अनु.([illegible]
१	शुक्र	अनुराधा	आश्ले. ♂	भरणी	विशाखा ♅	भरणी	हस्तP
२	सूर्य	ज्येष्ठा	पुष्य	अश्विनी	स्वाती	पुष्य	भर[illegible]
९	बुध	पू. षा.	आर्द्रा ♃	उ. भा.	हस्तP ☊	आर्द्रा ♃	चित्रा
१२	शुक्र	ज्येष्ठा	पुष्य	अश्विनी	स्वाती	पुष्य	चित्रा
१४	बुध R	मूल	पुनर्वसु	रेवती ☋	चित्रा	पुनर्वसु	हस्तP
१५	सूर्य	मूल	पुनर्वसु	रेवती ☋	चित्रा	पुनर्वसु	कृत्ति[illegible]
२३	शुक्र	मूल	पुनर्वसु	रेवती ☋	चित्रा	पुनर्वसु	स्वाति[illegible]
२६	बुध R	ज्येष्ठा	पुष्य	अश्विनी	स्वाती	पुष्य	उ. [illegible]
२७	मंग. R	पुष्य	ज्ये. ♆ ☿	पू. फा.	शतभिषा	ज्ये. ♆ ☿	मघा
२८	सूर्य	पू. षा.	आर्द्रा ♃	उ. भा.	हस्तP ☊	आर्द्रा ♃	रोहि[illegible]
२९	गुरु R	मृगशीर्ष	उ. षा.	चित्रा	रेवती ☋	उ. षा.	मघा

स्पष्ट ग्रह एवं दै.गति प्रात:५।२९ स्टैं.टा.

ता. दिस.	♂ मं. रा.	अं.	क.	ग. क.	☿ बु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♃ गु. R रा.	अं.	क.	ग. क.	♀ शु. रा.	अं.	क.	ग. क.	♄ श. रा.	अं.	क.	ग. क.	☋ रा. रा.	अं.	क.	♅ ह. रा.	अं.	क.	♆ ने. रा.	अं.	क.	P प्लू. रा.	अं.	क.
१	३	१७	८	८	८	६	८	६८	२	१०	२१	७	७	२	३५	७५	४	६	५४	१	५	१८	३९	६	२०	१०	७	२२	३	५	२२	२७
४	३	१७	३१	६	८	९	२१	५७	२	१०	०	७	७	१६	२१	७५	४	६	५७	१	५	१८	२९	६	२०	२१	७	२२	१०	५	२२	३२
७	३	१७	४८	४	८	११	५५	४०	२	९	३८	७	७	२०	८	७५	४	६	५९	०	५	१८	२०	६	२०	३१	७	२२	१७	५	२२	३६
१०	३	१७	५८	२	८	१३	३२	१६	२	९	१५	८	७	१३	५४	७५	४	७	०	०	५	१८	१०	६	२०	४१	७	२२	२४	५	२२	४०
१३	३	१८	१	१	८	१३	४०	१४	२	८	५२	८	७	१७	४०	७५	४	७	०	०	५	१८	१	६	२०	५१	७	२२	३१	५	२२	४४
१६	३	१७	५७	३	८	१२	२८	५०	२	८	२८	८	७	२१	२७	७५	४	६	५९	१	५	१७	५१	६	२१	०	७	२२	३८	५	२२	४८
१९	३	१७	४५	५	८	९	२९	७६	२	८	४	८	७	२५	१३	७५	४	६	५७	१	५	१७	४२	६	२१	९	७	२२	४५	५	२२	५२
२२	३	१७	२६	८	८	५	२९	८२	२	७	४०	८	७	२९	०	७५	४	६	५४	१	५	१७	३२	६	२१	१८	७	२२	५१	५	२२	५५
२५	३	१७	०	१०	८	१	३७	६५	२	७	१५	८	८	२	४[illegible]	७५	४	६	५०	२	५	१७	२२	६	२१	२७	७	२२	५७	५	२२	५८
२८	३	१६	२६	१३	७	२८	५२	३५	२	६	५१	८	८	६	३३	७५	४	६	४५	२	५	१७	१३	६	२१	३५	७	२३	३	५	२३	०
३१	३	१५	४५	१५	७	२७	३९	४	२	६	२७	८	८	१०	१९	७५	४	६	३९	२	५	१[illegible]	३	६	२१	४२	७	२३	९	५	२३	२

मार्गशीर्ष अमान्त ☽ ☌ ☉ काशी, शनिवार
ता.१०।१२।७७ई. भा.स्टैं.टा. घं.२३ मि.[illegible]
इष्ट सांपातिक काल घं.४ मि.२२ से.१९

ल० [illegible]० / [illegible]४ / [illegible]४ / [illegible]७ / [illegible]०

प्लू. रा. — मं. — ह. ७ ९ श. ४ ३ बृ. — शु. ने. चं. सू. ८ ५ २ ११ — बु. ९ १० — १२ १ के.

द० १ / १३ / ५० / २०

☉ धनु-संक्रांति, काशी, गुरुवार
ता.१५।१२।७७ई.भा.स्टैं.टा. घं.२०मि.४९
इष्ट सांपातिक काल घं.२ मि.२७ से.४०

ल० ३ / १९ / १२ / १८

श. — बृ. — म. प्लू. ६ ५ मं. ३ २ — ह. ७ ४ १ १० — शु. ने. ८ ९ — ११ १२ के. — र. बु. — चं.

द० ० / १५ / ४६ / १०

मार्गशी. पूर्णिमान्त ☽ ☍ ☉ काशी, रविवार
ता.२५।१२।७७ई.भा. स्टैं.टा. घं.१८मि१९
इष्ट सांपातिक काल घं. ० मि. ३६ से. ३१

ल० २ / २५ / १० / ७

मं. — श. ५ ४ चं. बृ. २ — गु. प्लू. ६ ३ ९ १२ के. — ह. ७ ८ बु. शु. र. १० ११ — ने.

द० ११ / १६ / २५ / ५४

[दै]निक लग्न-प्रवेश-सारणी (हर तारीख को मेषादि द्वादश लग्नोदयका समय भा.स्टैं.टा.में)

दिस. वा.	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
गु.	१४	२७	२५	१६	५	१८	२	२०	१५	२२	३३	०	५१	३	३	५	१९	७	३६	९	४१	११	२७	१२	५९
शु.	१४	२३	२९	१६	१	१७	५८	२०	११	२२	२९	०	४७	२	५९	५	१६	७	३३	९	३८	११	२३	१२	५५
श.	१४	१९	३३	१५	५७	१७	५४	२०	७	२२	२५	०	४	२	५५	५	१२	७	२९	९	३४	११	२०	१२	५१
र.	१४	१५	३७	१५	५३	१७	५०	२०	३	२२	२१	०	३	२	५१	५	८	७	२५	९	३०	११	१६	१२	४७
चं.	१४	११	४१	१५	४९	१७	४६	१९	५९	२२	१७	०	३५	२	४७	५	४	७	२१	९	२६	११	१२	१२	४३
मं.	१४	७	४६	१५	४५	१७	४२	१९	५५	२२	१	०	३१	२	४४	५	०	७	१७	९	२२	११	८	१२	३
बु.	१४	३	४९	१५	४१	१७	३८	१९	५१	२२	९	०	२७	२	४०	४	५६	७	१३	९	१८	११	४	१२	३५
गु.	१३	५९	५४	१५	३७	१७	३४	१९	४८	२२	५	०	२३	२	३६	४	५२	७	९	९	१४	११	०	१२	३१
शु.	१३	५५	५८	१५	३३	१७	३०	१९	४४	२२	१	०	१९	२	३२	४	४८	७	५	९	१०	१०	५६	१२	२७
श.	१३	५२	२	१५	३०	१७	२६	१९	४०	२१	५७	०	१५	२	२८	४	४४	७	१	९	६	१०	५२	१२	२३
र.	१३	४८	६	१५	२६	१७	२२	१९	३६	२१	५३	०	११	२	२४	४	४०	६	५७	९	२	१०	४८	१२	१९
चं.	१३	४४	१०	१५	२२	१७	१८	१९	३२	२१	४९	०	७	२	२०	४	३६	६	५३	८	५९	१०	४४	१२	१६
मं.	१३	४०	१४	१५	१८	१७	१४	१९	२८	२१	४५	०	३	२	१६	४	३२	६	४९	८	५५	१०	४०	१२	१२
											*	२३	५९												
बु.	१३	३६	१८	१५	१४	१७	१०	१९	२४	२१	४२	२३	५५	२	१२	४	२८	६	४५	८	५१	१०	६	१२	८
गु.	१३	३२	२२	१५	१०	१७	६	१९	२०	२१	३८	२३	५२	२	८	४	२४	६	४१	८	४७	१०	३२	१२	४
शु.	१३	२८	२६	१५	६	१७	३	१९	१६	२१	३४	२३	४८	२	४	४	२०	६	३७	८	४३	१०	२९	१२	०
श.	१३	२४	३०	१५	२	१६	५९	१९	१२	२१	३०	२३	४४	२	०	४	१७	६	३४	८	३९	१०	२५	११	५६
र.	१३	२०	३४	१४	५८	१६	५५	१९	८	२१	२६	२३	४०	१	५६	४	१३	६	३०	८	३५	१०	२१	११	५२
चं.	१३	१६	३८	१४	५४	१६	५१	१९	४	२१	२२	२३	३६	१	५२	४	९	६	२६	८	३१	१०	१७	११	४८
मं.	१३	१२	४३	१४	५०	१६	४७	१९	०	२१	१८	२३	३२	१	४८	४	५	६	२२	८	२७	१०	१३	११	४५
बु.	१३	८	४[illegible]	१४	४६	१६	४३	१८	५६	२१	१४	२३	२८	१	४५	४	१	६	१८	८	२३	१०	९	११	४१
गु.	१३	४	५१	१४	४२	१६	३९	१८	५२	२१	१०	२३	२४	१	४१	३	५७	६	१४	८	१९	१०	५	११	३७
शु.	[illegible]	०	५५	१४	३८	१६	३५	१८	४[illegible]	२१	७	२३	२०	१	३७	३	५३	६	११	८	१५	१०	२	११	३३
श.	१२	५६	५९	१४	३५	१६	३२	१८	४५	२१	३	२३	१६	१	३४	३	४९	६	७	८	११	९	५८	११	२९
र.	१२	५३	३	१४	३१	१६	२८	१८	४१	२०	५९	२३	१२	१	३०	३	४६	६	३	८	७	९	५४	११	२५
चं.	१२	४९	७	१४	२७	१६	२४	१८	३७	२०	५५	२३	८	१	२[illegible]	३	४२	५	५९	८	४	९	५०	११	२१
मं.	१२	४५	११	१४	२३	१६	२०	१८	३३	२०	५१	२३	५	१	२२	३	३८	५	५५	८	०	९	४६	११	१७
बु.	१२	४१	१५	१४	१९	१६	१६	१८	२९	२०	४७	२३	१	१	१८	३	३४	५	५१	७	५६	९	४२	११	१३
गु.	१२	[illegible]७	१[illegible]	१४	१५	१६	१२	१८	२५	२०	४३	२२	५७	१	१४	३	३०	५	४७	७	५२	९	३८	११	९
शु.	१२	३३	२३	१४	११	१६	८	१८	२१	२०	३९	२२	५३	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श.	१२	२९	२८	१४	८	१६	५	१८	१७	२०	३६	२२	४९	१	६	३	२२	५	३९	७	४५	९	३०	११	२

भविष्यवाणी–गुरु वक्री चलही रहा है, ता. ११से शनि, ता.१२ से बुध, ता.१३से मंगल भी वक्री हो रहे हैं; गनीमत है, उसी दिन वह राहु से ✳ त्रिरेकादश योग बनायेगा। अतः छोटे-बड़े राष्ट्रों द्वारा विश्व में शांति समता न्याय व्यक्ति-स्वातन्त्र्य के मूल्य-संवर्धन का जितना जोर-शोर से प्रचार किया जायेगा, उतना उनपर अमल कोई राष्ट्र न करेगा। भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर युवा नेता के हठात् चमकाने का प्रयास निरानन्द रहेगा। भारतीय विरोधी दलों में सद्बुद्धि जागृत होगी; वे आपसी एकीकरण से एक स्वस्थ विरोधपक्षका निर्माण कर भारतीय प्रजातांत्रिक प्रणाली के विकास में रचनात्मक भूमिका अदा करेंगे। संक्रांति-फल–सूर्य धनुपर गत सं.से ३वार ४नक्षत्र मु.१५पर प्रवेश करते हैं। रुई सूत सोना चाँदी गुड़ खाँड़ घी तेल तिलहनादि प्रायः सभी जिसोंमें ग्रहयोग तेजीको बढ़ावा देनेवाले हैं। ता. २३ से भाव ढीले पड़ जायेंगे। शेयर्स–सं. से पहले दुतर्फी घटा-बढ़ी, पश्चात् मंदी के झटके में मोते कर तेजीका नफा खाते रहें।

ता. १३ दिसम्बर को कन्या-लग्न का उदय दो बार होगा।

❀ ग्रह-युति सन् १६७७ ई० ❀

१जनवरीचं.☌ गुरुपिधानघं.७मि.३८बजे,चं.सेगु.०°.८उ.
६ ,, सूर्य☌ बुधअंतर्युतिघं.१३मि.३७बजे,सू.सेबु.२°.८उ.
८ ,, चं.☌ शनि युति घं.५मि.३४ बजे, चं,से श.६° उ.
१२ ,, बुध☌ मंगल युति घं.१७मि.२४बजे,मं.सेबु.३°.१उ.
१४ ,, चंद्र☌ हर्शल युति घं.६मि.१० बजे. चं.सेह.०°.६द.
१६ ,, चंद्र☌ नेप्च्यूनयुतिघं.१७मि.३५बजे,चं.सेने.२°.१द.
१८ ,, चंद्र☌ बुध युतिघं.२३मि.३१ बजे, चं.से बु.५°.६द.
२३ ,, चंद्र☌ शुक्र-पिधानघं.१६मि.४७बजे,चं.सेशु.०°.२द.
२८ ,, चंद्र☌ गुरुयुति घं.१५मि.१०बजे,चं. से गु.१°.२ उ.

४ फरवरी चंद्र☌ शनि युति घं.६ मि.३ बजे,चं. सेश.६° उ.
१० ,, चंद्र☌ हर्शल युति घं.१५मि.११ बजे,चं से ह.०°.६द.
१३ ,, बुध☌ मंगल युति घं.०मि.२४ बजे,मं.से बु.०°.१ द.
१३ ,, चं.☌ नेप्च्यून युति घं.१मि.११बजे,चं.सेने. २°.४द.
१६ ,, चंद्र☌ मंगलयुति घं.१७ मि.१८बजे,चं.से मं.६°.२द.
१६ ,, चंद्र☌ बुध युति घं.२२मि.३७ बजे, चं.से बु.६°.६ द.
२१ ,, चंद्र☌ शुक्र युति घं.२२मि.३७ बजे, चं.से शु.३°.१उ.
२५ ,, चंद्र☌ गुरु युति घं.३मि.५५बजे, चं.से गु. १°.७ उ.

३ मार्च चंद्र☌ शनि युति घं.१४मि.३५बजे, चं.सेश.६°.१उ.
६ ,, चंद्र☌ हर्शल युति घं.२०मि.४७बजे,चं.से ह.१°.१द.
१२ ,, चंद्र☌ नेप्च्यून युति घं.७ मि.१बजे,चं.से ने.२°.६द.
१६ ,, सूर्य☌ बुधबहिर्युतिघं.१०मि.५४बजे,सू.से बु.१°.५द.
१७ ,, चंद्र☌ मंगल युति घं.१७मि.३३बजे,चं.से मं.५°.८द.
२० ,, चंद्र☌ बुध युति घं. १० मि.४८ बजे,चं.सेबु.३° द.
२१ ,, चंद्र☌ शुक्र युति घं.१८मि.३७बजे, चं.से शु.८° उ.
२४ ,, चंद्र☌ गुरु युति घं.२०मि.१५बजे, चं.से गु.२°.३उ.
२८ ,, बुध☌ शुक्र युति घं. ०मि.४६बजे, शु.से बु.८°.३ द.
३० ,, चंद्र☌ शनि युति घं.२२मि.६बजे.चं.से श.६°.३ उ.

६ अप्रैल चंद्र☌ हर्शल युतिघं.३मि.५६बजे,चं.सेह. १°.१द.
६ ,, सूर्य☌ शुक्रअन्तर्युति घं.१२मि.०बजे,सू.सेशु.७°.५ उ.
८ ,, चंद्र☌ नेप्च्यूनयुतिघं.१३मि.२६बजे,चं.सेने.२°.७द.
१५ ,, चंद्र☌ मंगलयुतिघं.१७मि.३१बजे,चं. सेमं.४°.४द.
१७ ,, चंद्र☌ शुक्र युति घं.१ मि.१८ बजे, चं.सेशु.४°.५उ.
१६ ,, चंद्र☌ बुध युति घं.२१मि.४७बजे, चं.से बु.४°.८उ.
२१ ,, चंद्र☌ गुरु युति घं.१४मि.२८बजे,चं.से गु. २°.८उ.
२७ ,, चंद्र☌ शनि युति घं.६मि.५३ बजे, चं.सेश.६°.२उ.
३० ,, सूर्य☌ बुधअंतर्युतिघं.२२मि.१३बजे,सू.सेबु.०°.७उ.

३ मई चंद्र☌ ह. युति घं. १२मि.४७बजे, चं.से ह.१° द.
५ ,, चंद्र☌ नेप.युति घं.२१मि.४४ बजे, चं.सेने. २°.६ द.
१३ ,, शुक्र☌ मं.युति घं.२३मि.२६ बजे,मं.से शु. १°.३ उ.
१४ ,, चंद्र☌ शु.पिधान घं.१६मि.५७बजे,चं.से शु. १°.१द.
१५ ,, चंद्र☌ मं.युति घं.१७मि. ११ बजे, चं.सेमं. २°.३द.
१६ ,, चं.☌ बुध युति घं.१२मि.५६ बजे, चं.से बु. ३°.१द.

१६ मईचं.☌ गुरु युति घं.६ मि.२६ बजे, चं.से गु. ३°.२उ.
२४ ,, चं.☌ शनि युतिघं.१६मि.२५बजे,चं.से श.६°.१उ.
३० ,, चं.☌ ह. युति घं. २१मि.५०बजे, चं.से ह. ०°.६द.

२ जून चंद्र☌ नेप्च्यून युति घं.७मि.२०बजे,चं.से ने.२°.५द.
३ ,, शुक्र☌ मंगल युति घं.१८मि.४०बजे,मं.सेशु.१°.२द.
४ ,, सूर्य☌ गुरु युति घं.१५मि.५बजे,गु.से सू.०°.५ उत्तर
१२ ,, चं.☌ मं.-पिधानघं.१८मि.५५बजे,चं. सेमं.०°.१उ.
१२ ,, चं.☌ शुक्रयुति घं.२०मि.११बजे, चं.से शु.१°.५द.
१५ ,, चं.☌ बुध युति घं.१०मि.५२बजे, चं.से बु.३°.३ उ.
१६ ,, चंद्र☌ गुरु युति घं.४मि.४२बजे, चं. से गु.३°.६ उ.
२० ,, बुध☌ गुरु युति घं.१२मि.४६बजे, गु.सेबु.०°.२ उ.
२१ ,, चंद्र☌ शनि युति घं.२मि.४७बजे, चं.से श.५°.८उ.
२७ ,, चंद्र☌ हर्शलयुति घं.५मि.४७ बजे, चं.से ह.१° द.
२६ ,, चं.☌ नेप्. युतिघं.१६ मि.४१बजे, च.से ने.२°.५द.
३० ,, सूर्य☌ बुधबहिर्युतिघं.५मि.५२बजे,सू.सेबु.१°.३उ.

११जुलाईचंद्र☌ मं. युतिघं.१६मि.५३बजे,चं.से मं.२°.२उ.
१२ ,, चंद्र☌ शुक्रपिधान घं.१५मि.० बजे,चं.सेशु.०°.६उ.
१४ ,, चंद्र☌ गुरु युतिघं.० मि. १ बजे, चं. से गु. ४°उ.
१८ ,, चंद्र☌ बुध युति घं.८मि.४ बजे, चं. से बु.६°२उ.
१८ ,, चंद्र☌ शनि युतिघं.१४मि.२७बजे,चं.से श.५°.६ उ.
२० ,, बुध☌ शनियुति घं.६मि.३५बजे. श.से बु. ०°३ उ.
२४ ,, चंद्र☌ हर्शलयुति घं.१२मि.१८बजे,चं.सेह.१°.३द.
२७ ,, चंद्र☌ नेप्च्यूनयुतिघं.०मि.३०बजे,चं.सेने.२°.६ द.
३० ,, गुरु☌ शुक्रयुतिघं.११मि.५७बजे,गु. से शु. १°.५ द.

६अगस्त चंद्र☌ मंगल युति घं.१६ मि.३६बजे,चं.सेमं.४°उ.
१० ,, चंद्र☌ गुरु युति घं.१८मि.५३बजे, चं.सेगु.४°.४उ.
११ ,, चंद्र☌ शुक्र युतिघं.१६ मि.५बजे, चं.से शु.३°.७उ.
१३ ,, सूर्य☌ शनि युति घं.११ मि. ५८ बजेश.से सू.१°द.
१५ ,, चंद्र☌ शनि युति घं.३मि.४४बजे, चं.से श.५°.४उ.
१७ ,, चंद्र☌ बुध युतिघं.४मि.४१बजे, चं. से बु. ०°.६द.
२० ,, चंद्र☌ हर्शल युतिघं.१८मि.२६बजे,चं.सेह. १°.५द.
२३ ,, चंद्र☌ नेप्.युति घ.६ मि.३३ बजे, चं.से ने.२°.८द.

५सितम्बर मंगल☌ गुरुयुतिघं.३मि.५बजे.गु.से मं.०°.५उ.
५ ,, सूर्य☌ बु.अन्तर्युतिघं.११मि.१३बजे,सू.सेबु.३°.८द.
७ ,, चंद्र☌ गुरु युतिघं.१२मि.१३ बजे.चं. से गु.४°.७उ.
७ ,, चंद्र☌ मंगल युति घं.१४मि.४०बजेचं.सेमं.५°.३उ.
११ ,, चंद्र☌ शुक्रयुति घं.२मि.३४ बजे, चं.से शु.५°. उ.
११ ,, चंद्र☌ शनियुति घं.१८मि.२७बजे,चं,से श.५°.३उ.
१२ ,, चंद्र☌ बुध युति घं.१६मि.२७ बजे,चं.से बु.१°.६उ.
१७ ,, चंद्र☌ हर्शलयुति घं.२ मि.४बजे, चं.से ह. १°.८द.
१८ ,, शुक्र☌ शनियुति घं.१८मि.१४बजे,श.से शु.०°.४द.
१९ ,, चंद्र☌ नेप्च्यूनयुति घ.१२मि.१०बजे,चं.से ने.३°द.

४ अक्टूबर चंद्र ☌ गुरुयुति घं. २मि. ११बजे, चं.सेगु.४°·८उ.
६ ,, चंद्र ☌ मंगल युति घं. ८मि. ५२बजे, चं.से मं.६°·१उ.
९ ,, चंद्र ☌ शनियुति घं. ९ मि. ३२बजे, चं .सेश.५°·३उ.
११ ,, चंद्र ☌ शुक्र युति घं. ६ मि. ३३बजे, चं.सेशु. ३°·६ उ.
१२ ,, चंद्र बुध युति घं. १८ मि. ४१बजे, चं. से बु.१° उ.
१४ ,, चंद्र ☌ हर्शल युति घं. १२मि. ३०बजे, चं.सेह.१°·९द.
१६ ,, चं. ☌ नेप्च्यूनयुतिघं. १९मि. २७बजे, चं.सेने. ३°·१द.
१९ ,, सूर्य ☌ बुधबहिर्युति घं. ४मि. ४७बजे. सू.सेबु.०°·८उ.
२९ ,, बुध ☌ हर्शल युति घं. ६ मि. २२बजे, ह.से बु.०° ७द.

१नवम्बरचं. ☌ गु.युति घं. १०मि. ५०बजे, चं.सेगु.४°·८उ.
३ ,, चं. ☌ मं. युति घं. १९मि. ५[illegible] बजे, चं. से मं. [illegible]°·६उ.
५ ,, चं. ☌ श. युति घं. २३ मि. २ बजे, चं.से श. ५°·२उ.
१० ,, चं. ☌ शु. पिधान घ. ५मि. ५८ बजे, चं. से शु. ०·१उ.
११ ,, चं. ☌ ह. युति घं. १ मि. ३२ बजे, चं. से ह. २°·१ द.
१२ ,, चं. ☌ बु.युति घं. १० मि. ४७बजे, चं. से बु.५°·७द.
१३ ,, चं. ☌ नेप्. युति घं. ५ मि. ४५ बजे, चं.से ने. ३°·१द.

२०नवम्बरबु. ☌ नेप्.युति घं. १३मि. ३६बजे, ने.से बु. ३°·७द.
२० ,, शु. ☌ ह. युति घं. १५ मि. १ बजे, ह. से शु. ०·९उ.
२८ ,, चं. ☌ गु.युति घं. १३ मि. ३६बजे, चं.से गु. ४°·७उ.

१दिसम्बरचं. ☌ मं. युतिघं. १८मि. ५०बजे, चं. से मं. ७°·३उ.
३ ,, चंद्र ☌ शनि युति घं. ८ मि. ५६ बजे, चं.सेश. ५° उ.
८ ,, चंद्र ☌ हर्शल युतिघं. १४मि. १९बजे, चं.से ह. २°·३द.
१० ,, चंद्र ☌ शुक्र युति घं. ४ मि. ३९बजे, चं.से शु. ३°·५ द.
१० ,, चंद्र ☌ नेप्. युतिघं. १८मि. २८ बजे, चं.सेने. ३°·१द.
१२ ,, चंद्र ☌ बुध युति घं. ५ मि. २७बजे, चं.से बु. ५°·९द.
१७ ,, शुक्र ☌ नेप्.युति घं. ६ मि. ३३ बजे. ने. सेशु.१°·१द.
२१ ,, सू. ☌ बुधअन्तुर्युतिघं. १९मि. ३७बजे, सू.सेबु.२°·१उ.
२४ ,, बुध ☌ शुक्रयुति घं. १८ मि. ५६बजे, शु.से बु.२°·६उ.
२५ ,, चंद्र ☌ गुरुयुति घं. १२मि. ३६बजे. चं.से गु.४°·६उ.
२८ ,, चंद्र ☌ मंगलयुति घं. २३मि. २९बजे, चं.से मं. ८°·३उ.
३० ,, चंद्र ☌ शनियुति घं. १४मि. ३०बजे, चं.से श.४°·८उ.

दिशासूल से जाओ बायें, राहु जोगिनी पूठ ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लच्छमी लूट ॥

पूर्व	तिथि	६, १४
	वार	मंगल, बुध
	चन्द्रराशि	मेष, सिंह, धनु ।
पश्चिम	तिथि	१, ९
	वार	गुरुवार, शनिवार
	चन्द्रराशि	मिथुन, तुला, कुम्भ ।
उत्तर	तिथि	५, १३
	वार	गुरुवार, शुक्रवार
	चन्द्रराशि	कर्क, वृश्चिक, मीन ।
दक्षिण	तिथि	२, १०
	वार	सोमवार, शनिवार
	चन्द्रराशि	वृष, कन्या, मकर ।

व्यापारिक-यात्रा-मुहूर्तः—आज के युग में व्यापार के सिलसिले में आवागमन बहुत बढ़ गया है; प्रायः व्यापारीगण लाभदायक यात्रा का मुहूर्त पूछते रहते हैं। अतः व्यापार में अभीष्ट सफलता एवं लाभ-प्राप्ति के लिये वर्तमान सदी के अद्भुत प्रतिभाशाली ज्योतिषी महाकवि 'घाघ' की उक्ति और तदनुसार यात्रा-मुहूर्त का चक्र बगल में दिया जा रहा है। आशा है, पाठकगण इससे लाभान्वित होकर इस जंत्री को और भी प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

दृष्टान्त—जैसे उत्तर दिशा में जाना है तो गुरु या शुक्रवार को तिथि ५ या १३ हो तथा उसी समय में चंद्रमा कर्क, वृश्चिक या मीन इन तीन राशियों में-से किसी राशि पर हो तो उत्तर दिशा में यात्रा करने से पर्याप्त लाभ होगा। इसी प्रकार से अन्य दिशाओं के विषय में भी समझें।

❀ सर्वघात-चक्र ❀

रवि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मा.सौ.	कार्तिक	मार्ग.	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र	माघ	आश्वि.	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गु.
तिथि	१–२ ११	५–१० १५	२–७ १२	२–७ १२	३–८ १३	५–१० १५	४–९ १४	१–६ ११	३–८ १३	४–९ १४	३–८ १३	५–१० १५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु.	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले.
नक्षत्र. पाद	कृत्तिका १	चित्रा २	शत. ३	मघा ३	धनि. १	आर्द्रा ३	मूल २	रोहिणी ४	पू.भा. ३	मघा ४	मूल ४	पू.भा. ३
योग	विष्कंभ	सुकर्मा	परिघ	व्याघा.	धृति	शूल	सुकर्मा	व्यती.	वज्र	धृति	गण्ड	वज्र
करण	बव	शकुनि	चतुर्थ	नाग	बव	कौल.	तैति.	गर	तैति.	शकुनि	किंस्तु.	चतुर्थ
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	मेष	सिंह	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चि.	मेष	कर्क
प्रहर	१ ला	४था	३रा	१ला	१ला	१ला	४था	१ला	१ला	४था	३रा	४था
चन्द्र	१ ला	५ वाँ	९वाँ	२रा	६वाँ	१०वाँ	३रा	७वाँ	४था	८वाँ	११वाँ	१२वाँ
चंद्रस्त्री	१ ला	८वाँ	७वाँ	९वाँ	६वाँ	३रा	४था	२रा	१०वाँ	११वाँ	५वाँ	१२वाँ

अपनी जन्म-राशि के अनुसार घात चक्रोक्त मास, तिथि, वारादि को द्यूत (सट्टा), प्रवास राज-दर्शन और यात्रा में वर्जित करना चाहिये। विवाह, उपनयादि में घात-चक्र वर्ज्य नहीं है।

॥ भावी-ज्ञान का सरल उपाय ॥

प्रस्तुत प्रश्नावली के प्रति जनता की गहरी आस्था देख कर इस ी महान् उपयोगिता को और भी व्यापक बनाने के ख्याल से उसमें आठ नवीन प्रश्नों को शामिल किया गया है और उनके बदले पहले के ८ अपेक्षाकृत कम उपयोगी प्रश्नों को इसमें-से हटा दिया गया है ; फिर भी जिन लोगों को पहलेवाले आठ प्रश्नों के उत्तर की आवश्यकता आ पड़े तो वे सन् '६४ की जंत्री के प्रयोग से अपना प्रयोजन पूरा कर ही सकते हैं। नवीन ८ प्रश्नों के समावेश से पाठकगण निश्चय ही अति सन्तुष्ट होंगे, ऐसी हमें पूर्ण आशा है। जो नवीन प्रश्न समाविष्ट किये गये हैं, उनको तारांकित कर दिया है; अस्तु। इस प्रश्नावली में कुल ३० प्रकार के प्रश्न नम्बरवार दिये गये हैं। इस प्रश्नावली से हर-एक पाठक बड़ी सरलता पूर्वक मामूली जोड़-बाकी द्वारा अपने किसी प्रश्न का यथार्थ उत्तर निकाल सकते हैं। प्रश्न करने के पूर्व आप अपने मन को शान्त और एकाग्र कर लें, फिर निम्नांकित ३० प्रश्नों में-से जो प्रश्न आपको करना हो, उसको अपने मन में ईश्वर का स्मरण करते हुए स्पष्ट शब्दों में उच्चरण करें। 'अमुक' की जगह कार्य या व्यक्ति का नामोच्चारण करना चाहिए। पश्चात् बगल के 'तीसा यंत्र' के किसी कोष्ठक में उँगली रक्खें, इतना ध्यान रहे कि ॐ के कोष्ठक में उँगली न रक्खें, अस्तु। आपने जिस कोष्ठक में उँगली रक्खा, वह आपका 'भाग्यांक' हुआ। अब जिस संख्या का प्रश्न आपने किया है उस संख्या में 'भाग्यांक' को जोड़ देने से जो संख्या प्राप्त हो, उस संख्या के प्रश्न की बगल में बायीं तरफ किस चक्र का नाम लिखा है, यह देख लें। उसी चक्र में भाग्यांक के सामने आपके प्रश्न का उत्तर लिखा मिलेगा। ध्यान रहे कि यदि भाग्यांक को अपने प्रश्न की संख्या में जोड़ने से योगफल ३० से अधिक हो तो उसमें से ३० घटा कर शेष को ग्रहण करें, यानी उसी शेष संख्या के प्रश्न की बायीं ओर लिखे चक्र के नीचे व भाग्यांक के सामने आपके प्रश्न का उत्तर मिलेगा। उदाहरण—किसी ने पूछा, "अमुक प्राणी जीवित है या नहीं ?" यह २७वाँ संख्या का प्रश्न है। उसने भगवान् का ध्यान कर "तीसा यंत्र" के १३वें अंक-वाले कोष्ठक पर उँगली रक्खी। अब २७ और १३ को जोड़ दिया तो योगफल ४० हुआ। यह ३० से अधिक है। अतः इसमें से ३० घटा दिया तो शेष १० बचा। १०वें प्रश्न की बायीं तरफ 'कर्क' लिखा है। अतएव कर्क-चक्र में भाग्यांक १३ के सामने देखा तो—'इस प्राणी के जीवित रहने में सन्देह है',—यह उत्तर लिखा मिल गया। इसी भाँति आप अन्य किसी भी प्रश्न का उत्तर निकाल सकते हैं, किन्तु ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्ति एक दिन में एक ही प्रश्न करें। मनोविनोद या कौतूहल-निवृत्ति के लिये इस प्रश्नावली का दुरुपयोग कदापि न करें अन्यथा लाभ होना तो दूर रहा, यंत्राभिमानी देवता से हानि हो सकती है। यदि कोई इस प्रश्नावली को यत्रतत्र छा वा तोड़-जोड़ कर नकल करने का दुःसाहस करेगा तो विद्या और विधान दोनों क्षेत्रों में दण्ड का भागी होगा।

॥ गुप्त-विद्या-प्रकाश ॥

॥ तीसा यंत्र ॥

ॐ	१३	१०	७
११	६	१	१२
५	८	१५	२
१४	३	४	९

चक्र सं.	क्रम-संख्या प्रश्न
हनुमान	१—क्या मेरी मनोकामना पूरी होगी ?
अग्नि*	२—मेरा यह वर्ष कैसा रहेगा ?
वायु	३—अमुक कार्य में हानि होगी अथवा लाभ ?
जल	४—मुझको यहाँ लाभ होगा अथवा अन्य स्थान पर ?
पृथ्वी	५—अमुक व्यक्ति जो चला गया है क्या वह वापस आवेगा ?
आकाश	६—मेरी नष्ट वस्तु मिलेगी या नहीं ?
मेष	७—अमुक व्यक्ति विश्वसनीय है या नहीं ?
वृष	८—क्या इस यात्रा से लाभ होगा ?
मिथुन*	९—मैं जो काम करना चाहता हूँ उसमें सफलता मिलेगी या नहीं ?
कर्क	१०—क्या यह विवाह मेरे लिए हितकर होगा ?
सिंह*	११—मुझे व्यापार में साझा से लाभ होगा या नहीं ?
कन्या	१२—इस गर्भ में पुत्र होगा या कन्या ?
तुला	१३—अमुक रोगी रोग से मुक्ति पायेगा या नहीं ?
वृश्चिक	१४—अमुक व्यक्ति अभियोग से छूटेगा या नहीं ?
धनु	१५—मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा ?
मकर*	१६—अमुक व्यक्ति को रोग है, प्रेतबाधा है या ग्रह-दोष।
कुम्भ	१७—मैं जो जायदाद खरीदना चाहता हूँ वह लाभदायक होगी या नहीं ?
मीन*	१८—अमुक हाकिम से मेरा कार्य सिद्ध होगा या नहीं ?
सूर्य*	१९—जिस मकान में मैं रहता हूँ उसमें कोई दोष है या नहीं ?
चन्द्र	२०—मैं मुकदमा जीतूँगा या नहीं ?
मंगल	२१—यह खबर झूठी है या सच्ची ?
बुध	२२—क्या मुझे वर्तमान कष्ट से छुटकारा मिलेगा ?
गुरु	२३—यह नौकरी हमारे लिये कैसी रहेगी ?
शुक्र*	२४—मुझे प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी या नहीं ?
शनि	२५—अमुक वस्तु मुझे लाभदायक होगी या नहीं ?
राहु*	२६—मेरा खोया हुआ पशु किस तरफ गया है ?
केतु	२७—अमुक प्राणी जीवित है या नहीं ?
ब्रह्मा	२८—मुझको कर्ज मिलेगा या नहीं ?
विष्णु	२९—मेरी ... होगी या नहीं ?
महेश	३०—मेरा तबादिला निकट भविष्य में होगा या नहीं ?

अग्नि-चक्र का फल

(१) आप भाग्यशाली हैं, कामना पूरी होगी।
(२) आप का तबादिला निकट भविष्य में होने की आशा नहीं है।
(३) तरक्की होगी, लेकिन सूर्य का दान करो।
(४) उद्योग करो, कर्ज मिलेगा।
(५) जीवित होने में सन्देह है।
(६) पशु दक्षिण गया है, नहीं मिलेगा।
(७) इसके खरीदने में हानि होगी।
(८) सफल हो जावोगे, लेकिन मंगल का व्रत रक्खो।
(९) इस नौकरी से लाभ होगा।
(१०) इस कष्ट से छुटकारा शीघ्र मिलेगा, शिवाराधना करें।
(११) यह खबर सच्ची है।
(१२) मुकदमा जीतने में सन्देह है, केतु पूज्य है।
(१३) यह मकान अशुभ है, वास्तु शान्ति करायें।
(१४) हाकिम से आशा कुछ पूरी हो जायेगी।
(१५) हाँ, लाभदायक होगी।

वायु-चक्र का फल

(१) यह वर्ष सन्तापजनक रहेगा।
(२) आपकी कामना पूरी होगी।
(३) हाँ, तबादिला होने का योग पाया जाता है।
(४) फिलहाल तरक्की की आशा कम है।
(५) उद्योग करने से कर्ज मिलेगा।
(६) जीवित रहने में सन्देह है।
(७) दक्षिण गया है, कदाचित मिले।
(८) मत खरीदो, हानि होगी।
(९) सफल हो जाओगे।
(१०) नौकरी में लाभ रहेगा।
(११) इस कष्ट से छुटकारा देर में मिलेगा।
(१२) यह खबर झूठी है।
(१३) मुकदमा जीतने में सन्देह है, सुलह कर लो।
(१४) मकान शुभ है।
(१५) हाकिम से आशा देर में पूरी होगी।

जल-चक्र का फल

(१) इस कार्य में लाभ होगा, गुरु की शान्ति करायें।
(२) यह वर्ष कष्टकारक होगा, मंगल की शान्ति करायें।
(३) आशा पूरी होने में सन्देह है।
(४) निकट भविष्य में तबादिला की आशा नहीं।
(५) हाँ, तरक्की की आशा करो।
(६) समय खोटा है, कर्ज नहीं मिलेगा।
(७) जीवित रहने की आशा कम है।
(८) उत्तर-पश्चिम के कोण में गया है, मिलना कठिन है।
(९) खरीदो, लाभ होगा।
(१०) हाँ, सफल हो जाओगे।
(११) नौकरी से लाभ उठाओगे।
(१२) देर से छुटकारा पाओगे, केतु पूज्य है।
(१३) खबर झूठी है।
(१४) मुकदमा में जीत होगी।
(१५) वह मकान निर्दोष तथा शुभ है।

पृथ्वी-चक्र का फल

(१) अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा।
(२) इस कार्य में लाभ होगा।
(३) आपका यह वर्ष सामान्य शुभ रहेगा।
(४) कुछ पूरी होगी, कुछ पूरी नहीं होगी।
(५) उद्योग से निकट भविष्य में ही तबादिला होगा।
(६) तरक्की की आशा मत करो।
(७) कर्ज नहीं मिलेगा।
(८) जीवित नहीं है, आगे हरि इच्छा।
(९) उत्तर गया है, ढूँढ़ो, मिल जायगा।
(१०) मत खरीदो, हानि होगी।
(११) हाँ, सफल हो जाओगे।
(१२) इस नौकरी का एतबार नहीं।
(१३) दिन खोटे हैं, छुटकारा न मिलेगा।
(१४) यह खबर सच्ची है।
(१५) भगवान् आपको विजयी बनायेंगे।

आकाश-चक्र का फल

(१) वह आगे बढ़ रहा है, वापसी की आशा कम है।
(२) इस स्थान पर लाभ होगा, सन्तोष करो।
(३) इस कार्य में हानि होगी।
(४) यह वर्ष आपका शुभ फलदायी होगा।
(५) देर से कामना पूरी होगी।
(६) हाँ, तबादिला की सम्भावना शीघ्र है।
(७) अभी तरक्की की आशा मत करो।
(८) कर्ज नहीं मिलेगा।
(९) वह जीवित है।
(१०) पूरब गया है, जल्दी करने से मिल जायेगा।
(११) हाँ, लाभ होगा, खरीदो।
(१२) सफलता की अल्प सम्भावना है।
(१३) इस नौकरी में हानि होगी, खुद छोड़ दोगे।
(१४) इस कष्ट से छुटकारा देर से मिलेगा।
(१५) यह खबर सच्ची मालूम पड़ती है।

मेष-चक्र का फल

(१) इस वस्तु का मिलना कठिन है।
(२) वह व्यक्ति शीघ्र वापिस आयेगा।
(३) अन्य स्थान पर जाने से ला[illegible] होगा।
(४) इस कार्य में हानि-लाभ मध्यम रहेगा।
(५) यह वर्ष आपको कष्टदायक होगा, राहु की शांति करायें।
(६) कामना पूरी न होगी।
(७) तबादिला का योग है।
(८) फिलहाल तरक्की की कोई आशा नहीं है।
(९) किसी मित्र द्वारा कर्ज प्राप्त होगा।
(१०) यह प्राणी जीवित है।
(११) उत्तर गया है, मिल सकता है।
(१२) मत खरीदो, हानि होगी।
(१३) सफल होना अति कठिन है।
(१४) इस नौकरी से लाभ रहेगा।
(१५) कष्ट से छुटकारा देर में मिलेगा।

वृष-चक्र का फल

(१) हाँ, वह विश्वासपात्र है ।
(२) खोई वस्तु मिलेगी ।
(३) उसके वापिस आने में अभी देर है ।
(४) आपको इसी स्थान पर लाभ होगा ।
(५) इस कार्य में लाभ मध्यम होगा ।
(६) यह वर्ष आपका मध्यम है, बुध पूज्य है ।
(७) आपकी कामना पूरी न होगी ।
(८) तबादिला शीघ्र होगा ।
(९) तरक्की का योग पाया जात है ।
(१०) उद्योग से कर्ज मिलेगा ।
(११) वह प्राणी जीवित है ।
(१२) पूर्व-उत्तर के कोण में गया है, मिलना अति कठिन है
(१३) मत खरीदो, हानि होगी ।
(१४) परिश्रम से सफलता मिलेगी ।
(१५) इस नौकरी में साधारण लाभ होगा ।

मिथुन-चक्र का फल

(१) हाँ, इस यात्रा स लाभ होगा ।
(२) यह प्राणी विश्वासमात्र है ।
(३) इस वस्तु का मिलना कठिन है ।
(४) उसके वापस आने का इन्तजार कीजिये ।
(५) दूसरी जगह जाने पर लाभ होगा ।
(६) इस कार्य में हानि होगी ।
(७) यह वर्ष प्रत्येक भाँतिसे नेष्ट है,केतु की शान्ति करायें ।
(८) अभी आपकी कामना पूरी न होगी ।
(९) तबादिला का योग है, ईश्वर मालिक है ।
(१०) हाँ, तरक्की का योग पाया जाता है ।
(११) कर्ज मिलने की आशा नहीं है ।
(१२) उसके जीवित होने में सन्देह है ।
(१३) उत्तर दिशा में गया है, मिलना दुःसाध्य है ।
(१४) हाँ, खरीदो, लाभ होगा ।
(१५) अत्यन्त परिश्रम से ही सफल हो सकते हो ।

कर्क-चक्र का फल

(१) सफलता प्राप्त होगी ।
(२) इस यात्रा से लाभ की आशा कम है ।
(३) यह प्राणी विश्वासमात्र नहीं है ।
(४) इस वस्तु का मिलना मुश्किल है ।
(५) उसके वापिस आने में अभी देर है ।
(६) दूसरी जगह जाने पर लाभ होगा ।
(७) इस कार्य में हानि होगी ।
(८) यह वर्ष विशेष हानिकर है, शनि की शान्ति करायें ।
(९) किसी मित्र की सहायता से कामना पूर्ण हो ।
(१०) तबादिला होगा, पर देर है ।
(११) हाँ, तरक्की इस वर्ष होगी ।
(१२) कर्ज मिलने की कोई आशा नहीं ।
(१३) इस प्राणी के जीवित रहने में सन्देह है ।
(१४) पश्चिम तरफ गया है, ढूँढो मिलेगा ।
(१५) हाँ, खरीदो, लाभ होगा ।

सिंह-चक्र का फल

(१) हाँ, यह शादी लाभदायक होगी ।
(२) सफलता मिलेगी ।
(३) कदापि न जायँ, हानि होगी ।
(४) यह प्राणी विश्वासपात्र है ।
(५) नष्ट वस्तु मिलेगी ।
(६) वह व्यक्ति अभी नहीं आयेगा ।
(७) यह स्थान मत छोड़ो, देर में लाभ होगा ।
(८) इस कार्य में हानि उठानी पड़ेगी ।
(९) आपका यह वर्ष दुःखदायी है, शनि पूज्य है ।
(१०) आपकी कामना पूर्ण होगी ।
(११) अभी तबादिला की कोई आशा नहीं ।
(१२) तरक्की इस वर्ष न होगी ।
(१३) समय खोटा है, कर्ज नहीं मिलेगा ।
(१४) वह प्राणी जीवित है ।
(१५) पश्चिम गया है, शीघ्रता करने से मिलेगा ।

कन्या-चक्र का फल

(१) साभा में लाभ होगा ।
(२) यह विवाह आपके लिये हितकर होगा ।
(३) सफलता में सन्देह है, अतः राहु की शान्ति जरूरी है
(४) यात्रा से लाभ न होगा ।
(५) वह व्यक्ति ईमानदार है ।
(६) नष्ट वस्तु नहीं मिलेगी ।
(७) वह व्यक्ति अभी नहीं आयेगा ।
(८) दूसरी जगह जाने से लाभ होगा ।
(९) हाँ, इसमें लाभ होगा ।
(१०) यह वर्ष आपको लाभदायक रहेगा ।
(११) आपकी कामना पूरी होगी ।
(१२) तबादिला शीघ्र होगा, पूर्व दिशा में ।
(१३) तरक्की की आशा कम है ।
(१४) किसी मित्र की सहायता से कर्ज प्राप्त होगा ।
(१५) वह प्राणी जीवित है ।

तुला-चक्र का फल

(१) पुत्र होगा ।
(२) साभा से लाभ अवश्य होगा ।
(३) यह विवाह आपके लिये हितकर न होगा ।
(४) प्रयास से देर में सफलता मिलेगी ।
(५) हाँ, यात्रा से लाभ होगा ।
(६) इस व्यक्ति पर भरोसा मत करो ।
(७) नष्ट वस्तु नहीं मिलेगी ।
(८) वापसी में विलम्ब है, इन्तजार कीजिये ।
(९) आपको इसी स्थान पर लाभ होगा ।
(१०) लाभ होगा ।
(११) यह वर्ष आपको उत्तम सन्तोषजनक रहेगा ।
(१२) आपकी यह कामना पूरी न होगी ।
(१३) निकट भविष्य में ही तबादिला होगा ।
(१४) आपकी तरक्की शीघ्र होगी ।
(१५) किसी मित्र की सहायता से कर्ज मिलेगा ।

वृश्चिक-चक्र का फल

(१) हाँ, वह रोग से मुक्ति पा जावेगा ।
(२) पुत्र रत्न होगा ।
(३) साझे के व्यापार में हानि का भय है ।
(४) आपके लिये यह विवाह हितकर होगा ।
(५) जाकर कोशिश करो, सफलता मिलेगी ।
(६) यात्रा मत करो, हानि होगी ।
(७) इस व्यक्ति का इतबार न करो ।
(८) नष्ट वस्तु मिलने की आशा नहीं है ।
(९) उसके आने में अभी विलम्ब है ।
(१०) इसी स्थान पर लाभ होगा ।
(११) इस कार्य में लाभ होगा ।
(१२) आपके भाग्य का सितारा इस वर्ष चमकेगा ।
(१३) आप की आशा पूर्ण न होगी ।
(१४) अभी तबादिला नहीं होगा ।
(१५) तरक्की का योग आ रहा है ।

धनु-चक्र का फल

(१) जुर्म से छुटकारा पा जायेगा ।
(२) परहेज न किया तो फिर बीमार होगा ।
(३) इस गर्भ से पुत्र उत्पन्न होगा ।
(४) साझे में लाभ की आशा अल्प है ।
(५) हाँ, यह विवाह हितकर होगा ।
(६) सफलता सन्दिग्ध है, शनि पूज्य है ।
(७) इस यात्रा में हानि होगी ।
(८) इस व्यक्ति के ईमान का ठिकाना नहीं है ।
(९) नष्ट वस्तु सुरक्षित है, मिलेगी, कोशिश करो ।
(१०) वह व्यक्ति देर से वापिस आयेगा ।
(११) इसी स्थान पर लाभ होगा ।
(१२) हाँ, इस कार्य में हानि होगी (* मंगल पूज्य है ।)
(१३) यह वर्ष नाना प्रकार की कठिनाइयों से बीतेगा ।*
(१४) आपकी कामना पूर्ण होगी ।
(१५) तबादिला की आशा न करें, दुर्गा पाठ करायें ।

मकर-चक्र का फल

(१) किसी सत्पुरुष का दर्शन पाकर लाभ होगा ।
(२) इस अभियोग से देर में छूटेगा ।
(३) हाँ, रोगी अच्छा होगा, राहु की शान्ति करायें ।
(४) इस गर्भ से कन्या होगी ।
(५) लाभ होगा, परन्तु कुछ महीने बाद ।
(६) यह शादी आपको हितकर होगी ।
(७) सफलता अनिश्चित है, शनि की शान्ति करायें ।
(८) यात्रा में हानि होगी ।
(९) हाँ, यह प्राणी विश्वासपात्र है ।
(१०) नष्ट वस्तु नहीं मिलेगी ।
(११) वह व्यक्ति शीघ्र आयेगा ।
(१२) आपको दूसरी जगह जाने पर लाभ होगा ।
(१३) इस कार्य में हानि होगी ।
(१४) यह वर्ष आपको लाभदायक है ।
(१५) किसी मित्र की सहायता से कामना पूर्ण हो ।

कुम्भ-चक्र का फल

(१) शारीरिक व्याधि है ।
(२) नाना प्रकार के विचार उठेंगे । दिन अच्छा बीतेगा ।
(३) राहु की शान्ति करायें, छूट जायेगा ।
(४) इस रोगी को ब्रह्म-बाधा है, तंत्र प्रयोग करावें ।
(५) पुत्र होगा ।
(६) लाभ से अधिक हानि की आशंका है ।
(७) यह विवाह हानिकारक होगा ।
(८) सफलता कठिन है, मंगल की शान्ति करायें ।
(९) इस यात्रा से लाभ होगा ।
(१०) यह प्राणी विश्वासपात्र है ।
(११) नष्ट वस्तु मिलेगी ।
(१२) आगे बढ़ रहा है, देर में लौटेगा ।
(१३) अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा ।
(१४) इस कार्य में लाभ होगा ।
(१५) यह वर्ष विशेषतः आपको लाभदायक है ।

मीन-चक्र का फल

(१) हाँ, खरीदो लाभ होगा ।
(२) गुप्त रोग से पीड़ित है ।
(३) आज का दिन चिन्ता-व्यथा से गुजरेगा ।
(४) छूटना कठिन है, बुध की शान्ति करायें ।
(५) दवा जारी रखिये, आराम होगा, शुक्र पूज्य हैं ।
(६) पुत्री होगी ।
(७) लाभ हो सकता है; मगर शनि की शान्ति करायें ।
(८) हाँ, यह विवाह आपके लिये हितकर होगा ।
(९) सफलता हासिल करो ।
(१०) लाभ होगा, यात्रा करो ।
(११) हाँ, यह प्राणी विश्वासपात्र है ।
(१२) इस वस्तु का मिलना कठिन है ।
(१३) वह दूर बढ़ेगा, वापसी में देर है ।
(१४) इसी स्थान पर लाभ होगा ।
(१५) इस कार्य में लाभ मध्यम होगा ।

सूर्य-चक्र का फल

(१) कार्य सिद्ध होगा, अभी देर है ।
(२) खरीदो, लाभ होगा ।
(३) प्रेत-बाधा है ।
(४) सत्संग से लाभ होगा ।
(५) छूटेगा, शुक्र की शान्ति करायें ।
(६) यदि परहेज न किया तो बीमार ही रहेगा ।
(७) कन्या होगी ।
(८) लाभ-प्राप्ति में मंगल बाधक है, शान्ति करायें ।
(९) हाँ, यह विवाह हितकर होगा ।
(१०) सफलता निश्चितप्राय है ।
(११) यात्रा मत करो, हानि होगी ।
(१२) इस व्यक्ति पर भरोसा मत करो ।
(१३) इस वस्तु को स्त्री ने लिया है, मिलना कठिन है ।
(१४) वह देर से लौटेगा ।
(१५) इसी स्थान पर लाभ होगा, कुछ दिन संतोष करो ।

चन्द्र-चक्र का फल

(१) मकान दोषरहित है ।
(२) कार्य यथा समय बन जायेगा ।
(३) हानि होगी ।
(४) जादू, टोना, दीठ लगी है ।
(५) सुख से दिन व्यतीत होगा ।
(६) छूटना मुश्किल है, शनि की पूजा करें ।
(७) रोग असाध्य है, शनि की शान्ति करायें ।
(८) पुत्र होगा, पर जिद्दी होगा, मंगल की शान्ति करायें ।
(९) साझे से लाभ होगा ।
(१०) यह विवाह हितकर होगा ।
(११) सफलता की सम्भावना है ।
(१२) हानि होगी, यात्रा मत करो ।
(१३) उसके विश्वास पर भरोसा मत करो ।
(१४) मिल जायेगा, कोशिश करो ।
(१५) उसके लौटने में देर है ।

मंगल-चक्र का फल

(१) विजय होगी, लेकिन गुरु का दान करायें ।
(२) मकान में दोष नहीं है ।
(३) कार्य सिद्ध होने में सन्देह है ।
(४) खरीदो, लाभदायक होगी ।
(५) ग्रह-बाधा है, मंगल की शान्ति करायें ।
(६) दिन चिन्त युक्त गुजरेगा ।
(७) छूटना कठिन है, शनि की शान्ति करायें ।
(८) रोगी के बदपरहेजी से रोग बढ़ गया है, मंगल की शान्ति करायें ।
(९) कन्या होगी ।
(१०) लाभ होगा, साझा करो ।
(११) हाँ, हितकर होगा, विवाह करो ।
(१२) सफलता में बाधायें हैं, केतु पूज्य है ।
(१३) यात्रा से हानि होगी ।
(१४) हाँ, यह प्राणी विश्वासपात्र है ।
(१५) कोशिश व्यर्थ है, नहीं मिलेगा ।

बुध-चक्र का फल

(१) यह खबर सच्ची है ।
(२) मुकदमे में विजय होगी ।
(३) इस मकान मे चोरी आदि का भय है, राहु पूज्य है ।
(४) कार्य सिद्ध होने में दुविधा है ।
(५) हाँ, लाभदायक होगी ।
(६) किसी ने प्रयोग कराया है ।
(७) चिन्ता-व्यथा से गुजरेगा ।
(८) छूटना कठिन है, मंगल की शान्ति करायें ।
(९) रोग-मुक्त होना कठिन है, चन्द्रमा पूज्य है ।
(१०) पुत्र होगा ।
(११) परदेश में साझा करो, लाभ होगा ।
(१२) विवाह हानिप्रद होगा ।
(१३) सफलता बहुत मुश्किल है, मंगल पूज्य है ।
(१४) लाभ होगा, यात्रा करो ।
(१५) हाँ, यह प्राणी विश्वासपात्र है ।

गुरु-चक्र का फल

(१) ईश्वर इस कष्ट से आपको छुटकारा दिलायेंगे ।
(२) यह खबर सच्ची है ।
(३) राहु की शान्ति करायें तभी जीत होगी ।
(४) मकान में प्रेत-बाधा है, गड़ी हड्डी भी है ।
(५) बड़ी खुशामद से कार्य सिद्ध हो सकता ।
(६) मत खरीदो, हानि होगी ।
(७) शारीरिक व्याधि है, भय बढ़ानेवाली है ।
(८) चिन्तनीय है ।
(९) हाँ, देर में छूटेगा, चन्द्रमा पूज्य है ।
(१०) हाँ, वह रोग से मुक्ति पायेगा ।
(११) कन्या होगी ।
(१२) स्वप्न में भी साझे की बात न सोचो ।
(१३) यह विवाह अहितकर होगा ।
(१४) कोशिश करो, सफलता होगी ।
(१५) इस यात्रा में साधारण लाभ होगा ।

शुक्र-चक्र का फल

(१) इस नौकरी से लाभ होगा ।
(२) हाँ, कष्ट से शीघ्र ही छुटकारा मिलेगा ।
(३) यह खबर झूठी है ।
(४) बुध की शान्ति कराने से विजय होगी ।
(५) मकान निर्दोष है ।
(६) कार्य-सिद्धि में शनि बाधक है, शान्ति कराओ ।
(७) हानिकारक होगी, मत खरीदो ।
(८) ग्रह-दोष पाया जाता है ।
(९) सुख-शान्ति से बीतेगा ।
(१०) हाँ, छूट जायेगा, सूर्य की शान्ति करायें ।
(११) बदपरहेजी से रोग बढ़ेगा, आराम मिलेगा ।
(१२) पुत्र होगा, किन्तु केतु की शान्ति करायें ।
(१३) साझे से लाभ की आशा व्यर्थ है ।
(१४) हाँ, यह विवाह हितकर होगा ।
(१५) सफलता की आशा है ।

शनि-चक्र का फल

(१) हाँ, सफल हो जायेगा ।
(२) इस नौकरी में लाभ रहेगा ।
(३) समय खोटा है, राहु की शान्ति करायें ।
(४) कुछ सच्ची है ।
(५) हाँ, विजय होगी ।
(६) मकान अशुभ है, शनि पूज्य है ।
(७) कार्य सिद्ध न होगा, हाकिम नाराज है ।
(८) मत खरीदो, हानि होगी ।
(९) भूत-बाधा है, अति कष्ट साध्य है ।
(१०) लाभदायक बीतेगा ।
(११) केतु की शान्ति कराने से मुक्ति मिलेगी ।
(१२) देर में अच्छा होगा ।
(१३) पुत्र होगा, प्रसव में कष्ट होगा, मंगल पूज्य है ।
(१४) लाभ होगा, साझा कर सकते हो ।
(१५) यह विवाह शुभ फलदायक होगा ।

राहु-चक्र का फल

(१) इस वस्तु को खरीदें, लाभ होगा।
(२) सफलता सम्भावित है।
(३) इस नौकरी का भरोसा मत करो, हानि होगी।
(४) अभी कष्ट से छुटकारा न मिलेगा।
(५) खबर सच्ची है।
(६) मुकदमा कमजोर है, शनि की शान्ति करायें।
(७) सन्तान-सुख के लिये यह मकान बाधक है।
(८) हाकिम का रुख आपके अनुकूल नहीं है।
(९) हाँ, खरीदो लाभदायक होगी।
(१०) शारीरिक-दोष है, विशेष उपचार से अच्छा होगा।
(११) आज का दिन सुख-शान्ति से गुजरेगा।
(१२) छूट जायेगा, केतु पूज्य है।
(१३) रोग मुक्त न होगा, मंगल नेष्ट है।
(१४) पुत्र भाग्यशाली होगा।
(१५) साझे से लाभ की पूर्ण आशा है।

केतु-चक्र का फल

(१) खोया पशु मिलेगा, पूर्व तरफ गया है।
(२) हाँ, खरीदो लाभ होगा।
(३) सफलता में सन्देह है, राहु की शान्ति करायें।
(४) नौकरी में आमदनी-खर्च बराबर रहेगा।
(५) हाँ, शीघ्र छुटकारा मिलेगा।
(६) यह खबर झूठी है।
(७) समय खोटा है, सुलह कर लें, शनि पूज्य है।
(८) यह मकान ऋणकारक है।
(९) कार्य हाकिम के द्वारा सिद्ध हो जायेगा।
(१०) खरीदो, लाभदायक होगा।
(११) शारीरिक रोग-दोष है, देर में अच्छा होगा।
(१२) चिन्ता-व्यथा से दिन गुजरेगा।
(१३) छूटना कठिन है, मंगल पूज्य है।
(१४) हाँ, रोगी शीघ्र आराम पावेगा।
(१५) पुत्र होगा, बुध की शान्ति करायें।

ब्रह्मा-चक्र का फल

(१) हाँ, वह प्राणी जीवित है।
(२) पशु दक्षिण तरफ गया है, मिलेगा।
(३) इस वस्तु के खरीदने में हानि उठानी पड़ेगी।
(४) सफल हो जाओगे, पर गरीबों को दान दो।
(५) हाँ, नौकरी से लाभ होगा।
(६) समय खोटा है, शनि की शान्ति करायें।
(७) यह खबर झूठी है।
(८) मंगल की शान्ति कराने से मुकदमा जीतोगे।
(९) मकान सामान्यतः शुभ है।
(१०) अधिकारी से कार्य सिद्ध होगा।
(११) खरीदो, लाभदायक होगा।
(१२) प्रेत-बाधा है, पीपल की पूजा करें।
(१३) चिन्ता-व्यथा से गुजरेगा।
(१४) हाँ, इस अभियोग से छूटना कठिन है।
(१५) देर से रोगी अच्छा होगा।

विष्णु-चक्र का फल

(१) हाँ, किसी मित्र की सहायता से कर्ज मिलेगा।
(२) जीवित है।
(३) खोया पशु पूर्व में गया है, मिलने की अल्प आशा है।
(४) लाभ होगा, खरीदो।
(५) प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी।
(६) इस नौकरी का ठिकाना नहीं।
(७) दिन खोटा है, छुटकारा देर से मिलेगा।
(८) यह खबर झूठी है।
(९) मुकदमे में विजय होगी।
(१०) मकान शुभ है, शंका न करो।
(११) हाकिम द्वारा कार्य सिद्ध होगा।
(१२) मत खरीदो, हानि होगी।
(१३) शारीरिक रोग है, पार्थिव-पूजन करें।
(१४) आज का दिन सुख-शान्ति से गुजरेगा।
(१५) हाँ, कुछ दिन बाद छूटेगा।

महेश-चक्र का फल

(१) इस वर्ष तरक्की के योग पाये जाते हैं।
(२) स्वयं कर्ज नहीं प्राप्त कर सकोगे।
(३) जीवित होने में सन्देह है।
(४) खोया पशु मिलना कठिन है, दक्षिण गया है।
(५) खरीदो, लाभ होगा।
(६) सफलता में शंका है, शनि की शान्ति करायें।
(७) नौकरी में हानि होगी।
(८) अभी दिन खराब है, मंगल की शान्ति करायें।
(९) यह खबर सच्ची है।
(१०) हाँ, जीत आपकी होगी।
(११) यह मकान शुभ एवं रक्षक है।
(१२) हाकिम से कार्य सिद्ध होगा।
(१३) मत खरीदो, हानि होगी।
(१४) शारीरिक व्याधि है, देर से निवारण होगा।
(१५) दिन सुख और लाभयुक्त बीतेगा।

हनुमान-चक्र का फल

(१) कुछ समय के बाद तबादिला होगा।
(२) हाँ, तरक्की होगी।
(३) इस समय कर्ज मिलने की आशा नहीं है।
(४) वह जीवित है, पर रोगी है।
(५) पशु पश्चिम गया है, प्रयत्न से मिल सकता है।
(६) मत खरीदो, हानि होगी।
(७) प्रतियोगिता में सफलता पाना अति कठिन है।
(८) इस नौकरी में हानि उठानी पड़ेगी।
(९) कुछ दिनों बाद कष्ट से छुटकारा मिलेगा।
(१०) हाँ, यह खबर सच्ची है।
(११) मुकदमा जीतोगे।
(१२) यह मकान नहीं सहता, क्योंकि केतु पूज्य है।
(१३) कार्य-सिद्धि की आशा करना व्यर्थ है।
(१४) हाँ, खरीदो लाभ होगा।
(१५) प्रेत-बाधा है, तंत्र द्वारा निवारण होगा।

❋ सन् १९७७ ई० का व्यापारिक भविष्यफल ❋

लेखक—श्रीदुर्गाप्रसाद गुप्त, साहित्यविशारद, मो.पो. खोरी (KHORI)
जिला—महेन्द्रगढ़, वाया रिवाड़ी (Rewari) हरियाणा

जनवरी मास—ता. १ जनवरी पौष सुदी ११ को कृत्तिका नक्षत्र है।

"एकादश्यां पौष-शुक्ले कृत्तिका भोगतः श्रुतः।
रक्त वस्तु से महान् लाभ, सुधान्यात् प्रथमाम्बुदे ॥"

लाल रंग के सभी पदार्थों लाल रंग लाल वस्त्र लाल मिर्च अलसी सरसों मसूर गुड़ आदि से अच्छा लाभ होगा। और जबतक वर्षा न हो अनाज में भी लाभ होगा। आज का बाजार सरसों अलसी आदि तिलहन तेल नमक पाट कुष्टा में तेजी और चाँदी रूई में मंदी का चलेगा। ता. ३ को गल्ला गेहूँ चावल बाजरा चीनी मंदी रहेगी। ता. ४ से गुड़ गल्ला ताँबा पीतल सोना लाल रंग के पदार्थ तेज होंगे। पूर्णिमा बुधवारी आर्द्रा नक्षत्रीय तेजीकारक रहेगी। रूई कपास बारदाना मंदा, परन्तु शेयर्स तेज होंगे। पुष्य का अभाव आगामी मास में तेजी की सूचना देता है।

माघ मास—इस मास में पाँच गुरुवार तथा पाँच ही शुक्रवार हैं। पीले तथा श्वेत पदार्थ तेज रहेंगे। वर्षा अच्छी, अनाज मंदा, इस मंदी में स्टॉक करने से आगे लाभ होगा। आज का बाजार मंदा रहेगा। ता. ७ जनवरी को जनरल लाइन तेज, रूई कपास मंदी रहेगी। ता. ८ से सरसों अलसी अरण्डा तिल तेल बारदाना जूट पाट लोहा जस्ता मशीनरी गल्ला तेज होगा। ता. १० को पू. षा. का भौम वर्षाकारक है; अनाज मंदा, उर्द मूँग चावल घी तेल तेज होगा; परन्तु भौम अस्त होने से योग कमजोर है। आज बाजार मंदा रहेगा। फसल के अवसर पर संग्रह करके भादों की तेजी में लाभ उठावें। **नोट कर लें!** उ.षा. के रवि से सर्दी बढ़ेगी। गुड़ खाँड़ तेज, गल्ला तेज होकर मंदा होगा।

आज ही बुध पूर्व में उदय होगा। अनावृष्टि दुर्भिक्ष गायों में रोगकारक है। कल बाजार तेज रहेगा। ता. १३ जनवरी की मकर-संक्रान्ति घी तेल तिलहन में तेजी और सभी धान्य गेहूँ जौ चना मूँग उर्द बाजरा ज्वार मकई में मंदीकारक है; परन्तु सं. १५ मुहूर्ती, दूसरे बार में होने से मंदी की आशा नहीं है।

"कर्क मकर दो बहिन हैं, बैठेंहि एकहि बार।
दुर्घटनाओं से सभी, दुःख पावै संसार ॥"

गत श्रावण में कर्क-संक्रान्ति भी गुरुवारी थी। घी का स्टॉक करनेवालों को इस संक्रान्ति के आस-पास घी खरीद लेना चाहिये। बदी एकादशी का क्षय, मंदी का झटका लायेगी। आज मेष का गुरु मार्गी होकर ईख गन्ना तथा कपड़ा मंदा करेगा। घी तेल एकबार तेज होकर मंदा, सभी जिन्सों के भावों में भारी घट-बढ़ होगी। ता. १७ को बाजार मंदा रहेगा। पू. षा. का शुक्र वर्षाकारक है। रूई तेज अन्न मंदा हो। मूल नक्षत्र का क्षय, आगे तेजी का झटका देगा। आज ही बुध मार्गी होकर बाजार का रुख पलट देगा। जनरल लाइन तेजी की रहे, गुड़ सरसों अलसी आदि लाल रंग के पदार्थ विशेष तेज होंगे। अमावस्या बुधवारी अन्न के भाव में घटा-बढ़ी से मंदा करेगी। ता. २० को गोला खाँड गेहूँ सोना चाँदी ताँबा पीतल अलसी अरण्डा मिर्च तेल मंदा, उपज उत्तम, तृण घास चारा सस्ता हो। ता. २० के गुरुवारा चन्द्र-दर्शन से इस पक्ष में रूई कपास सूत सोना चाँदी में जनरल लाइन मंदी की रहेगी। ता. २२ को तिलहन घी तेल साबुन पाट कुष्टा अन्न तेज रहेगा। बसंत-पंचमी सोमवारी है। रूई कपास चीनी चावल मंदा हो। श्रवण का सूर्य गेहूँ तेज करेगा। ता. २५ को बाजार तेज रहेगा। ता. २६ जनवरी से मीन का शुक्र सुख-शांति सुभिक्षकारक है; गल्ला मंदा, चाँदी में अच्छी मंदी हो। ता. २७ को बाजार मंदा रहे, रात को उ. षा. का भौम वर्षाकारक गुड़ खाँड घी मंदा, रूई उर्द तिल तेल मूँग तेज होगा। ता. २९ जनवरी से तिलहन पाट कुष्टा बारदाना तेल घी गल्ला तेज, चाँदी मंदी होगी। ता. ३१ को रूई कपास सूत गल्ला मंदा रहे, मकर का भौम घी तेल तिलहन में तेजी और सभी प्रकार के धान्य मंदा करेगा।

फरवरी मास—ता. १ को बाजार तेज रहेगा। इस पक्ष में दो योगों का क्षय होने से घी तेज रहेगा। आज गल्ला गुड़ खाँड़ सरसों अलसी में तेजी रहेगी। ता. २ को खुलते बाजार तेजी, बाद में मंदी होगी। पूर्णिमा शुक्रवारी सुभिक्षकारिणी है, परन्तु पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र होने से अन्ततः तेजीकारक रहेगी। यथा—

"मृगादि पंचके राका धान्ये महर्घता भवेत्।"

फाल्गुन मास—बदी १ को शनिवार है। इस मास में पाँच शनिवार होने से गल्ला नमक चपड़ा लाख घी तेल में जनरल लाइन तेजी की रहेगी। आज चाँदी रूई मंदी, परन्तु तिलहन और अन्न तेज रहेगा। धनिष्ठा का सूर्य सर्दी बढ़ायेगा। जनता में कोई उपद्रव एवं उग्र आंदोलन हो सकता है। गल्ला कपड़ा तथा धातुएँ तेज रहें। बदी २ के क्षय से मूँग उर्द मोठ घी में मंदी का असर रहेगा। तीन दिन के अन्दर सभी वस्तुओं में एक बार मंदी का उछाला आयेगा। [illegible] पूर्व में मंगल उदय होगा। बाजार मंदा रूई पाँच दिन में तेज होगी। चाय तम्बाकू

भाँग शराब आदि नशीली चीजें विशेष मंदी होंगी। ता. ८ फरवरी से उड़द तेल तिलहन के भाव बढ़ेंगे। सोना चाँदी काँसा ताँबा मंदा, घी तथा गेहूँ में तेजी रहेगी। वदी छठ को चित्रा नक्षत्र से दो मास तक अनाज मंदा रहना चाहिये। गुरुवारी सप्तमी भी मंदीकारक है अष्टमी घी तेल का भाव तेज रखेगी। ता. १२ की कुम्भ की रवि-संक्रान्ति सुख-सुभिक्षकारक है; परन्तु शनिवारी सं. तीसरे वार में होने से तेजी एवं उत्पातकारक रहेगी। ता. १४ को बाजार मंदा रहे, श्रवण का भौम अलसी और गेहूँ में विशेष तेजी करेगा। रेवती का शुक्र रूई चाँदी चावल चीनी खाँड में मंदी तथा वर्षाकारक है। ता. १६ को रूई मदी रहे। अमावस्या गुरुवारी वर्षा करती है। खुलते बाजार तेजी, १२ बजे बाद गुड़ खाँड़ सोना चाँदी मंदे होंगे। ता. १८ को बाजार मंदा रहे। फाल्गुन सुदी एकम को शतभिषा नक्षत्र है यह इस पक्ष में मंदी का वातावरण बनानेवाला योग है। आज ही चंद्र-दर्शन होगा। एक मास में अन्न तेज तथा किसी स्टेट में मंत्रिमण्डल भंग हो सकता है। ता. २० को बुध पूर्व में अस्त होगा। ता. २१ को घी खाँड़ गोला सोना चाँदी रूई कपास चीनी चावल मंदा रहेगा। ता. २२ को वृष के गुरु से वर्षा कम, परंतु घास-चारा मंदा हो। प्रजा को कष्ट, गोरस दही दूध घी मक्खन तेज हो। धनिष्ठा का बुध पशुओं को रोगी, गल्ला रूई सोना चाँदी मंदी करेगा। ता. २४ को चाँदी चीनी नमक लाख चपड़ा मंदा रहे। ता. २५ को कृत्तिका मंदीकारक है। भादों की अमावस्या को अच्छी वर्षा होगी, नोट कर लें! अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र एकदम मंदी का रियक्शन लायेगी। फिर तेजी चलेगी; दुगुनी ढाईगुनी तक तेजी हो सकती है। कुम्भ का बुध रसकस में अच्छी घटा-बढ़ीकारक है, ता. २८ से सोना चाँदी रूई में आरजी (अस्थायी) तेजी, वायु का जोर, वर्षा तथा ओलों से खेती में हानि होगी। सोमवारी दशमी गल्ला मंदा करेगी।

मार्च मास—ता. २ शतभिषा का बुध सोना चाँदी में मंदी का अच्छा चांस है। ता. ३ को धनिष्ठा का भौम सभी धातुओं में तेजी तथा गेहूँ गुड़ खाँड़ में मंदी की लाइन बनायेगा। ता. ४ को पू. भा. का सूर्य रूई रेशम सोना चाँदी गुड़ गल्ला में तेजी एवं प्रजा को सुखकारक है। पूर्णिमा शनिवारी भी तेजीकारक है।

चैत्र मास—बदी १ को उ.फा. का क्षय तेजी का उछाल लायेगा। ता. ८ को मेष का शुक्र अन्न में तेजी, पशुओं में में रोग पीड़ा, दूध दही घी चाँदी चावल तेज करेगा। ता. १० को गल्ला तिलहन तेज रूई चाँदी मंदी रहे। ता. ११ से कुम्भ का मीन, गेहूँ चना बाजरा मकई मूँग मोठ सोना चाँदी तेज करेगा। ता. १२ को रूई चाँदी मंदी घी तेल गल्ला तेज हो। ता. १४ को मीन की संक्रांति से सभी तरह के अनाज नमक तिल तेल तेज होगा। ता. १५ को मीन का बुध सोना चाँदी में घट-बढ़ करेगा। यहाँ सूर्य बुध योग तेजी को बढ़ावा देगा। ता. १६ से शुक्रदेव ४२ दिनों के लिए वक्र हो रहे हैं। इस अवधि में चाँदी मदी रहे। पशुओं की हानि, स्त्रियों को कष्ट पीड़ा, रूई तेज होकर मंदी, घी तेल गुड़ शक्कर चीनी चना गेहूँ गल्ला तेज, अलसी सोना में भारी घटा-बढ़ी, प्रजा में सुख-शांति हो। ता. १७ को उ. भा. के रवि से सोना चाँदी कपड़ा रूई नमक गुड़ गेहूँ तेज हो। अमावस्या शनिवारी तेजी करेगी।

ता. २० मार्च रविवार को सं. २०३४ विक्रमीय का प्रारम्भ होगा।

"रवि राजा वर्षा हरै, करै उपज को हीन।
ज्यों शासकगण की कलह से प्रजा प्रपीड़ित दीन॥"
(भविष्य-भारती)

वृश्चिक लग्न में सवत्सरारम्भ होने से लग्न का मालिक मगल है। दसवें गुरु शुभकारक है। शतभिषा का भौम कीड़े तथा चूहों से खेती की हानि करेगा। ता. २१ मार्च को धातुएँ मंदी रहेंगी। चाँदी में अच्छी मंदी का चांस है। इस पक्ष में सोना चाँदी रूई कपास में जनरल लाइन मंदी की रहेगी। सोमवारा चन्द्र-दर्शन एक मास में गल्ला तेज तथा किसी राज्य में मंत्रिमण्डल-परिवर्तन करेगा। ता. २२ मार्च को खाँड तेल तिल रूई कपास चाँदी ताँबा मंदा हो। ता. २३ मार्च को नमक चाँदी चावल चीनी लाख चपड़ा तेज हो। रात को रेवती का बुध चाँदी में अच्छी मंदी का चांस देता है; गेहूँ तेज हो। सुदी ४ की वृद्धि मूंग मोठ उर्द आदि दाल-अन्न और घी में मंदीकारक है। मीन का शुक्र चाँदी तथा गल्ला मंदा, प्रजा में सुख-शान्ति करेगा।

चैत बदी में तिथि घटै, सुदी माँहि बढ़ जाय।
होय सुभिक्ष सुकाल अति, भूमि न अन्न समाय॥
(भविष्य-भारती)

इस योग से अनाज की उपज उत्तम होगी। ता. २६ मार्च को गल्ला तेलहन सरसों अलसी अरण्डी घी तेल मशीनरी पाट कुष्टा तेज रहेगा। ता. २८ को बाजार मंदा होगा। चावल चीनी चाँदी रूई मंदी होगी। आज ही पश्चिम में बुधोदय से सोना चाँदी रूई कपास गुड़ गेहूँ में घटा-बढ़ी से मंदी हो। ता. २६ को रामनवमी है। रामायण का पाठ करने कराने से धन-धान्य में वृद्धि तथा सुख-शान्ति रहती है। ता. ३० मार्च को बाजार तेज रहेगा; परंतु रूई कपास मंदी रहे। अश्विनीगत बुध चाँदी गन्ना गुड़ शक्कर नमक मंदा करे; गल्ला तेज हो।

अप्रैल मास—ता. १ को रूई कपास मंदी रहे। ता. ३ को पश्चिम में वक्री शुक्र अस्त होगा। चैत्र में शुक्र अस्त हो तो छः मास तक दुर्भिक्ष रहता है; परंतु शुक्र वक्री है।

विपरीत फल भी हो सकता है। देवतागण में शुक्रास्त से गुजरात मालवा में राजा-प्रजा-संघर्ष, जन-विप्लव, खरासान में युद्धोत्पात, सोना चाँदी तेज हो। मारवाड़ में अकाल, दिल्ली मंत्रिमण्डल में परिवर्तन, उत्तरी देशों में सुभिक्ष हो। इस मास में अनाज खरीदना लाभदायक है। पूर्णिमा मंदीकारक है; परंतु चित्रा नक्षत्र का अभाव खटकता है।

वैशाख मास—वदी १ भौमवारी है। इस मास में गर्मी का जोर बीमारी का प्रकोप और गल्ला गुड़ में तेजी रहे। ता. ६ अप्रैल को विशाखा का क्षय गल्ला रस-पदार्थ तेज करे। पू. भा. का भौम सरसों अलसी रूई मूँगफली खोपरा सोना चाँदी तेज करेगा। ता. ७ को गल्ला चाँदी रूई कपड़ा मंदा रहे। चावल तेज हो। मोटर आदि की दुर्घटनायें अधिक होंगी। आज शुक्र का उदय युद्धकारक है; परंतु सुख-सुभिक्ष रहेगा। सिंध देश तथा मालवा में विग्रह, अन्य प्रान्तों में जनोपद्रव, कई दिन हड़ताल के कारण व्यापार में बाधा, किसी श्रेष्ठ पुरुष की मृत्यु होगी। ता. ८ को रूई कपास तेज, चाँदी मंदी हो। ता. ११ को शनि मार्गी होगा।

"वक्र चाल चलते हुए, शनि मार्गी हो जाय।
चालू रुख व्यापार का, एक-दम पलटा खाय॥
(भविष्य-भारती)

रूई कपास चाँदी चावल चीनी मंदी होगी। ता. १३ को मेष-संक्रान्ति है। सभी प्रकार के फल रूई ईख तिल तिलहन तेज हो; शनि की पूर्ण दृष्टि तेजी को स्पोर्ट देगी। ता. १४।१५ अप्रैल दोनों दिन बाजार मंदा रहे। ता. १६ को तेजी रहेगी। अमावस्या सोमवारी मंदीकारक है।

"अमावस्या वैशाख में जो रेवती नक्षत्र।
धान्य उपज उत्तम रहै, सुख-सुभिक्ष सर्वत्र॥"
(भविष्य-भारती)

सुदी १ को बुध वक्री होगा। धनिया जीरा सुपाड़ी नारियल आदि किराना गुड़ खाँड़ तेज गल्ला, मंदा करेगा। मीन के मंगल से तृण घास चारा भूसा काष्ठ (लकड़ी) गाय भैंस बकरी आदि पशु तेज होंगे। वायदा बाजार तेज रहेगा। सुदि ३ गुरुवारी उत्तम उपज की प्रतीक है। ता. २४ को पश्चिम में बुध अस्त होगा। बुध १८ दिन के लिये तीक्ष्ण गति से अस्त हो रहा है। यहाँ जो लाइन चलेगी, वह ता. १२ मई को पलट जायेगी। बुध का अस्त शुक्रोदय के बाद हुआ है।

"शुक्रोदय पर जब कभी, हो कोई ग्रह अस्त।
क्षेम कुशल वर्षा बहुत, मन्दा धान्य समस्त॥"
(भविष्य-भारती)

शनिवारी पंचमी रोगकारक रहेगी। रात्रि को उ.भा. के भौम से सोना चाँदी रूई जौ गेहूँ चना आदि अन्न, चन्दन कपूर सुगंधित वस्तुएँ तेज हों। ता. २४ को रविवारी षष्ठी अनाज तथा रस-पदार्थ तेज [illegible]। ता. २९ को बाजार मंदा रहे। चाँदी चावल चीनी रूई मंदी रहे। ता. २६ को तिथि-वृद्धि मंदी में सहायक होगी; परंतु आज गुड़ गेहूँ तिलहन तेज रहेगा। ता. २७ को शुक्र मार्गी होगा। चाँदी के अलावा सभी वस्तुएँ मंदी हों। भरणी का सूर्य सोना चाँदी आदि धातुएँ और अन्न तेज करेगा। ता. ३० अप्रैल को रूई मंदी, तिलहन तेज रहे। राहु के कन्या राशि पर प्रवेश से आँवला और पीपल एक या दो मास तक खूब तेज हों। द्वादशी का क्षय तेजीकारक है।

मई मास—मंगलवारी पूनम तेजी और स्वाती नक्षत्र रोगकारी है। वैशाख में गुरु से तीसरे शनि सुभिक्षकारक है; अनाज खरीदें।

ज्येष्ठ मास—बुधवारी प्रतिपदा खण्डवृष्टि एवं तेजी करनेवाली है। गल्ला गुड़ गेहूँ चना दाल-अन्न, घी तेल आलू प्याज आदि सभी शाक-सब्जी तेज रहेंगी। चतुर्थी का क्षय दाल-अन्न और घी में मंदी का झटका लायेगा। रविवारी षष्ठी अन्न और रस-पदार्थ तेज करेगी। रेवती का भृगु चाँदी चावल चीनी रूई मंदी करेगा। ता. ११ मई को रेवतीगत भौम अन्न की मंदी में मददगार है; परन्तु चाँदी में तेजी का तूफान लायेगा। सावधान रहें! ता. १२ को पूर्व में बुध का उदय रूई सूत सन चाँदी गुड़ गेहूँ मंदा करेगा। ता. १४ मई को वृषभ-संक्रान्ति से उपज उत्तम और अनाज मंदा, परन्तु दूध दही घी तेज होगा। शनिवारी सं. से तिलहन तेल तेज, रोगों का भय भी रहेगा। ता.१५ को मार्गी बुध बाजार की चालू लाइन पलट देगा।

अमावस्या मंगलवारी गल्ला नमक लाख चपड़ा चाँदी सोना तेज करेगी। अमा की वृद्धि तेजी को बढ़ावा देगी। ता. २० मई को रूई घी खाँड़ चांदी मूंगफली मंदी रहे। सुदी ३ को आर्द्रा नक्षत्र है। "भविष्य-भारती" के मत से अगर आज वर्षा हो तो आगे वर्षा की कमी से दुर्भिक्ष के लक्षण बनेंगे। आज तिलहन तथा चावल मूंग उर्द बाजरा तेज रहेगा। ता. २२ को गुरु अस्त होकर भ्रष्टाचार बढ़ायेगा। सोना चाँदी रूई गुड़ खाँड़ गेहूँ तिलहन में आज मंदी होगी अर्थात् यह मंदी ठहरेगी नहीं। ता. २४ मई को रोहिणी पर सूर्य आकर गल्ला गुड़ रूई कपास सन तेज करेगा। ता. २७ को गल्ला गुड़ नमक लाख चपड़ा रूई तेज होगी। गंगा दशहरा शनिवारी है।

"जेठ दशहरा शनि परै, भयकारी भयमास।
प्रजा शोक जल रोक से, हो गौ-कुल का नाश॥"
(भविष्य-भारती)

प्रजा शोकाकुल हो। वर्षा के अवरोध से गोकुल, गौवों की हानि हो; कारण, घास तृण चारा की उपज कम होगी। मेष का भौम सोना चाँदी मूँगा रूई सूत तेज, मूंग मोठ बाजरा मंदा, राष्ट्रों में झगड़े, प्रजा में विग्रह बढ़ायेगा। ता. ३० को [illegible] आ जायेगा। सभी प्रकार के अनाज में तेजी, भैसों को पीड़ाकारक है। कुछ वर्षा हो

सकती है। वायुवेग बढ़ेगा। पशु महँगे, रूई कपास ऊन मन्दा हो। मंगल बुध शुक्र युति तेजी को बढ़ावा देगी। सुदी १४ का क्षय है।

"पड़िवा, पाँचै, चतुर्दशि, शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मंदी करैं, तेजी हो जब छीन।।"
(भविष्य-भारती)

इस पक्ष में तेजी का जोर रहेगा। ज्येष्ठ कृष्णपक्ष में घी तेज रहेगा।

"बदि बाढ़ै सुदि घटै तिथि, क्रूर बार संक्रांत।
छत्रभंग अरु अवर्षण, पीड़ित प्रजा नितान्त।।'

इस योग से अवर्षण आदि से प्रजा पीड़ित रहेगी।

आषाढ़ मास—वदी १ गुरुवारी चाँदी रूई कपास गल्ला मंदा करेगी।

जून मास—ता. ३ को गल्ला चाँदी चावल सोना सूत सन मंदा रहे। ता. ४ से कृत्तिका का बुध चाँदी और रूई में अच्छी घट-बढ़ करेगा। ता. ६ को सोना चाँदी रूई कपास तिलहन अन्न मंदा रहेगा। ता. ७ से बाजार में तेजी चले। मृगशीर्ष के रवि से सोना चाँदी रूई रेशम सूत सन गल्ला तेज, पशुओं को कष्ट हो; मंगलवार होने से घास चारा पशु लकड़ी तेज हो। ता. ८ जून के १२ बजे से ता. १० तक मंदी रहे। ता. ११ को गल्ला गेहूँ तिलहन घी तेल लोहा शेयर्स तेज हों। रेवती नक्षत्र वर्षा में रुकावट, भावों में तेजी करेगा। ता. १३ को नमक चाँदी चावल चीनी रूई अन्न मंदा रहे। रोहिणी का बुध सोना चाँदी रूई में तेजी का उछाल लायेगा। ता. १४ को भरणी का शुक्र सोना चाँदी ताँबा पीतल लाल रंग के पदार्थ मंदे, चाय तंबाकू आदि तेज करेगा। आज रात को मिथुन-संक्रांति होगी। मिथुनगत सूर्य कपास कंद मूल(आलू अदरक प्याज हल्दी मूँगफली) तिलहन और सभी प्रकार का अनाज तेज करता है। मंगलवार होने से नमक रस-पदार्थ कपूर भी तेज रहेगा। अमावस्या गुरुवारी वर्षा तथा मंदीकारक है। ता. १८ जून को ग्यारह बजे बाद सोना चाँदी घी खाँड़ रूई कपास मूँगफली मंदी हो। तृण घास चारा मंदा, वर्षा अच्छी होगी। आज का चंद्र-दर्शन सोना चाँदी तेल घी मंदा, रूई कपास अनाज तेज करेगा। ता. १९ को पूर्व में गुरु उदय तथा बुध अस्त होंगे। राजाओं में युद्ध, अनाज में तेजी, दुर्भिक्ष, पशुओं की हानि, वर्षा में रुकावट, जवाहिरात तेज करेंगे। एकबार सभी वस्तुओं में तेजी होकर १०-१५ दिन पीछे भाव गिर जायेंगे। पशुओं में हानिकारक रहेगा। ता. २० को रूई नमक चावल चीनी अन्न तिलहन उर्द मूँग मंदा रहे। ता. २१ जून को भौमवारी पञ्चमी युद्धकारक है। धातुएँ रूई सूत सन तेज हो। रात्रि को सूर्य का आर्द्रा-प्रवेश शुभ है। (जगत्क्षेम करो रात्रौ बहुसस्य जलप्रदः) वर्षा तथा उपज उत्तम होगी। ता. २२ जून को पञ्चमी की वृद्धि, इस पक्ष मे मंदी का वातावरण रहेगी। (पड़वा पाँचै चतुर्दशिवाला दोहा ३१ मई को पढ़ें)। ता. २३ जून से मिथुन का बुध पशु और चारा तेज करेगा। बादलों का जोर रहे; परंतु बुध अस्त होने से योग कमजोर है। बाजार मदा रहेगा। नौमी शनिवारी है।

"आषाढी धुर बीजड़ी, नौमी निरखी जोय।
दैवयोग शनि होय तो निश्चय रौरव होय।।"

तेजीकारक है; परंतु रविवारी दशमी मंदीकारक भी है। देव-शयनी एकादशी सोमवारी है। अन्न की उपज तथा वर्षा उत्तम हो। ता. ३० जून को मूल नक्षत्र का क्षय बाजार को तेजी का झटका देगा। आज ही शुक्र वृष पर सवार होगा। पृथ्वी पर सुभिक्ष, प्रजा में सुख-शांति स्थापित हो। मामूली उत्पात होते रहेंगे। यहाँ गुरु से युति होगी। गुरु शुक्र का संयोग आकाश में बादल-वर्षा अथवा पृथ्वी पर युद्धकारक होता है। आज वायु-परीक्षा होगी। सूर्यास्त के समय धागे में कागज की कतरन बाँधकर धागे का दूसरा सिरा बाँस की चोटी पर बाँध दो। मकान की छत या जंगल में बाँस को ऊँचा सीधा करके देखो। जिधर की वायु चलेगी, कतरन उसके विपरीत दिशा में उड़ेगी यानी कतरन पश्चिम की ओर उड़े तो पूर्व की वायु समझो। पूर्व पश्चिम उत्तर और इनके बीचवाले दोनों कोणों की वायु सुभिक्षकारी तथा दक्षिण और उसके साथवाले दोनों कोणों की वायु दुर्भिक्षकारी होती है। वायु-परीक्षा का फल सेण्ट-पर-सेण्ट सही मिलता है।

जुलाई एवं श्रावण मास—शुद्ध श्रावण वदी १ का क्षय इस पक्ष में मंदी की सूचना दे रहा है। गल्ला घी तेल तिलहन तेज रहेगा। पुनर्वसु का बुध रूई सूत सन विनौला चाँदी में अच्छी मंदी करेगा। ता. ४ को कृत्तिका का भौम सरसों अलसी तिल तेल सूत कपड़ा चावल मसूर मूँग मोठ में तेजी लायेगा। ता. ५ से पुनर्वसुगत सूर्य चावल नमक अरण्डा कपड़ा नील सज्जी रूई चाँदी रंग सोना तेज करेगा। जिन क्षेत्रों में वर्षा होगी, वहाँ आगे भी अच्छी वर्षा होगी। ता. ७ को गुरुवार कर्क के बुध से सोना चाँदी रूई बिनौला मूँगफली में अच्छी तेजी-मंदी चले, अफ्रीका चीन में उपद्रव होगा। ता. ८ को वृष का भौम सभी प्रकार का धान्य चन्दन केसर कपड़ा रूई कपास तेज करेगा। ता. ९ जुलाई को बदी नौमी शनिवारी सन्तापकारी, दुखदायी है। आसोज के अन्त तक मंत्रिमण्डल में कुछ सुधार होगा। रात को रोहिणी का शुक्र रूई चाँदी तेज, सरसों सूत सन सुपारी मंदी करेगा। ता. १० को बुध का उदय अनावृष्टि, दुर्भिक्ष गायों को बीमार करेगा। रूई सोना चाँदी गुड़ गेहूँ मंदे होंगे। बदी ११ को कृत्तिका नक्षत्र मध्यम संवत् की सूचना देता है। बदी चतुर्दशी को आर्द्रा नक्षत्र है। अनाज का स्टॉक करें, लाभ होगा। यह एक लाभकारी चांस है। शनिश्चरी अमावस्या तेजी करेगी। आज ही कर्क-संक्रांति पाँचवें वार में होने से घोर तेजीकारक योग बनता है। इसका विशेष प्रभाव ता. २८ जुलाई तक रहेगा।

ता. १७ जुलाई अधिक श्रावण सुदी से मलमास शुरू हो जाता है। रविवार को पुष्य नक्षत्र है। अन्न में तेजी रहेगी। पैदावार कम होगी। ता. १८ को गुरु मिथुन पर आवेगा। वर्षा कम हो, खतरा अधिक, दारुण भय हो। राज्यों में झगड़ा बढ़े। आज गेहूँ गोला खाँड़ मिर्च सोना चाँदी ताँबा पीतल मंदा रहेगा। सोमवारा चंद्र-दर्शन मूँग मोठ चना में तेजी, सोना चाँदी में मंदी एवं अनावृष्टिकारक रहेगा। ता. १६ को पुष्य के रवि से सोना चाँदी तिल तेल सुपारी सोंठ ज्वार गुगुल गुड़ हींग तेज हो। ता. २१ से तम्बाकू चाय शराब आदि नशीले पदार्थ मंदे हों। ता. २२ से मृगशीर्ष का शुक्र रस-पदार्थ तेज, अन्न तथा रूई को फसल में हानि करेगा। रोहिणी के भौम से गुड़ खाँड़ सूत कपड़ा रेशम तिल तेल मिर्च सन तेज होगा। ता. २३ जुलाई को सिंहस्थ बुध रूई सूत कपड़ा बारदाना चाँदी लकड़ी फर्नीचर तेज करेगा। ता. २४ को शनि अस्त होकर रूई कपास अलसी सरसों बारदाना फल-फूल तेज, पशुओं में रोग, श्वेत वस्तुएँ चावल चीनी सन तेज, अनाज अधिक तेज, स्त्रियों को कष्ट-पीड़ा, वर्षा बंद करेगा। ता. २८ जुलाई को मिथुनस्थ शुक्र गुरु से युति करेगा। दोनों की युति वर्षा अथवा युद्धकारक होती है। सब प्रकार का अन्न तेज हो। पूर्णिमा शनिवारी तेजी में सहायक है।

अधिक श्रावण कृष्णपक्ष एवं अगस्त मास—ता. २ अगस्त को पू.फा. के बुध से "पूफा.यां नृप संग्रामः क्षेत्रबा.-धान्न मदता" किन्हीं राष्ट्रों में युद्ध, गल्ला मंदा हो। मंगल की दृष्टि मंदी में बाधाकारक है। आश्लेषा के रवि से अन्न गुड़ अलसी शेयर्स तेज, पूर्वीय देशों में उपद्रव हो। ता. ३ को आर्द्रा का शुक्र वर्षाकारक है। रूई और चाँदी में मोटी मंदी हो। ता. ६ को गल्ला तिलहन घी तेल लोहा पाट बारदाना तेज रहे। ता. ८ को रूई कपास चाँदी चावल चीनी मंदी। ता. ९ को अफीम गुड़ खाँड़ गेहूँ गल्ला तेज हो। ता. ११ को मृगशीर्ष के भौम से रूई और चाँदी में जोरदार तेजी होगी; पहले ही खरीद लें। **सावधान!** अमावस्या रविवारी अच्छी तेजीकारक है। पुनर्वसु का शुक्र सोना चाँदी रूई सूत सरसों मंदी करेगा। आज मलमास समाप्त हो जायेगा।

शुद्ध श्रावण शुक्लपक्ष—सुदी १ सोमवारी है।

"श्रावण शुक्ल पक्षे च प्रतिपच्चन्द्र योगतः।
जल शोषं प्रजानाशं छत्रभंग तदादिशेत्॥"

जल-संकट, प्रजा का नाश, मंत्रिमण्डल में उलट-फेर हो सकता है। आज गेहूँ गोला मिर्च तेल अलसी अरण्डा मूँगफली मंदी रहेगी। ता. १६ भौमवार को चं.-दर्शन होगा। श्वेत वस्तुएँ रूई कपास सूत अलसी गेहूँ तेज, चाँदी मंदी हो। आज ही सिंह-संक्रांति भी है। सूर्य जबतक सिंह पर सवार रहते हैं, तब तक सभी प्रकार का अनाज तिल तेल हल्दी गुड़ खाँड़ आदि रसपदार्थ तेज रहते हैं। श्रावण सुदी में संक्रांति होने से वर्षा की कमी रहेगी। भौमवार के कारण वायु का जोर, मूँग उड़द चना चावल ज्वार बाजरा मकई का नाश हो। वर्षा हो जाय तो धान्य की उपज उत्तम हो, परंतु बीमारी फैले। ता. १८-१९ को बाजार मंदा रह कर, ता. २० को गल्ला तिलहन घी तेल शेयर्स तेज, रूई मंदी हो; रात को बुध वक्री हो जायेगा। जौ गेहूँ चना गुड़ शक्कर लोहा ताँबा जस्ता आदि धातुएँ तेज करेगा। मिथुन का मंगल गुरु से मेल करेगा। वर्षा ऋतु में गुरु मंगल साथ हों तो वर्षा बंद हो जाय; बादलों का जोर रहे तथा लाल रंग के सभी पदार्थ अलसी सरसों गुड़ लालमिर्च मसूर गेरू लाल चंदन तेज हों। ता. २३ को कर्क का शुक्र और पश्चिम में बुधास्त सोना चाँदी रूई कपास सूत घी गल्ला में तेजी लाएगा। ता. २५ को घी तेज, किराना गुड़ गेहूँ मंदा हो, संचयखोरों पर छापे पड़ें, उनकी व्यापक गिरफ्तारी हो। सुदी १३ का क्षय घी तेज करेगा। कार्तिक में मन्त्रिम डल भंग हो सकता है। पूनम रविवारी और शनि का उदय तेजीकारक हैं।

भाद्रपद मास—वदी १ को शतभिषा है। अतः इस पक्ष में गल्ला तेज रहेगा। राजस्थान में वर्षा हो, सोना चाँदी रूई सूत मंदा होकर ता. ३० को बाजार तेज हो जायेगा। मूँग चावल सब्जी लहसन चाँदी लोहा रबड़ और बिजली का सामान मोटर फर्नीचर तेज, रूई मंदी होगी।

सितम्बर मास—आर्द्रा का भौम मूँगफली सरसों तिल अरण्डा आदि में अच्छी तेजी चलेगी। **सावधान!** ता. ३ को बाजार में घट-बढ़ रहेगी। ता. ५ को जन्माष्टमी रोहिणीयुता शुभद है। ता. ६ से शनिदेव सिंह राशि पर गमन करेंगे। मघा नक्षत्रगत शनि से मालवा में तेजी हो; गेहूँ का स्टॉक लाभकारी रहेगा। तिलहन गुड़ लोहा मोटर ट्रक उड़द ऊन तेज हों। पूर्वीय देशों में उपद्रव चौपायों (पशुओं) का नाश, युद्ध-विप्लव दुर्भिक्ष गुड़ गेहूँ चना चावल मसूर अन्न के व्यापार में लाभ हो। ता. ८ से रूई कपास सूत सन में मोटी मंदी हो। ता. १० को सरसों आदि तिलहन गल्ला घी तेल बारदाना लोहा जस्ता तेज रहे। ता. ११ को पूर्व में बुध का उदय-अस्तकाल के प्रथम सप्ताह की लाइन दूसरे सप्ताह में पलट जायेगी। अमावस्या मंगलवारी तेजीकारक है; शनि अंगारक योग अच्छी तेजी का वातावरण बनायेगा। कई प्रकार की दुर्घटनाएँ भी हो सकती हैं। सुदी १ बुधवारी है। इस पक्ष में अन्न दालें मसालें गुड़ खाँड़ घी तेल आलू अदरक प्याज सभी प्रकार की शाक-सब्जी तेज रहेगी। आलू के व्यापारियों को लाभ होगा। रात को बुध मार्गी बाजार की लाइन बदल देगा। ता. १५ को गल्ला सरसों खोपरा मूँगफली सरसों अलसी मंदी हो आज का चंद्र-दर्शन रूई कपास चाँदी काँसा एलमोनियम चावल चीनी तेज करेगा। युद्ध की आशंका से बाजार में काफी हलचल रहेगी। ता. १६ को

सोना चाँदी ताँबा पीतल मंदा रहेगा। तथा कन्या-संक्रांति से नारियल तिल तेल मंजीठ आदि लाल रंग के पदार्थ तेज होंगे। किराना कोयला भी तेज होगा। गल्ला मंदा रहे। ता. १७ को सिंह के शुक्र से वर्षा में रुकावट, सोना तथा लाल रंग की चीजें एवं गल्ला तेज हों। पञ्चमी का क्षय इस पक्ष की तेजी का एलान है। रविवारी षष्ठी गल्ला और रस-पदार्थ तेज करेगी। आज अनुराधा नक्षत्र श्रेष्ठ है। नेष्ट-फल दूर करेगा, सुभिक्षकारी है। ता. २० से सोना चाँदी आदि धातुएँ रूई सूत सन तेज हों। ता. २२-२३ को चीनी खाँड़ लाख चपड़ा नमक धातुएँ अनाज मंदा रहें। ता. २४ क गल्ला गुड़ चाँदी रूई लाख चपड़ा तेज, पशुओं में बीमारी फैले। ता. २६ को जौ गेहूँ चना मंदा हो; हस्त का रवि अन्न गुड़ खाँड़ तिल हींग कपूर हल्दी हरड़ किराना में तेजी की लाइन बनायेगा। ता. २७ की पूर्णिमा तेजीकारक है। पू.भा. का अभाव आगे भी तेजी करेगा। आज शनि अंगारक योग भी है। घोर तेजी तथा दुर्घटनायें होंगी।

आश्विन मास--वदी १ बुधवारी है। गत पक्ष की भांति इस पक्ष में भी समस्त खाद्य-पदार्थ तेज रहेंगे। शाक-सब्जी अधिक तेज रहेंगी। ता.३० को बुध कन्या में चलेगा; सोना और शर्करा (खाँड़) में छः मास तक तेजी के कारण लाभ देगा ; फिर भाव गिर जायेंगे।

अक्टूबर मास--वदी ५ रविवारी है। माघ में घी तेज रहेगा, नोट कर लें ! ता. ३ को पूर्व में ४३ दिन के लिये प्राकृत गति से बुध अस्त होगा। उत्तम वर्षा, चोरों का भय, किराना तेज, घी गल्ला मंदा, सोना चाँदी रूई में एक बार तेजी फिर ५।६ दिन में मंदी होगी। आज रोहिणी नक्षत्र है; कपास का स्टॉक फाल्गुन में लाभ देगा, यह भी नोट कर लें ! रूई कपास चाँदी चावल मंदा रहे। अष्टमी बुधवारी तेजीकारक है। मघा के दूसरे चरण पर शनिचार किराना तेज करेगा। ता. ६ को "हस्ते बुधे सुभिक्षंस्याद् धान्यसारोग्यम बुद्:" आरोग्य-वृद्धि, धान्य मंदा, सुभिक्ष तथा वर्षा हो। वदी दशमी की वृद्धि घी रूई कपास में तेजी, उपरान्त एकादशी पशुओं में भी तेजी करेगी। ज्वार का स्टॉक आगे लाभ देगा। चांस है। ता. १० को चित्रा के सूर्य से गल्ला गेहूँ चना अरहर रूई लाख चपड़ा तेज, ज्वर का जोर, घी तेज हो। ता. ११ से कन्यागत शुक्र खेती में हानिकारक होगा। सभी धान्य तेज, चावल विशेष तेज होगा। बुधवारी अमावस्या गल्ला मंदा करेगी। पञ्च-ग्रही योग पशुओं की हानि करेगा। वर्षा अथवा युद्ध, दोनों में कोई एक हो। रात को कर्क में भौम के जाने से २१ अगस्तवाला योग समाप्त होगा। वर्षा आरंभ होगी। गल्ला ईख गन्ना रस-पदार्थ भैंस तेज हों। ता. १४ अक्टूबर का चन्द्र-दर्शन गल्ला और तिलहन तेज करेगा। ता. १५ को रूई कपास सोना चाँदी ताँबा पीतल अलसी अरण्डी तिल मंदा रहेगा। ता. १६ को रविवारी चौथ है ; घी बेचें और अन्न खरीदें, लाभकारी चांस है। तुला-संक्रांति तीसरे वार में होने से तेजीकारक रहेगी। सोना और सभी प्रकार के अन्न तेज, हाथियों की हानि होगी। ता. १७ के बारह बजे से ता. १८ के बाजार खुलने तक अनाज का स्टॉक करें, आगे लाभ होगा। यह भी एक चांस है। ता. १९ को घी का स्टॉक करना लाभदायक होगा। पुष्य के भौम से राज्यों में परस्पर विरोध, चोरों का आतंक, सोना तेज हो। ता. २१ से रूई मंदी, गल्ला गुड़ तेज होगा। ता. २३ को स्वाती का रवि सोना चाँदी रूई सूत गुड़ लाख चपड़ा सन तेज करेगा। ता. २५ को गुरु वक्री होगा। सुख-शांति और मंदी का वातावरण बन जायेगा; परन्तु ताँबा पीतल धातु-बाना पशु और किराना तेज होगा। बुधवारी पूनम विशेष तेजी करेगी।

कार्तिक मास--गुरुवारी एकम मन्दीकारक है ; परन्तु एकम की वृद्धि तेजी ही करेगी। वदी तीज रविवार को रोहिणी होने से आगे वर्षा बद हो। चित्रा का शुक्र बम्बई गुजरात में वर्षाकारक रहेगा।

नवम्बर मास--ता. १ को आर्द्रा है। आगे वर्षा में कमी और घास चारे में तेजी रहेगी। ता. ३ को बाजार मंदा, अष्टमी में पुष्य होने से आगे रूई कपास तेज रहेगी। ता. ३ को रूई कपास सूत सन चाँदी चावल मंदा, रात को तुला का शुक्र चाँदी में मंदी की लाइन बना देगा। ता. ५ को वृश्चिक के बुध से घी तेल तिलहन में तेजी, अन्न मंदा प्रजा में सुख-शांति रहे। मघा नक्षत्र सुपारी सूत सन तेज करेगा। ता. ६ से विशाखा का सूर्य सोना चाँदी रसकस रूई शेयर्स तेज करेगा। दक्षिणी देशों में उपद्रव हो। ता. ८ को गुड़ खाँड़ तिलहन अनाज तेज हो। आज हस्त नक्षत्र ज्वार का स्टॉक करने की सलाह देता है; आगे लाभ होगा। ता. १० को स्वातीगत शुक्र बाजार में तेजी का जोश भर देगा। चोर-डाकुओं से कष्ट होगा। रात को श्रीलक्ष्मी-पूजन होगा। पौने छः बजे से पौने आठ बजे तक वृष लग्न में पूजन करना चाहिये। ता. ११ को गोवर्धन पूजा होगी। स्वाति में दीपावली और विशाखा में गौ-पूजा हो तो राज्यों में युद्ध हो अथवा फसल में काफी नुकसान हो। दीपावली और गोवर्धन-पूजा दोनों दिन शुभवार हैं। अनिष्ट-योग कमजोर हो गया है। सुदी १२ एक रोज होना गड़बड़ करेगा। शनिवारी चंद्र-दर्शन से गल्ला मंदा तथा दक्षिण में उपद्रव होगा। आज रूई सोना चाँदी तिल तेल गेहूँ गोला मंदा रहेगा। ता. १५ को बुधदेव पश्चिम में उदय हो जायेंगे, सोना चाँदी रूई गुड़ गेहूँ में मंदी से तेजी होगी। आज ही वृश्चिक-संक्रांति है। रूई कपास चाँदी चावल लाल मिर्च लौंग लाल चंदन ऊनी वस्त्र मंदे हों, इनका संग्रह छः

मास पीछे लाभ देगा। संक्रान्ति सोमवारी है; अन्न तथा रस-पदार्थों में दो मास में ही लाभ होगा। घास चारा का स्टॉक करें। १७। ८ दोनों दिन अच्छी घटा-बढ़ी के हैं। ता. २० को रविवारी दशमी सुभिक्षकारी है। ता. २२ को गल्ला गुड़ सोना चाँदी ताँबा तेज हो। ता. २४।२५ को मंदी, पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र सुभिक्षकारी है।

"कृत्तिका कार्तिक पूर्णिमा चारो मास सुभिक्ष"
(भविष्य-भारती)

कार्तिक में ५ गुरु तथा ५ ही शुक्रवार होने से रोगों का विशेष प्रकोप होगा।

मार्गशीर्ष मास—प्रतिपदा को रोहिणी नक्षत्र इस पक्ष में तेजी रखेगा। आज कपास गुड़ चाय तमाखू शराब भाँग तेज रहे। ता. २८ को बाजार मंदा, आर्द्रा की स्थिति सुभिक्षकारी है। प्रजा में सुख-शांति रहेगी। बदी २ की वृद्धि है। मार्गशीर्ष की बदी में तिथि वृद्धि युद्ध का कारण होती है। प्रजा को भी कष्टकारी होती है। ता. ३० से आश्लेषा का भौम वर्षा में रुकावट, अन्न में तेजी, कृषि में हानि, टिड्डी और चूहों का जोर रखेगा।

दिसम्बर मास—ता. १ को सोना चाँदी रूई गुड़ गेहूँ मूंगफली मंदी रहेगी। पशुओं की वृद्धि, घी दूध दही चावल मंदा रहेगा। ता. २ को ज्येष्ठा का सूर्य सोना चाँदी रूई सूत कपड़ा अन्न चावल सरसों तेज और कफ रोग (नजला जुकाम श्वास खांसी आदि) बढ़ायेगा। ता. ५ से अन्न सोना आदि धातुएँ तथा नशीले पदार्थ तेज रहेंगे। ता. ७ को चित्रा नक्षत्र है। रूई कपास सूत कपड़ा उर्द मूंग सोना मंदा करेगा; परन्तु बुधवारी एकादशी रूई सूत कपड़ा आगे तेज करेगी। त्रयोदशी के क्षय से सभी वस्तुएँ मंदी परन्तु घी तेज होगा। अमावस्या शनिवारी वर्षा और उपज में कमी करेगी। ता. ११ को बुध शनि दोनों वक्री होंगे। गुरु पहले ही वक्री हैं। फल फूट तेज, चाँदी सोना गुड़ खाँड़ रूई में आरजी (अस्थाई) तेजी होगी। मूल नक्षत्र का क्षय पशुओं में बीमारी फैलायेगा। वक्री शनि प्रजा को नाना प्रकार से उत्पीड़ित; वर्षा पशु और धन-धान्य की हानि करेगा। आज चंद्र-दर्शन एक मास में अन्न तेज करेगा। ता. १२ को सोना चाँदी रूई कपास गुड़ किराना मंदा, मूंग मोठ बाजरा मकई तेज रहेगा। ता. १३ को हिजरी सन् १३९८ का आरंभ होगा; गुर्रा का मालिक मंगल है। वर्षा कम, वायु अग्नि का प्रकोप, दक्षिण में तेजी, उत्तर में रोग-प्रकोप, फलों की उपज कम, सोना चाँदी आदि धातुएँ मंदी, गुड़ शक्कर तेज हों। प्रायः हिजरी सन् मुसलमानों में प्रचलित है, फल भी इस्लामी देशों में। ता. १५ को गुरुवारी धनु-सक्रांति है, शतभिषागत सं. युग प्रलयकारी है। मृगशीर्ष में दुर्भिक्षकारी होती है। गल्ला तिल तेल तेज होगा। वक्री बुध भी तेजीकारक है। वक्री भौम अन्न-नाश, ज्वार बाजरा मूंग मोठ उर्द मूंगफली चावल हल्दी लाल रंग के पदार्थ तेज करेगा। ता. १६ को सोना चाँदी ताँबा रूई सूत कपड़ा तेज; परन्तु आगे शुक्रवारी सप्तमी उपरोक्त सभी वस्तुएँ मंदी करेगी। सोमवारी दशमी से अन्न मंदा, परन्तु रेवती नक्षत्र वर्षा की कमी और अग्नि-भयकारक होगा। दशमी की वृद्धि से ... हो। ता.

२२ को मूल धनु के शुक्र से सोना चाँदी रूई कपास गेहूँ तेज, प्रजा में संगठन भावना बढ़ेगी। पूर्णिमा रविवारी तेजीकारक है। मृगशीर्ष शुक्लपक्ष में चार ग्रहों का वक्री होना जोरदार घट-बढ़ से तेजी की लाइन बनायेगा।

पौष मास—बदी १ को पौष में बुध का उदय अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, भावों में तेजी, गायों में रोगकारक होता है। शुक्र का अस्त, स्त्रियों को पीड़ा, गल्ला में तेजी, राज्यों में झगड़ा-फसाद, धातुएँ तेज, रूई मंदी करता है। देवगण में अस्त होने से, गल्ला तेज होकर मंदा हो; सोना चाँदी तेज, कहीं रोग-प्रकोप हो; मालवा में भय, मारवाड़ में दुर्भिक्ष हो। ता. २८ से पू. षा. का रवि सर्दी बढ़ायेगा। सोना चाँदी गुड़ तिल तेल हल्दी कपड़ा ऊनी वस्त्र तेज होगा। सुदी ४ गुरुवारी मूंग मोठ उड़द ज्वार गुवार बाजरा मकई मंदी करेगी, नोट करें! ता. ३१ को गल्ला और तिलहन में तेजी रहेगी।

ता. १ जनवरी १९७८ को मार्गी बुध बाजार की चालू लाइन परिवर्तन करेगा। ता. २ को पू. षा. का शुक्र तिलहन चावल चीनी चाँदी मंदी करेगा। बदी त्रयोदशी शनिवारी है गेहूँ का स्टॉक लाभ देगा। यह एक चांस है। आज बाजार में दुनफी घटा-बढ़ी रहेगी। ता. ८ को घं. १३ मि. २० बजे उपरान्त अमावस्या तेजीकारक और सोमवार को पौने ३ घटे तक सोमवती अमावस्या मदीकारक रहेगी। अमावस्या को मूल नक्षत्र केवल ४॥ घटी होने से संवत् का एक पाया कमजोर हो गया है।

सूचना—हमारे लेखों से व्यापारियों ने लाभ उठाकर हमें प्रशंसापत्र भेजे हैं। यह लेख बहुत संक्षेप में लिखा है; खुलासा जानने के लिये सन् १९७७ का "भविष्य फल प्रकाश" मँगायें। उसमें सभी वस्तुओं के घटते-बढ़ते भाव तेजी-मंदी के योग, लाइनें तारीखें, पीरियड, मासिक वार्षिक चांस लिखे हैं। खरीदने, बेचने की लाभकारी तारीखें, माल स्टॉक करने का उचित अवसर, राशि-फल, नजराने की तारीखों के साथ ही अनेक उपयोगी बातें लिखी हैं। हम चांसों का धंधा नहीं करते, पुस्तक में ही लिख देते हैं। यह भारत में सबसे सस्ता व्यापारिक मार्ग-दर्शक ग्रन्थ है। मूल्य १५), रियायती १२) है। वी० पी० खर्च बहुत बढ़ गया है। वी० पी० से १५) ५ पैसे लगेंगे, इसलिये १३) भेजकर मँगायें, हम रजिस्ट्री से भेज देंगे।

"भविष्य-भारती"—तेजी-मंदी के अनेक ग्रन्थों का सार लेकर अपने अनुभूत योगों को सरस दोहों में लिखा है। समझाने के लिये सरल भाषा-टीका भी लिखी गई है। व्यापारियों तथा ज्योतिषियों के बड़े काम की पुस्तक है। प्रति वर्ष नहीं छपती; एकबार मंगाकर आयु-भर लाभ उठावें; मूल्य ८) है। पेशगी १०) भेजकर मँगायें; दोनों ग्रन्थों के लिए २२) भेजें। वी० पी० से हम २४)७५ पैसे में भेजेंगे। अपना और हमारा पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें।

पता—प्रकाश पुस्तकालय, खोरी,
P.O. KHORI ... (REWARI) हरियाणा
pin . 123101

भगवानदासजी मित्तल, भृगु-ज्योतिष-पुस्तकालय, नया बाजार, मथुरा द्वारा लिखित—

सन् १९७७ ई० के लिये आपका भविष्य

[प्रिय पाठक वृन्द ! प्रत्येक व्यक्ति की जन्म-कुण्डली के ऊपर दो प्रकार से ग्रहों का असर जिन्दगीभर होता रहता है। इसमें मुख्यतया असर जन्मकालीन ग्रहों का होता है, जैसाकि जन्म-कुण्डलियों के सम्बन्ध में हमने अपनी पुस्तक "विशाल भृगुसंहिता-पद्धति' के अन्दर नौ ग्रहों का लिखा है और दूसरा असर आकाश-मार्गी ग्रहों का होता है, जैसाकि हम हर नवीन वर्ष की 'चिन्ताहरण जन्त्री' द्वारा आपकी सेवा में देते रहते हैं। अतः पाठकों को दोनों प्रकार से ही अपने भाग्य का विचार सदैव करते रहना चाहिये ; वैसे, भविष्य के पूर्ण द्रष्टा तो केवल भगवान् ही हैं]

मेष लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से मंगल बुध नवें, सूर्य मंगल दसवें और शुक्र ग्यारहवें चलेंगे। गुरु लग्न में सूर्य ग्यारहवें चलेंगे। इसलिये ता. १९-२-७७ तक मान-प्रभाव और लाभ-प्राप्ति का योग रहेगा। भाग्य की सफलता रहेगी। आगे ता. २२-२-७७ से गुरु दूसरे चलेंगे। ता. २७-२-७७ से सूर्य बुध ग्यारहवें, शुक्र बारहवें चलेंगे। अतः १३-३-७७ तक साधारणतया लाभ रहेगा। ता. १५-३-७७ से सूर्य बुध बारहवें, मंगल ग्यारहवें और शुक्र लग्न में चलेंगे जिससे ता. १९-४-७७ तक खर्च कुछ अधिक रहते हुये भी लाभ होता रहेगा। ता. २०-४-७७ से शुक्र मंगल बारहवें, सूर्य बुध लग्न में रहेंगे। अतएव खर्चा ज्यादा रहेगा ; किन्तु ता. १-५-७७ से राहु छठें और केतु बारहवें चलेंगे; इसलिये कुछ पुरानी दिक्कतों से छुटकारा मिलने लगेगा। ता. ३०-५-७७ से शुक्र मंगल बुध लग्न में चलने से ता. ८-८-७७ तक इज्जत मान-प्रभाव और स्वाभिमान बढ़ेगा; आगे समय सामान्य रहेगा। ता. १८-७-७७ से गुरु तीसरे तथा ता. २८-७-७७ से शुक्र भी तीसरे चलेंगे; इसलिये पुरुषार्थ से इज्जत बढ़ेगी तथा भाग्य की सफलता रहेगी। आगे ता. २४-८-७७ से मंगल गुरु तीसरे, शुक्र शनि चौथे और सूर्य बुध पांचवें चलेंगे जिससे ता. १०-१०-७७ तक मान-प्रभाव सुख-सफलता और साहस-शक्ति बढ़ेगी। ता. १२-१०-७७ से शुक्र छठें और मंगल चौथे नीच के तथा ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी नीच के चलेंगे। इसलिये समय परेशानी का रहेगा। ता. ५-११-७७ से शुक्र सातवें अच्छे रहेंगे, अतः कुछ सफलता मिलेगी। ता. १६-११-७७ से सूर्य बुध भी आठवें चलने से दिमागी परेशानी रहेगी। ता. १६-१२-७७ से सूर्य बुध नवें चलेंगे जिससे ता. ३१-१२-७७ तक बुद्धि-बल और पुरुषार्थ के द्वारा भाग्योदय होगा। साहस-शक्ति बढ़ेगी।

वृषभ लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य बुध मंगल आठवें चलेंगे। अतः ता. ५-२-७७ तक समय कमजोर रहेगा। ता. ६-२-७७ से बुध मंगल नवें चलेंगे, शुक्र ग्यारहवें उच्च के चलेंगे जिससे ता. ८-३-७७ तक आर्थिक लाभ और कार्य की सफलता रहेगी। ता. ९-३-७७ से शुक्र बारहवें, आगे मंगल दसवें और सूर्य बुध ग्यारहवें चलेंगे। इसलिये सामान्य समय रहेगा। ता. २४-३-७७ से शुक्र लाभ में उच्च के चलेंगे; सूर्य बुध भी ग्यारहवें चलेंगे जिसके फलस्वरूप ता. १३-४-७७ तक लाभ-योग ठीक रहेगा। ता. १४-४-७७ से सूर्य बुध बारहवें, आगे मंगल ग्यारहवें चलेंगे जिससे खर्च कुछ अधिक होगा। ता. ३०-५-७७ से शुक्र मंगल बुध बारहवें चलेंगे। अतएव ता. ३०-६-७६ तक कुछ बेजा तरीके का खर्च परेशानीदायक रहेगा। ता. २-७-७७ से गुरु शुक्र लग्न में चलेंगे। इसलिये ता. २७-७-७७ तक मान-प्रभाव कुछ बढ़ेगा। ता. २८-७-७७ से गुरु शुक्र दूसरे चलने से धन के लिये विशेष प्रयत्न करना होगा। ता. २२-८-७७ से मंगल गुरु शुक्र दूसरे और शुक्र बुध शनि चौथे चलेंगे। फलतः सुख-प्राप्ति के साधन रहते हुये, धन के मामले में नफा-नुकसान दोनों होता रहेगा। ता. १२-१०-७७ से मंगल शुक्र नीच के और ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी नीच के रहेंगे। अतः ता. १५-११-७७ तक समय परेशानी का रहेगा। ता. १६-११-७७ से सूर्य सातवें और ता. ५-११-७७ से बुध भी सातवें चलेंगे। इसलिये ता. १५-१२-७७ तक घर-गृहस्थी एवं रोजी-रोजगार में कुछ सुख-सफलता मिलेगी। ता. १६-१२-७७ से सूर्य बुध आठवें चलने से ता. ३१-१२-७७ तक सुख-सफलता की कमी रहेगी।

मिथुन लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य मंगल बुध सातवें और गुरु ग्यारहवें चलेंगे जिससे ता. ५-२-७७ तक घर-गृहस्थी और रोजी-रोजगार में सुख-सफलता और धन-लाभ रहेगा। ता. ६-२-७७ से मंगल बुध आठवें रहेंगे। इसलिये परेशानियाँ रहेंगी। ता. २२-२-७७ से गुरु बारहवें चलने से उन्नति के मार्ग में परेशानी लम्बी चलेगी ; किन्तु ता. २७-२-७७ से सूर्य बुध नवें चलेंगे ; अतः भाग्योदय में पुरुषार्थ से सफलता मिलेगी। ता. १५-३-७७ से सूर्य बुध दसवें, मंगल नवें चलेंगे ; और ता. २४-३-७७ से शुक्र गुरु का स्थान-सम्बन्ध होगा। इसलिये ता. २९-५-७७ तक नफा के साथ नुकसान भी हो सकता है। ता. ३०-५-७७ से मंगल बुध शुक्र ग्यारहवें चलने से लाभ-योग अच्छा रहेगा। ता. ७-६-७७ से बुध गुरु बारहवें तथा मंगल शुक्र ग्यारहवें चलेंगे जिससे

आमदनी और खर्च दोनों में तेजी रहेगी। ता. ८-७-७७ से मंगल गुरु शुक्र बारहवें रहने से खर्च अधिक रहेगा। ता. २८-७-७७ से शुक्र गुरु लग्न में तथा मंगल बारहवें चलेंगे। फलतः परिस्थियों में कुछ सुधार होगा। ता. २४-८-७७ से गुरु मंगल लग्न में, शुक्र शनि धन-भाव में और सूर्य बुध तीसरे चलेंगे। इसलिये मान-प्रभाव साहस-शक्ति बढ़ेगी। ता. १२-१०-७७ से मंगल नीच के होकर दूसरे, शुक्र नीच के होकर चौथे तथा ता. १७-१०-७७ से सूर्य नीच के होकर पाँचवें चलेंगे। अतएव ता. १६-११-७७ तक ज्यादा परेशानियाँ रहेंगी, इसके बाद परेशानी कुछ कम होने लगेगी; धन की चिन्ता रहेगी। ता. १६-१२-७७ से सूर्य बुध सातवें और ता. २३-१२-७७ से शुक्र भी सातवें चलेंगे एवं गुरु लग्न में रहेंगे। इसलिये ता. ३१-१२-७७ तक समय प्रायः सुधार का रहेगा।

कर्क लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य मंगल बुध छठे और गुरु दसवें चलेंगे। इसलिये कुछ दिक्कतों के साथ प्रभावपूर्ण समय चलेगा। ता. १-२-७७ से मंगल सातवें, शुक्र नवें उच्च के चलेंगे जिससे ता. १०-३-७७ तक घर-गृहस्थी, रोजी-रोजगार की अच्छी उन्नति रहेगी। ता. ११-३-७७ में मंगल आठवें, सूर्य बुध नवें और शुक्र दसवें चलेंगे; अतः साधारण सफलता मिलती रहेगी। ता. २०-४-७७ से मंगल शुक्र नव, सूर्य बुध दसवें चलेंगे। आगे ता. ३०-५-७७ से शुक्र मंगल दसवें तथा सूर्य बुध गुरु ग्यारहवें चलेंगे। फलस्वरूप भाग्योदय और उन्नति का समय चलेगा। ता. १५-६-७७ से सूर्य बारहवें चलने से खर्च बढ़ेगा; किन्तु मंगल शुक्र दसवें और ता. १-७-७७ से शुक्र गुरु ग्यारहवें तथा ता. ८-७-७७ से मंगल भी ग्यारहवें चलेंगे। इसलिये ता. २५-७-७७ तक प्रायः लाभ और सफलता रहेगी। ता. २८-७-७७ शुक्र गुरु बारहवें चलने से खर्च की अधिकता रहेगी और मंगल से लाभ भी रहेगा। ता. २३-८-७७ से शुक्र शनि लग्न में, मंगल गुरु बारहवें चलेंगे इसलिये खर्च बढ़ा रहेगा और घरेलू सुख रहेगा। ता. १२-१०-७७ से मंगल नीच के होकर लग्न में, शुक्र नीच के होकर तीसरे और ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी नीच के होकर चौथे चलेंगे जिससे सुख-शान्ति में बाधा रहेगी। ता. ५-११-७७ से शुक्र चौथे, ता. १६-११-७७ से सूर्य पाँचवें चलेंगे; अतः सुख-प्राप्ति के लिये शक्ति बढ़ेगी। ता. १६-१२-७७ से सूर्य छठे और ता. २३-१२-७७ से शुक्र भी छठे चलेंगे। इसलिये ता. ३१-१२-७७ तक धन-लाभ का समय कमजोर रहेगा।

सिंह लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य मंगल बुध पाँचवें चलेंगे। इसलिए बुद्धि और सन्तानपक्ष से अच्छी सफलता रहेगी। ता. १-२-७७ से मंगल सूर्य छठे, शुक्र आठवें चलेंगे जिससे कुछ दिक्कतों से कार्य-संचालन होता रहेगा। ता. २७-२-७७ से बुध सूर्य सातवें चलने से रोजी-रोजगार एवं घर-गृहस्थी में सुख-सफलता रहेगी। ता. १५-३-७७ से सूर्य बुध आठवें खराब चलेंगे तथा मंगल सातवें अच्छे चलेंगे। अतः कार्य-क्षेत्र में सफलता और परेशानी दोनों चलेगी। ता. २०-४-७७ से शुक्र मंगल आठवें तथा सूर्य बुध नवें चलेंगे जिससे उन्नति और परेशानी दोनों ही चलेंगी। ता. १-५-७७ से राहु दूसरे और केतु आठवें चलेंगे। यह लम्बे समय के लिये परेशानी के सूचक हैं। ता. ३०-५-७७ से मंगल शुक्र बुध नवें और सूर्य गुरु दसवें चलेंगे। फलतः भाग्य की ताकत से सफलता मिलेगी। ता. ९-७-७७ से मंगल शुक्र गुरु दसवें चलेंगे। अतः मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति और भाग्य की अनुकूलता रहेगी। ता. २८-७-७७ शुक्र गुरु ग्यारहवें और मंगल दसवें चलेंगे। इसलिये धन-लाभ और भाग्योदय में सफलता मिलेगी। ता. २३-८-७७ से शुक्र शनि बारहवें, मंगल गुरु ग्यारहवें तथा सूर्य बुध लग्न में चलेंगे। फलस्वरूप खर्च की वृद्धि रहते हुये भी भाग्योन्नति और मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। ता. २०-९-७७ से शुक्र बुध शनि लग्न में और मंगल गुरु ग्यारहवें चलेंगे। अतः लाभ-सुख और मान-प्रभाव की वृद्धि रहेगी। ता. १२-१०-७७ से मंगल नीच के बारहवें, शुक्र नीच के दूसरे और ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी नीच के तीसरे चलेंगे जिससे ता. ३१-१२-७७ तक भाग्य कमजोर रहते हुये यत्किञ्चित् सफलता मिलेगी।

कन्या लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य बुध मंगल चौथे और गुरु आठवें चलेंगे। इसलिये घरेलू वातावरण में अशान्ति रहने पर भी कभी-कभी सुख प्राप्त होता रहेगा। ता. १-२-७७ से मंगल सूर्य पाँचवें, शुक्र सातवें उच्च के चलेंगे जिससे दिमागी परेशानी के रहते हुये भी घर-गृहस्थी के मामलों में अनुकूलता रहेगी। ता. ११-३-७७ से मंगल छठे, शुक्र आठवें तथा सूर्य बुध छठे सातवें चलेंगे। अतः यह समय भाग्य की कमजोरी का रहेगा। ता. २१-४-७७ से शुक्र मंगल सातवें और सूर्य बुध आठवें चलेंगे जिससे थोड़ी सफलता प्राप्ति के साथ-साथ परेशानी लगी रहेगी। ता. ३०-५-७७ से शुक्र मंगल बुध आठवें, सूर्य गुरु नवें चलेंगे। इसलिये भाग्योन्नति में दिक्कतें रहेंगी। ता. १-७-७७ से शुक्र गुरु नवें, सूर्य बुध दसवें चलेंगे। अतएव भाग्य की अनुकूलता होगी। ता. २८-७-७७ से शुक्र गुरु दसवें, मंगल नवें और सूर्य शनि ग्यारहवें चलेंगे जिससे भाग्योदय में सफलता रहेगी। ता. २३-८-७७ से शुक्र शनि ग्यारहवें, सूर्य बुध बारहवें तथा मंगल गुरु दसवें चलेंगे। फलतः लाभ-खर्च दोनों का क्रम चलेगा। ता. १७-९-७७ से शुक्र बुध शनि बारहवें चलने से कुछ अनावश्यक तरीके से ज्यादा खर्च होगा। ता. १२-१०-७७ से मंगल

नीच के ग्यारहवें, शुक्र नीच के लग्न में चलेंगे और ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी नीच के धन स्थान में चलेंगे। इसलिये धन के पक्ष से कुछ परेशानी रहेगी। ता. १६-११-७७ से सूर्य तीसरे, शुक्र दूसरे एवं गुरु दसवें चलेंगे। अतः भाग्य में सुधार होगा, सफलता मिलेगी। ता. ३०-१२-७७ से शुक्र सूर्य तीसरे, आगे ता. २३-१२-७७ से सूर्य शुक्र चौथे चलेंगे जिससे ता. ३१-१२-७७ तक पुरुषार्थ के द्वारा एवं घरेलू सहयोग से सुख-सफलता मिलेगी।

तुला लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य मंगल बुध तीसरे, गुरु सातवें चलेंगे। इसलिये पुरुषार्थ के द्वारा सफलता मिलेगी; साहस-शक्ति बढ़ेगी। ता. १-२-७७ से सूर्य मंगल चौथे और ता. ६-२-७७ से बुध भी चौथे चलेंगे जिससे घरेलू वातावरण में सुख-सफलता का योग चलेगा। ता. २७-२-७७ से सूर्य बुध पांचवें चलने से विद्या-बुद्धि और सन्तानपक्ष से सफलता रहेगी। ता. १५-३-७७ से सूर्य बुध छठे, गुरु आठवें चलेंगे। अतएव भाग्य की प्रतिकूलता से परेशानी रहेगी। ता. १४-४-७७ से सूर्य बुध सातवें चलेंगे जिससे घर-गृहस्थी में कुछ सुख-सफलता रहेगी। ता. १-५-७७ से राहु बारहवें केतु छठें चलेंगे। इसलिये पुरानी परेशानियों से थोड़ी राहत मिलने लगेगी। ता.३०-५-७७ से शुक्र मंगल बुध सातवें चलेंगे। फलतः रोजी-रोजगार एवं घर-गृहस्थी में सुख-सफलता रहेगी। ता. १-७-७७ से शुक्र आठवें और ता. ८-७-७७ से मंगल भी आठवें चलेंगे। अतः कुछ परेशानी रहेगी। ता. २४-८-७७ से शुक्र शनि दसवें मंगल गुरु नवें तथा सूर्य ग्यारवें चलेंगे। फलस्वरूप भाग्योन्नति, लाभ और सफलता रहेगी। ता. १७-९-७७ से शुक्र शनि बुध ग्यारहवें, सूर्य बारहवें चलेंगे। इसलिये खर्च से लाभ ज्यादा रहेगा, भाग्य मजबूत रहेगा। ता.१२-१०-७७ से मंगल नीच के दसवें, शुक्र नीच के बारहवें चलेंगे और ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी नीच के लग्न में चलेंगे जिससे समय अशान्तिदायक चलेगा। ता. ५-११-७७ से शुक्र लग्न में और बुध धन-भाव में चलेंगे तो स्थिति में कुछ सुधार होगा। ता. २९-११-७७ से बुध तीसरे, शुक्र सूर्य दूसरे और गुरु भाग्य में चलेंगे। अतः ता. ३१-१२-७७ तक पुरुषार्थ शक्ति से भाग्योन्नति एवं सफलता रहेगी।

वृश्चिक लग्नवालों को—ता. १-१-७ से सूर्य मंगल बुध दूसरे तथा गुरु छठें चलेंगे। इसलिये पुरुषार्थ और भाग्यशक्ति से धनपक्ष में सफलता रहेगी। ता. १-२-७७ से सूर्य मंगल तीसरे, शुक्र पाँचवें चलेंगे जिससे बुद्धि-बल और पुरुषार्थ से सफलता मिलेगी तथा प्रभाव एवं साहस-शक्ति बढ़ेगी। ता. २६-२-७७ से गुरु सातवें, सूर्य बुध चौथे तथा मंगल तीसरे चलेंगे। अतएव घर-गृहस्थी व रोजी-रोजगार में सुख-सफलता रहेगी। ता. १५-३-७७ से सूर्य बुध पाँचवें, मंगल चौथे और शुक्र छठें चलेंगे, फलस्वरूप बुद्धि व देह-पक्ष से सुख-सफलता रहेगी। ता. १४-४-७७ से सूर्य बुध छठें चलने से कुछ परेशानी व परिश्रम से लाभ होगा। ता. १५-५-७७ से सूर्य गुरु सातवें और ता. ३०-५-७७ से मंगल शुक्र बुध छठें चलेंगे। अतः कुछ दिक्कतों से समय प्रभावयुक्त चलेगा। ता. १५-६-७७ से सूर्य आठवें, ता. २३-६-७७ से बुध आठवें, मंगल शुक्र छठें, गुरु सातवें चलेंगे। इसलिये अधिकतर दिक्कतों से थोड़ी सफलता मिलती रहेगी। ता. १८-७-७७ से गुरु लंबे समय के लिये आठवें स्थान पर धन एवं संतानपक्ष में खराब चलेंगे। ता. २३-८-७७ से शुक्र शनि नवें, सूर्य बुध दसवें और मंगल आठवें चलेंगे जिससे स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी के रहते हुये भाग्य में कुछ सुधार होगा। ता. १७-९-७७ से शुक्र शनि बुध दसवें, सूर्य ग्यारहवें तथा मंगल गुरु आठवें चलेंगे। अतः कई दिक्कतों के रहते हुए भी लाभ और मान-प्रभाव बढ़ेगा। ता. १-१०-७७ से सूर्य बुध ग्यारहवें चलने से अर्थ-लाभ में सफलता अच्छी रहेगी। ता. ५-११-७७ से सूर्य शुक्र बारहवें, बुध लग्न में रहेंगे। इसलिये खर्च ज्यादा रहेगा। ता.१६-११-७७ से सूर्य बुध लग्न में चलेंगे जिससे मान-प्रभाव बना रहेगा; लाभ होगा। ता.१६-१२-७७ से सूर्य बुध दूसरे चलेंगे। इसलिये ता. ३१-१२-७७ तक धन-पक्ष में सफलता और प्रभाव-वृद्धि रहेगी।

धनु लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य मंगल और बुध लग्न में चलेंगे और गुरु पाँचवें चलेंगे। इसलिये बुद्धि-बल और कर्म-योग से भाग्योदय होकर मान-प्रभाव बढ़ेगा। संतान-पक्ष में सुख-सफलता रहेगी। ता. १-२-७७ से सूर्य मंगल दूसरे, शनि आठवें चलेंगे जिससे धन के पक्ष में कुछ हानि होने की बात बन सकती है। अतः ता. १२-३-७७ तक धन के पक्ष में सावधानी बरतनी चाहिये। ता. १५-३-७७ से सूर्य बुध चौथे और मंगल तीसरे चलेंगे। अतएव भाग्य में कुछ सुधार रहेगा। ता.१४-४-७७ से सूर्य बुध पाँचवें, शुक्र चौथे उच्च के चलने से घर के वातावरण में सुधार तथा संतानपक्ष से सुख-लाभ होगा। ता. १५-५-७७ से गुरु सूर्य छठे चलेंगे। अतः शत्रुपक्ष में प्रभाव-वृद्धि और सफलता रहेगी। ता. ३०-५-७७ से मंगल शुक्र बुध पाँचवें चलेंगे। बुद्धि और संतानपक्ष में ह्रास, लाभ-खर्च दोनों में झंझट लगा रहेगा। ता. १५-६-७७ से सूर्य सातवें, ता. २३-६-७७ से बुध भी सातवें चलेंगे। अतएव रोजी-रोजगार और घर-गृहस्थी में सौभाग्य-शक्ति बढ़ेगी, सफलता मिलेगी। ता. १८-७-७७ से बुध आठवें चलने से उन्नति में कुछ बाधा रहेगी। ता. २८-७-७७ से गुरु शुक्र सातवें, बुध नवें चलेंगे। इसलिये भाग्य की अनुकूलता एवं गृहस्थी में सफलता

रहेगी। ता. १७-८-७७ से सूर्य बुध नवें अच्छे चलेंगे। ता. २३-८-७७ से शुक्र शनि आठवें और मंगल सातवें चले जिससे कुछ दिक्कतों के साथ-साथ भाग्य समय पर सहायक होता रहेगा। ता. १७-९-७७ से शुक्र शनि बुध नवें औ शुक्र दसवें चलेंगे। इसलिये भाग्योन्नति रहेगी। ता. १२-१०-७७ से मंगल नीच के आठवें, शुक्र नीच के दसवें चलें ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी नीच के ग्यारहवें चलेंगे। फलतः भाग्योदय में बड़ी परेशानियाँ रहेंगी। ता. ५-११-७७ शुक्र सूर्य ग्यारहवें, बुध बारहवें चलने के कारण उन्नति में कमजोरी रहेगी। ता. १६-११-७७ से सूर्य बुध बारहवें चलेंगे इसलिये भाग्य कमजोर रहेगा, खर्च ज्यादा होगा। ता. १६-१२-७७ से सूर्य बुध लग्न में चलने से ता. ३१-१२-७ तक भाग्यशक्ति एवं मान-प्रभाव की वृद्धि रहेगी।

मकर लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य मंगल बुध बारहवें, गुरु चौथे चलेंगे। इसलिये खर्च ज्याद बढ़ेगा। ता. १-२-७७ से मंगल सूर्य लग्न में और शुक्र तीसरे चलेंगे जिससे पुरुषार्थ की सफलता और आमदनी रहेगी ता. २७-२-७७ से सूर्य बुध दूसरे, मंगल पहिले, गुरु पाँचवें चलेंगे। अतः कुछ विशेष सफलता रहेगी। ता. १५-३-७७ सूर्य बुध तीसरे, मंगल दूसरे, शुक्र चौथे चलने से साहस-शक्ति बढ़ेगी; सुख-सफलता रहेगी। ता. २०-४-७७ से शु मंगल तीसरे और ता. १-५-७७ से केतु भी तीसरे चलेंगे। इसलिये पुरुषार्थ शक्ति से विशेष सफलता रहेगी। ता ३०-५-७७ से शुक्र मंगल बुध चौथे चलेंगे। घरेलू सुख-सम्बन्धों में एवं घर-बैठे सफलता पाने में भाग्य का अच्छ सहयोग रहेगा। ता. ९-७-७७ से शुक्र मंगल गुरु पाँचवें चलेंगे। फलतः बौद्धिक शक्ति से संतान-पक्ष से सफलता प्रा होगी। ता. २८-७-७७ से शुक्र गुरु छठे एवं मंगल पाँचवें चलेंगे। कुछ परेशानी और सफलता का समय साथ-सा चलेगा। ता. २३-८-७७ से शुक्र शनि सातवें, मंगल गुरु छठे और सूर्य बुध आठवें चलेंगे जिसके फलस्वरूप घर-गृहस् में सुख-सफलता और प्रभाव बढ़ेगा। ता. १७-९-७७ से शुक्र शनि बुध आठवें; मंगल गुरु छठें चलेंगे। अतः सम परेशानी का रहेगा। ता. १२-१०-७७ से मंगल सातवें नीच के, शुक्र नवें नीच के और ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी दस नीच के चलेंगे। इसलिये भाग्य की कमजोरी रहेगी। ता. १६-११-७७ से सूर्य बुध ग्यारहवें और शुक्र दसवें चलेंगे जिस लाभ, भाग्योन्नति और सफलता रहेगी। ता. १६-१२-७७ से सूर्य बुध बारहवें चलेंगे। इसलिये ता. ३१-१२-७७ त खर्च बहुत ज्यादा हो जायेगा।

कुम्भ लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य मंगल बुध ग्यारहवें, गुरु तीसरे चलेंगे। इसलिये धन-लाभ सफलता और साहस-शक्ति की वृद्धि रहेगी। ता. १-२-७७ से सूर्य मंगल बारहवें, शुक्र दूसरे, गुरु केतु तीसरे चल जिससे लाभ-खर्च दोनों ठीक चलेंगे। ता. २७-२-७७ से सूर्य बुध लग्न में, गुरु चौथे और मंगल बारहवें चलेंगे अतः समय प्रभावयुक्त रहेगा। ता. १२-३-७७ से मंगल लग्न में, शुक्र केतु तीसरे, गुरु चौथे और सूर्य बुध दूसरे चलेंगे मान-प्रभाव की वृद्धि एवं भाग्योन्नति में सफलता रहेगी। ता. २०-४-७७ से मंगल शुक्र दूसरे, सूर्य बुध केतु तीसरे चलें इसलिये धन के पक्ष में सफलता और प्रभाव की स्थिरता रहेगी। ता. १-५-७७ से राहु आठवें, केतु दूसरे, दोनों खिला चलेंगे। ता. ३०-५-७७ से मंगल शुक्र बुध तीसरे और सूर्य गुरु चौथे चलेंगे जिससे प्रबल पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य उन्नति होगी। ता. २-७-७७ से शुक्र गुरु चौथे, मंगल तीसरे रहेंगे। इसलिये सुख और सफलता प्राप्त होगी। ता ९-७-७७ से मंगल गुरु शुक्र चौथे चलने से घरेलू सुख-आनन्द रहेगा। ता. २८-७-७७ से शुक्र गुरु पाँचवें, मंगल चौथे चलेंगे। अतएव बुद्धि और संतानपक्ष से सफलता एवं धन-लाभ से सुख-वृद्धि रहेगी। ता. २३-८-७७ से मंगल गु पाँचवें, शुक्र शनि छठे और सूर्य बुध सातवें चलेंगे जिससे बुद्धि और संतान-पक्ष से सफलता, गृहस्थ-सुख औ प्रभाव की वृद्धि रहेगी। ता. १९-९-७७ से शुक्र शनि बुध सातवें, सूर्य आठवें तथा मंगल गुरु पाँचवें चलेंगे। इसलिये घर गृहस्थी व रोजी-रोजगार में अधिकांश सफलता और लाभ रहेगा। ता. १२-१०-७७ से मंगल छठें नीच के रहेंगे और ता १७-१०-७७ से सूर्य भी नवें नीच के चलेंगे; फलतः भाग्योदय के मार्गों में अड़चनें एवं परेशानी रहेगी। ता. १६-११-७७ से सूर्य बुध दसवें, शुक्र नवें, गुरु पाँचवें चलने से भाग्य अनुकूल होगा। ता. १६-१२-७७ से सूर्य बुध ग्यारहवें ता. २३-१२-७७ से शुक्र भी ग्यारहवें चलेंगे। इसलिये ता. ३१-१२-७७ तक धन-लाभ का क्रम अच्छा रहेगा।

मीन लग्नवालों को—ता. १-१-७७ से सूर्य मंगल बुध दसवें, गुरु दूसरे चलेंगे। इसलिये सुख-सौभाग्य और मान-प्रभाव की वृद्धि रहेगी। ता. १-२-७७ से मंगल सूर्य ग्यारहवें और बुध दसवें, शुक्र लग्न में चलेंगे जिससे धन-लाभ के साथ मान-प्रभाव बढ़ेगा। ता. २७-२-७७ से सूर्य बुध बारहवें, गुरु तीसरे और शुक्र लग्न में मंगल ग्यारह चलेंगे। अतएव खर्च ज्यादा रहते हुये भी मान-प्रभाव स्थिर रहेगा। ता. १५-३-७७ से मगल बारहवें, सूर्य बुध लग्न और शुक्र दूसरे चलेंगे। इसलिये धन का खर्च ज्यादा रहेगा। ता. २०-४-७७ से मंगल शुक्र लग्न में और सूर्य बुध के दूसरे चलेंगे। फलतः मान-प्रभाव अच्छा रहेगा। ता. १-५-७७ से लग्न में केतु और सातवें राहु कुछ परेशानी देते चलेंगे ता. ३०-५-७७ से मंगल शुक्र बुध दूसरे और सूर्य गुरु तीसरे चलने के कारण धन-पक्ष में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलेगी। ता. १-७-७७ से गुरु शुक्र तीसरे, सूर्य बुध चौथे और मंगल दूसरे चलेंगे। इसलिये अधिकांश सफलता रहेगी। प्रभाव और हिम्मत-शक्ति बढ़ेगी। ता. २८-७-७७ से शुक्र गुरु चौथे, मंगल तीसरे चलेंगे; अतएव पुरुषार्थ की सफलता और सुख की प्राप्ति होती रहेगी। ता. २३-८-७७ से शुक्र शनि पाँचवें, मंगल गुरु चौथे, सूर्य बुध छठे चलेंगे जिस घरेलू वातावरण में सुधार और भाग्य जागृत होगा। कुछ प्रभाव-वृद्धि और कुछ परेशानी भी रहेगी। ता. १२-१०-७७

से मंगल पाँचवें, शुक्र सातवें नीच के चलेंगे और ता. १७-१०-७७ से सूर्य भी आठवें नीच के चलेंगे। इसलिये नित्य जीवन में परेशानी चलेगी। ता. १६-११-७७ से सूर्य बुध नवें, शुक्र आठवें और गुरु चौथे चलने से भाग्य अधिकतर अनुकूल रहेगा। ता. १६-१२-७७ से सूर्य बुध दसवें, गुरु चौथे रहेंगे; ता. २३-१२-७७ से शुक्र भी दसवें चलेंगे। इसलिये ता. ३१-१२-७७ तक मान-प्रभाव की वृद्धि एवं कार्यों में सफलता रहेगी।

सूचना--जनता को जन्म-कालीन नौ ग्रहों और वर्तमान में आकाशमार्गी गोचर नौ ग्रहों में-से कोई-न-कोई २-४ ग्रह प्रायः खराब फल देनेवाले बनते रहते हैं। इसलिये ऐसे ग्रहों की शान्ति के लिये सदैव निम्नलिखित सरल उपायों को करते रहना चाहिये।

१--रोजाना सुबह सूर्यनारायण और शंकरजी को जल और गुलाब का फूल चढ़ाकर श्रद्धापूर्वक नमस्कार करना चाहिये।
२--रोजाना पक्षियों को अनाज और कच्छ-मच्छों को आटे की गोलियाँ डालते रहना चाहिये।
३--रोजाना भोजन से पहिले गुड़ रोटी गऊ माता को खिलाकर प्रणाम करना तथा उनकी परिक्रमा करनी चाहिये।
४--हर शनिवार को प्रातःकाल पीपल वृक्ष की साधारण पूजा, परिक्रमा करनी चाहिये।
५--रोजाना प्रातः भगवान का भजन पूर्व-मुख होकर करना चाहिये।
६--यथाशक्ति कुछ दान-पुण्य करते रहना चाहिये।
७--प्राणि-मात्र से यथासम्भव स्नेह और आदर का बर्ताव करना चाहिये।

दैवज्ञ की दृष्टि में व्यापार-चक्र सन् १९७७ ई०

लेखक—ज्योतिषरत्न पं० राजाराम जैन अर्घकाण्ड-वाचस्पति,

प्रणेता—वार्षिक "भविष्य-दर्पण," ११६ कटरा स्ट्रीट, मैनपुरी (उ० प्र०)

जनवरी मास—१ जनवरी सन् १९७७ का प्रारम्भ शनिवार को होने से किसान-मजूरवर्ग का वर्चस्व बढ़ाता जावेगा। ता० ३ को वृश्चिकांशे राहु-शुक्र-बुध ता० ४ तक उ० प्र०, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश में वर्षा लावें तो ही होगा। पौषी पूर्णिमा को आर्द्रा नक्षत्र तेजीकारक है; किन्तु रात से धनांशे गुरु-शुक्र ता० ७ तक वर्षाकारक हैं। ता० को सूर्य-बुध की अन्तर्युति १ सप्ताह पूर्व से अच्छी मन्दी लावेगी। ता० ७ को चाँदी दलहन तेज होंगे। जब-कभी पूर्णिमा को बादल होते हैं तो आगे अच्छी मन्दी लाते हैं, सुपरीक्षित है।

माघ मास में ५ गुरुवार मन्दीकारक हैं। उपर्युक्त क्षेत्रों में दक्षिणी वायु जोर से चलते ही अच्छी वर्षा होती पूर्वीय वायु जोर चले तो सरसों में कीड़ा लग जाता है। कृष्णा २।३ शुक्र शनिवारी से प्रजा-विग्रह तो कहीं युद्ध हो; ति दलहन तेज, ता० १० को प्रातः सायन मकर के भौम के प्रभाव से सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी हों; किन्तु आज ही सवेरे शी०प्र का भौम चाँदी के साथ सभी वस्तुओं में तेजी का समर्थक है, खुलते बाजार से ही रुख का पता चल सकेगा। ता० १२ को सूर्य-गुरु के अंशात्मक त्रिकोणयोग एवं पूर्वोदयी बुध से बादल-वर्षा हो तो मन्दा, वायु-वेग ओला-पाला से ते वस्तुओं की चलती लाइन में खतरनाक परिवर्तन होगा। कृष्णा ९ को उपर्युक्त क्षेत्रों में जहाँ भी आकाश निर्मल र वहाँ आगे वर्षा-काल में क्षुद्र नदी, तालाब, पोखरे कुएँ तक सूखने लगेंगे। अतः बादल वर्षा होना ही उत्तम होता गुरुवार की रात्रि में ता० १४ को मकर का रवि होते ही शनि से प्रतियोग, (कर्क-मकर-संक्रान्ति गुरुवारी) धनु राशि में दृष्ट भौम+बुध योग से तिलहन दलहन ज्वार-बाजरा मक्का में अच्छा मन्दा, बढ़े भाव तेज वस्तुएँ बेचना। ता० १ कृष्णा ११ का क्षय मन्दीकारक है; किन्तु आज ही शनि-दृष्ट गुरु मार्गी, ता. १६ को प्लूटो वक्री, ता० १७ को गुरु-दृष्ट मार्गी से बादल वर्षा होते ही अच्छा मन्दा हो; किन्तु ओलापात या पाला पड़ेगा तो तेजी भी आ सकेगी अथवा ता० दिसम्बर ७६ से चली लाइन बदल भी सकेगी; चाँदी सोना सर्व धातु में भी तूफानी चाल निकलेगी। कृष्णा १२।१ बादल बिजली गर्जन हो तो उत्पत्ति की महान् श्रेष्ठता के कारण तिलहन-दलहन के साथ किराना में भी भयानक आ सकेगी। ता० ११।१२ को वस्तुओं की चली लाइन ता० १७ की शाम से एकदम बदलेगी।

गुजराती माघी मास में ५ गुरुवार शुभ है, प्रजा सुखी हो। शुक्ला १ को वायुवेग या वर्षा हो तो घी तेल गुड़ खाँड़ होंगे, रूई रेशम पाट कागज सूत कपड़ा नारियल श्वेत वस्तुएँ तेज, शुक्ला २।३ शुक्र-शनिवारी से तिलहन-दलहन प्रजा-विग्रह तो कहीं युद्धादि-काण्ड होंगे। शुक्ला ७ से चतुर्दशी पर्यन्त उ० प्र०, पंजाब, राजस्थान, म० प्र० में अन्यत्र जहाँभी बादल वर्षा होगी, उस क्षेत्र में आगे वर्षाकाल भी निश्चित रूप से श्रेष्ठ रहेगा, परीक्षित योग हैं। २६ को भौमोदय (गुरु से दृष्ट) बादल-वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि, चावल गुड़ खाँड़ में अच्छी तेजी, अमेरिका के वि क्षेत्रों में भी घोर वर्षा, व्यापारिक वस्तुओं में भयानक चाल (टर्निङ्ग प्वाइण्ट) से व्यापारी हैरान होंगे। आज ही रात भौम-दृष्ट मीन के शुक्र से गुड़ खाँड़ सोना-चाँदी सर्व धातु तेज, रूई रेशम पाट ऊन सूत कपड़ा कागज में मन्दी भी सकेगी। ता० २७ की रात को उ. षा. के भौम से सभी वस्तुयें तेज, शुक्ला ११।१२ की वृद्धि से सभी वस्तुओं में अ मन्दा होगा।

फरवरी मास—ता. १ फरवरी को भौम अतिचारी गति से मकर में आकर सूर्य से योग शनि से प्रतियोग क बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि, तिलहन तेल घी सोना चाँदी ताँबा लाख चपड़ा सुपारी कत्था दालचीनी तेज, गुआर (बटाला) तुअर चना गेहूँ धान्यादि मन्दा करेगा, रूई के साथ की वस्तुयें विशेष मन्दी हो सकेंगी। शुक्ला पूर्णिमा को नक्षत्र आगे तेजीकारक है।

फाल्गुन मास—कृष्णा ३ के क्षय से मन्दा, ता० ६ को बुध मकरस्थ होगा; सूर्य+अतिचारी मंगल+बुध यो सभी वस्तुओं में इकतरफा भयानक चाल, सोना चाँदी सर्व धातु में तेजी तो तिलहन दलहन गुड़ खाँड़ में वि चाल होगी। ता० ७ को मंगल-राहु का अंशात्मक केन्द्र सभी वस्तुओं को तेज करेगा। ता. ९ कृष्णा ६ को चित्रा न आगे मन्दी लायेगा, जो १५ दिन या ३ मास तक या तीसरे मास में घोर मन्दा करेगा। कृष्णा ८ शुक्रवारी उड़द मोठ बाजरा में तेजी लावेगी। ता० १२ को रवि कुम्भ में आते ही शनि से प्रतियोग करके अतिचारी मंगल+बुध यो तिलहन-दलहन मसूर में तेजी [illegible] करेगा। सोना चाँदी सर्व धातु गुड़ खाँड़ में कोई चाल जोर से निकलेगी। ता० १३ को हर्षल वक्री सभी वस्तुओं में जबर्दस्त चाल देगा। ता० १४ को सभी वस्तुयें मन्दी, हर्ष

वक्रत्व से चाँदी में तूफानी चाल, अन्य सब वस्तुयें भी प्रभावित होंगी। शिव चतुर्दशी से प्रायः प्रतिवर्ष इकतरफा चाल निकलती है; बाजार-रुख देखकर व्यापार करें। कृष्णा ३० शुक्रवारी सुभिक्षकारी होती है।

गुजराती फाल्गुन मास में शुक्ला १ को शतभिषा नक्षत्र सुभिक्षकारी है। ता० २२ फरवरी को सायं वृष के गुरु से बादल वर्षा वायु-वेग, ८ जुलाई ७६ से विपरीत चाल देगा। रूई पाट तेज, चाँदी में मन्दी की आशा है। ता० २४ को वक्री शनि का वक्री हर्षल से अंशात्मक महाकेन्द्र योग के कारण प्रजा-विग्रह अथवा युद्धादि-काण्ड, महोत्पात, नेताओं का पतन अवसान यान-दुर्घटना, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड म्युनिसिपल बोर्ड पर संकट, सैन्ट्रल एवं प्रान्तीय क्लर्क्स के वेतन में साम्यता सम्भव है। यह योग सन् १९३०।३१।४४।५१।५२ (अभी ५ अक्टूबर ७५ तथा २ जुलाई ७६) के पश्चात् यहाँ भी बनेगा। इसी योग से ६ फरवरी ५२ को ब्रिटेन-नरेश की मृत्यु होते ही २३ दिन में विश्व पर आर्थिक संकट आकर, योग बनने के २ मास पूर्व से ही भयानकतम मन्दा ला चुका है, व्यापार-जगत में इतनी थोड़ी अवधि में इतनी बड़ी मन्दी पहली ही बार आयी थी। अतः बहुत सोच-समझ कर व्यापार करना उचित है। ता० २५ को भौम-शनि की प्रतियुति तथा भौम-हर्षल का अंशात्मक केन्द्र-योग सारे विश्व में खलबली, भूकम्पादि भय से जनता में त्राहि-त्राहि करानेवाला महान् दुष्ट योग है। शुक्ला ८ रोहिणी संयोगी आगे दूसरे-तीसरे मास में अच्छी तेजी लानेवाला परीक्षित योग है। रोहिणी नक्षत्र वाले दिन वैधृत योग रूई रेशम पाट बोरी कालीमिर्च ऊन कागज में खतरनाक मन्दी लानेवाला सुपरीक्षित योग है। ता० २६ को सायं कुंभ के बुध होकर सूर्य+बुध योग से मसूर मटर (बटाला) दलहन मन्दे होंगे। ता० २८ को पूर्व में बुधास्त बादल वर्षा वायुवेग सभी वस्तुओं में भीषण मन्दी लावे तो आश्चर्य नहीं। यहीं पर प्रति वर्ष राजकीय बजट आता है जो सभी मार्केट्स को प्रभावित करता है।

मार्च मास—३ मार्च को धनिष्ठा के अतिचारी भौम से गुड़ खाँड़ के साथ सभी अन्य खाद्य वस्तुएँ मन्दी होंगी। ता० ४ को मकरांशे गुरु-बुध घं. २।३७ बजे से ता० ६ तक बादल-चाल तो कहीं बूँदाबाँदी भी होगी। ता० ५ को शनिवार की रात्रि में पू. फा. नक्षत्र में होलिका-दहन होगा। वार-फल नेष्ट, नक्षत्र-फल श्रेष्ठ है। होली जलते समय उपस्थित सज्जन परीक्षा करके देखें। यदि उ० प्र० पंजाब राजस्थान म० प्र० में इस समय बादल वर्षा हो तो आगे तिलहन दलहन अन्नादि विशेष तेज, किन्तु जहाँ केवल पूर्व-उत्तर-पश्चिम की वायु चलेगी, वहाँ आगे भी उपज श्रेष्ठ, अन्य दिशाओं की वायु नेष्ट फल करेगी। साथ ही जहाँ वायु शान्त होकर अग्नि की लपट सीधी जायगी, वहाँ प्रजा-विग्रहादि से नर-संहार महोत्पात भी अवश्य होंगे, सुपरीक्षित योग है।

नोट—फाल्गुन मास में जब-कभी अधिक मन्दा आता है तो चैत्र मास में तेजी का दौर चला करता है।

चैत्र मास—में ५ रविवार से प्रजा को कष्ट और आगे वर्षाकाल में वर्षा की सर्वत्र कमी की सूचना मिलती है। वृषस्थ गुरु के प्रभाव से चैत्र मास में देशी घी तेल, तेल के बीज तेज रहते हैं। ८ मार्च को बादल-चाल, ता० ९ को मेष के शुक्र होते ही केतु+शुक्र योग (भौम शनि से संदृष्ट) से उपज की श्रेष्ठता पर सभी वस्तुयें मन्दी अन्यथा तेज होंगी। सोना चाँदी सर्वधातु तेज, रूई रेशम पाट बोरी कागज कालीमिर्च में मन्दी होगी। कृष्णा ७ शुक्रवारी के क्षय से सभी वस्तुयें मन्दी, यदि उपर्युक्त क्षेत्रों में घटाटोप बादल होंगे तो लाल वस्तुयें गेहूँ गुड़ खाँड़ मसूर लाल रंग तिल तेल मूँगफली लालमिर्च ताँबा मन्दे होंगे। यहाँ उपर्युक्त क्षेत्रों में ता० १०।११ को बादल-चाल अवश्य ही दिखाई देगा। ता० १२ को शीघ्री भौम के कुम्भ में आते ही सूर्य+बुध+भौम योग से बादल वर्षा वायुवेग सोना चाँदी सर्वधातु से खाद्य वस्तुओं में विपरीत चाल बड़े ही जोर-शोर से निकलेगी। अतः बाजार की चाल देखकर सावधानी से व्यापार करें। ता० १४ को मीन के रवि, ता० १५ को मीन के बुध होनेपर सूर्य+बुध योग तिलहन-दलहन रूई पाट रेशम सूत कपड़ा कालीमिर्च क्लाथ शेयर्स में अच्छा मन्दा पेश करेगा। ता० १६ को शनि-दृष्ट वक्री शुक्र से बादल वर्षा वायु-वेग प्रायः सभी वस्तुओं में तेजी का उछाला लायेगा। सोना चाँदी सर्वधातु में भी तेजी की ही आशा है। ता० १६ को नेपच्यून वक्री भी समर्थक है। कृष्णा ३० शनिवारी आगे विशेष तेजी का ही संकेत करती है।

विक्रम संवत् २०३४ का शुभारंभ (चैत्र शुक्ला १) रविवार को होने से वर्षेश रवि है; अतः वायु-प्रकोप, चाँदी ३ दिन में तेज, हल्दी लालरंग घी गुड़ बाजरा तेल तेज, आश्विन तक चना विशेष तेज, अन्नादि वैशाख शुक्ल में खरीद कर श्रावण भाद्रपद में बेचने से इस वर्ष में विशेष लाभ होगा। शुक्लपक्ष में इस वर्ष भी वर्षा के योग हैं। ता० २० मार्च को शतभिषा के भौम से सोना गुड़ खाँड़ तेज, फसल की सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। शुक्ला ४ की वृद्धि से उड़द मूँग मोठ लोबिया गत वर्ष की भाँति तेज, अन्य सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० २३ को वक्री शुक्र के मीन में आने से गुरु शुक्र का राशि-परिवर्तन २७ जनवरी से विपरीत चाल देगा अथवा तेजी भी ला सकेगा। ता० २९ को ता० २६ से चली लाइन बदलेगी, पश्चिमोदयी बुध मीनांशे बुध-शुक्र रामनवमी से बादल-वर्षा, वायुवेग, बाजार के चलते रुख में भयानक परिवर्तन करेगा।

ता. ३०को सायं ३॥ बजे शीघ्री बुध के मेष में आते ही शनि-दृष्ट केतु+बुध योग, साथ ही मीन का सूर्य+शुक्र योग वायुप्रकोप करके तेजी करेगा। ता. ३ अप्रैल को रात घं. ६ मि. १२ बजे से सायन मिथुन का गुरु सभी वस्तुओं में भयानक चाल देगा।

अप्रैल मास--ता० ४ चैत्री पूर्णिमा को मीन राशि में वक्री हुआ शुक्र (धूलिद्वार-तीसरे मण्डल-देवगण-अजवीथी दक्षिण मार्ग) पश्चिम में अस्त (बुधोदय के पश्चात् शुक्रास्त) वर्षा-नाशक है। मालवा गुजरात कर्नाटक पर संकट, छः मास तक प्रति मास असामयिक विचित्र वर्षा, लोकसभा में खलबली, नेताओं का पतन या अवसान, सोना चाँदी सर्वधातु में घोर तेजी, रूई पाट रेशम कालीमिर्च कागज तिलहन दलहन चावल घी गुड़ खाँड़ में तूफानी चाल से तुमूहल होकर ता० ८ से चाल बदलेगी। चैत्री पूर्णिमा को कुम्भांशे शुक्र-गुरु से कहीं-कहीं वर्षा और तेजी जोर से हो सकेगी।

वैशाख मास--कृष्णा २ का क्षय मन्दीकारकहै। कृष्णा ३ को विशाखा नक्षत्र गत वर्ष की भाँति ग्रीष्मकाल में ही उपज की सभी वस्तुओं में लाभ दिखा देगा। ता० ६ को पू.भा. का भौम सभी वस्तुओं में सायं ४ बजे से तेजी लावेगा। ८ अप्रैल को सायं ६ बजे पूर्वोदयी शुक्र (राक्षसगण-मृगवीथी-राजद्वार-हेमद्वार, ५वाँ मण्डल) से पचरंगी कपड़ा छींट धोती खोपरा तेज, नेताओं का पतन या अवसान, गुजरात में दुर्भिक्ष, चीन व सिन्ध में विग्रह अथवा उत्पात हो। ता० ११ को शनि मार्गी होने से बादल वर्षा वायुवेग, गत वर्ष सोना चाँदी सर्वधातु मन्दे, तिलहन दलहन आलू लालमिर्च चावल में तेजी लाया था। कृष्णा ६।११ को उ० प्र० पंजाब राजस्थान म० प्र० में शिखरदार या घटाटोप बादल होंगे तो सभी खाद्य वस्तुओं में तुरन्त ही अच्छा मन्दा होगा। ता० १३ की रात को बुधवार में श्रीसूर्यदेव गत संक्रान्ति से वारात् ३ नक्षत्रात् ४ माहेन्द्रमण्डल में(३० मुहूर्ता) केतु-बुध से युक्त, शनि से संदृष्ट तथा गुरु-शुक्र के शुभ मध्यत्व को प्राप्त करके मेष राशिस्थ होंगे। साथ ही गुरु-शुक्र का राशि-परिवर्तन २२ फरवरी के पश्चात् पुनः बनेगा। संक्रान्ति-फल से तिलहन दलहन में तेजी का उछाला, गुड़ खाँड़ में अच्छा मन्दा भी चल सकेगा, बाजार की चाल पर कार्य करें। कृष्णा १३ शनिवारी से रोगोपद्रव, गुड़ खाँड़ नमक पान लालरंग लाल चन्दन सुपारी लालमिर्च तेज होंगी। कृष्णा ३० सोमवारी सभी वस्तुओं में तुरन्त ही मन्दा लाती है। ता० १८ को सोमवार को अश्विनी नक्षत्र (मेष राशि)में सार्वभौमिक दृष्ट्या कंकणाकृति सूर्य-ग्रहण होगा; किंतु यह ग्रहण संपूर्ण भारत में नहीं लगेगा। भारत तथा उसके पड़ोसी देशों के कितने भू-भाग में यह ग्रहण लगेगा, और कितने में नहीं, तथा कितने भाग में यह ग्रस्तास्त होगा और कितने में स्पर्श से मोक्षपर्यन्त दिखाई देगा, यह सब विवरण ग्रहण सम्बन्धी लेख में दिया गया है, वहीं देखिए। यह सूर्य-ग्रहण भारतीय उपमहाद्वीप के जितने भूभाग में दृष्ट होगा, उसमें सब जगह न्यूनाधिक रूप में इसका खण्डग्रास ही दृष्टि गोचर होगा, संपूर्ण कंकणाकृति कहीं से नहीं दिखाई देगी। ग्रहण जहाँ प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है, उन्हीं जगहों में न्यूनाधिक ग्रासमान के अनुरूप ही उसका फल घटित होता है। मास-फल से रूई सूत कपड़ा तिल तैल घी मूंग उड़द तेज तथा अन्नादि मंदे हों। वार-फल से तिलहन दलहन अन्नादि तेज होंगे, अतः मंदी में संग्रह करना चाहिए। कलकत्ता मद्रास की ओर ग्रहण ग्रस्तास्त होने से उधर के नेता और प्रजा को अनेकः कष्ट होंगे। शनि से संदृष्ट ग्रहण आगे वर्षा-नाशक होगा। काला धान्य बाजरा उड़द कुलथी लोहा तेज, १२वें मास में पुनः ग्रहण जगत को भयकारी होगा। कृष्णा ८ को जो-जो निमित्त अर्थात् बादल वर्षा वायु-वेग होंगे, वे ही ग्रहण-काल में भी दिखाई देंगे।

गुजराती वैशाख मास में शुक्ला १ से ज्येष्ठी अमावस तक ५ मंगलवार होने से अग्नि एवं वायु-प्रकोप, घी-बाजार तेज होगा। ता० १६ अप्रैल को शीघ्री भौम के मीनस्थ होते ही शुक्र+भौम योग से चाँदी मन्दी होकर तेज, फसल की वस्तुओं में मन्दा होगा। ता०२०को वक्री बुध से बादल वर्षा वायुवेग सभी वस्तुओं में जबर्दस्त चाल, ता० २१ को शीघ्री गुरु रोहिणी में आकर रूई सूत वस्त्र पाट गुड़ खाँड़ चाँदी सोना में मन्दा करेगा। रात को पश्चिमास्त बुध से बादल वर्षा वायुवेग, सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी होंगी, शुक्ल २ बुधवारी, शुक्ला ६ रविवारी, शुक्ला १० गुरुवारी से घी तेल-तिलहन दलहन मन्दे, शुक्ला ३ गुरुवारी कृत्तिका संयोगी आगे वर्षा की कमी से उपज को कम कर देगी। शुक्ला ५ शनिवारी से किराना एकदम तेज, ता० २३ की रात को उ. भा. के शीघ्री भौम से सोना सुगन्धि द्रव्य गुड़ खाँड़ खली घी चावल तेज, शुक्ला ६ की वृद्धि से आज सभी वस्तुयें मन्दी, शुक्ला ८ मंगलवारी आगे फसल की वस्तुओं अन्नादि में भयानक तेजी लायेगी, **परीक्षित** योग है। ता० २७ को शुक्र मार्गी हो जाने से बादल वर्षा वायुवेग, सभी वस्तुओं में तुरन्त तूफानी मन्दी लायेगा। ता. २८ को आश्लेषा में शनि २६ अगस्त ७६ के पश्चात् पुनः आया है, वहाँ से चली लाइन यहाँ बदले अथवा उड़द तिल तेल के बीज रूई पाट रेशम कालीमिर्च कागज दलहन के साथ सभी वस्तुओं में अच्छा मन्दा, चाँदी भी विशेष मन्दी, सोना ४ मास में अथवा चौथे मास में विशेष तेज हो सकेगा। गत वर्ष शुक्ला १० रविवारी के फलस्वरूप ४ मास में चाँदी विशेष तेज होने का संकेत मिला था। ता. ३० की रात को कन्या में राहु, मीन में केतु आयेंगे। डेढ़ वर्ष में गुड़ खाँड़ अलसी एरण्डा सींगदाना तिल सरसों तिलहन विशेष मन्दे, सुगन्धि द्रव्य दो मास में तेज, रूई रेशम सूत कपड़ा कालीमिर्च कागज विशेष तेज होंगे। वृष राशि में शीघ्री गुरु भी समर्थक है। शुक्ला १२ के क्षय से आज सभी वस्तुयें तेज होंगी।

मई मास--१ मई को शुक्ला १३ रविवारी गुड़ खाँड़ लालमिर्च को तेज करेगी। वैशाखी पूर्णिमा को स्वाती नक्षत्र आगे तेजी करेगा। किसी पञ्चाङ्ग में ४ मई को कन्यायां राहु, मीने केतु प्रकाशित है; फल ३० अप्रैल के अनुसार होगा। ज्येष्ठ मास में ५ बुधवार से रोगोपद्रव, शेयर्स चाँदी में अन्य वस्तुओं के साथ अच्छी तेजी हो सकेगी। ता० ९ मई को पूर्वोदयी बुध से आँधी, तूफानादि का प्रकोप, कहीं बादल वर्षा भी सम्भव है, वस्तुओं के भावों में खलबली या तेजी हो; यहाँ से चली लाइन ता. १२ को बदलेगी। ता.११ को कृत्तिका के रवि से ता.२४ मई तक उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र०में बादल-चाल बूँदा-बाँदी होना श्रेष्ठ है। आज ही रेवती के भौम से ग्रीष्म-प्रकोप, किराना तेज होगा। यह रूई पाट रेशम के साथ अन्य वस्तुओं में तेजो तो कभी मन्दी भी लाता है। ता. १३ को मीनस्थ शुक्र+भौम+चन्द्र-योग कल तक सभी खाद्य वस्तुयें, अन्न तेज करेगा। शाम को शनि-दृष्ट मार्गी बुध से बादल वर्षा वायुवेग, वस्तुओं के भावों में खलबली अथवा मन्दी हो। ता. १४ को सायं वृष का रवि होते ही गुरु+सूर्य योग(शनिवारी वृष-संक्रान्ति)से १० दिन में वर्षा-योग उपर्युक्त क्षेत्रों में चलेगा। तेल के बीज मन्दे, तुअर चना सोना गुड़ खाँड़ लालमिर्च विशेष तेज, रूई पाट रेशम में भी तेजी होगी। ता० १६।१७ को मेष के बुध+चन्द्र योग से वर्षा, चाँदी में तेजी सम्भव है। अमावस की वृद्धि से खाद्य वस्तुओं में तेजी, रूई पाट रेशम कालीमिर्च चाँदी में आज मन्दी होगी। मंगलवारी अमावस अग्निकाण्ड, आगे ५।६ मास में सभी अन्न खाद्य वस्तुएँ चावल में विशेष तेजी भी करेगी, परीक्षित योग है। १ मास में तेल के बीज विशेष तेज होंगे।

गुजराती ज्येष्ठ मास के शुक्ला १ में गुरुवारा ४५ मुहूर्ता चन्द्रोदय सभी वस्तुओं में तुरन्त मन्दा, शुक्लपक्ष में ३ बुधवार का समावेश सभी वस्तुओं में अच्छी तेजीकारक है; प्रतिपदा बुधवार संयोगी आलु प्याज लहसुन अदरख सोंठ हल्दी तिलहन दलहन में ३ मास तक अच्छी तेजी लानेवाला परीक्षित योग है। ता.२४ मई की रात को गुरुपश्चिमास्त से बादल-वर्षा वायुवेग, संवत् २०२२ की भाँति भयानक तेजी, गुड़ खाँड़ कालीमिर्च कागज रूई पाट सूत रेशम में तेजी, सोना चाँदी सर्वधातु में मन्दा भी सम्भव है। ता० २५ से रोहिणी का रवि ७ जून तक उ० प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र०में सूर्य जितना तपेगा, तदनुरूप आगे श्रेष्ठ वर्षा होगी; यहाँ से १३ दिन में जहाँ भी वर्षा होगी, वहाँ वर्षाकाल नेष्ट रहेगा। शुक्ला १० शनिवारी आगे वर्षा-नाशक कुयोग है। ता. २८ को सायं शीघ्री मेषे भौम, ता. २९ की रात में मेषे शुक्र होकर शनि-दृष्ट बुध+भौम+शुक्र योग, साथ ही शनि-भौम के पारस्परिक दृष्टियुक्त केन्द्र-योग के कारण सोना चाँदी सर्वधातु के साथ सभी वस्तुओं में टर्निङ्ग-प्वाइण्ट से तूफानी चाल निकलेगी। शुक्ला १४ के क्षय से सभी वस्तुयें तेज, रूई पाट रेशम चाँदी में मन्दा सम्भव है।

जून मास--१ जून को ज्येष्ठी पूर्णिमा में अनुराधा नक्षत्र आगे वर्षा की कमी करेगा, किन्तु दक्षिण-पूर्वीय हिन्द में मानसून आने का भी यही समय है।

आषाढ़ मास--कृष्णा १ गुरुवारी से उड़द तिल तेज, ६ जून की रात को वृष के बुध होने पर गुरु+सूर्य+बुध-योग से दक्षिण-पूर्वीय हिन्द में वर्षा प्रारम्भ हो जाने से इधर भी मन्दा, अन्यथा तेजी होगी। यहीं से मेष राशि में शनि-दृष्ट मंगल + शुक्र योग से सोना चाँदी सर्वधातु के साथ तिलहन-दलहन भी मन्दे हो सकेंगे। कृष्णा ७ के पश्चात् अष्टमी बुधवारी (वौहरा अष्टमी) से मन्दा हो। आज उ० प्र० पंजाब राजस्थान मध्य प्रदेश में जहाँ भी सूर्य-चन्द्र बादलों में ही रहें अथवा बादलों से निकलें तो उस क्षेत्र में वर्षाकाल श्रेष्ठ रहेगा, परीक्षित है। ता० १४ की रात को अग्नि-मण्डल में मिथुन का रवि होते ही शीघ्री गुरु + बुध योग से दक्षिणी पूर्वीय हिन्द में घोर वर्षा सम्भव है। मिथुनस्थ रवि-काल में कन्या के राहु से खेती का नाश, सोना-चाँदी सर्वधातु रूई पाट रेशम कालीमिर्च कागज सूत कपड़ा हल्दी घी आलू प्याज लहसुन दाल एवं अन्नादि में तेजी तो तिलहन में मन्दी भी आ सकेगी। ता० १५ को शीघ्री भौम भरणी में आकर तिलहन दलहन गुड़ खाँड़ में तेजी ला सकेगा। कृष्णा १४ रोहिणी संयोगी से जनता को कष्टकारी ; किन्तु गुरुवारी अमावस मृगशिरा संयोगी सुभिक्षकारी है।

गुजराती आषाढ़ मास--१८ जून को उच्चांश में पूर्वोदयी गुरु से बादल वर्षा वायुवेग, सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, चावल तेज, चाँदी रूई पाट रेशम कालीमिर्च सूत कपड़ा सोना हल्दी में मन्दी सम्भव है अथवा २५ मई से चली लाइन यहाँ बदलेगी। यहाँ से मंगल के साथ शनि भी शीघ्री गति पर आकर ६० दिन तक मन्दी की चाल देंगे। ता० १८ को मृगे गुरु से सोना चाँदी सर्वधातु में अच्छा मन्दा, साथ ही रूई पाट रेशम कालीमिर्च सूत कपड़ा मन्दे होंगे। ता० १९ को पूर्वं में बुधास्त से बादल वर्षा वायुवेग, रूई के साथ की वस्तुओं में उछाला, सोना चाँदी सर्वधातु में मन्दा सम्भव है; बढ़े भाव बेचना। शुक्ला ४ की वृद्धि से देशी घी मूँग उड़द मोठ लोबिया मन्दे हों। ता० २१ को प्लूटो मार्गी होकर वस्तुओं की चलती लाइन को एकदम [illegible] आर्द्रायां रवि का वार, नक्षत्र-फल नेष्ट, रात को लगने से उत्तम, कुम्भ लग्न में केन्द्रस्थ चन्द्र-गुरु सामान्य शुभ हैं। ता० २३ को मिथुन के बुध

होने पर सूर्य + बुध योग से सोना चाँदी सर्वधातु के साथ दलहन भी मन्दे होंगे । गुरु का रश्यन्त सभी वस्तुओं में आगे घोर तेजी ला सकेगा । चलते रुख का व्यापार करें । शुक्ला ९ शनिवारी दुर्भिक्षकारी है । यदि आज उ० प्र० पंजाब राजस्थान म० प्र० में बादल वर्षा हो, सूर्य चन्द्र बादलों में ही रहें या बादलों से निकले तो वहाँ आगे भी वर्षा श्रेष्ठ होगी, किन्तु जहाँ भी खुला रहे तो वहाँ वर्षा की कमी से आगे घोर तेजी होगी, परीक्षित है । यहीं शनि-भौम के अंशात्मक केन्द्र-योग से महोत्पात होंगे; गुड़ खाँड़ के साथ अन्य वस्तुयें भी तेज होंगी । शुक्ला ११ (देवशयनी) सोमवारी महा श्रेष्ठ है । उपर्युक्त क्षेत्रों में यदि वर्षा होगी तो १२।१३ दिन में अच्छा मन्दा भी हो सकेगा । ता० ३० को सायं वृष का शुक्र होकर शीघ्री गुरु+शुक्र योग से ग्रीष्म का भीषण प्रकोप तो ८ दिन में कहीं बादल वर्षा, युद्धादि-काण्ड, सभी खाद्य वस्तुओं में मन्दी का झटका आकर तेजी, रूई पाट रेशम सूत कपड़ा कालीमिर्च कागज में अच्छी तेजी, गुड़ खाँड़ मन्दे, सोना चाँदी सर्वधातु में भी कोई जबर्दस्त चाल निकलेगी । आज ही सूर्यास्त पर आषाढ़ी पूर्णिमा आ जाने से ज्योतिषी, चतुर व्यापारी, अनुभवी किसान वायु-परीक्षण करेंगे । बादल सहित पूर्व, पूर्वोत्तर कोण, उत्तर पश्चिम की वायु जहाँ चलेगी, वहाँ आगे वर्षाकाल श्रेष्ठ, अन्य दिशा की वायु चले या खुला रहे तो वहाँ निश्चित रूप से वर्षा की कमी होगी । वायु का घुमाव पूर्व-दक्षिण-पश्चिमोत्तर का, सव्य गति से, श्रेष्ठ; विपरीत घुमाव नेष्ट, वर्षानाशक; किन्तु बम्बई की ओर दक्षिण-पूर्व एवं दक्षिण-पश्चिम कोण की वायु से; कलकत्ता की ओर दक्षिण-पूर्व कोण की तथा मद्रास की ओर पश्चिमी वायु चलने से वहाँ आगे वर्षा-काल श्रेष्ठ रहेगा । सूर्य-चन्द्र निर्मल रहना सर्वत्र नेष्ट, बूँदाबाँदी सर्वत्र श्रेष्ठ ; किन्तु जहाँ आज घोर वर्षा होगी, वहाँ आगे एक मास में घोर तेजी होगी । यह पूर्णिमा गुरुवारी होना तो उत्तम है ; किन्तु त्रिपाद मूल नक्षत्र भूकम्प लाकर कहीं अन्नादि की कमी से त्राहि-त्राहि करायेगा ।

जुलाई एवं शुद्ध श्रावण कृष्णपक्ष--बरगदकी जटाओं में अँकुर बहुत निकलें; नीममें निमोली बहुत आवें, पके फूलें, ढेरों टपकें, वहाँ वर्षा कालश्रेष्ठ, सूखी लटकी रहें तो वहाँ वर्षा का नाश होगा । १जुलाई को कृष्णा १ का क्षय मन्दीकारक है । इस मास में उ० प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में जहाँ भी पश्चिम एवं पश्चिमोत्तर की वायु जितनी जोर से चलेगी, उतनी ही जोर से वर्षा भी होगी; किन्तु दक्षिणी वायु चलते ही वर्षा ऐसे बन्द हो जाती है कि जैसे आती हुई ट्रेन को लाल झण्डी दिखा दी गई हो । ता० ४ को शीघ्री भौम के कृत्तिका में आने से प्रायः सभी वस्तुयें तेज; कृष्णा ५ को वायुवेग हो तो घोर तेजी, यहाँ से पञ्चक के ५ नक्षत्रों में उपर्युक्त क्षेत्रों में जहाँ भी वर्षा होगी, वहाँ उपज श्रेष्ठ अन्यथा कमी होगी । ता० ७ को १२ बजे शीघ्री बुध के कर्क में आने पर शी० शनि+बुध योग से शेयर्स तिलहन-दलहन में अच्छी तेजी हो, ता०८ को सायं शीघ्री भौम के वृष में आने पर शी० गुरु + शी० भौम+शुक्र योग से बादल वर्षा हो तो गुड़ खाँड़ में भयानक मन्दा भी सम्भव है ; व्यापार की सभी वस्तुओं में मन्दी का धमाका आ सकेगा । कृष्णा ९ शनिवारी नेष्ट, आश्विनान्त में दुष्परिणाम प्रत्यक्ष होगा । कृष्णा ११ को कृत्तिका से तेजी, घनघोर गर्जना हो तो भयानक तेजी होगी । आज ही रात को पश्चिमोदयी बुध बादल वर्षा वायुवेग, ता० ९ को चली लाइन में एकदम परिवर्तन अथवा घोर तेजी कर देगा । कृष्णा १२ की वृद्धि समर्थक है । ता० १४ को हर्शल मार्गी जबर्दस्त चाल देगा । कृष्णा ३० शनिवारी को श्रीसूर्यदेव वारात् ५ नक्षत्रात् ५ (४५ मुहूर्ता) वायु-मण्डल के नक्षत्र में शनि बुध से युक्त होकर कर्क राशिस्थ होंगे । फलतः सभी वस्तुओं में वायुवेग होते ही गुड़ खाँड़ तिलहन दलहन चना चावल में दोतर्फा चाल होकर जोरदार तेजी होगी । सोना चाँदी सर्वधातु रूई पाट रेशम कालीमिर्च सूत कपड़ा में मन्दी की आशा है ; चलती लाइन का उपयोग करें । ता० १४ से हर्शल मार्गी हो जायेगा; अतः वायदे की वस्तुओं पर गली अवश्य ही लगायें ।

अधिक श्रावण शुक्लपक्ष (गुजराती श्रावण मलमास)–शुक्ला १ से द्वितीय श्रावण कृष्ण अमावस तक ५ रविवार सभी खाद्य वस्तुओं में तेजीकारक है, जबकि श्रावण मास का लोंद सभी खाद्य वस्तुओं में घोर तेजी लाता है । ता० १८ जुलाई को मिथुन का गुरु होते ही वृष राशि में शुक्र+शी० भौम वर्षानाशक है; अन्न तेज, तिलहन मन्दे हों; वर्षा हो तो सभी खाद्य वस्तुओं में मन्दी भी सम्भव है, एक वर्ष में रूई पाट रेशम सूत कपड़ा कागज कालीमिर्च गुड़ खाँड़ तिलहन दलहन मन्दे, सोना चाँदी कपड़ा घी तेल ५ मास तक तेज होंगे । ता. २२ की रात को शीघ्री भौम के रोहिणी में आने से चना दाल-अन्नादि में मन्दी सम्भव है, अन्य सभी वस्तुयें तेज होंगी । ता. २४ को सिंह के बुध होते ही कर्क राशि में शीघ्री शनि + सूर्य से चाँदी ताँबा पीतल शेयर्स मन्दे, रूई रेशम पाट कालीमिर्च गुड़ खाँड़ सोना खट्टे पदार्थ नींबू इमली अमचूर तिलहन तेज, ता० २६ को पश्चिम में शन्यस्त से बादल वर्षा सम्भव, रूई तेज, चाँदी पीतल ताँबा जस्ता मन्दे हों । आज ही शुक्ला ११ का क्षय (कृष्णा १२ की वृद्धि) सभी खाद्य वस्तुओं को तेज करेगा । ता० २८ को मिथुन का शुक्र होनेपर गुरु + शुक्र योग से कहीं घोर गर्मी, कहीं घोर वर्षा तो कहीं भूकम्प, युद्धादि-काण्ड रूई रेशम पाट सूत कपड़ा कालीमिर्च कागज गुड़ खाँड़ में अच्छा मन्दा, सोना चाँदी सर्वधातु तिलहन दलहन में चलते रुख का व्यापार करें ।

अगस्त एवं अधिक श्रावण कृष्णपक्ष--में ५ रविवार से घोर गर्मी और तेजी हो। अगस्त मास में २ अगस्त की रात को सार्पं रवि में श्रेष्ठ वर्षा मन्दी का कारण होती है। ता० ३ को सभी वस्तुयें मन्दी, ता० ११ को शीघ्री भौम के मृगस्थ होने से तिलहन दलहन गुड़ खाँड़ सोना चाँदी सर्वधातु तेज हो। कृष्णा ३० रविवारी आगे तेजीकारक है। मन्दी का रियक्शन पहले आकर सभी वस्तुयें तेज होंगी।

शुद्ध श्रावण शुक्लपक्ष--१९ अगस्त को श्रीसूर्यदेव गत संक्रान्ति से वारात् ४ नक्षत्रात् ५ (३० मुहूर्ता) अग्नि-मण्डल के नक्षत्र में सायंकाल बुध से युक्त होकर सिंह राशिस्थ होंगे। आज उ०प्र० पंजाब राजस्थान मध्यप्रदेश में वर्षा होना इष्ट है; शुक्ला ५।६।७ को जहाँ वर्षा हो, वहाँ आगे वर्षाकाल भी श्रेष्ठ रहेगा। संक्रान्ति-फल से घोर सूखा और तेजी के चमत्कार से जन-जीवन संत्रस्त होगा। ता० २१ की रात को मिथुन का भौम होते ही गुरु + भौम योग बनेगा जो वर्षाकाल में वर्षानाशक तो कभी जल-प्रलयकारी होता है। वर्षा हो जाय तो मन्दी, गुड़ खाँड़ के साथ सभी वस्तुओं में तूफानी चाल निकलेगी। ता० २४ को सायं सायन कर्क का गुरु सभी वस्तुओं में तेजी लाये तो आश्चर्य नहीं। शुक्ला ७ (तुलसी-जयन्ती) को सूर्य चन्द्र बादलों से निकलें तो उस क्षेत्र में आगामी वर्षाकाल भी श्रेष्ठ रहेगा। ता०२३ को नेप्च्यून मार्गी, बुध वक्री से बादल वर्षा वायु-वेग सोना चाँदी ताँबा जस्ता पीतल तिलहन दलहन तेज होगा। आजही कर्के शुक्र होकर शीघ्री शनि + शुक्र योगसे तिलहन-दलहन शेयर्स के साथ अन्य वस्तुओं में भी घोर तेजी होगी। ता० २२ को आर्द्रा के गुरु से गेहूँ चना सरसों अलसी गुड़ खाँड़ सोना चाँदी सर्वधातु नारियल सुगन्धित द्रव्य तेज, देशी घी चावल रूई पाट रेशम कालीमिर्च मन्दे होंगे। शुक्ला १३ के क्षय से देशी घी अन्नादि तेज, सोना चाँदी सर्वधातु तेल के बीजों में विशेष चाल निकलेगी। ता० २७ को चली व्यापारिक वस्तुओं की लाइन ता० ३१ को बदलेगी। श्रावणी पूर्णिमा को धनिष्ठा नक्षत्र उपज को इस वर्ष ५०% प्रतिशत ही कर देगा। आज उपर्युक्त क्षेत्रों में जहाँ भी आकाश बादलों से ढँका रहे, बूंदा-बाँदी हो, वहाँ उपज श्रेष्ठ होगी।

भाद्रपद मास--ता० २९ अगस्त को अगस्त्योदय, बुधास्त पश्चिम में, पूर्वीय वायु चलते ही इस मास में घोर वर्षा, वस्तुओं के चलते रुख में एकदम परिवर्तन होगा। ता०२३से चली लाइन आज बदलेगी। ता० ३० को ढाई बजे से पू.फा. के रवि में पूर्वीय वायु चलते ही १३ दिन तक उ० प्र० पंजाब राजस्थान मध्यप्रदेश में श्रेष्ठ वर्षा होती रहेगी। ता० ३१ को पूर्वोदयी शनि कहीं घोर वर्षा तो कहीं वर्षा-नाश, व्यापारिक वस्तुओं की २६ जुलाई से चली लाइन को यहाँ से बदल देगा। सोना चाँदी सर्वधातु तेज, तेल के बीज दाल एवं अन्नादि मन्दे, गुड़ खाँड़ में कोई अच्छी चाल निकलेगी।

सितम्बर मास--ता० १ को आर्द्रा के भौम (आर्द्रा नक्षत्र में गुरु-भौम) से पश्चिमी हिन्द में घोर वर्षा तो कहीं सूखा, तिलहन-दलहन चना तुअर गुड़ खाँड़ सोना चाँदी सर्वधातु तेज होगी; किन्तु सायन कर्क का भौम आज सभी खाद्य वस्तुयें मन्दा करेगा। ता० ३ को सायं हस्त के ४ चरण राहु का रूई पाट रेशम कपड़ा सूत कागज चावल गुड़ खाँड़ तेज, अन्नादि मन्दा करेगा। कृष्णा ७ रविवारी की वृद्धि से तेजी चले, साथही गेहूँ जौ चना हल्दी गुड़ तेल नमक धनियाँ हींग जीरा आगे मार्गशीर्ष मास में भी तेज होने की सूचना है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सोमवारी से सन सूत कपास बिनौला श्वेत वस्त्र चाँदी घी शक्कर तेज होगी। रोहिणी संयोगी सदैव की भाँति उपज की कमी-वेशी पर कोई चाल देगी। ता० ७ को शीघ्री शनि के सिंह पर आने से घोर वर्षा, सोना चाँदी ताँबा जस्ता पीतल किराना रूई पाट रेशम कालीमिर्च गुड़ खाँड़ में खतर-नाक चाल निकलेगी, ढाई वर्ष में यह रूई के भावों को आधा तक कर सकेगा; तेल के बीज गुड़ खाँड़ में तेजी, पैसे की तंगी, भूमि मकानादि का मूल्य घटायेगा। दक्षिणी हिन्दपर नाना प्रकार के संकट, बैंक-ब्याज बढ़ेगा। कृष्णा ३० मंगल-वारी (संक्रान्ति अमावस एकवारी) सोना चाँदी सर्वधातु तिलहन-दलहन तेज करेगी।

गुजराती भाद्रपद मास-- शुक्ला १ से आश्विन अमावस तक ५ बुधवार से आलू प्याज लहसुन अदरख सोंठ हल्दी सूत तथा लाल वस्तुयें तेज, शुक्ला १ बुधवारी से आलू प्याज लहसुन अदरख सोंठ हल्दी तिलहन दलहन तेज, देशी घी मन्दा होगा। ता० १४ सितम्बर को मार्गी बुध से बादल वर्षा, रूई पाट रेशम कालीमिर्च कागज के साथ अन्य वस्तुयें भी मन्दी हो सकेंगी। शुक्ला २ को उ० प्र० पंजाब राजस्थान म० प्र० में सूर्य चन्द्र जहाँ भी बादलों में ही ढँके रहें, वहाँ उत्पत्ति श्रेष्ठ; आज से शुक्ला ६ तक इन्हीं क्षेत्रों में बादल वर्षा हो तो उत्पत्ति श्रेष्ठ, तुरन्त ही अच्छा मन्दा, न हो तो एकदम घोर तेजी होगी। ता० १६ को सायं कन्या के रवि होते ही भौम-दृष्ट राहु + सूर्य-योग से रूई पाट रेशम सूत कपड़ा कालीमिर्च कागज में अच्छा मन्दा, सोना चाँदी सर्वधातु तेज होगी। ता० १७ को सिंह का शुक्र होते ही बुध + शनि + शुक्र योग से चाँदी मन्दी, सोना तेज हो सकेगा। कृष्णा ७ की वृद्धि के पश्चात् शुक्ला ५ का क्षय तेजीकारक है। शुक्ला ६ अनु-राधा संयोगी से उपर्युक्त क्षेत्रों में जहाँ भी वर्षा होगी, वहाँ उपज श्रेष्ठ, तुरन्त ही अच्छा मन्दा, सूखा रहे तो एकदम घोर तेजी होगी। शुक्ला ४।५।७।८।१५ को बादल-बिजली गर्जना हो तो तुरन्त ही अच्छी वर्षा होती है। शुक्ला ८ (राधा-

ष्टमी) मूल-संयोगी सोना सन पाट कृष्ण हैशियन बारदाना ५ मास में अथवा पाँचवें मास में विशेष तेज करेगी। आज उपर्युक्त क्षेत्रों में अहाँ आकाश खुला रहे, वहाँ पाँचवें मास में सभी खाद्य वस्तुयें विशेष तेज होंगी। ता० २४ को पुनर्वसु के भौम से सभी वस्तुयें तेज, वर्षा हो तो मन्दा होगा। पूर्णिमा उ० भा० संयोगी श्रेष्ठ है; उपर्युक्त क्षेत्रों में जहाँ भी आज सूर्य चन्द्र बादलों में ही रहें, बादल-चाल, वर्षा हो तो आगे अच्छा मन्दा होगा, परीक्षित है।

आश्विन मास—में पूर्वोत्तर की वायु से उ० प्र० पंजाब राजस्थान मध्य प्रदेश में उत्तम वर्षा, किन्तु दक्षिण-पूर्व-कोण की चलने पर घोर गर्मी होते हुये भी वर्षा नहीं हो पाती। इस मास में ५ बुधवार होने से सोना चाँदी सर्वधातु में इकतरफा खतरनाक चाल, अथवा घोर तेजी सभी खाद्य वस्तुओं को साथ लेकर उपज की कमी-वेशी पर होगी कि व्यापारी हैरान होंगे। गुड़ खाँड़ में तेजी की आशा है। कृष्णा १ को सभी वस्तुयें मन्दी, ३० सितम्बर की रात को कन्या का बुध होनेपर राहु+सूर्य+बुध योग से गुड़ खाँड़ चाँदी सोना हल्दी विशेष तेज होगी।

अक्टूबर मास—ता० १ को कृष्णा ४ शनिवारी से गुड़ खाँड़ आज मन्दे, आज ही पूर्व [में ४० दिन का बुधास्त बादल वर्षा वायुवेगकारी है जो सभी खाद्य वस्तुओं के मूल्य को घटायेगा। आज से चली व्यापारिक वस्तुओं की लाइन ता० ५ को बड़े जोर-शोर से बदलेगी। कृष्णा ५ रविवारी, आगे माघी अमावस से घी तेज करेगी। रूई के स्टॉक से फाल्गुन मास में लाभ होगा। कृष्णा १० की वृद्धि से देशी घी अन्नादि तेज, कृष्णा १३ के क्षय से सोना चाँदी सर्वधातु तिलहन दलहन गुड़ खाँड़ मन्दे होंगे। कृष्णा ३० बुधवारी होना श्रेष्ठ है। आज ही ता० १२ को शीघ्री शुक्र के कन्या पर आते ही राहु+सूर्य+बुध+चन्द्र+शुक्रयोग(पंचग्रही)से बादल वर्षा वायु-वेग, शीत-वृद्धि, विक्रम संवत् २०१५ की भाँति सोना चाँदी सर्वधातु तेज, तिलहन दलहन मक्का अच्छा मन्दा होगा।

गुजराती आश्विन मास—शुक्ला १ से दिवाली तक ५ गुरुवार मन्दीकारक है। १३ अक्टूबर को कर्क (नीच)के भौम से साढ़े सात मास (३१ मई ७८) तक सभी वस्तुओं में मन्दा हो तो आश्चर्य नहीं; शुक्ला २ का शुक्रवारा ४५ मुहूर्ती उत्तर-शृंगी चन्द्र-दर्शन सभी वस्तुयें मन्दा करेगा। शुक्ला ३ शनिवारी से ग्रीष्म-प्रकोप, खाद्य वस्तुओंमें तेजी सम्भव है। शुक्ला ४रविवारी से देशी घी १५ दिन में तेज हो जानेपर बेचो, १५ दिन में अन्नादि मन्दे हो जाने पर खरीदो; यह योग विक्रम सं० २०१३ में बना था। ता० १७ को दिल्ली में सूर्योदय से ३ मिनट पूर्व श्रीसूर्यदेव रविवार को वारात् ३ नक्षत्रात् ४ (माहेन्द्र-मण्डल)में शनि-संहष्ट तुला के रवि से सोना चाँदी सर्वधातु गुड़ खाँड़ में तुरन्त मन्दी, तेल के बीज दाल-अन्नादि के भावों को यह मासार्ध के पश्चात् बढ़ायेगा। इस संक्रान्ति में बादल वर्षा भी होगी। ता० १८ को तुला का बुध होकर सूर्य+बुध तथा कन्या के राहु+शुक्र योग से तिलहन दलहन रूई पाट रेशम चाँदी मन्दे, बुधाष्टमी के क्षय से चाँदी के साथ सभी वस्तुयें तेज, देशी घी के स्टॉक से आगे कार्तिक मास में लाभ होगा। ता० २० को पुष्य के भौम से चाँदी रूई पाट रेशम कालीमिर्च मन्दे, सोना के साथ तिलहन दलहन तेज हों। ता० २५ को गुरु वक्री से बादल वर्षा वायु-वेग शीत-वृद्धि, रूई पाट रेशम कालीमिर्च चाँदी सोना किराना पीतल हल्दी के साथ अन्य वस्तुयें भी तेज होंगी। आश्विनी पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र आगे सुख-सुभिक्ष करेगा।

कार्तिक मास—कृष्णा १ को सूर्य-चन्द्र पर कुण्डल हो तो तिलहन विशेष तेज होते हैं। कृष्णा १ की वृद्धि से सभी खाद्य वस्तुयें तेज, ता. ३०।३१ अक्टूबर को सभी वस्तुयें मन्दी होंगी।

नवम्बर मास—ता०५ नवम्बर को शीघ्री शुक्र के तुला पर आते ही सूर्य+शी०शुक्र से वायु-वेग, रूई रेशम पाट कालीमिर्च तेज, सायं वृश्चिक का बुध तिलहन तेज, गुड़ खाँड़ दलहन अन्नादि मन्दे करेगा। २० अंश पर कन्या का राहु विक्रम संवत् २०१५ की भाँति चाँदी में तेजी की चाल दिखायेगा। कृष्णा १२ को हस्त नक्षत्र से सं. २०१५।१८ की भाँति तुअर ज्वार के संग्रह से आगे महान् लाभ होगा। ता० १० को पश्चिम में बुधोदय से बादल-वर्षा वायु-वेग शीत-वृद्धि वस्तुओं की चलती लाइन में जबर्दस्त परिवर्तन, यहाँ से उपज की कमी-वेशी पर जोरदार इकतरफा चाल निकलेगी। आज ही दीपावली गुरुवारी मन्दीकारक है; किन्तु आज तेजी या मन्दी रहे तो वही चाल मकर-संक्रान्ति लगने तक सीधी चलेगी। स्वाती नक्षत्र में दीपोत्सव, विशाखा में गोवर्धन पूजा कभी घोर तेजी तो कभी भयानक मन्दी भी लाती है। दीपक जलते समय वायु-वेग हो तो तेजी, मौसम शान्त होकर गर्मी-सी जान पड़े तो आगे सभी खाद्य वस्तुओं में अच्छा मन्दा होगा। शुक्ला २ के क्षय से आज मन्दी, आजही उत्तर शृङ्गी चन्द्र-दर्शन भी श्रेष्ठ हैं; यदि आज उ०प्र० पंजाब राजस्थान मध्य प्रदेश में सन्ध्या भी फूले तो आगामी शीतकाल में अच्छी वर्षा, यदि शुक्ला २।३ को इन्हीं क्षेत्रों में वर्षा हो तो आगामी दोनों ही उपज श्रेष्ठ होंगी। शुक्ला ६ मंगलवारी से रोगोपद्रव, आगामी माघी अमासव भी मंगलवारी होने से चाँदी गुड़ खाँड़ तेज, रूई पाट रेशम कालीमिर्च तिलहन-दलहन अन्नादि आगामी शीतकाल में तेज हो सकेंगे। आज ही मंगलवार की आधी रात के बाद ता० १६ को सूर्योदय से पूर्व घं. ६ मि. ११ बजे श्रीसूर्यदेव बुध से युक्त होकर वारात् ३, नक्षत्रात् ४ (४५ मुहूर्ती) वृश्चिकारूढ़ होंगे। रात्रि को लगी संक्रान्ति घोर मन्दीकारक है, यदि आज वर्षा हो तो कहना ही क्या है ? कार्तिकी पूर्णिमा शुक्रवारी कृत्तिका संयोगी है; यदि आज बादल भी रहे तो शीत-काल में वर्षा और भयानक मन्दा होगा, परीक्षित है।

मार्गशीर्ष म.स—ता० २६ नवम्बर को सिंह पर ७ अंश पर शनि-चार से रूई मन्दी में खरीदो ; गुरुसे सप्तमस्थ सवेरे धनु के बुध से शीत-वृद्धि, गुड़ खाँड़ रूई पाट रेशम कालीमिर्च में मन्दी, सोना चाँदी सर्वधातु में चलती लाइन बदले या तेजी भी हो सकेगी। कृष्णा १ शनिवारी रोहिणी संयोगी से अन्नादि तेज अथवा किसी देश या नेता का पतन (अवसान) हो। संवत् २०१८ में गोआ का पतन हुआ था। कृष्णा ३।४ की वृद्धि से आज तेजी, किन्तु आर्द्रा-संयोगी तीज आगे मन्दी-कारक है। कृष्णा ४ मंगलवारी से गाँवों में अग्निकाण्ड हो। ता० २६ को शीघ्री शुक्र के वृश्चिक में आनेपर सूर्य+शीघ्री शुक्र योग से वायुवेग, शीत-वृद्धि होगी। चाँदी बेचना। शनि सिंह के ७।८ अंश पर रूई पाट रेशम कालीमिर्च के चलते रुख में परिवर्तन अथवा अच्छा मन्दा लाता है। ता० २८ को आश्लेषा के भौम से रूई पाट रेशम कालीमिर्च सूत कपड़ा सोना चाँदी सर्वधातु मन्दे, तिलहन दलहन गुड़ खाँड़ अन्नादि तेज होंगे।

दिसम्बर म.स—में जाड़ा कम पड़े तो शीत-काल में निश्चित रूप से अच्छी वर्षा बार-बार होती रहती है। ता० ८ को कृष्णा १३ के क्षय से रूई पाट रेशम सूत ऊन कपड़ा सोना चाँदी सर्वधातु तिलहन दलहन गुड़ खाँड़ में आज अच्छा मन्दा रहे। कृष्णा १३ को पहाड़ों पर बर्फ गिरे तो पृथ्वी धन-धान्य से पूर्ण होगी। कृष्णा १४।३० को सूर्य-चन्द्र बादलों में ही रहे तो उपज श्रेष्ठ, ४ मास पश्चात् तिलहन दलहन अन्नादि में अच्छा मन्दा होता है।

गुजराती मार्गशीर्ष मास—शुक्ला १ से पौषी अमावस तक ५ रविवार होने से देशी घी तेज, कपड़ा कागज तेज होगा। ता० १२ को मूल के बुध तथा मघा के वक्री शनि से ओलापात या हिमपात या बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि, तिलहन दलहन तुरन्त मन्दे; फिर आगे महान तेजी; किन्तु गुरु पहले से वक्री है (गुरु-शनि दोनों वक्री), रूई पाट रेशम ऊन सूत कपड़ा कागज में अच्छा मन्दा, तिलहन दलहन अन्नादि विशेष तेज हों। ता० १३ को यवन सन् १३९८ का प्रारम्भ मंगलवार को होने से मंगल-वारा गुर्रा है; दक्षिण में तेजी, धातुयें सस्ती, अन्य सभी वस्तुयें इस वर्ष में तेज हों। सार्वभौम वक्री (चार ग्रह वक्री होने) से महोत्पात्, नेताओं का पतन या अवसान, युद्धादिकाण्ड, सारे विश्व में खलबली, सोना चाँदी सर्वधातु तिलहन दलहन गुड़ खाँड़ में भयानक मन्दा, बाजार की चाल पर कार्य करना उचित होगा; कारण, यहाँ से लखपति कंगाल तथा कंगाल माला-माल होंगे। संवत् १९९८ में सोना चाँदी सर्वधातु रूई पाट रेशम ऊन सूत कपड़ा में खतरनाक मन्दी आई थी। शुक्ला ५ के क्षय से तेजी सम्भव है ; किन्तु गुरुवारी पंचमी ५ मास तक अथवा ५वें मास में तिलहन-दलहन को विशेष मन्दा कर देगी। मिथुनस्थ गुरु के प्रभाव से इस मास में मन्दी आ जाने पर खाद्य वस्तुयें खरीदें, आगे वैशाख मास में बेचने से लाभ होगा। यह योग संवत् २०२२ में बना था। ता० १५ को पश्चिम में बुधास्त बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि सभी वस्तुओं में मन्दीकारक है। रात को श्रीसूर्यदेव गत संक्रान्ति से वारात् ३, नक्षत्रात् ४ (१५ मुहूर्ता), बुध से युक्त, गुरु से प्रतियोग करते हुए धनु राशिस्थ होंगे। फलतः वर्षा से शीत-प्रकोप, तिलहन दलहन गुड़ खाँड़ मन्दे होंगे। शुक्ला १० की वृद्धि से देशी घी के साथ सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० २३ को धनु के शुक्र होनेपर बुध+सूर्य+शुक्र योग में उ० प्र० पंजाब राजस्थान म० प्र० में बादल वर्षा हो तो सभी खाद्य वस्तुएँ मन्दी, खुला रहे तो तेजी होगी। पूर्णिमा में मृगशिरा ता० २४ को चाँदी मन्दी करेगा। ता० २५ का बड़ा दिन बादल सहित दिखाई देगा।

पौष मास—में दक्षिणी वायु चलते ही उपर्युक्त क्षेत्रों में उत्तम वर्षा होती है। ५ सोमवार होने से चाँदी सोना सर्वधातु तेज, वक्री शनि का प्रभाव लेकर इकतरफा चाल अथवा घोर तेजी होगी। ता० २७ को पूर्वोदयी बुध बादल-वर्षा वायुवेगकारक है। आज ही रात को पुष्य नक्षत्र में गुरु-दृष्ट शुक्र के पूर्वास्त (मेघद्वार-देवगण-ऐरावत वीथी में अस्त) से बादल-वर्षा हो, १२।१३ दिसम्बर से चली वस्तुओं की लाइन बदले या तेजी हो अथवा खाद्य वस्तुयें मन्दी, धातु-मात्र तेज हो सकेगी। कृष्णा ४ को आश्लेषा, पंचमी को मघा, षष्ठी को पू०फा० नक्षत्र आगामी सं० २०३५ में आषाढ़ शुक्ला ४।५।६ को वर्षा होने की सूचना दे रहा है। कृष्णा ५।६।७ को क्रमशः शुक्र-शनि-रविवार होने से कहीं युद्धादिकाण्ड अथवा आगे भाद्रपद मास में गेहूँ घी मूँग तेज हों ; विशेष को तो सर्वज्ञ ही जाने ! अतः लाभ-हानि का पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जानकर बाजार की स्थिति को भी देखते हुये अपनी शक्ति के ही अनुकूल कार्य करें।

विशेष द्रष्टव्य—देखिये सन् १९७६ की इसी जंत्री में पृष्ठ ११४, पंक्ति ७, वर्षेश बुध के प्रभाव से मध्य लोक की गवर्नमेण्ट के कड़े कानून रहते हुये भी आकाशी गवर्नमेण्ट की कृपा से आषाढ़ सं० २०३३ में गेहूँ को छोड़कर सभी खाद्य वस्तुओं के मूल्य में ४० प्रतिशत की तेजी आ ही गई; अब सन्निकट संवत् २०३६ में बुध पुनः वर्षेश बनेगा। सन् १९७७ की प्रथम शरद एवं ग्रीष्मकालीन उपज प्रायः सर्वत्र उत्तम सुनाई देगी, साथ ही समाचार पत्र भी साक्षी होंगे।

चेतावनी—सोना चाँदी ताँबा जस्ता पीतल राँगा सीसा स्टैनलेस स्टील ऐलमोनियम रूई पाट रेशमी धागा बोरी नारियल का जटा रस्सी मूँज पतेल कागज तेल के बीज सींगदाना तोरिया सरसों एरण्ड अलसी खोपरा खली, धान की पालिश उड़द, मूँग मोठ रमास लोबिया (बटोला) मटर गुआर बेसारी तेवड़ा चना ज्वार बाजरा मक्का धान चावल गुआर शेयर्स देशी घी गुड़ खाँड़ तथा किराना में लौंग कत्था सुपारी हल्दी सोंठ धनियाँ अजवायन लाल व कालीमिर्च

सौंफ जीरा लाख चपड़ा पोस्ता आदि में-से किसी भी एक वस्तु की हाजर स्टॉक की वार्षिक भेंट ३०३)५०, छः मास की १७७)५०, तीन माह की १०३)५०, वायदे में किसी भी वस्तु की वार्षिक भेंट ४५३)५०, छह माह की २४३)५०, तीन माह की १२७)५०, इसमें ३१३ दिन के चान्स होंगे। वायदे की १ माह की दैनिक स्पेशल रिपोर्ट (चान्स) ५३)५०, पाक्षिक २९)५०, साप्ताहिक १७)५०, तथा सभी वस्तुओं की दैनिक ३१३ दिन की साप्ताहिक पाक्षिक मासिक व लम्बी लाइन का वार्षिक सारांश सहित तेजी-मन्दी-प्रदर्शक वार्षिक "भविष्य-दर्पण" कार्तिक शुक्ला १ संवत् २०३३ से दीपावली संवत् २०३४ तक का मूल्य १७)५०, तथा जन्म-पत्री से १२ मास की १२ कुण्डलीवाला वर्ष-फल फुलस्केप साइज में मुद्रित फार्म पर भेंट २३)५०, विस्तृत मुद्दआ दशा समेत ३३)५०, जन्म-दिनांक से डेढ़ मास पूर्व जन्म-पत्री की नकल के साथ मनीऑर्डर पहले ही भेजने पर यथासमय भेजा जायेगा। जन्म-स्थान कहाँ ? और अब निवास कहाँ है ?--यह अवश्य ही लिखें। सन् १९७७ में जन्मे बच्चों का शुद्ध टेवा बनवाने हेतु जन्म-दिन तारीख टाइम रात या दिन के साथ यदि जन्म गाँव का है तो वहाँ से प्रसिद्ध नगर की दूरी और दिशा (पूर्व दक्षिण पश्चिमोत्तर, कितने मील) रेलवे स्टेशन आदि अवश्य लिखें। २)५० का मनीऑर्डर पाकर पोस्टकार्ड पर जन्मस्थानीय एवं स्टैण्डर्ड टाइमानुसार सूर्योदयारत एवं जन्मस्थानीय उसी दिन का पूर्ण पञ्चाङ्ग-संस्कार करके भेजा जायेगा। बड़े बच्चों का टेवा या रोग व दारिद्र्यनाशक उपाय, टोटका तन्त्र धातु रत्न पत्थर जड़ी आदि धारण-मुहूर्त सहित ५) भेंट पाकर लिखा जायेगा। वी० पी० किसी भी वस्तु की नहीं की जाती। मनीऑर्डर के सबसे नीचेवाले कूपन पर अपना पूरा पता अवश्य ही ऐसा लिखें कि जो अच्छी तरह से पढ़ा जा सके। पत्रोत्तर जवाबी कार्ड भेजकर ही उत्तर पाने की आशा करें; इकले पोस्टकार्ड का उत्तर नहीं दिया जाता, ध्यान रखिये !

नोट :-यहाँ आनेवाले पहले जवाबी कार्ड भेजें, उसका उत्तर पाते ही यहाँ आने का कष्ट करें। पता तार व पत्र :-

राजाराम जैन ज्योतिषी, मैनपुरी (उ० प्र०) सन्निकट मकान-(डा० कपूर, मुहल्ला कटरा) फोन :---पी० पी० ४२१

* विंशोत्तरी महादशा की प्रत्येक अन्तर्दशा में भुक्त समय-कोष्ठक *

१. ☉ सूर्य-दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-कृत्तिका, उ. फा., उ. षा.

दशा	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिवस	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०
जोड़ व.	०	०	१	२	२	३	४	५	६
जोड़ मा.	३	९	१	०	१०	९	७	०	०
जोड़ दि.	१८	१८	२४	१८	६	१८	२४	०	०

२. ☽ चन्द्र-दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा
नक्षत्र-रोहिणी, हस्त, श्रवण

दशा	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिवस	०	०	०	०	०	०	०	०	०
जोड़ व.	०	१	२	४	५	७	०	९	१०
जोड़ मा.	१०	५	११	३	१०	३	१०	६	०
जोड़ दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३. ♂ मंगल-दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-मृगशीर्ष, चित्रा, धनिष्ठा

दशा	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिवस	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०
जोड़ व.	०	१	२	३	४	४	६	६	७
जोड़ मा.	४	५	४	५	५	१०	०	५	०
जोड़ दि.	२७	१५	२१	०	२७	२४	२४	०	०

४. ☊ राहु-दशा वर्ष १८ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा

दशा	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	[illegible]	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिवस	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८
जोड़ व.	२	५	७	१०	११	१४	१५	१६	१८
जोड़ मा.	८	१	११	६	६	६	५	११	०
जोड़ दि.	१२	६	१२	०	१८	१८	५	१२	०

५. ♃ गुरु-दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-पुनर्वसु, विशाखा, पू. भा.

दशा	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिवस	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४
जोड़ व.	२	४	६	७	१०	११	१२	१३	१६
जोड़ दि.	१	८	११	१०	६	४	८	७	०
जोड़ मा.	१८	०	६	१२	१२	१०	०	६	०

६. ♄ शनि-दशा वर्ष १९ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-पुष्य, अनुराधा, उ. भा.

दशा	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिवस	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२
जोड़ व.	३	५	६	९	१०	१२	१३	१६	१९
जोड़ मा.	०	८	९	११	११	६	७	५	०
जोड़ दि.	३	१२	२१	२१	३	३	१२	१८	०

७. ☿ बुध-दशा वर्ष १७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती

दशा	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिवस	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९
जोड़ व.	२	३	६	७	८	९	१२	[illegible]	१७
जोड़ मा.	४	४	२	१	६	५	०	३	०
जोड़ दि.	२७	२४	२४	०	०	२७	१५	२१	०

८. ☋ केतु-दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-अश्विनी, मघा, मूल

दशा	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिवस	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७
जोड़ व.	०	१	१	२	२	३	४	[illegible]	७
जोड़ मा.	४	६	११	६	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
जोड़ दि.	२७	२७	३	३	०	१८	२४	३	०

९. ♀ शुक्र-दशा वर्ष २० में अन्तर्दशा
नक्षत्र-भरणी, पू. फा., पू. षा.

दशा	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	२	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिवस	०	०	०	०	०	०	०	०	०
जोड़ व.	३	४	६	७	१०	१२	१६	१८	२०
जोड़ मा.	[illegible]	[illegible]	०	२	२	१०	०	१०	०
जोड़ दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

द्वादश राशियों का माहवारी फल सन् १९७७ ई०

जनवरी

मेष:—मासारम्भ में भय, मानहानि, राजकीय उलझन का योग है। रोजगार-धन्धे में शिथिलता, मन में उद्विग्नता रहेगी। अभीष्ट पदार्थों की हानि होगी। ता० १४ के बाद दशमस्थ सूर्य के प्रभाव से स्थिति सुधरेगी। धन स्वास्थ्य मित्र कुटुम्ब-सुख, घर में बड़े लोगों का समागम होगा। राज-नेताओं की प्रसिद्धि बढ़ेगी। घर-गृहस्थी में आनन्द और अभीष्ट लाभ होगा है। ता० २६ से व्ययस्थ शुक्र खर्च बढ़ायेगा। ता० ६-७-१५-१६-२४-२५ नेष्ट हैं।

बृष:—तीसरे शनि, छठे राहु उत्तम है। आरोग्य-लाभ, घरेलू सुख की वृद्धि, अभीष्ट कार्यों में सफलता, पद-पोजीशन द्रव्य एवं सुदृढ़ आर्थिक आधार की प्राप्ति होगी। साहस, पराक्रम और पुरुषार्थ की वृद्धि होगी। विरोधियों पर विजय प्राप्त होगी; किन्तु सूर्य-दोष के कारण आत्मबल की कमी रहेगी। दौड़-धूप श्रम अधिक करना पड़ेगा। काम-धन्धे में कोई परिवर्तन करना उचित नहीं है। ता० १-९-१०-१७-१८-२६-२७-२८ नेष्ट हैं।

मिथुन:—मानसिक क्लेश, अकारण झगड़े-झंझट का योग है। स्वजनों से वैर-विरोध, द्रव्य की आकस्मिक हानि, कर्म-क्षेत्र में असफलता की आशंका है। मित्र-कुटुम्बियों से मतभेद होगा। स्त्री-सन्तान को रोग-सन्तप्त होना पड़ेगा। यात्रा में कष्ट, उदर-व्याधि से पीड़ा होगी। नवम शुक्र से परेशानियों में कमी हो जायेगी और रोजी-रोजगार यथावत् चलता रहेगा। इस मास की ता० २-३-११-१२-१९-२०-२१-२९-३० खराब हैं।

कर्क:—आनन्द-लाभ, कार्य-सिद्धि होगी। शरीर स्वस्थ रहेगा। अन्न-वस्त्रादि सुरुचिकर पदार्थों की प्राप्ति, शत्रुओं का नाश, धन-सम्पदा की वृद्धि, सम्मान-लाभ, घरेलू सुख पूर्ववत् रहेगा। उत्तरार्द्ध में समय-परिवर्तन, भाग्य-संघर्ष, अप्रिय घटना का चक्र चलेगा। बन्धन एवं घुटन जैसी स्थिति का अनुभव करेंगे। काम-धंधे में मन नहीं लगेगा। अस्वाभाविक भोग-वासना बढ़ेगी। ता० ४-५-१३-१४-२२-२३-३१ नेष्ट हैं।

सिंह:—शारीरिक अशक्ति, मन की व्यग्रता, मित्रों से असुविधा, धन की हानि होगी। चित्त में अस्थिरता, शत्रु एवं रोग-भय होगा। घर-गृहस्थी की समस्यायें बढ़ेंगी। अशुभ कर्म में रुचि, नवीन प्रयत्नों के सुपरिणाम मिलने में सन्देह होगा। भ्रमण के लिए मन उतावला रहेगा। सूर्य-मन्त्र के जप एवं दान-पुण्यादि कर्म से कष्ट-निवारण तथा अभीष्ट-सिद्धि होगी। इस मास की ता० ६-७-१५-१६-२४-२५ अशुभ हैं।

कन्या:—मानसिक एवं शारीरिक व्यथा, घर में रगड़े-झगड़े का योग है। दौड़-धूप और अस्त-व्यस्तता बनी रहेगी। घरेलू सुखों की हानि, कुत्सित भोजन, व्यसन, यात्रा में असुविधा से कष्ट होगा। भूमि भवन वाहन-सुख में बाधायें आयेंगी। मासोत्तरार्द्ध में परिस्थिति में सुधार की आशा कर सकेंगे। गंभीर परिस्थितियों में धैर्यपूर्वक सुसमय की प्रतीक्षा करें। इस मास की ता० १-९-१०-१७-१८-२७-२८ अशुभ हैं।

तुला:—मास-फल उत्तम है। रोग ऋण से मुक्ति, घरेलू सुख, आनन्द-लाभ और मित्रों से स्नेह-सम्मान मिलेगा। पुत्र-सुख, अभीष्ट-लाभ, शत्रुओं की पराजय, लक्ष्मी-कृपा की प्राप्ति होगी। स्वभाव में विनम्रता, आचरण में पवित्रता, बुद्धि में स्थिरता होगी। भाग्योदय, कर्मक्षेत्र की प्रगति, दूरवर्ती भ्रमण का योग है। विभिन्न समस्याओं का निराकरण होगा। इस मास की ता० २-३-११-१२-१९-२०-२१-२९-३० ठीक नहीं हैं।

बृश्चिक:—दुर्जनों की संगति, स्वाभाविक दुर्बलता, मानसिक व्यथा का योग है। सिर नेत्र में पीड़ा, अज्ञात भय की आशंका, कृषि एवं वाणिज्य की हानि होगी। ता० १४ के बाद महत्त्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि, सामान्य सफलता की प्राप्ति, स्थाई साधनों के अतिरिक्त एकाध अन्य मार्ग से धन-द्रव्य का लाभ होगा। बकाया रकम की प्राप्ति, मानसिक प्रसन्नता एवं यात्रा का अवसर मिलेगा। भाग्यावरोध दूर होगा। ता० ४-५-१३-१४-२२-२३-३१ नेष्ट हैं।

धनु:—उदर-रोग, शरीर-पीड़ा, मानसिक व्यथा, भोजन में अबेर-सबेर से कष्ट होगा। मित्र-कुटुम्बियों से रगड़ा-झगड़ा, यात्रा में परेशानी होगी। राज्येश पंचम गुरु आपकी रक्षा कर रहा है। उत्तरार्द्ध में लहना-तकाजा से राहत मिलेगी। शारीरिक-सुख की कमी रहते हुए भी आत्मबल और इच्छा-शक्ति प्रबल होगी। स्वजनों से कलह-वैमनस्य का निवारण होगा। ता० ६-७-८-१५-१६-२४-२५ अशुभ हैं।

मकर:—मास-फल मध्यम है। स्थान-परिवर्तन, भ्रमण, दौड़धूप की अधिकता से शरीर कृष-क्लान्त रहेगा। किसी कुटुम्बी के वियोग का दुःख होगा। अशुभ दशावालों के कार्य एवं पद की हानि होगी। व्ययाधिक्य, कठिनाइयों की वृद्धि, अपमान का अंदेशा है। श्रीहनुमानजी की उपासना में रत व्यक्तियों को अधिक कष्ट न होगा। उत्तरार्द्ध में आर्थिक एवं मानसिक स्थिति में सुधार होगा। ता० १-९-१०-१७-१८-२६-२७-२८ नेष्ट हैं।

कुम्भः—अभीष्ट-लाभ, धन-प्राप्ति, उत्तम भोजन-शयन का सुख मिलेगा। नवीन पद अधिकार, स्वास्थ्य, कर्म साफल्य का सुयोग बनेगा। बड़ों के अनुग्रह की प्राप्ति, गृह में किसी आनन्दोत्सव से सुख होगा। विशेष व्यय एवं द्रव्य-हानि से बचते रहेंगे। भाग्य साथ देगा। कर्म-शक्ति का विकास, शारीरिक-सुख, सम्मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। नौकरीवालों की पदोन्नति होगी। ता० २-३-११-१२-१९-२०-२१-२९-३० कष्टप्रद हैं।

मीनः—धन स्वास्थ्य मित्र एवं कौटुम्बिक-सुख का लाभ होगा। राजनेताओं के पद-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। प्रगति का अवसर मिलेगा। घर में श्रेष्ठ लोगों का समागम, आनन्द-लाभ और अभीष्ट-सिद्धि होगी। द्रव्य-संचय, ऋण मुक्ति, मानसिक व्याधियों का निवारण होगा। भ्रमण मनोरंजन व्यावसायिक यात्रा, पितृ-कुल की मर्यादा-वृद्धि होगी। मारकेश दशावालों को स्वास्थ्य रक्षा का समुचित उपाय करना चाहिये। ता० ४-५-१३-१४-२२-२३-३१ अशुभ हैं।

फरवरी

मेषः—मास-फल उत्तम है। व्यावसायिक सफलता, धन-वृद्धि, प्रताप-प्रभाव का विकास होगा। दीर्घकाल से रुके कार्य की पूर्ति होगी। जीविका का आधार मिलेगा। उत्तम भोजन वस्त्रादि का लाभ; धार्मिक रुचि की वृद्धि, महिलाओं को विशेष प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। कुटुम्बियों एवं बड़े लोगों से समागम, मित्रवर्ग से सहयोग एवं राजकीय संकट का निवारण होगा। ता० ३-४-११-१२-२०-२१ नेष्ट हैं।

वृषः—मासारम्भ में शरीर-पीड़ा, मानसिक-व्यथा, द्रव्य-हानि, शत्रु-भय, दैहिक निर्बलता का योग है। पत्नी को स्वास्थ्य-बाधा, उपचार निमित्त द्रव्य का अति व्यय होगा। मासोत्तरार्द्ध में गुप्त शत्रुओं का पराभव, अन्य परिस्थिति सुधरेगी। मन में शुभ विचारों का उदय, अन्न धन सम्मान एवं स्वास्थ्य का लाभ होगा। राशीश शुक्र एकादश में उत्तम लाभ देनेवाला है। ता० ५-६-१३-१४-१५-२२-२३-२४ नेष्ट हैं।

मिथुनः—इच्छित पदार्थों का लाभ, उत्तम वस्त्रादि एवं सुरुचिकर वातावरण की प्राप्ति। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार में साधारण लाभदायी सुयोग मिलता रहेगा। लाभस्थ वृहस्पति से अभीष्ट सिद्धि, कानूनी विवाद में विजय, व्यक्तित्व का विकास, होगा। नौकरीवालों की पदोन्नति होगी। साहस उत्साह पराक्रम पुरुषार्थ की वृद्धि होगी। अपव्यय से बचें। ता० ७-८-१६-१७-२५-२६ नेष्ट हैं।

कर्कः—घरेलू-सुख की वृद्धि, दीर्घकालीन दुःखों की निवृत्ति एवं संतोषजनक द्रव्य-लाभ होगा। यात्रा में प्रसन्नता, अन्न धन वस्त्रादि की प्राप्ति होगी। गृह में आनन्दोत्सव का सुख होगा। शत्रु पराजित होंगे। देवाराधना में तत्पर रहना आवश्यक है। स्त्री-सन्तानपक्ष से सम्बन्ध सानुकूल रहेगा। रोग शोक क्रोध का निवारण होगा; उत्तरार्द्ध में सिर नेत्र-पीड़ा संभव है। ता० १-२-९-१०-१८-१९-२७-२८ अशुभ हैं।

सिंह—अब आपके दुर्दिन समाप्ति पर है। धन की प्राप्ति, सुख की वृद्धि, श्रेष्ठजनों को स्वर्ण रत्नादि-लाभ होगा। कीर्ति-लाभ, आनन्द-वृद्धि एवं शत्रु-भयरहित शुभ विचारों का उदय होगा। राज्याधिकारियों से सहयोग मिलेगा। कार्य की सिद्धि, सुदूरवर्ती यात्रा, स्वास्थ्य-लाभ का सुन्दर योग है। शत्रुओं का शमन होगा। साहस उत्साह की वृद्धि होगी; किन्तु वृथा विवाद से बचें। ता० ३-४-११-१२-२०-२१ नेष्ट हैं।

कन्या :—रोग-वृद्धि, धन-हानि, भोजन में अतिकाल, पापकर्म में हठात् रुचि होगी। द्युतिहीनता, शत्रुओं से पीड़ा, सन्तानपक्ष से क्लेश होगा। पत्नी के कारण शोक-वृद्धि, जननेन्द्रिय-रोग का भय, अपमानित होने का अन्देशा एवं बड़ी कठिनाई से परिश्रमपूर्वक जीविका-निर्वाह होगा। प्रयास करने पर गृहस्थ-जीवन का सुख और द्रव्य-लाभ का अवसर मिल सकता है। ता० ५-६-१३-१४-१५-२२-२३-२४ अशुभ हैं।

तुला :—शत्रु-पक्ष से हानि, शत्रु-वृद्धि, गुप्त शत्रु अकारण परेशान करेंगे। हिस्सेदारों से झगड़ा, सन्तान से मनोव्यथा, अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति में विलम्ब होगा। स्वजनों से विरोध, अशुभ कार्यों में निरति, मानसिक भय, ज्वर रुधिर-विकार तथा उदर-रोग से पीड़ा होगी। उत्तरार्द्ध में पराक्रम पुरुषार्थ के प्रयोग से अन्न वस्त्र द्रव्य एवं सम्मान का लाभ होगा। ता० ७-८-१६-१७-२५-२६ अशुभ हैं।

वृश्चिक :—सुभोज्य पदार्थों का लाभ, धन-आरोग्य अन्न-वस्त्रादि की प्राप्ति, शत्रुओं का पराजय होगा। पुत्र-स्त्री-कुटुम्ब से प्रीति, घर में नौकरों की वृद्धि, नौकरीवालों की उन्नति होगी। आनन्द-प्राप्ति, घरेलू सुख की वृद्धि, मित्रों का सुख-सहयोग मिलेगा। चित्त की अस्थिरता दूर हो जायेगी, सद्ग्रन्थावलोकन, सत्संगत आदि सुयोग प्राप्त होगा। दान-पुण्य में निरति अनिवार्य है। ता० १-२-९-१०-१८-१९-२७-२८ कष्टकारक हैं।

धनु :—धन की प्राप्ति, मित्र स्त्री कुटुम्ब का पूर्ण सुख मिलेगा। क्रोध जोश की वृद्धि होगी। मंगल-दोष के कारण ज्वर व्रण रक्त पित्तादि-विकार से शरीर-कष्ट होगा। वचन की कठोरता का त्याग करें एवं दुर्जनों की संगति से

बचते रहें। उत्तरार्द्ध में राजकीय विवाद निवृत्त होंगे। मानसिक आनन्द, अभीष्ट-सिद्धि, भ्रमण में प्रसन्नता, शुभ दशा-वालों को विशेषतः लाभ होगा। ता० ३-४-११-१२-२०-२१ नेष्ट हैं।

मकर :—मास-फल अशुभ है। पत्नी से अनबन, कुटुम्बियों से मतभेद, ज्वर व्रण से शरीर-कष्ट होगा। गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे। शत्रु-भय, रोजी-रोजगार में गड़बड़ी, द्रव्य-क्षय और व्यवसाय में पूँजी की हानि होगी। विविध कठिनाइयों के निवारणार्थ श्रीहनुमानजी की उपासना आवश्यक है। उत्तरार्द्ध में मानसिक प्रसन्नता, अर्थ-लाभ, अव्यर्थ उत्साह की वृद्धि होगी। ता० ५-६-१३-१४-१५-२२-२३-२४ नेष्ट हैं।

कुम्भ :—सन्तोषजनक द्रव्य-लाभ होगा। रुके हुए द्रव्य की प्राप्ति, स्त्री सन्तान-सुख, सम्मान की वृद्धि होगी। शरीर में स्फूर्ति, आरोग्य-लाभ, उत्तम वस्त्रादि सांसारिक सुखों की उपलब्धि होगी। कुटुम्बीजनों का सहयोग, नौकरी में पदोन्नति, स्त्री की रोग-बाधा का निवारण होगा। सांसारिक सुखोपभोग की बाधाएँ निवृत्त होंगी। व्यय नियंत्रित और मस्तिष्क सन्तुलित रहेगा। ता० ७-८-१६-१७-२५-२६ चिन्तनीय हैं।

मीन :—शत्रुओं का नाश, घरेलू सुख और धन की बारम्बार प्राप्ति होगी। विजय आनन्द आरोग्य, अन्न-वस्त्रादि का लाभ होगा। मित्रों से सहानुभूति, राजकीय कामों में सफलता एवं शोहरत की वृद्धि होगी। नौकरीवालों का स्थानान्तरण-योग चल रहा है। विद्यार्थियों एवं महिलाओं के लिए उत्तम समय है; किन्तु राजनीतिक रुचि कष्टकर हो सकती है, तदर्थ सतर्कता अनिवार्य है। इस मास की ता० १-२-९-१०-१८-१९-२७-२८ नेष्ट हैं।

मार्च

मेष :—शरीर स्वस्थ रहेगा। धन ख्याति और सांसारिक सुखों का लाभ होगा। रोजी-धन्धे की उन्नति होगी। शत्रु-भय का निवारण होगा। दान-पुण्य धर्म-कृत्यादि में रुचि होगी। जय आरोग्य यश का लाभ, कुटुम्बियों से प्रीति, सहयोग की वृद्धि होगी। सन्त-समागम से चित्त प्रसन्न रहेगा। व्यक्तित्व का विकास और यात्रा में सफलता का योग है। वृथा विवाद से बचें। ता० २-३-११-१२-१९-२०-२१-२९-३०-३१ नेष्ट हैं।

वृष :—किसी नये पद अधिकार की प्राप्ति होगी। वाक्पटुता से बिगड़े कार्य बनेंगे। शत्रुओं के पराजय से सुख होगा। जन्म-स्थान में गुरु के पदार्पण से कुछ मानसिक व्यथा होगी। विशेष परिश्रम से अभीष्ट-लाभ, यात्रा में सफलता और द्रव्य-लाभ होगा। व्यवसाय में प्रगति तथा श्रीसंवर्धन का योग है। प्रयत्नपूर्वक स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिये। ता० ४-५-१३-१४-२२-२३ अशुभ हैं।

मिथुन :—मासारम्भ में मानसिक अशान्ति, नेत्र-रोग, कार्य एवं पद की हानि संभव है। रोग, ऋण एवं रिपु-बाधा से चित्त खेदग्रस्त रहेगा। मास-मध्य में नौकरीवालों के स्थान-परिवर्तन का योग है। मासान्त में पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। स्वास्थ्य सुन्दर रहेगा। वाक्पटुता से कानूनी विवाद निवृत्त होगा। महिलाएँ सुखी एवं प्रसन्न रहेंगी। ता० ६-७-८-१५-१६-२४-२५ अशुभ हैं।

कर्क :—अष्टम सूर्य बुध के साथ ता० ११ से मंगल की युति कष्टदायक होगी। शस्त्रप्रियता, परदेशवास, कुटुम्बियों से अनबन, भोजन में अबेर-सबेर होगा। सम्बन्धी मित्र एवं कुटुम्बीजन से विवाद का योग है। उत्तरार्द्ध में द्रव्य-लाभ की अनुकूलता प्राप्त होगी। बकाया रकम मिलेगा। श्रेष्ठजनों की पदोन्नति और प्रतिष्ठा-वृद्धि भी होगी। यात्रा-योग भी है। ता० १-९-१०-१७-१८-२६-२७-२८ अशुभ हैं।

सिंह :—व्यर्थ दौड़धूप परिभ्रमण से शरीर-कष्ट होगा। विशेष व्यय और हानि से बचना कठिन होगा। उच्चाधिकारी वर्ग प्रतिकूल रहेंगे। बुद्धिभ्रंश, प्रमादवश कोई गलती कर बैठेंगे। टैक्स-विभाग से परेशानी होगी। शरीर अस्वस्थ रहेगा; चोट-चपेट दुर्घटना का भय है। ता० १४ के बाद कठिनाइयाँ बढ़ेंगी। सूर्य-मंगल का जप दान व्रत एवं श्रीदुर्गाजी का दर्शन पूजन जरूरी है। ता० २-३-११-१२-२०-२१-२९-३० अशुभ हैं।

कन्या :—मास-फल उत्तम है। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग सक्रिय होकर अपयश फैलाने की विफल चेष्टा करेंगे। मित्र-कुटुम्बीजन से पूर्ण सुख सहयोग की आशा है। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा, अविवाहितों का विवाह होगा। प्रेम-सम्बन्ध में सफलता मिलेगी। रोजी-धन्धे की प्रगति को एक नवीन दिशा प्राप्त होगी। गणपति-आराधना श्रेयस्कर है। ता० ४-५-१३-१४-२२-२३ नेष्ट हैं।

तुला :—परदेश-वास, पदच्युति, स्वजन-वियोग, मित्र-असहयोग का सामना करना पड़ेगा। चोर-उच्चकों से सतर्कता जरूरी है। अष्टम बृहस्पति के तंत्रोक्त उपचार से अभीष्ट लाभ होगा। व्यवसाय में सामान्य प्रगति, यात्रा में सफलता, साहस उत्साह की वृद्धि होगी। सरस्वती उपासकों को विशेष आर्थिक बौद्धिक कठिनाई झेलनी पड़ेगी। राजनीतिज्ञों का जीवन संत्रस्त रहेगा। ता० ६-७-८-१५-१६-२४-२५ नेष्ट हैं।

वृश्चिकः—कार्य की हानि, मान-हानि, स्त्री सन्तान, भाई-कुटुम्बीजनों से असन्तोष होगा। द्रव्य का अतिव्यय ऋण का अवलम्बन स्वीकार करना पड़ेगा। कर-अदायगी की चिन्ता होगी। उत्तरार्द्ध में बुद्धि चातुर्य उच्चाधिकारियों की नाराजगी दूर होगी। व्यावसायिक प्रयासों में सावधानीपूर्वक प्रगति की जा सकेगी। पूर्ण धार्मि रुचि से मानसिक चिन्ताओं का निवारण होगा। ता० १-६-१०-१७-१८-२६-२७ कष्टप्रद हैं।

धनुः—शुभ कर्मों में रुचि बढ़ेगी। स्त्री-सन्तान मित्र-कुटुम्बीजन का सुख प्राप्त होगा। शुभ दशावालों भूमि-लाभ या गृह-निर्माण का सौभाग्य मिलेगा। दान होम जप आदि धार्मिक क्रियाएँ संपादित होंगी। राजकीय औ सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सभी प्रकार से कल्याण, अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति और श्रेष्ठजनों को स्वर्ण-लाभ होगा वाहन के उपयोग में सतर्कता रखें। ता० २-३-११-१२ २०-२१-२९-३० अशुभ हैं।

मकरः—सुख, धर्म-बुद्धि और कीर्ति की आंशिक वृद्धि होगी। आनन्दयुक्त घरेलू वातावरण, द्रव्य-लाभ, संचय विद्योपार्जन, शत्रु-बाधाओं पर विजय, स्त्री-सन्तानादि का सुख मिलेगा। शारीरिक स्वास्थ्य साधारण रहेगा। सामाजि कार्यों में यश की वृद्धि होगी। व्यापारियों को किसी आकस्मिक हानि से खेदग्रस्त रहना पड़ेगा; समय के सदुपयो पर ध्यान दें। ता० ४-५-१३-१४-२२-२३ अशुभ हैं।

कुम्भः—घरेलू-सुख और आनन्द की प्राप्ति होगी। दान-पुण्य की चेष्टा में संलग्न रहेंगे। देश-प्रेम की भाव पैदा होगी। शुभ दशावालों को वस्त्र वाहन भूषण स्वर्ण मणि-मुक्ता आदि की प्राप्ति संभव है। राजनेता-मन्त्रियों सम्मान एवं कोष की वृद्धि होगी। विद्यार्थियों को अध्ययन एवं परीक्षा में परिश्रमपूर्वक सफलता मिलेगी। उत्तरार्द्ध कष्टकर यात्रा संभव है। ता० ६-७-१५-१६-२४-२५ नेष्ट हैं।

मीनः—चित्त में उत्साह, वाहन भूषण वस्त्रादि का सुख, स्त्री-सन्तानादि से प्रीति बढ़ेगी। चालू खर्च के लि संचित द्रव्य का उपयोग करेंगे। उत्तम भोजन-शयन, स्टैण्डर्ड रहन-सहन के उपकरण में अति व्यय होगा। मासोत्तरा में सूर्य मंगल-दोष से उत्साह-भंग, दिनचर्या अव्यवस्थित होगी; मानसिक अस्थिरता का सामना करेंगे। सूर्य मंगल का ज दान-दर्शन आवश्यक है। ता० १-९-१०-१७-१८-२६-२७ अशुभ हैं।

अप्रैल

मेषः—चित्त में अस्थिरता, स्थान-त्याग, कुटुम्बियों से वियोग, कार्य एवं पद की हानि संभव है। घरे कठिनाइयों की वृद्धि, द्रव्य का अति व्यय होगा। उदर-रोग, शरीर-पीड़ा, मानसिक-व्यथा, सिर-नेत्र में कष्ट, भोज शयन में अबेर सबेर मित्र एवं सम्बन्धीजनों से तकरार होगा। यात्रा का विचार स्थगित करें; वर्ना कष्ट बढ़ेगा। सू के उपचार से शान्ति सुलभ होगी। ता० ७-८-१५-१६-१७-२५-२६-२७ नेष्ट हैं।

वृषः—व्यावसायिक लाभ की दृष्टि से मास-फल उत्तम है। नवीन व्यवसाय का शुभारंभ भी संभव है। धर्म कर्म अनुष्ठानादि कार्यों का संपादन होगा। सन्तानपक्ष की प्रगति, आमदनी की वृद्धि, मित्रों की सहानुभूति प्राप्त होगी स्वयं का स्वास्थ्य-सम्वर्द्धन; पत्नी के स्वास्थ्य में न्यूनता रहेगी। उत्तरार्द्ध में विशेष दौड़-धूप से आलस्य-थका का अनुभव करेंगे। ता० १-२-९-१०-१८-१९-२८-२९ चिन्तनीय हैं।

मिथुनः—शारीरिक कष्ट का निवारण होगा। सुख-स्वास्थ्य धन-समृद्धि का उत्तम योग है। यशस्वी जीव का लाभ उठायेंगे। ता० १४ के बाद गुप्त लाभ, भाग्य-वृद्धि, कर्मठ, व्यक्तित्व व्यावसायिक कामों में सफलता प्राप्त होगी राजनीतिज्ञों का जीवन विपत्तिमय व्यतीत होगा। अर्थ-संचय की मनोवृत्ति जगेगी। उत्तम भोजन, नवीन पद अधिकार गृह में आनन्दोत्सव का सुख होगा। ता० ३-४-११-१२-२०-२१-२२-३० अशुभ हैं।

कर्कः—निर्विघ्न यात्रा संपादित होगी। धन स्वास्थ्य मित्र कुटुम्ब-सुख का लाभ होगा। श्रेष्ठजनों के समाग से चित्त प्रसन्न रहेगा। ता० १४ तक अत्यधिक श्रमरत रहने से शरीर क्लान्त रहेगा; उत्तरार्द्ध में आनन्द-लाभ अभीष्ट सिद्धि का योग है। व्यवसायी एवं राज्य-कर्मचारी प्रगति का अनुभव करेंगे। शुभ समाचारों की प्राप्ति, लेखन भाषण की योग्यता बढ़ेगी। ता० ५-६-१३-१४-२३-२४ नेष्ट हैं।

सिंह :—राश्येश सूर्य के अष्टम-नवम प्रभाव से स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। कानूनी विवाद एवं शत्रु-संघर्ष जीवन संत्रस्त रहेगा। सुदूरवर्ती यात्रा से बचना चाहिये, वाहन-दुर्घटना का भय है। उद्योग-धन्धे में विघ्न-बाधा मानसिक अशान्ति, पारिवारिक अवरोध-विरोध, धन एवं व्यक्तित्व की हानि होगी। श्रीशिवजी की पूजा एवं 'ॐ नम शिवाय' मंत्र का नित्य जप करें। ता० ७-८-१५-१६-२६-२७ अशुभ हैं।

कन्या :—उदर-रोग से शरीर-पीड़ा होगी। बुद्धि-भ्रंश, नेत्र-दोष, द्रव्य-हानि, स्थान-च्युति, शत्रु-वृद्धि, भ्रमर और कुटुम्बियों से असुविधा प्राप्त होने का दुर्योग है। चोर-अग्नि एवं राज-भय की संभावना रहेगी। वाक्य में कठोरता शारीरिक कष्ट, रोग-शोक की वृद्धि होगी। दीन-दुखियों को अन्न-दान दें, ... की सेवा में संलग्न रहें तो कल्याण होगा। ता० १-२-९-१०-१८-१९-२८-२९ खराब हैं।

तुला :—आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। प्रतिष्ठा-प्राप्ति, प्रिय-दर्शन, आयु-वृद्धि, राजकीय सम्मान के लाभ का योग है। सन्त-दर्शन, स्त्री सन्तान का सुख, ऋण मुक्ति एवं सन्तोषजनक विशिष्ट कार्यों का सम्पादन होगा। द्रव्य-संचय-सुख की प्राप्ति, शत्रुओं का दुष्प्रभाव निवृत्त होगा। विद्यार्थियों को अच्छी सफलता मिलेगी। मासान्त में शुभ-समाचार सुलभ होगा। ता० ३–४–११–१२–२०–२१–३० कष्टप्रद हैं।

वृश्चिक :—प्रभावशाली कार्य करने का अवसर मिलेगा। शत्रु-नाश, वस्त्र अन्न स्वर्ण-भूषण का लाभ, वाक्पटुता से विवादों में विजय प्राप्त होगी। दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी। श्रेष्ठजन की संगति सहायता से अभ्युदय एवं शिक्षा का विकास होगा। ख्याति बढ़ेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख-आनन्द मिलेगा। पुत्र का भाग्योदय होगा; मासान्त में भोजन-शयन बाधित होगा। ता० ५–६–१३–१४–२३–२४ खराब हैं।

धनु :—सन्तानपक्ष से उद्विग्नता, स्त्री को शारीरिक कष्ट, यात्रा में परेशानी, दुश्मनों के षड्यन्त्र से हानि होगी। हिस्सेदारों से झगड़ा-झंझट या अलगाव भी संभव है। षष्ठस्थ गुरु के दान व्रत जप एवं पुखराज रत्न के धारण से अभीष्ट-सिद्धि होगी। उत्तरार्द्ध में सांसारिक सुखों की प्राप्ति, मित्र-मिलाप, आमोद-प्रमोद, व्यावसायिक सफलता एवं भ्रमण-मनोरंजन का आनन्द मिलेगा। ता० ७–८–१५–१६–१७–२६–२७ नेष्ट हैं।

मकर :—आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। मनोकामना पूर्ण होगी। दुःख-जाल की निवृत्ति, शुभ समाचारों की प्राप्ति, मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि, यात्रा में प्रवृत्ति का योग है। दान पुण्य धर्म इत्यादि का संस्कार बढ़ेगा। धनागम तथा विविध कार्यों में सफलता का उत्तम सुयोग है; अशुभ दशावालों को स्त्री-जनित विशेष पीड़ा संभव है। आलस्य-प्रमाद से बचना आवश्यक है। ता० १–२–९–१०–१८–१९–२८–२९ अशुभ हैं।

कुम्भ :—यश पराक्रम की वृद्धि होगी। चित्त में प्रसन्नता, प्रेमीजनों से मिलन, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। नौकरीवालों की विशेष प्रगति न हो सकेगी। आयुर्बल बढ़ेगा। विशेष परिश्रम से जीविका निर्वाह होगा। उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य बाधा, दिमागी परेशानी, कौटुम्बिक सहयोग का अभाव रहेगा। श्रीहनुमद् आराधना से स्वास्थ्य की रक्षा एवं आत्मशान्ति मिलेगी। ता० ३-४-११-१२-२०-२१-३० नेष्ट हैं।

मीन :—आमवात, उदर-दोष से कष्ट होगा। पारिवारिक नवीन समस्याएँ उत्पन्न होंगी। राश्येश गुरु का बल प्राप्त हो रहा है, इसलिए आगत विघ्न-बाधाओं का शमन होगा। धर्मावलम्बन की वृद्धि, मान-प्रतिष्ठा, धन-धान्यादि की समृद्धि, कान्ति बल प्रसन्नता का लाभ होगा। बुद्धि में चमत्कारिक प्रभाव पैदा होगा, व्यावसायिक स्थिति में सुधार का स्रोत मिलेगा। ता० ५-६-१३-१४-२३-२४ नेष्ट हैं।

मई

मेषः—राश्येश मंगल व्ययस्थ होकर परेशानी बढ़ा रहा है। उदर-रोग, शरीर-पीड़ा, मानसिक-व्यथा, यात्रा में कष्ट का योग है। भोजन-शयन में अबेर-सबेर, इष्ट-मित्र सगे-सम्बन्धियों से चिन्ता होगी। अशुभ दशावालों को स्थानच्युति एवं स्त्रीजनित पीड़ा का विशेष अनुभव होगा। षष्ठस्थ राहु के प्रवेश से आगत विघ्न-विवादों का निवारण होगा। जीविका-निर्वाह का आधार मिलेगा। ता० ४–५–१३–१४–२२–२३–२४ अशुभ हैं।

वृषः—संघर्ष की समाप्ति, उचित समाधान की प्राप्ति, अस्वाभाविक भोग-वासना की वृद्धि होगी। स्त्री सन्तान और कुटुम्बियों का सहयोग मिलेगा। कानूनी विवाद में सफलता प्राप्त होगी। आयुर्बल की वृद्धि होगी। पदोन्नति एवं व्यावसायिक सफलता के लिए हरिद्रा-गणेश का मन्त्र-जप आवश्यक है। एकादश में केतु का प्रवेश कल्याण-मार्ग प्रशस्त करेगा; बाधाएँ-निवृत्ति होंगी। ता० ६–७–१५–१६–१७–२५–२६ नेष्ट हैं।

मिथुनः—राज-सम्मान की प्राप्ति, बुद्धि में चमत्कारिक प्रभाव पैदा होगा। सूर्य-दोष के कारण उत्तरार्द्ध में कठिनाइयाँ और व्यय की वृद्धि होगी। साढ़ेसाती शनि का अन्तिम चरण है जिससे आर्थिक उतार-चढ़ाव देखना पड़ेगा। चिन्ताओं से भोजन-शयन बाधित होगा। पुत्र के मनमानी प्रवृत्ति से क्रोध-शोक की वृद्धि होगी। श्रीसुन्दरकाण्ड-रामायण के नित्य पाठ से शान्ति मिलेगी। ता० १–८–९–१८–१९–२७–२८–२९ अशुभ हैं।

कर्कः—व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा। स्त्री सन्तान भ्रातृ-वर्ग का सुख मिलेगा। द्रव्य-लाभ, संचय की स्थिति सामान्य होगी। मान-प्रतिष्ठा, कान्ति-बल, आनन्द की समृद्धि उत्तरार्द्ध में होगी। हृदय में सुन्दर विचारशीलता और धार्मिक बुद्धि जागृत होगी। तृतीय में राहु के प्रवेश से बिगड़ी परिस्थिति सुधरेगी। बुद्धि भाग्य और कर्म-शक्ति का विकास निश्चितरूप से होगा। ता० २–३–१०–११–१२–२०–२१–३०–३१ खराब हैं।

सिंहः—मास पर्यन्त सूर्य शनि का दोष व्याप्त रहेगा। बध-बन्धन, रोग-शोक, चोर-अग्नि एवं इष्ट-मित्र-कुटुम्बियों से क्षति की आशंका है। द्रव्य का अति व्यय होगा। रोजी-रोजगार में विघ्न-बाधा का दुर्योग है। धनाभाव, उष्णता, सेवकों से हानि होगी। साथी-सहयोगी विमुख हो जायेंगे। विशेष शत्रु-बाधा की स्थिति में बगलामुखी के मन्त्र-जप से कल्याण होगा। ता० ४–५–१३–१४–२२–२३–२४ खराब हैं।

कन्याः—राज्याधिकारी वर्ग से क्षति की आशंका है। वृद्धजन को पारलौकिक सुखों की प्राप्ति होगी। दुःख दारिद्रय, मानसिक तनाव, द्रव्य का अतिव्यय, गुप्तांग में रोग एवं नवीन समस्याओं की उत्पत्ति होगी; फिर भी उत्तरार्द्ध में कठोर परिश्रम से अर्थ-लाभ, जीविका-निर्वाह, भाग्यवानों को तीर्थाटन का सुयोग मिलेगा। श्रीरामरक्षास्तोत्र का नित्य पाठ करें। ता० ६–७–१५–१६–१७–२५–२६ खराब हैं।

तुलाः—सर्दी-गर्मी से शरीर कष्ट होगा। वाक्य में कठोरता, स्वजनों से अपवाद, क्रोध-लोभ की वृद्धि होगी। कोई मित्र शत्रुवत् हानि पहुँचाने की चेष्टा करेगा। अभीष्ट-कार्य की हानि, दीनता, उद्यम-हीनता, मनोव्यथा, स्त्री सन्तान को रोग-भय होगा। षष्ठस्थ केतु मंगल से कष्टकर स्थिति का शमन, द्रव्य-लाभ, शत्रुओं पर विजय एवं अपव्यय पर नियन्त्रण होगा। ता० १–८–९–१८–१९–२७–२८–२९ खराब हैं।

वृश्चिकः—उत्तम भोजन, आरोग्य एवं विविध सुखों का भोग प्राप्त होगा। धातु-व्यवसायी, शिक्षकगण का जीवन कुछ संकटापन्न रहेगा। शुभ दशावालों को मित्र-मिलाप, भ्रमण मनोरंजन का आनन्द मिलेगा। विचारशीलता एवं धर्मावलम्बन की वृद्धि होगी। एकादश में राहु के प्रवेश से आलस्य प्रमाद की निवृत्ति, स्फूर्ति का जागरण, आत्मबल की वृद्धि और लाभदायी अवसर की प्राप्ति होगी। ता० २–३–१०–११–१२–२०–२१–३०–३१ खराब हैं।

धनुः—धन-लाभ, स्त्री पुत्रादि-सुख, बौद्धिक विकास एवं शत्रुओं का नाश होगा। राजकीय प्रतिष्ठा, विरोधी वातावरण पर विजय, अनेक उद्यमों से मुद्रा-लाभ होगा। मासारम्भ में पित्तजनित रुधिर-प्रकोप तथा पीड़ा का भय है; मासान्त में स्वास्थ्य की रक्षा होगी। नवीन गृह-निर्माण का सुयोग है। साहस पराक्रम उत्साह यशोभिवृद्धि होगी। शान्ति और धैर्य से कर्मक्षेत्र में जुटे रहें निश्चित सफलता मिलेगी। ता० ४–५–१३–१४–२३–२४ नेष्ट हैं।

मकरः—तृतीय मंगल केतु के प्रभावस्वरूप आर्थिक लाभ, पुरुषार्थ-सिद्धि पराक्रम एवं साहस की वृद्धि होगी। शासकीय कामों में सफलता की प्राप्ति, लेखन सम्पादन भाषण की क्षमता बढ़ेगी। स्त्री पुत्र बन्धुओं का सुख, वाहन-लाभ का सौभाग्य प्राप्त होगा। मासान्त में वाहन-दुर्घटना से सतर्कता अनिवार्य है। व्यवसाय में किसी प्रकार का परिवर्तन उचित न होगा। गृहस्थ-जीवन में व्यय की अधिकता रहेगी। ता० ६–७–१५–१६–२५–२६ नेष्ट हैं।

कुम्भः—चतुष्पद-लाभ, पुत्र-सुख, शत्रु-नाश एवं यश की उपलब्धि होगी। अभीष्ट फल की सिद्धि, नवीन अधिकार सम्पत्ति का लाभ; किन्तु सम्पत्ति के मामलों में झगड़े-झंझट का भी दुर्योग है। उपासना-मार्ग के अवलम्बन से व्यवसाय-नौकरी की विघ्न-बाधाएँ निवृत्त होंगी। कोमल शरीरवालों के लिए शारीरिक निर्बलता का योग है। महिलाओं की जीवनचर्या अव्यवस्थित रहेगी। इस महीने की ता० १–८–९–१८–१९–२७–२८ खराब हैं।

मीनः—बुद्धि का विकास होगा। धन-लाभ, रोग-व्याधियों का नाश, व्यावसायिक प्रयत्नों में सफलता मिलेगी। विरोधियों पर विजय, आनन्द आमोद-प्रमोद भ्रमण का सुअवसर प्राप्त होगा। प्रताप-प्रभाव की वृद्धि, अभीष्ट-सिद्धि, उत्तम भोजनादि का लाभ होगा। साधु-स्वभाव बनाये रखना आवश्यक है। गृहस्थ-जीवन सुखी रहेगा, सामाजिक जीवन में थोड़ी परेशानी होगी। ता० २–३–१०–११–२०–२१–३०–३१ अशुभ हैं।

जून

मेषः—आर्थिक उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। शत्रु-वृद्धि, रुके हुए द्रव्य-प्राप्ति में बाधा, परदेश-यात्रा से कष्ट का योग है। विभिन्न प्रकार की समस्याएँ पैदा होंगी। समाधान का राह नहीं मिलेगा। समाज एवं पड़ोसियों के बीच अनादर, धातु-क्षय से निर्बलता, आत्म-बल की हानि होगी। उत्तरार्द्ध में सूर्य-कृपा से परिस्थिति सुधरेगी। प्रयत्नपूर्वक बिगड़े कार्य को बनाया जा सकेगा। ता० १–२–९–१०–१९–२०–२८–२९ नेष्ट हैं।

वृषः—गृहस्थ-जीवन अभावों का शिकार बनेगा। अभीष्ट कार्यों में बाधा, नेत्र उदर हृदय में पीड़ा, कुटुम्बियों से अनबन का दुर्योग है। मन में अशान्ति, श्रम और उद्यम में अरुचि होगी। अस्वाभाविक तृष्णा व्यसन दुर्भावना एवं भोग-कामना की वृद्धि पर नियन्त्रण जरूरी है। उत्तरार्द्ध में स्त्री सन्तान को रोग-भय होगा। व्यवसाय में किसी परिवर्तन का निश्चय हानिप्रद होगा, वृथा विवाद से बचें। ता० ३–४–११–१२–१३–२१–२२–३० नेष्ट हैं।

मिथुनः—जय आरोग्य अन्न धन वस्त्रादि का लाभ होगा। आनन्द-प्राप्ति, अभीष्ट-सिद्धि एवं विभिन्न कार्यों में सफलता मिलेगी। परिचय का क्षेत्र बढ़ेगा। प्रताप-प्रभाव मान-मर्यादा की वृद्धि होगी। आमोद-प्रमोद-प्रियता, वस्त्रादि की प्राप्ति, अदालती कामों में सफलता मिलेगी। धुन के पक्के लोग उद्योग-धंधे में विशेष सफल होंगे। व्यक्तित्व में गंभीरता का समावेश होगा। ता० ५–६–१४–१५–२३–२४–२५ खराब हैं।

कर्कः—उत्तम धन-लाभ होगा। वाक्पटुता से बिगड़े कार्य बनेंगे। कर्मठ व्यक्तित्व से इज्जत-शोहरत बढ़ेगी। आपकी नवीन सूझ-बूझ लाभदायक सिद्ध होगी। श्रेष्ठजन को किसी नये पद-प्रतिष्ठा-अधिकार की प्राप्ति होगी। उत्तरार्द्ध में सरकारी अवकृपा से कुछ धन-क्षति, स्वास्थ्य-हानि एवं [illegible] का योग है। 'ॐ नमो भगवतेवासुदेवाय' मंत्र के नित्य जप से यह बाधा दूर होगी। ता० ७–८–१६–१७–१८–२६–२७ अशुभ हैं।

सिंह :—शारीरिक निर्बलता, स्त्रीपक्ष से दुःख, शत्रु-भय एवं कुटुम्बियों से झगड़े का भय है। शस्त्र अग्नि चोर से क्षति की आशंका, बुद्धि-भ्रंश, निस्तेज शरीर एवं सभी कार्यों में विघ्न-बाधा का दुर्योग है। उत्तरार्द्ध में व्यापारिक स्थिति सुधरेगी। शुभ दशावालों को अदालती कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रु पराभूत होंगे। चिर-परिचितों से मुलाकात होगी। किसी विशेष कार्य में हैसियत से अधिक खर्च करना पड़ेगा। ता० १-२-९-१०-१९-२०-२८-२९ नेष्ट हैं।

कन्या :—कान्तिक्षय, मिथ्यापवाद, अकारण धन और पुण्य की हानि होगी। जीविका-निर्वाह में बाधा आयेगी। विभिन्न रोगों से शरीर पीड़ित रहेगा। मानसिक चिन्ताएँ बढ़ेंगी। ता० १४ के बाद सूर्य बुध शुक्र की अनुकूलता से देव-कृपा, मित्र-लाभ और स्वास्थ्य-सुधार का योग है। पराक्रम, पुरुषार्थ एवं उत्साह की वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा में सफलता सुलभ होगी। इस मास की ता० ३-४-११-१२-१३-२१-२२-३० खराब हैं।

तुला :—मास-फल अशुभ है। शत्रु-संघर्ष से जीवन संत्रस्त रहेगा। स्त्री असन्तुष्ट रहेगी। दुर्वचन, लोकापवाद, ज्वर खांसी रक्तचाप से शरीर-पीड़ा, मानसिक पश्चाताप होगा। आमदनी की कमी, अकारण धन और पुण्य की हानि, कान्तिक्षय का योग है। भाग्य-बाधा, आलस्य-प्रमाद और व्यय की अधिकता रहेगी। कुत्सित भोजन एवं यात्रा में विघ्न-बाधाएँ कष्टप्रद होंगी, गरीबों को अन्न-दान दें। ता० ५-६-१४-१५-२३-२४-२५ अशुभ हैं।

वृश्चिक :—राश्येश मंगल के छठे स्थान में प्रवेश से शारीरिक दुर्बलता अवश्य होगी; परन्तु अन्न धन स्वर्ण-वस्त्रादि की प्राप्ति एवं विघ्न-बाधाओं का निवारण होगा। आनन्द-लाभ, ख्याति-वृद्धि, शत्रु-भयरहित शुभ विचारों का उदय होगा। जटिल रोगों की निवृत्ति, ऋण-मुक्ति, मित्र-मिलाप, पुत्र-सुख एवं अभीष्ट लाभ होगा। उत्तरार्द्ध में मित्रों से असुविधा रहेगी। ता० ७-८-१६-१७-१८-२६-२७ अशुभ हैं।

धनु—शत्रुओं का पराजय होगा। लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी। कोई महत्वपूर्ण शुभ घटना होगी। धार्मिक आस्था बढ़ेगी। पराधीनता की समाप्ति, आकस्मिक यात्रा, हर्षदायक समाचार की उपलब्धि होगी। ता० १४ के बाद श्रीमतीजी का स्वास्थ्य ढीला रहेगा। आधुनिक उपकरणों के निमित्त अति व्यय करना पड़ेगा। राश्येश गुरु के प्रसन्नार्थ नारायण-कवच का नित्य पाठ, केले के वृक्ष का पूजन करें। ता० १-२-९-१०-१९-२०-२८-२९ अशुभ हैं।

मकर :—शारीरिक मानसिक शिथिलता का अनुभव होगा। धर्म-कर्म में रुचि एवं तत्परता के परिणामस्वरूप महत्वकांक्षाएँ, उत्साह और स्वबाहुबल की वृद्धि होगी। पारिवारिक स्थिति उत्तम रहेगी। प्रयासों में स्वल्प लाभहोगा। कुछ विरोधी मित्र बन जायेंगे। उत्तरार्द्ध में पुराने सहयोगियों से पुनः सम्पर्क स्थापित होगा; किंतु आराम की कमी और श्रम की अधिकता रहेगी। धन के दुर्विनियोग से बचें। ता० ३-४-११-१२-१३-२१-२२-३० अशुभ हैं।

कुम्भ :—मंगल की अनुकूलता से द्रव्य-लाभ, उत्तम भोज्य पदार्थों की प्राप्ति एवं शत्रुओं का पराजय होगा। आरोग्य-लाभ एवं वस्त्रादि-क्रय के निमित्त अधिक द्रव्य व्यय करेंगे। प्रयासों में सफलता मिलेगी। नेतृत्व की प्रवृत्ति का अभ्युदय, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा, जन-प्रियता की वृद्धि होगी। आगत-अनागत बाधाओं का समाधान, आमोद-प्रमोद भ्रमण का अवसर मिलेगा। ता० ५-६-१४-१५-२३-२४-२५ अशुभ हैं।

मीन :—सुख-सुविधापूर्वक प्रगति की राह मिलेगी। कामनाएँ पूर्ण होंगी। स्वतन्त्र धन्धे का कार्य-विस्तार होगा। विद्यार्थियों को विपरीत बुद्धि से बचना चाहिये। उच्च कक्षा में दिक्कत से प्रवेशाधिकार मिलेगा। महिलाओं को घरेलू सुख-सहयोग की आशातीत उपलब्धि होगी। तस्कर व्यापारी सही मार्ग पर आयेंगे। गुरुवार के व्रत, गोपालसहस्र-नाम के नित्य पाठ से आत्मिक और बौद्धिक विकास देगा; द्रव्याभाव नहीं रहेगा। ता० ७-८-१६-१७-१८-२६-२७ अशुभ हैं।

जुलाई

मेष :—प्रताप-प्रभाव की वृद्धि होगी। उत्सव एवं अन्य श्रेष्ठ कार्यों में सम्मिलन का सौभाग्य मिलेगा। व्यावसायिक जीवन में प्रगति का एक नया मोड़ मिलेगा। आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र वैभव सम्पदा-प्राप्ति की आशा रहेगी। वैवाहिक-सुख, दाम्पत्य-जीवन सुन्दर रहेगा। शिक्षकों के स्थान-परिवर्तन एवं आय-वृद्धि का सुयोग है। मासोत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य-रक्षा पर ध्यान देते हुए लोकापवाद से सतर्क रहें। ता० ६-७-८-१६-१७-२५-२६ नेष्ट हैं।

वृष :—मानसिक असन्तोष, सर्दी-गर्मी से शरीर-पीड़ा, नेत्र-रोग, खाद्यान्न व्यवसायियों को मर्माहत होना पड़ेगा। शत्रु-चिन्ता नहीं है; मास-मध्य में स्वयं एक समाधानपूर्ण स्थिति तक पहुँच जायेंगे। पारिवारिक कौटुम्बिक समस्याओं का निवारण होगा। सभी कार्य पराक्रमपूर्वक लाभ व सफलता के साथ सम्पादित होगा। भोजन-शयन की दिनचर्या पर ध्यान रखने से स्वास्थ्य रक्षा होगी। ता० १-९-१०-१८-१९-२७-२८ नेष्ट हैं।

मिथुन :—चित्त में चंचलता, पेचिश, गैस्ट्रिक ट्रबुल, व्यवसाय के आरम्भ में बाधा, सुखाद्य भोजन की प्राप्ति होगी। ता० १९ के बाद आनन्द-लाभ, आय-वृद्धि, सुखोपभोग की उपलब्धि होगी। परिश्रम की अधिकता से घबड़ायें

नहीं, यथेष्ट लाभ और सफलता मिलेगी। परिवार के रगड़े-झगड़े समाप्त होकर शुभ कार्यों का सम्पादन होगा स्त्री से सुख एवं सहयोग मिलेगा। ता० २-३-११-१२-२०-२१-२२-२९-३०-३१ नेष्ट हैं।

कर्क :—झगड़े-झंझट का कुयोग है। देश-त्याग, सन्तान से मतभेद, उन्नति-मार्ग में विघ्न तथा चित्त में अ रता रहेगी। पुत्र की मनमानी प्रवृत्ति से कष्ट होगा। विद्यार्थियों के लिए स्वप्नदोष(धातु-क्षय) से निर्बलता का है। परदेशवासी स्वदेश लौटेंगे। खर्च बढ़ेगा। ता० ८ से एकादश में मंगल का प्रवेश नाम, यश और ऐश्वर्य बढ़ाये बेकारों को आजीविका का साधन मिलेगा। ता० ४-५-१३-१४-१५-२३-२४ अशुभ हैं।

सिंह :—वाक्पटुता से रुके द्रव्य की प्राप्ति, परिचय के क्षेत्र की वृद्धि और अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी। धा बुद्धि बनी रहेगी। जय, आरोग्य, अन्न धन वस्त्रादि-लाभ और कर्म-क्षेत्र में सफलता मिलेगी। पुत्र-सुख एवं बढ़ेगा। ख्याति-वृद्धि, व्यक्तित्व का विकास, उत्तम ग्रन्थों के पढ़ने का अवसर मिलेगा। मासान्त में उदर-पीड़ा, कु भोजन की प्राप्ति, कान्तिक्षय एवं अपवादग्रस्त होना पड़ सकता है। ता० ६-७-८-१६-१७-२५-२६ अशुभ हैं।

कन्या :—धन, स्वास्थ्य मित्र कुटुम्ब-सुख का लाभ होगा। राज-नेताओं एवं बड़े लोगों के समागम से प्रसन्न होगी। आनन्द-लाभ, अभीष्ट-सिद्धि, शारीरिक शिथिलता का निवारण होगा। व्यवसाय में पूँजी बढ़ाने की चेष्टा स होगी। गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। विरोधियों पर विजय, अध्ययन-अध्यापन यात्रा सत्कर्म-सिद्धि की आशा रहे नौकरीवालों की पदोन्नति एवं स्थानान्तरण का योग है। ता० १-९-१०-१८-१९-२७-२८ अशुभ हैं।

तुला :—राज-भय, वस्त्रादि की हानि, सन्तान से मतभेद, उदर-रोग एवं व्यवसाय में हानि का योग है। त १६ से दशम का सूर्य परिस्थितियों में सुधार लायेगा। राजनीतिज्ञों के अतिरिक्त अन्य सभी क्षेत्र के व्यक्ति प्र सफल होंगे। रुका हुआ कार्य भी एकाएक संपादित हो जायेगा। शत्रुओं पर विजय, आरोग्य, द्रव्य अन्न वस्त्रादि लाभ होगा, खर्च नियन्त्रित रहेगा। ता० २-३-११-१२-२०-२१-२२-२९-३०-३१ अशुभ हैं।

वृश्चिक :—शस्त्र-प्रियता, परदेशवास, कर्म-निष्फलता, रक्तचाप एवं हृदय रोग की संभावना है। कान्तिक्ष व्यर्थ दोषारोपण, पदच्युति, रोग ऋण रिपु-भय की आशंका है। नौकरीवालों को विशेष परेशानी न होगी। उत्स पूर्वक कर्मक्षेत्र में जुटे रहने से रोजी-रोटी की समस्या हल होगी। ऋण का लेन-देन न करें, लिखा-पढ़ी हस्ताक्षर वगै में सतर्क रहें। श्रीहनुमद्-आराधना से कल्याण होगा। ता० ४-५-१३-१४-१५-२३-२४ खराब हैं।

धनुः—शत्रु-वृद्धि, स्वजनों से विरोध, मानसिक अशान्ति, ज्वर-व्रण-पित्त रोग का भय होगा। द्रव्य-कष्ट, शस्त्र चोर एवं अग्नि-भय, अशुभ दशावालों को राज-कोप का भाजन बनना पड़ेगा। कोर्ट-कचहरी के दौड़-धूप से परेश होगी। साधु- बभाव बनाये रखना आवश्यक है। ता० ८ से छठे मंगल एवं ता० १८ से सप्तम गुरु का विशेष अनुकूल फ मिलेगा। अशुभ प्रभावों का निवारण होगा। ता० ६-७-८-१६-१७-२५-२६ नेष्ट हैं।

मकरः—धन-लाभ, सुरुचिकर भोज्य पदार्थों की प्राप्ति, उच्च शिक्षार्थियों के लिए विदेश-यात्रा का योग है विरोधियों पर विजय, नाम यश ऐश्वर्य का संवर्धन, बड़ा-से-बड़ा कार्य भी हाथ में लेते ही सफल होगा। गृह-निर्मा नये व्यवसाय का शुभारम्भ, परिवार में मंगल कार्यों का संपादन होगा। सुख-सम्मान एवं आरोग्य का लाभ होगा सफल यात्रा, बौद्धिक विकास, उपासना में रुचि बढ़ेगी। ता० १-९-१०-१८-१९-२७-२८ नेष्ट हैं।

कुम्भः—रोजी-रोजगार की स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी। स्त्री-सौख्य के निमित्त अति व्यय होगा। विभिन्न कार्यक्रमों में अच्छी सफलता मिलेगी। गृह-मरम्मत, नयी आजीविका का अंगीकरण, देव-प्रतिष्ठा, राजकीय सफलता के लिए यह एक उत्कृष्ट और आदर्श काल है। उच्च अधिकारी अनुकूल रहेंगे। अभीष्ट-सिद्धि, मित्र कुटुम्ब-सुख श्रेष्ठजनों के सहयोग से भाग्योदय एवं सत्कर्मोदय होगा। ता० २-३-११-१२-२१-२२-२९-३० नेष्ट हैं।

मीनः—रोग दुख विघ्न-बाधाओं का शमन होगा; कुटुम्बियों से कुछ अनबन के अतिरिक्त अन्य सभी फल उत्त होगा। अच्छे लोगों की संगति प्राप्त होगी। उचित लाभ उठाने की तैयारी पहले से ही कर लेनी चाहिये। स्था परिवर्तन, पुण्य कार्यों में विशेष प्रवृत्ति रहेगी। ता० ८ से तृतीय में मंगल का प्रवेश उन्नति के मंगलमय पथ पर अग्रस करेगा। उत्तरार्द्ध में विश्वासपात्रों से धोखे का भय है। ता० ४-५-१३-१४-२३-२४ नेष्ट हैं।

अगस्त

मेष :—मित्रों से सहयोग मिलेगा। शत्रु पराजित होंगे। रोजी-रोजगार मध्यम, आर्थिक उतार-चढ़ाव की स्थि रहेगी। सामाजिक मर्यादा के विकास की दृष्टि से मास-फल उत्तम है। नित्योपयोगी पदार्थ अन्न-वस्त्रादि का लाभ होगा मासारम्भ में स्वास्थ्य और [illegible] स्थिति ठीक रहेगी। ता० २१ से तृतीय में मंगल का प्रवेश हृदय में साहस पंचार करेगा। छोटी-मोटी यात्राएँ सम्पादित होंगी। ता० ३-४-१२-१३-२२-२३-३०-३१ नेष्ट हैं।

वृषः—सत्कर्म-लाभ, भाग्य-वृद्धि, साहस-पुरुषार्थ का विस्तार होगा। व्यवसाय में न्यायोचित लाभ होगा। सहयोगियों से पूर्ण सहानुभूति रहेगी। वृद्धजन को तीर्थाटन का सुयोग, किसी-किसी को पारलौकिक सुख मिलेगा। अत्यधिक कार्य-व्यस्तता से शरीर क्लान्त रहेगा। नूतन वस्त्रादि मान, यश एवं प्रतिष्ठा का लाभ होगा। आदर-सत्कीर्त्ति-द्रव्यागम, मस्तिष्क में चमत्कारिक बुद्धि की उपज होगी। ता० ५-६-१४-१५-२४-२५ अशुभ हैं।

मिथुनः—विद्या-बुद्धि, लेखन-भाषण की क्षमता बढ़ेगी। यश ख्याति सुकृत्य का लाभ होगा। राजाश्रय की प्राप्ति, द्रव्यागम, सम्मान-वृद्धि, मकान वाहन भूमि आदि का सुख मिलेगा। उत्तरार्द्ध में रुका हुआ काम पूरा होगा। मानसिक चिन्ता-व्यथा दूर होकर चित्त प्रसन्न रहेगा। स्वाध्याय पूजा-पाठ की रुचि बढ़ेगी। सट्टे, जुए एवं मादक द्रव्य के सेवन से बचते हुए धन और स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिये। ता० ७-८-९-१६-१७-१८-२६-२७ कष्टप्रद हैं।

कर्कः—अन्न धन वस्त्रादि की कमी खलेगी। माता-पिता को शरीर कष्ट होगा। शत्रु-भय, रोग-वृद्धि, आत्म-शोक, स्त्री के लिए अधिक कष्टकारक समय है। अभीष्ट कार्य में विघ्न-बाधा, धन एवं कान्ति की हानि, कुटुम्बियों से रगड़े-झगड़े का योग है। स्थाई वैभव क्षीण होगा। कुत्सित भोजन की प्राप्ति, स्वजन-वियोग से चिन्ता, संगति-दोष से दुःखसाहसिक कामों में प्रवृत्ति संभव है। ता० १-२-१०-११-१९-२०-२१-२८-२९ चिन्तनीय हैं।

सिंह :—स्वजन-वियोग, वस्त्र-अन्नादि पदार्थों का अभाव, स्वास्थ्य व कान्ति का क्षय होगा। रोग, दुःख, अपौष्टिक पदार्थों का भोजन, राज-भय तथा हर काम में नानाविध अड़चनों का सामना करना पड़ेगा। यात्रा में असुविधा होगी। दिनचर्या अव्यवस्थित रहेगी, खर्च बढ़ेगा। ता० २१ से एकादश में मंगल का प्रवेश साहस शक्ति प्रदान करेगा। उद्यमहीनता दूर होगी। मन प्रसन्न रहेगा। ता० ३-४-१२-१३-२२-२३-३०-३१ खराब हैं।

कन्या :—लहने-तकाजे की चिन्ता दूर होगी। गृह में किसी आनन्दोत्सव का सुख होगा। व्यवसाय, नौकरी में उत्तम सफलता, डाक्टर वकीलों की चाँदी रहेगी। द्रव्य-लाभ-संचय नवीन पद सुस्वास्थ्य और बड़ों के अनुग्रह का लाभ होगा। उत्तरार्द्ध में शत्रु वदी की चेष्टा करेंगे। शक्ति विनायक के दर्शन-पूजन से अशुभ का निवारण तथा सत्कर्मों का अभ्युदय होगा। अपव्यय से बचें। ता० ५-६-१४-१५-२४-२५ अशुभ हैं।

तुला :—मासारम्भ में पत्नी सन्तान का सुख, आकस्मिक द्रव्य-लाभ एवं कानूनी विवाद का निवारण होगा। आरोग्य-लाभ, शारीरिक आकर्षण की वृद्धि, सुदूरवर्ती शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। प्रतियोगी पराभूत होंगे। रोजी-रोजगार की स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। श्रेष्ठजन को भूमि भवन वाहनादि का लाभ होगा। मान-सम्मान बढ़ेगा। दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी। लेन-देन में सावधानी रक्खें। ता० ७-८-९-१६-१७-१८-२६-२७ नेष्ट हैं।

वृश्चिक :—उत्साह ठंडा पड़ जायेगा। कर्म-क्षेत्र से असन्तोष बना रहेगा। रोग ऋण एवं शत्रु-बाधा की विशेष चिन्ता होगी। स्त्री सन्तान के स्वास्थ्य पर ध्यान देना अनिवार्य रहेगा। भाग्यवादी जीव हतोत्साहित रहेंगे; आलस्य प्रमाद त्यागकर कर्मनिष्ठ बनना आवश्यक है। मासोत्तरार्द्ध में नौकरी व्यवसाय की प्रगति होगी। साहसिक कामों में प्रवृत्ति एवं सत्कर्म उदित होगा। ता० १-२-१०-११-१९-२०-२१-२८-२९ नेष्ट हैं।

धनुः—आर्थिक कठिनाइयाँ बढ़ेंगी। संचित सामान बेचना पड़ सकता है। अदालती कामों में परेशानी, भोजन-शयन में अतिकाल, शस्त्रास्त्र चोर एवं अग्नि-भय की आशंका है। व्यवसाय में लाभ के बजाय हानि होगी। दुर्जनों की संगति, मलिन विचारधारा, स्त्री-पुत्र के सम्बन्ध में विशेष चिन्ता होगी। शान्तिपूर्वक मृतसंजीवनी मन्त्र-जप में लग जाना कल्याणप्रद होगा। ता० ३-४-१२-१३-२२-२३-३०-३१ नेष्ट हैं।

मकरः—राज-कोप, ज्वर व्रण से कष्ट, कुटुम्बियों से मतभेद, व्यय की अधिकता रहेगी। शत्रुबाधा, उद्योग-धन्धे में विघ्न-बाधा, अव्यवस्थित जीवन रहेगा। भ्रातृवर्ग एवं सहयोगियों से मनमुटाव होगा। संघर्ष के क्षण में भी स्वाभिमान की रक्षा करेंगे। मास-मध्य में द्रव्य-लाभ होगा। ता० २१ से छठे मंगल का प्रवेश अटके हुए कार्य की पूर्त्ति करेगा। दीर्घकालीन चिन्ता-व्यथा निवृत्त होगी। समय के सदुपयोग पर ध्यान दें। ता० ५-६-१४-१५-२४-२५ नेष्ट हैं।

कुम्भः—मास-फल उत्तम है। रुके द्रव्य की प्राप्ति होगी। दिनचर्या संयमित रहेगी। रोजी-रोजगार में बरक्कत, भाग्य-दोष का निवारण होगा, यात्रा में सफलता, धार्मिक बुद्धि उपजेगी। सुख-सम्मान की प्राप्ति, रोग-मुक्ति, व्यवसाय-नौकरी की स्थिति में मंगलमय परिवर्तन होगा। उत्तरार्द्ध में गृह-स्वामियों को किरायेदारों से तकलीफ होगी; विवाद से बचना आवश्यक है। ता० ७-८-९-१६-१७-१८-२६-२७ अशुभ हैं।

मीनः—शरीर अस्वस्थ रहेगा। मनमानी प्रवृत्ति से कष्ट होगा। रोजी-रोजगार में घाटे की स्थिति पैदा होगी। अनियमित नित्य कर्म, उदर सिर नेत्र हृदय-रोग से पीड़ा होगी। नेतागिरी का शौक घातक होगा। उन्नति की चेष्टा विफल होगी। चुगुलखोरों से सतर्क रहें हानि संभव है। राशीश गुरु के प्रसन्नार्थ नारायण-कवच और गोपाल-सहस्रनाम का नित्य पाठ करें तो निश्चित कल्याण होगा। ता० १-२-१०-११-१९-२०-२१-२८-२९ खराब हैं।

सितम्बर

मेषः—साहस उत्साह की कमी रहेगी। आर्थिक स्थिति साधारण रहेगी। उत्तम वस्त्र-भोजन और शय्या का आनन्द-सुख मिलेगा। किसी-किसी को कर्म-च्युति एवं उद्यमहीनता का आभास होगा। स्त्री-जनित सुख उत्तम रहेगा। उपहार-पुरस्कार की प्राप्ति होगी। बौद्धिक विकास, सफल यात्रा, सवारी-सुख, परोपकार में प्रवृत्ति होगी। उत्तरार्द्ध में शत्रु-बाधा की निवृत्ति होगी; किन्तु कुछ ऋण लेना पड़ सकता है। ता० ९-१०-१८-१९-२७-२८ नेष्ट हैं।

वृषः—आर्थिक असुविधा, बौद्धिक अशान्ति, बारंबार क्रोध और खीझ का अनुभव होगा। व्यर्थ के कामों में समय का दुरुपयोग, प्रयासों में विफलता, विष बन्धन शस्त्र अग्नि एवं चोर से क्षति की आशंका है। कठिनाई से जीविका निर्वाह होगा। श्रमहीनता, अशुभ कर्म में प्रवृत्ति का योग है। ता० ६ से ढैय्या शनि का प्रवेश कष्टदायी है। नौकरी व्यवसाय की स्थिति असन्तोषपूर्ण रहेगी। उच्चाधिकारी प्रतिकूल रहेंगे। ता० १-२-३-११-१२-१३-२०-२१ २९-३० अशुभ हैं।

मिथुनः—साढ़ेसाती शनि से मुक्त होकर आप निश्चित कल्याण-मार्ग प्राप्त करेंगे। आरोग्य-लाभ, घरेलू सुख, विभिन्न कार्यों में सफलता, धन सम्पत्ति-लाभ, नवीन पद अधिकार एवं न्यायाधिकरण की प्राप्ति होगी। आचरण में पवित्रता बनाये रखना अनिवार्य है। डूबे हुए रकम की पुनर्प्राप्ति, चित्त में प्रसन्नता, कान्ति-लाभ, धैर्य एवं गंभीरता की वृद्धि, अभीष्ट सिद्ध होगा। ता० ४-५-१४-१५-२२-२३ खराब हैं।

कर्कः—क्लेश-वृद्धि, बिना बात का झगड़ा-झंझट, स्वजनों से वैर-विरोध, धन की हानि एवं कार्य में निष्फलता का योग है। मानसिक असन्तोष, उदर-रोग, नेत्र-रोग, निकृष्ट भोज्य पदार्थों की प्राप्ति होगी। मासोत्तरार्द्ध में शुभ-दशावालों को धन-लाभ, अन्न-वस्त्रादि की वृद्धि, आरोग्य-सुख, चित्त में प्रसन्नता पैदा होगी। शत्रुपक्ष से विशेष हानि का भय नहीं रह जायेगा। ता० ६-७-८-१६-१७-२४-२५-२६ अशुभ हैं।

सिंहः—रोजी-रोजगार मध्यम रहेगा। स्त्री पुत्र-चिन्ता, क्रोध और उतावलापन बढ़ेगा। महत्त्वपूर्ण कार्यों में कठोर परिश्रम से कुछ सफलता मिलेगी। सट्टे-वायदे का सौदा मँहगा पड़ेगा। मन में बड़ी अशान्ति रहेगी। अनपेक्षित आगन्तुकों पर अति व्यय होगा। भोजन-शयन में अतिकाल, अधिकारच्युति, अकारण धन और पुण्य की हानि होगी। पित्तजनित पीड़ा से शरीर कष्ट होगा। ता० ९-१०-१८-१९-२७-२८ नेष्ट हैं।

कन्याः—स्थानच्युति, पदावनति, कार्य में विफलता, रोग ऋण रिपु-भय की आशंका है। उतावलेपन से बनता हुआ कार्य बिगड़ जायेगा। प्रिय कुटुम्बी से वियोग, पदाधिकार की हानि, अधिक व्यय और कठिनाइयों की वृद्धि होगी। उदर नेत्र कमर एवं पैर में वायुजनित पीड़ा संभव है। ता० ६ से साढ़े साती शनि का प्रवेश मानसिक शारीरिक एवं आर्थिक व्यवधान पैदा करेगा। विरोधी बढ़ेंगे। ता० १-२-३-११-१२-१३-२०-२१-२९-३० अशुभ हैं।

तुलाः—धन की प्राप्ति, रोग-मुक्ति, किसी उच्च अधिकार का लाभ एवं स्त्री सन्तानादि-सुख सुलभ रहेगा। नौकरीवालों की पदोन्नति एवं स्थानान्तरण का योग शुरू हो रहा है। रोजी-रोजगार में उन्नति की अनपेक्षित दिशा प्राप्त होगी। इष्ट मित्र-कुटुम्बियों के समागम से प्रसन्नता का योग है। सर्वोत्तम भोजन शयन वस्त्रादि का सुख मिलेगा। ता० १६ के बाद आकस्मिक खर्च बढ़ेगा। ता० ४-५-१४-१५-२२-२३ नेष्ट हैं।

वृश्चिकः—दुःख, मानसिक व्यथा, पापकर्म में प्रवृत्ति, नौकरी एवं रोजी-रोजगार में विघ्न-बाधा का योग है। दुःख-दारिद्रय-निर्धनता, हृदय-रोग से शरीर-पीड़ा भी संभावित है। अधिक चिन्ता करने से मानसिक उन्माद बढ़ सकता है; ग्रहराज सूर्य की उपासना से आपका दुःख-दारिद्रय दूर होगा। प्रयत्नपूर्वक रोजी-धन्धे में प्रवृत्त रहें। मासोत्तरार्द्ध में लाभ और सफलता की आशा है। ता० ६-७-८-१६-१७-२४-२५-२६ नेष्ट हैं।

धनुः—आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। दुख, रोग, शत्रु-वृद्धि, स्त्री एवं सन्तानपक्ष से कभी सुख तो कभी असुविधा होगी। राज-भय, अन्न-वस्त्रादि की हानि, शान-शौकत में द्रव्य-व्यय की वृद्धि, सन्तानपक्ष से मतभेद, उदर-रोग, व्यावसायिक प्रतिकूलता एवं किसी-किसी को परदेश-भ्रमण का अवसर मिलेगा। ता. १६ के बाद सूर्य-कृपा से अधिक विपत्ति नहीं रह जायेगी, स्वल्प लाभ भी होगा। ता० ९-१०-१८-१९-२७-२८ नेष्ट हैं।

मकरः—शरीर-पीड़ा, द्रव्य-हानि, कर्म क्षेत्र में विफलता, अव्यवस्थित जीवन एवं रोगोपद्रव का भय है। विशेषतः गैस्ट्रिक ट्रबुल, वायु-दोष, कमर में अकड़न आदि से परेशानी होगी। बौद्धिक विकास में बाधा, अधिक बुद्धि का प्रयोग हानिकर होगा। द्रव्य-प्राप्ति में भी बाधा आयेगी। ता. ६ से ढैया शनि का प्रवेश भूमि-भवन वाहनपक्ष के सुखों की हानि करेगा। अधिकारियों से वैमनस्य बढ़ेगा। ता. १-२-३-११-१२-१३-२०-२१-२९-३० नेष्ट हैं।

कुम्भः—परदेश-वास, मानसिक व्यथा, धन-हानि का योग है। गृह में प्रेत-बाधा का लक्षण दिखाई देगा। स्वास्थ्यभंग, अधिकार-च्युति, मन में उदासीनता और अपने ही घर में पराधीनता की अनुभूति होगी। मासारम्भ में

सप्तमस्थ सूर्य शनि की युति एवं पंचमस्थ मंगल का अधिक अशुभ फल मिलेगा। ता. १६ के बाद कन्या राशि में सूर्य के प्रवेश से आयु धर्म और मर्यादा की रक्षा होगी। ता० ४-५-१४-१५-२२-२३ नेष्ट हैं।

मीन :—अन्न धन वस्त्रादि-संचय का सुयोग मिलेगा। पारिवारिक-सुख की वृद्धि होगी। शत्रु पर विजय, रोग-बाधा का शमन, स्त्री, सन्तानादि कुटुम्बियों का समुचित सहयोग सुलभ होगा। ख्याति-लाभ, आनन्द की वृद्धि, पागलपन की निवृत्ति, पौष्टिक भोजन की प्राप्ति होगी। शिष्टजन के सहयोग से उन्नति का द्वार खुलेगा। अवसर मिलने पर परदेश-यात्रा करके लाभ उठा सकते हैं। ता. ६-७-८-१६-१७-२४-२५-२६ नेष्ट हैं।

अक्टूबर

मेष :—रोगमुक्ति, सुख और आनन्द की वृद्धि, महत्वपूर्ण कामों में सफलता की प्राप्ति होगी। समाज के बीच आदर-सत्कार बढ़ेगा। प्रेम-सम्बन्ध की सिद्धि, श्रम की अधिकता, आरोग्य मध्यम, अन्न द्रव्य वस्त्रादि का लाभ होगा। ता. १६ के बाद अहितकर यात्रा संभव है। स्त्री सन्तान के स्वास्थ्य पर ध्यान देना अनिवार्य है। भजन-पूजन में ध्यान लगाये रखने से आत्म-शान्ति मिलेगी। ता. ६-७-८-१५-१६-२४-२५ अशुभ हैं।

वृष :—व्यसनों की वृद्धि, अपव्यय, दिमागी अस्थिरता, स्थानान्तरण भ्रमण की संभावना रहेगी। उद्योग-धंधा में विघ्न-बाधा, मानसिक तनाव की वृद्धि के कारण समय पर ठीक निर्णय नहीं ले सकेंगे। भूमि भवन वाहन के सुख में बाधा आयेगी। साहस-उत्साह और पराक्रम ठंडा पड़ जायेगा। ता. १२ से तृतीयस्थ मंगल उत्तम फल देगा। स्वास्थ्य में सुधार, बड़ों के अनुग्रह का लाभ, स्वल्प द्रव्य-लाभ होगा। ता. ९-१०-१७-१८-१९-२६-२७ खराब है।

मिथुन :—लोकापवाद, रोग व्याधि, चिन्ताशोक की वृद्धि होगी। कुटुम्बियों से झगड़ा एवं धन-हानि का दुर्योग है। उद्योग-धन्धे में व्यवधान, एजेन्सी और दलाली किस्म के धन्धे में व्यर्थ दौड़-धूप, परेशानी बढ़ेगी; परिणाम असंतोष-जनक होगा। साझेदारी का व्यवसाय भी हानिकर होगा। मलिन विचारधारा का त्याग करें। गौ-ब्राह्मण, दीन-दुखियों की सेवा में संलग्न रहें तो कल्याण होगा। ता. १-२-३-११-१२-२०-२१-२८-२९-३० खराब हैं।

कर्क :—रोग शोक क्रोध का शमन होगा। स्वजनों से कलह का निवारण होगा। भाग्योन्नति की दिशा में एक नया मोड़ उपस्थित होगा। शिक्षा-क्षेत्र में संलग्न व्यक्तियों का व्यक्तित्व प्रकाशमान होगा। व्यवसायी वर्ग भी उज्वल भविष्य की आशा रख सकते हैं। घरेलू सुख-सम्मान बढ़ेगा। इष्ट-मित्र समागम से प्रसन्नता प्राप्त होगी। उत्तरार्द्ध में शीत-ज्वर-प्रकोप से स्वल्पकालिक कष्ट होगा। ता. ४-५-१३-१४-२२-२३-३१ खराब हैं।

सिंह :—इच्छाशक्ति प्रबल रहेगी। श्रेष्ठ धन-लाभ, कर्मचारियों से प्रसन्नता, उलझनों की निवृत्ति होगी। शत्रुओं से मित्रता का हाथ बढ़ेगा। गृहस्थ-जीवन में रुचि, व्यावसायिक सफलता, भूमि भवन वाहन का सुख मिलेगा। निवास-स्थान की सुव्यवस्था पर ध्यान देंगे। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आत्मचिन्तन में अधिक प्रवृत्ति रहेगी। उत्तरार्द्ध में सन्तान को शरीर कष्ट होगा। ता. ६-७-८-१५-१६-२४-२५ नेष्ट हैं।

कन्या:—अतिव्यय, शारीरिक पीड़ा, स्त्री-जनित विशेष कष्ट होगा। वृद्धजनों का आयुष्य संकटासन्न रहेगा। विद्या-बुद्धि की हानि, भोजन-शयन में अबेर-सबेर, अशुभ दशावालों की आर्थिक कठिनाइयाँ बढ़ेंगी। अनियमित दिनचर्या से खेदग्रस्त रहना पड़ेगा। धैर्य एवं गम्भीरता से कार्य करें। ता. १२ से एकादश मंगल कल्याण-मार्ग प्रशस्त करेगा। अशुभ प्रवृत्तियों का निवारण होगा। शत्रु पराभूत होंगे। ता.९-१०-१७-१८-१९-२६-२७ नेष्ट हैं।

तुला:—अर्थ-लाभ में बाधा, भूमि भवन वाहनपक्ष से कष्टकर योग है। वाणी में कठोरता, स्वाभिमान पर आघात, पदाधिकार की प्राप्ति में विघ्न उपस्थित होगा। कल्पना-शक्ति बढ़ेगी। भावुकता का त्याग कर निश्चित कर्म में प्रवृत्ति से सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सामाजिक जीवन आपके लिए कुछ लाभकारी सिद्ध होगा। यात्रा के अवसर को टाल देना उचित है, वर्ना परिणाम प्रतिकूल होगा। ऋण के लेन-देन से सतर्क रहें। ता० १-२-३-११-१२-२०-२१ २८-२९-३० खराब हैं।

वृश्चिक :—मासफल मध्यम है। व्यापारिक स्थिति मध्यम रहेगी। मित्रों से विरोध, स्वास्थ्य की प्रतिकूलता, विद्यार्थियों को पारिवारिक असहयोग का सामना करना पड़ेगा। मास मध्य में इष्ट-मित्र-कुटुम्बियों से बिगड़े सम्बन्ध सुधरेंगे। आध्यात्मिक भावना जगेगी। भ्रातृवर्ग के विवाद से बचना अनिवार्य है। अधिक जन-सम्पर्क हानिकर होगा। मासान्त में द्रव्य एवं स्वास्थ्य का दुर्विनियोग होगा। ता० ४-५-१३-१४-२२-२३-३१ नेष्ट हैं।

धनु :—शुभफलों की वृद्धि, उच्चजन से मैत्री सम्पन्नता, व्यापार में पूर्ण सफलता का योग है। निवास स्थान के साज-सज्जा-सफाई आदि पर ध्यान केन्द्रित होगा। वाक्सिद्धि, धार्मिक प्रवृत्ति, स्त्री-सन्तान-सौख्य की उपलब्धि होगी। सम्पत्ति एवं ख्याति-लाभ के लिए मास-फल उत्तम है। मासान्त में स्वार्थपरता बढ़ेगी। जन-सम्पर्क की वृद्धि, व्यक्तित्व का विकास होगा। मारकेश दशावालों को पारलौकिक सुख मिलेगा। ता० ६-७-१५-१६-२४-२५ नेष्ट हैं।

मकर :—प्रत्येक क्षेत्र में शुभकारी प्रभाव मिलेगा। सुरुचिपूर्ण कलात्मक प्रवृत्ति, चित्त उत्साहपूर्ण रहेगा। वाणी का सदुपयोग, राजकीय कामों में सफलता, अत्यधिक व्यस्त जीवन का योग है। शत्रु विनष्ट होंगे। मन्त्रोपासना की रुचि पनपेगी। द्रव्य-लाभ संचय-सुख, नियन्त्रित व्यय, मानसिक अस्थिरता का निवारण, भूमिपक्ष से सौख्य की वृद्धि होगी। चिर परिचितों से मिलन, सहयोग एवं सहानुभूति प्राप्त होगी। ता० ९-१०-१८-१९-२६-२७ खराब हैं।

कुम्भ :—व्यक्तित्व में गिरावट, कार्य-सिद्धि में वारंवार रुकावट का अनुभव होगा। धन का अति व्यय, उलझनों की वृद्धि, उपासना में अरुचि का योग है। स्वास्थ्य नरम रहेगा। मित्रों से विरोध, वायु पित्त-दोष से शरीर-पीड़ा, औषधियों का अधिक प्रयोग हानिकारक होगा। ता० १२ को छठें मंगल के प्रवेश से समस्त विघ्न-बाधाओं का निवारण, सत्कर्म का उदय एवं चित्त प्रफुल्ल रहेगा। ता० १-२-११-१२-२०-२१-२९-३० नेष्ट हैं।

मीन :—गुप्त उलझनों की उत्पत्ति होगी। साहस-उत्साह की कमी, नौकरी-व्यापार की प्रगति में बाधा, क्रोधावेश वश गलत कामों में प्रवृत्ति संभव है। सामाजिक सम्मान की कमी एवं प्रत्येक कार्य में आकस्मिक विघ्न-बाधाओं से खेद-ग्रस्त रहना पड़ेगा। स्त्री सन्तान एवं स्वयं के भी स्वास्थ्य पर ध्यान रखना अनिवार्य है। नियम-संयम एवं धर्माचरण से राहत मिलेगी। ता० ४-५-१३-१४-२२-२३-३१ नेष्ट हैं।

नवम्बर

मेषः—मासारम्भ में सप्तम सूर्य शुक्र की युति अशुभ है। प्रयत्न विफल होते रहने से चित्त खेदग्रस्त रहेगा। गृह-प्रपंच से परेशानी होगी। साझेदारी से हटने का योग है। चिन्ता, शोक-वृद्धि, रोजी-रोजगार मन्दा चलेगा। समाज, मित्र एवं पड़ोसियों के बीच अनादर का भय है। दुर्जनों से बचकर रहना ही अच्छा है। चौथे सप्ताह में शुभ दशावालों की कुछ उन्नति होगी। ता० ३-४-१२-१३-२०-२१-२९-३० अशुभ हैं।

वृषः—विशिष्ट प्रयासों में सफलता मिलेगी। अधिक श्रम करने का सुअवसर मिलेगा। सहयोगियों से मतभेद दूर होगा। बकाया रकम की प्राप्ति, मान-प्रतिष्ठा, जनप्रियता एवं प्रताप-प्रभाव की वृद्धि होगी। भूमि-वाहन का सुख मिलेगा। प्रियजन-समागम, व्यावसायिक लाभ, भाग्योदय, कर्मठ व्यक्तित्व का विकास होगा। सफल प्रयत्नों से चित्त प्रसन्न रहेगा। शनि का जप-दान आवश्यक है। ता० ५-६-१४-१५-२२-२३-२४ नेष्ट हैं।

मिथुनः—सर्वतोमुखी आनन्द, रुके हुए धन एवं इच्छित पदार्थों की प्राप्ति होगी। अच्छे लोगो की संगति से अभ्युदय, सन्मार्ग-लाभ, मित्र-मिलन, पितृ-कुल की वृद्धि होगी। अन्न वस्त्रादि-लाभ, उत्तम ग्रन्थावलोकन का सुअवसर मिलेगा। सन्तानपक्ष से सुख की वृद्धि होगी। नवीनपद-अधिकार की प्राप्ति, वाणी में चतुराई, बुद्धि का विकास, शत्रु-पराजय से सुख मिलेगा; पत्नी का स्वास्थ्य ढीला रहेगा। ता० ७-८-१६-१७-२५-२६ नेष्ट हैं।

कर्कः—स्त्री सन्तान सम्बन्धी शोक, विद्याध्ययन में अरुचि, दिमागी उलझन की अधिकता रहेगी। शारीरिक कष्ट, आचरणहीनता, स्वाभाविक क्रोध की वृद्धि होगी। व्यायाम की नवीन रुचि पैदा होगी। मासोत्तरार्द्ध में प्रिय-दर्शन, ईश्वर-भक्ति, जाति-प्रियता, आयुर्बल की वृद्धि होगी। बाधाओं के बावजूद भी स्वल्पकालिक उन्नति होगी। श्रेष्ठजन को धन-लाभ, कोष-संचय, पैतृक सम्पदा का सुख मिलेगा। ता० १-२-९-१०-११-१८-१९-२७-२८ नेष्ट हैं।

सिंहः—आकस्मिक लाभ, सट्टेबाजी में रुचि, मानसिक चिन्ताओं का निवारण होगा। शत्रु-विनष्ट होंगे। मनोत्साह की जागृति होगी। धार्मिक रुचि बनी रहेगी। व्यापार में यथेष्ट सफलता, स्त्री-सौख्य, काव्य-संगीत में रुचि, इष्ट-मित्र परिजनों का सहयोग मिलेगा। शिक्षार्थियों के लिए विदेश-गमन का योग है। स्वर्ण-रत्न उत्तम वस्त्रादि, मान-सम्मान सुलभ होगा। सूर्य की उपासना अनिवार्य है। ता० ३-४-१२-१३-२०-२१-२९-३० खराब हैं।

कन्या:—मास-फल उत्तम है, स्वास्थ्य में सुधार, विरोधियों पर विजय, धार्मिक कामों में व्यय, भ्रमण तीर्थाटन-दान-पुण्यादि-संस्कार बढ़ेगा। श्रेष्ठजन की संगति सहायता से अभ्युदय होगा। दीर्घकाल से अटका हुआ काम सफल होगा। नित्योपयोगी पदार्थ, अन्न-धन-वस्त्रादि का लाभ होगा। आत्म-बल की वृद्धि, मानसिक शान्ति, कर्म-क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन, परिश्रम की अधिकता सफल होगी। ता० ५-६-१४-१५-२२-२३-२४ कष्टप्रद हैं।

तुलाः—स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक दुर्वलता, आत्मशक्ति की क्षीणता, सिर नेत्र उदर-पीड़ा का योग है। जीवनीशक्ति सुरक्षित रहेगी। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। उत्तरार्द्ध में दिमागी उलझनों का निवारण होगा। पैतृक सम्पत्ति कुटुम्ब-सुख, राज-भय की निवृत्ति, संगीन साहित्य कला में रुचि बढ़ेगी। शिवोपासना से आकस्मिक संकट दूर होकर उन्नति का नवीन मार्ग प्राप्त हो सकता है। ता० ७-८-१६-१७-२५-२६ चिन्तनीय हैं।

वृश्चिकः—मासारम्भ में द्वादशस्थ सूर्य शुक्र की युति अशुभ है। व्यक्तित्व में गिरावट, पुष्टता का अभाव रहेगा। स्वाभिमान की रक्षा कठिन हो जायेगी। प्रयत्नपूर्वक यश-प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिये। उत्तरार्द्ध में वाणी सौष्ठव का विकास होगा। सत्कार्यों में सद्व्यय होगा। मनः शक्ति का उत्थान, भोज्य सामग्री की उपलब्धि, भोग-विलास का सुख मिलेगा। बड़े भाई-बहन का स्वास्थ्य बाधित रहेगा। गृह में मांगलिक कार्यों का सम्पादन होगा। ता० १-२-९-१०-११-१८-१९ २७-२८ अशुभ हैं।

धनु :—भाई-बहनों का सुख सहयोग मिलेगा । योग-विज्ञान में रुचि बढ़ेगी, तेजस्विता, सज्जनता और शालीनता, वृद्धि का सुन्दर योग है । स्वबाहुबल से बिगड़ा कार्य बनायेंगे । घर-मकान के सजावट एवं मरम्मत पर द्रव्य-व्यय होगा । ता. ५ से एकादश शुक्र का प्रवेश गुप्त लाभ देगा । धन-कोष, प्रताप-प्रभाव की वृद्धि, विभिन्न कार्यों में आशातीत सफलता, सुपाच्य भोजनादि का लाभ होगा । बाधाएँ निवृत्त होंगी । ता० ३-४-१२-१३-२०-२१-२९-३० नेष्ट हैं ।

मकर—पराक्रम का लाभ, हिम्मत की वृद्धि, साहसिक कामों में रुचि होगी । प्रभाव का विस्तार, स्वभाव में भावुकता का समावेश होगा । पुरुषार्थ सिद्धि का सुन्दर अवसर है । घरेलू-जीवन सुखी रहेगा । आरोग्य-प्राप्ति, सामाजिक आनन्दमग्नता, अतिथि-आगमन से प्रसन्नता होगी । रचनात्मक कार्यों में प्रवृत्ति, दरिद्रता का निवारण, स्फूर्ति-लाभ मनोहर वातावरण प्राप्त करेंगे । ता० ५-६-१४-१५-२३-२४ नेष्ट हैं ।

कुम्भ :—शौर्य-धैर्य के अभाव से परेशानी होगी । ख्यातिहीनता, सौन्दर्य इष्ट-मित्र पड़ोसियों से विवाद का भय है । श्वाँस-नलियों में खराबी, गृह भूमि वाहन सुख में बाधा, अव्यवस्थित घरेलू जीवन से संत्रस्त रहना पड़ेगा । मानसिक शान्ति की कोई राह नहीं मिलेगा । श्रीगणपति आराधना श्रेयस्कर है, दीन-दुखियों को अन्न-दान दें, गौ-ब्राह्मण की सेवा में संलग्न रहें । ता० ७-८-१६-१७-२५-२६ अशुभ हैं ।

मीन :—अधिक वीरता का प्रदर्शन हानिकर होगा । नेतृत्व शक्ति कमजोर रहेगी । शिल्पी कलाकारों एवं शिक्षार्थियों को रोग-भय होगा । श्रम की अधिकता रहेगी । छोटी-मोटी यात्राओं में सामान्य सफलता का भी योग है । उत्तरार्द्ध में मानसिक शान्ति प्राप्त होगी । ता० ५ से अष्टम में शुक्र का प्रवेश लाभदायी होगा । दुःखों की समाप्ति, सुख-वृद्धि और धन प्राप्ति होगी; फिर भी स्वास्थ्य की रक्षा अनिवार्य है । ता० १-२-१०-११-१८-१९-२७-२८ नेष्ट हैं ।

दिसम्बर

मेष :—बने-बनाये काम बिगड़ेंगे । वायु पित्त-प्रकोप से शरीर कष्ट बढ़ेगा । मानसिक तनाव, रोग-वृद्धि, उद्योग धंधा में विघ्न-बाधा; यात्रा न करना ही उत्तम होगा । दैनिक सुख-सुविधा और दिनचर्या में बाधा आयेगी । शत्रु-प्रकोप, मान-हानि, सन्तान से मतभेद, स्त्री-सुख बाधित रहेगा । उत्तरार्द्ध में यश-सम्मान की प्राप्ति, भाग्यावरोध की निवृत्ति से कुछ राहत मिलेगी । ता० १-९-१०-१८-१९-२७-२८-२९ खराब हैं ।

वृष :—क्रय-विक्रय के व्यवसाय में विशेष लाभ होगा । सुख-सम्पति, आनन्द की प्राप्ति, मित्र बन्धु-सुख, सद्गुण-कीर्ति और बुद्धि का विकास होगा । धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति बढ़ेगी । तीर्थयात्रा दान-पुण्य का सुयोग मिलेगा । भाग्योदय, विद्योन्नति, मान-सम्मान का लाभ और राजपक्ष से अभीष्ट सिद्धि होगी । किसी महत्वपूर्ण कार्य में श्रेष्ठ सफलता सुलभ होगी । वृद्धजनों के लिए यह मास कष्टकर होगा । ता० २-३-४-११-१२-१९-२०-२१-३०-३१ नेष्ट हैं ।

मिथुन :—भोजन-शयन में असुविधा, मानसिक अशान्ति, किसी-किसी को अपवाद, और दुर्वचन का भाजन बनना पड़ेगा । मास मध्य में स्वास्थ्य-लाभ, सुखोपलब्धि, धनागम, कुटुम्बियों से समुचित सहयोग सुलभ होगा । ख्याति-वृद्धि, व्यावसायिक उन्नति, शत्रुहीनता, दान-पुण्य धर्म-कृत्यादि में रुचि होगी । मासान्त में विश्वासपात्रों से धोखा एवं गृह-प्रपंच में अति व्यय की संभावना रहेगी । ता० ५-६-१३-१४-२२-२३-२४ नेष्ट हैं ।

कर्क :—जन्मस्थ मंगल, धनस्थ शनि वक्री हो जाने से दुःख, मानसिक व्यथा, रोग प्रकोप, अन्धकारमय भविष्य की अनुभूति होगी; किन्तु अधिक चिन्ता की बात नहीं है । ता० १५ से छठें सूर्य का प्रवेश आपकी सुरक्षा करेगा । रोग-ऋण-शत्रु-बाधाएँ दब जायेंगी । मुँह पर किसी को कुछ कहने का साहस न होगा । स्वल्पतर आय में उचित व्यय-व्यवस्था करने की आदत डाल लें तो उत्तम होगा । ता० ७-८-१५-१६-२५-२६ अशुभ हैं ।

सिंहः—प्रगति के साथ मंगलमय परिवर्तन होगा । अधिक कार्य-व्यस्तता से दुर्बलता और थकान का अनुभव करेंगे । स्थाई साधनों के अतिरिक्त अन्य कई मार्ग से द्रव्य-लाभ होगा । स्वास्थ्य में सुधार, शत्रुओं के पराजय का सुख, व्यक्तित्व में गंभीरता का समावेश होगा । कुटुम्ब द्वारा सामयिक सहयोग मिलेगा । संचित कामना पूरी होंगी । श्रेष्ठजन को आशातीत लाभ संभव है । ता० १-९-१०-१७-१८-२७-२८ नेष्ट हैं ।

कन्याः—व्यापारिक दशा सामान्य रहेगी । कुटुम्ब एवं इष्ट-मित्रों से प्रसन्नता प्राप्त होगी । कोई मित्र लाभ पहुँचाने की सफल चेष्टा करेगा । अध्ययन में रुचि बढ़ेगी । मानसिक एवं शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ेगा । उत्तम कर्तृत्व के फलस्वरूप मान-प्रतिष्ठा इज्जत-शोहरत की वृद्धि होगी । महिलाओं का गृहस्थ-जीवन पूर्ण सुखी होगा । साम्पत्तिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी; व्यय नियंत्रित रहेगा । ता० ३-४-११-१२-२०-२१-३०-३१ अशुभ हैं ।

तुलाः—गृहस्थ जीवन संकटों से मुक्त रहेगा । चौपाये जानवरों की वृद्धि, वाहन-लाभ, मनोरंजन-भ्रमण में रुचि होगी । माता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा । कृषि भूमि वाणिज्य की दिक्कतें दूर होंगी । साहस-पराक्रम-पुरुषार्थ का लाभ होगा । जनसम्पर्क बढ़ेगा । गर्भवती महिलाओं को पुत्र-लाभ होगा । सामर्थ्य वाद-विवाद, प्रतिस्पर्धा में सर्वतोमुखी विजयी रहेंगे । कला-कौशल की रुचि व्ययप्रद होगी । ता० ५-६-१३-१४-२२-२३ खराब हैं ।

वृश्चिकः—मास-फल अशुभ है। सन्तान के बुद्धि-दोष से पीड़ा होगी। तामसी गुणों के उदय, सट्टे-वायदे के व्यवसाय से हानि होगी। शत्रु-बाधा, रोग-भय, झगड़ा-झंझट-कलह, मुकदमेबाजी की आशंका है। परतन्त्र जीवन की अनुभूति होगी। स्त्रीपक्ष से मानसिक व्यथा, धातु-क्षय से निर्बलता, व्यावसायिक लेन-देन में गड़बड़ी, अस्वाभाविक भोग-वासना की वृद्धि होगी। वायुयान की यात्रा कष्टकर रहेगी। ता० ७-८-१५-१६-२५-२६ नेष्ट हैं।

धनुः—आकस्मिक धन-हानि होगी। विद्यार्थियों की दिमागी अस्थिरता बढ़ेगी। सत्वगुण का क्षय, सन्तति के स्वास्थ्य में बाधा, बहन-बहनोई से उलहना सुनना पड़ेगा। उत्तरार्द्ध में दाम्पत्यजीवन का सुख मिलेगा। लाभप्रद यात्रा होगी। वणिक्वृत्ति प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रहेगी। उद्यान-प्रियता, उद्यमशीलता, चित्रकारिता एवं औषधि-प्रयोग में रुचि होगी। पुखराज रत्न धारण करना उत्तम होगा। ता० १-९-१०-१७-१८-२८-२९ नेष्ट हैं।

मकरः—लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी। ख्याति-लाभ, सद्भावना की उत्पत्ति, आकस्मिक यात्रा, धर्मकृत्य-सम्पादन, पाण्डित्य-लाभ, प्रतिभा का चमत्कार फैलेगा। लाटरी से भी कुछ लाभ की उम्मीद है। भाग्य साथ देगा; परन्तु पेट-कमर और हृदय के समीपवर्ती अंगों की सुरक्षा अनिवार्य है। ता० ११ से अष्टम भाव में शनि और ता० १५ से सप्तम भाव में मंगल वक्री होकर अधिक कष्टकर स्थिति पैदा करेगा। ता० २-३-४-११-१२-१९-२०-२१-३०-३१ नेष्ट हैं।

कुम्भः—साहसिक कामों में रुचि बढ़ेगी। प्रबन्ध-दक्षता से घरेलू जीवन सुखी रहेगा। स्वाभाविक विनम्रता, शिक्षा का विकास, इष्टदेव की उपासनात्मक रुचि बढ़ेगी। उत्तरार्द्ध में मामापक्ष से चिन्ता, वाद-विवाद, परतंत्रता और असंवेदनशीलता का दुर्योग है। चोरी-डकैती से धन-सम्पत्ति की सुरक्षा पर ध्यान दें। वाहन का उपयोग सावधानी पूर्वक करें; वर्ना परिणाम नेष्ट होगा। यात्रा का प्रोग्राम रद्द कर दें। ता० ५-६-१३-१४-२२-२३-२४ कष्टप्रद हैं।

मीनः—मासारम्भ में भाग्य-संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। स्त्री-जनित वेदना, नौकर-चाकरों से विश्वास-घात, इच्छाशक्ति मर्माहत होगी। जूए-सट्टे से क्षतिग्रस्त होना पड़ेगा। उत्तरार्द्ध में सद्बुद्धि का लाभ, भाग्योदय, आध्यात्मिक अभ्युदय, विवेक-प्रतिभा की जागृति, सद्ग्रन्थावलोकन का सुअवसर मिलेगा। चलचित्र-उद्योग से सम्बन्धित लोग विशेष उन्नति करेंगे। नौकरीवालों के लिए स्थानान्तरण योग है। ता० ७-८-१५-१६-२५-२६ खराब हैं।

सरल होड़ाचक्र (राशि-माला)

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्ति.
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
राशि मेष के अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लु	ले	लो	अ
नक्षत्र	कृत्तिका			रोहिणी				मृगशिरा	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
राशि वृष के अक्षर	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
नक्षत्र	मृगशिरा		आर्द्रा				पुनर्वसु		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
राशि मिथुन के अक्षर	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा
नक्षत्र	पुन.	पुष्य				आश्लेषा			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
राशि कर्क के अक्षर	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
नक्षत्र	मघा				पूर्वा फाल्गुनी				उ. फा.
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
राशि सिंह के अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
नक्षत्र	उ. फा.			हस्त				चित्रा	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
राशि कन्या के अक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
नक्षत्र	चित्रा		स्वाती				विशाखा		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
राशि तुला के अक्षर	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
नक्षत्र	वि.	अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
राशि वृश्चिकके अक्षर	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
नक्षत्र	मूला				पूर्वाषाढ़ा				उ. षा.
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
राशि धनु के अक्षर	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे
नक्षत्र	उत्तराषाढा			श्रवण				धनिष्ठा	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
राशि मकर के अक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
नक्षत्र	धनिष्ठा		शतभिषा				पूर्वा भाद्रपदा		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
राशि कुम्भ के अक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
नक्षत्र	पू. भा.	उत्तरा भाद्रपदा				रेवती			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
राशि मीन के अक्षर	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

इस चक्र द्वारा किसी के जन्म या पुकारने के नाम के पहले अक्षर से उसकी जन्म-राशि या नाम-राशि, जन्म-नक्षत्र-चरण सहज ही जाना जा सकता है। नाम के अक्षरों में श, स, ब, व तथा छोटी-बड़ी मात्राओं का फर्क आचार्यों ने नहीं माना है तथा नाम का पहला अक्षर संयुक्ताक्षर हो तो उसके प्रथम वर्ण को ग्रहण करना चाहिये (संयोगाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)। पञ्चशलाका एवं सप्तशलाका-चक्रों में क्रूर ग्रह पूरे नक्षत्र को वेध करते हैं; किन्तु शुभ ग्रह उसके केवल चरण का वेध करते हैं। विशेष जानकारी के लिए 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड का पृष्ठ ६६-६७ देखिए!

व्यापार-भविष्य सन् १९७७ ई०

लेखक—प्रो० बी० सी० मेहता 'ज्योतिष-मार्तण्ड' संचालक—जैन-ज्योतिष-ब्यूरो, ब्यावर (राजस्थान)

"चिन्ताहरण जंत्री" के प्रिय पाठकों की सेवा में गत १७ वर्षों से हम अपने व्यापार-भविष्य सम्बन्धी लेख प्रस्तुत करते आ रहे हैं जिससे जंत्री के पाठक बन्धु आशातीत लाभ उठाकर आये दिन हमें प्रशंसा-पत्र एवं शुभ कामनाएँ भेजते रहे हैं जिसके लिये हम उनका हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। सन् १९७६ ई० की ता. १६, १७, १८ जून को देहरादून में अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान का सम्मेलन हुआ। सौभाग्य से हमारे इस "चिन्ताहरण जंत्री" के प्रमुख सम्पादकजी श्रीजगजीवनदास जी गुप्त तथा प्रकाशक श्रीठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स-फर्म के वरिष्ठ संचालक श्रीगणेश प्रसादजी साहब भी इस सम्मेलन में पधारे तथा अनायास हमारा उनसे मिलना हो गया। देहरादून का यह अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान सम्मेलन सन् १९७४ की साल के सहारनपुर-सम्मेलन की अपेक्षा कई गुना अधिक सफल रहा। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री बी. वी. रमन ज्योतिष-सम्राट् सम्पादक एस्ट्रोलॉजिकल मैगजीन, बेंगलोरवालों ने की तथा देश के बड़ी दूर-दूर के स्थानों से ज्योतिष-विज्ञान के अद्वितीय अनुभवी विद्वान् इसमें सम्मिलित हुए। यह सम्मेलन तीन दिन ता० १६-१७-१८ जून तक चला। इसमें कुछ प्रमुख एवं विशिष्ठ-ज्योतिषियों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया जिनमें हमारी इस 'चिन्ताहरण जंत्री' के सम्पादक **श्रीजगजीवनदासजी गुप्त** भी थे। उनको **'ज्योतिष-शिरोमणि'** की उपाधि से विभूषित किया गया तथा आपके जान-पहचाने इस लेख के लेखक **प्रोफेसर बी० सी० मेहता** को 'ज्योतिष-रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया। बनारस के कुछ विशिष्ठ ज्योतिष-मनीषियों के इस सम्मेलन में सम्मिलित होने से देहरादून का यह सम्मेलन अत्यधिक सफल रहा। अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान-सम्मेलन को कुछ विशिष्ठ कार्यकर्ताओं की उपलब्धि इस सम्मेलन में हुई जिससे सम्मेलन का भविष्य विशेष उज्ज्वल प्रतीत होता है।

व्यवसायियों को ज्योतिषियों का सहारा

सर दोराब टाटा-स्मारक-व्याख्यानमाला में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जे० आर० डी० टाटा ने कहा था कि "देश के बहुत से व्यवसायी, जिनमें कुछ विशिष्ट व्यवसायी भी हैं, अपने कारबार में अर्थ-शास्त्रियों से सलाह न लेकर ज्योतिषियों से राय लेते हैं।

"हम लोगों में बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें इस क्षेत्र में शैक्षिक प्रशिक्षण नहीं मिला है, उच्चतर गणित और भौतिक विज्ञान की तुलना में अर्थशास्त्र बड़ा गहन विषय प्रतीत होता है। अर्थशास्त्र पर लिखी गयी पुस्तकें और लेख अनर्गल प्रतीत होते हैं और बोधगम्य नहीं होते।

आगे श्रीटाटा ने कहा था—जो व्यवसायी अधिक चुस्त हैं वे अर्थशास्त्री तथा ज्योतिषी दोनों से सलाह कर निर्णय करने में अपने को अधिक सुरक्षित समझते हैं। इसका कारण यह है कि अर्थशास्त्री के लिए भूत-कालीन घटनाओं का विश्लेषण करना तो आसान होता है, लेकिन भविष्य के बारे में कुछ कहना कठिन जान पड़ता है जबकि ज्योतिषी भावी कार्यक्रम तथा उसके मुहूर्त दोनों के विषय में भविष्यवाणी करता है। यह बात जरूर है कि कभी-कभी परिणाम विपत्तिमूलक होता है।"

गत वर्ष हमारा यह "व्यापार-भविष्य" का लेख जंत्री के पेज ७७ से ८२ तक छपा था। उसमें हमने खास-तौर से रूई कपास चाँदी सोना तिलहन गुड़ खाँड़ अनाज दाल-बाना पाट कुष्टा आदि प्रमुख बाजारों की घट-बढ़ का काफी विस्तृत विवेचन शनि राहु केतु तथा बृहस्पति के योगा-योगों के आधार पर किया था। उपरोक्त ग्रहोंके अलावा पाश्चात्य ज्योतिषियों ने तीन नये ग्रहों का पता लगाया हैं, वे हैं—हर्शल, नेप्च्यून तथा प्लूटो। ये ग्रह बहुत बड़े हैं तथा दरअसल इनका प्रबल प्रभाव व्यापारिक जगत पर पड़ता है। प्राचीन ज्योतिष में तो सबसे ज्यादा धीरे चलने-वाला ग्रह शनि है। यह एक राशि में लगभग ३० महीने अर्थात् २॥ वर्ष तक रहता है; लेकिन उपर्युक्त तीन ग्रह शनि ग्रह से भी बहुत ज्यादा बड़े हैं। हर्शल एक राशि में सात वर्ष रहता है, नेप्च्यून १४ वर्ष तक तथा प्लूटो २१ वर्ष तक एक राशि में चलता है। इन तीनों ग्रहों का भी बाजारों की घट-बढ़ पर बहुत बड़ा वर्चस्व है तथा इन ग्रहों से ही तेजी मंदी की लम्बी लाइन चलती है। अपने लेख में स्थानाभाव से हम उन ग्रहों का विवेचन अबतक नहीं कर सके; लेकिन कई पाठक बन्धुओं का बराबर आग्रह रहा है कि इस लेख में इन बड़े ग्रहों का बाजारों पर पड़नेवाले प्रभाव का विवेचन अवश्य करना चाहिए। हम भी ऐसा ही महसूस करते हैं कि इन ग्रहों का विवेचन किये बिना हमारा यह व्यापारिक-भविष्य-सम्बन्धी लेख अधूरा-सा रहता है। यद्यपि हम हरसाल छापनेवाले अपने भावी-फलों में इन तीनों ग्रह हर्शल, नेप्च्यून तथा प्लूटो का

विवेचन सबसे पहले करते हैं ताकि पूरे साल के व्यापारिक-भविष्य का एक संक्षिप्त नक्शा पाठक बन्धुओं के सामने आ जाय। भविष्य में हम हरसाल इस चिन्ताहरण जंत्री के अपने लेख में भी इन तीन बड़े ग्रहों का विवेचन प्रस्तुत करते रहेंगे।

उपरोक्त तीन ग्रहों में नेप्च्यून ग्रह का असर बाजारों की घटा-बढ़ी पर विशेष रूप से अनुभव में आता है। यह नेप्च्यून एक राशि में पूरे १४ वर्ष रहता है। सन् १९६७ की साल से यह ग्रह वृश्चिक राशि में चल रहा है। राशि-मंडल की अष्टम राशि वृश्चिक है। उसका स्वामी-ग्रह मंगल है। "नेप्च्यून" ग्रह मीन राशि का मालिक माना गया है जबकि प्राचीन ज्योतिष के अनुसार मीन राशि का मालिक गुरु ग्रह है। अंग्रेजी ज्योतिष में नेप्च्यून क्रूर एवं अशुभ ग्रह माना गया है। वृश्चिक राशि में गुरु जब आता है तब इसका प्रभाव तेलबाना चाँदी सोना तथा रूई कपास में तेजी का पड़ता है तथा बाजार-भाव काफी बढ़ जाते हैं। अतः वृश्चिक राशि में नेप्च्यून को भी तेलबाना चाँदी सोना रूई कपास-बाजारों में हम तेजीसूचक एवं तेजी-प्रधान मानते हैं; लेकिन एक बात का अनुभव हमने इस वृश्चिक के नेप्च्यून का किया है कि जब यह वक्र होता है तब तो इसका असर उपरोक्त बाजारों में तेजी प्रधान बन जाता है और मार्गी चलता है तब इसका तेजी का असर निकल जाता है और यह मंदी के झटके देता रहता है।

वृश्चिक राशि में जबतक यह चलेगा तबतक हर साल की १४ मार्च को वक्र होगा तथा २३ अगस्त को मार्गी होगा। अतः हर साल २३ अगस्त से १४ मार्च का पीरियड इसका मन्दीसूचक तथा १४ मार्च से २३ अगस्त तक तेजी-सूचक समझ कर ही धंधा करना चाहिये।

गत वर्ष भी ता० १४ मार्च १९७५ को यह ग्रह वक्री हुआ था और यहाँ से इसका तेजी का प्रभाव रूई कपास चाँदी तेलबाना आदि में बढ़ा और इस वक्री नेप्च्यून की तेजी का प्रभाव २३ अगस्त १९७६ तक उत्तम-मध्यम चलता रहेगा। अतः नेप्च्यून के हर साल दो पीरियड एवं चांस ही विशेष महत्त्व के हम मानते हैं—

(१) १४ मार्च १९७७ से ता० २३ अगस्त १९७७ तेजी प्रधान;

(२) ता० २३ अगस्त १९७७ से १४ मार्च १९७८ तक यह मंदी प्रधान रहेगा।

वृश्चिक में नेप्च्यून जब तक चलता रहेगा, चाँदी १०००-९०० से नीची कभी नहीं जायेगी। रूई कल्याण २०००-१९०० नीचे नहीं जा सकेगी तथा तेल आदि भी नीचे में बम्बई ४० के आसपास समझना चाहिये। इन भावों में तेजी का धंधा करनेवालों को रिस्क (जोखम) कम होगी नोट कर लें।

नेप्च्यून के बाद हर्शल ग्रह भी व्यापारिक बाजारों की घट-बढ़ के लिहाज से महत्त्वशाली है। हम अंग्रेजी ज्योतिष के अपने अनुभव के आधार पर मानते हैं कि हर्शल कुंभ राशि का मालिक है और प्राचीन ज्योतिष सिद्धान्तानुसार कुंभ राशि का मालिक शनि है। अतः हर्शल का प्रभाव शनि-सदृश ही हम मानते हैं। शनि अत्यधिक क्रूर ग्रह है और यह तेजी-प्रधान ग्रह ही माना गया है। इसका स्वभाव खेती एवं पैदावार को येनकेन नष्ट करना तथा आशा से कम उत्पादन करने का है। हर्शल करीब ५ वर्षों से निरयण तुला राशि में तथा सायन वृश्चिक राशि में चल रहा है।

तुला राशि चूँकि जलतत्त्व की दूसरी राशि है, इसलिये बाजारों की घट-बढ़ के लिहाज से यह बड़ी महत्त्व की मानी गई है। तुला राशि के अन्तर्गत चाँदी रूई कपास एवं तेलबाना अलसी अरण्ड सरसों आते हैं। हर्शल सन् १९७५ से स्वाती नक्षत्र में चल रहा है। ता० १८ अप्रैल १९७६ को राहु भी स्वाती नक्षत्र में प्रविष्ट हो गया है। अतः राहु हर्शल दोनों ही क्रूर ग्रह इस तुला राशि एवं स्वाती नक्षत्र में हो जाने से ता० १८ अप्रैल १९७६ के बाद बड़ी तेजी का यह फेक्टर बन गया है। हर्शल वक्र होने से इसका राहु से तुला राशि में पूर्ण सम्बन्ध हो गया है। अतः यह तेजी का भयंकर योग हो गया है। राहु स्वाती नक्षत्र में २५ दिसम्बर ७६ तक चलेगा; लेकिन ता० ११ जुलाई १९७६ को हर्शल वक्री से मार्गी हो गया है; अतः ता० १८ अप्रैल १९७६ से बना तेजी का बड़ा योग ता० १४ जुलाई को समाप्त हो सका। चूँकि राहु स्वाती नक्षत्र में चलेगा। अतः यह तेल तिलहन आदि बाजारों में बड़ी मंदी नहीं आने देगा। बाजार घट-घट कर बढ़ सकता है।

हर्शल तो पूरे साल १९७७ तक इसी तुला राशि में चलता रहेगा, लेकिन जब तक यह वक्र चलेगा तब तक इसको तेजीसूचक तथा मार्गी होने पर मंदीसूचक समझना चाहिये।

हर्शल के बाद पाश्चात्य ज्योतिष का एक ग्रह और रह जाता है; वह है प्लूटो। यह अभी कन्या राशि में चल रहा है। प्लूटो एक राशि में २१ वर्ष तक रहता है। कन्या में यह १९६७ में आया है तथा करीब १२ वर्ष उसमें और चलेगा। कन्या राशि उत्पादन की राशि है। और इसमें रहते प्लूटो जितना चाहिये, उतना उत्पादन नहीं होने देगा। यह भी एक तेजीसूचक ग्रह है। कन्या राशि मतान्तर से हमारे देश भारतवर्ष की राशि मानी गई है। अतः इसमें प्लूटो जैसे बड़े एवं क्रूर ग्रह का प्रसार बाजारों में बड़ी मंदी आने नहीं देगा। जीवनोपयोगी चीजों में बड़ी मंदी को यह रोकता रहेगा। प्लूटो अभी हस्त नक्षत्र में चल रहा है। हस्त में जब यह वक्र होता है तो आर्द्रा नक्षत्र को वेध करता है। हर वर्ष यह प्लूटो ता० १४ जनवरी से १८

जून तक वक्र चलेगा। वह पीरियड इसकी तेजी का समझना चाहिये।

भारतीय ज्योतिष सिद्धान्तानुसार शनि ग्रह का व्यापारिक ज्योतिष में विशेष महत्त्व है। शनि एक राशि में पूरे २॥ वर्ष अर्थात् ३० महीने रहता है। सन् १९७५ की २३ जुलाई को यह शनि कर्क राशि में आया। पूरे साल १९७६ में यह शनि कर्क में ही चलता रहेगा तथा १९७७ की ता० ७ सितम्बर को यह सिंह राशि में प्रवेश हो जायेगा; पश्चात् इसी राशि में वक्री मार्गी गति से चलता रहेगा।

कर्क राशि में शनि जब पुष्य नक्षत्र में चलता है तो यह तेजीसूचक समझा जाता है। पुष्य नक्षत्र तेल-बाना एवं अन्य प्रमुख जिंसों के बाजारों का विशिष्ट नक्षत्र माना जाता है। कर्क राशि एवं पुष्य नक्षत्र में वक्री चलता हुआ शनि ता० २८ मार्च १९७६ को मार्गी हुआ; वहाँ से इसकी तेजी का पावर बढ़ा। ता०११ जुलाई१९७६ को यह पश्चिम में अस्त हुआ; वहाँ इसकी तेजी का पावर भी कुछ कम हुआ। अतः शनि कर्क में चलता हुआ ता०२७ अगस्त १९७६ को आश्लेषा नक्षत्र में प्रविष्ट हुआ। ता० ६ सितम्बर १९७७ तक इसी कर्क राशि एवं पुष्य आश्लेषा नक्षत्र में शनि वक्र मार्ग गति से चलता रहेगा। यहाँ यह ज्यादा तेजी करने का पावर नहीं रखता; तेलबाना आदि बाजारों में समय-समय पर यह मंदी के झटके देगा।

ता० ७ सितम्बर १९७७ को शनि कर्क राशि छोड़कर सिंह राशि में प्रविष्ट हो जायेगा। सिंह राशि राशिचक्र की पञ्चम राशि है तथा इसका स्वामी ग्रह सूर्य है। सिंह राशि में चार चरण मघा नक्षत्र के, चार चरण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तथा एक चरण उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का होता है। इसमें प्रथम नक्षत्र मघा का स्वामी केतु, दूसरे नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी का स्वामी शुक्र तथा तीसरे नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी का मालिक सूर्य ग्रह है। अतः सिंह राशि का शनि पहले केतु नक्षत्र मघा को क्रास करेगा। मघा नक्षत्र तिलहन एवं खासकर अलसी का नक्षत्र माना गया है। अतः शनि का मघा नक्षत्र-चार तेलबाना में बड़ी तेजी का फैक्टर है; नोट कर लें! शनि का प्रसार उक्त प्रकार से सन् १९७६-७७ में होगा। शनि दर-असल क्रूर एवं तेजीसूचक ग्रह ही है। अतः जब तक यह तेजी के राशि नक्षत्र में चलेगा, तब तक यह तेजी का ही प्रकोप पैदा करता रहेगा। शनि के प्रभाव में तेल-बाना विशेषरूप से है, सो ध्यान रहे!

शनि के बाद "गुरु" ग्रह का महत्त्व व्यापारिक ज्योतिष में विशेषरूप से माना गया है। गुरु अत्यधिक सौम्य अर्थात् शुभ ग्रह है। यह एक राशि में एक साल रहता है तथा मंदी का विशेष प्रभावशाली ग्रह है। जब-जब बाजारों में मंदी की बड़ी क्राइसिस आती है, तब-तब इस गुरु के योगायोग का ही विशेष वर्चस्व देखने को मिलता है। प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों प्रकार के ज्योतिष-सिद्धान्तानुसार गुरु-ग्रह को ही बाजार-भाव को गिरानेवाला ग्रह माना गया है। शनि राहु की बड़ी तेजी की पावर को रोकनेवाला अथवा कम करनेवाला यदि कोई ग्रह है तो केवल यह एक गुरु ग्रह ही है। इसका असर शनि राहु से बिल्कुल उल्टा अर्थात् विपरीत होता है। शनि राहु फसल एवं पैदावार को कम करनेवाले माने गये हैं, जबकि गुरु के प्रभाव से फसल पनपती तथा पैदावार में बढ़ोतरी होती है। अतः शनि राहु के साथ-साथ गुरु ग्रह की पोजीशन का भी हर साल ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। गत ३ वर्षों से गुरु अतिचारी चल रहा है। यों गुरु एक राशि में एक वर्ष तक रहता है; लेकिन सन् १९७४ से १९७६ तक इस गुरु ने हर वर्ष ८ राशियों से प्रसार किया है। सन् १९७६ की साल में गुरु प्रारम्भ में मीन में चला; ता. २५ फरवरी ७६ को मेष में, ता. ८ जुलाई को वृष में आया तथा ता. ८ दिसम्बर १९७६ को पुनः वक्र गति से मेष में आया। आगे ता. २२ फरवरी १९७७ को गुरु पुनः वृष में प्रवेश करेगा। चूँकि गुरु ग्रह धन-सम्पति एवं वैभव का मालिक ग्रह माना गया है अतः इस प्रकार की इसकी अतिचारी पोजीशन हर बड़े धनवान व्यक्ति के लिये परेशानी का कारण पैदा करता है। तथा अतिचारी गुरु का बाजारों की घट-बढ़ पर असर भी उल्टा-सीधा पड़ता है। सन् १९७७ ई० में गुरु की विशिष्ट पोजीशनों को हम नीचे लिखते हैं :—

ता.८दि.७६को	वक्री गुरु का मेष.प्रवेश	स्टैं.टा.	घं.१४मि.३७		बजे
,,१५-१-७७ ,,	मार्गी	,,	,,	,, १६-२१	बजे
,,२२-२-७७ ,,	गु.मा.गतिसेवृष.	,,	,,	१८-४४	,,
,,२१-४-७७ ,,	रोहिणी में	,,	,,	२-३३	,,
,,२२-५-७७ ,,	पश्चिम में अस्त	,,	,,	६-१९	,,
,,१८-६-७७ ,,	मृगशीर्ष में	,,	,,	१४-३५	,,
,,१९-६-७७ ,,	उदय पूर्व में	,,	,,	११-२२	,,
,,१८-७-७७ ,,	का मिथुनराशि-प्रवेश	,,		१०-५५	,,
,,२०-८-७७ ,,	कासायनकर्कराशिमेंप्रवेश	,,		१८-१६	,,
,,२२-८-७७ ,,	आर्द्रा नक्षत्रमें	,,	,,	०-२७	,,
,,२४-१०-७७ ,,	गुरु वक्री ,,	,,	,,	१६-२४	,,
,,२९-१२-७७	वक्र ग.से मृगशीर्षमें	,,	,,	१४-८	,,
,,३१-१२-७७,, ,,	सायन मिथुनमेंप्रवेश	,,		५-१३	,,

एक बड़े महत्त्व की बात यह है कि ता. १८ जुलाई ७७ को जब गुरु मिथुन राशि में प्रविष्ट हो जाता है तब यह अपना अतिचारीपन भी समाप्त कर देता है। अब यह वापस राशि में वक्र गति से नहीं आयेगा एवं ता. २३ अक्टूबर तक सीधे आगे बढ़ता जायेगा। इस अवधि में

व्यापारी वर्ग को बहुत राहत मिलेगी ; क्योंकि तब यह बृहस्पति अपना अतिचारीपन छोड़ देगा। इस प्रकार गुरु के पोजीशन की उपर्युक्त तारीखें बड़े महत्त्व की हैं। आप इनको अपनी डायरी में नोट करलें—इन तारीखों से दो तीन दिन बाजार का ट्रेण्ड देखकर जो बाजार जिधर चले, उधर ही आप अपना व्यापार शुरू कर दें। तेजी चले तो तेजी का, मंदी चले तो मंदी का व्यापार कर लें ; आपको निश्चित कम-से-कम २०-२५ दिन का एक अच्छा चांस प्राप्त हो जायेगा ; नोट कर लें !

उपरोक्त बड़े ग्रह नेप्च्यून हर्शल प्लूटो शनि राहु-तथा बृहस्पति ग्रहों के सन् १९७६-१९७७ के राशि नक्षत्र-चार तथा योगायोगों का बाजारों में पड़नेवाले सामूहिक असर का विवेचन हमने प्रस्तुत किया है। अब अलग-अलग जिसवार विवेचन एवं बाजारोंकी घट-बढ़ का भविष्य-दिग्दर्शन सन् १९७६-१९७७ के लिए आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हैं :—

रूई-कपास-बाजार—रूई कपास सूत कपड़ा-बाजारों का भविष्य-दिग्दर्शन हमने गत वर्ष इसी चिंताहरण जंत्री के अपने लेख में पृष्ठ ७९ पर किया था जिसमें ता. २७ मार्च १९७६ के बाद बहुत बड़ी तेजी का तूफान आने की भविष्यवाणी की थी तथा हर व्यापारी बन्धु से तेजी का व्यापार ही करने की विनती की थी। हमारी वह भविष्य-वाणी शतप्रतिशत सही साबित हुई। रूई कल्यान २२००-२३०० से ४००० टच हो गई। क्या यह व्यापारिक ज्योतिष का जीता-जागता प्रत्यक्ष चमत्कार नहीं है ? आप आज भी सन् १९७६ की "चिन्ताहरण जंत्री" में हमारा उक्त लेख एवं भविष्यवाणी पढ़ सकते हैं। जिन व्यापारियों ने कपास में तेजी का व्यापार किया होगा, उनके घर में नोटों की बरसात अवश्य हुई होगी। हमने यह बड़ी तेजी तुला राशि का राहु तथा हर्शल के योग से की थी। ता० १२ अक्टूबर ७५ को राहु तुला राशि में प्रविष्ट हुआ और १८ अप्रैल १९७६ को यह स्वाती नक्षत्र में आया। स्वाती नक्षत्र में हर्शल वक्र चल रहा था। इसी के आधार पर हमने इस रूई कपास में बड़ी तेजी की भविष्यवाणी की थी। ता० २७ मार्च ७६ को सायन वृष में गुरु के प्रवेश से तेजी का श्रीगणेश हुआ और तेजी बढ़ती ही गई। हमारा ऐसा विश्वास है कि जबतक राहु इस स्वाती नक्षत्र एवं तुला राशि में चलता रहेगा बड़ी मंदी नहीं आयेगी ; लेकिन ता० २४ अगस्त १९७६ को तेजी का यह बड़ा प्रकोप गुरु के सायन मिथुन-राशि में आने के बाद मिट जाता है तथा आगे रूई पुनः एक बार २८०० के घरों में आ सकेगी, इससे ज्यादा मंदी सन् १९७६ में हमको नहीं जँचती है ; क्योंकि तुला राशि खास रूई की राशि है और स्वाती नक्षत्र रूई का खास नक्षत्र है। अतः इसकी पकड़ थोड़ी-बहुत चलती रहेगी। ता० २६ दिसम्बर ७६ को राहु स्वाती नक्षत्र को छोड़कर चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। यहाँ से रूई में पुनः मंदी की प्रतिक्रिया हो सकेगी। यह मंदी पुनः ता० १५ मार्च १९७७ तक येनकेन चलती रहेगी तथा यहाँ एकबार पुनः नीचे भाव हो सकेंगे।

ता० १५ मार्च १९७७ से एक बार पुनः तेजी का प्रकोप बढ़ेगा। और यह तेजी उत्तम-मध्यम १७-१८ जुलाई ७७ तक चलेगी ; फिर एक बार मंदी के झटके आवेंगे ; लेकिन ७ सितम्बर ७७ के बाद पुनः तेजी की प्रतिक्रिया शुरू हो जायेगी; सो उत्तम-मध्यम अगली दीपावली अथवा दिसम्बर १९७७ तक चलती रहेगी, नोट कर लें !

तिलहन-बाजार-भविष्य—तिलहन के अन्तर्गत तेल मूँगफली अलसी एरण्ड सरसों कपासिया वेजीटेबल घी आदि बाजार हैं। तिलहन में सबसे ज्यादा असर शनि ग्रह का हम मानते हैं ; नं० २ राहु, नं० ३ मंगल, नं० ४ गुरु-ग्रह का। शनि कर्क राशि एवं पुष्य नक्षत्र में इन बाजारों में तेजीसूचक है। हमने अपने गत वर्ष के लेख में केवल दो चांस मंदी के लिखे हैं; ता.१८ सितम्बर १९७५ से ४ जनवरी ७६ तथा २४ अगस्त १९७६ से २३ अक्टूबर १९७६ तक; बाकी टाइम तेजी का लिखा था; लेकिन हमने एक मंदी ता० ६ जून १९७६ को सायन सिंह में शनि-प्रवेश से भी धारी थी। यह बात हमारी बिल्कुल गलत सिद्ध हुई। सायन सिंह के शनि-प्रवेश ने तेजी का ही विशेष फोर्स बढ़ाया; हमने इसके कारण की खोज की तो हमें हमारी गलती समझ में आ गई। कारण यह हुआ कि यह सायन का शनि भी अतिचारी था तथा राहु हर्शल तुला में साथ-साथ स्वाती नक्षत्र में भी चल रहे थे। यों हम ता० २८ अप्रैल ७६ से ता० २४ अगस्त १९७६ तक का पीरियड तेजी का धारते थे; क्योंकि तिलहन-जन्म-कुण्डली में वायु-तत्त्व की राशियों में जब-जब क्रूर ग्रहों का प्रसार होता तब-तब तेजी आती रही है। सन् १९७३-७४ में मिथुन राशि पर शनि था, तब भी बड़ी तेजी तिलहन-बाजारों में आई थी जिसका विवेचन सन् १९७३-७४ की अपनी इसी जंत्री के लेख में प्रस्तुत कर रखा है।

सन् १९७७ की साल में भी हमको तिलहन-बाजारों में तेजी के दो-तीन बड़े चांस दृष्टिगत होते हैं।

सन् १९७७ की साल में ता. २२ फरवरी को जब वृष का गुरु आयेगा, तब बाजार में एक लाइन शुरू होगी। हमारा ख्याल है कि यहाँ से यह तेजी करेगा ; लेकिन एक अनुरोध है कि आप दो-तीन दिन का बाजार-रुख देख लें; यदि तेजी चल पड़े तभी तेजी का धंधा करें अन्यथा नहीं; क्योंकि सन् तुला राशि ... रहा है। ता. ३० अप्रैल १९७७ को राहु का कन्या राशि में प्रवेश होता है और

ता. ७ सितम्बर ७७ को शनि सिंह राशि एवं मघा नक्षत्र में प्रवेश करता है। अतः यहाँ पुनः तेजी की बड़ी लाइन बन सकेगी ; नोट कर लें!

चाँदी-सोना—चाँदी-सोना बाजारों में मन्दी के कोई ग्रह असर नहीं कर रहे हैं। हमारा ध्यान था कि विगत ता. ३ अगस्त १९७३ से सायन कर्क में शनि-संचरण से जो तेजी शुरू हुई थी, वह ता. ९ जून १९७६ को सायन सिंह में शनि के आने से समाप्त हो जायेगी; लेकिन तेजी समाप्त नहीं हुई। इसका केवल एक कारण हम मानते हैं कि सायन राहु वृश्चिक राशि में चल रहा है। अतः यह योग मंदी को ठहरने नहीं देता। ता. ३० दिसम्बर १९७६ को यह सायन राहु तुला राशि में आता है तब वह मंदी का एक अच्छा चांस दे सकता है। सन् १९७७ में ता. २२ फरवरी को गुरु पुनः वृष राशि में प्रविष्ट होता है। तब पुनः बाजारों में तेजी की प्रतिक्रिया शुरू हो सकेगी।

ता ३०अप्रैल '७७ को निरयन राहु तुला राशि छोड़कर कन्या राशि में प्रवेश करता है। यहाँ पुनः एक नई लाइन चाँदी-सोना बाजारों के लिये बन सकेगी। आप दो-तीन दिन की घट-बढ़ बाजारों की देखकर जिधर बाजार चले, उधर की लाइन का व्यापार शुरू कर दें ; अच्छा चांस मिलेगा। हमारा ख्याल है कि यह एक मंदी का झटका देगा।

ता. ७ सितम्बर ७७ को शनि सिंह राशि में प्रवेश करता है। यह योग हमको मदी का लगता है; धीरे-धीरे मंदी का वातावरण हो जायेगा; विशेष सावधानी रखें!

विशेष सूचना—इस साल हम चाँदी-सोना-बाजार का विशेष खोजपूर्ण विवेचन एवं व्यापारिक भविष्य-दिग्दर्शन अपने नये साल सन् १९७७ के "भावीफल" में देने का प्रयास करेंगे, अतः आप यदि चाँदी के व्यापार में विशेष दिलचस्पी रखते हैं तो अवश्य हमारा वायदा तथा हाजिर बाजार-भविष्य सन् १९७७ मँगाने की कृपा करें। यह "भावी-फल" करीब ३०० पेज का होगा तथा इसकी कीमत ३०) हमने इस वर्ष रखी है। इसमें १९ प्रमुख जिंस-बाजारों का अत्यन्त खुलासेवार दीपावली १९७६ से दिसम्बर १९७७ तक का बहुत विस्तारपूर्वक विवेचन व भविष्य प्रस्तुत होगा ; अवश्य मँगावे। आपको बेहद पसन्द आयेगा।

गुड़-खाँड़—गुड़-खाँड़-बाजार में विशेषकर गुरु शनि राहु तथा मंगल का असर अनुभव में आता है। गुड़-खाँड़के लिये हमने गत वर्ष १९७६ की साल में तेजी की ही प्रधानता लिखी थी। नये साल में भी गुड़-खाँड़ बाजारों में हमको तेजी की प्रधानता ही लगती है। ता. २४ अगस्त १९७६ को सायन मिथुन में गुरु और शनि के अस्त होने से बाजारों में मंदी की लाइन शुरू होने पर वह घटा-बढ़ी के साथ ता. २१ फरवरी ७७ तक चल सकेगी ; उसके बाद पुनः एक तेजी की संभावना प्रतीत होती है। यह तेजी उत्तम-मध्यम ता. ५ सितम्बर ७७ तक चलेगी और फिर मिथुन में गुरु के प्रवेश से पुनः मदी का वातावरण हमको लगता है। गुड़-खाँड़ में इस वर्ष जब भी मंदी आये, तेजी का धंधा करने की व्यापारियों को हम सलाह देते हैं।

अनाज-दालवाना—अनाज-दालवाना में सबसे ज्यादा असर शनि व राहु का हम मानते हैं। गत वर्ष कर्क राशि में शनि तथा तुला राशि एवं स्वाती नक्षत्र में राहु के प्रसार से अनाज-दालवाना के उत्पादन में कमी तथा बरसात की खेंच का योग बना था। ता. २८ अप्रैल ७६ से राहु तुला एवं स्वाती में प्रविष्ट हुआ और ता. ११ जुलाई १९७६ को शनि अस्त हुआ। अतः १० जुलाई ७६ तक का योग बहुत तेजीप्रधान था। ता.११ जुलाई को शनि अस्त होने से इसने दुष्काल का योग थोड़ा कम कर दिया। इसके कारण देशव्यापी बरसात होने की सम्भावना है तथा ऊँचे भावों में बाजारों में मंदी की प्रतिक्रिया हो सकेगी; लेकिन ता.२५ दिसम्बर ७६ तक राहु स्वाती में चलेगा, तब तक बहुत बड़ी मंदी की आशा नहीं रखनी चाहिये। १९७७ की साल में अनाज-दालवाना में बहुत अच्छी घटा-बढ़ी हमको लगती है। साल के शुरू से ता.२० फरवरी तक एक मदी, बाद में धीरे-धीरे तेजी आ सकती है। ता. १८ जुलाई ७७ को मिथुन में गुरु-प्रवेश के बाद बाजारों में झड़पी मदी लगती है ; क्योंकि मिथुन का गुरु होने के बाद इसका जो अतिचारीपन ता. १४ फरवरी १९७५ से चालू है, वह मिट जायेगा जिससे सारे देश एवं विश्व को आर्थिक शांति मिलेगी। तथा गत दो साल से बड़े-बड़े धन कुबेरों को जो अशांति रही है, वह मिट जायेगी तथा व्यापारियों में एक नई प्रगति का जोग १ सकेगा। **नोट कर लें!**

आपके लाभ की बात :—वायदा व सट्टे तथा किसी भी तरह के हाजिर का व्यापार आप इस वर्ष सन् १९७६ की साल में करना चाहते हैं तो पहले आप अपनी "जन्म-कुण्डली" खोलकर नीची लिखी बातें जरूर देख लें।

यदि आपकी जन्म-कुण्डली में नं० ४ या ५ की संख्या की राशि में सूर्य, चन्द्रमा अथवा मंगल ग्रह बैठे हैं तो आपको किसी प्रकार का बड़ा तथा रिस्की (जोखम का) व्यापार नहीं करना चाहिये ; क्योंकि आपके उक्त ग्रहों के ऊपर शनि ग्रह का ट्रांजिट चलेगा। अतः आप एक बार अपनी जन्म-कुण्डली की नकल हमारे पास भेज दें।

जिनका जन्म ता. १५ जुलाई से १५ अगस्त के बीच में होगा, उन्हीं के जन्म-चक्र में सूर्य ४ संख्या की राशि में होगा तथा ता. १५ अगस्त से १६ सितम्बर के पीरियड में जिनका जन्म होगा, उनका सूर्य ५वीं संख्या की राशि में होगा।

इसी प्रकार जिनकी जन्म-कुण्डली में तुला व कन्या राशि में अर्थात् नं० ७ व ६ की संख्या में सूर्य चन्द्रमा मंगल एवं गुरु बैठे हों; चाहे इनमें-से एक ही ग्रह हो, चाहे दो या चार हों, उनके लिये भी १९७६-७७ का साल बाधक साल है। अतः यदि आप व्यापार करना चाहते हैं तो पहले हमारे पास अपनी जन्म-कुण्डली की एक नकल भेज दें तथा हमारी राय व सलाह आने पर ही व्यापार करें। हम आपको खराब ग्रहों का उपचार भी लिख भेजेंगे। कुण्डली में ७ व ६ संख्या के खाने में यदि ये ग्रह बैठे हैं तो उन पर राहु का ग्रहण सन् १९७६-१९७७ की साल में चलेगा, सो सावधान रहें! "चिन्ताहरण जंत्री" के पाठकों के लिये प्रति कुण्डली के निरीक्षण एवं उपचार बताने की फीस सिर्फ ७) तथा अन्य के लिये रु० १५) होगी। कुण्डली के साथ मनिऑर्डर आनेपर ही उपचार एवं कुण्डली का फलादेश भेजा जा सकेगा; नोट कर लें!

* एक विशेष सूचना *

शनि राहु तथा बृहस्पति ग्रह का बाजारों की घट-बढ़ पर सबसे ज्यादा असर पड़ता है वे तीनों ही महत्त्वपूर्ण ग्रह सन् ७७ में अपनी राशि एवं नक्षत्र चेंज करते हैं। अतः सभी प्रमुख बाजारों में जबर्दस्त उथल-पुथल तथा तूफानी घटा-बढ़ी चलेगी। हमने अपने इस लेख में हर साल से भी ज्यादा विस्तारपूर्वक बाजारों का भविष्य दिग्दर्शन किया है; फिर भी हम कितना ही प्रयास करें जंत्री में स्थान की कमी से जितना खुलासावार भविष्य हम चाहते हैं, उतना नहीं लिख सकते। अतः हमने हर साल की तरह इस साल सन् १९७७ के लिए भी दो "भविष्य-फल" प्रकाशित किये हैं। नं०१. वायदा तथा हाजिर-बाजार भविष्य-फल सन् १९७७ कीमत ३०) पेज संख्या ३००. नं० २. तिलहन-बाजार-भविष्य १९७७. कीमत २५), पेज २५०।

नं० १. "भावी-फल" में रुई कपास चाँदी सोना तिलहन पाट बारदाना गुड़ खाँड़ अनाज किराना आदि प्रमुख १९ बाजारों का भविष्य-दिग्दर्शन किया है। कुल ८(आठ) पुस्तकों को स्वतन्त्र रूप से इस एक ही 'भावी-फल' में सलग्न किया है। दीपावली १९७६ से दिसम्बर ७७ तक के १४महीनों के स्पेशल चांस, मासिक साप्ताहिक एवं दैनिक भविष्य इसमें प्रस्तुत हैं। आपको बेहद पसन्द आयेगा।

नं० २. तिलहन-बाजार-भविष्य-१९७७ में तिलहन की प्रत्येक जिंस तेल सींगदाना अलसी अरण्डा सरसों कपासिया तथा बेजीटेबुल प्रत्येक बाजार का अलग जिसवार खुलासा भविष्य दिया हुआ है। आप अवश्य मँगावें; आपको अपने व्यापार में बेहद मदद मिलेगी। एक बार हमारा "भावी-फल" मँगाने के बाद हर साल आप मँगवाना चाहेंगे। दोनों भावी-फल एक साथ मँगाने का केवल ४५) पोस्टेज फ्री है।

एक बात और—यदि आप किसी एक जिन्स-बाजार का हमसे हर महीने विशेष मार्गदर्शन व चांस चाहते हैं तो वह भी हम भेज सकेंगे। उसका लवाजम केवल ५१) पूरे वर्ष का हम आपसे लेंगे। आपको हर महीने पत्र रिपोर्ट हम भेजते रहेंगे। एक से ज्यादा जिंस के भी स्पेशल वार्षिक ग्राहक बन सकते हैं। आज ही लिखिये,

प्रोफेसर बी. सी. मेहता
"ज्योतिष-मार्तण्ड, ज्योतिष रत्न"
जैन-ज्योतिष-ब्यूरो, ब्यावर-(राजस्थान) Pin. 30590.

❀ नवर[illegible]-धारण की सर्वोत्तम विधि ❀

दोष हीन गुनवन्त लख, समै चन्द्र सुभ वार।
कचन आसन सिद्ध कर, जड़ा रत्न अंग धार॥
मेषे रवि ससि वृषपर होई। मकर भौम कन्या बुध जोई॥
गुरू कर्क भृगु पर रह मीना। तुल पर शनि राहु मिथुईना॥
धनु पर केतु उच्च इमिमानी। जड़ा रत्न नवग्रह सुभ जानी॥
सोध नवांसक ससि बलवाना। वार नखत तिथि समै सुआना॥
उच्च रासि इमि ग्रह जब जाई। एक-एक रत्न जड़ावत जाई॥
काढ़ि समै दिन जड़ नव जाई। करे दान मणि सब मँगवाई॥
देव बन्धु जन द्विज जिमवाई। विधिवत पूजि रत्न अंग लाई॥
देत न कष्ट नष्ट ग्रह कोई। अन धन सुत सुख सम्पत्ति होई॥
सुन अमरीष कहा सिर नाई। बहुत काल में ग्रह इमि आई॥
सुगम रीति कहिए मुनिराई। जासो रत्न वेगि अंग लाई॥
उत्तम रीति प्रथम हम गाई। दूसरि रीति सुनहु चित लाई॥
ऊँच नवांसक में ग्रह लाई। एक-एक रत्न जड़ावत जाई॥
मेष राशि पर रवि लख पं[illegible]॥
गुरु भृगु मंद राहु पुनि केतू। साध ऊँच ग्रह मणि जड़ देतू॥

❀ नवरत्न अँगूठी में जड़ने की विधि ❀

—छन्द उरवसी—

रविरत्न पर्म निधान जे, ग्रह बीच मानक आनजे॥
शशि रत्न सील निधान है, अगनव्य[1] मोति-स्थान है॥
महिपुत्र तेज निधान सो, दखिनेस[2] मूंग लगान सो॥
बुध रत्न रूप निधान सो, धर पन्न कोनीसान[3] सो॥
गुरु बुद्धि दायकमान जे, पुपराग उत्तर जानजे॥
भृगु रत्न कला अनूप है, दिस पूर्व हीरा भूप है॥
शनि ज्ञान-दृष्टि महान जे, पछिमेस सुभ लीलान जे॥
छलि राहु वीर महान् सो, नइरित्य मेदक मान सो॥
बलिकेत करम विधान सो, वयडूर बायव लान सो॥
इमि रत्न सुभ जड़ पैनता, सुत सम्पती सब चैन ता॥
दोहा—दोष हार नवरत्न सुभ, धार समै दिन देख।
देव [illegible] सिद्धि काज मन लेख॥

१ अग्निकोण। २ दक्षिण। ३ इशानकोण।

हस्तसामुद्रिक से व्याधि-ज्ञान

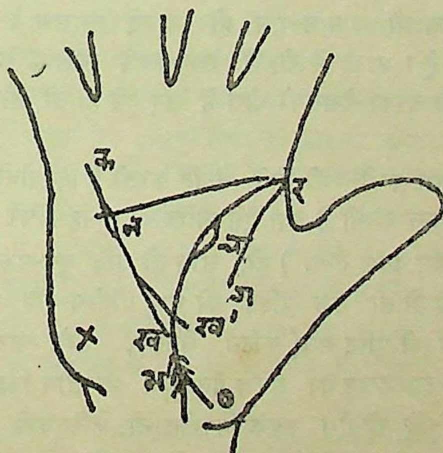
लेखक—श्रीहरिदत्त शर्मा एम. ए., बी. एड., सरस्वती सदन, सुजानगढ़ (राजस्थान)

मानव-बालक जन्म के साथ अपना उचित तापक्रम (९८·४ फ़ारनहाइट) लेकर भूतल पर अवतरित होता है। खान-पान, उपयुक्त वातावरण के अभाव एवं शुभद ग्रहों की पूर्ण दृष्टि प्राप्त न होने से वह रोगग्रस्त हो जाता है। विभिन्न निदान-प्रक्रिया में यह भी एक तथ्य है कि बारह क्षार(लवणों) में-से किसी एक के अभाव से रोग-विशेष उत्पन्न होता है और शरीर में आवश्यक लवण पहुँचाने पर व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है। हस्तसामुद्रिक हमें इस विषय में पूर्व-सूचना देता है जिससे सतर्क होकर हम स्वस्थ रह सकते हैं। वैद्य-डॉक्टर जीभ देखकर कब्ज का पता लगा लेते हैं; वनस्पति-



विज्ञानवेत्ता पत्ते की रेखा आदि को देखकर पेड़ के पुरानेपन को, उसे मिलनेवाले खाद एवं पत्ते की ताजगी का पता लगा लेते हैं। इसी प्रकार हाथ एक ऐसा ग्राफिक रेकॉर्ड है जिसमें विभिन्न घटनाओं के अलावा व्यक्ति में विभिन्न रोगों के होने का भी संकेत प्राप्त हो जाता है।

हाथ में रेखाओं के अलावा नाखून भी रोग निदान-प्रक्रिया में बड़े सहायक हैं। हम जो भी भोजन करते हैं, वह २८।-९ दिन बाद पूर्ण शुद्ध धातु शुक्र बनता है। अन्य छः धातुओं के छः मैल निकलते हैं जिनमें मल, मूत्र, पसीना, बाल आदि हैं। नख भी इसी प्रक्रिया में हड्डी का मैल है। नख में काला-नीलापन, गड़ारीदार एवं खड़ी रेखाएँ हों तो यह सब राजयक्ष्मा का संकेत होता है। नखों की जड़ में यदि चन्द्रमा की आकृति का श्वेतभाग काफी बड़ा हो तो यह शरीर में कैलसियम(चूने) के अभाव को बतलाता है। इससे नकसीर फूटना, दूध का अच्छा न लगना एवं शारीरिक सुदृढ़ता की कमी जाहिर होती है।



साधारणतया हाथ में एक ही स्वास्थ्य-रेखा होती है (देखिए हस्त चित्र में रेखा क–ख)। पौर्वात्य और पाश्चात्य पद्धति में अन्तर अवश्य है। पाश्चात्य पद्धति में इसी स्वास्थ्य-रेखा को 'लाइन ऑफ हेपेटीका' या 'लीवर लाइन' कहते हैं तो पौर्वात्य में इसे बुध-रेखा या व्यापार-रेखा कहते हैं। बुध अथवा व्यापार ठीक से व्यवस्थित तभी रह सकता है जब हमारा पेट ठीक रहता हो। वैसे, शरीर के चारों वर्णों में सिर को ब्राह्मण, भुजा को क्षत्रिय तथा पेट को वैश्य माना गया है और पैर को शूद्र ! (**ब्राह्मणोऽस्य मुखमासि बाहु राजन्य कृत्उ रुतद्स्य**) इस तरह पेट और व्यापार पर्यायवाची बन गये हैं। कीरो के अनुसार हाथ में इस रेखा का न होना शुभ माना जाता है। अन्य विशेषज्ञों ने [illegible] को अच्छी स्वास्थ्य का चिन्ह बताया है जो अधिक

मानव-मस्तिष्क विनाशके निकट

डाक्टर आईवान खोरोल नामक प्रमुख रूसी चिकित्सकने अपनी रिपोर्टमें यूनेस्कोसे अनुरोध किया है कि मानव-मस्तिष्क की रक्षाके लिए वह विश्वव्यापी अभियान चलाये। उनका कहना है कि मानव-मष्तिष्क पृथ्वीपर सर्वोत्तम मानसिक उपकरण है; लेकिन वह विनाशके कगार पर पहुँच गया है।

डाक्टर खोरोलका कहना है कि करोड़ों व्यक्ति दीर्घकाल से मानसिक तनाव से पीड़ित हैं। इसका सभ्यता प जो खतरनाक प्रभाव पड़ सकता है उसे सामान्यतया लोग महसूस नहीं कर पाते।

उन्होंने चेतावनी दी है कि मानसिक तनाव के परिणाम-स्वरूप मानव की शक्ति का दु:खद ह्रास हो सकता है जिसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। बीसवीं शताब्दि में प्रत्येक व्यक्ति के जितनी ज्ञान की अपेक्षा की जाती है उससे उसकी स्मरण-शक्ति पर आवश्यकता से अधिक बोझ पड़ जाता है।

मस्तिष्क के विनाश के अन्य कारण भी हैं; जैसे, दैनिक जीवन में कार्यबाहुल्य, राजनीतिक, नैतिक और तकनीकी परिवर्तनों में हो रही तीव्र वृद्धि और उनके अनुरूप मानव का अपनेको ढाल न पाना; तदनुरूप अपने को ढालनेकी मानसिक क्षमता मानव के पास निस्सीम नहीं है।

ठीक जान पड़ता है। यही रेखा (क–ख) यदि दूर चलकर आयु-रेखा को काटती है तो यह मृत्यु की सूचना है जिसका वर्षमान आयु-रेखा से निश्चित करना चाहिये। आयु-रेखा में (च) स्थान पर यदि कोई यव होगा तो उस (वयमान पर आकृति में ३२ से ३४ वें वर्ष में) शरीर में लम्बी बीमारी होगी। वह दुर्बल एवं क्षीण होगा। यदि बचाव-रेखा, मंगल-रेखा (र–ग) सुस्पष्ट है तो शरीर रोग से मुकाबला करता हुआ नीरोग रहेगा। आयु-रेखा के अन्त में दो संकेत हुआ करते हैं—बारीक रेखायें नीचे की ओर भुकाववाली हों या आयु-रेखा द्विशाखा में विभक्त हो। पहली स्थिति में (म) शरीर का नाड़ी-केन्द्र दुर्बल होता है; दूसरी स्थिति (०) में दो बातें होती हैं—(१) पेशाब में शक्कर आना तथा (२) जन्म-स्थान से मृत्यु-स्थान का भिन्न होना।

स्वास्थ्य-रेखा पर मस्तक-रेखा के पास यदि एक यव पाया जाय तो व्यक्ति को टॉन्सिल(गले की गिल्टियों) का मर्ज होता है। इसी प्रकार के कई यवों की माला उसी रेखा पर हो तो वह राजयक्ष्मा का संकेत होता है; लेकिन इसके साथ नख और त्वचा के चिन्ह भी भलिभाँति देख लेने चाहिये। प्राचीन काल में इस रोग की अवधि एक हजार दिन की होती थी, लेकिन आज के युग में प्रथम स्टेज पर ही इसकी सफल चिकित्सा सुलभ हो गयी है।

नेत्र-ज्योति के विकार, अंधेपन में सूर्य-पर्वत एवं अनामिका अँगुली के नीचे गोल वृत्त इस दोष की पूर्व-जानकारी दे देता है। लेखक ने ९०% अंधे व्यक्तियों के इस पर्वत पर यही चिन्ह पाया है। अमृतसर में अंधे बालकों के स्कूल में १० में-से ८ छात्रों के पूर्ण वृत्त और दो के अस्पष्ट अर्ध-वृत्त थे, जिनकी आँखे थोड़े दिन पहले ही चली गई थीं। यही गोलाकार चिन्ह यदि चन्द्र-पर्वत पर हो तो यात्रा में डूबने से मृत्यु का संकेत देता है। इसके साथ-साथ यदि चंद्र-पर्वत पर गुणा (×) का चिन्ह हो तो यह डूबकर बचने का संकेत है, मृत्यु का नहीं। चटगाँव में एक बार समुद्री तूफान के चपेट में जो नाविक आ गये थे, उन सब के हाथों में यही गुणा (×) का चिन्ह था।

स्वस्थ शरीर में, माना कि, स्वस्थ दिमाग रहता है; लेकिन कभी-कभी इसके विपरीत भी देखा गया है। स्वस्थ दिमाग में अत्यधिक चिन्ताओं एवं अन्य मनोविकार से भी शरीर में रोग व्याप्त हो जाते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे एक बड़ा यव और भाग्य-रेखा में कहीं पर कोई द्वीप का होना इस तथ्य की ओर संकेत देता है। स्वास्थ्य-रेखा टेढ़े-मेढ़े रास्ते से गुजरती हो और उसमें एक द्वीप या यव हो तो पौर्वात्य पद्धति में यह दिवालिये होने की सूचना है; लेकिन यह असंगत लगता है; क्योंकि इसे व्यापार-रेखा माना जाय तो उस हालत में भी सूर्य-रेखा या भाग्य-रेखा पर अन्य कोई-न-कोई संकेत अवश्य होता है।

सामुद्रिक शास्त्र के ज्ञाताओं में गेटिंग्स, जेक्विन, गफ्फार आदि ने स्वास्थ्य-रेखा को सामान्यतया उदर-रोगों से सम्बन्धित बताया है। हल्की दोहरी रेखा होने से कब्ज, आँतों की खराबी जानी जाती है। डेसबोरिल्स ने बुध-पर्वत की उँचाई से इस रेखा की उत्पत्ति हृदय-रोग का कारण बताया है। केवल मस्तक-रेखा को न छूती हुई और चन्द्र-पर्वत से ऊपर के भाग में इसकी हल्की-सी उपस्थिति एक अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण माना गया है। केथराइन सेंट हिल ने दोनों हाथों में दो-दो स्वास्थ्य-रेखाओं का पास-पास होना अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुभ संकेत बताया है। पाश्चात्य देशों में यह नियम अधिक उपयुक्त है। भारत में दोहरी रेखा अच्छे स्वास्थ्य के पक्ष में नहीं। अगर स्वास्थ्य-रेखा पर एक ऐसा बड़ा यव (द्वीप) हो जो मस्तक-रेखा को बीच में लिए हुये हो तो लीवर की खराबी या पीलिया(पाण्डु रोग) होना पाया जाता है।

हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा कभी-कभी ऐसी संगति करती हैं कि दोनों अधिक नजदीक होकर सँकरा स्थान बना लेती हैं जो दमा की शिकायत उत्पन्न करती हैं तथा ऐसे व्यक्ति को न पहाड़ पर चढ़ना चाहिये और न तैरना ही चाहिए।

हाथ में शुक्र-मुद्रिका (गर्डल ऑफ वेनस) हो, साथ ही यदि शुक्र-पर्वत के वृत्त का चतुर्थांश पूर्ण गोलाकार न होकर आयु-रेखा संकीर्णता लिए हुए हो तो उस व्यक्ति को धातु दौर्बल्य-दोष होता है, संतान कम होती या नहीं होती अथवा अल्पायु होती है। इस मत की पुष्टि सब(कॉटन, बेनहम, कीरो, जरमेन) ने की है। मस्तक-रेखा पर कहीं काला या नीला बिंदु पाया जाना टायफाइड का संकेत देता है। भारतीय विद्वान के. सी. सेन का ऐसा मत है तथा दास और क्रॉम्पटन ने भी इसकी पुष्टि की है। इसके विपरीत नो. जेक्विन के मतानुसार हाथ की पेपलरीरिजेज में जो डेल्टाज होते हैं, उनका कटाव हो जाय तभी उनसे उक्त व्याधि का संकेत मिलता है; क्योंकि प्रत्येक व्याधि का पूर्व-ज्ञान शरीर के कुछ अवयवों को आन्तरिक रूप से हो जाता है—जिनमें कोषाणु, ग्रन्थियाँ एवं त्वचा मुख्य हैं। हृदय-रेखा पर भी किसी बिंदु का होना नेत्र-विकार का सूचक है। नखों पर जो कभी-कभी सफेद धब्बा नजर आता है, वह शरीर में प्रोटीन व चर्बी की कमी का द्योतक है। छोटे नखवाले निर्णय लेने में बड़े जल्दबाज होते हैं तथा चौकोर छोटा नख हृदय को दुर्बल बनाता है। नखों की पूरी बढ़ोतरी समानरूप से नहीं होती है—अँगूठा १४० दिन, कनिष्ठा १२१ दिन तथा पूरे नख को अँगुली में आने तक तर्जनी भी १२४ दिन का समय ले लेती है।

शुक्र-पर्वत को घेरनेवाली आयु-रेखा पर जहाँ काला बिंदु हो या जहाँ से नीचे की ओर जानेवाली कोई रेखा निकलती हो, उस वयमान पर व्याधि का प्रारम्भ होता है। लम्बी बीमारियों या गम्भीर व्याधि के परिणाम उन्हीं से सम्बन्धित हैं और तदनुसार व्यक्ति की आयु का प्रामाणिक समय निश्चित करना चाहिए। साथ में उसी आयु पर भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा पर कोई रुकावट (तिरछी रेखा) अवश्य होगी। ऐसी रुग्णतासूचक रेखाओं में कहीं पर कोई आयतन या वर्ग हो तो भयंकर स्थिति से सुरक्षा व बचाव हो सकता है। अँगूठा और कनिष्ठा अँगुली के मूल भाग को मिलानेवाली रेखा हाथ पर खींची जाय तो वह आयु-रेखा को जहाँ काटेगी, वह स्थान ३५ वर्ष की आयु का सूचक होता है। इस रेखा पर आयु की बढ़ोतरी मणिबन्ध की ओर होती जाती है। इसके विपरीत भाग्य और सूर्य-रेखा पर आयु का संकेत मणिबन्ध से ऊपर की ओर होता है। भाग्य-रेखा जहाँ मस्तक-रेखा को स्पर्श करे, वहाँ ३४ साल का वय तथा जहाँ हृदय-रेखा को स्पर्श करे, वहाँ ५५ साल का वय मानना चाहिए। अधिक रेखाओंवाली महिलाओं के हाथ में यदि चन्द्र-पर्वत दबा हुआ हो और वहाँ एक तारा हो तो हिस्टीरिया होने का अंदेशा बना रहता है। यदि हृदय-रेखा, मस्तक-रेखा व आयु-रेखा तीनों एक ही स्थान पर मिलें तो मशीन या औजार की चोट एवं दुर्घटना से बचे रहना चाहिये। आयु-रेखा में उस दुर्घटना के समय मंगल(सहायक) रेखा के कटाव को देखना चाहिए। वहाँ मंगल-रेखा सुस्पष्ट रहना बचाव का संकेत है। मस्तक-रेखा यदि शनि-पर्वत के नीचे टूट गई हो और एक लाल धब्बा वहाँ किसी एक किनारे पर हो तो व्यक्ति भयंकर दुर्घटना का शिकार होगा।

उपर्युक्त व्याधियों के अलावा दोनों हाथों की रेखाओं का अध्ययन कर अन्य स्पष्ट तथ्य पाठकों के समक्ष पुनः रखे जा सकते हैं।

पूर्वाह्णकालादिषुयात्रा—पूर्वाह्णेऽप्युत्तरां गच्छेत्प्राचीं मध्यन्दिने तथा। दक्षिणां चापराह्णे तु पश्चिमामर्द्धरात्रके ॥ (एवं कृते सूर्यो दक्षिणे भवति)न तत्राङ्गारकोविष्टिर्व्यतीपातो न वैधृतिः। सिद्धचन्ति सर्वेकार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ ॥

पूर्वाह्ण में उत्तर दिशा की यात्रा करे, दोपहर में पूर्व की यात्रा करे, अपराह्ण में दक्षिण दिशा की यात्रा करे, अर्धरात्रि में पश्चिम दिशा की यात्रा करे। ऐसा करने पर सूर्य दक्षिण की ओर हो जाता है; यात्रा में यदि सूर्य दक्षिण की ओर हो तो मंगलवार, भद्रा, व्यतीपात तथा वैधृति का दोष नहीं होता है तथा सब कार्य सिद्ध होते हैं।

पूर्वाह्णकालादिषु यात्रायां वर्ज्यनक्षत्राणि—पूर्वाह्णे ध्रुवमिश्रभैर्न नृपतेर्यात्रा न मध्याह्नके। तीक्ष्णाख्यैरपराह्णके न लघुभैर्नो पूर्वरात्रे तथा। मैत्राख्यैर्नच मध्यरात्रि समये चोग्रैस्तथा नोचरे रात्र्यन्ते हरिहस्तपुष्यशशिभिः स्यात् सर्वकाले शुभा ॥

ध्रुव तथा मिश्र नक्षत्रों में पूर्वाह्ण में यात्रा न करे। तीक्ष्ण नक्षत्रों में मध्याह्न के समय यात्रा न करे। लघु नक्षत्रों में अपराह्ण के समय यात्रा न करे। मैत्र नक्षत्रों में पूर्व-रात्रि के समय यात्रा न करे। उग्र नक्षत्रों में मध्यरात्रि के समय यात्रा न करे। चर नक्षत्रों में रात्रि के अन्त में यात्रा न करे। श्रवण, हस्त, पुष्य तथा मृगशिरा नक्षत्रों में सब समयों की यात्रा शुभ है।

उषःकालो विनापूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना। विनोत्तरां निशीथः सनयाने याम्यां विनाभिजित् ॥ पूर्वाह्णेऽप्युत्तरां गच्छेत्प्राचीं मध्यन्दिने तथा। दक्षिणां चापराह्णे तु पश्चिमामर्धरात्रके ॥

पूर्वदिशा की यात्रा को छोड़कर अन्यत्र उषःकाल शुभ है। पश्चिम दिशा को छोड़कर अन्यत्र गोधूलि शुभ है। उत्तर दिशा को छोड़कर अन्यत्र अर्धरात्रि शुभ है। दक्षिण दिशा को छोड़कर अन्यत्र अभिजित् शुभ है। पूर्वाह्ण में उत्तर दिशा की, दोपहर में पूर्व की, अपराह्ण में दक्षिण की, अर्धरात्रि में पश्चिम की यात्रा करे।

उषःकालादि प्रशंसा—उषः प्रशंसते गर्गः शकुनञ्च वृहस्पतिः। अङ्गिरा मन उत्साहं विप्रवाक्यं जनार्दनः ॥ गर्ग मुनि उषःकाल की प्रशंसा करते हैं। बृहस्पति शुभाशुभ शकुन की प्रशंसा करते हैं, अंगिरा ऋषि कहते हैं कि जब चित्त में उत्साह, उमंग हो तब यात्रा करनी चाहिऐ। जनार्दन का मत है कि जब ब्राह्मण आज्ञा दे तब ही यात्रा शुभ है।

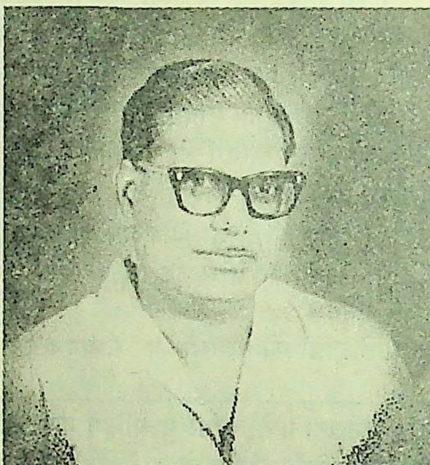
योग नक्षत्र शकुन मुहूर्त-सिद्धिः—योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्ष गणैरपि भूदेवानाम्। चौराणामपि शुभशकुनैरुक्त मुहूर्तैरन्यमनुजानाम् ॥ राजाओं को ग्रह-योग से, ब्राह्मण को नक्षत्र से, चोरों को शकुन से, शेष मनुष्यों को मुहूर्तों से यात्रा सिद्ध होती है।

छींक-विचार—छींक प्रायः सब दिशाओं की खराब होती है। अपनी छींक महा अशुभ होती है। गौ की छींक मरण करती है। बायीं और पीछे की ओर छींक हो तो दोषकारक नहीं है। "सम्मुख छींक लड़ाई माखे। छींक दाहिनी द्रव्य बिनासे ॥ ऊँची छींक कहै जयकारी। नीची छीक होय भयकारी ॥" कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमाइन का छींक विशेष अशुभ होती है। आसन, शयन, शौच, दान, भोजन, औषधि-सेवन, विद्यारम्भ और बीज बोने के समय, युद्ध या विवाह में जाते समय छींक हो तो शुभ फलदायक होती है। शराब, सुँघनी, पीनस-सर्दी से होनेवाली छींक, बच्चे और बूढ़े की छींक तथा हठ से [illegible] निष्फल होता है। लगातार छींकने पर यदि छींक न रुके तो मनुष्य जिस काम के लिए जा रहा हो, उसमें विघ्न अवश्य होगा। 'एक नाक दो छींक। काम बने सब ठीक ॥'—यह भी लोकोक्ति है।

अंकशास्त्र और वर्षफल-विचार

लेखक—श्रीविजय भानु गुप्त नं० ७ नेहरू मार्केट, वाराणसी।

अंकशास्त्र का उपयोग वर्षफल-विचार की दृष्टि से भी किया जा सकता है। इसका अध्ययन-क्षेत्र विस्तृत है, इसलिए इसकी विस्तृत मीमांसा करने पर ही व्यक्तिगत् उपयोगिता प्राप्त हो सकती है।



अंकशास्त्र के अन्तर्गत् जहाँ प्रत्येक दिन यानी तारीख को हम व्यक्तिगत दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण समझते हैं, वहीं मास की उपयोगिता आम बातों के लिए है; परन्तु वर्ष के बारे में अध्ययन मनुष्य के भावी लक्ष्य की ओर इंगित करता है। इस लेख में हम वर्ष से सम्बन्धित उपलब्धियों पर ही विचार करेंगे। चूंकि हमारा विवेचन पाश्चात्य पद्धति पर आधारित है, इसलिए हम वर्ष के ईसवी सन् को ही प्रमुखता देते हुए उसी के विषय में विचार करेंगे। जो ईसवी सन् बीत चुके हैं, वे इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं; लेकिन आगे आनेवाला वर्ष हर किसी के लिए सुखद भविष्य की कामना से परिपूर्ण होता है। अतः आगामी सन् १९७७ ई० के विषय में ही विवेचन करना श्रेयस्कर होगा।

विस्तृत दृष्टिकोण के अन्तर्गत पहले हम यह देखें कि जिस देश में हम रहते हैं उस देश के लिए, अर्थात् 'भारत' के लिए यह वर्ष कैसा है। भारत का नाम-नम्बर निकालने पर

B H A R A T
2 5 1 2 1 4 = 15

आता है अर्थात् अंकशास्त्र की दृष्टि से १+५=६ नम्बर का यह देश है। वर्ष १९७७ भी १+९+७+७=२४=२+४=६नम्बर के अन्तर्गत आता है। आशय यह कि भारत के लिए १९७७ का वर्ष बहुत अनुकूल है। दोनों एक ही नम्बर के अन्तर्गत होने के कारण सामंजस्य एवं सानुकूलता का वातावरण बराबर ही परिलक्षित होता रहेगा। अंक-शास्त्र की दृष्टि से नम्बर ६ शुक्र ग्रह का प्रतोक है। शुक्र में आकर्षण-शक्ति की प्रधानता होती है। तात्पर्य यह कि इसवर्ष भारत अपनी आकर्षण-शक्ति के प्रभाव में अधिकाधिक राष्ट्रों को लायेगा, उन्हें अपना मित्र बनाएगा, यहाँ तक कि उसके विरोधी भी उसकी आकर्षण-शक्ति से खिचकर मित्रता का हाथ उसकी ओर बढ़ायेंगे।

शुक्र ग्रह सौंदर्य, भोग-विलास, राग-रंग, नाटचकला, पेंटिंग, गीत-संगीत तथा प्रेमानुराग का प्रतीक है। इसलिए इस वर्ष भारत में कला एवं संगीत का अधिक विकास होगा। भोग विलास की वस्तुओं का अधिक उत्पादन, उपयोग एवं व्यवसाय होगा। हर तरफ सुन्दरता की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा, जैसा अभी से ही सरकारी आदेश प्रसारित कर दिया गया है कि सड़कों के किनारे वाले मकानों की रंगाई में एकसासाम्य होना अनिवार्य है ताकि शहरों में नया सौन्दर्य दृष्टिगोचर हो। सरकारी रोकथाम के बावजूद भी इस वर्ष शादियाँ अधिक होंगी तथा बच्चे भी अधिक पैदा होंगे।

शुक्र ग्रह से प्रभावित लोग अपने कर्त्तव्यों के प्रति भी विशेष जागरूक होते हैं। इसलिए किसी न्यायोचित पक्ष में यदि भारत ने समर्थन दे दिया तो बड़े से बड़ा खतरा उठाकर भी उससे पीछे वह नहीं हटेगा, प्रत्युत अपने मित्र पर कोई मुसीबत आ पड़ी तो उसके निराकरण में भारत आखिरी दम तक मित्र का साथ देगा। शुक्र ग्रह से प्रभावित लोगों की विचारधारा एवं कार्य-प्रणाली में कुछ जिद्दीपन भी होता है; लेकिन वे अपनी आकर्षण-शक्ति से दूसरों को अभिभूत कर लेते हैं; बल्कि एक तरह से उन्हें अपना मुरीद बना लेते हैं। आशय यह कि भारत में कतिपय कार्य-प्रणाली के क्रियान्वयन में कुछ जिद्दीपन

सात के अंक का महत्त्व

कानपुर ११ जनवरी ६८' में प्रजा समाजवादी पार्टी की कार्य-कारिणी के सदस्य श्रीहरिविष्णु कामथ ने यहाँ कहा था कि भारत वर्ष के लिए सन् में सात की संख्या का अपना पृथक् महत्त्व है।

जब सन् में ७ का अंक आ जाता है तो कोई-न-कोई महत्त्वपूर्ण घटना घटित होती है।

आपने '७' के अंक का विश्लेषण करते हुए बताया कि सन् १९०७ में मिंटो रिफार्म्स एक्ट बनाया गया और उसे १९१७ में लागू किया गया।

सन् १९२७ में साइमन कमीशन आया और १९३७ में प्रथम बार कांग्रेस ने शासन सँभाला। १९४७ में देश स्वतन्त्र हुआ। १९५७ में प्रथम बार केरल में कम्यूनिष्ट मंत्रि-मंडल बना।

अब सन् १९६७ में सभी दलों के किसी-न-किसो प्रांत में मंत्रि-मंडल बन गये तथा कांग्रेस को अपदस्थ होना पड़ा। आ० स०

की झलक अवश्य दिखाई देगी ; लेकिन कुछ दिनों बाद लोग उनके ऐसे अभ्यस्त हो जायेंगे अथवा कायल हो जायेंगे कि विरोध करना छोड़ देंगे ; फिर कुछ दिनों बाद तो सब कार्य सहजरूप से चलने लगेगा। इतनी अच्छाइओं के बावजूद नम्बर ६ में एक दुर्गुण भी है कि उसका माध्यम अपनी आकांक्षा-पूर्ति में इतना अधिक संलग्न हो जाता है कि दूसरों का हिता-हित भी भूल जाता है। इसलिए व्यभिचार कदाचार एवं लूट-खसोट की ओर अग्रसर हो जाता है। नम्बर ६ की अधिक पुनरावृत्ति से दुष्प्रवृत्तियों का उद्भव हो जाता है, जैसाकि बाइबिल तथा अन्य लेखों (Writings) में तीन छ. (६,६,६) को पाशविकता की संज्ञा दी गई है। उसका भी ठोस आधार है। ६ + ६ + ६ = १८ = १ + ८ = ९ नम्बर युद्ध और संघर्ष का प्रतीक है जबकि छः नम्बर शान्ति एवं सद्भाव का प्रतीक है। इसलिए भारत को भी पाशविक मनोवृत्ति तथा व्यभिचार की रोकथाम के लिए पूर्ण मुस्तैदी बरतनी पड़ेगी।

१९७७ का यदि हम सूक्ष्म विवेचन करें तो देखेंगे कि व्यावहारिक दृष्टि-कोण से १९७७ के बदले सिर्फ ७७ को ही प्रयोग में लाया जाता है। सन् ७७ के अंकों में इकाई एवं दहाई दोनों की संख्याएं ७ ही है। जहाँ हम इकाई की संख्या को अधिक महत्त्व देते हैं, वहीं दहाई की संख्या का सामञ्जस्य भी देखते हैं। इस प्रकार दोनों की संख्याएँ एक ही होने पर आपसी सम्बन्ध में एकरूपता होना स्वाभाविक है। इसका आशय यह कि इस वर्ष ७ के अंक का, इकाई एवं दहाई दोनों में रहने के कारण, अधिक महत्त्व रहेगा। नम्बर ७ नेप्च्यून ग्रह का प्रतीक है जो चन्द्रमा का सहधर्मी ग्रह है। नेप्च्यून में भी जल-तत्त्व प्रधान है। इसलिए इस वर्ष वर्षा की अधिकता के कारण बाढ़ एवं जल-प्लावन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जल-तत्त्व होने के कारण समुद्र के रास्ते विदेशों से व्यापार में भी वृद्धि होगी। व्यक्तिशः जिनका जन्म-नम्बर ७ है, उनके लिए देश-विदेश की यात्रा भी सम्भावित है।

तेरह की करामात

चण्डीगढ़ १६ मार्च '७२ की यह कहानी एक ऐसी पार्टी की है जिसका जन्म ता० १३ जून को हुआ था और फरवरी ता० १३ को ही जिसका अन्त हो गया।

गुरनामसिंह अकाली दल के सचिव श्रीराजिन्दरसिंह का कथन है कि दल का जन्म १३ जून १९७१ को हुआ और १३ फरवरी १९७२ को वह समाप्त हो गया। उन्होंने कहा कि १३ का अंक इस पार्टी के लिए ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण रहा है कि १३ फरवरी को दल की कार्य-समिति के बीस सदस्यों में-से १३ सदस्यों ने दल से त्यागपत्र दे दिया। दल की कारवाई-रजिस्टर के १३वें पृष्ठ तक ही कारवाई अंकित है।

यही नहीं, १३ फरवरी को ही दल के चपरासी ने अपनी दादी के मर जाने पर कार्यालय में कार्य करना बन्द कर दिया था।

इसी तारीख को दल के सचिव श्रीराजिन्दर सिंह और उनके साथियों ने दल से इस्तीफा देकर कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।

विगत १३ मार्च को ही दल के चार उम्मीदवार पंजाब-विधान-सभा के निर्वाचन में पराजित घोषित किये गये।

—यू० एन० आई०

व्यक्तिगत दृष्टिकोण से वार्षिक भविष्य की गणना के लिए पहले अपनी आयु निर्धारित करनी चाहिए। जैसे, किसी का जन्म जनवरी १९३६ में है तो जनवरी १९७७में उसकी आयु ४१ वर्ष पूरी होकर ४२ वीं लगी। अब ४२ की संख्या के मूलांक ४ + २ = ६ का मिलान १९७७ के मूलांक ६ से करें। सामंजस्य होने पर वर्ष शुभफलदायी होगा अन्यथा परेशानी रहेगी। अंकों के आपसी सम्बन्ध के विषय में आप बराबर पढ़ते आ रहे हैं; फिर भी मूल तौर पर ध्यान में रखें कि १, २, ४, ७ का एक दूसरे से सम्बन्ध अच्छा होता है; ऐसा ही ३, ६ एवं ९ के लिए भी समझें। ५ का सम्बन्ध अन्य अंकों से न विशेष अच्छा होता है और न विशेष उलझन-कारक। ८ अंक का सम्बन्ध १, २, ३, ४ से अच्छा समझें; लेकिन ४ आने पर सावधानी बरतनी भी आवश्यक है।

वर्ष-फल की जानकारी के लिए एक दूसरे तरीके से भी विचार करें। आपको अपने नाम का नम्बर निकालने पर जो मूलांक प्राप्त हो, उसमें अपने जन्म-नम्बर को जोड़ें, फिर जो योगांक प्राप्त हो उसे ईसवी सन् के मूलांक में जोड़ें; इस प्रकार से जो कंपाउण्ड नम्बर प्राप्त हो उसका विवेचन सन् १९७३ की इस जन्त्री में छपे हमारे लेख में देखें; वर्ष-फल का रहस्य दृष्टिगोचर हो जायेगा।

साधारणतया अंकशास्त्र के आधार पर वर्ष-फल की जानकरी के लिए हमें अपनी जन्म-तारीख के नम्बर से वर्ष के मूलांक का मिलान करना चाहिए। वर्ष १९७७ का मूलांक ६ आता है, इसका भविष्य यदि नम्बर एकवालों के लिए अर्थात् जिनका जन्म १, १०, १९,२८ तारीखों में हुआ है, उनके लिए देखें तो हमें ज्ञात होगा कि १ नम्बर का ६ नम्बर से पारस्परिक सम्बन्ध नहीं है; लेकिन १ नम्बर इतना प्रतिभाशाली नम्बर है कि उसे ६ नम्बर को आधीन बनाने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होगी तथापि पारस्परिक सम्बन्ध न रहने के कारण उलझनों का सामना तो करना पड़ सकता है। अन्ततोगत्वा इस वर्ष को हम एक नम्बरवालों के लिए साधारणतया अच्छा ही समझेंगे। किसी

भी तरह की प्रतियोगिता में एक नम्बरवालों को सफलता-प्राप्ति के लिए बड़ी नीतिमत्ता से काम लेना होगा अन्यथा ६ नम्बरवालों से मुकावला पड़ने पर किसी (art of magic) जादू की करामात का शिकार हो सकते हैं।

२ नम्बरवालों के लिए भी यह वर्ष साधारण ही जायेगा। वैवाहिक सम्बन्ध जिसका टलता रहा होगा, उसके लिए यह वर्ष विवाहकारक है। २ नंबर एवं ६ नम्बर में कोई विशेष अनुकूलता तो नहीं हैं; लेकिन ६ नम्बर २ नम्बर को आकृष्ट अधिक करता है। इसलिए २ नम्बर-वालों को संयम से अधिक काम लेना चाहिए अन्यथा रोग एवं पारिवारिक व्यथा से अवश्य पीड़ित हो जायेंगे।

३ नम्बरवालों के लिए यह वर्ष प्रायः अच्छा रहेगा। कुछ वर्षों से चली आ रही उनकी समस्याओं का समाधान इस वर्ष सम्भावित है। सुख-ऐश्वर्य एवं भोग-विलास की सामग्री में पैसा अधिक खर्च होगा; लेकिन भविष्य को दृष्टिगत् रखते हुए अपनी समस्याओं के समाधान के प्रति अधिक जागरूक रहें। जिद्दीपन की आदत त्यागकर इस वर्ष अपना काम निकालने की तरकीब पर ही ध्यान दें।

४ नम्बरवालों के लिए यह वर्ष न विशेष अच्छा है और न-ही खराब; फिर भी ७७ के दुहरे ७ अंक के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा ही जाना चाहिए। नौकरी एवं व्यवसाय में तरक्की सम्भावित है; लेकिन स्थानान्तरण का भी योग बनता है। किसी भी प्रतियोगिता में अपनी कुटिल नीति का अनुसरण करने पर ही सफलता सम्भावित है। पारिवारिक दुश्चिन्ता एवं रोग-प्रकोप से सतर्क रहें।

५ नम्बरवालों के लिए यह वर्ष साधारण ही रहेगा। बहुत धैर्य एवं सहनशीलता से काम लेने पर ही सफलता की आशा की जा सकती है। किसी भी प्रकार का गर्व एवं घमंड की मनःस्थिति आ जाने पर बना-बनाया काम बिगड़ सकता है। इसलिए आत्म-संयम से कार्य करें।

६ नम्बरवालों के लिए तो यह वर्ष विशेषतः अच्छा है। नौकरी, व्यवसाय एवं पारिवारिक सुख की दृष्टि से भी यह वर्ष शुभद है। जिनका विवाह किसी कारणवश रुका पड़ा होगा, उनके लिए यह वर्ष निश्चय ही विवाह-कारक है तथा विवाहोपरान्त जिनको बच्चे नहीं हुए हैं, उन्हें नूतन शिशु के शुभागमन की सूचना भी मिलनी चाहिए। दूसरों से सहयोग-प्राप्ति के लिए भी यह वर्ष अच्छा है। रुके हुए काम पूरा करने की चेष्टा करें, साथ-साथ अपनी कमजोरी भी जाहिर न होने दें। कुसंगति एवं दुर्व्यवहार से परिस्थितियाँ विपरीत भी जा सकती हैं जिससे सावधान रहें!

७ नम्बरवालों के लिए भी यह वर्ष अच्छा रहेगा। देश-विदेश की यात्रा अन्यथा तीर्थ-यात्रा तथा नौकरीवालों को स्थानांतरण सम्भावित है। व्यवसायिक दृष्टिकोण से यह वर्ष ७ नम्बरवालों के लिए प्रतिकूल नहीं है; किन्तु शीघ्रता एवं जल्दीबाजी में निर्णय लेने पर नुकसान हो सकता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र की सिद्धि के लिए उन्हें यह वर्ष उत्तम है।

८ नम्बरवालों के लिए तो यह वर्ष कुछ अच्छा नहीं प्रतीत होता। उन्हें अपने अधिकारों के प्रयोग में ज्यादा कड़ाई न बरतनी चाहिए अन्यथा परेशानी बढ़ेगी। पारिवारिक एवं सामाजिक स्थितियाँ भी कुछ विशेष अनुकूल नहीं होंगी; फिर भी अपनी विचारधारा पर नियन्त्रण रखते हुए यथाअवसर अपना काम निकाला जा सकता है। आर्थिक सहयोग पाने के लिए चापलूसी से भी काम लेना होगा।

९ नम्बरवालों के लिए यह वर्ष उत्तम फलदायी होगा। अपने ऊपर थोड़ा नियन्त्रण एवं बुद्धिमानी से काम लें तो इस वर्ष उन्हें हर कार्य में सफलता हस्तगत होगी। नौकरी एवं व्यवसाय में तरक्की की दृष्टि से भी यह वर्ष अच्छा है। रुके-रुकाये सभी काम हल होंगे। कुछ कार्य-साधन के लिए सतत प्रयास एवं संघर्ष भी करना पड़ सकता है; लेकिन नीतिमत्ता एवं बुद्धि-चातुर्य से तो सब कार्य अपने आप हल हो जायेंगे। किसी भी कार्य में पराकाष्ठा तक जाने की चेष्टा न करें अन्यथा परिणाम विपरीत होगा।

वर्षफल-विचार की दिशा में अंकशास्त्र के और भी प्रयोगों से काफी सही परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं; लेकिन उसका विवेचन इस छोटे-से लेख के सीमित दायरे में सम्भव नहीं; फिर भी साधारणतया जिन विषयों को गणना में लेना ही चाहिए, उनकी ओर इस लेख में पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया गया है।

साढ़े-तीन मुहूर्त—१. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २. वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया), ३. आश्विन शुक्ल दशमी (विजया दशमी), ४. कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा ये चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त हैं। इसमें कोई भी शुभ कार्य करने के लिए पञ्चाङ्ग-शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं। इन समयों में बालकों को विद्यारम्भ करवा सकते हैं। इसमें प्रथम तीन मुहूर्त पूर्णबली तथा चौथा अर्धबली होने से इसको साढ़े तीन मुहूर्त कहते हैं।

घबाड़-मुहूर्त—सूर्य-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनकर जितनी संख्या हो, उसको ३ से गुणा दें और गुणनफल में तात्कालिक तिथि-संख्या मिलाने से जो संख्या आवे, उसमें ७ का भाग दें (कोई आचार्य ९ का भाग देने को लिखते हैं) शेष ३ रहे तो उस नक्षत्र-तिथि के योगकाल में घबाड़ योग है, ऐसा समझना। यह योग प्रयाण (यात्रा) में शुभ माना जाता है।

मतांतर से पञ्चक-विचार—शुक्ल प्रतिपदा तिथि से गततिथियों की संख्या में लग्न की राशि-संख्या को जोड़कर नौ (९) का भाग दें। शेष १ बचने से मृत्युपञ्चक, २ से अग्निपञ्चक, ४ से राजपञ्चक, ६ से चोरपञ्चक, ८ से रोगपञ्चक जानें। बलवान लग्न हो, बुध या शुभग्रह केन्द्र, त्रिकोण में हो तो पञ्चक का कोई दोष नहीं होता।

जन्म-कुण्डली के अनुभूत योग

[पं० श्रीकैलाशनाथ उपाध्याय]



शुभगृह महँ जो मंदग्रह रहै भौम बुध साथ।
सूर्य विलोकै ताहि यदि मनुज होइ बुधनाथ ॥
बुध भार्गव मृतिन मद७ दशम१० मंदिर करै निवास।
नारि प्रकृति सो होइ नर, नर संग करै विलास ॥
भृगु मंगल मद७ दशम सुख४ जो निवास कर योग।
त्रिय-स्वभाव नर होइ सो नर सो राखै भोग ॥
जिनके बुध भृगु राहु सँग सप्तम भाव बिराज।
लहै सर्वदा राज-सुख होवै वेश्या बाज ॥
चंद्र शुक्र ते अग्र गृह मंद रहै तनुधाम।
भृगु शशि देखैं ताहि तन होइ सुजाक सकाम ॥
मंद रहै जो केंद्र महँ देखै रवि कवि चंद।
सूर्य्य गृह वा जनित यों होइ सुजावीमंद ॥
रहै वक्र ग्रह गृह महै जेहिके दानवनन्द।
क्षीणवीर्य सो होइ जन करै त्रिया आनन्द ॥
मंगल जेहिके षष्ठ गृह रहै शुक्र के संग।
लखै पापग्रह ताहिको तेहि तन बढ़ै अनंग ॥
शुक्र तुला झख वृष मिथुन जाके करै निवास।
काम अधिक बहु बाम संग सो जन करै विलास ॥
लखै न भार्गव चंद्रमहि शशि को देखै मंद।
देहि नयन रुज मनुज को शील कर्म१० मद चंद ॥
तनुगत मंगल चंद को निरखै भृगु सुर चंद।
होइ काण दृग मनुज सो नयन-ज्योति सो मंद ॥
अग्रभाग मंगल रहै रवि ते व्यय धन-धाम।
सौम्यरहित तेहि नयन महँ चिह्न क मतिग्राम ॥

रहै शुक्र शनि-दृष्ट जो लग्नाष्टम गृह माँहि।
पीड़ा ते जल बहै दृग चोंधर जानौ ताहि ॥
एक अंश व्यय१२ गृह रहै जेहिके मंगल चंद।
दृग में किञ्चित चिह्न तेहि कहिय नयन-सुख मंद ॥
धन गृह जलचर राशि गत शनियुत अमृत भानु।
'कैलाशनाथ' तेहिको कहै दादवान तेहि जानु ॥
मंद सहित जेहिके रहै भास्कर द्वादश केंद्र।
दद्रुवान तेहिको कहै श्रीशुकदेव बुधेन्द्र ॥
चौपाई—जेहिके रिपु-गृह नायक चंदा।
पाप-दृष्ट-युत बलते मंदा ॥
पिलहि रोग उपजै तनु ताके।
शुभ खग जौ न लखै चंदा के ॥
सप्तम-पति तनु नाथ निशेशा।
पाप-दृष्ट कर पिलहि कलेशा ॥
तैसो प शनैश्चर याके।
रुज मंदाग्नि होइ तनु ताके ॥
होइ शनैश्चर क्रूर सो दृष्टा।
सुख४ तनु१ सप्तम७ भाव अनिष्टा ॥
पिलहि व्याधियुत सौख्य बिहीना।
होइ मनुज शनि जो बल-क्षीना ॥
जाके क्रूर केंद्र गृह माहीं।
विकल शरीर करै तब ताहीं ॥
रहै केंद्र रवि निर्बल चंदा।
राखै तेहि आलस ते मंदा ॥
दोहा—रहै लग्न महँ शुक्र जो, लखै पूर्ण दृग मंद।
कटि तट शीतक बात वश, कुटिल रहै दुखकंद ॥
भृगु गुरुयुत चौथे भवन, शनि बुध कुज इक ठाँव।
विकल तासु कर पद रहै, परिपीड़ित करिहाँव ॥
छंद मौक्तिक—रहै सुख-गेह नवाष्टम नाथ।
खल ग्रह ते खग खेचर साथ ॥
कहै श्रुति ज्योतिष पंगुल ताहिं।
गणेश आचार्य निबन्धन माहिं ॥
परै सुख महँ शनि मंगल राहू।
तथा रिपु-मंदिर वासर नाहू ॥
रहै बलहीन शुभग्रह संगु।
कहैं शुकदेव मुनी तेहि पंगु ॥
रह शनि षष्ठपती व्यय भाव।
खलग्रह वीक्षित क्षीण प्रभाव ॥
कहै तेहि ज्योतिष पंगुल पाय।
रहै दुख वायुरुजा तनु छाय ॥
दिवाकर सौम्य शनैश्चर साथ।
परै मृति, षष्ठ, करै रुज हाथ ॥

रहै जेहिके शनि भार्गव कर्म ।
नपुंसक ताहि करै हरि शर्म ।।
रहै रजनीकर केहरि रासि ।
लखै कुज को मदनालय बासि ।।
करै तेहि मानव को तब काण ।
कहै यह ज्योतिष-योग-पुराण ।।
परस्पर देखहिं चंद्र दिनेश ।
करै जब वैषम राशि निवेश ।।
तथा निरखै बुध सूर्य्य-कुमार ।
नपुंसक ताहि करै हत सार ।।
लखै विषमर्क्ष गतो ग्रह वक्र ।
रहै सम राशि निवासिय अर्क ।।
रहै विषमर्क्ष गतो तनु चद ।
कुजे क्षिति संठ करै तेहि मद ।।
रहै भृगु मंगल अष्टम गेह ।
करै तब वायु रुजा तेहि देह ।।
करै तेहिके तनु अण्डक वृद्धि ।
कहै जेहिके मति शोक-समृद्धि ।।

दोहा—भौम राशिगत चंद्रमा रह सप्तम आगार ।
अण्ड-रोग तेहिके कही सीत बात अधिकार ।।
शुक्र चंद कुज-गृह परै गुरु शनि देखै ताहि ।
शुक्र रक्त के दोषते अण्ड-रोग बढ़ि जाहि ।।
मेष वृषभ धनु लग्न जो होइ क्रूर ग्रह-दृष्ट ।
दंत रोग तेहिको कही अष्टम परै अनिष्ट ।।
जन्म-लग्न वा धनु वृषभ खल खग करै निवास ।
मस्तक तासु पिराइ नित शिर खल्वाट विभास ।।
क्रूर रहै धनु नवम सुख औ पँचयें अंगार ।
सो नर राजकसूर करि निवसै कारागार ।।

ज्योतिष के ऐसे ही अनुभूत अकाट्य योगों के द्वारा चमत्कारी फलादेश प्राप्त करने के लिए वंश-परम्परागत ज्योतिषी पं० श्रीकैलाशनाथ उपाध्याय से पत्र-व्यवहार कीजिए। पुस्तकाकार जन्म-कुण्डली-निर्माण की दक्षिणा ३१), वर्ष-फल २१), संपूर्ण जीवन का चमत्कारी फलादेश लिखने की दक्षिणा ६१) है ।

❀ सम्मुख शुक्र-विचार ❀

दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्याद् गच्छेयुर्न हि शिशुगर्भिणीनवोढाः । बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नवोढा चेद्वन्ध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा ।। पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसम्भवः । भृग्वङ्गिरोवत्स वशिष्ट-कश्यपात्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ।।२।। उदेतियस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमाद्वाऽथ ककुब्भसंस्थे । त्रिधोच्यते सम्मुख एव शुक्रो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात् । यदा पूर्वोदितः शुक्रः पश्चिमे दक्षिणे शुभः । पश्चिमे चोदिताः शुक्रः पूर्वोत्तर शुभप्रदः ।। अस्तंगते गुरौ शुक्रे सिंहस्थे वा बृहस्पतौ । दीपोत्सवलेनैव कन्या भर्तृगृहं व्रजेत् ।। उपचयगते जीवे भृगौ केन्द्रमुपागते । शुद्धे लग्ने शुभाक्रांते गन्तव्यं भर्तृमंदिरम् । पौष्णादि वह्निमाद्याङ्घ्रि यावत्तिष्ठति चंद्रमाः । तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे हितम् ।। एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राष्ट्र-विप्लवे । विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न दुष्यति ।।

जिस दिशा में शुक्र सम्मुख तथा जिस दिशा में दक्षिण (दाहिने) हो, उन दिशाओं में बालक, गर्भवती स्त्री तथा नूतन विवाहिता स्त्री यात्रा न करे । यदि बालक जाय तो विपत्ति पड़ती है । नूतन विवाहिता स्त्री जाय तो बाँझ हो जाती है। गर्भवती स्त्री जाय तो उसका गर्भपात होता है । यदि पिता के घर में कुच निकल आये तथा रजोदर्शन होने लगे तो सम्मुख शुक्र का दोष नहीं है । भृगु अंगिरा वत्स वशिष्ठ कश्यप अत्रि भारद्वाज गोत्रवालों को सम्मुख शुक्र का दोष नहीं है । सम्मुख शुक्र तीन प्रकार का होता । (१) जिस दिशा में शुक्र का उदय हो । (२) उत्तर दक्षिण गोल-भ्रमणवशात् जिस दिशा में शुक्र रहे (३) अथवा कृत्तिका आदि नक्षत्रों के वश जिस दिशा में हो ; उस दिशा में जानेवाले को शुक्र सम्मुख होगा । जिस दिशा में उदय हो, उस दिशा में यात्रा न करे । यदि पूर्व में शुक्र का उदय हो तो पश्चिम और दक्षिण दिशाओं तथा नैऋत्य और अग्निकोण विदिशाओं को जाना शुभ है । यदि पश्चिम में उदय हो तो पूर्व तथा उत्तर दिशाओं एवं ईशान, वायव्य विदिशाओं में जाना शुभ है । जब बृहस्पति अथवा शुक्र अस्त हो गये हों अथवा सिंहस्थ बृहस्पति हो, कन्या का रजोदर्शन पिता के घर में होने लगा हो, अच्छा मुहूर्त न मिले तो दीपावली के दिन कन्या पति के घर जाय । बृहस्पति उपचय में हो, शुक्र केन्द्र में हो, लग्न शुभ(शुद्ध)हो तथा शुभग्रह से युत हो तब स्त्री पति के घर को यात्रा करे। जब चंद्रमा रेवती से लेकर कृत्तिका के प्रथम चरण के बीच में रहता है तब तक शुक्र अंधा हो जाता है । इसमें सम्मुख अथवा दक्षिण शुक्र का दोष नहीं है । एक ही ग्राम अथवा एक ही नगर में, दुर्भिक्ष, राज्य-परिवर्तन के समय, विवाह तथा तीर्थ-यात्रा में प्रति-शुक्र का दोष नहीं होता ।

कुम्भ मीन लग्नयोर्निषेधः—कुम्भ कुम्भांशको त्याज्यौ सर्वदा जगतै बुधैः । मीने यात्रातिदुःखदा ।।

यात्रा में कुम्भ लग्न अथवा कुम्भ का नवांश सर्वदा वर्जित करना चाहिए । मीन लग्न में यात्रा करने से मार्ग में दुःख मिलता है ।

अयोगे सुयोगोऽपि चेत्स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति ।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम् ।।

जब एक ही समय में एक अच्छा योग हो, दूसरा बुरा योग हो तो अच्छा योग बुरे योग का नाश करके सिद्धि देता है । किन्हीं आचार्यों का मत है कि जब लग्न की शुद्धि हो तो कुत्सित योग का नाश हो जाता है तथा दोपहर के उपरान्त भद्रा का दोष नहीं रहता ।

❀ तांत्रिक-साधना ❀

॥ हनुमद्देव का वीर-साधन ॥

लेखक—ब्रह्मलीन योगिराज परमहंस स्वामी श्रीनिगमानन्दजी सरस्वती

[आवश्यक सूचना—बंगाल के वीर-भूमि जिलान्तर्गत तारापुर नामक ग्राम में उत्तर-वाहिनी द्वारिका नदी के तीर पर विख्यात तारापीठ है। यह महापीठ नहीं, किंतु एक प्रसिद्ध सिद्धपीठ है। यहीं महाकौल 'वामाक्षेपा' नामक एक परम सिद्धपुरुष हो गये हैं जिनका संक्षिप्त परिचय 'कल्याण' मासिक पत्र के शक्ति-अंक, संत-अंकादि में प्रकाशित हो चुका है। इस लेख के लेखक स्वर्गीय स्वामी श्रीनिगमानन्दजी सरस्वती ने उन्हीं महात्मा वामाक्षेपा की कृपा से तंत्रोक्त 'शव-साधना' में सिद्धि-लाभ कर जगन्माता के प्रत्यक्ष दर्शन एवं वर-प्राप्ति से अपना जीवन कृतार्थ किया था। भारतीय तंत्र-शास्त्र के ऐसे अधिकारी विद्वान् एवं सिद्धपुरुष का लेख जंत्री में इस प्राचीन विद्या के प्रेमियों के उपकारार्थ प्रकाशित किया जा रहा है; किंतु इस लेख में जितनी जानकारी लेखक ने स्वयं दी है, उसके अतिरिक्त किसी भी प्रकार का विवरण या सूचना देना हमारे लिये सम्भव नहीं है। स्वर्गवासी स्वामीजी के शिष्यों में अब कौन, कैसे हैं, कहाँ पर हैं; हमें स्वामी जी का लेख कब कहाँ से किसके द्वारा प्राप्त हुआ" आदि सूचनायें प्राप्त करने के लिए जंत्री-कार्यालय में पत्रों का ताँता लगा रहता है; किंतु इस प्रकार की कोई भी सूचना देना हमारे लिए सर्वथा अशक्य होने से हम सभी पत्र-प्रेषकों से सविनय क्षमा-प्रार्थी हैं; साथ ही सर्वसाधारण के सूचनार्थ यह भी निवेदन है कि इस जंत्री में विज्ञापित, मूल्य लेकर विक्रय किए जानेवाले, यंत्रों की फलवत्ता के विषय में भी हमारी कोई जानकारी और जवाबदेही नहीं है। —संपादक]

योगिनी-साधन के द्वारा जिस प्रकार भोग-विलास किया जा सकता है, उसी प्रकार हनुमत्-साधन के द्वारा शौर्य-वीर्य प्राप्त करके पृथ्वी में अपना आधिपत्य स्थापित किया जा सकता है। इस कारण हम हनुमद्देव की साधन-प्रणाली भी लिख रहे हैं। यह साधन-प्रणाली महापुण्यजनक और महापातक नाशक है। हनुमद्देव की साधना अति गुह्य है और मानव के लिए शीघ्र सिद्धिदायक है। उनकी ही कृपा से अर्जुन त्रिलोकविजयी हुए थे, यथा—

एतन्मन्त्रमर्जुनाय प्रदत्तं हरिणापुरा।
जयेनसाधनं कृत्वा जितं सर्वचराचरं ॥ —(तंत्रसार)

हनुमत्-साधना का मत्र पहले श्रीहरि ने अर्जुन को दिया था। अर्जुन ने इस मत्र का साधन करके चराचर जगत् पर विजय प्राप्त किया था।

गुरुदेव से हनुमन्मन्त्र ग्रहण करके नदी-तट पर, विष्णु-मन्दिर में, निर्जन स्थान में अथवा पर्वतों में एकाग्रचित्त होकर साधन करना चाहिए।

'हं पवननन्दनाय स्वाहा' यह दशाक्षर हनुन्मन्त्र मानव के लिए कल्पवृक्ष के समान है। हनुमद्देव के अन्य मत्रों की अपेक्षा यह मंत्र श्रेष्ठ है, आशुफलप्रद है और अत्यन्त सहज साध्य भी है। अन्यान्य मत्रों की भांति इस मत्र में, यंत्र-पूजा या होमादि नहीं करना पड़ता; केवल जप करने से ही सिद्धि प्राप्त होती है। साधन-प्रणाली इस प्रकार है—

साधक ब्राह्ममुहूर्त में उठकर सध्या वन्दनादि नित्य-क्रिया समाप्त कर चुकने पर नदी-तट पर जाकर स्नान करे; स्नान के बाद तीर्थावाहनपूर्वक आठ बार उपर्युक्त मूल मत्र का जप करे। इसके बाद उस जल से अपने मस्तक को बारह बार अभिषिक्त करे; फिर वस्त्र-युगल पहन कर नदी के किनारे अथवा पर्वत पर बैठकर "ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः" इत्यादि विधि से करन्यास और "ह्रां हृदयाय नमः" इत्यादि विधि से अंगन्यास करे। पश्चात् अ-कारादि षोडश स्वरवर्णों का उच्चारण करके बायीं नाक के छेद में वायुपूरण, क-कारादि नकारान्त पंचविंशति वर्णों का उच्चारण करके कुम्भक और य-कारादि क्षकारान्त नौ वर्णों का उच्चारण करके दक्षिण नासिका से वायु-रेचन करे। इस प्रकार दाहिनी नाक में पूरण, उभय नासापुट में वायु-धारण द्वारा कुम्भक और वाम नासा में रेचन करे। इस प्रकार अनुलोम विलोम क्रम से तीन बार प्राणायाम करे, फिर मंत्र वर्ण द्वारा अङ्गन्यास करके हनुमद्देव का ध्यान करना चाहिये।

ध्यान मंत्र—ध्यायद्रणे हनुमन्तं कपिकोटीसमन्वितम्।
धावन्तं रावण जतुं दृष्ट्वा सत्वरमुत्थितम् ॥
लक्ष्मण च महावीरं पतितं रणम् तले।
गुरञ्च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरु पर्वतम् ॥
हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयन्त जगत्रयं।
आब्रह्माण्ड समाव्याप्य कृत्वा भीमं कलेवरम् ॥

अर्थ—"हनुमानजी रण-क्षेत्र के बीच में हैं और करोड़ों कपियों से घिरे हुए हैं। ये रावण की पराजय के निमित्त दौड़ रहे हैं; इनको देखकर रावण शीघ्र खड़ा हो रहा है। महावीर लक्ष्मण रणभूमि में गिरे हुए हैं। यह देखकर ये क्रोध के साथ महापर्वत उखाड़ कर सदर्प हाहाकार शब्दों के साथ त्रिभुवन कम्पायमान कर रहे हैं। ये ब्रह्माण्ड-व्यापी भीमकलेवर प्रकट करके अवस्थान करते हैं।" ध्यान के इस भावपर विचार करते-करते मंत्र जपना चाहिये।

इस ध्यान के अनुसार हनुमद्देव की चिन्ता करते-करते पूर्वोक्त मंत्र का यथानियम छः हजार बार जप करना चाहिये। जप के अन्त में पुनः तीन बार प्राणायाम करके जप समर्पण करना चाहिये।

इस प्रकार छः दिन तक जप करके सातवें दिन लगातार दिनरात जप करते रहना चाहिये। इस प्रकार दिन-रात एकाग्रचित्त से जप करने पर रात्रि के चतुर्थ याम में महाभय-प्रदर्शनपूर्वक अवश्य ही हनुमद्देव साधक के पास आ जायँगे। यदि साधक भय त्याग कर दृढ़ प्रतिज्ञ हो सके तो वे साधक को अभिलाषित वर प्रदान करते हैं। यथा—

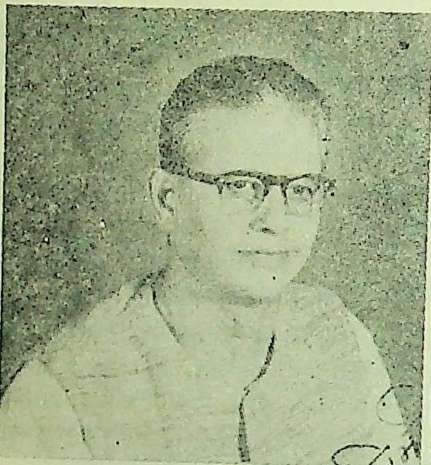
विद्यां वापि धनं वापि राज्यं वा शत्रुनिग्रहम्।
तत् क्षणादेव चाप्नोति सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ॥—तन्त्रसार

साधक विद्या, धन, राज्य अथवा शत्रु-निग्रह इनमें जिस किसी की अभिलाषा करे, तत्क्षण वही वर प्राप्त करता है, इसमें सन्देह नहीं है, फिर तो साधक वर-लाभ करके सुख-पूर्वक संसार में विचरण कर सकेगा।

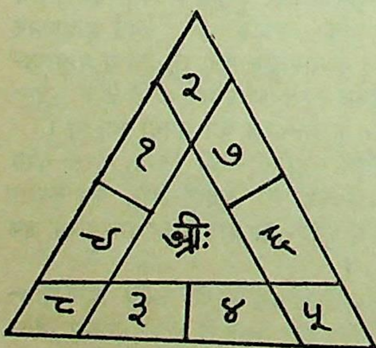
चमत्कारिक अद्भुत यंत्र

लेखक—ज्योतिष-शास्त्री, डॉ. रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी
"निर्भय" "तंत्राचार्य"
प्लाट ७६६, ब्लाक वाई किदवई नगर कानपुर २०८०२१

धन-ऐश्वर्य-प्राप्ति के लिये सिद्ध विंशति (बीसा यंत्र)

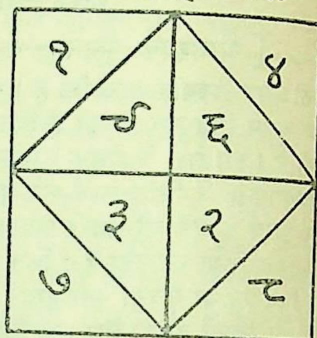


यह सिद्ध विंशति (बीसा यंत्र) हमें अपने सुहृद बंधु श्रीजगजीवन दासजी गुप्त द्वारा प्राप्त हुआ था। इस त्रिकोणात्मक यंत्र के ९ कोष्ठों में एक से लेकर पूरे नौ अंक हैं, एवं किसी अंक की पुनरावृत्ति भी नहीं हुई। इस यंत्र को सर्वप्रथम दीपावली, नवरात्र, ग्रहण आदि पर्व में विधिवत् सिद्ध कर लेना चाहिये; फिर किसी शुभ मुहूर्त में अष्टगंध या केशर की स्याही से इसे भोजपत्र पर लिखकर ताँबे, चाँदी या स्वर्ण के यत्र (खोल) में भरें; फिर शुद्ध मोम भरकर यंत्र का ढक्कन मजबूती से बन्द कर दें ताकि यंत्र में पानी आदि न जा सके। इस यंत्र को गले, अथवा दाहिनी भुजा में धारण करना अथवा कैशबक्स, तिजोरी आदि में रखना चाहिये। इससे धन-ऐश्वर्य एवं सर्व-सुखों की प्राप्ति होती है।



मंदिर-भवन-कूप आदि निर्माण तथा भाग्योदय हेतु
* बीसा यंत्र *

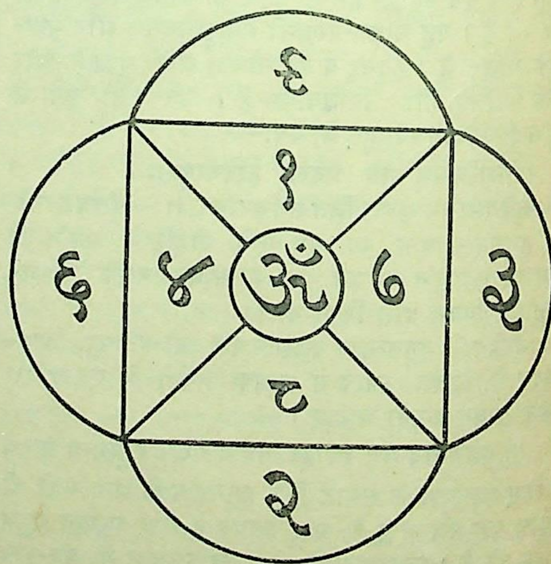
इस यंत्र को दीपावली, नवरात्र अथवा शुक्लपक्ष में जिस दिन गुरुवार(वृहस्पति) हो, उस दिन से लिखना आरम्भ करें। शुद्ध स्वच्छ कागज पर केशर की स्याही से प्रति दिन नियत संख्या में लिखते रहें। जब ९००० यंत्र लिख डालें तो उन सबका धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करें; फिर उन लिखे यंत्रों को एक-एक कर गंगाजी या किसी बहती हुई नदी में प्रवाहित करें; उस समय मनोवांछित फल का मन में स्मरण करते रहें। आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।



इस यंत्र को भोजपत्र पर उपरोक्त रीत्यानुसार तैय्यार कर धारण भी कर सकते हैं।

त्रय तापों से मुक्तिकारक महासिद्धिप्रद विंशति यंत्र

यह यंत्रराज लौकिक सुख-समृद्धि के अतिरिक्त पारलौकिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में पूर्ण सहायता पहुँचाने



वाला है। जो लोग जीवन के सच्चे सुख-प्राप्ति के अभिलाषी हैं उन्हें इस सिद्ध बीसा यंत्र के प्रत्यक्ष चमत्कार का अनुभव होगा। यंत्र-निर्माण और धारण उपर्युक्त प्रथम बीसा यत्र की भाँति करना चाहिये।

प्रत्येक कार्य में सफलता एवं व्यापारोन्नति हेतु
* अद्भुत चौंतीसा यंत्र *

इस यंत्र को दीपावली, नवरात्र, ग्रहण, आषाढ़ी पूर्णिमा (गुरुपूर्णिमा) आदि किसी पुनीत पर्व पर शुद्ध स्वच्छ कागज पर केशर की स्याही से १०८ बार लिखें तथा नवार्ण मंत्र, अथवा अपने इष्ट मंत्र के कम-से-कम ९००० मंत्र-जप द्वारा अभिमंत्रित करें; फिर यह मंत्र सिद्ध हो जायेगा; पश्चात्

इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध या केशर से अथवा इनके अभाव में रक्तचंदन (लालचंदन) से अनार वृक्ष की कलम से लिखकर उसे शीशे में मढ़वाकर दूकान, गद्दी, आफिस, मकान आदि में रख दें अथवा चाँदी या शुद्ध तांबे की तावीज में भरकर दाहिनी भुजा या गले में धारण करें। यह बड़ा ही चमत्कारिक अचूक यंत्र है ;

ॐ श्रीं श्रियै नमः

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

परीक्षित है। नोट—कागज पर १०८ लिखे हुये यन्त्रों को नदी में प्रवाहित कर दें अथवा कुएं में डाल देना चाहिये।

भूत, पिशाच, चुड़ैल, डाकिनी, शाकिनी, वैताल, जिन्नात आदि के कष्ट-निवारणार्थ इस्लामी यंत्र

यावसत यावसत यावसत यावसत यावसत यावसत यावसत

याहू	११	१४	१	८	यावसत यावसत
याहू याहू	४	५	१०	१५	यावसत यावसत
याहू याहू	६	३	१६	९	यावसत यावसत
याहू याहू	१३	१२	७	२	यावसत

बहक्क याजिब्राइल यामीकाइल याइस्राफील याइज्राइल जो कोई अमुका को देहो का दरद दे रहा है उसे इस फलीते से जला दीजिये।

इस इस्लामी यंत्र को सर्व प्रथम दीपावली, होली, ग्रहण आदि पर्व में सिद्ध कर लेना चाहिये। यंत्र को भोजपत्र पर केशर की रोशनाई से लिखे। यंत्र लिखते समय जहाँ "अमुक" लिखा है, उस स्थान पर उस स्त्री या पुरुष, बालक या बालिका का नाम लिखें जो प्रेतादि बाधा से ग्रस्त हो ; फिर जितना बड़ा यंत्र हो, उतना बड़ा ही कोरा कपड़ा लालरंग या कालेरंग का लें। जिस स्थान पर यह कार्य करना हो, उस स्थान की थोड़ी-सी जगह को मिट्टी से लीप-पोत कर वहाँ उक्त कपड़े का टुकड़ा रक्खें; उसी कपड़े पर यंत्र रखें; फिर धूप दीप नैवेद्य पुष्प आदि चढ़ा कर अब्दुल कादिर जीलानी को मन में स्मरण करके लोबान सुलगावें; तदुपरान्त उस कपड़े समेत यंत्रको बत्ती की तरह लपेट कर बत्ती बनालें और एक कटोरी, कसोरा आदि में शुद्ध चमेली का तेल डाल कर उस बत्ती को उसी में डुबोकर बत्ती जला दें। जब तक वह दीपक जलता रहे, उस मरीज को उस बत्ती की रोशनी दिखाते रहें। इस प्रयोग से हर तरह की प्रेतादि बाधा दूर होकर रोगी ठीक हो जायेगा। परीक्षित है।

* भूत-प्रेतादि दोष-निवारण इस्लामी यंत्र *

इस इस्लामी यंत्र को किसी पर्व पर सिद्ध कर लें; फिर केशर (जाफरान) की स्याही बनाकर यंत्र भोजपत्र पर लिखें और धूप दीप पान फूल नैवेद्य से पूजन करें। लोबान

या करमाईल	२	या ज़िबराईल
३	१०	७
या दरदाईल	८	या तिनकोफाईल

की धूनी दें, पश्चात् यंत्र को ताँबे के खोल(यंत्र) में भरकर बाधा से पीड़ित व्यक्ति को धारण करा दें। यंत्र (तावीज) को काले रंग के डोरे में पिरोकर गले में पहनना अथवा दाहिनी भुजा में बांधना चाहिए। समस्त प्रेतादि बाधाएँ नष्ट हो जायेंगी।

लग्नज्ञानमतिकठिनम्—त्रुटेः सहस्रभागो यो लग्नकालः स उच्यते। ब्रह्मापि तं न जानाति किं पुनः प्राकृतोजनः॥ एक त्रुटि का हजारवाँ भाग लग्न-काल कहलाता है। ब्रह्मा भी इसको नहीं जानते हैं, साधारण आदमी का क्या ठिकाना ?

लग्न-प्रशंसा—लग्न का विचार छोड़कर जो कुछ काम किया जाय, वह सब निष्फल होता है, जैसे ग्रीष्म ऋतु में क्षुद्र नदियाँ सूख जाती हैं। तिथि नक्षत्र योग अथवा चन्द्र के बल का कोई महत्त्व नहीं ; गर्ग, नारद तथा कश्यप मुनि केवल लग्न की प्रशंसा करते हैं। जो लग्न अपने बलवान स्वामी से अथवा बलवान शुभग्रहों से दृष्ट हो, पापग्रहों से युत अथवा दृष्ट न हो, वह लग्न बलवान होता है।

लग्न-शुद्धि—लोग कहते हैं कि चन्द्रमा का बल प्रधान है ; किंतु शास्त्रों के अनुसार लग्न-बल ही प्रधान है। लग्न से ग्यारहवें स्थान में सब ग्रह शुभ होते हैं। ३, ८ स्थानों में सूर्य अथवा शनि शुभ होते हैं। धन अथवा तृतीय स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है। ३, ६ स्थानों में मंगल शुभ होता है। २, ३, ४, ५, ६, ९, १० स्थानों में बुध तथा बृहस्पति शुभ होते हैं। २, ३, ४, ५, ९, १० स्थानों में शुक्र शुभ होता है। ३, ५, ६, ८, ९,१०, १२ स्थानों में राहु शुभ होता है।

चरत्रय-निषेध—चर लग्न, चरनवांश तथा चर राशि में स्थित चन्द्रमा, ये तीनों चर निषिद्ध हैं। वर-कन्या के प्राणों का नाश करनेवाले हैं। उदाहरण—कर्क अथवा मेष लग्न हो, तुला का नवांश हो, तुला अथवा मकर में चन्द्रमा हो तो वधू को वैधव्य होता है।

❁ सर्व कार्य-सिद्धि के लिये होरा-मुहूर्त ❁

कालहोरेति विख्यातं सौम्ये सौम्यफलप्रदा । सूर्य शुक्र बुधाश्चन्द्रो मन्दजीवकुजाः क्रमात् ।
यो वारो यत्र दिवसे तदादि गणयेत्क्रमात् । शुभग्रहस्य सुखदो मुहूर्तोनिष्टदुःखदः ।।
गुर्वविवाहे गमने च शुक्रो बौधे सौम्यः सर्वकार्येषु चन्द्रः । कुजे युद्धं राजसेवा रवौ च मन्दे वित्तं चेति होरा क्रमाद्वै ।।
यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम् । तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते ।।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिये होरा-मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक है ; पाठक अमल में लाकर सफल मनोरथ हों। सात ग्रहों के सात होरे हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिये उत्तम है; प्रवास के लिये शुक्र का होरा ; ज्ञानार्जन के लिये बुध का होरा ; सर्व कार्य-सिद्धि के लिये चन्द्रमा का होरा ; द्रव्य-संग्रह के लिये शनि का, विवाह के लिये गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा श्रेष्ठ होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के प्रवृत्तिकाल (यानी सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आये हैं, किसी भी दिन उस होरे के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार के २४ घण्टों का होरा ज्योतिष-प्रेमी तत्काल मालूम कर सकें, इस वास्ते नीचे चक्र भी दिया जा रहा है। साथ ही खूब अच्छी तरह समझ लेने के लिए उदाहरण दिया जाता है। मान लीजिये, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आये हैं; अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें और अठारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला। अतः आज वृहस्पतिवार को सूर्योदय-समय से ३ या १० अथवा १७ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक के शुक्र-होरा में आपको जाना चाहिये। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओंके विषय में भी समझ लें।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारणी के किसी वार को अभीष्ट होरा-ज्ञानार्थ—

नियम १. किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी वार) से प्रारम्भ होता है।

२. तत्पश्चात् क्रमशः होरा-ज्ञानार्थ उक्त प्रथम होरा(वारेश)के विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अंतर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़ कर सोम(चंद्र)का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष२१होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

भारत के हर स्थान के लिये शास्त्रोक्त वार-प्रवृत्ति का स्टैं० टा० जानने की विधि—जिस तारीख की वार-प्रवृत्ति यानी वार के आरम्भ होने का स्टैं. टा. जानना हो, उस तारीख के बेलान्तर मिनट को उसके धन या ऋण चिह्न के अनुसार घं. ६ मि. २७ में जोड़ या घटा देने से उस तारीख के वार-प्रवेश का सूक्ष्म, शुद्ध स्टैं. टा. सहज ही ज्ञात हो जायेगा जो होरा-मुहूर्त-साधन में विशेषतः उपयोगी है। 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं. ४३ से ४५ तक हर वर्ष काम देनेवाली बेलान्तर-सारणी छपी है जिसमें प्रत्येक तारीख का बेलान्तर मिनिट +, − चिह्न के साथ दिया गया है।

स्वेदेशसूर्योदयतोत्र वारः सर्वेषु कार्येषु नियोजनीयः । लंकोदयाद्यास्ति दिनप्रवृत्तिस्ततः प्रयोज्याः किलकालहोरा ।।

विशेष—प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राशि के स्वामी-ग्रह के शत्रु-ग्रहों की होरा को यात्रा, विवाद, युद्धादि में यत्नपूर्वक त्याग करना चाहिये। जैसे मान लीजिए, देवदत्तजी की जन्म-राशि के स्वामी गुरु हैं और गुरु के शत्रुग्रह बुध और शुक्र हैं। अतः देवदत्तजी को बुध और शुक्र के नैसर्गिक शुभ-ग्रह होने के नाते उनकी होराओं में उक्त कार्य न करने चाहिये, अन्यथा परिणाम में शुभ के बजाय अशुभ फल होगा। इसी प्रकार गुरु के मित्र शुभग्रह चन्द्र हैं। अतः इनकी होरा में ही यत्नपूर्वक उक्त कार्य करना होगा।

❀ चौघड़िया-मुहूर्त ❀

उद्वेगश्चामृतो रोगो लाभः शुभचरौ मृतिः । सूर्यः शुक्रो बुधश्चन्द्रो मंदोजीवो धरासुतः ॥
सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पञ्चमगोऽह्निषट् । सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनिबुधः ॥

दिन की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
दूसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तीसरी चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चौथी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पाँचवीं चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवीं चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सातवीं चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
आठवीं चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तीसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथी चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पाँचवीं चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवीं चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सातवीं चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
आठवीं चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शीघ्रता में कोई भी यात्रा-मुहूर्त न बनता हो या एकाएक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो उस अवसर के लिए विशेषरूप से चौघड़िया-मुहूर्त का उपयोग है; लेकिन अब तो प्रायः हर आवश्यकीय शुभ कार्यारम्भ के लिए चौघड़िया-मुहूर्त ने जनता के हृदय पर अपना सिक्का जमा लिया है।

दिन और रात के आठ-आठ बराबर हिस्से का एक-एक चौघड़िया मुहूर्त होता है। जब दिन और रात बराबर यानी १२ घण्टे का दिन और १२ घण्टे की रात होती है तब एक चौघड़िया-मुहूर्त १॥ घंटा यानी पौने चार घटी का होता है, इसलिए इसका नाम चौघड़िया मुहूर्त पड़ा। रविवार सोमवार आदि प्रत्येक वार सूर्योदय से शुरू होकर अगले सूर्योदय पर समाप्त होता है एवं उसी समय से अगला 'वार' आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का 'दिनमान' और सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान न्यूनाधिक भी (यानी दिन रात छोटे-बड़े) हुआ करते हैं; पर 'वार' हमेशा २४ घंटा यानी ६० घटी का होता है अर्थात् दिनमान और रात्रिमान का योग हमेशा ६० घटी होता है। जंत्री में हर रोज का 'दिनमान' दिया रहता है; अतः जिस रोज का रात्रिमान जानना हो, उस रोज के दिनमान को ६० घटी में-से घंटा देने पर रात्रिमान निकल आयेगा। अब जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो तो उस रोज के दिनमान के अष्टमांश घटी-पल का घंटा-मिनट बनाकर उस रोज के सूर्योदय-समय में जोड़ते जायँ तो क्रमशः उस दिन की आठो चौघड़िया के समय ज्ञात होते जायँगे। उन आठो चौघड़ियों में-से कौन-सा ग्राह्य और त्याज्य है, यह ऊपर 'दिन' की चौघड़िया के चक्र में उन दिन के 'वार' के सामने खाने में देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस रोज रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस रोज के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घंटा-मिनट बनाकर सूर्यास्त-समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात की प्रत्येक चौघड़िया का समय ज्ञात हो जायेगा और उनका शुभा-शुभत्व उपर्युक्त रात की चौघड़ियों के चक्र में उस रोज के 'वार' के सामने खाने में देखकर जान लें। श्रेष्ठ समय शुभ, चर, अमृत और लाभ की चौघड़िया का है। अशुभ समय उद्वेग, रोग और काल का होता है, इनका त्याग देना चाहिये। २॥ घटी का १ घण्टा तथा २॥ पल का एक मिनट होता है। अतः घटी-पल का घंटा-मिनट बनाने के लिए उसमें ५ का भाग देकर लब्धि को दूना कर लें।

टिप्पणी—प्रत्येक चौघड़िया के स्वामी-ग्रह क्रमशः ये हैं—उद्वेग का रवि, चर का शुक्र, लाभ का बुध, अमृत का चन्द्र, काल का शनि, शुभ का गुरु और रोग-चौघड़िया का स्वामी भौम है। ऊपर जो शुभ चर, अमृत और लाभ की चौघड़िया का समय श्रेष्ठ कहा गया है, वह इसीलिए कि उन सबके स्वामी क्रमशः शुभ ग्रह गुरु, शुक्र, चन्द्र और बुध हैं। अतः इन सबके श्रेष्ठ चौघड़िया-मुहूर्त में प्रत्येक शुभ कार्य किये जा सकते हैं; किन्तु यात्रा में इनके स्वामी का सूक्ष्म विचार कर लेना अत्यावश्यक है। प्रायः सभी लोग उक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़िया में-से किसी चौघड़िया में किसी भी दिशा की यात्रा कर लेते हैं; किन्तु फल कभी-कभी उल्टा यानी शुभ की जगह अशुभ और हानिकर हो जाता है। इसका कारण काशी के सुप्रसिद्ध **श्रीमहावीर प्रसाद माथुर एस्ट्रालॉजर** ने हमें यह बतलाया कि यदि किसी को पूर्व में जाना है और उपर्युक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़ियों में-से 'अमृत' चौघड़िया के समय में वह चला गया तो उस चौघड़िया का स्वामी चन्द्र होनेके कारण पूर्व दिशा के लिए वह चंद्र दिशाशूलकारक होगा—"सोम सनीचर पूरब न चालू", जिससे शुभ फल के बजाय अशुभ होना निश्चित-प्राय है। अतः चारों श्रेष्ठ चौघड़ियों में-से भी जिस चौघड़िया का स्वामी अपनी यात्रा के लिए दिशाशूलकारक हो, उस चौघड़िया को यत्नपूर्वक वर्जित करना चाहिए। आशा है हमारी जंत्री के प्रिय पाठक उनके इस सुझाव से जरूर लाभ उठायेंगे।

❀ सन् १९७७ ई० के सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि एवं पुष्यामृत-योग ❀

सन् १९७७ ई० के वर्ष भर के सर्वार्थसिद्धि-योग छाँट कर यहाँ दिये जा रहे हैं। अमृतसिद्धि-योग और सर्वार्थसिद्धि-योगों में दुष्ट-तिथि का विचार 'ज्योतिष-रहस्य' द्वितीय खण्ड में प्रकाशित 'ज्योतिष का वरदान' शीर्षक लेखानुसार कर लेना चाहिये।

"अमृतसिद्धि योगश्च यद्येकस्मिन् दिने भवेत्। तद्दिनन्तु भवेन्नष्टं मधु सर्पिर्विषं यथा।" जिस प्रकार घृत और मधु एकत्र मिलाने से विष हो जाता है, उसी तरह अमृत-योग और सिद्धि-योग एक ही दिन होने से विष-योग हो जाता है; इसमें यात्रा न करें। कोई-कोई कहते हैं कि अमृत-योग ६ घटी पर्यन्त रहता है, उसके उपरान्त सिद्धि-योग रहता है। ऐसी अवस्था में अमृत-योग के प्रारम्भ के ६ दण्ड बाद यात्रादि कार्य कर सकते हैं।

नोट—यहाँ लिखे अमृतसिद्धि, सर्वार्थसिद्धि एवं पुष्य-योग अंग्रेजी तारीख तथा भारतीय स्टैण्डर्ड समयानुसार दिये गये हैं। स्मरण रखना चाहिये कि तारीख अर्ध-रात्रि के १२ बजे के बाद शुरू होती है तथा अगले रोज १२ बजे रात को समाप्त हो कर पुनः अग्रिम तारीख शुरू हो जाती है। रात १ बजे से अगली रात्रि के ११ बजे तक के प्रति घण्टे के लिए क्रमशः १ से २३ तक की संख्या लिखी गयी है जिस तरह रेलवे-टाइम टेबुल में लिखा रहता है।

ता०	मास	घं. मि.	बजे से	ता०	मास	घं.मि.	बजेतक
३	जनवरी	६।४८	,,	४	जनवरी	६।४८	,,
६	,,	१५।५९	,,	७	,,	१६।४६	,,
१२	,,	६।४९	,,	१२	,,	१५।४१	,,
२४	,,	२।५०	,,	२४	,,	६।४८	,,
२७	,,	६।४७	,,	२७	,,	१०।६	,,
३१	,,	६।४५	,,	३१	,,	२१।१४	,,
३	फरवरी	६।४५	,,	४	फरवरी	०।२२	,,
६	,,	२३।९	,,	७	,,	६।४३	,,
११	,,	१७।२२	,,	१२	,,	६।४०	,,
१३	,,	२०।१०	,,	१४	,,	१३।२८	,,
२०	,,	११।५६	,,	२१	,,	६।३३	,,
२२	,,	१५।४३	,,	२३	,,	६।३१	,,
२६	,,	६।२९	,,	२७	,,	३।२६	,,
३	मार्च	६।२४	,,	३	मार्च	९।३७	,,
६	,,	७।३३	,,	७	,,	६।२०	,,
१०	,,	२३।५७	,,	११	,,	२१।२४	,,
१३	,,	६।१४	,,	१३	,,	१९।१	,,
२०	,,	६।७	,,	२०	,,	२१।३५	,,
२२	,,	६।४	,,	[illegible]	,,	१।२१	,,
२४	मार्च	५।१६	,,	२४	मार्च	६।३	,,
२६	,,	६।०	,,	२६	,,	११।२३	,,
३	अप्रैल	५।५२	,,	४	अप्रैल	५।५१	,,
७	,,	६।३४	,,	८	,,	४।१	,,
१०	,,	२३।४४	,,	११	,,	५।४४	,,
११	,,	२३।११	,,	१२	,,	५।४३	,,
१९	,,	५।३६	,,	१९	,,	९।२०	,,
२०	,,	१२।१५	,,	२१	,,	५।३५	,,
२६	,,	२।१०	,,	२६	,,	५।३०	,,
२७	,,	३।४४	,,	२७	,,	५।३०	,,
१	मई	५।२७	,,	२	मई	०।४१	,,
४	,,	१६।३२	,,	५	,,	१३।३९	,,
८	,,	६।४९	,,	९	,,	५।२१	,,
९	,,	५।३७	,,	१०	,,	५।८	,,
१५	,,	१२।३६	,,	१६	,,	५।१७	,,
१७	,,	१८।२७	,,	१९	,,	५।१६	,,
२३	,,	८।३६	,,	२४	,,	५।१४	,,
२४	,,	१०।३२	,,	२५	,,	५।१३	,,
२९	,,	५।१२	,,	२९	,,	१०।४५	,,
१	जून	५।१२	,,	२	जून	०।२७	,,
५	,,	५।११	,,	५	,,	१४।९	,,
६	,,	५।११	,,	६	,,	१२।५५	,,
१०	,,	१५।५९	,,	११	,,	५।११	,,
१२	,,	५।११	,,	१२	,,	२१।२०	,,
१४	,,	५।१२	,,	१६	,,	५।१२	,,
१९	,,	१४।४७	,,	२०	,,	५।१३	,,
२१	,,	५।१३	,,	२१	,,	१७।४६	,,
२९	,,	५।१४	,,	२९	,,	१०।५३	,,
३	जुलाई	०।१५	,,	३	जुलाई	५।१६	,,
७	,,	२३।४	,,	९	,,	५।१८	,,
१२	,,	५।१९	,,	१२	,,	९।५७	,,
१३	,,	५।१९	,,	१३	,,	५।२०	,,
१७	,,	५।२१	,,	१७	,,	२२।१	,,
२४	,,	०।५	,,	२४	,,	५।२४	,,
२५	,,	२१।२३	,,	२६	,,	५।२५	,,
३०	,,	१०।२४	,,	३१	,,	५।२८	,,
४	अगस्त	७।३१	,,	६	अगस्त	५।३१	,,
८	,,	१७।११	,,	९	,,	५।३२	,,
१०	,,	५।३३	,,	१०	,,	२२।५९	,,
१२	,,	३।२६	,,	१३	,,	३।३६	,,
२०	,,	५।३७	,,	२१	,,	४।२८	,,

ता०	मास	घं. मि. बजे से	ता०	मास	घं.मि. बजे तक
२२	अगस्त	५।३८ ,,	२३	अगस्त	१।४६ ,,
२७	,,	५।४० ,,	२७	,,	१७।४३ ,,
३०	,,	१६।० ,,	३१	,,	५।४२ ,,
१	सितम्बर	५।४२ ,,	२	सितम्बर	१६।४६ ,,
५	,,	५।४४ ,,	६	,,	५।४४ ,,
७	,,	५।४४ ,,	७	,,	६।५८ ,,
८	,,	६।३३ ,,	९	,,	५।४५ ,,
१४	,,	१३।४८ ,,	१५	,,	५।४७ ,,
१७	,,	५।४८ ,,	१७	,,	१०।१३ ,,
१९	,,	५।४९ ,,	१९	,,	७।१० ,,
२३	,,	५।५० ,,	२४	,,	०।५६ ,,
२७	,,	५।५२ ,,	२८	,,	१।१० ,,
२९	,,	५।५२ ,,	३०	,,	४।१४ ,,
३	अक्टूबर	५।५४ ,,	४	अक्टूबर	५।५५ ,,
६	,,	५।५५ ,,	७	,,	५।५६ ,,
१२	,,	५।५८ ,,	१२	,,	२१।४७ ,,
२१	,,	६।३ ,,	२१	,,	६।३३ ,,
२५	,,	६।५ ,,	२५	,,	८।२१ ,,
२७	,,	६।६ ,,	२७	,,	११।४९ ,,
३१	,,	६।८ ,,	३१	,,	२२।३६ ,,
३	नवम्बर	६।१० ,,	४	नवम्बर	६।११ ,,
९	,,	६।१४ ,,	९	,,	८।२२ ,,
१२	,,	१।३६ ,,	१२	,,	६।१६ ,,
१३	,,	२०।१ ,,	१४	,,	६।१७ ,,
२०	,,	१८।५० ,,	२१	,,	६।२२ ,,
२२	,,	१६।१ ,,	२३	,,	६।२४ ,,
२६	,,	६।२६ ,,	२७	,,	२।१८ ,,
१	दिसम्बर	६।३० ,,	१	दिसम्बर	१३।४७ ,,
४	,,	१८।५३ ,,	५	,,	१६।११ ,,
९	,,	१२।५४ ,,	१०	,,	६।३५ ,,
११	,,	६।५१ ,,	१२	,,	३।४३ ,,
१८	,,	६।४१ ,,	१८	,,	१६।५६ ,,
२०	,,	६।४२ ,,	२१	,,	०।१ ,,
२२	,,	२।४० ,,	२२	,,	६।४३ ,,
२४	,,	६।४५ ,,	२४	,,	८।२८ ,,

❀ अमृतसिद्धि-योग ❀

वार के साथ नक्षत्र-विशेष का संयोग होने से अमृतसिद्धि-योग और सर्वार्थसिद्धि-योग बनता है, जिसका विवरण 'ज्योतिष-रहस्य' द्वितीय खण्ड के 'ज्योतिष का वरदान' शीषक चक्र में दिया गया ह, वहाँ देखें। शास्त्रकारों ने अमृतसिद्धि-योग को अत्यन्त शुभ फलदायक माना है। इस समय पर कोई भी कार्य स्थायीरूप का आरम्भ किया जाय तो वह पूर्णरूप से फलदायक होता है; किन्तु ध्यान रहे कि गुरु-पुष्य के संयोग से बना अमृतसिद्धि-योग 'विवाह' में, शनि-रोहिणी-योग का अमृतसिद्धि 'प्रयाण' में तथा मंगल-अश्विनी-योग का अमृतसिद्धि 'गृह-प्रवेश' में वर्जित है। इस वर्ष सन् १९७७ ई० में अमृतसिद्धि-योग निम्नलिखित पड़ रहे हैं।

ता०	माह	घं. मि. बजे से	ता०	माह	घं. मि. बजे तक
३	जनवरी	१०।५७ ,,	४	जनवरी	६।४८ ,,
६	,,	१५।५६ ,,	७	,,	६।४९ ,,
२९	,,	१६।१६ ,,	३०	,,	६।४६ ,,
३१	,,	६।४५ ,,	१	फरवरी	६।४६ ,,
३	फरवरी	६।४५ ,,	४	,,	०।२२ ,,
२२	,,	१५।४३ ,,	२३	,,	६।३१ ,,
२६	,,	६।२९ ,,	२७	,,	३।२६ ,,
३	मार्च	६।२४ ,,	३	मार्च	९।३७ ,,
७	,,	६।१ ,,	७	,,	६।२१ ,,
२२	,,	६।४ ,,	२३	,,	२।२१ ,,
२६	,,	६।० ,,	२६	,,	११।२३ ,,
३	अप्रैल	१६।११ ,,	४	अप्रैल	१३।५३ ,,
१९	,,	५।३६ ,,	१९	,,	९।२० ,,
१	मई	५।२७ ,,	२	मई	०।४१ ,,
४	,,	१६।३२ ,,	५	,,	५।२४ ,,
२९	,,	५।१२ ,,	२९	,,	१०।४५ ,,
१	जून	५।१२ ,,	२	जून	०।२७ ,,
१०	,,	१५।५७ ,,	११	,,	५।११ ,,
२९	,,	५।१४ ,,	२९	,,	१०।५३ ,,
८	जुलाई	५।१८ ,,	९	जुलाई	११।२ ,,
५	अगस्त	५।३१ ,,	५	अगस्त	९।९ ,,
६	सितम्बर	४।५ ,,	६	सितम्बर	५।४४ ,,
३	अक्टूबर	१२।६ ,,	४	अक्टूबर	५।५५ ,,
६	,,	२०।२१ ,,	७	,,	५।५६ ,,
२९	,,	१६।४४ ,,	३०	,,	६।८ ,,
३१	,,	६।८ ,,	३१	,,	२२।३६ ,,
३	नवम्बर	६।१० ,,	४	नवम्बर	६।११ ,,
२२	,,	१६।१ ,,	२३	,,	६।२४ ,,
२६	,,	६।२६ ,,	२७	,,	२।१८ ,,
१	दिसम्बर	६।३० ,,	१	दिसम्बर	१३।४७ ,,
२०	,,	६।४२ ,,	२१	,,	०।१ ,,
२४	,,	६।४५ ,,	२४	,,	८।२८ ,,

पुष्य-योग

जिस प्रकार सम्पूर्ण जानवरों में सिंह बलवान् होता है, उसी प्रकार समस्त नक्षत्रों का सम्राट् यही पुष्य नक्षत्र है। यह सभी प्रकार के दोषों को दूर करता है। गोचर में

चौथे, आठवें, बारहवें चन्द्रमा होने पर भी पुष्य नक्षत्र कार्य-सिद्धि करता है। यहां तक कि "ग्रहेण विद्धोऽप्यश-भान्वितोऽपि विरुद्धतारोऽपि विलोमगोऽपि। करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणे च पुष्यः॥" अर्थात् पुष्य नक्षत्र ग्रहविद्ध होने या पापग्रहयुक्त होने और तारा के प्रतिकूल होने पर भी सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि करता है, केवल विवाह को छोड़कर; फिर पुष्यामृत-योग का तो कहना ही क्या है। जब गुरुवार अथवा रविवार को पुष्य नक्षत्र पड़ जाता है तो 'पुष्यामृत' योग होता है, जिसमें 'रवि-पुष्य' तन्त्र-मन्त्र की सिद्धि एवं जड़ी-बूटी-ग्रहण करने में तथा 'गुरु-पुष्य' व्यापार एवं आर्थिक लाभ के कामों में विशेषरूप से उपयोगी है। पुष्य नक्षत्र केवल विवाह में तथा शुक्रवार को पुष्य 'उत्पात-योग' होने के कारण सर्व कार्यों में वर्जित है। सन् १९७७ ई० की जिन तारीखों को पुष्य-नक्षत्र है तथा पुष्यामृत-योग (रवि-पुष्य या गुरु-पुष्य) है, उन सबका समय स्टैण्डर्ड टाइम में नीचे दिया जा रहा है—

ता० मास	घं. मि.	बजे से	ता० मास	घं. मि.	बजे तक	
६ जनवरी	१५।५९	,,	७ जनवरी	६।४९	,,	गुरु-पुष्य
७ ,,	६।४९	,,	७ ,,	१६।४६	,,	
२ फरवरी	२३।५४	,,	३ फरवरी	६।४५	,,	
३ फरवरी	६।४५	,,	४ फरवरी	०।२२	,,	गुरु-पुष्य
२ मार्च	६।६	,,	३ मार्च	६।२५	,,	
३ ,,	६।२४	,,	३ ,,	६।३७	,,	गुरु-पुष्य
२९ ,,	१८।१५	,,	३० ,,	१९।१४	,,	
२६ अप्रैल	२।१०	,,	२७ अप्रैल	३।४४	,,	
२३ मई	८।३६	,,	२४ मई	१०।३२	,,	
१९ जून	१४।१७	,,	२० जून	५।१३	,,	रवि-पुष्य
२० ,,	५।१३	,,	२० ,,	१६।१३	,,	
१६ जुलाई	२०।१८	,,	१७ जुलाई	५।२१	,,	
१७ ,,	५।२१	,,	१७ ,,	२२।१	,,	रवि-पुष्य
१३ अगस्त	३।२६	,,	१४ अगस्त	४।५६	,,	
९ सितम्बर	११।४२	,,	१० सितम्बर	१३।१५	,,	
६ अक्टूबर	२०।२१	,,	७ अक्टूबर	५।५५	,,	गुरु-पुष्य
७ ,,	५।५५	,,	७ ,,	२२।१५	,,	
३ नवम्बर	४।२०	,,	३ नवम्बर	६।१०	,,	
३ ,,	६।१०	,,	४ ,,	६।११	,,	गुरु-पुष्य
४ ,,	६।११	,,	४ ,,	६।४३	,,	
३० ,,	११।७	,,	१ दिसम्बर	६।३०	,,	
१ दिसम्बर	६।३०	,,	१ ,,	१३।४७	,,	गुरु-पुष्य
२७ ,,	१७।७	,,	२८ ,,	१९।४४	,,	

काक-स्पर्श-फल—कौआ अगर मस्तक स्पर्श करे तो धन का नाश, मरण तथा कलह होती है, कमर और कन्धे का स्पर्श भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर कौवे का बैठना पति-पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता; किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काक-मैथुन का देखना छः मास में मृत्युतुल्य कष्ट या इच्छित कार्य का नाश करता है। इसका दोष दूर करने के लिए उड़द के आटे की काक-प्रतिमा मिट्टी के बर्तन में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवें।

❀ अंगस्फुरण-फल ❀

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वी-लाभ	ग्रीवा (गर्दन)	शत्रु-भय	नाभि	स्त्री-नाश
ललाट	स्थान-लाभ	ओष्ठ	प्रियवस्तु-लाभ	आंत	कोष-वृद्धि
दोनों भौं	सुख-प्राप्ति	पृष्ठ (पीठ)	पराजय	भग	पति-प्राप्ति
बीच भौं	महान सुख	उदर	कोष-लाभ	लिंग	स्त्री-लाभ
कपाल	वारांगना प्राप्ति	कुक्षि (कोंख)	सुप्रीति-लाभ	गुदा	पाहन-लाभ
नेत्र	प्रिय-दर्शन	मुख	मधुर भोजन	वषण	पुत्र-लाभ
नेत्र का कोना	लक्ष्मी-लाभ	भुज	प्रिय-प्राप्ति	वस्ति (पेड़)	अभ्युदय
नेत्र-समीप	प्रिय-समागम	भुज-मध्य	धनागम	उरु	वस्त्र-लाभ
नेत्र-पक्ष	राज्य-लाभ	हस्त	सद्द्रव्य-लाभ	जानु (घुटना)	शत्रु-वृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वक्षस्थल	विजय	जांघ	स्वामी-प्रीति
कन्धा	भोग, समृद्धि	हृदय	इष्ट-सिद्धि	पाद	स्थान-लाभ
हनु (ठोढ़ी)	महाभय	कटि	प्रमोद	पादतल	नृपत्व-बुद्धि
कण्ठ	ऐश्वर्य-लाभ	कटि-पार्श्व	उत्तम प्रीति	पादोपरि	स्थान-लाभ

इन्हीं अंगों में तिल, लहसुन मस्सा हो या खुजली उठे तो इस चक्र में लिखा फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है। सामान्यतः पुरुषों का दायाँ अंग और स्त्रियों का वायाँ अंग फड़कना शुभ है। मस्तक फड़कना स्त्री पुरुष दोनों का शुभ होता है तथा स्त्री का दाहिना अंग और पुरुष का बाँया अंग फड़कने से अशुभ फल होता है। इसके लिए यथाशक्ति दान करना चाहिये।

❀ नामाक्षरों से वर्ग देखने का कोष्ठक—अपने वर्ग से पाँचवाँ वर्ग बैरी समझना ❀

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुण	विडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	हरिण

❀ सन् १९७७ ई० के शुद्ध विवाह-मुहूर्त ❀

महादोष संज्ञा––लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुध पञ्चकम् । एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं तथाऽपरम् ॥
दग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबलाः । एतान्दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधः ॥

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह-संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं.टाइम घं. मि.	दानोपाय
माघ कृष्ण ११ शनि.	१५ जनवरी	अनुराधा	।ऽ।।ऽऽ।।।	वृश्चिक	५	कर्क	२।२२	लग्नस्थ नीचगतC
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२।५३	C चन्द्र-दान तिथि-क्षय। पापवार।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	३।८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	३।३९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	४।२४	
,, १२ रवि.	१६ ,,	,,	,,	कुम्भ	६	तुला	८।३०	सप्तशलाका में D
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	८।५१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	९।२२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	९।४२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	९।५२	
,, १३ सोम.	१७ ,,	मूल	,,	,,	,,	—	—	भौमभुक्त नक्षत्र E
माघ शुक्ल ४ रवि.	२३ ,,	उत्तराभाद्रपदा	।।।।ऽअऽऽ।।	—	—	—	—	मृत्युबाण।
,, ५ सोम.	२४ ,,	,,	,,	वृश्चिक	५	कर्क	१।४६	D पानिवेध। E अग्निद मुक्त। विष्टि(भद्रा)
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२।१७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२।३२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	३।३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	३।४८	
,, ६ भौम.	२५ ,,	रेवती	।।।।।अऽ।।।।	कुम्भ	६	तुला	७।५०	लग्नेश शनि-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	८।११	F अभाव है। K मुक्त नहीं है। महापात घं. ८ मि. ९ बजे से घं. २३ मि. ९ बजे तक।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	८।४२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	९।२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	९।१२	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	५	कर्क	९।२१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	९।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	९।५०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१०।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	१०।३९	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	——	—	—	सप्तमस्थ भौम।
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	५	कर्क	१।४२	अग्निबाण का F
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२।१३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२।२८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।५९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	३।४४	
,, ७ बुध.	२६ ,,	—	—	—	——	—	—	स्वल्पकाल। [*दान।
,, १० शनि.	२९ ,,	—	—	—	——	—	—	सूर्यविद्ध, चन्द्र-K
,, ११ रवि.	३० ,,	रोहिणी	।।।।।।।ऽऽ।	—	——	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	कुम्भ	५	तुला	७।३१	षष्ठस्थ लग्नेश शनि*
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	७।५२	R १० भौम-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	८।२३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	८।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	८।५३	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	६	कर्क	९।२	लग्नस्थ चन्द्र, R
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	९।२१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	९।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	९।५१	

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार		तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं.टाइम घं. मि.	दानोपाय
माघ शुक्ल	११ रवि.	३० जनवरी	रोहिणी	।।।।।।।ऽऽ।	मीन	६	मीन	१०।२०	
,,	,,	,,	,,	,,	मृगशिरा	—	—	—	भौमविद्ध अग्निदुम्…
,,	,,	,,	,,	—	—	—	गोधूलि	—	क्रूरयुत है, गणित…
,,	,,	,,	मृगशिरा	—	—	—	—	—	भौमवेध, भद्रा।
,,	११ सोम.	३१ ,,	,,	—	—	—	—	—	भौम-वेध, भद्रा, दैव…
,,	१५ शुक्र.	४ फरवरी	मघा	—	—	—	—	—	सूर्य-वेध।
फाल्गुन कृष्ण	१ शनि.	५ ,,	—	—	—	—	—	—	सूर्य-वेध।
,,	२ रवि.	६ ,,	उत्तराफाल्गुनी	—	—	—	—	—	रात्रि-शेष में भद्रा
,,	४ सोम.	७ ,,	,,	।।।।।ऽ।।।	मीन	६	कर्क	८।३०	छठें चंद्र-दान, चोर-
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	८।४९	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	८।५९	+बाण।
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	९।१९	नहीं है
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	९।४८	
,,	,,	,,	,,	,,	वृष	५	मीन	१२।१०	चोर-बाण।
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१२।२५	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१२।३८	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१३।५१	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१३।१९	
,,	,,	,,	हस्त	।।।ऽशुऽशु।।ऽ।।	सिंह	६	वृष	१८।१९	षष्ठस्थ लग्नेश सूर्य…
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१८।३४	पादभेद से शुक्र…
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१८।४९	दान, लग्नस्थ चन्द्र-
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१९।१९	दान, ८वें शुक्र-दान
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१९।३४	१२वें शनि-दान।
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२०।३	ऽका अभाव है।
,,	,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	७	कर्क	०।५१	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१।२२	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१।३७	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।८	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२।५३	ऽशुक्र, १२वें शनि-दान,
,,	,,	,,	,,	,,	धनु	५	वृष	३।२३	चन्द्र-यामित्र।
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।३८	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	३।५३	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	४।२०	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	४।३४	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	५।०	
,,	,,	,,	,,	,,	मीन	६	कर्क	८।२६	लग्न-चन्द्र-यामित्र
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	८।४५	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	८।५५	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	९।१५	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	९।४४	
,,	५ भौम.	८ ,,	हस्त	।।ऽशुऽशुऽरो।ऽ।।	वृष	४	मीन	११।५६	रोग बाण का R अभाव है।
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१२।२१	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१२।३४	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क.	१२।४७	
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१३।१५	
,,	,,	,,	,,	,,	गोधूलि	—	—	—	क्रूर ग्रहयुत।
,,	,,	,,	,,	,,	सिंह	५	वृष	१८।१५	छठ लग्नेश,
,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१८।३०	

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह-संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं. टाइम घं. मि.	दानोपाय
फाल्गुन कृष्ण ५ भौम.	८ फरवरी	हस्त	|||ऽशुऽशुऽरोऽ||	सिंह	५	कर्क	१८।४५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१६।१५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१६।३०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१६।५६	
,, ६ बुध.	६ ,,	स्वाती	ऽऽ||ऽ|||||	कन्या	४	मीन	२०।३६	लग्न-चन्द्र-यामित्र ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	२१।६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२१।२४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२१।३६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२२।८	
,, ७ गुरु.	१० ,,	,,	,,	,,	,,	—	—	भद्रा के बाद मृत्यु-G
,, ८ शुक्र.	११ ,,	अनुराधा	||||ऽशुऽअ|ऽ||	गोधूलि	,,	—	—	गोधूलि क्रूरयुत है ।
,, ,,	,,	,,	,,	सिंह	५	वृष	१८।४	सप्तशलाका में शनि-*
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१८।१६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१८।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१६।४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१६।१६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१६।४८	
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	६	कर्क	०।३५	लग्नस्थ चन्द्र-दान ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१।६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१।२१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१।५२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२।३७	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	५	वृष	३।७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।२२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	३।३७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	४।४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	४।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	४।४४	
,, ६ शनि.	१२ ,,	,,	,,	मीन	५	कर्क	८।११	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	८।३०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	८।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	६।०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	६।२६	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	४	मीन	११।४०	लग्न-यामित्र, R
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१२।५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१२।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१२।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१२।५६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	—	—	मृत्युबाण, भद्रा ।
,, १० रवि.	१३ ,,	मूल	,,	,,	,,	—	—	मृत्युबाण, भद्रा ।
,, ११ सोम.	१४ ,,	,,	,,	,,	,,	—	—	भौमभुक्त नक्षत्र, Y
,, १२ भौम.	१५ ,,	उ. षा.	,,	,,	,,	—	—	भौमभुक्त नक्षत्र, K
,, १३ बुध.	१६ ,,	,,	,,	,,	,,	—	—	घं. ११ मि. ५६P
फाल्गुन शुक्ल २ रवि.	२० ,,	उ. भा.	|ऽ|||ऽरोऽ|||	वृष	५	मीन	११।६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	११।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।४७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१२।०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१२।२८	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	,,		—	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	५	मीन	१६।५६	लग्न-यामित्र ।

*वेध, ७ भौम, ६ लग्नेश, ८ शुक्र, १२ शनि-दान ।

G वाण महापात घं. १३ मि. २६ बजे से घं. २१ मि. ३ बजे तक ।
Y अग्निन्दुभुक्त ।
K भद्रा, व्यतीपात ।
P वर्जं से घं. १२ मि. ४२ तक ।

R संक्रांति दिन ।

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहादोपान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं. टाइम घं. मि.	दानोपाय
फाल्गुन शुक्ल २ रवि.	२० फरवरी	उ. भा.	।ऽ।।ऽरोऽ।।।	कन्या	५	वृष	२०।२६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२०।४१	N दोष अग्निदु मुक्त।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२०।५६	E छठें लग्नेश।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२१।२५	
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	४	कर्क	०।०	लग्न-यामित्र।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	०।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	०।४६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१।१७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२।२	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	६	वृष	२।३२	छठें लग्नेश।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२।४६	T से घं.१८ मि. ४० बजे तक।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	३।०	[*महापात घं. १७मि.५१बजे
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	३।२९	से घं.० मि.३३
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	३।४३	बजे तक।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	४।९	
,, ३ सोम.	२१ ,,	,,	,,	मीन	५	कर्क	७।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	७।५४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	८।४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	८।२४	लग्नस्थ चन्द्र-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	८।५३	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	६	मीन	११।५	घं.१२ मि.४३ बजेT
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	११।३०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	११।५६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१२।२४	
,, ,,	,,	रेवती	।।ऽ।।ऽ।।।।	गोधूलि	,,	—	—	
,, ४ भौम.	२२ ,,	,,	,,	,,	,,	—	—	भद्रा, मृत्युबाण; *
,, ७ शुक्र.	२५ ,,	रोहिणी	।ऽ।।।।।ऽ।।	,,	,,	—	—	सूर्य भौम वेधजन्यG
,, ८ शनि.	२६ ,,	,,	,,	गोधूलि	,,	—	—	सूर्य भौम वेधजन्यN
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	४	मीन	१९।३३	भद्रा,वैधृति के बादE
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	२०।३	लग्न-यामित्र।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२०।१८	G दोष, अग्निदु मुक्त।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२०।३३	वैधृति। भद्रा।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२१।२	
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	४	कर्क	२३।३२	लग्न-यामित्र।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	०।३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	०।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	०।४९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	१।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	५	वृष	२।८	छठें चन्द्र और लग्नेश।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२।२३	X अग्निदु मुक्त।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२।३८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	३।५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	३।१९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	३।४५	
,, ९ रवि.	२७ ,,	मृगशिरा	।।।।।ऽ।ऽ।।	मीन	५	कर्क	७।१२	भौम-वेधजन्य दोष,X
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	७।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	७।४१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	८।१	

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहा-दोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं. टाइम घं. मि.	दानोपाय
फाल्गुन शुक्ल ९ रवि.	२७ फरवरी	मृगशिरा	॥॥ऽ।ऽ॥	मीन	५	मीन	८।३०	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	५	मीन	१०।४२	*यामित्र ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	११।७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।२०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	११।३३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१२।१	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	,,	——	——	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	४	मीन	१९।२९	छठे लग्नेश, लग्न-*
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१९।५९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२०।१४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२०।२९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२०।५८	
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	,,	कर्क	२३।२९	८ चन्द्र,लग्न-यामित्र।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	०।०	+यामित्र ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	०।१५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	०।४६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	१।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	५	वृष	२।५	६ठें लग्नेश, लग्न-+
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२।२०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	३।२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	३।१६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	३।४२	
चैत्र कृष्ण १ रवि.	६ मार्च	उ. फा.	।ऽ।ऽ॥ऽऽ॥	वृष	५	मीन	१०।१४	करिदिन ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१०।३९	Tमहापात घं. १४ मि. २३ बजे, घं. १६ मि. ४२ बजे तक ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१०।५२	Cसूर्यवेधजनित दोष, छठें लग्नेश, चन्द्र-यामित्र ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	११।१५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	११।३३	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	——	——	——	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	६	वृष	१।३७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१।५१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२।५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२।४८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	३।१४	
,, २ सोम.	७ ,,	हस्त	।ऽ॥॥॥।	वृश्चिक	४	कर्क	२२।५७	लग्न-गुरु-य.मित्र ।T
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२३।२८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२३।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	०।१४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	०।५९	
,, ३ भौम.	८ ,,	स्वाती	॥।ऽबुऽशुके॥ऽऽ।	धनु	७	वृष	१।२९	वर्गोत्तम नवांश में ।C
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१।४४	Kचन्द्र-यामित्र ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१।५९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२।२६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	३।६	
,, ४ बुध.	९ ,,	,,	,,	वृष	४	मीन	९।५९	६ लग्नेश, ८ शुक्र,K
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१०।२४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१०।३७	

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं. टाइम घं. मि.	दानोपाय
चैत्र कृष्ण ४ बुध.	९ मार्च	स्वाती	।।।ऽबुऽशुके।।ऽऽ।	वृष	४	कर्क	१०।५०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	११।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	६	मीन	१८।४६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१९।१९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१९।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१९।४९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२०।१८	
चैत्र कृष्ण ५ गुरु.	१० ,,	अनुराधा	ऽचंऽ।ऽगुऽरो।।।।	धनु	५	वृष	१।२१	सप्तशलाका चक्र मेंK
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१।३६	छठे लग्नेश, चन्द्र-S
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१।५१	चन्द्र गुरु-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२।३२	
,, ,,	,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।५८	
,, ६ शुक्र.	११ ,,	,,	,,	मीन	४	कर्क	६।२४	तिथि-क्षय दोष, Q
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	६।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	६।५३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	७।१३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	७।४२	
,, ८ शनि.	१२ ,,	मूल	—	—	—	—	—	मृत्युबाण,व्यतीपात।
,, ९ रवि.	१३ ,,	,,	—	—	—	—	—	मृत्युबाण,व्यतीपात।
,, १० सोम.	१४ ,,	उ. षा.	—	—	—	—	—	सूर्य-संक्रांतिजन्यदोष
सं० २०३४								
वैशाखकृष्ण १२शुक्र.	१५ अप्रैल	उ. भा.	।।ऽ।।।।ऽ।।	कुम्भ	६	तुला	२।३६	सूर्यभुक्त नक्षत्र दोषP
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।५७	अत्यावश्यक में ;H
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	३।२८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	३।४८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।५७	
,, १३ शनि.	१६ ,,	,,	,,	वृष	,,	मीन	७।३३	वैधृति से पहले, T
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	७।५८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	८।११	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	८।२४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	८।५२	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	—	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	४	कर्क	२०।२०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२०।५१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२१।६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२१।३७	
,, १४ रवि.	१७ ,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२२।२२	
		रेवती	—	—	—	—	—	
वैशाख शुक्ल २ गुरु.	२१ ,,	रोहिणी	।।ऽगु।।।।।।	गोधूलि	—	—	—	सूर्य-भुक्त नक्षत्र-D
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	४	कर्क	२०।४	पापभुक्त। चन्द्र-गुरु यामित्र।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२०।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२०।५०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२१।२१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२२।६	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	५	वृष	२२।३२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२२।४७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२३।२	
	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२३।२९	

Q भद्रा से पहले। चन्द्र गुरु-दान।
S यामित्र।
K शनि-वेध।

P शनिन्दु युक्त।
H लग्नस्थ भौमदान।
T १०वें भौमदान।

D दोष, सूर्य-ग्रहण जन्य दोष।

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहा-दोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टै. टाइम घं. मि.	दानोपाय
वैशाख शुक्ल ३ गुरु.	२१ अप्रैल	रोहिणी	।।ऽ।।।।।।।	धनु	५	तुला	२३।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	०।६	
,, ,,	,,	,,	,,	कुम्भ	५	तुला	२।१२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।३३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	३।४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	३।२४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।३३	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	५	कर्क	३।४३	लग्नस्थ भौम-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	४।२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	४।१२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	४।३२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	५।१	
,, ४ शुक्र.	२२ ,,	,,	,,	वृष	५	मीन	७।१०	भद्रा से पहले।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	७।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	७।४८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	८।१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	८।२६	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	४	तुला	८।४२	१० वें भौम-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	९।११	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	९।५५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१०।२५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१०।४०	
,, ५ शनि.	२३ ,,	मृगशिरा	।।।।।ऽऽ।।	कुम्भ	५	तुला	२।८	भद्रा के बाद।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।२९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	३।०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	३।२०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।२९	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	५	कर्क	३।३९	लग्नस्थ भौम-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	३।५८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	४।८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	४।२८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	४।५७	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	६	कर्क	७।५७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	८।२५	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	—	—	—	क्रूरयुत है।
,, ९ गुरु.	२८ ,,	मघा	।।।।।।ऽ।ऽ।	वृष	५	मीन	६।४६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	७।११	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	७।२४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	७।३७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	८।५	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	५	तुला	८।१९	Dक्रान्ति साम्याभाव।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	८।४८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	९।३२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१०।२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१०।१७	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	—	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	५	कर्क	१९।३३	गुरु-दान, गणित से D
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	[illegible]	२०।४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२०।१६	

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहा-दोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं. टाइम घं. मि.	दानोपाय
वैशाख शुक्ल ९ गुरु.	२८ अप्रैल	मघा	।।।।।ऽ।ऽ।	वृश्चिक	५	धनु	२०।५०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२१।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	४	कर्क	३।१६	चन्द्र भौम-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	३।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	३।४५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	४।५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	४।३४	
,, ११ शनि.	३० ,,	उ. फा.	।।।।।ऽ।।।	वृष	५	मीन	६।३८	भद्रा के बाद।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	७।३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	७।१६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	७।२९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	७।५७	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	३	तुला	८।११	S में शनि वेध ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	८।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	९।२४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	९।५४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१०।१९	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	—	—	—	क्रूरयुत है।
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	५	कर्क	१९।२५	गुरु-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१९।५६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२०।११	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२०।४२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२१।२७	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	४	वृष	२१।५७	P मृत्युबाण ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२२।१२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२२।२७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२२।५४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२३।८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२३।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	कुम्भ	६	तुला	१।३७	घं. २ मि. ३९ बजेL
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१।५८	L तक रात्रि में ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२।२९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	२।४९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२।५८	
,, १३ रवि.	१ मई	हस्त	,,	—	—	—	—	भौमवेध । –
,, १४ सोम.	२ ,,	,,	,,	—	—	—	—	
,, १५ भौम.	३ ,,	स्वाती	,,	—	—	—	—	भद्रा ।
ज्येष्ठ कृष्ण १ बुध.	४ ,,	,,	,,	—	—	—	—	भद्रा व्यतीपात,P
,, २ गुरु.	५ ,,	अनुराधा	,,	—	—	—	—	सूर्यवेध सप्तशलाकाS
,, ३ शुक्र.	६ ,,	,,	,,	—	—	—	—	,, ,, ,,
,, ,,	,,	मूल	।।।।ऽनृ.।ऽ।।	गोधूलि	—	—	—	तिथि-क्षय-दोष।
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	५	कर्क	१९।१	सप्तमस्थ गुरु-K
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१९।३२	K यामित्र ।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१९।४७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२०।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२१।३	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	४	वृष	२१।३३	चन्द्र-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२१।४८	
	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२२।१३	

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं. टाइम घं. मि.	दानोपाय
ज्येष्ठ कृष्ण २ शुक्र.	६ मई	मूल	।।।।।ऽन्॒।ऽ।।	धनु	४	कन्या	२२।३०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२२।४४	Sप्त घं.६ मि.२२ पूर्वे तक है।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२३।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	कुम्भ	५	तुला	१।१३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२।५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	२।२५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२।३४	
,, ६ रवि.	८ ,,	उ. षा.	।चं।ऽ।।।ऽचो।।।ऽ	मिथुन	३	तुला	७।३६	भद्रा से पहले, मह-S
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	८।८	चन्द्रदान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	८।५२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	९।२२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	९।३७	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	—	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	४	कर्क	१८।५३	भद्रा घं.२३ मि.३१P
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१९।२४	गुरुदान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१९।३९	Pपूर्वे के बाद।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२०।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२०।५५	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	५	वृष	२१।२५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२१।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२१।५५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२२।२२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२२।३६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२३।२	
,, ११ शुक्र.	१३ ,,	उ. भा.	।।।।।ऽग्र।ऽऽ।।	गोधूलि	—	—	—	मृत्युबाण के बाद।
,, ,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	४	कर्क	१८।३४	गुरु यामित्र-दोष।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१९।५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१९।२४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१९।५१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२०।३६	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	५	वृष	२१।६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२१।२१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२१।३६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२२।३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२२।१७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२२।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	कुम्भ	६	तुला	०।४६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१।७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	१।३८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१।५८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२।७	
,, १२ शनि.	१४ ,,	,,	,,	वृष	५	मीन	५।४३	सूर्य-संक्रान्ति जन्यH
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	६।८	Hदोष।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	६।२१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	६।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	७।२	
,, ,,		रेवती	,,	,,	,,			केतुयुति।
,, शुक्ल १ गुरु.	१९ ,,	रोहिणी	।।ऽगु।।ऽन्॒।।।।	गोधूलि	—	—	—	सूर्यभोग्य,आवश्यकमें।

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टै.टाइम घं. मि.	दानोपाय
ज्येष्ठ शुक्ल १ गुरु.	१९ मई	रोहिणी	।।ऽगु।।ऽनृ।।।।	धनु	५	वृष	२०।४२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२०।५७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२१।१२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२१।३९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२१।५३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२२।१९	
,, ,,	,,	मृगशिरा	।।।।।ऽ।।।	कुम्भ	५	तुला	०।२२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	०।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	१।१४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	मेष	४	वृष	३।३२	शेष रात्रि में।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।४२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	३।५२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	४।१४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	४।२५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	४।४८	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	२	तुला	६।५६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	७।२५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	८।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	८।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	८।५५	
,, २ शुक्र.	२० ,,	,,	,,	गोधूलि	—	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	कुम्भ	५	तुला	०।१८	Lहै एवं एकार्गल उपग्रह दोष है।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	०।३९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	१।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१।३०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१।३९	
आषाढ़ शुक्ल ४ भौम.	२१ जून	मघा	ऽगुऽ।।ऽचो।।।।	गोधूलि	—	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	५	मीन	३।१४	पातदोष का अभावL
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	३।३९	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।५२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	४।५	
,, ६ गुरु.	२३ ,,	उ. फा.	,,	,,	,,	कन्या	४।३३	
,, ७ शुक्र.	२४ ,,	,,	,,	,,	,,	—	—	व्यतीपात।
,, ,,	,,	हस्त	,,	,,	,,	—	—	व्यतीपात तथाK
,, ,,	,,	,,	।।।।।।।ऽ।ऽ	गोधूलि	—	—	—	भद्रा घं. १७ मि. ६T
,, ,,	,,	,,	,,	कुम्भ	५	तुला	२१।५७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२२।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२२।४९	Tबजे तक।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	२३।९	Kभद्रा है।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२३।१८	
,, ,,	,,	,,	।।।।।।।ऽ।।	मेष	५	वृष	१।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१।२०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१।३०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१।५२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२।३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।२६	
		,,	,,	वृष	५	मीन	३।२	दग्धा सपरिहार।

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टैं.टाइम घ. मि.	दानोपाय
आषाढ़ शुक्ल ७ शुक्र.	२४ जून	हस्त	।।।।।।।ऽ।।	वृष	५	वृष	३।२७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	३।५३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	४।२१	
,, ८ शनि.	२५ ,,	,,	,,	सिंह	५	वृष	६।१७	मृत्युबाण से पहले।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	६।३२	शनि दान से।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	६।४७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१०।१७	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१०।३२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	११।१	
,, १० रवि.	२६ ,,	स्वाती	।।।।।ऽअ।ऽ।।	गोधूलि	—	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	कुम्भ	५	तुला	२१।४६	शुक्र-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२२।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	२२।४१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	१३।१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२३।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	५	मीन	२।५४	चन्द्र-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	३।१६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	३।३२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	३।४५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	४।१३	
कार्तिकशुक्ल १२ भौम.	२२ नवम्बर	रेवती	—	—	—	—	—	केतुयुति, व्यतीपात।
,, १५ शुक्र.	२५ ,,	रोहिणी	—	—	—	—	—	मृत्युबाण से पहले ॐ
मार्गशीर्ष कृ. १ शनि.	२६ ,,	,,	—	—	—	—	—	
,, २ रवि.	२७ ,,	मृगशिरा	।।।।ऽअऽ।।।	मेष	४	वृष	१४।५३	गुरुयामित्र दोष, *
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	१५।३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	१५।१३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	१५।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	१५।४६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	१६।८	
,, ,,	,,	,,	,,	गोधूलि	,,	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	सिंह	५	वृष	२२।३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२३।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२३।३३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	०।३	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	०।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	०।४७	
,, ६ शुक्र.	२ दिसम्बर	मघा	—	—	—	—	—	शनि-युति।
,, ८ रवि.	४ ,,	उ. फा.	—	—	—	—	—	केतु-वेध।
,, ६ सोम.	५ ,,	,,	—	—	—	—	—	
,, ,,	,,	हस्त	—	—	—	—	—	राहु-युति।
,, ११ बुध.	७ ,,	स्वाती	।।।।।।।।।	गोधूलि	—	—	—	सूर्यभुक्त, अनिंदु +
,, ,,	,,	,,	,,	सिंह	५	वृष	२२।२४	लग्न शनि-दान, *
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२२।३६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२२।५४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२३।२४	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२३।३६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	०।५	
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	५	तुला	२।४०	भौम चन्द्र-दान, =

*मंगल अष्टम में नीच का है, अतः दोषावह नहीं।
ॐ शुद्ध लग्न प्राप्त नहीं है।
+ मुक्त शुभ नहीं।
*अत्यावश्यक में।
= तिथि-क्षय दोष।

विवाह-मुहूर्त मास, तिथि, वार	तारीख	विवाह-नक्षत्र	दशमहा-दोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा	लग्न	इष्टग्रह संख्या	नवांश	भारतीय स्टै. टाइम घं. मि.	दानोपाय
मार्गशीर्ष कृ. ११बुध.	७ दिसम्बर	स्वाती	|||||||||	तुला	५	धनु	३।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	३।५५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	४।२६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	४।४१	
,, १४ शुक्र.	६ ,,	अनुराधा	—	—	—	—	—	सूर्य भुक्त नक्षत्र, +
,, शुक्ल १ रवि.	११ ,,	मूल	।ऽ।ऽ।।।।	—	—	—	—	सूर्य भोग्यनक्षत्र।
,, २ सोम.	१२ ,,	उ. षा.	ऽरा।।।।।।।।	तुला	६	तुला	२।२०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।५०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	३।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	४।६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	४।२१	भौम-दान।
,, ३ भौम.	१३ ,,	उ. षा.	ऽरा।।।।।।।।	गोधूलि	—	—	—	
,, ,,	,,	,,	,,	सिंह	४	वृष	२२।०	लग्नस्थ शनि शुभ नहीं।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	२२।१५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	२२।३०	+ मासान्तादि दोष।
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	२३।०	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	तुला	२३।१५	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२३।४४	
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	४	तुला	२।१६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	धनु	२।४६	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मीन	३।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	वृष	४।२	
,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,	मिथुन	४।१७	

❀ सन् १९७७ ई० के उपनयन-मुहूर्त ❀

मासादि	तारीख	नक्षत्र	लग्न	नवांश	स्टं. टा. घं. मि.	दानोपाय
संवत् २०३३						
माघ शु. २ शुक्र.	२१ जन	धनिष्ठा	व्यती	पात	दोष	
,, ५ सोम.	२४,,	उ. भा.	मीन	कर्क	९।२५	राहुदानa
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	९।४४	a सूर्यवेध-जन्य-दोष आव-श्यकता में।
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	९।५४	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	१०।१४	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	१०।४३	
,, ,,	,,	,,	अभि.	—	—	—
,, ११रवि.	३०,,	रोहिणी	मीन	कर्क	९।२	शनि राहुb
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	९।२१	c भद्रा, द्वादशी सोपपदा-वें b दान में धृति।
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	९।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	९।५१	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	१०।२०	
,, ,,	,,	,,	अभि.	—	—	
,, ११सोम.	३१,,	मृगशि.	—	—	—	सूर्यवेधc
फाल्गुन कृ.२रवि.	६फर.	पू.फा.	मीन	कर्क	८।३४	केतुवेध,d
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	८।५३	
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	९।३	e रिक्ता तिथि।
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	९।२३	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	९।५२	
, ३ सोम.	७,,	उ.फा.	—	—	—	भद्राe
,, ५ भौम.	८,,	हस्त	मीन	कर्क	८।२६	रोगवाण

मासादि	तारीख	नक्षत्र	लग्न	नवांश	स्टं.टा. घं.मि.	दानोपाय
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	८।४५	
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	८।५५	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	९।१५	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	९।४४	
,, ,,	,,	,,	वृष	मीन	११।५९	अपराह्न
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	१२।२१	[illegible] पहले।
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	१२।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	१२।४७	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	१२।१५	
,, शु. २ रवि.	२०,,	पू.भा.	मीन	कर्क	७।३९	राहुवेध
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	७।५८	[illegible] शनि राहु-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	८।८	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	८।२८	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	८।५७	
,, ,,	,,	,,	वृष	मीन	११।९	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	११।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।४७	—
,, ,,	,,	उ.भा.	अभि.	—	—	
,, ३ सोम.	२१,,	,,	वृष	मीन	११।५	रोगवाण
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	११।३०	[illegible] पहले।
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।४३	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	११।५६	—

मासादि	तारीख	नक्षत्र	लग्न	नवांश	स्टैं. टा. घं. मि.	दानोपाय
फाल्गुनकृ. ३सोम.	२१फर	उ.भा.	वृष	कन्या	१२।२४	
,, ४भौम.	२२,,	रेवती	अभि.	—	—	साम-j
,, ५ बुध.	२३,,	अश्वि.	मीन	कर्क	७।२७	१चरणमें k
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	७।४६	
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	७।५६	d तिथिक्षय, आवश्यकता में, वेध सपरिहार है। शनि राहु-दान।
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	८।१६	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	८।४५	
,, ,,	,,	,,	वृष	मीन	१०।५७	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	११।२२	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।३५	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	११।४८	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	१२।१६	
,, १० सोम.	२८,,	आर्द्रा	मीन	कर्क	७।८	राहु शनि l
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	७।२७	l दान।
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	७।३७	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	७।५७	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	८।२६	
,, ,,	,,	,,	वृष	मीन	१०।३८	j वेदियों का।
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	११।३	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।१६	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	११।२९	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	११।५७	
,, ११ भौम.	१मार्च	,,	मीन	कर्क	७।४	राहुशनि m
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	७।२३	m दान, सामवेदियों का।
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	७।३३	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	७।५३	
,, ,,	,,	पुनर्वसु	,,	मीन	८।२२	
,, ,,	,,	,,	वृष	मीन	१०।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	१०।५९	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।१२	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	११।२५	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	११।५३	
,, १२ बुध.	२,,	पुष्य	मीन	कर्क	७।०	राहु शनि n
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	७।१९	n दान।
,, ,,	,,	,,	,,	तुला	७।२९	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	७।४९	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	८।१८	i नक्षत्र, परन्तु मीनाङ्क है, केवल ब्राह्मण-कुमारों का।
,, ,,	,,	,,	वृष	मीन	१०।३०	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	१०।५५	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	११।८	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	११।२१	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	११।४९	
चैत्र कृ. २ सोम.	७,,	हस्त	अभि.	—	—	
संवत् २०३४						
चैत्र शु. २ सोम.	२१,,	रेवती	वृष	मीन	९।१५	सूर्य-भोग्य i
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	९।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	९।५३	

k केतु-युति, अत्यावश्यकता में शनि-राहु-दान।
l से पूर्व सामवेदियों का, शनि राहु-दान, पाद-भेद से शुक्र-वेध का अभाव है।

मासादि	तारीख	नक्षत्र	लग्न	नवांश	स्टैं. टा. घं. मि.	दानोपाय
चैत्र शु. २ सोम.	२१मार्च	रेवती	वृष	कर्क	१०।६	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	१०।३४	
,, ,,	,,	,,	मिथुन	तुला	१०।४८	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	११।१७	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	१२।१	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	१२।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	१२।४६	
,, ५ शुक्र.	२५,,	रोहि.	वृष	मीन	९।०	स्टैं.टा.a
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	९।२५	a घं. ८ मि. २० से घं. १० मि. ८ बजे तक
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	९।३८	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	९।५१	
,, १० बुध.	३०,,	पुष्य	मीन	धनु	५।५९	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	६।२८	
,, ,,	,,	,,	वृष	मीन	८।४०	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	९।५	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	९।१८	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	९।३१	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	९।५९	i आवश्यकता में, भद्रा है। रोग-वारण।
,, ,,	,,	,,	मिथुन	तुला	१०।१३	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	१०।४२	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	११।२६	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	११।५६	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	१२।११	
११ गुरु.	३१,,	आश्ले.	—	—	—	शनि-युति i
वैशाख शु. १०शुक्र.	२९अप्रै.	पू. फा.	वृष	मीन	६।४२	सूर्य-वेध-c
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	७।७	c जन्यदोष, आवश्यकता में
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	७।२०	
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	७।३३	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	८।१	
,, ,,	,,	,,	मिथुन	तुला	८।१५	राहु-दान
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	८।४४	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	९।२८	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	९।५८	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	१०।१३	
ज्येष्ठ कृ. २ गुरु.	५मई	अनु.	वृष	मीन	६।१९	शनि-वेध।
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	६।४४	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	६।५७	d त्र दोष, सोपपदा तिथि।
,, ,,	,,	,,	,,	कर्क	७।१०	
,, ,,	,,	,,	,,	कन्या	७।३८	
,, ,,	,,	,,	मिथुन	तुला	७।५१	
,, ,,	,,	,,	,,	धनु	८।२०	
,, ,,	,,	,,	,,	मीन	९।४	
,, ,,	,,	,,	,,	वृष	९।३४	
,, ,,	,,	,,	,,	मिथुन	९।४६	
,, शु. २ शुक्र.	२०,,	मृग.	अभि.	—	—	गुरु-वृद्ध-d

❋ चौल (मुण्डन) केशान्त-मुहूर्त ❋

सं० २०३३

माघ शुक्ल ७ बुध रेवती, अश्विनी केतु-युति आवश्यकता में ल. १२ राहु-दान ; वा ल. २।

,, ,, १३ बुध पुनर्वसु ल.११।

फाल्गुन कृष्ण ७ गुरु स्वाती भद्रा के बाद ल. ३।

,, ,, १० रवि ज्येष्ठा भद्रा है।

,, शुक्ल ५ बुध अश्विनी केतु युति ; ल. १२ राहु-दान वा ल. २।

,, ,, १३ गुरु पुष्य ल. १२।

संवत् २०३४

वैशाख कृष्ण ११ गुरु शतभिषा भौमभुक्त नक्षत्र आवश्यकता में ल. २।

वैशाख शुक्ल ६ सोम. पुनर्वसु ल. २।

,, ,, १३ रवि हस्त भौमवेध आवश्यकता में ब्राह्मणों का ल. २।

ज्येष्ठ कृष्ण २ गुरु ज्येष्ठा आद्य गर्भ के संतान को छोड़ कर ल. २।

,, ३ शुक्र ज्येष्ठा में भद्रा है।

,, १० गुरु शतभिषा भद्रा के बाद वैधृति है।

,, १३ रवि रेवती भौमयुति अश्विनी में केतु-युति है आवश्यकता में ल. ३।

ज्येष्ठ शुक्ल २ शुक्र मृगशिरा ल. ३ अत्यावश्यकता में।

आषाढ़ शुक्ल १० रवि चित्रा ब्राह्मणों का ल. ५।

वैशाख कृष्ण १२ शुक्र पू.भा. ल. २।

,, शुक्ल ६ रवि आर्द्रा ल. ३।

,, ,, १० शुक्र पू.फा. ल. ३।

ज्येष्ठ कृष्ण २ गुरु अनुराधा शनिवेध आवश्यकता में ल. ३।

ज्येष्ठ कृष्ण ५ शनि पू. षा. ल. ३।

,, ,, ११ शुक्र पू.भा.ल. ३।

आषाढ़ शुक्ल १० रवि चित्रा ल. ६ राहुदान।

,, ,, ११ सोम स्वाती ल. ६ राहु-दान।

❋ अक्षरारम्भ-मुहूर्त ❋

सं. २०३३

माघ कृष्ण ६ शुक्र स्वातीभेरिवता के बाद अक्षरारम्भ-मुहूर्त ल. १२ आवश्यकता में।

,, शुक्ल २ शुक्र धनिष्ठा व्यतीपात है।

,, ,, ११ सोम मृगशिरा वैधृति।

फाल्गुन कृष्ण ६ बुध चित्रा ल. १२।

,, शुक्ल ५ बुध अश्विनी केतुयुति आवश्यकता में ल.१२।

फाल्गुन शुक्ल १० सोम आर्द्रा ल. १२।

,, ,, १२ बुध पुष्य ल. १२।

चैत्र कृष्ण २ सोम हस्त ल. ३।

,, ,, ६ शुक्र अनुराधा शनिवेध ४।५८ या.।

सं. २०३४

ज्येष्ठ कृष्ण २ गुरु अनुराधा, शनि-वेध आवश्यकता में ल. ३।

❋ विद्यारम्भ-मुहूर्त ❋

सं० २०३३

माघ कृष्ण १२ रवि अनुराधा शनिवेध। आवश्यकता में ल. ११।

,, शुक्ल २ शुक्र धनिष्ठा व्यतिपात।

फाल्गुन कृष्ण २ रवि पू.फा. केतुवेध आवश्यकता में ल. १२।

,, ,, ६ बुध चित्रा विद्यारम्भ ल. १२।

,, शुक्ल २ रवि पू.भा. राहुवेध आवश्यकता में ल.१२।

फाल्गुन शुक्ल ५ बुध अश्विनी केतुयुति आवश्यकता में ल. १२।

,, ,, १० सोम आर्द्रा ल.१२।

,, ,, १२ बुध पुष्य ल. १२।

चैत्र कृष्ण २ सोम हस्त ल.३।

चैत्र ,, ६ शुक्र अनुराधा शनि वेध भद्रा से पहले ल. १२।

,, ,, १० सोम पू. षा. सूर्य-संक्रान्ति।

सं० २०३४

वैशाख कृष्ण ११ गुरु शतभिषा ल. ३।

❋ वधू-प्रवेश-मुहूर्त ❋

सं० २०३३

फाल्गुन कृष्ण ११ सोम मूल ल. २।

,, ,, १३ बुध उ.षा. में व्यतिपात है शुभ नहीं है।

फाल्गुन शुक्ल ३ सोम उ.भा. ल. २।

,, ,, ५ बुध अश्विनी केतुयुति आवश्यक में ल. २।

,, ,, ८ शनि रोहिणी वैधृति के बाद ल. २।

,, ,, १२ बुध पुष्य ल. ८।

,, ,, १३ गुरु पुष्य।

,, ,, १५ शनि मघा ल. स्वल्पकाल।

चैत्र कृष्ण २ सोम हस्त ल. ८।

,, ,, ४ बुध स्वाती रिक्ता के बाद ल. ८।

,, ,, ६ शुक्र अनुराधा भद्रा के बाद ल. ८।

,, ,, ८ शनि मूल रात्रि ल. ८।

सं० २०३४

वैशाख कृष्ण १३ शनि उ.भा. वैधृति से पहले त्रयोदशी में ल. २।

,, ,, शुक्ल ३ गुरु रिक्ता से पहले रोहिणी ल. ८।

,, ,, ४ शुक्र भद्रा के बाद मृगशिरा में रात्रि में ल. ११।

,, ,, ५ शनि मृगशिरा में ल. २।

वैशाख शुक्ल ६ सोम पुनर्वसु में ल. ११।

,, ,, ६ गुरु मघा में ल. २, ८, ११।

,, ,, ११ शनि उ.फा. भद्रा के बाद ल. २, ५।

ज्येष्ठ कृष्ण १ बुध अनुराधा ल. ८।

,, ,, २ गुरु अनुराधा ल. २, ५।

कार्तिक शु. १३ बुध अश्विनी व्यतीपात के बाद ल. २।

,, ,, १५ शुक्र रोहिणी शेष-रात्रि में ल. ५।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ शनि रोहिणी ल. ११ वा २।

,, ,, ४ बुध पुष्य ल. ११ वा ल. २।

,, ,, ५ गुरु पुष्य ल. ११।

,, ,, ६ शुक्र भद्रा के बाद मघा लग्न चिन्त्य।

,, ,, ६ सोम उ. फा. रिक्ता के बाद भद्रा से पहले ल. २।

,, ,, ११ बुध चित्रा ल. ११ वा ल. २।

,, ,, १२ गुरु स्वाती ल. ११, २।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ सोम उ.षा. शेष रात्रि में ल. ५।

,, ,, ४ बुध धनिष्ठा के बाद शेष रात्रि में ल. ५। धनु-संक्रान्ति से पहले।

❋ द्विरागमन-मुहूर्त ❋

सं० २०३३

फाल्गुन कृष्ण ११ सोम मूल पू.षा. से पूर्व, ल. २।

फाल्गुन कृष्ण १३ बुध उ.षा. व्यतीपात है।

,, ,, ३० शुक्र शतभिषा ल. २।

फाल्गुन शुक्ल ३ सोम उ. भा. रिक्ता से पूर्व ल. १२।
,, ,, ५ बुध अश्विनी केतुयुति आवश्यकता में ल. २।
,, ,, १२ बुध पुष्य ल. १२ वा ल. २।
,, ,, १३ गुरु पुष्य लग्न चिन्त्य है।
चैत्र कृष्ण २ सोम हस्त ल. १२ वा ल. २।
,, ,, ४ बुध स्वाती रिक्ता के बाद ल. ६।
,, ,, ६ शुक्र अनुराधा में भद्रा से पहले ल. १२।

सं० २०३४

वैशाख कृष्ण ११ गुरु शतभिषा ल. २।
वैशाख शुक्ल ३ गुरुवार रोहिणी, लग्नचिन्त्य।
,, ,, शुक्ल ४ शुक्र मृगशिरा भद्राके बाद रात्रि में लग्न चिन्त्य है।
,, ,, ६ सोम पुनर्वसु ल. २।
ज्येष्ठ कृष्ण १ बुध अनुराधा में ल. ६ रा. दा. । सायं ल. ७।
,, ,, २ गुरु अनुराधा ल. २। वा ल. ३।
,, ,, ७ सोम श्रवण भद्रा के बाद ल. ६ वा ल. ७।
,, ,, १० गुरु शतभिषा वैधृति।

ज्येष्ठ कृष्ण ११ शुक्र उत्तराभाद्रपद ल. ३।
कार्तिक शुक्ल ७ गुरुवार श्रवण धनिष्ठा भद्रा से पूर्व लग्न-चिन्त्य।
,, ,, ८ शुक्रवार धनिष्ठा, शतभिषा रिक्ता से पूर्व लग्न-चिन्त्य।
,, ,, ११ सोमवार रेवती भद्रा के बाद, लग्न-चिन्त्य।
,, ,, १३बुध अश्विनी व्यतीपात के बाद ल. ३।
,, ,, १५ शुक्र रात्रि शेष रोहिणी ल. ७।
मार्गशीर्ष कृष्ण४बुध रिक्ता के बाद पुनर्वसु पुष्य आवश्यक में भौमयुति ल. ३।
,, ,, ५ गुरु पुष्य आवश्यक में भौमयुति ल. १२।
,, ,, ९ सोम रिक्ता के बाद उ.फा. ल.२ वा ल.३।
,, ,, ११ बुध चित्रा ल. २ वा ल. ३।
,, ,, १२ गुरु स्वाती ल. २ वा ल. ३।
मार्गशीर्ष शुक्ल ४ बुध रिक्ता के बाद श्रवण ल. ७।
,, ,, ६ गुरु धनिष्ठा ल. २ वा. ल.३। सूर्य-संक्राति।

वैशाख शुक्ल१० शुक्र उ.फा. चक्र-शुद्धि दिन में ल. ११। ८।१२ लग्नाभाव।
,, ,, ११ शनी उ.फा. गृहारंभ चक्र-शुद्धि द्वादशाष्टम शुद्ध शुक्र अभिजित् में।
शुद्ध श्रावण शुक्ल ८ सोम अनुराधा में भद्राके बाद वैधृति से पहले, चक्रशुद्धि, परन्तु द्वादशाष्टम शुद्ध सल्लग्नाभाव।
,, ,, ११ गुरु उत्तराषाढ़ा चक्र-शुद्धि ल. २।
,, ,, १२ शुक्र उ. षा. चक्रशुद्धि तथापि द्वादशाष्टम शुद्ध लग्नाभाव।

भाद्रपद कृष्ण १ सोम शतभिषा।
,, ,, ३ बुध उ.भा. स्टैं. टा. १२।७ तक।
आश्विन शुक्ल १० शुक्र धनिष्ठा अभिजित्।
,, ,, ११ शनि शतभिषा अभिजित् में, पादभेद से बुधवेध का अभाव है।
कार्तिक कृष्ण २ शनि रोहिणी स्टैं.टा. १६।४ बाद।
मार्गशीर्ष कृष्ण १ शनि रोहिणी, चक्र-शुद्धि ८।१२ शुद्ध लग्नाभाव आवश्यकता में ल. १२ केतु-दान से।

❀ गृहारम्भ-मुहूर्त ❀

सं० २०३३

फाल्गुन कृष्ण ४ सोम रिक्ता के बाद आधी रात के बाद हस्त में गृहारम्भ में चक्र-शुद्धि ८।१२। शुद्ध लग्नाभाव।
फाल्गुन शुक्ल ८ शनि वैधृति के बाद रिक्ता से पूर्व रोहिणी चक्र-शुद्धि, द्वादशाष्टम शुद्ध लग्नाभाव है।
,, ,, १२ बुध पुष्य गृहारम्भ चक्र-शुद्धि, शुद्धलग्नाभाव।

फाल्गुन शुक्ल १३ गुरु पुष्य गृहारम्भ में चक्र-शुद्धि शुद्ध ८।१२ शुद्ध लग्नाभाव।
चैत्र कृष्ण २ सोम हस्त अभिजित् में।
,, ,, ४ बुध स्वाती रिक्ता के बाद व्याघात से पूर्व।

सं० २०३४

बैशाख शुक्ल ६ सोम पुष्य गृहारम्भ चक्र-शुद्धि ल. ११।

* गृह-प्रवेश-मुहूर्त *

सं० २०३३

माघ कृष्ण १० शनि अनुराधा शनि-वेध चक्र-शुद्धि ल. ११।
,, शुक्ल५ सोम उ.भा, रेवती ल. ११।
,, ,, १० शनि रोहिणी ल.५।
,, ,, ११ सोम मृगशिरा वैधृति है।
फाल्गुन कृष्ण ८ शुक्र अनुराधा शनि-वेध आवश्यक वैधृति के बाद में चक्रशुद्धि ल. ८।
,, ,, १३ बुध उ. षा. व्यतीपात है।
फाल्गुन शुक्ल ८ शनि रोहिणी चक्र-शुद्धि ल. २।
,, ,, १२ बुध पुष्य जीर्णादि गृ. प्र. ल. २।
,, ,, १३ गुरु पुष्य जीर्णादि गृ.प्र. चक्र-शुद्धि-मात्र।

सं० २०३४

वैशाख कृष्ण१३ शनि उ.भा. सूर्यभुक्त नक्षत्र त्रयोदशी में चक्र-शुद्धि ल. २।
वैशाख शुक्ल ११ शनि उ. फा. ल. २।

ज्येष्ठ कृष्ण ११ शुक्र उ.भा. ल. ८।
,, ,, १२ शनि उ. भा. रेवती ल. २ वा ल. ८।
'नावश्यमस्तादिविचारणात्र'
ज्येष्ठ शुक्ल ५ सोम पुष्य जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि ल. ८।
,, ,, ९ रिक्तोत्तर शुक्र उ.फा. जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि ल. ८।
ज्येष्ठ शुक्ल १० शनि हस्त जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि ल. ८।
,, ,, १२सोम स्वाती जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि ल. ८।
शुद्ध श्रावण शुक्ल ६ शनि स्वाती जीर्णादिगृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि लग्नचिन्त्य।
,, ,, ८ सोम अनुराधा जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र शुद्धि-मात्र।
,, ,, १२ शुक्र उ. षा. जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धिमात्र।

कार्तिक कृष्ण १३ बुध चित्रा जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि-मात्र ।
कार्तिक शुक्ल ६ बुध उ. षा. जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि-मात्र ।
,, ,, ७ गुरु धनिष्ठा भद्रा से पहले जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि ।
,, ,, ८ शुक्र धनिष्ठा में गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि-मात्र ।
,, ,, ११सोम उ.भा.भद्रा है।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९सोम रिक्ता के बाद उ.फा. जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि-मात्र ।
,, ,, ११ बुध चित्रा उ. फा. के बाद जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि-मात्र।
,, ,, १२ गुरु स्वाती के बाद जीर्णादि गृह-प्रवेश चक्र-शुद्धि-मात्र ।
,, शुक्ल ६ गुरु धनिष्ठा अभिजित् में ।

* जलाशयारामसुर-प्रतिष्ठा-मुहूर्त *

सं० २०३३

(सौम्यायन शुक्लपक्ष)

माघ शुक्ल १ गुरु श्रवण ल. ११ ।
,, ,, २शुक्र धनिष्ठा व्यतीपात ।
,, ,, ३ शनि शतभिषा ल.११
,, ,, ५ सोम उ.भा. ल.११ ।
,, ,, ७ बुध रेवती ल. ११ ।
,, ,, ८गुरु अश्विनी केतुयुति ।
,, ,, ११ रवि रोहिणी सूर्य-वेध आवश्यकता में ल. ११ ।
,, ,, १३ बुध पुनर्वसु रिक्ता से पूर्व ल.११ ।
फाल्गुनकृष्ण ७ गुरु स्वाती लग्न चिन्त्य ।
फाल्गुन शुक्ल १ शनि शतभिषा ल.१२ वा ल.२।
,, ,, २ रवि उ. भा. लग्न चिन्त्य ।
,, ,, ३ सोम उ.भा. ल. २ ।
,, ,, ५ बुध अश्विनी केतु-युति आवश्यकता में ल. २ ।
,, ,, ८ शनि वैधृति के बाद रोहिणी में ल. १२ ।

फाल्गुनशु.१२बुध पुष्य ल.२ ।
,, ,, १३ गुरु पुष्य ल. २ ।
चैत्र कृष्ण १ रवि. उ. फा. अभिजित् में ।
,, ,, २ सोम. हस्त अभिजित् में ।

सं० २०३४

वैशाख शुक्ल ३ गुरु रोहिणी ल. ५ ।
,, ,, ५ शनि मृगशिरा ल.३।
,, ,, ६ सोम पुनर्वसु ल. ५ ।
,, ,,११शनि उत्तराफाल्गुनी।
,, ,, १३ रवि हस्त ल.५ ।
,, ,, १४ सोम चित्रा शिव-प्रतिष्ठा-मुहूर्त ल. ३ ।
ज्येष्ठ कृष्ण ६ रवि उ.षा. ।
,, ,, ७ सोम श्रवण ।
ज्येष्ठ शुक्ल १ गुरु रोहिणी सूर्यभोग्य आवश्यकता में ल. ५ ।
,, ,, २ शुक्र मृगशीर्ष ।
,, ,, ५ सोम पुष्य अभिजित् में ।
आषाढ़ शुक्ल ७ शुक्र उ.फा. भद्रा के बाद ल. ५ ।
,, ,, १० रवि चित्रा ल. ५ ।

❀ कूपारम्भ(नलिका-रोपण)मुहूर्त ❀

सं० २०३३

माघ शुक्ल २ शुक्र धनिष्ठा चक्र-शुद्धि व्यतीपात ।
फाल्गुन कृष्ण ११सोम पू.षा.
,, शुक्ल३सोम उ.भा.ल.१२ ।

चैत्र कृष्ण १ रवि उ. फा. ल. १२ ।
,, ,, १० सोम पू. षा. सूर्य-संक्रान्ति जन्य दोष आवश्यके ल. १२ ।

सं० २०३४

वैशाख कृष्ण ११ गुरु शतभिषा चक्र-शुद्धि ल. ३ ।
ज्येष्ठ कृष्ण ११ शुक्र उ. भा. ल. ३ ।
आषाढ़ शुक्ल ७ शुक्र उ.फा. व्यतीपात के बाद या हस्त में चक्र-शुद्धि ल.८।

आश्विन शुक्ल ७ बुध पू.षा. चक्र-शुद्धि भद्रा से पहले।
कार्तिक कृष्ण १३ बुध हस्त ल. ८ ।
,, शुक्ल ८ शुक्र शतभिषा ल. १२ केतु दान ।
मार्गशीर्ष कृष्ण ९ सोम उ.फा. रिक्ता के बाद ल. ११।

* हल-प्रवहण बीजोप्ति-मुहूर्त *

सं० २०३३

माघ कृष्ण १३ सोम मूल हल-प्रवहण ल. ११ ।
माघ शुक्ल ५ सोम उत्तरा भाद्रपदा हल प्रवहण ल. १२ ।
,, ,, ६ मंगल रेवती ,, ल.११
,, ,, ११सोम मृगशिरा हल-प्रवहण ल. ११ ।
फाल्गुन कृष्ण ७ गुरु स्वाती भद्रा के बाद हल प्रवहण ल. २ ।
,, ,, ११ सोम मूल हल प्रवहण ल. १२ ।
,, शुक्ल ३ सोम उत्तरा-भाद्रपदा हल प्रवहण ल. १२ ।
,, शुक्ल ५ बुध अश्विनी केतु-युति आवश्यकता में ल. १२ ।
चैत्र कृष्ण ५ गुरु विशाखा हल प्रवहण ल. १२ ।
,, ,, १२ बुध श्रवण हल प्रवहण ल. १२ ।
,, ,, १३ गुरु धनिष्ठा हल-प्रवहण ल. १२ ।

सं० २०३४

चैत्र शुक्ल ५ शुक्र रोहिणी हल प्रवहण ल. २ ।
,, ,, १० बुध पुष्य हल प्रवहण ल. २ ।
,, ,, १२ शुक्र मघा हल प्रवहण ल. २ ।
वैशाख शुक्ल ६ सोम पुनर्वसु हल प्रवहण ल. ३ ।
,, ,, ९ गुरु मघा रिक्ता के बाद हल प्रवहण ल. २ ।

ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरु शतभिषा हल प्रवहण ल. ३ ।
,, शुक्ल १ गुरु रोहिणी बीजोप्ति, हल-प्रवहण चक्र-शुद्धि, वैधृति ।
,, ,, २ शुक्र मृगशिरा ल.३ ।
,, ,, ५ सोम पुष्य हल प्रवहण बीजोप्ति ल. ३ ।
,, ,, ८ गुरु मघा हलचक्र बीजोप्ति चक्र-शुद्धि भद्रा के बाद ल. चिन्त्य ।
आषाढ़ कृष्ण ७ बुध शतभिषा हल प्रवहण चक्र-शुद्धि ।
आषाढ़ शुक्ल५ बुध मघा हल-प्रवहण चक्र-शुद्धि मात्र।
,, ,, ११ सोम स्वाती भद्रा से पहले हल प्रवहण चक्र-शुद्धि-मात्र ।
भाद्रपद शुक्ल ३ शुक्र चित्रा राहुभुक्त हल-प्रवहण आवश्यकता में ल. ८ ।
,, ,, ७ सोम अनुराधा हल-प्रवहण शनि-वेध-जन्य-दोष आवश्यकता में चक्रशुद्धि-मात्र ।
,, ,, १० गुरु उत्तराषाढ़ा हल-प्रवहण, बीजोप्ति ल. ८ ।
आश्विन कृष्ण १० शुक्र पुष्य हल प्रवहण बीजोप्ति चक्रशुद्धि ल. ८ ।
,, ,, १२ सोम उत्तराभाद्रपदा बीजोप्ति चक्र-शुद्धि ल. ८ वा ल. ६ ।

कार्तिक कृष्ण ४ सोम मृगशिरा रिक्ता के बाद हल प्रवहण बीजोप्ति चक्रशुद्धि ल. १२ ।
,, ,, ७ गुरु पुष्य भौमयुति

आवश्यकतामें हलप्रवहण बीजोप्ति ल. ९ ।
कार्तिक कृ. १३ बुध चित्रा हलप्रवहण ल. ८ वा ल. ९ ।

* विपणि-मुहूर्त *

सं० २०३३

माघ कृष्ण १० शनि अनुराधा में ल. २ ।
,, ,, शुक्ल ५ सोम उ. भा. तथा रेवती ल. १२ ।
,, ,, ११ रवि रोहिणी ल. १२ ।
फाल्गुन कृष्ण ६ बुध चित्रा ल. १२ ।
,, ,, १३ बुध उ.षा. ल. १२ ।
,, शुक्ल ३ सोम उ.भा.ल.१२ ।
,, ,, ५ बुध अश्विनी केतुयुति ल. १२ ।
,, ,, ८ शनि रोहिणी के बाद ल. २ ।
,, ,, १२ बुध पुष्य ल. २ ।
,, ,, १३ गुरु पुष्य ल. १२ ।
चैत्र कृष्ण १ रवि उ. फा. ल. १२ ।
चैत्र कृष्ण ६ शुक्र अनुराधा ल. १२ ।

सं० २०३४

वैशाख कृष्ण १३ शनि उ.भा. ल. २ ।
,, शु. ४ शुक्र मृगशिरा रिक्ता के बाद ल. ९ ।
,, ,, ५ शनि मृगशिरा ल. २ ।
,, ,, सोम पुष्य रात्रि शेष ल. ९ ।
,, ,, ११ शनि उ. फा. भ के बाद ल. २ ।
,, ,, १३ रवि हस्त ल. २ ।
ज्येष्ठ कृष्ण २ गुरु अनुराधा शनि-वेध ल. २ ।
,, ,, १२ शनि उ.भा.ल. ३ ।
,, ,, १३ रवि रेवती ल. २ ।
आषाढ़ शुक्ल १० रवि चित्रा ल. ३ ।
आ.शु.१ बुध अनुराधा शनिवेध आवश्यके ल. ३ ।
शुद्ध श्रावण कृष्ण ७ गुरु उ. भा.भद्रा के बाद ल. ८ ।
,, ,, ८ शुक्र रेवती ल. ५ ।
,, ,, १२ बुध रोहिणी ल. ५ ।
,, ,, १३ गुरु मृगशिरा ल. ५ ।
शुद्ध श्रावण शुक्ल ५ शुक्र चित्रा ल. ९ ।
,, ,, ८ सोम अनुराधा भद्रा के बाद ल. ९ ।
,, ,, १२ शुक्र उ. षा. ल. ९ ।
भाद्रपद कृष्ण ३ बुध उ. भा. भद्रा से पहले ल. ८ ।
,, ,, ५ शुक्र अश्विनी ।
,, ,, १२ शनि पुष्य ल. ४ ।
,, शुक्ल १ बुध उ.फा.ल.९ ।
,, ,, २ गुरु हस्त ल. ५ ।
,, ,, ३ शुक्र चित्रा ल. ८ ।
,, ,, ६ रवि अनुराधा शनियुति ल. ९ ।
,, ,, १० गुरु उ. षा. ल.९ ।
आश्विन शुक्ल १ गुरु चित्रा वैधृति ल. ८ ।
आश्विन ७ शुक्ल बुध उ. षा. ल. ९ ।
,, ,, १० शुक्र धनिष्ठा ल. ९ ।
कार्तिक कृष्ण ४ सोम मृगशिरा रिक्ता के बाद ल. २ ।
,, ,, ७ गुरु पुष्य भद्रा के बाद ल. ९ ।
,, ,, ११ सोम उ.फा. वैधृति ।
,, ,, १३ बुध चित्रा ल. ९ ।
कार्तिक शुक्ल १ शनि अनुराधा ल. ९ ।
,, ,, ६ बुध उ. षा. ल. ९ ।
,, ,, १३ बुध अश्विनी व्यतीपात ।
मार्गशीर्ष कृष्ण १ शनि रोहिणी ल. ८ । ल. ९ ।
,, ,, २ रवि मृगशिरा ल. ८ वा ल. ९ ।
,, ,, ४ बुध पुष्य रिक्ता के बाद ल. ९ ।
,, ,, ९ सोम उ. फा. रिक्ता के बाद ल. २ ।

❀ सन् १९७७ ई० के बाद संवत् २०३४ के शुद्ध विवाह-मुहूर्त ❀

(सब देशों के लिए)

मास तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धि-रेखा	लग्न	लग्न-शुद्धि, दानोपाय
फाल्गुन कृ. १ शुक्र.	२४ फरवरी ७८	उ. फा.	||||ऽशु|||||	तुला	
,, ,, २ शनि.	२५ फरवरी ७८	उ. फा.	||||ऽशु|||||	वृष	
,, ,, ७ बुध.	१ मार्च ७८	अनुराधा	ऽश||||ऽरोऽऽ||	धूलिमुख, तुला	
,, ,, ८ गुरु.	२ मार्च ७८	अनुराधा	ऽश||||ऽरोऽऽ||	वृष	चन्द्र-दान से, नक्षत्रान्त की ३ घटी*
,, शु. ३ शनि.	११ मार्च ७८	रेवती	||||ऽराऽरोऽ|||	मेष, वृष, कर्क	[*से पहले ।

सन् १९७७ ई० के बाद संवत् २०३४ के उपनयन-मुहूर्त

माघ शु. १० शुक्र. १७ फरवरी'७८ मृग. अभिजित्, शुक्र-बाल्यत्व दोष है ।

फाल्गुन कृ. ४ सोम. २७ फरवरी चित्रा अभिजित् पाद-भेद से शुक्र-वेध का अभाव है ।

फाल्गुन शुक्ल ३ रवि. १२ मार्च अश्विनी ।

चैत्र कृष्ण २ रवि. २६ मार्च चित्रा अभिजित् में ।

,, ,, ३ सोम. २७ मार्च स्वाती भद्रा से पूर्व ।

,, ,, ५ बुध. २९ मार्च अनुराधा लग्न वृष ।

❀ संवत् २०३३--३४ के कात्यायनोक्त नक्षत्र-चतुष्टयी के शुद्ध विवाह-मुहूर्त ❀

आवश्यक सूचना—जंत्री में कात्यायन सूत्रवाले यजुर्वेदियों के लिये गृह्यसूत्रोक्त 'त्रिपुत्रिपुत्तरादिषु' प्रमाणानुसार अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा इन चार नक्षत्रों में भी विवाह-मुहूर्त लगाये गये हैं । गृह्यसूत्र के अतिरिक्त धर्म-सिन्धु और सत्यकृत्य मुक्तावलि ग्रन्थ में भी ये चार नक्षत्र विवाह में ग्राह्य माने हैं ; वहाँ लिखा है—"चित्राश्रवणधनिष्ठाश्विनी नक्षत्रं यजुर्वेदि विषयम्", अन्य [illegible] फलद होने से ग्राह्य नहीं है । जैसे--मंगलवार यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत-मुहूर्त में अग्राह्य है (मरणञ्च भौमे) और वही मंगलवार सामवेदियों के यज्ञोपवीत में शुभ होने से

ग्राह्य है। ऐसे ही इस नक्षत्र-चतुष्टयी का भी विवाह में वेद और सूत्र-भेद से ग्राह्याग्राह्यत्व (शुभाशुभत्व) समझना चाहिये। उपर्युक्त वेदोक्त प्रमाणानुसार ही चित्रादि नक्षत्रों में विवाह-मुहूर्त लिखे हैं। अतः विद्वज्जन किसी भ्रम में न पड़ कर इनको स्वीकार करें--सम्पादक।

(सब देशों के लिए)

मास पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धि-रेखा	लग्न	लग्न-शुद्धि, दानोपाय।
माघ शु. १ गुरु.	२०जनवरी	श्रवण	ऽमं.रा।।।ऽचो।।।।	धूलिमुख	प्रतिपदा के बाद। [cहै। अतः दोष नहीं है।
ज्येष्ठ कृ. ७ सोम.	६ मई	श्रवण	ऽबु.रा।।।।।ऽ।।	धूलिमुख,वृश्चिक	वृश्चिक लग्न, गुरु-दान से।
कार्तिक शु. १३ बुध.	२३ नवम्बर	अश्विनी	ऽसू।।।ऽ।।	धनु, गोधूलि	धनु लग्न में अष्टम स्थित मंगल नीचa
मार्गशीर्ष कृ. १०भौम.	६ दिसम्बर	चित्रा	।।।ऽके ऽअऽऽ।।	तुला	[aका है, अतः दोष नहीं है, मं.गु.दानb
,, ,, ११ बुध.	७ ,,	चित्रा	।।।ऽके।ऽऽ।।	धनु	मं.-गु.-दान से। अष्टम में मं.नीच काc

देशाचार से पंजाब और त्रिगर्त देशों के लिए [bसे। गोधूलि में नक्षत्रान्त है।

मास पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धि-रेखा	लग्न	लग्न-शुद्धि, दानोपाय।
शुद्धश्रावण कृ.६ शनि.	६ जुलाई	अश्विनी	।।।।ऽरा।ऽऽ।।	सिंह, धूलिमुख	सिंह लग्न, शनि-दान से।
भाद्रपद शु. २ गुरु.	१५ सितम्बर	चित्रा	।।।ऽके ऽअऽ।।।	वृष, कर्क	[dमंगल नीच का होने से दोषवहe
,, ,, ११शुक्र.	२३ ,,	धनिष्ठा	ऽसू।।।।ऽ।।।	कर्क	चन्द्र-दान से। eनहीं है।
,, ,, १२शनि.	२४ ,,	धनिष्ठा	ऽसू।।।।ऽ।।।	तु.धूलिमु.मे.वृ.	धूलिमुख क्रूरयुत है।
आश्विन शु. १५ बुध.	२६ अक्टूबर	अश्विनी	।।।।।ऽऽ।।	धनु, वृष, मिथुन	धनु लग्न, मं.गु.-दान से और अष्टमस्थd
कार्तिक शु. ८ शुक्र.	१८ नवम्बर	धनिष्ठा	।।।।ऽअऽऽ।।	धनु	मंगल गुरु-दान से।

देशाचार से पंजाब और त्रिगर्त देशों के लिए शुद्ध विवाह-मुहूर्त

मास पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धि-रेखा	लग्न	लग्न-शुद्धि, दानोपाय।
आषाढ़ शु. ११ सोम.	२७ जून	स्वाती	।।।।ऽअ।ऽ।।	सिंह	शनि-दान से।
शुद्धश्रावण कृ.७ गुरु.	७ जुलाई	उ. भा.	ऽचं.शु।।।।ऽ।।।	धूलिमुख	
,, ,, ११भौम.	१२ ,,	रोहिणी	।ऽऽशु।ऽरो।ऽ।।	मेष	शुक्र-युति है।
शुद्धश्रावण शु. ४ गुरु.	१८ अगस्त	हस्त	।ऽ।।ऽअ।।।।	मिथुन	
,, ,, ६ शनि.	२० ,,	स्वाती	।।।।।।।।।	धूलिमु.मेष मिथुन	मेष लग्न, चन्द्र-दान से। मिथुनn
,, ,, ८ सोम.	२२ ,,	अनुराधा	।।।।।।ऽ।।	तुला	[nलग्न में नृपबाण है।
,, ,, १०बुध.	२४ ,,	मूल	।ऽ।ऽशुऽमं।।ऽ।।	तुला, गोधूलि, मेष	पाद-भेद से शुक्र-वेध का अभाव है।
भाद्रपद कृ. ८ भौम.	६ सितम्बर	मृगशिरा	ऽबु.शु।।।ऽअऽऽ।।	धूलिमु. मेष, वृष	
भाद्रपद शु. ६ रवि.	१८ ,,	अनुराधा	ऽश।।।।ऽअ।।।।	वृष, कर्क	वृष लग्न, चंद्र-दान से।
,, ,, ८भौम.	२० ,,	मूल	।।।।।।ऽ।ऽ	धूलिमुख, मेष	धूलिमुख क्रूरयुत है।
,, ,, १० गुरु.	२२ ,,	उ. षा.	ऽरा।।।।।ऽ।।	तुला, गो. मे, वृष	गोधूलि क्रूरयुत है।

विवाहादि शुभ कार्य-सम्पादनार्थ समय-शुद्धि

अशुद्ध समय

१-श्रीसंवत् २०३३ पौष शुक्ल ११ शनिवार ता. १ जनवरी १६७७ ई० से माघ कृष्ण ६ शुक्रवार ता.१४ जनवरी तक धनु(खर)मास दोष से समय अशुद्ध रहेगा।

२-चैत्र कृष्ण १० सोमवार ता. १४ मार्च से श्रीसंवत् २०३४ वैशाख कृष्ण १० बुधवार ता. १३ अप्रैल तक मीन (खर)मास एवं शुक्र के बाल-वृद्धत्वास्त दोष से समय अशुद्धतर रहेगा।

३-ज्येष्ठ शुक्ल १ गुरुवार ता. १६ मई से आषाढ़ शुक्ल ४ मंगलवार ता. २१ जून तक गुरु के बाल-वृद्धत्वास्त दोष से समय अशुद्ध रहेगा।

४-आषाढ़ शुक्ल ११ सोमवार ता. २७ जून से कार्तिक शुक्ल १० रविवार ता. २० नवम्बर तक कर्कायन-संक्रान्ति, हरिशयन एवं अधिक(मल)मास दोष से समय अशुद्धतर रहेगा।

५-मार्गशीर्ष शुक्ल ५ गुरुवार ता. १५ दिसम्बर से वर्षान्त तक धनु(खर)मास एवं शुक्र के बाल-वृद्धत्वास्त दोष से समय अशुद्धतर रहेगा।

शुद्ध समय

१-श्रीसंवत् २०३३ माघ कृष्ण १० शनिवार ता. १५ जनवरी १६७७ ई० से चैत्र कृष्ण ६ रविवार ता. १३ मार्च तक मकर और कुम्भ के सूर्य में समय शुद्ध रहेगा। [टि०-इस बीच फाल्गुन शुक्ल ८ शनिवार ता. २६ फरवरी से फाल्गुन शुक्ल १५ शनिवार ता. ५ मार्च तक होलाष्टक के दिन केवल पञ्जाब और पुष्कर(राजस्थान)में वर्ज्य हैं; अन्यत्र नहीं।]

२-श्रीसंवत् २०३४ वैशाख कृष्ण ११ गुरुवार ता. १४ अप्रैल से ज्येष्ठ कृष्ण ३० बुधवार ता. १८ मई तक मेष और वृष के सूर्य में समय शुद्ध रहेगा। [टि०-इस अवधि में वैशाख कृष्ण ३० सोमवार ता. १८ अप्रैल को सूर्य-ग्रहण जहाँ-जहाँ दृश्य होगा, वहाँ पर ग्रहण के ३ दिन पहले से ३ दिन बाद तक का समय ग्रहणजन्य दोष से अशुद्ध रहेगा।]

३-आषाढ़ शुक्ल ५ बुधवार ता. २२ जून से आषाढ़ शुक्ल १० रविवार ता. २६ जून तक मिथुन के सूर्य में समय शुद्ध रहेगा।

४-कार्तिक शुक्ल ११ सोमवार ता. २१ नवम्बर से मार्गशीर्ष शुक्ल ४ बुधवार ता. १४ दिसम्बर तक वृश्चिक के सूर्य में समय शुद्ध रहेगा।

शनि---सन् १९७७ ई० के वर्षारम्भ से कर्क में वक्री चल रहा है ; ता. ११ अप्रैल ७७ को घ. ११ मि. १३ बजे मार्गी होगा । ता. ७ सितम्बर ७७ ई० को घं. ११ मि. १७ बजे शनि सिंह राशि में प्रवेश करेगा और वर्षाभ्यन्तर उसी में भ्रमणशील रहेगा ।

राहु-केतु--वर्षारम्भ से राहु तुला में एवं केतु मेष राशि में चलते हुए ता. ३० अप्रैल सन् १९७७ ई० को घं. २३ मि. ० बजे राहु कन्या में एवं केतु मीन में प्रविष्ट होंगे और वर्षाभ्यन्तर उसी में सञ्चरण करेंगे ।

विवाह-मास---माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष ।

टिप्पणी---वर्षादि में मध्यम सौरपक्षीय गुरु के वृष राशिचारवशात् 'प्रमोद' नामक सम्वत्सर प्रवर्तित है एवं संवत् २०३४ शके १८९९ की आश्विन कृष्ण सप्तमी मंगलवार ता. ४ अक्टूबर सन् १९७७ ई० को भारतीय प्रमाणित समय (स्टें. टा.) से घं. ६ मि. ५२ से. १३ बजे सौरपक्षीय मध्यम गुरु के मिथुन राशिचारवशात् 'प्रजापति' नामक सम्वत्सर का प्रारम्भ होगा । 'प्रमोद' सम्वत्सर में वक्रगति से मेष राशि में भ्रमणशील स्पष्ट गुरु ता. १५-१-७७ को घं. १६ मि. २१ बजे मार्गी होगा एवं ता. २२-२-७७ ई० को घं. १८ मि. ४३ बजे स्पष्टगत्या वृष राशि में प्रवेश करेगा । मार्ग गति से वृष में चलता हुआ गुरु ता. १८-७-७७ को घं. १० मि. ५३ बजे मिथुन राशि में प्रवेश करेगा और उसी में गुरु के मार्गगत्या भ्रमणशील रहते 'गौरव' सम्वत्सरान्त हो जायेगा; तत्पश्चात् प्रजापति संवत्सर में ता. २४-१०-७७ को घं. १६ मि. २४ बजे गुरु वक्री होगा और उसके वक्रगत्या मिथुन में भ्रमणशील रहते सन् १९७७ ई० का वर्ष भी समाप्त हो जायेगा । अतएव वर्ष-शुद्धि के विचार से यह 'प्रमोद' तथा 'प्रजापति' सम्वत्सरयुत सन् १९७७ ई० का वर्ष मंगलकृत्यों के लिए शुद्ध एवं तदर्थ सबको शुभद है, जैसाकि शास्त्र-वचन है---**यत्रैकराशि सञ्चारो मार्गगत्या गुरुर्भवेत् । शुद्धः सम्वत्सरोसस्यात् सर्वेषां च शुभप्रदः ॥** मिथिला-निबन्ध के अनुसार ता. २४-१०-७७ से ता. १९-२-७८ तक गुरु के वक्रत्व-काल में वहाँ विवाह-मुहूर्त न होंगे ।

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त

संवत् २०३३

माघ	कृष्ण	९ शुक्र, स्वाती मकर-संक्रान्ति-दिवस
,,	,,	१० शनि, अनु. मृत्युपंचक रेखा ५
,,	,,	१२ रवि, अनु. लग्नाभाव है
,,	,,	१३ चन्द्र, मूल क्षीणचन्द्र है
माघ	शुक्ल	४ रवि. उ. भा. मृत्यु पंचक
,,	,,	५ सोम, रेवती लग्नाभाव
,,	,,	१० शनि, रोहिणी, लग्नाभाव क्रां. सा.
,,	,,	११ रवि, मृग. मंगल वेध
,,	,,	१२ सोम, मृग. मंगल वेध, वैधृति
,,	,,	१५ शुक्र, मघा सूर्य वेध
फाल्गुन	कृष्ण	१ शनि, मघा सूर्य वेध
,,	,,	२ रवि, उ. फा. भद्रा दोष
,,	,,	६ बुध, स्वाती लग्नाभाव, भद्रा
,,	,,	७ गुरु, स्वाती भद्रा लग्नाभाव
,,	,,	९ शनि, अनु. मासान्त
,,	,,	१० रवि, मूल मृत्यु पंचक
,,	,,	११ सोम, मूल मृत्यु पंचक नक्षत्रान्त
,,	,,	१२ भौम, उ. षा. क्षीणचन्द्र
फाल्गुन	शुक्ल	३ सोम, रेवती लग्नाभाव भद्रा शु. युति
,,	,,	४ भौम, रेवती भद्रा, मृत्यु पंचक
,,	,,	७ शुक्र, रोहिणी वैधृति
,,	,,	८ शनि, रोहिणी होलाष्टक
चैत्र	कृष्ण	१ रवि, उ. फा. [illegible]
,,	,,	३ भौम, स्वाती रे. ४ IIIऽबुऽऽIऽऽऽ
चैत्र	कृष्ण	५ गुरु, अनु. लग्नाभाव
,,	,,	८ शनि, मूल मृत्यु पंचक
,,	,,	९ रवि, मूल व्यतिपात
,,	,,	१० सोम. उ. षा. मीनार्कः

सम्वत् २०३४

वैशाख	कृष्ण	१२ शुक्र, उ. भा. क्षीणचन्द्र
वैशाख	शुक्ल	४ शुक्र, मृग. भद्रा लग्नाभाव
,,	,,	८ बुध, मघा लग्नाभाव
,,	,,	१० शुक्र, उ. फा. भद्रा-दोष
,,	,,	११ शनि, हस्त मंगल शुक्रवेध
,,	,,	१३ रवि, हस्त मं. शु. वेध
,,	,,	१४ सोम, स्वाती भद्रा
,,	,,	१५ भौम, स्वाती भद्रा, मृत्यु पंचक व्यतीपात
ज्येष्ठ	कृष्ण	१ बुध, अनु. सूर्यवेध
,,	,,	२ गुरु, अनु. सूर्यवेध
,,	,,	५ शनि, मूल लग्नाभाव
,,	,,	१२ शनि, रेवती मं. शु. युति
,,	,,	१३ रवि, रेवती मं. शु. युति
ज्येष्ठ	शुक्ल	२ शुक्र, मृग. रात्रौ लग्नाभाव
आषाढ़	शुक्ल	५ बुध, मघा लग्नाभाव
,,	,,	६ गुरु, उ. फा. केतुवेध, व्यतीपात
,,	,,	७ शुक्र, उ. फा. केतुवेध
कार्तिक	शुक्ल	११ सोम, उ. भा. राहुवेध
,,	,,	११ सोम, रेवती केतुयुति
,,	,,	१२ भौम, रेवती केतुयुति
,,	,,	१५ शुक्र, रोहिणी लग्नाभाव
मार्ग.	कृष्ण	१ शनि, रोहिणी मृत्यु पंचक
,,	,,	१ शनि, मृग. मृत्यु पंचक लग्नाभाव
,,	,,	६ शुक्र, मघा शनियुति
,,	,,	७ शनि, मघा शनियुति

मार्ग. कृष्ण ८ रवि, उ. फा. केतुवेध
,, ,, ६ सोम, उ. फा. केतुवेध
,, ,, ६ सोम, हस्त, राहुयुति
,, ,, १० भौम, हस्त, राहुयुति
,, ,, ११ बुध, स्वाती लग्नाभाव
,, ,, १२ गुरु, स्वाती लग्नाभाव, क्षीणचन्द्र

कात्यायनोक्त नक्षत्र-चतुष्टयी के अशुद्ध विवाह-मुहूर्त

सं० २०३३

माघ कृष्ण ८ गुरु, चित्रा राहुयुति धनुष्यर्क
माघ शुक्ल २ शुक्र, धनिष्ठा व्यतिपात
,, ,, ७ बुध, अश्विनी केतुयुति
फाल्गुन कृष्ण ५ भौम, चित्रा राहुयुति
,, ,, ६ बुध, चित्रा राहुयुति
,, ,, १३ बुध, श्रवण क्षीणचन्द्र
फाल्गुन शुक्ल ४ भौम, अश्विनी केतुयुति
,, ,, ५ बुध, अश्विनी केतुयुति
चैत्र कृष्ण २ सोम, चित्रा राहुयुति
,, ,, ३ भौम, चित्रा राहुयुति
,, ,, ११ भौम, श्रवण मीनार्क

संवत् ०३४

वैशाख शुक्ल १३ रवि, चित्रा राहुयुति
,, ,, १४ सोम, चित्रा राहुयुति
ज्येष्ठ कृष्ण ८ भौम, धनिष्ठा शनिवेध
,, ,, १३ रवि, अश्विनी, लग्नाभाव मृत्यु पंचक
,, ,, १४ सोम, अश्विनी क्षीणचन्द्र
आषाढ़ शुक्ल ८ शनि, चित्रा राहुयुति
,, ,, १० रवि, चित्रा राहुयुति
कार्तिक शुक्ल १२ भौम, अश्विनी व्यतिपात
मार्ग. शुक्ल ३ भौम, श्रवण मृत्यु पंचक भद्रा
,, ,, ४ बुध, श्रवण मृत्यु पंचक
,, ,, ४ बुध, धनिष्ठा भौमवेध
,, ,, ५ गुरु, धनिष्ठा भौमवेध

पंजाब और त्रिगर्त देश के नक्षत्र-चतुष्टयी-सहित अशुद्ध विवाह-मुहूर्त

संवत् २०३४

आषाढ़ शुक्ल १२ भौम, अनु. भौमवेध
,, ,, १३ बुध, अनु. भौमवेध
,, ,, १४ गुरु, मूल भद्रा लग्नाभाव
,, ,, १५ शुक्र, उ. षा. लग्नाभाव
शु.श्राव. कृष्ण २ शनि, उ. षा. वैधृति
,, ,, २ शनि, श्रवण वैधृ, लग्नाभाव
,, ,, ३ रवि, श्रवण लग्नाभाव भद्रा
,, ,, ३ रवि, धनिष्ठा शनिवेध
,, ,, ४ सोम, धनिष्ठा शनिवेध
,, ,, ६ बुध, उ, भा. भद्रा
,, ,, ७ गुरु, रेवती केतुयुति
,, ,, ८ शुक्र, रेवती केतुयुति
,, ,, ८ शुक्र, अश्विनी लग्नाभाव
,, ,, १२ बुध, रोहिणी लग्नाभाव क्षीणचंद्र
अधि.श्राव.शुक्ल ३ बुध, उ.फा. लग्नाभाव मृत्यु पंच.
,, ,, ५ शुक्र, चित्रा राहुयुति
,, ,, ७ रवि, अनु. भद्रा

अधि.श्रा.शुक्ल ६ भौम, मूल लग्नाभाव
,, ,, ११ गुरु, उ.षा. भौमवेध
,, ,, १२ शुक्र, उ.षा. भौमवेध
,, ,, १२ शुक्र, श्रवण, सूर्यवेध
,, ,, १४ शनि, श्रवण, सूर्यवेध
,, ,, १४ शनि, धनिष्ठा, शनिवेध
,, ,, १५ रवि, धनिष्ठा, शनिवेध
भाद्र. कृष्ण २ भौम, उ.भा. भुजंगपात
,, ,, ३ बुध, उ.भा. लग्नाभाव, भद्रा
,, ,, ३ बुध, रेवती, केतुयुति
,, ,, ४ गुरु, रेवती, केतुयुति
,, ,, ४ गुरु, अश्विनी, सूर्य बुधवेध
,, ,, ५ शुक्र, अश्विनी, सूर्य बुधवेध
,, ,, ७ रवि, रोहिणी, लग्नाभाव
,, ,, ७ सोम, मृग, लग्नाभाव
,, ,, १३ रवि, मघा, शनियुति क्षीणचंद्र
भाद्र. शुक्ल २ गुरु, हस्त, राहुयुति
,, ,, ३ शुक्र, चित्रा, रेखा ७, लग्नाभाव
,, ,, ३ शुक्र, स्वाती संक्रांति भद्रा लग्नाभाव
,, ,, ४ शनि, स्वाती वैधृति चन्द्रवेध
,, ,, ६ बुध, उ.षा. लग्नाभाव
,, ,, १० गुरु, श्रवण, शनिवेध
,, ,, ११ शुक्र, श्रवण, शनिवेध
,, ,, १४ सोम, उ. भा, राहुवेध
,, ,, १५ भौम, उ.भा., राहुवेध
आश्विनशुक्ल २ शुक्र, स्वाती, लग्नाभाव नक्षत्रान्त
,, ,, ३ शनि, अनु., मृत्युपंचक
,, ,, ४ रवि, अनु., भद्रा
,, ,, ५ सोम, मूल भौमवेध
,, ,, ६ भौम, मूल, मृत्यु पंचक
,, ,, ६ गुरु, श्रवण, शनिवेध
,, ,, १० शुक्र, धनिष्ठा, भुजंगपात
,, ,, १३ सोम, उ.भा. राहुवेध
,, ,, १४ भौम, उ.भा., राहुवेध
,, ,, १४ भौम, रेवती, केतुयुति
,, ,, १५ बुध, रेवती, केतुयुति भद्रा
कार्तिक कृष्ण १ गुरु, अश्विनी, लग्नाभाव मृत्यु पंचक
,, ,, ३ रवि, रोहिणी भद्रा परिघार्द्ध
,, ,, ६ शनि, मघा, शनियुति
,, ,, १० रवि, मघा ,शनियुति
,, ,, ११ सोम, उ.फा., केतुवेध
,, ,, १२ भौम, उ.फा., केतुवेध
,, ,, १२ भौम, हस्त, राहुयुति
,, ,, १३ बुध, हस्त, राहुयुति
कार्तिक शुक्ल ३ रवि, मूल, रेखा १० लग्नाभाव
,, ,, ४ सोम, मूल, मृत्यु पंचक, भद्रा
,, ,, ५ भौम, उ.षा., भुजंगपात
,, ,, ६ बुध, उ.षा., भुजंगपात
,, ,, ६ बुध, श्रवण, शनिवेध
,, ,, ७ गुरु, श्रवण, शनिवेध
,, ,, ७ गुरु, धनिष्ठा, मृत्यु पंचक, भद्रा
,, ,, १० रवि. उ.भा. राहुवेध

सन् १९७७ ई० में शनि की साढ़ेसाती और ढैया

७ सितम्बर १९७७ ई० से प्रत्येक राशि के लिये शनि का गोचर भ्रमण-स्थान और पाद-फल-बोधक-चक्र

जन्म-राशि गोचर से शनि	मेष ५	कन्या A १२	धनु ९	ताम्रपाद-फल श्री-प्राप्ति
जन्म-राशि शनि	वृष C ४	तुला ११	कुम्भ ७	रजतपाद फल-लाभ, शुभ
जन्म-राशि शनि	मिथुन ३	सिंह B १	मकर D ८	स्वर्णपाद-फल चिन्ता
जन्म-राशि शनि	कर्क E २	वृश्चिक १	मीन ६	लौहपाद-फल दुःख

A सिर पर चढ़ती ढैया B हृदय पर ढैया
C लघु कल्याणी ढैया D लघु कल्याणी ढैया
E पैर पर उतरती ढैया

७ सितम्बर '७७ के बाद प्रत्येक राशि से १, २, ३ आदि जिस स्थान में शनि भ्रमणशील रहेगा, वह संख्या ऊपर के चक्र में हर राशि के साथ दी गयी है। उस संख्या के साथ जहाँ A, B आदि संकेताक्षर का उल्लेख है, उसका विवरण चक्र के नीचे दे दिया गया है। जिन तीन-तीन राशियों को ताम्र आदि जिस पाद पर शनिदेव पदार्पण करेंगे, वह पाद फल सहित उन राशियों की बगल के खाने में लिखा गया है। जैसे, वृष राशिवालों के लिए सिंह राशि में शनि रजतपाद से आयेगा। जन्म-राशि से चौथे भ्रमणशील रहने से इस राशिवालों के लिए C लघु-कल्याणी-(ढैया) रहेगी। रजतपाद का फल लाभ, शुभ होने से यह लघु-कल्याणी (ढैया) मेष राशिवालों के लिए हानिरहित एवं शुभद होगी—यह चक्र को देखते ही पाठकों को विदित हो जायेगा। इसी तरह मेष, मिथुन, कर्क इत्यादि अन्य राशिवालों के विषय में भी जानिए।

शनि महाराज सन् १९७५ ई० की २३ जुलाई से कर्क राशि पर भ्रमण कर रहे हैं; साढ़े साती के विचार से मिथुन राशिवालों के पाँव पर तीसरी ढैया, कर्क राशिवालों के हृदय पर दूसरी ढैया तथा सिंह राशिवालों के मस्तक पर प्रथम ढैया चल रही है। सन् १९७७ ई० में शनिदेव वर्षारम्भ से ही वक्री चल रहे हैं। उपरोक्त तिथि से शनि मेष कर्क वृश्चिक राशिवालों के लिये ताम्रपाद से, वृष कन्या और धनु राशिवालों को रजतपाद से, मिथुन तुला तथा कुम्भ राशिवालों को लौहपाद से और सिंह मकर मीन राशिवालों को स्वर्णपाद से पूर्वोक्त समय से चल रहे हैं। लौह में शनिदेव की वासना अधिक रहती है। अतः लौहपाद से उनका आगमन सामान्यतः उत्तम होता है; फिर भी मानसिक चिंता व्यथा सिर पाद कमर में कष्ट-पीड़ा अधिक व्याप्त रहता है। शनि का स्वर्णपाद उत्तम नहीं होता। मानसिक चिन्ता एवं वात-व्याधि का विशेष प्रकोप रहता है। रजतपाद से शनि-आगमन के फलस्वरूप रोजी-रोजगार में आय साधारण रहती है। इधर-उधर की यात्रा होती रहती है। ताम्रपाद के फलस्वरूप नौकरी में पदोन्नति तथा व्यापार में अच्छा लाभ होता है। सेवा-भाव की प्रवृत्ति अधिक रहती है। साधारण गोचर-विचार से कर्क राशिवालों को शनि कार्य-विनाशक, मिथुन राशि वालों के लिये रोगादि भयकारक, मान-सम्मान का विनाशक होगा। वृष राशिवालों के लिये चोर विष अग्नि जलादि से भय, कृषि एवं पशु हानिकारक होगा। मीन राशिवालों के लिये स्त्री पुत्र-कष्ट चिंता एवं नाना प्रकार से हानिकारक होगा। कुम्भ राशिवालों को सुख-सम्पत्ति उत्तम फलकारक होगा। मकर राशिवालों को अनेक प्रकार के दोषारोपण व्यर्थ झंझट आदि उत्पन्न करेगा। धनु राशिवालों को शारीरिक व्यथा संतान-कष्ट नीच संगतिकारक रहेगा। वृश्चिक के लिये पापबुद्धि एवं कुत्सित कर्म में प्रवृत्तिकारक होगा। तुला राशिवालों को झगड़ा-झंझट व्यर्थ में उत्पन्न करेगा। नास्तिकता में विशेष रुचि जागेगी। कन्या राशिवालों को अर्थ, यशप्रद, व्यापारादि में यथेष्ट लाभकारक होगा। सिंह राशिवालों के लिये शनि नाना क्लेश, यश-हानि, व्यय की अधिकता रखेगा। धनु और मेष राशि से शनि क्रमशः अष्टम तथा चतुर्थ होने से इन राशिवालों को शनि की ढैया विशेष रूप से हानिकारक होगी, अनायास मामला मुकदमा आदि का बखेड़ा खड़ा होगा। इसके बाद शनिदेव ता० ७ सितम्बर १९७७ ई० को घं. ११ मि. १७ बजे मार्ग गति से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। सिंह राशि उनके पिता सूर्य की राशि है। सूर्य और शनि का परस्पर पिता-पुत्र सम्बन्ध होते हुए भी उनमें नैसर्गिक मित्रता न होकर, परस्पर अत्यन्त शत्रुता है। अतः सिंह राशि का शनि उत्तम फलकारक नहीं होगा। साढ़ेसाती तथा पाद के विचार से शनि मिथुन सिंह मकर राशिवालों को स्वर्णपाद से, वृष तुला कुम्भ राशिवालों को रजतपाद से, मेष कन्या धनु राशिवालों को ताम्रपाद तथा कर्क वृश्चिक मीन राशिवालों के लिए लौह-पाद से पदार्पण किये हैं। शनि का स्वर्णपाद उत्तम नहीं होता। लौहपाद सामान्यतः उत्तम फलकारक होता है। शेष ताम्र और रजतपाद न्यूनाधिक मध्यम फलदायी होते हैं। साढ़ेसाती के विचार से कर्क राशिवालों के पाँव पर तीसरी ढैया सिंह राशिवालों के हृदय पर दूसरी ढैया [illegible] होगी। स्वर्णादिपाद

के विचार से शनि मिथुन राशिवालों को स्वर्णपाद से शुभाशुभ मिश्र फलदायक होगा। द्रव्य की हानि, नाना प्रकार की परेशानी और व्यर्थ का झगड़ा-झंझट लगा रहेगा। चोर शत्रु राज-भय, व्यापार में हानि तथा वाणिज्य में साधारण लाभ होगा। कर्क राशिवालों को लौहपाद से चिन्ता परेशानी साधारण कष्ट देश-देशान्तर भ्रमण-योग व्यापार में बौद्धिक असन्तुलन उन्माद-प्रमाद देनेवाला शनि है। खेती-गृहस्थी में निराशा, नौकरी में पद-हानि या पदोन्नति में बाधा आ सकती है; फिर भी शनि का लौहपाद होने से बहुत स्वल्प अशुभ फल होगा। सिंह राशिवालों के लिए स्वर्णपाद से शनि का आगमन मिथुन राशि के फलवत् जानना चाहिए। कन्या राशिवालों को ताम्रपाद से शनि का पदार्पण साधारण है, खेती-बारी की स्थिति सामान्य रहेगी। नौकरी में पदोन्नति तथा व्यापार में मध्यम लाभ होगा। तुला राशिवालों को रजतपाद से शनि आयेंगे, अतः कुछ परेशानी, सामान्य हानि एवं मुकदमेबाजी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। वृश्चिक राशिवालों के लिए लौहपाद से शनि का फल कर्क राशि की भाँति जानना चाहिये। धनु राशिवालों के लिए ताम्रपद से शनि का फल कन्या राशि की तरह ही समझना चाहिये। मकर राशि को भी स्वर्णपाद से शनि रहेगा। अतः मिथुन राशि के सदृश फल होगा। कुम्भ राशि के रजतपाद का फल तुला राशि की तरह तथा मीन राशि के लौहपाद का फल कर्क राशि की तरह जानना चाहिए। मेष राशि के ताम्रपद का फल कन्या राशि के सदृश तथा वृष राशि के रजतपाद का फल तुला राशि के सदृश्य होगा। साधारण गोचर-विचार से सिंह राशिवालों के लिये शनि प्रायः सभी कार्यों का नाशक एवं पीड़ाकारक होगा। कर्क राशि के लिये शोक क्षोभ धन-हानि एवं नाना प्रकार से विपत्तिदायक होगा। मिथुन राशि के लिये उत्तम सुख-सम्पत्ति अर्थ-लाभ व्यापार कृषि तथा सेवाकार्य में लाभदायक रहेगा। वृष राशि के लिये शत्रु-वृद्धि चोर विष अग्नि-भय कृषि-हानि पशु-हानिकारक शनि होगा। वायु-विकार की अधिकता से शरीर-पीड़ा होगी। मेष राशिवालों के लिए पुत्र कष्ट धन-हानि पदावनति एवं चिन्ताकारक तथा मीन राशि के लिये सुख-संपति वित्त-लाभ का दाता शनि होगा। कुम्भ राशिवालों को नाना प्रकार के दोषारोपण तथा व्यर्थ के झंझटों का सामना करना होगा। मकर राशिवालों को शरीर-पीड़ा स्त्री पुत्रादि-कष्ट दुष्ट-संगति से हानि एवं नेत्र-पीड़ा होगी। धनु राशिवालों को शनि पापबुद्धि देकर पापकर्म में प्रवृत्ति पैदा करेगा। व्यापार नौकरी में हानि होगी। वृश्चिक राशिवालों में वैर-वैमनस्य की प्रवृत्ति बढ़ेगी। अपवित्रता तथा नास्तिकता की भावना पैदा होगी। तुला राशिवालों को शनि सुख-यश वित्तप्रद अर्थ-लाभ एवं स्त्री से सुख-सहयोग का लाभ करायेगा। कन्या राशिवालों के लिये शनि क्लेशकारक होगा। यश-हानि अपव्यय तथा बहुमुखी अनर्थकारी फल देगा। मकर और वृष राशिवालों को शनि क्रमशः अष्टम तथा चतुर्थ होने से शनि की ढैया रहेगी; इसलिए नाना प्रकार का उपद्रव, व्याधिक्य परेशानियाँ मुकदमेबाजी चौरादि-भय पैदा होगा। अतः उन्हें शनि की आराधना, शनि के वैदिक तान्त्रिक मन्त्र का जप, स्तोत्र पाठ, व्रतोपवास, दानादि सत्कर्म में संलग्न रहना कल्याणकारी होगा। कर्क सिंह कन्या राशिवालों को साढ़ेसाती शनि के कुपरिणाम से बचने के लिए रामायण सुन्दर काण्ड के अथवा पंचमुखी हनुमत् कवच का पाठ, नित्य-कर्म में श्रीहनुमानजी की पूजा आराधना, पीपलवृक्ष के नीचे दीप-दान बन्दरों तथा दीन-दुःखियों को गुड़ चना वितरण करना लाभदायक होगा। तिल-तेल काला वस्त्र उड़द आदि शास्त्रोक्त वस्तु का दान और काली गौ का दान करने से सर्वारिष्ट शमन होता है। जिन राशिवालों की जन्मकुण्डली तथा वर्षकुण्डली में शनि भाग्येश पंचमेश या लग्नेश होगा, उन्हें गोचर के शनि का नेष्ट फल कम तथा उत्तम फल अधिक प्राप्त होगा। कुण्डली या वर्षफल में शनि अष्टमेष व्ययेश या मारकेश होने से उसका गोचर-फल एवं ढैया, साढ़ेसाती का फल अधिक अनिष्टकारक होगा। गोचर ग्रहों के तारतम्य में कुण्डली या वर्षफल के अशुभ ग्रह की दशान्तर्दशा अधिक फलवती होती है, अतः कुण्डली के दशान्तर्दशा का विचार अवश्य करना चाहिये।

॥ गुरु ॥

नव वर्ष प्रारम्भ होने के पहले से ही ता० ८ दिसम्बर १९७६ ई० को घं. १४ मि. ३७ बजे से गुरु वक्रगत्या मेष राशि पर भ्रमण कर रहे हैं। पाठकों को यह ज्ञात है कि जो ग्रह जिस राशि पर वक्री होता है, वह राशि-परिवर्तन की स्थिति में उस राशि के पीछेवाली राशि पर आता है तो वह जिस पूर्व राशि से आता है उसका ही फल देता है। इस वर्ष गुरु महाराज तीन राशियों मेष वृष और मिथुन में भ्रमण करेंगे; परन्तु मेष राशि के गुरु-संचार के समय चन्द्रमा मिथुन राशि में स्थित था। गोचर की दृष्टि से मेष का गुरु मेष राशिवालों को साधारण फल देगा। मित्र-राशि का गुरु होने से शुभदशावालों को पदोन्नति मान-प्रतिष्ठा धन-लाभ भी देगा। वृष राशिवालों को द्वादश गुरु परिवार में नाना प्रकार के झगड़ा-झंझट व्याधिक्यकारक होगा। मेषस्थ गुरु के मेषादि द्वादश राशियों का फल सन् १९७७ ई० की जंत्री से देखना चाहिये; अस्तु, पुनः गुरु मार्गी होकर इस वर्ष ता.२२ फरवरी १९७७ ई० मंगलवार को घं.१८ मि.४३ बजे वृष राशि में प्रवेश करेंगे। उस समय चन्द्रमा मेष राशि में स्थित होगा। गुरु का अधिकतम भोग वृष राशि में ही व्यतीत होगा, अतः वृष राशि के गुरु का विशेष गोचर-फल तथा वर्णादि पाद-फल का विचार निम्नोक्त है। वृष राशि का स्वामी शुक्र है; गुरु शुक्र परस्पर नैसर्गिक शत्रु हैं। शत्रु की राशि में स्थित ग्रह उत्तम फल नहीं देता, उसका प्रभाव जन-वर्ग में अधिकतर अनिष्टकारक ही होता है। मेष राशिवालों को द्वितीय गुरु उत्तम ... स्त्री-सुख मान पद-प्राप्ति

धन-धान्यादि सुख की विशेषता रहेगी। वृष राशिवालों के लिये जन्मस्थ गुरु साधारण फलद होगा। शत्रु-क्षेत्री होने से झगड़ा-वैमस्य तथा राजपुरुषों से मनमुटाव चलेगा। व्यापारादि में साधारण प्रगति रहेगी। मिथुन राशिवालों को द्वादश गुरु साधारण फलदायी है। राजपुरुषों से अधिक मेल-जोल रहेगा और उनसे लाभ होगा; परन्तु शरीर-क्लेश मानसिक व्यथा की अधिकता रहेगी। कार्य-क्षेत्र में पूर्णरूप से सफलता नहीं प्राप्त हो सकेगी। कर्क राशिवालों को एकादश गुरु सभी प्रकार से समृद्धिकारक, व्यापारादि कार्यों तथा ठेकेदारी में विशेष लाभ होगा। परिवार-सुख उत्तम रहेगा। गृह में धर्मोत्सव, विवाहोत्सव जैसे शुभ कार्य का सम्पादन भी हो सकता है। सिंह राशिवालों के लिए दशम गुरु सुख-सम्मान प्रभाव-वृद्धि कार्य-कुशलता तथा पदोन्नतिकारक होगा। स्त्री पुत्र कुटुम्ब-सुख की प्राप्ति होगी; परन्तु स्वास्थ्य उत्तम नहीं होगा। दीनता की स्थिति भी उत्पन्न होगी। मान-सम्मान की कमी रहेगी। कन्या राशिवालों की कन्या राशि पर नवम गुरु की पूर्ण दृष्टि होगी; परन्तु उधर शनि की साढ़ेसाती भी प्रारम्भ हो रही है। गुरु की पूर्ण दृष्टि का बल शनि के मित्र बुध की उच्च राशि कन्या को प्राप्त होने से साढ़ेसाती शनि का कुप्रभाव कुछ कम होगा। मान-सम्मान पुत्र पौत्रादि-सुख की प्राप्ति, उत्तम धन-लाभ बन्धु-बान्धव में श्रेष्ठ सम्मान इज्जत आदि प्राप्त होगी। पदोन्नति एवं विदेशों से संपर्क का अवसर मिलेगा। तुला राशिवालों को अष्टम गुरु अनिष्ट फलकारक होगा; परन्तु शत्रु-राशि में स्थित अष्टम गुरु अधिक हानिकारक नहीं हो सकता; क्योंकि शत्रु-क्षेत्र का गुरु निर्बल होता है। मित्र-वियोग, स्वजन-विरोध, मुकदमे में हानि, पराजय, स्त्री-संतान-कष्ट व्याधिवय से चिन्ता होगी। गुरु का दान जप व्रत उत्तम फलकारक होगा। वृश्चिक राशि के लिये सप्तम गुरु स्त्री-सुख कन्या संतान की प्राप्ति व्यापारादि में लाभ, सेवाकार्य में पदोन्नति एवं पुराने झगड़ा-झंझट को समाप्त करने का सौभाग्य प्रदान करेगा। सुख-शान्ति की अधिकता रहेगी। बौद्धिक विकास आत्मनिर्भरता एवं ज्ञान की वृद्धि होगी। धनु राशिवालों को छठे गुरु पारिवारिक कलह रोग-भय नाना प्रकार के शोक चिन्ता आतंक एवं संतान-कष्ट देनेवाला होगा। घरेलू झंझट से गृह-त्याग उदासीनता भ्रमण भी संभव है। परिवार में हिस्से बँटवारे का प्रश्न पैदा होगा। मकर राशिवालों को पंचम गुरु उत्तम है। संतान-प्राप्ति, व्यापार से लाभ, स्वजनों से आदर कल्याणकारी कार्यों में सफलता, आकस्मिक धन पद की प्राप्ति होगी। कुम्भ राशिवालों के लिये गुरु चतुर्थ होने से कलह की वृद्धि संतान-कष्ट और बन्धु-वियोग हो सकता है। राज-भय रोग-भय शोक-चिन्ता की वृद्धि आकस्मिक हानि एवं अपमान की संभावना अधिक होगी। मीन राशिवालों को तृतीय गुरु साधारण फलदायक है। स्वास्थ्य धन परिवार रोजी-रोटी के सम्बन्ध में सामान्य चिन्ता के बावजूद भी सन्तोषजनक मनोवृत्ति रहेगी। स्वर्णादिपाद-विचार से वृषस्थ गुरु मेष सिंह धनु राशि के लिये लौहपाद से आ रहे हैं। गुरु का लौहपाद उत्तम नहीं है; झूठा अपवाद, सट्टेबाजी में घाटा, मानहानि, माता-पिता स्वजन भाई-बन्धु से विरोध होगा। नाना प्रकार के रोग-व्याधि शोक चिन्ता दुर्घटना आदि का शिकार होना पड़ सकता है। वृष तुला और मीन राशिवालों के लिये स्वर्णपाद से गुरु आयेंगे। गुरु का स्वर्णपाद उत्तम होता है। राज-सेवा में उच्चपद का लाभ पदोन्नति धनागम बड़े लोगों की सहायता से कार्य में सफलता, व्यापार में विशेष सुविधा प्राप्त होगी और मातृपक्ष के लोग सुखी रहेंगे। कृषि व्यापारादि में उत्तम लाभ होगा। कर्क वृश्चिक कुम्भ राशिवालों को रजतपाद से गुरु आ रहे हैं, अतः खेती-गृहस्थी में साधारण अर्थ-लाभ पशु-लाभ अन्न की उपज अच्छी होगी। क्रय-विक्रय व्यापार में लाभ होगा। रोजी-रोजगार की तरक्की होगी। कोई विशेष हानि नहीं हो सकेगी। मिथुन कन्या मकर राशिवालों के लिये ताम्रपाद से गुरु का आगमन साधारण लाभदायक होगा। व्यापार नौकरी में साधारण आर्थिक लाभ होगा। कृषि भी साधारण ही फल देगा। यदा-कदा परिवार में कलह मित्रों से विवाद अविश्वास उत्पन्न होगा। मुकदमे में पराजय अथवा सुलह-समझौता भी हो सकता है। देश-देशान्तर-गमन की योजना तैयार होगी, स्त्री-संतान सुख की प्राप्ति; किन्तु शारीरिक-सुख साधारण रहेगा। ता० १८ जुलाई १९७७ ई० सोमवार को घं. १ मि. ५३ बजे गुरु मिथुन राशि पर पदार्पण करेंगे। उस समय चन्द्रमा स्वराशि कर्क में स्थित रहेगा। अतः मेष सिंह धनु राशिवालों के लिये लौहपाद, वृष तुला मकर राशिवालों को ताम्रपाद, मिथुन वृश्चिक मीन राशिवालों के रजतपाद और कर्क कन्या कुम्भ राशिवालों के लिये सुवर्णपाद से गुरु महाराज का पदार्पण होगा। स्वर्णादिपाद का फल पूर्ववत् समझें। गोचर में मिथुनस्थ गुरु का प्रभाव मिथुन मीन धनु मकर कन्या राशि के लिये उत्तम फल देनेवाला है। कर्क वृष कुम्भ तुला राशिवालों के लिये मध्यम फलदायी होने से गुरुदेव पूज्य हैं; अतः पूजा से शुभकारक होंगे। शेष मेष सिंह वृश्चिक राशिवालों के लिये उत्तम फलदायक नहीं होंगे; परन्तु ये राशियाँ गुरु की मित्र-राशि होने से इनके लिए वे विशेष अनिष्ट फलकारक नहीं होंगे। "स्वोच्चे स्वयं मे स्वमैत्रे वा" इत्यादि वचनों से सभी अनिष्ट फल क्रमशः शान्त हो जायेंगे। गुरु के समुचित शान्ति-विधान की जानकारी के लिए सन् १९७६ ई० की जंत्री द्रष्टव्य है।

॥ राहु ॥

विगत दिनांक १२ अक्टूबर सन् १९७५ ई० को भारतीय प्रमाणित समयानुसार घं.१९ मि.९ बजे राहु तुला राशि पर प्रवेश किये और तद्वत् ता० ३० अप्रैल १९७७ ई० तक रहेंगे। मेषादि राशियों के लिए राहु का गोचर फल सन् १९७५ ई० तथा १९७६ ई० के जंत्री से देख लेना चाहिये। इस वर्ष राहु सन् १९७७ ई० में ३० अप्रैल को घं. २३ मि. ० बजे कन्या राशि में पधारेंगे। कन्या राशि राहु का स्वगृह है। पापग्रह राहु अपनी राशि में रहकर बलवान् होगा। बलवान् पापग्रह अपना शुभ और अशुभ दोनों प्रकार का फल बड़ी तत्परता से देता हैं। जिन राशियों को राहु अनिष्ट फलदायक होगा, उन राशिवालों को विशेष अधिक अनिष्ट फल होगा। मेष राशिवालों के लिये राहु छठे आ रहे हैं; अतः मेष राशिवालों के लिये राहु उत्तम फल देनेवाला होगा। लक्ष्मी-प्रद, बहुत प्रकार से सुखदायक, रोगनाशक, व्यापारादि में लाभदायक होगा।

वृष राशि के लिये पंचम राहु राज-भय विग्रह विकल्पना विडंबनाकारक होगा । मिथुन राशिवालों के लिये चतुर्थ राहु मान-हानि हतोत्साह अपयशकारक होगा । कर्क राशिवालों के लिये तृतीय राहु सुख-शान्ति सौभाग्यदायक तथा पराक्रम का विशेष वृद्धि करनेवाला होगा । सिंह राशिवालों के द्वितीय राहु से चौरादिभय कलह जलभय साँप विच्छू का भय रहेगा । कन्या राशिवालों को सभी प्रकार से जन्मस्थ राहु बेचैन करेगा, नाना प्रकार के आरोपों का भय उत्पन्न करेगा । तुला राशिवालों के लिये द्वादश राहु नाना प्रकार से कष्टदायक उदर-विकार आकस्मिक दुर्घटना एवं राज-भयदायक होगा। वृश्चिक राशिवालों को एकादश राहु लक्ष्मीप्रद एवं सुख-शान्ति पदोन्नति तथा व्यापारादि में लाभदायक होगा । धनु राशिवालों के लिये दशम राहु मनःसन्ताप चिन्ता गुप्त रोग एवं बुद्धि-विभ्रम पैदा करनेवाला होगा। मकर राशिवालों के लिये नवम राहु राज-भय धन-नाश एवं कुटुम्बादि कलह उत्पन्न करेगा । कुम्भ राशिवालों के लिये अष्टम राहु पाँव पर होने से पाँव में अधिक सर्दी दर्द पीड़ा बेचैनी वात-कफजन्य रोग तथा वाणिज्य व्यापारादि में विशेष व्यग्रता उत्पन्न करेगा । पुत्र स्त्री वाहन-कष्ट माता-पिता से वैमनस्यता की भावना बढ़ेगी। ज्वर खाँसी आदि की शिकायत रहेगी । मीन राशिवालों को राहु सप्तम होने से पूँजी टूटेगी, ऋण बढ़ेगा, चिन्ता के अवसर आते रहेंगे । स्त्री-कष्ट खाँसी ज्वरादि विशेष भय होगा । फाइलेरिया आदि रोग का भय हो सकता है । गोचर में जिनको अनिष्टकारक राहु है उनको गोमेद अथवा लाज वर्त-मणि धारण करना चाहिये और तलवार छूरी कटार का दान एवं राहु-मंत्र-जपादि क्रिया करनी चाहिये । दुर्गा-पाठ शान्तिदायक होगा ।

॥ केतु ॥

केतु सदैव राहु के सप्तम स्थान पर रहता है । सिद्धान्त-ग्रन्थों के अनुसार क्रान्तिवित्त और विमंडलवृत्त के प्रथम संपात को राहु और द्वितीय संपात को केतु कहते हैं। ज्यामिति के सिद्धान्तानुसार दो बड़े वृत्तों का संपात परस्पर १८०° पर दो जगह होता है । अतः राहु से केतु सदा १८०° की दूरी पर रहता है । इस कारण राहु-संचार के समय उससे छठी राशिपर केतुचार भी होता है। इन दोनोंकी स्थिति आकाशीय राशि-चक्रमें होते हुए भी दृष्टिगोचर नहीं होती; परन्तु इनका शुभाशुभ प्रभाव भू-मण्डल पर निरन्तर पड़ता है । कभी-कभी उदय होनेवाले पुच्छलतारा को भी लोग केतु की संज्ञा देते हैं । केतु मेष राशि पर राहु के तुला-सचार के समय १२ अक्टूबर सन् १९७५ ई० को भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम से घं. १९ मि. ९ बजे आये थे । अतः उनका गोचर-फल सन् १९७५ और १९७६की जंत्री में दिया जा चुका है । पुनः अपने संचारवश केतु सन् १९७७ ई० की ३० अक्टूबर को घं. २३ मि. ० बजे मीन राशि पर आ रहे हैं । सिंह राशिवालों के लिये अष्टम, धनु राशिवालों के लिये चतुर्थ तथा मेष राशिवालों के लिये द्वादश केतु रहेंगे । अतः सिंह राशिवालों को व्यापार कृषि में हानि तथा सट्टे-बाजार में विशेष धन-हानिकर होंगे । मीन राशिवालों के लिये स्वराशि (गृह) का केतु मानहानि चित्त में उद्वेग मानसिक चिन्ता कण्डुरोग नास्तिकता उदासीन भावना और भूत-प्रेत-बाधा की आशंका देगा । परिस्थिति से विवशता-फलस्वरूप इस्ततः भटकना पड़ेगा । मेष राशिवालों के लिये बारहवें केतु के फलस्वरूप यात्रादि में दुर्घटना पाद-पीड़ा शिरोव्यथा वाहन-दुर्घटना ऊँचे से गिरना आदि भयंकर स्थिति पैदा होगी । खासी ज्वर छाती में दर्द निमोनिया सर्दी जुकाम बराबर कुछ-न-कुछ बना रहेगा । मकर वृष तुला राशिवालों के लिये केतु उत्तम फलदायक होगा । शेष राशिवालों को साधारण फल देगा । उनको कृषि-व्यापार तथा नौकरी मजदूरी में साधारण लाभ रहेगा । जिन राशिवालों के लिये केतु अनिष्टकारक है, उन राशिवालों के लिये केतु की शान्ति-निमित्त दान, पूजा-पाठ वेदोक्त रीति से कराना चाहिये तथा केतु के लिये लाजवर्त मणि या वैदूर्य लहसुनिया धारण किया जा सकता है । अधिक कष्ट होने पर केतु-प्रसन्नार्थ बकरा दान करे, इससे कल्याण होगा और केतु [illegible] हो जायगा ।

सन् १९७७ ई० का विकलात्मक स्पष्ट (True) अयनांश

	ता.	अं.	क.	वि.		ता.	अं.	क.	वि.
जनवरी	१	२३	३२	१७	जुलाई	१	२३	३२	४०
	३	२३	३२	१८		७	२३	३२	४१
	८	२३	३२	१९		१४	२३	३२	४२
	१६	२३	३२	२०		२०	२३	३२	४३
	२०	२३	३२	२१		२८	२३	३२	४४
	२९	२३	३२	२२	अगस्त	४	२३	३२	४५
फरवरी	४	२३	३२	२३		१३	२३	३२	४६
	१४	२३	३२	२४		२३	२३	३२	४७
	२५	२३	३२	२५	सितम्बर	३	२३	३२	४८
मार्च	६	२३	३२	२६		१२	२३	३२	४९
	१६	२३	३२	२७		२४	२३	३२	५०
	३०	२३	३२	२८	अक्टूबर	८	२३	३२	५१
अप्रैल	१०	२३	३२	२९		१९	२३	३२	५२
	२३	२३	३२	३०		३१	२३	३२	५३
मई	३	२३	३२	३१	नवम्बर	७	२३	३२	५४
	८	२३	३२	३२		१५	२३	३२	५५
	१८	२३	३२	३३		२२	२३	३२	५६
	२४	२३	३२	३४		२९	२३	३२	५७
जून	१	२३	३२	३५	दिसम्बर	७	२३	३२	५८
	५	२३	३२	३६		१२	२३	३२	५९
	१३	२३	३२	३७		१६	२३	३३	०
	१९	२३	३२	३८		२४	२३	३३	१
	२६	२३	३२	३९		२९	२३	३३	२

टिप्पणी—जंत्री में हर मास की पहली तारीख का स्पष्ट (True) अयनांश दिया जाता है ; उसमें अयन-चलन की मध्यम गति से हर सातवें दिन १ विकला की वृद्धि होती है ; किंतु स्पष्ट गति से कभी २ दिन में, कभी ५, कभी ८,१० दिनों में १ विकला की वृद्धि होती है ; अतएव वर्ष के भीतर किन तारीखों को स्पष्ट अयनांश में १ विकला का फर्क पड़ा, यह जानना विकलापर्यन्त सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए अत्यावश्यक है जिसके लिए इस वर्ष से उपर्युक्त कोष्ठक जंत्री में देना आरम्भ किया गया है ।

सन् १९७८ ई० के प्रत्येक मास की प्रथम तारीख को प्रातः स्टैं.टा. से घं.५ मि.३० बजे ग्रहों का निरयण-भोग।

मास	सूर्य ☉ रा· अं· क·	चंद्र ☽ रा· अं· क·	मंगल ♂ रा· अं· क·	बुध ☿ रा· अं· क·	गुरु ♃ रा· अं· क·	शुक्र ♀ रा· अं· क·	शनि ♄ रा· अं· क·	मध्यम राहु ☊ रा· अं· क·
जनवरी'७८	८–१६–४०	४–२८–४२	३–१५–३०	७–२७–३५	२– ६–१९	८–११–३५	४– ६–३७	५–१७– ०
फरवरी	९–१८–१३	६–१८–१७	३– ४–१४	९– ०–५३	२– ३– ८	९–२०–३३	४– ४–४७	५–१५–२२
मार्च	१०–१६–२९	६–२८–५४	२–२८–४४	१०–१८– ८	२– २–३९	१०–२५–३७	४– २–३३	५–१३–५३
अप्रैल	११–१७–२१	८–२२–१२	३– ३–२१	०– २–३३	२– ५– ०	०–४ – ६	४– ०–३७	५–१२–१४
मई	०–१६–४३	१०– १–१७	३–१४–२६	११–२२–३७	२– ९–३०	१–१०–५५	४– ०– ७	५–१०–३९
जून	१–१६–३६	११–२१–४१	३–२९–२६	१– १–१९	२–१५–३४	२–१८–२०	४– १–१५	५– ९– ०
जुलाई	२–१५–१५	०–२६–२७	४–१५–५५	३– ३– ४	२–२२– ८	३–२३–४१	४– ३–४०	५– ७–२५
अगस्त	३–१४–५१	२–११–३९	५– ४–२१	४– ८–४८	२–२९– ५	४–२८–४३	४– ७– ६	५– ५–४६
सितम्बर	४–१४–३९	३–२६–०	५–२३–५८	३–२७–३३	३– ५–३६	६– ०–४२	४–१०–५८	५– ४– ८
अक्टूबर	५–१३–५४	४–२८–५६	६–१३–५९	५–१४–११	३–१०–५३	६–२४–१०	४–१४–३९	५– २–३२
नवम्बर	६–१४–३९	६–१६–४२	७– ५–४१	७– ३–११	३–१४–३१	६–२५–३१	४–१७–५२	५– ०–५४
दिसम्बर	७–१४–५२	७–२३–४३	७–२७–३८	७–२५–४८	३–१५–२७	६–१३–५४	४–१९–५१	४–२९–१८
जनवरी'७९	८–१६–२४	९–१७–११	८–२१– ८	७–२५–३३	३–१३–२६	७– ०–५०	४–२०–२०	४–२७–४०

मास	हर्शल ♅ रा· अं· क·	नेप्च्यून ♆ रा· अं· क·	प्लूटो P रा· अं· क·	मास	हर्शल ♅ रा· अं· क·	नेप्च्यून ♆ रा· अं· क·	प्लूटो P रा· अं· क·
जनवरी'७८	६–२१–४५	७–२३–१२	५–२३– ३	सितम्बर'७८	६–१९–३०	७–२२– ०	५–२१–३४
मई '७८	६–२१– १	७–२४–२०	५–२१– ५	जनवरी'७९	६–२६– ८	७–२५–१६	५–२५–३२

* आगामी सन् १९७८ ई० में ग्रहों का निरयण राशि-चार एवं वक्र-मार्गत्व *

वर्षारंभमें मंगल कर्कमें, गुरु मिथुनमें, राहु कन्यामें, केतु मीनमें, शनि सिंहमें, हर्शल तुलामें, नेप्च्यून वृश्चिकमें, प्लूटो कन्यामें होंगे।

जन.७८	ग्रह	चिह्न	रा. चार	घटी पल
१	बुध	☿	मा.र्गी	०। ५
६	बुध	☿	धनु	५६।५५
१४	सूर्य	☉	मकर	१।५५
१५	शुक्र	♀	मकर	३५। ५
३१	बुध	☿	मकर	२१। ७
फर. ८	शुक्र	♀	कुम्भ	२८।४०
१२	सूर्य	☉	कुम्भ	३४।५२
१६	मंगल	♂	मिथुन	६।१३
१८	बुध	☿	कुम्भ	५९।१०
२०	गुरु	♃	मार्गी	०।४५
१९	हर्शल	♅	वक्री	३५।३५
मार्च २	मंगल	♂	मार्गी	५७।४५
४	शुक्र	♀	मीन	४८।३०
७	बुध	☿	मीन	८। ७
१४	सूर्य	☉	मीन	२८।२२
२०	नेप्च्यू.	♆	वक्री	५८।२७
२६	बुध	☿	मेष	११।३२
२८	शुक्र	♀	मेष	३८।२३
अप्रैल १	बुध	☿	वक्री	१९।५३
८	बुध	☿	मीन	५२।३६
१३	सूर्य	☉	मेष	४९।२८
२२	शुक्र	♀	वृष	०।४१

अप्रैल	ग्रह	चिह्न	रा. चार	घटी पल
२५	शनि	♄	मार्गी	३६।३७
२७	बुध	☿	मार्गी	१२।२१
मई १०	बुध	☿	मेष	५४।१६
१४	सूर्य	☉	वृष	४२।४१
१६	शुक्र	♀	मिथुन	४३। ३
३१	बुध	☿	वृष	२३।२५
जून १	मंगल	♂	सिंह	४६।१८
१०	शुक्र	♀	कर्क	४३।३९
१४	बुध	☿	मिथुन	३९।३६
१४	सूर्य	☉	मिथुन	५९।५०
२९	बुध	☿	कर्क	१७।११
जुला. ६	शुक्र	♀	सिंह	२७।५०
१६	सूर्य	☉	कर्क	२७। ५
१९	बुध	☿	सिंह	३५। ७
२४	मंगल	♂	कन्या	५३।५६
अगस्त २	शुक्र	♀	कन्या	१०।१०
२	बुध	☿	वक्री	५४।१८
४	गुरु	♃	कर्क	५८।२४
१६	सूर्य	☉	सिंह	४७।२३
२०	बुध	☿	कर्क	४३।५६
२८	बुध	☿	मार्गी	३२। ३
३१	शुक्र	♀	तुला	१४।२१

सितम्बर	ग्रह	चिह्न	रा. चार	घटी पल
५	बुध	☿	सिंह	८।४५
१०	मंगल	♂	तुला	७।१९
१६	सूर्य	☉	कन्या	४६।५०
२३	बुध	☿	कन्या	१२।५४
अक्टू. १०	बुध	☿	तुला	१८।२७
१७	सूर्य	☉	तुला	१५।३७
१७	शुक्र	♀	वक्री	४।३१
२३	मंगल	♂	वृश्चिक	५६।३६
२९	बुध	♀	वृश्चिक	२८।११
नव. १६	सूर्य	☉	वृश्चिक	१४।२०
१७	राहु	☊	सिंह	३८।२१
१७	केतु	☋	कुम्भ	३८।३१
२५	बुध	☿	वक्री	१९।३८
२७	गुरु	♃	वक्री	३८।५४
२९	शुक्र	♀	मार्गी	५७।४५
दिस. ४	मंगल	♂	धनु	३।३७
१५	सूर्य	☉	धनु	५०। ६
१९	बुध	☿	मार्गी	१। ८
२५	शनि	♄	वक्री	१९।५१
३१	शुक्र	♀	वृश्चिक	१३।११

नोट—घटी, पल केतकी गणितानुसार काशी के स्पष्ट [illegible] दिये गये हैं।

दुर्भाग्यनाश का उपाय और उन्नति के साधन जगत प्रसिद्ध सिद्धयंत्र ही हैं!

सात सौ तिरपन वर्ष की त्रिपाठी-वंश की थाती!

संसार के प्रत्येक प्राणी पर ग्रहों का प्रभाव पड़ा करता है, इस बात को सभी मानते हैं; केवल भारतवर्ष में ही नहीं, बल्कि यूरोप और अमेरिका में भी भाग्य और ग्रह का प्रभाव माननेवाले इस समय भी करोड़ों सुशिक्षित व्यक्ति मौजूद हैं। उन देशों के व्यक्ति भी सदा इस बात के लिये सचेष्ट रहते हैं कि अपने आपको अशुभ ग्रहों के चंगुल से बचावें, यूरोप और अमेरिका में भी तान्त्रिक विद्या का काफी प्रचार है और उनके यहाँ भी यन्त्रादि की बिक्री खूब हो रही है।

भारतवर्ष में आज भी तान्त्रिक विद्वानों की कमी नहीं है। जो लोग यह नहीं मानते कि ग्रहों का प्रभाव पृथ्वी के जड़-चेतन पर पड़ा करता है, हम उनसे पूछते हैं कि क्या सूर्य हमको गर्मी नहीं पहुँचाता है, खेती नहीं पकाता है, वर्षा आदि भी क्या सूर्य की ही किरणों के ही प्रभाव से नहीं होती है? वास्तव में जीवन का आधार तो सूर्य ही है। इसी प्रकार चन्द्रमा का प्रभाव भी पृथ्वी पर प्रकट ही है। समुद्र के ज्वार-भाटे का आना-जाना, सब चन्द्र-किरणों के ही प्रभाव का फल है। शुक्लपक्ष में चन्द्रमा ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है, समुद्र का जल उतना ही ऊपर उठता जाता है, इत्यादि।

सूर्य तथा चन्द्रमा यह ग्रह रूप हैं। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का प्रभाव भी पड़ता रहता है। यह बात दूसरी है कि उनका असर प्रत्यक्षरूप से दिखाई नहीं पड़ता, किन्तु हम उनके प्रभाव का अनुभव भलीभाँति करते हैं। बहुत-सी ऐसी वस्तुएँ हैं। जो दिखाई नहीं देतीं, किन्तु उनकी तासीर हम अच्छी तरह जानते हैं। संखिया खाने से आदमी मर जाता है। क्यों मर जाता है? इस वास्ते कि इसमें जहर है, किन्तु इसकी तासीर को हम नहीं देख सकते। हमारे सामने रेडियो सेट रखा हुआ है। हम हजारों मील से लन्दन के गाने सुन रहे हैं। ज्यों ही हम रेडियो बन्द करते हैं, त्यों ही उसकी आवाज भी बन्द हो जाती है। यह कैसी बात हुई? गाना तो लन्दन से हो रहा है, वहाँ की आवाज हमारे कमरे में आ रही है, पर सुनाई नहीं देती। आप सोचें, आवाज आ रही है तो वह सुनाई क्यों नहीं देती? कारण यह है कि रेडियो-सेट बन्द कर दिया है। अतः जब तक रेडियो चालू नहीं करेंगे, तब तक हम गाना न सुन सकेंगे, मगर आप मानते तो जरूर हैं कि आवाज आ रही है और सेट चालू करने पर तुरत ही आप सुनने लगेंगे। इसी प्रकार प्रत्येक समय आपके ऊपर ग्रहों का शुभाशुभ फल का असर पड़ रहा है, मगर आप विश्वास का ऐनक नहीं लगाये हैं। आप भले ही विश्वास न करें, मगर इसे आप जानते तो जरूर हैं। आइये हम जरा इस पर ठंढे दिल से विचार करें।

आपने इस तरह की बात इतिहास में पढ़ी है कि बादशाह बड़े ही मान और प्रतिष्ठापूर्वक राज्य-शासन कर रहा है। उसके पास असंख्य फौज, खजाना, ऐश्वर्य के सभी सामान मौजूद हैं, मगर बात की बात में खोटे ग्रहों का प्रभाव बादशाह पर भी पड़ता है, दूसरा बादशाह उस पर चढ़ाई कर देता है और उनका सारा खजाना आदि लूट लेता है, यह है खोटे ग्रहों का प्रभाव और यह है समय का फेर।

और सुनिये। एक बड़े महाजन साहब गद्दी पर तकिया लगाये बैठे हैं। मुन्शी, मनीम, गाड़ी-घोड़े, मोटर सब मौजूद हैं, मगर खोटे ग्रहों का चक्र चल गया। महाजन साहब का दिवाला निकल गया। यही खोटे ग्रहों का चक्र है। एक साहब हजारों रुपये खर्च करके विद्या प्राप्त कर चुके हैं, एम. ए. पास कर लिया है, बड़े योग्य हैं, मगर दशा यह है कि अनुमानतः ३०० स्थानों पर प्रार्थना-पत्र (दरख्वास्त) भेज चुके हैं और दफ्तरों में दौड़ते-दौड़ते उनकी चप्पलें घिस गयी हैं, मगर कहीं १२५), १३०) रुपये की नौकरी का ठिकाना नहीं लग रहा है, यही है खोटे ग्रहों का कुप्रभाव।

खोटे ग्रहों के शान्ति का केवल यही एक सुगम उपाय है कि सच्चे महात्माओं, तान्त्रिकों के दिये हुए यन्त्र धारण करें, आशीर्वाद लें। सिद्ध-यन्त्रों में ऐसी शक्ति होती है कि देखते ही देखते भाग्य खुल जाता है, गरीबी के बदले अमीरी राज-काज में मान-प्रतिष्ठा, रोगों से छुटकारा, परीक्षा में सफलता, अफसरों की कृपा, रोजगार, दुकान, दफ्तर, वकालत, इन्जीनियरिंग तथा प्रत्येक व्यापार में लाभ, नौकरी तथा ओहदे में तरक्की, सन्तान-सुख इच्छानुसार व्याह धन-धान्य की वृद्धि, वर्षों से अटके हुए कठिन-से-कठिन कार्यों की पूर्ति, मुकदमों की जीत, शत्रु पर विजय तथा पूर्णरूप से भाग्योदय का शुभ अवसर प्राप्त होता है। इन सिद्ध-यन्त्रों की शक्ति से कौन इनकार कर सकता है। इनका हाल उनसे पूछिये जिन्होंने इनको धारण किया है। उनके सैकड़ों प्रशंसा-पत्र प्रति वर्ष ही आते रहते हैं, जिन्हें हमारे तन्त्रालय में कोई भी देख सकता है। चन्द प्रशंसा-पत्र पूरे पते सहित गत वर्षों की जंत्री में दिये जा चुके हैं। पाठक इतमिनान कर लें। यन्त्र की शक्ति को आप देख नहीं सकते तो क्या इसलिए उनकी शक्ति से इनकार किया जा सकता है। क्या आप पेट्रोल की ताकत को देख सकते हैं? नहीं, सैकड़ों पेट्रोल हौज जमीन पर बहा दीजिये, पानी की तरह बह जायगा। मगर यही पेट्रोल सैकड़ों टन के हवाई जहाजों के कान पकड़ कर तीस हजार फुट की ऊँचाई तक उड़ा ले जाता है।

इसी प्रकार भाप की शक्ति दिखाई नहीं देती। देखने में जो मामूली भाप है, लेकिन किस तरह हजारों मन वजनी रेलगाड़ी को हजारों मील आसानी से घसीट ले जाती है। बिजली की शक्ति भी नहीं दिखाई देती, मगर कितनी आसानी से कैसी बड़ी-बड़ी और भारी-भारी वजनी मशीनरी को फिराती है, जिसे देखकर आश्चर्य होता है। अतः अब आप सांसारिक शक्ति को देख नहीं सकते तो यन्त्रों की आत्मशक्ति को कैसे देख सकते हैं? जिस प्रकार व्यायाम करने से शरीर की शक्ति बढ़ जाती है उसी प्रकार जप-तप, धर्म, ईश्वरोपासना और योगाभ्यास से मनुष्य की आत्मा एक उच्च आत्मा बनकर मनुष्य को आदर्शरूप बना देती है, मगर तप इत्यादि घोर परिश्रम के काम है। लाखों आदमियों में केवल इने-गिने को यह महत्व प्राप्त है।

हमारे पूर्वजों ने ऐसी ही कठिन साधना तथा घोर तपस्या की है, जिसे सुनकर कौतूहल होता है। यन्त्र-जप, पूजा-पाठ तथा ईश्वर में उनकी दृढ़ निष्ठा भावना आदि उनके चरित्र सुनने से आश्चर्य होता है। खास बात तो यह है कि जब कोई ईश्वर का होता है तो ईश्वर भी उसके होकर सदैव अपने भक्त के पीछे फिरा करते हैं।

सात सौ तिरपन वर्ष पूर्व त्रिपाठी-वंश के पूज्य पितामह पं० श्री कमलापतिजी त्रिपाठी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आप अपनी तपस्या, ज्ञान, ध्यान, ईश्वर-भजन, सत्कर्म से उच्च आदर्श महात्मा बन गये, फिर तो वह परम-भागवत हो गये। भगवान् की अचल कृपा उन पर हो गयी। आपके द्वारा प्राणियों की कामनाएँ सफल होने लगीं। प्रत्येक समय उनकी कुटिया पर लोग अपनी कामनाएँ भिक्षारूप में माँगने आने लगे। वे प्रत्येक प्राणी स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, अमीर-गरीब, सबकी दुःखभरी पुकार सुनते। उन्हें ईश्वर में श्रद्धा और भक्ति की शिक्षा देते थे। उनकी जिह्वा में ऐसी शक्ति थी कि जो कह देते थे, वही हो जाता था, जो लोग अपनी अटकी हुई कामनाओं की पूर्ति की याचना करते या अपने कष्टों को कहते अथवा अपनी उन्नति के लिए प्रार्थना करते थे, उन्हें अपने सिद्ध किये हुए चिन्ताहरण, भाग्योदय यन्त्र देते थे। उन्हीं सिद्ध महापुरुष की नौ पीढ़ियों से होते हुए ये यन्त्र ११वीं पीढ़ी में हमारे पिता श्री पूज्यचरण पं० बचानप्रसादजी त्रिपाठी को प्राप्त हुए, जिसके द्वारा उन्होंने जनता की महती सेवा कर अपने पूर्व महा-पुरुषों के पद-चिह्न का अनुसरण किया।

पूज्य पिताजी का स्वर्गवास ८८ वर्ष की आयु में हो गया। बाल्यकाल से उनका प्रेम हमारे ही ऊपर था। पूज्य पिताजी ने भारतवर्ष के प्रसिद्ध सात सौ तिरपन वर्ष के त्रिपाठी-वंश का कोष, मोतियों से तौलने योग्य पूर्वजों की थाती अर्थात् सभी यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, हस्तलिखित पुस्तकें हमको सौंप दीं और यह उपदेश दिया कि अधिक-से-अधिक संख्या में जनता की सेवा करना। हम पूरे ५५ वर्ष से अपने पूज्य पिताजी की आज्ञा का पालन यथाशक्ति कर रहे हैं। हमारे केवल एक जामातृ पं० श्रीशचन्द्र मिश्र एम. एससी. हैं। हमारे जीवन के बाद हमारे होनहार जामातृ श्रीशचन्द्रजी इस कार्यभार को सँभालेंगे।

❁ चिन्ताहरण सिद्ध-यन्त्र ❁

जिसके लिये भारत ही नहीं, बल्कि बर्मा, श्याम, अफ्रीका आदि देशों में माँगों का ताँता लग रहता है। प्रति वर्ष जिसके हजारों प्रशंसा-पत्र आते रहते हैं। दुनिया के हर कोने में, हर जाति के आदमियों ने इसे मँगाकर अपनी उजड़ी गृहस्थी बसायी है, इसके अलौकिक प्रभाव से अपने बिगड़े रोजगार, हारे मुकदमे इत्यादि कार्य बनाये हैं और प्रतिदिन बना रहे हैं। इसका कारण है। यह सिद्ध-यंत्र उस समय तैयार किये जाते हैं, जब सूर्य मेष राशि में उच्च पर तथा चन्द्रमा भी उच्च राशि पर होता है तथा अन्य ग्रहों की स्थिति सब प्रकार से ठीक होती है। सूर्य तथा चन्द्र-ग्रहण के अवसर पर तथा होली, दीपावली, नवरात्रादि विशिष्ट अवसरों पर बनाने से इन यन्त्रों में अलौकिक शक्ति आ जाती है।

इसके लाभों को देखकर लोग दस-दस, बारह-बारह यन्त्र दुबारा मँगाया करते हैं।

यह चिन्ताहरण यन्त्र अपने नाम के अनुरूप ही गुण करता है। हर प्रकार की चिन्ता को नष्ट करने के लिए, उसका हरण करने के लिए यह यन्त्र अद्वितीय है। इसके अद्वितीय होने का प्रमाण यही है कि ७३ वर्ष के लगभग इसे जनता की सेवा करते हो गये और हर-एक ने इसकी मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है, जिसे छपवाया जाय तो एक बड़ा ग्रन्थ तैयार हो जाय।

मूल्य केवल २)२५ पैसा, डाक-खर्च २)३५ पृथक्।

❁ भाग्योदय सिद्ध-यन्त्र ❁

मनुष्य के सोये हुए भाग्य-देवता को जगानेवाली तन्त्र-विद्या का अद्भुत चमत्कार!

मनुष्य के पूर्व जन्म के किये हुए कर्मों का नाम शास्त्र में 'भाग्य' कहा गया है। भाग्य के भरोसे पर मनुष्य की संसार-यात्रा निर्भर है। संसार में धन, दौलत, स्त्री-पुत्र इत्यादि अनेक सम्पत्तियाँ भरी पड़ी हैं, परन्तु भाग्यहीन

के लिए सब व्यर्थ है। वह कहीं भी जाय, सर्वत्र उसे भयंकर अभाव का सामना करना पड़ता है। नौकरी तलाश करें तो जगह नहीं, रोजगार चलायें तो घाटे-पर-घाटा हाथ आये, इष्ट-मित्र सगे-सम्बन्धी सभी मुँह फेर लेते हैं। ऐसी भयानक स्थिति में मनुष्य को सिवा आत्महत्या के और कुछ नहीं सूझता। ऐसे मनुष्यों के सोये हुए भाग्य को जगानेवाला, अपार अन्धकार के सागर में प्रकाश की किरण दिखानेवाला केवल यदी एक 'भाग्योदय सिद्ध-यंत्र' सहारा होता है। इस यंत्र के प्रभाव से भाग्य के सितारे चमकने लगते हैं, दुष्ट ग्रहों की शान्ति होती है, हाकिम मेहरबान बन जाते हैं। बिगड़ी दशा सुधरती है, रोजी-रोजगार, दुकान-दफ्तर, वकालत, इंजीनियरिंग तथा प्रत्येक पेशे में चकाचौंध मचा देनेवाली अद्भुत तरक्की होती है। यदि आपको किसी दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त करनी है, किसी प्रेमी पर पूरा अधिकार पाना है, यदि आपको अपनी सोती हुई कामनाओं को सफल करके जीवन बिताना है, तो आपके लिये केवल यह सच्चे सीधे मित्र की तरह बन सकता है। आप चाहे जितनी मुसीबतों में फँसे हों, इस यन्त्र के पास आते ही आपके रास्ते के सैकड़ों काँटे फूल बन जायेंगे, फिर आपको कहीं भी नाकामयाबी नहीं हो सकती। दिन दूनी रात चौगुनी आपकी उन्नति होती रहेगी। हमारे यन्त्रालय में इसकी बड़ी माँग रहा करता है। मूल्य ४)२५, स्पेशल भाग्योदय सिद्ध कवच, मूल्य ११)४५ डाक-खर्च २)३५ अलग होगा।

❁ धनदाता सिद्ध-यंत्र ❁

पैसे के बिना मनुष्य का कोई काम चल नहीं सकता। इस यन्त्र के प्रताप से आपके व्यापार में आश्चर्यजनक लाभ तथा नौकरी में आशातीत उन्नति होगी। इसके पूजन करनेवाले पर लक्ष्मी की विशेष कृपा होती है। तन्त्रालय में इसकी माँग अधिक रहती है। मूल्य ६)२५, डाक-खर्च २)३५ अलग।

भारी रियायत—सादे कागज पर लाल चन्दन से १००१ "राम" नाम लिख कर भेजनेवाले सज्जनों को भाग्योदय सिद्ध-यन्त्र ४)२५ के बजाय सिर्फ ३)२५ में, धनदाता सिद्ध-यन्त्र ६)२५ के बजाय ५)२५ में दिया जायेगा। डाक-खर्च भी माफ होगा। नोट—"राम" नाम लाल चन्दन से कागज के एक ही तरफ और कुछ दूर-दूर लिखें, क्योंकि इन राम नामों की गोलियाँ बनाकर मछलियों को खिलाया जाता है।

—विशेष-सूचनायें—

(१) उपर्युक्त तीन प्रकार के विशेष यन्त्रों के सिवा इच्छानुसार विवाह, मुकदमा में विजय, परीक्षा-परिणाम, प्रतिद्वन्दिता आदि कार्यों के लिए विशेष रूप से तन्त्रों का निर्माण किया जाता है, जिसका मूल्य ११)६५ है। प्रत्येक यंत्र का मूल्य अग्रिम भेजना चाहिये। पूरा पता एवं सारी व्यवस्था स्पष्ट लिखकर भेजनी चाहिये।

(२) धनदाता सिद्ध-यन्त्र को धारण करने के पहले भाग्योदय सिद्ध-यन्त्र धारण करना आवश्यक है। दोनों यन्त्रों का मूल्य १०)५० है। डाक-खर्च २)३५ पृथक्।

(३) बाहर से आनेवाले सज्जनों को पत्र-व्यवहार द्वारा श्रीरमलाचार्यजी के सुपुत्र से मिलने का समय निश्चित कर लेना चाहिये। लखनऊ जंकशन (चारबाग) स्टेशन से सीतापुर जानेवाली ट्रेन में बैठकर कमलापुर स्टेशन पर उतर जायँ वहाँ से कसमण्डा ग्राम के लिये सवारियाँ मिला करती हैं। यन्त्रादि मँगाने का पता—

श्रीरमलाचार्यजी तांत्रिक-शिरोमणि के सुपुत्र रामकृष्ण शर्मा

मु० कमलापुर, पो० कसमण्डा, जि० सीतापुर (उ० प्र०)।

चिन्ताहरण जंत्री के प्रेमियों को सूचित किया जाता है कि आश्रम में जन्म-पत्रिकाएँ तीन प्रकार की निर्मित की जाती हैं (१) साधारण जन्म-पत्र की दक्षिणा २५)। (२) मध्यम प्रकार की जन्म-पत्र-निर्माण की दक्षिणा ५१), (३) सर्वोत्तम जन्म-पत्र बनाने की दक्षिणा १०१) है। जन्म-पत्र-फलित हिन्दी भाषा में काफी विस्तारपूर्वक अंग्रेजी तारीखों में लिखा जाता है ताकि स्वयं पढ़ा व समझा जा सके।

वर्ष-फल बनाने की दक्षिणा ११), हस्तरेखा-विचार की दक्षिणा ७), हस्तरेखा-विचार करानेवाले व्यक्ति अपने दोनों हाथों के छाप की दो-दो प्रतियाँ भेजें, जन्म-समय का टेवा (जन्म-टीपन) की दक्षिणा २) होती है। जन्म-समय, सम्वत्, माह, पक्ष, तिथि तथा जन्म दिन का है या रात्रि का स्पष्ट व साफ-साफ लिखें। विचार की फीस अग्रिम भेजें। मनिआर्डर से भेजनेवाले व्यक्तियों को चाहिये कि मनिआर्डर-कूपन पर जिस हेतु धन भेज रहे हैं, साफ-साफ लिखें, जन्म समयादि भी लिख देवें। साथ ही अपना पूरा पता लिखना [illegible]

दीपावली महापर्व पर

विशेष प्रकार से निर्मित

भाग्योदय सिद्ध कवच

मनुष्य का सबसे प्रबल शत्रु उसके अशुभ ग्रहों का प्रभाव है। इससे पराजित होकर वह दाने-दाने के लिए लाचार हो जाता है। बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों तथा सम्राटों के सुनहरे स्वप्न छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। विशाल अट्टालिकाएँ ध्वस्त होते देर नहीं। जीवन आकाश में निशिदिन दुखों के ही बादल छाये रहते हैं।

जो लोग आज वैभवशाली हैं, कल वे वैभवशून्य भी हो सकते हैं। न जाने कब अशुभ ग्रहों का दृष्टिपात हो और उनकी सोने की लंका राख हो जाय।

भविष्य-रक्षा के लिये हमारे 'भाग्योदय सिद्ध कवच' की अद्भुत शक्ति प्राप्त कीजिये।

अनन्तकाल से ही भारत के धुरन्धर तान्त्रिक इस बात को मानते आये हैं कि दीपावली महापर्व की रात्रि तंत्र-सिद्धि के लिये सर्वश्रेष्ठ है। इस रात्रि में वे नाना प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त करते आये हैं। तन्त्र-जगत् में यह रात्रि बहुत ही महत्वपूर्ण मानी गयी है। इस दीपावली पर सिद्ध किये हुए यन्त्रादि अचूक होते हैं।

भाग्योदय सिद्ध कवच—का निर्माण इसी महत्वपूर्ण रात्रि में अनेक सिद्ध मन्त्रों तथा विशेष देव-पूजन द्वारा किया जाता है। यह भाग्योदय सिद्ध-यन्त्र का ही रूपान्तर है; किन्तु विशेषरूप से सिद्ध किये जाने पर वह अपरिमित शक्ति सम्पन्न हो जाता है।

इसकी मुख्य विशेषतायें :—

(१) यह कवच प्रत्येक कामना में सफलता दिलाता है।
(२) इसके प्रताप से अशुभ ग्रहों की शान्ति होती है।
(३) यह भाग्य-नक्षत्र को सहसा चमका देता है।
(४) भयंकर संक्रामक रोगों के आक्रमण से बचाता है।
(५) पूजन से इसकी शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है।
(६) इसको धारण करने से प्रेत-बाधा तथा अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता।
(७) रोगी को निरोग तथा निरोग को बलवान् बनाता है।
(८) व्यापार नौकरी तथा परीक्षा में यह निश्चित सफलता दिलाता है।
(९) अनुचित कार्यों (जुआ व्यभिचार आदि) में यह कुछ भी सहायता नहीं पहुँचाता।

जो सज्जन उपर्युक्त कवच की अलौकिक शक्ति से लाभ उठाना चाहते हों, उन्हें चाहिये कि दीपावली के एक दिन पूर्व तक अपना पूर्ण विवरण (कामना, नाम, पता आदि) भेज दें। दीपावली के भोर में बी० पी० पार्सल द्वारा कवच भेज दिया जायगा।

भाग्योदय सिद्ध कवच का मूल्य ५)५० है। डाक-खर्च २)३५ अलग।

आवश्यक सूचनायें ! आर्डर के साथ २) रुपया पेशगी जरूर भेजें।

(१) इस महापर्व पर हमारे यन्त्रालय में अन्यान्य कामनाओं की पूर्ति के लिये स्पेशल यन्त्र निर्मित किये जाते हैं। मूल्य १२)९२ पैसा है। इसके आर्डर के लिये मूल्य अग्रिम भेजना अनिवार्य है।

नोट—आर्डर देते समय सदैव अपना पूरा पता हाथ सँभाल कर लिख भेजा करें, ताकि पता पढ़ने में अड़चन न हो।

पता—श्रीरामकृष्ण शर्मा, सुपुत्र पं० बचानप्रसाद त्रिपाठी रमलसम्राट्, पो० कसमण्डा, जि० सीतापुर।

॥ लक्ष्मी-प्राप्ति, भाग्योदय, मनवांछित फल-प्राप्ति के लिये ॥

दीपावली, नवरात्र, ग्रहण, आदि शुभ योगों पर शास्त्रोक्त तैयार किये हुये चमत्कारिक यंत्र

हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिये साधन बतलाये हैं यदि श्रद्धा और विश्वास के साथ उन साधनों को प्रयोग में लाया जाय तो अवश्यमेव मनोवांछित सिद्धि प्राप्त होती है ; क्योंकि श्रद्धा और विश्वास से किया हुआ कार्य फलीभूत होता है "विश्वासं फलदायकं" खोटे ग्रहों की शान्ति का उपाय उच्चकोटि के महान तांत्रिकों, महान साधु महात्माओं आदि के यंत्र-मंत्र, तन्त्रादि ही हैं जिनके धारण करने ही मात्र से राज-काज, मान-प्रतिष्ठा, लक्ष्मी-प्राप्ति, नाना प्रकार की आधि-व्याधि, नवग्रहों से उत्पन्न पीड़ा का शमन, रोगों से मुक्ति, परीक्षा आदि में सफलता, मुकदमे में विजय, उच्चाधिकारियों की कृपा, नौकरी-व्यापार, उद्योग-धन्धे, सन्तानादि-प्राप्ति, सुख, धन-धान्य की वृद्धि, प्रेतादि-वाधाओं से मुक्ति आदि कार्य सफल होते हैं हमारे यंत्र-मंत्र-तंत्र ज्योतिष शोध-संस्थान में सभी प्रकार के कार्य किये जाते हैं अपने पाठकों के लिये दीपावली, नवरात्र, ग्रहण व शुभ नक्षत्र, योग आदि के समय शुद्धरूपेण शास्त्रोक्त तैयार कुछ यंत्रों की जानकारी निम्न प्रकार है। कार्य सिद्धि ही हमारी प्रामाणिकता है।

सिद्ध भाग्यदाता यंत्र—जिसका भाग्य साथ न देता हो नौकरी, व्यापार, फैक्ट्री, उद्योग आदि ठीक न चल रहे हों समय खोटा चल रहा हो तब इस यंत्र को मँगा कर धारण करें और चमत्कार देखें। मूल्य ११) मात्र। डाक व्यय २)५०

महासिद्ध बीसा-यंत्र—यह हमारे कार्यालय का बड़ा ही चमत्कारिक यंत्र है इसके सहस्रों-प्रशंसा पत्र मेरे कार्यालय में आये हैं इसके धारण मात्र से मनोकामनाओं की पूर्ति, दूकान में गल्ले, तिजोरी आदि में रखने, दीवाल में टाँगने से व्यापार आदि में विशेषकर लाभ होता है इसके संबंध में महर्षियों ने कहा है। "जहाँ यंत्र बीसा तो काह करें **जगदीशा**" यंत्र दक्षिणा ११) और विशेष स्पेशल (पावरफुल) का ३१) मात्र। दुकान में टाँगने का ५१), डाक व्यय पृथक्

लक्ष्मी-प्राप्ति (कुबेर यंत्र)—यथा नामे तथा गुणे, दक्षिणा ११)। डाक व्यय २)५०

विजयदाता सिद्ध यंत्र—मुकदमें, कोर्ट, कचहरी, हाकिम अधिकारी आदि में व शत्रुओं से विजय, ११) विशेष २१) है।

सिद्ध सरस्वती यंत्र—परीक्षा आदि में बुद्धि को प्रखर तीव्र करता है कुशाग्र बुद्धि बनाकर सफलता दिलाता है। ११)।

सर्व विघ्नहरण यंत्र—नाना प्रकार की आधि-व्याधि विघ्न-बाधाओं को समूल नष्ट करता है। मूल्य ११)।

महासिद्ध दुर्गा यंत्र—इसके धारण मात्र से नाना प्रकार की चिन्ताएँ, रोग से मुक्ति, यदि बालक, स्त्री, पुरुष आदि को डर लगता हो, भय से पीड़ित हो, विशेष कर छोटे बच्चों को नजर डीठ आदि का भय होता हो तो यह रामबाण है। मूल्य ११)। स्पेशल २१), डाक व्यय २)५०

पुत्रदाता यन्त्र—जो महानुभाव संतान विहीन हैं उन्हें यदि माँ जगदम्बा जी की कृपा हुई तो निश्चय ही वह पिता कहलाने के अधिकारी होंगे। यह कवच आदि हमारे तंत्रालय में आदेश पत्र (आर्डर) देने पर तैयार कराया जाता है। दक्षिणा ५१) विशेष (पावरफुल), १०१) मात्र। तथा पूजा-पाठ भी परमावश्यक है।

नवग्रहों के यंत्र—ग्रहजन्य पीड़ाओं के लिये हमारे कार्यालय में प्रत्येक ग्रह सूर्य यंत्र, चन्द्रमा यंत्र, मंगल यंत्र, बुध यंत्र, गुरु यंत्र, शुक्र यंत्र, शनि यंत्र, राहु यंत्र, केतु यंत्र, ये नवो ग्रहों के यंत्र भी मिलते हैं। प्रत्येक ग्रह के यंत्र की दक्षिणा ११) है। और नवग्रह यंत्र की दक्षिणा ३१)। डाक खर्च पृथक्।

नोट—जो महानुभाव यंत्र मँगाना चाहें वह यंत्र मँगाते समय पत्र में यंत्र-धारण करनेवाले का नाम अवश्य लिखें तथा यंत्र की दक्षिणा भी मनिआर्डर द्वारा भेज दें। वी. पी. भेजने का नियम नहीं है।

तंत्रालय में प्रत्येक कार्य के इच्छानुकूल यंत्र तथा पूजन अनुष्ठान आदि का कार्य भी शास्त्रोक्त रूप से किया जाता है।

पता—यंत्र, मंत्र तंत्र ज्योतिष शोध-संस्थान

प्लाट नं० ७६६, ब्लाक वाई, किदवई नगर, कानपुर २०८०२१

मंत्र-सागर [विद्या में भारत सोने की चिड़िया]

यह वही पुस्तक है जिसके लिये आप चिर-काल से उत्कण्ठित थे। यंत्र-मंत्र-तंत्र-शास्त्र सम्बन्धी बड़े-बड़े प्राचीन ग्रन्थ हस्तलिखित व साधु-महात्माओं आदि के प्राप्त प्रयोगों की छानबीन के साथ बड़े ही परिश्रम से तंत्र-शिरोमणि, मंत्र महारथी डा० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय' तंत्राचार्यजी ने तैयार किया है। जो कार्य सहस्रशः व्रत करने पर भी सिद्ध नहीं होता हो वही कार्य मंत्र सागर की केवल विधान सहित एक क्रिया से सफलतापूर्वक सिद्ध हो सकता है। इस मंत्र सागर में षटकर्म, दशमहाविद्या तथा भूत-प्रेत यक्षिणी आदि की सिद्धियाँ व अन्य बहुत-से विषय सरलतापूर्वक दिये गये हैं। पुस्तक छपकर तैयार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १०), डाक-खर्च ३)५० पृथक्।

जिन सज्जनों का पेशगी रुपया आ गया है उन्हें पुस्तक शीघ्र भेज दी जावेगी।

सभी प्रकार की पुस्तकें निम्नांकित पते से मँगवायें—

लक्ष्मी पुस्तकालय

निर्भय-निवास, प्लाट नं० ७६६, ब्लाक वाई, किदवई नगर, कानपुर २०८०२१

चिन्ताहरण जंत्री के पाठकों के लिये इस वर्ष विशेष रियायतः—

मानसागरी भाषा टीका

पं० सीताराम झा द्वारा संशोधित परिशिष्ट एवं जन्म-पत्र प्रबोध सहित ग्लेज कागज पर छपा। मूल्य २०)

बृहज्ज्योतिषसार भाषा टीका

ज्योतिषाचार्य श्रीरूपनारायण शर्मा द्वारा सम्पादित ग्लेज कागज पर छपा। मूल्य १०)

जातकाभरण भाषा टीका

पं० सीताराम झा द्वारा सम्पादित परिशिष्ट सहित ग्लेज कागज पर छपा। मूल्य १३)

ताजिक नीलकण्ठी

श्रीविश्वनाथ दैवज्ञ विरचित संस्कृत भाषा टीका सहित संशोधक श्रीवासुदेव गुप्त, ग्लेज कागज। मूल्य १३)

मुहूर्त चिन्तामणि सान्वय

सुबोध भाषा टीका सहित

संस्कर्ता श्रीगौरीनाथ पाठक। मूल्य ६)

लघुसंग्रह भाषा टीका

पं० गणेशदत्त पाठक द्वारा संपादित। मूल्य ६)

लग्नचन्द्रिका भाषा टीका

अनुवादकः—पं० कैलाशपति मिश्र। मूल्य ४)

रमल दिवाकर की कुञ्जी

रमल सम्राट् श्री पं० बचानप्रसाद त्रिपाठी रमलाचार्य कृत ग्लेज पर छपा। मूल्य ६)

बृहत् पाराशरहोराशास्त्रम्

पं० गणेशदत्त पाठक द्वारा संपादित। मूल्य ३६)

भृगु संहिता फलित सर्वांग दर्शन

इसे पढ़कर आप भूत, भविष्य, वर्तमान, सन्तान, धन लाभ तथा अनेकानेक प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, जो अटल होगा। ऐसी उपयोगी पुस्तक अपने पास अवश्य रखें। मूल्य २०)

मनुस्मृति सुबोधिनी भाषा टीका

दैवज्ञ वाचस्पति श्रीवासुदेव गुप्त द्वारा संशोधित एवं सम्पादित, ग्लेज कागज पर छपा। मूल्य १२)

श्रीप्रभु विद्या-प्रतिष्ठार्णव

अर्थात् सर्वदेव प्रतिष्ठा मयूख

सरस्वती भाषा टीका और चित्रों सहित पं० दौलतराम गौड द्वारा संपादित। प्रतिष्ठा की सर्वोत्तम पुस्तक। मूल्य १५)

सामुद्रिक रहस्य

लेखक पं० कालिका प्रसाद राजज्यौतिषी रामनगर राज्य (वाराणसी) ग्लेज कागज पर छपा। मूल्य ६)

आचार्य पण्डित श्री शिवदत्त मिश्र शास्त्री द्वारा सम्पादित

दुर्गार्चन पद्धति अथवा दुर्गा-रहस्य

इसमें हिन्दी टीका सहित पंचांग पूजन, दुर्गा पूजन, दुर्गासप्तशती एवं दुर्गा उपासना सम्बन्धी सभी विषय दिये गये हैं। ग्लेज कागज पर छपा। मूल्य १६)

हनुमद् रहस्य अथवा हनुमत्पंचांग

हिन्दी व्याख्या सहित हनुमत्पंचांग, हनुमत्पूजा पद्धति, हनुमत्-चरित, हनुमत्-अनुष्ठान विधान एवं हनुमद्-उपासना से सम्बन्धित समस्त विषय इसमें एकत्र संग्रहीत हैं। ग्लेज कागज पर छपा। मूल्य १०)

गायत्री रहस्यं वा गायत्री पंचांग

शिवदत्ती भाषा टीका सहित, गायत्री की अत्यंत दुर्लभ पुस्तक ग्लेज कागज पर छपा। मूल्य १०)

बृहद् स्तोत्र-रत्नाकर ४४२ स्तोत्र सहित

इस पुस्तक में कुछ ऐसे स्तोत्र भी हैं जो अबतक के किसी भी स्तोत्र ग्रन्थों में प्राप्त नहीं हैं। मूल्य १२)

बगलामुखी-रहस्य

इसमें हिन्दी टीका सहित पूजा-पद्धति, बगला-पंचांग, बगलातन्त्र, बगला सहस्रनाम, बगलोपनिषद्, बगला ब्रह्मास्त्र, बगलोपासन विधि, बगला-नित्यार्चन पद्धति आदि बगलोपासना सम्बन्धी अनेक विषय दिये गये हैं। मूल्य ६)

वाञ्छा-कल्पलता- 'जयंती' हिन्दी टीका

यदि आप आर्थिक स्थिति खराब होने से निराश जीवन व्यतीत कर रहे हों, तो इस पुस्तक को अपने पास अवश्य रखिए। इसके अनुसार पाठ-पूजा एवं अनुष्ठान करने से मनोनुकूल लक्ष्मी प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य ४)

पाराशर-स्मृति

सुबोध हिन्दी टीका, विषयानुक्रमणिका एवं श्लोकानुक्रमणिका दी गयी है। मूल्य ५)

अन्य पुस्तकों की पूरी जानकारी के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगायें। उपरोक्त पुस्तकों के मँगाने में मूल्य के अतिरिक्त डाक व्यय और लगेगा; परन्तु कोई भी पाँच पुस्तक एक साथ मँगाने पर डाक व्यय फ्री। ऐसा सुनहला अवसर हाथ से न जाने दें। आज ही अपने मन पसंद पुस्तकों का आर्डर भेजकर कम-से-कम पाँच पुस्तक अवश्य मँगावें। साथ ही १०) पेशगी मनिआर्डर से जरूर भेजें।

प्रकाशक—ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर, राजादरवाजा, वाराणसी।

ज्योतिष चमत्कारः अपना भविष्य आप पढ़ें

मनुष्य के जीवन में दुःख सुख आते ही रहते हैं उन्हें रोका नहीं जा सकता मगर उनसे बचने के लिए आवश्यक है— भाग्य जानना। आप निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता से किसी भी व्यक्ति के जीवन की सही-२ भविष्यवाणी कर सकते हैं ताकि वह संकटों व दुर्घटनाओं से अपनी रक्षा कर सके।

भृगु प्रश्न शिरोमणि
(तत्काल भृगु प्रश्नोत्तरी)

पृ० 208 ·पं० रामगोपाल शास्त्री मू० 12/-

मन चिन्ताओं का घर है और ये चिन्ताएं अनन्त हैं। गरीब को घर की, अमीर को सन्तान की, किसी को विवाह की, नौकरी की, तरक्की की आदि 204 प्रकार की चिन्ताओं का भृगु ज्योतिष आधार पर उपाय। अपनी चिन्ताएं अपने आप मिटाएं।

मूक प्रश्न बताने की कुंजी
भृगु मूक प्रश्न दीपिका

पं० रामगोपाल शर्मा शास्त्री मू० 12/-

महर्षि भृगु द्वारा प्रणीत जीवन की चिन्ताओं को मिटाने वाले १२७ प्रश्नों का सही उत्तर जैसे मनोकामना पूरी होगी या नहीं, मुकदमे में जीत या हार, पुत्र होगा या पुत्री, अच्छे दिन कब आयेंगे आदि। आपके प्रश्न का जो फल इसमें दिया है उसमें आशा भी है और निराशा भी। निराश व्यक्तियों के लिये उपाय भी बताया है।

वृहत अंक ज्योतिर्विज्ञान

पृष्ठ. 292 (अंक विद्या) मू० 12/-

केवल जन्म तारीख के आधार पर हजारों प्रश्नों के उत्तर इसमें पढ़िये, जैसे क्या आपकी भी लाटरी निकलेगी, क्या अपनी प्रेमिका से आपके सम्बन्ध बने रहेंगे, क्या आपका कार्य सिद्ध होगा। इस ज्योतिष द्वारा हम प्रत्येक दिन, प्रत्येक समय और प्रत्येक घण्टे तक का भविष्य जान सकते हैं।

लेखक—राजेश दिक्षित

सचित्र मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र

पृ० 288 ले०—राजेश दीक्षित मू० 12/-

मुहूर्त विज्ञान बताता है कि किस कार्य के लिए किस नक्षत्र की स्थिति शुभ फलदायक रहेगी और किसकी अशुभ फल देने वाली। जैसे काम धन्धे का मुहूर्त, गृह प्रवेश, कृषि कर्म मुहूर्त, षोडस संस्कार मुहूर्त, थोड़े पढ़े-लिखे के लिए आसान।

सुप्रसिद्ध हस्तरेखा विशेषज्ञ व भविष्य-वक्ता श्री रामेश्वर प्रशान्त लिखित
हस्त सामुद्रिक ज्योतिष

पृ० 560 (चौथा नया संस्करण) मूल्य 15/-

इस बृहद पुस्तक में हस्तरेखा विज्ञान द्वारा आपके व्यापार में लाभ, सर्विस में तरक्की, मन की शान्ति व कष्टों का अन्त कब है—ऐसे सैंकड़ों प्रश्नों का फल दिया गया है। हस्तरेखा कैसे पढ़ें इसको सीखने के लिये हाथ, अंगुलियों की बनावट, ग्रह क्षेत्र, हस्त चिह्न आदि की जानकारी सैंकड़ों चित्रों द्वारा बहुत ही सरल ढंग से दी गई है ताकि मामूली पढ़ा-लिखा भी समझ सके।

सरल सुगम ज्योतिष

ज्योतिषाचार्य पंडित जगन्नाथ शर्मा

इस पुस्तक की सहायता से आप भी ज्योतिषी बन सकते है। इसे पढ़कर लग्न निकालना, कुण्डली बनाना, जन्म पत्री बनाना, मुहुर्त निकालना, स्त्रियों का राशिफल व दशाओं के फल, शुभ अशुभ शकुनों का विचार, स्वप्न विचार, मूक प्रश्न चमत्कार आदि का वर्णन। पृष्ठ 344, मूल्य 12/-

स्वर ज्योतिष शास्त्र
(रमल ज्योतिष सहित)

पृ० 176 ले०—राजेश दीक्षित मू० 12/-

यह बात बहुत कम लोगों को मालूम है कि यदि नाक के विभिन्न छिद्रों से स्वाश वायु का आगमन निश्चित तिथि और समय के अनुसार न हो तो शरीर में विचित्र प्रकार के रोग हो जाते हैं। नौकरी प्राप्ति, मुकदमा में जीत, इच्छानुसार सन्तान, शत्रु को वश में करना, मृत्यु का समय जानना, भाग्य चमकाने का उपाय आदि में स्वर ज्योतिष चमत्कारपूर्ण कार्य करता है। यह प्राचीन विद्या दुर्लभ थी। पहली बार छपी दिलचस्प पुस्तक।

ज्योतिष अंक विद्या, हस्त रेखाएं एवं लाटरी

पृ० 156 मू० 8/25

ज्योतिष, अंक विद्या तथा हस्त रेखाओं द्वारा अपने पारिवारिक सदस्यों, मित्रों, पड़ोसियों तथा अन्य लोगों का भूत-भविष्य बताकर वाहवाही प्राप्त करें। आकस्मिक धन प्राप्ति अर्थात लाटरी मिलने की अनेकों संभावनाएं। ले०—राजेश दीक्षित

व्यापार अर्घ-मार्तण्ड

पृष्ठ 176 ले०—पं० रतीराम शर्मा मू० 12/-

ज्योतिष आधार पर व्यापारिक वस्तुओं की तेजी-मन्दी का सच्चा उत्तर देने वाली एकमात्र पुस्तक। इस पुस्तक की सहायता से अब तक सैंकड़ों व्यापारी मालामाल हो गए।

भृगुगुप्त प्रश्नोत्तरी मू० 12/-

पवनपुत्र प्रश्न भास्कर मू० 4/50

तकदीर का सच्चा हाल बताने वाला
फालनामा

पृष्ठ 208, मू० 12/-

भारतीय ज्योतिषियों के अतिरिक्त ईरान, इराक, यूनान, रोम, अमेरिका, इंगलैंड के ज्योतिषियों ने विभिन्न प्रकार के फालनामे अर्थात प्रश्नोत्तरी चक्रों का निर्माण किया है जो सही भविष्य-वाणी करते हैं। ये फाल या यन्त्र उनकी अपनी सिद्धि पर निर्धारित होते हैं तथा आजमाये हुए होते हैं। ऐसे ८५ फालनामे इसमें दिए गए हैं जो तकदीर, रोजगार, नौकरी, प्रेम, विवाह, मृत्यु, आदि की भविष्य वाणी।



प्रत्येक नारी के भूत, भविष्य एवं वर्तमान का हाल बताने वाला ज्योतिष विद्या का महान ग्रन्थ।

भृगु संहिता फलित प्रकाश

(मूल लेखक—महर्षि भृगु)

पृष्ठ १२२४ (बड़ा साइज) १६३२ कुण्डलियों का यह वही ग्रन्थ है जिसकी तलाश में लोग दरदर भटकते रहते हैं तथा जिसके नाम पर भृगु ज्योतिष बनकर पंडित लोग सैंकड़ों-हजारों रुपये लेकर जन्म कुण्डलियों का फलादेश बताया करते हैं। किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्म कुण्डली लीजिये और इस महाग्रन्थ से उस कुण्डली का मिलान करके तीनों काल व तीनों जन्मों का हाल बताकर चमत्कृत करिए। मूल्य इक्कावन रुपये।

छोटा संस्करण अखण्ड त्रिकाल ज्योतिष अर्थात संक्षिप्त भृगु संहिता फलित प्रकाश जिसमे लगभग ३०० कुण्डलियों का फलादेश है। मू० 6/-

किसी फल-फूल या पक्षी का नाम लें
केरल ज्योतिष शास्त्र

लेखक—पं० रामगोपाल शास्त्री

केरल विद्या वह गुप्त विद्या है जो प्रश्नकर्ता से फल, फूल या पक्षी का नाम कहलवाकर हर कार्य में सफलता मिलेगी या नहीं इसका हाल मालूम किया जा सकता है यह प्रामाणिक पुस्तक है। पृष्ठ 200, मू० 12/-

हमारी प्रकाशित 25/- रु० की पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ



वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का एक मात्र सबसे बड़ा पुस्तक भण्डार (पुराने प्रकाशक का नया नाम व पता)

हिन्द पुस्तक भण्डार, खारी बावली, दिल्ली

फोन: [illegible] 265403. 264191

दिल्ली में पुस्तकों का सबसे बड़ा भंडार खारी बावली में

स्वास्थ्य, सैक्स व मनोरंजन



गुप्त सैक्स ज्ञान

मूल्य 12/- रुपये, डाक-खर्च पृथक्

पहली बार प्रकाशित कम्पलीट सैक्स ज्ञान

बाजार में प्रचलित गन्दी, सस्ते किस्म की सस्ती तथा निम्न स्तर की पुस्तकों से परे हटकर भारत में पहली बार प्रकाशित एकदम फ्रैंक (खुली) किताब जिसमें सैक्स के बारे में वे तमाम गुप्त बातें दी गई हैं जिन्हें आप लज्जा के कारण दूसरा से नहीं पूछ पाते ! जैसे : • प्रेम करने की कला के गुप्त भेद • हनीमून नाइट सफल कैसे हो • सैक्स क्रिया में कैसे आनन्द प्राप्त करें • सैक्स पावर बढ़ाने के सरल व्यायाम • काम-अंगों की सचित्र जानकारी • यौन रोगों के कारण व निवारण • प्रौढ़ावस्था में फिर से उमंग, फुर्ती व चुस्ती रखने के उपाय • नपुंसकता, शीघ्र स्खलन, स्वप्नदोष आदि के कारण व निवारण, बर्थ कण्ट्रोल, सैक्स आसनों का परिचय • सैक्सी कारटून व फोटो । सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए व जिन्दगी का सच्चा मजा लूटने के लिए आवश्यक पुस्तक ।

151 प्रेम भरे पत्र



प्रेमियों और प्रेमिकाओं द्वारा एक-दूसरे को लिखे गए पौने दो सौ के लगभग प्रेम की पीर से पगे ये पत्र प्रेमी हृदय की धड़कनों, सिसकियों और मान-मनुहार को कागज पर बड़ी खूबी से उतारते हैं । विद्वान लेखक ने इन पत्रों में कहीं भी छिछलापन नहीं आने दिया है । इसमें आपको साहित्य का स्पर्श, प्रेमी या प्रेमिका का दिल जीतने का अन्दाज और विचार तथा बहुत से अकथनीय मनुहार मिलेंगे । सैंकड़ों भाव भरे चित्रों ने तो और भी कमाल कर दिया है ।

पृ. 480, चित्र 152, मू. 12/- डाकखर्च अलग ।



15 दिन में गिटार सीखिये

घर बैठे गिटार सीखने के लिए

नई पीढ़ी का मन-पसन्द बाजा मस्ती का आलम पैदा करने वाला नौजवान दिलों को स्वर देने वाला पार्टियों में लोकप्रिय बनाने वाला

गिटार शिक्षा

बिना शिक्षक के घर बैठे गिटार की पूर्ण रचना, लय ज्ञान के साथ-साथ प्रमुख धुनें तथा लोकप्रिय फिल्मी गानों को स्वर लिपियों सहित । मूल्य 6/- रुपये, डाकखर्च पृथक् ।

हिप्नोटिज्म और मेस्मेरिज्म

(शक्ति-चक्र सहित)



हिप्नोटिज्म एक ऐसा विज्ञान है जिस पर इसका प्रयोग किया जाता है वह आदमी सम्मोहित होकर हिप्नोटिज्म के संकेत पर चलने लगता है । भारत में छपी सबसे बड़ी इस पुस्तक द्वारा चमत्कारों और अदृश्य शक्तियों से अनेक प्रकार के लाभ उठा सकते है । जैसे :— • दूसरों को अपने वश में कर लेना • मृत आत्माओं से बातचीत • दूसरों के दिलों का हाल जानना • किसी भी व्यक्ति के भूत-भविष्य-वर्तमान का हाल बता देना • असाध्य रोगों की चिकित्सा : जैसे तीव्र वेदना से छुटकारा, मानसिक रोग, क्षय रोग, शल्य चिकित्सा, कैंसर, चर्म रोग, उदर रोग आदि से छुटकारा • अनेक प्रकार के जादू और खेल : जैसे—आदमी को हवा में लटकाना, उड़ते पक्षी को गिराना व अन्य हाथ के जादू तथा किसी को भी मोहनिद्रित करके इच्छानुसार काम करवाना । पृष्ठ 354, चित्र 100, मूल्य 15/- रुपये, डाकखर्च अलग ।

मनचाही सन्तान प्राप्त करें

जैसे देवेच्छा तो सर्वोपरि होती है, लेकिन शरीर शास्त्रियों व चिकित्सा शास्त्रियों ने निरन्तर प्रयत्नों एवं खोजों के फलस्वरूप उन कारणों का पता लगाने में सफलता प्राप्त कर ली है जिनसे लड़का या लड़की का जन्म होता है । प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी सभी खोजों के परिणाम उपायों को सफलत किया गया है जिनको पढ़कर आप सुन्दर, एवं गुणवान, सन्तान प्राप्त कर सकते हैं



मूल्य 6/- रुपये, डाकखर्च पृथक्

सदा जवान रहो



आप नारी हैं या पुरुष—भद्दा मोटापा, पेचीदा बीमारियाँ कमजोरी, मानसिक दबाव से परेशान हैं तो 90 वर्षीय जवान सुप्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक श्री काशीराम चावला द्वारा लिखित पुस्तक 'सदा जवान रहो' पढ़ें । प्रतिदिन 15 मिनट स्पाट-व्यायाम कोर्स व डाइट कोर्स से 15 दिन में ही आपकी कमर, कूल्हे व जांघों का माप 9-10 सें.मी. कम हो जायगा, पेचीदा बीमारियों से छुटकारा मिलेगा, शरीर सुडौल व सुगठित होगा तथा आप चुस्ती व स्फूर्ति के साथ-साथ अपनी आयु से कई वर्ष कम महसूस करेंगे । चिन्ता, थकान दूर करने व खुश रहने के सैंकड़ों व्यवहारिक सुझाव । सदा जवान रहने के लिए एक अनूठी पुस्तक । मूल्य 18/- रु०, डाकखर्च 2/- रु० ।

40-45 वर्ष बाद जीवन कैसे बिताएं

जीवन के 40-50 वर्ष पश्चात् कुछ ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा होने लगती हैं जब मनुष्य का धैर्य टूटने लगता है, शरीर शिथिल हो जाता है अर्थात् मनुष्य बूढ़ा महसूस करने लगता है, तो ९० वर्षीय जवान श्री काशीराम चावला द्वारा लिखित यह पुस्तक आपका पूर्ण मार्गदर्शन करेगी और आप १ माह में ही अपने शरीर मन और मस्तिष्क में पुष्टता महसूस करेंगे । अपने किस्म की अनोखी पुस्तक । मूल्य : 15/- रुपये, डाकखर्च अलग ।

सचित्र सुहागरात

वैवाहिक जीवन की सफलता और असफलता का राज है प्रथम रात्रिमिलन अर्थात् सुहागरात । नवविवाहितों के लिए एसी-ऐसी गुप्त बातें जिन्हें पढ़कर आप अपनी पत्नी अथवा अपने पति का दिल जीतकर जीवन के मजे प्राप्त करें । वास्तविक सहवास सुख प्राप्त करने तथा सुहागरात के दिन क्या होता है अथवा क्या किया जाना चाहिए—इन सब बातों के जानने के लिए आवश्यक सचित्र पुस्तक । पृष्ठ 148, मूल्य : 6/- रुपये, डाकखर्च अलग ।

25/- रु० की पुस्तकों पर डाकखर्च माफ

सैक्स-पावर और व्यायाम मूल्य 15/- रु रुपये ।



वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का एक मात्र सबसे बड़ा पुस्तक भण्डार

हिन्द पुस्तक भण्डार खारी बावली, दिल्ली

फोन: 529314. 265403. 264191

घर बैठे टैक्निकल काम सीखकर धन कमाइये

घर बैठे टेलीविज़न सर्विसिंग का काम सीखिये व कमाइये



सभी प्रकार के टेलीविजन सैटों की सर्विसिंग का कम्प्लीट कोर्स I.T.I. के निदेशक श्री सतेन्द्र कुमार जैन द्वारा लिखित "वाल्व टेलीविजन सैट व सर्विसिंग" नामक पुस्तक में चित्रों सहित दिया गया है। इसमें टेलीविजन का परिचय, औजार व उपकरण, सरकिटों का टैस्ट करना, सरकिटों के दोष व उपाय, टेलीविस्टा, स्टैण्डर्ड, जे० के० आदि टेलीविजन के सरकिट व सर्विसिंग, स्क्रीन के पिक्चर के दोष और उपाय, साउण्ड ठीक करना, ऐण्टीना लगाना आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। भाषा इतनी सरल है कि सिर्फ थोड़ा पढ़ा-लिखा भी समझ सके।

पृष्ठ लगभग 200 मूल्य **15**/- पन्द्रह रुपये।

गैस वैल्डिंग

बहुत थोड़ी पूंजी व बिना बिजली के गैस वैल्डिंग का काम सीखकर जीविकोपार्जन में सहायक इस पुस्तक में लोहा, स्टेनलैस स्टील, कार्बन स्टील, कास्ट आयरन, अल्युमुनियम, तांबा, पीतल, ब्रौंज आदि पर वैल्डिंग करने की सम्पूर्ण टैक्निकल जानकारी चित्रों द्वारा दी गई है।



मूल्य **12**/- बारह रुपये।

रैफरीजरेटर सर्विसिंग

ले०—एस. के. जैन

सभी प्रकार के घरेलू तथा व्यवसायिक रैफरीजरेटर, रूम-कूलर, आइस प्लाण्ट तथा एयर कण्डीशनरों के कार्य करने के सिद्धान्त, उनमें होने वाली खराबियां तथा मरम्मत, सर्विसिंग, ओवर-हॉलिंग की 200 चित्रों में सम्पूर्ण जानकारी। मैकेनिकों, इंजीनियरों, एप्रेण्टिसों तथा टैक्निकल संस्थानों के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक। मूल्य **18**/- अठारह रुपये।

घर बैठे ट्रांज़िस्टर रेडियो मरम्मत करना सीखें



"सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो" सुप्रसिद्ध लेखक श्री रमेशचन्द्र विजय, स्टेशन इंजीनियर आल इण्डिया रेडियो द्वारा लिखित यह पुस्तक ट्रांजिस्टर रेडियो रिपेयर का चित्रों सहित सरल व पूर्ण प्रैक्टिकल कोर्स है जिसे भारत सरकार के लगभग सभी टैक्निकल इंस्टीट्यूटों में मान्यता दी जा चुकी है। इसमें ट्रांजिस्टर के सिद्धान्त, कार्य व विशिष्टताओं के साथ ट्रांजिस्टर मरम्मत करने की विधियाँ जैसे रिपेयर करने के लिए टूल, खराबी ज्ञात करना, प्रिंटिंग बोर्ड सर्विसिंग, प्रिंटिंग सरकिट बनाने की विधियाँ, खराबियां उनके कारण व दूर करने की विधियाँ, ट्रांजिस्टर जांचना, एलाईनिंग, ट्रांजिस्टर डैटा व भारतीय फर्मों के कम्प्लीट ट्रांजिस्टर सरकिट डायग्राम्ज़ आदि दिये गये हैं।

पृष्ठ 236, चित्र 150, मूल्य **12**/- बारह रुपये।



मोटर मैकेनिक टीचर

ले०—कृष्णानन्द शर्मा

भारत में प्रचलित एम्बेसेडर-फियेट आदि गाड़ियों की कार्यप्रणाली, मेनटीनेन्स, रनिंग रिपेयर, फाल्ट फाइंडिंग और मुख्य मरम्मत व ट्यून-अप, जनरल ओवर हॉलिंग तथा वर्कशाप के औजार व बनाने की सम्पूर्ण जानकारी साथ-साथ एमरजैन्सी रिपेयर अर्थात् चलती गाड़ी में होनेवाली खराबी ठीक करना। पृष्ठ 320, चित्र 187 मूल्य **12**/- बारह रुपये।

फाउण्ड्री प्रैक्टिस

लोहा, स्टील, पीतल, तांबा, अल्युमुनियम, ब्रौंज आदि धातुओं की टैक्निकल जानकारी उनके ढालने की विभिन्न प्रक्रियाएं तथा कास्टिंग के दोष तथा उनको ठीक करना। साथ-साथ विभिन्न फरनैसों, कुठालियों, क्यूपोला आदि की सचित्र टैक्निकल जानकारी। स्क्रैप पीतल पिघलाना तथा लकड़ी व धातुओं के पैटर्न बनाना उनकी रूपरेखा, ले-आउट आदि। ढलाई में होने वाली विभिन्न मिलावटों के फारमूले। मूल्य **15**/-

अन्यान्य टैक्निकल पुस्तकें

● ट्रांजिस्टर रेडियो व इलैक्ट्रोनिक्स

ट्रांजिस्टर डेटा व सर्किट—आर. सी. विजय	18.00
वायरलैस रेडियो गाइड—प्रो. नरेन्द्रनाथ	12.00
टैलीविजन सर्विसिंग—हरिचन्द रत्ता	15.00
इलैक्ट्रॉनिक्स इन्जीनियरिंग कोर्स—हरिचन्द रत्ता	18.00
एयर कण्डीशनिंग सर्विसिंग—एस. के. जैन	15.00

● इलैक्ट्रिकल

इलैक्ट्रिक गाइड—प्रो. नरेन्द्रनाथ	18.00
इलैक्ट्रिक वायरिंग—प्रो. नरेन्द्रनाथ	8.25
प्रैक्टी. ए. सी. मोटर वाइंडिंग—प्रो. नरेन्द्रनाथ	18.00
इलैक्ट्रिक मोटर्स—प्रो. नरेन्द्रनाथ	15.00
इलैक्ट्रिक मीटर्ज—प्रो. नरेन्द्रनाथ	15.00
इलैक्ट्रिक बैटरीज—प्रो. नरेन्द्रनाथ	6.00
बिजली मास्टर—के. प्रसाद	6.00

● खराद वर्कशाप

खराद शिक्षा (टर्नर गाइड)—वसन्त कुमार जोशी	10.50
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग)-वसन्त कुमार जोशी	10.50
मशीनिस्ट गाइड—सोमनाथ (नरेन्द्रनाथ)	18.00
लेथ वर्क—कालीचरण गुप्ता	10.50
मिलिंग मशीन—कालीचरण गुप्ता	10.50
मशीन टूल्स गाइड—कृष्णानन्द शर्मा	12.00
वर्कशाप कैलकुलेशन एण्ड साइंस—ओ३म्प्रकाश महाजन	8.25
मशीन वुड वर्किंग—कालीचरण गुप्ता	8.25
ट्यूब वैल व पम्पिंग गाइड—पुष्पनाथ पंगोत्रा	8.25
पम्पिंग फिटिंग हैण्ड बुक—कालीचरण गुप्ता	8.25

● वैल्डिंग

इलैक्ट्रिक वैल्डिंग प्रो. नरेन्द्रनाथ	8.25
कास्ट आयरन वैल्डिंग—प्रो. नरेन्द्रनाथ	6.00
टांका लगाना,(Soldering)-नरेन्द्रनाथ जयनारायण	4/50

● आटोमोबाइल

आटोमोबाइल एमरजेन्सी रिपेयर—कालीचरण गुप्ता	12.00
ट्रैक्टर सर्विसिंग एण्ड ड्राइविंग—कृष्णानन्द शर्मा	25.50
मोटर प्रश्नोत्तर कृष्णानन्द शर्मा	8.25
स्कूटर आटोरिक्शा गाइड—कृष्णानन्द शर्मा	8.25
मोटर साइकल गाइड—कृष्णानन्द शर्मा	8.25
आटो डीजल मैकेनिक टीचर—कृष्णानन्द शर्मा	24.75

● फर्नीचर-सिविल इन्जीनियरिंग

न्यू फर्नीचर कैटलॉग—जावेद आर्टिस्ट	40.50
माडर्न फर्नीचर बुक—शील व तांबी	21.00
विश्वकर्मा प्रकाश—राम अवतार 'वीर'	18.00
नक्काशी आर्ट शिक्षा—राम अवतार 'वीर'	8.25
राजगीरी शिक्षा—राम अवतार 'वीर'	8.25
सीमेन्ट की जालियों के डिजाइन—मदनलाल	8.25
मारबल चिप्स के डिजाइन—राम अवतार 'वीर'	18.00
न्यू स्टील फर्नीचर कैटलॉग—राजेन्द्र कुमार	51.00
आयरन फर्नीचर—राम अवतार 'वीर'	18.00

● हैण्डलूम-पावरलूम

वीविंग गाइड—एस. एन. चोपड़ा	8.25
कपड़े की बनावट व डिजाइन—एस. एन. चोपड़ा	6.00
सूती, ऊनी, रेशमी कपड़ों की रंगाई, छपाई, धुलाई „	8.25
हैण्डलूम गाइड—एस. एन. चोपड़ा	24.75
रंग-साजी—जे. सी. दास	4.50



वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का एक मात्र सबसे बड़ा पुस्तक भण्डार

हिन्द पुस्तक भण्डार खारी बावली, दिल्ली

फोन: 529314. 265403. 264191

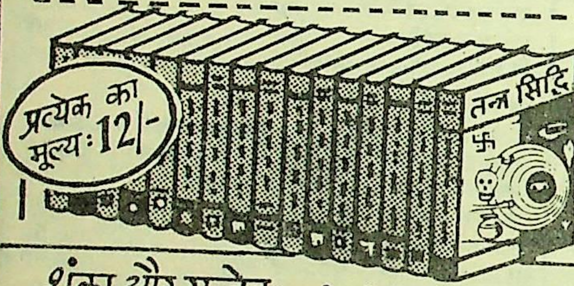
प्राचीन यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र-विद्या के अद्भुत चमत्कार

यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र कोई कपोल-कल्पना नहीं !

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शाश्वत विद्या है। ऋषि-मुनियों की सिद्धि-साधना का लिपिबद्ध साहित्य...



मानव-उपयोगी सिद्धान्तों से युक्त एक आध्यात्मिक विज्ञान... श्रद्धा और विश्वास का मेरुदण्ड...



16 ग्रन्थों के पूरे सैट का मूल्य: 192/- रुपये की बजाय 171/-

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र पर अनमोल 16 पुस्तकें

इनका आज के जन-जीवन में विशेष महत्त्व है। वैज्ञानिक भी इनकी तह तक पहुंचने में लगे हैं। संस्कृत के मूल दुर्लभ ग्रन्थों से सरल हिन्दी-संस्कृत में रूपांतरित ये 16 खण्ड हिन्दी में सर्वप्रथम प्रकाशित। ये ग्रन्थ क्या, ईश्वरीय चमत्कार हैं; सत्य एवं जन-कल्याण की सिद्धियों से ओतप्रोत। इनके बिना आपका अध्ययन अधूरा है। पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय.

हमारी प्रकाशित 25/- रु० की पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ़

शंका और सन्देह: प्राचीन सिद्धियां १६ खण्डों में ही छपी हैं। बाजार में प्रचलित कम पृष्ठों की तथा कम खण्डों में अधूरी सिद्धियां न खरीदें वरना साधक को लाभ की बजाय हानि हो सकती है।

अघोर विद्या सिद्धि पृष्ठ 168
तन्त्र शास्त्रोक्त, शव-साधन, श्मशान-साधन, वीर साधन, मुण्ड-साधन, अघोर साधन आदि करने का विस्तृत वर्णन।

तांत्रिक साधन विधि पृष्ठ 272
तांत्रिक-साधनों की सफलता के लिए प्रत्येक विधि का विस्तृत वर्णन।

यक्षिणी भैरव सिद्धि पृष्ठ 204
यक्षिणी, भैरव, नागिनी, नायिका, भूतिनी, योगिनी तथा महामाया आदि को वश में कर लेने की विधियां व मंत्र।

मोहिनी विद्या सिद्धि पृष्ठ 152
इस पुस्तक में मैस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म की सपूर्ण विद्या समझाकर दी गई है।

यन्त्र सिद्धि
मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, संकटनाश आदि के ४०० यंत्रों का सचित्र वर्णन। पृष्ठ 264

अष्ट सिद्धि पृष्ठ 240
मंजुघोष, प्रचण्ड चण्डिका, धनदा, घोरेश्वरी, ब्रह्म मन्त्र तथा षोडसी-विद्या, श्यामा, मातंगी अष्ट सिद्धियों का वर्णन।

बंगला तंत्र मंत्र सिद्धि पृष्ठ 128
बंगला देश में प्रचलित जादू विद्या, मंत्र-तंत्र आदि का विस्तृत वर्णन। सैकड़ों आश्चर्यजनक करिश्मों की जानकारी।

मन्त्र सिद्धि पृष्ठ 264
मंत्र शक्ति से रोग, विपत्ति निवारण व मन्त्र शक्ति से कामना सिद्धि के विधान, प्राचीन मंत्रों का बड़ा संग्रह।

कामाख्या सिद्धि पृष्ठ 126
यह पुस्तक सब तन्त्र ग्रथों का निचोड़ है। प्रत्येक साधन की विधियां विस्तार के साथ समझाकर दी गई हैं।

छाया पुरुष (हमजाद) सिद्धि
इस सिद्धि द्वारा छाया पुरुष को देख कर उस प्राणी के बारे में सही भविष्यवाणी करने की अनेक विधियां।

तन्त्र सिद्धि पृष्ठ 160
751 ऐसे तंत्र दिए गए हैं जो अद्भुत चमत्कार दिखाते हैं। रोगों को ठीक करने के तंत्र तथा सैकड़ों टोने-टोटके।

देवी-देवता सिद्धि पृष्ठ 208
इस पुस्तक में सभी देवी-देवताओं के मंत्र और उनकी सिद्धि का वर्णन है।

मनोकामना सिद्धि
यह पुस्तक सब तन्त्र ग्रन्थों का निचोड़ है। प्रत्येक साधन की विधियां विस्तार सहित दी गई हैं। पृष्ठ 264

वशीकरण सिद्धि पृष्ठ 192
राजा, अधिकारी, पत्नी, पुत्र, प्रेमी-प्रेमिका अथवा किसी भी स्त्री-पुरुष को वश में करने की सैकड़ों विधियां।

भूत-प्रेत-पिशाच सिद्धि पृष्ठ 136
भूत, प्रेत, पिशाच, भूतनी, डाकिनी आदि को सिद्ध करने वाले भूत-प्रेतादि निवारक यन्त्र-मन्त्र।

दक्षिणी देश के अद्भुत चमत्कार
विभिन्न प्रकार के तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, हाथ की सफाई तथा अन्य आश्चर्यजनक खेल-तमाशों के रहस्य का संकलन।



वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का एक मात्र सबसे बड़ा पुस्तक भण्डार

हिन्द पुस्तक भण्डार खारी बावली, दिल्ली

फोन: 529314. 265403. 264191

बिना गुरु के घर बैठे डाक्टर बनिये



साधारण हिन्दी पढ़े-लिखे व्यक्ति को वैद्यक सिखाने वाला ग्रन्थ

आधुनिक आयुर्वेद गाइड

लेखक—पं॰ अमोलचन्द्र शुक्ल

- जो वैद्य-हकीमों के अतिरिक्त सामान्य गृहस्थ स्त्री-पुरुषों के लिए भी समान उपयोगी।
- शरीर विज्ञान, रोग निदान एवं चिकित्सा तथाऔषध-निर्माण की शास्त्रीय विधियाँ।
- माधव निदान, भाव प्रकाश, चरक संहिता, भैषज्य रत्नावली, अमृत सागर, शारंगधर संहिता तथा निघण्टु आदि विख्यात ग्रन्थों का निचोड़ सरल हिन्दी भाषा में एकमात्र इसी ग्रन्थ में एक साथ उपलब्ध।
- स्त्री-पुरुषों, बच्चों के विविध रोगों के लिए आयुर्वेद के अचूक रामबाण योगों का चुनीदा संग्रह।
- कभी असफल न होने वाली आयुर्वेद की मशहूर गोलियाँ, चूर्ण, रस, पाक क्वाथ, तैल तथा भस्म आदि के चुने हुए योग व उसकी निर्माण-विधि।
- और साथ ही वर्तमान युग की औषध-निर्माण की नई-नई मशीनों तथा विधियों का भी सचित्र विवरण जैसे–टैब्लेट्स, कैपसूल्स, पाउडर आदि बनाना व शुगरकोटिंग करना।
- आयुर्वेद के प्राचीन शास्त्रीय ज्ञान का सरल हिन्दी भाषा के माध्यम से घर-घर में प्रचार और प्रसार करने वाला एक अनन्य सर्वोपयोगी प्रकाशन। स्क्रीन प्रिन्टेड सुन्दर कपड़े की जिल्द।

पृष्ठ : 752 मूल्य : 30/ तीस रुपये डाक-खर्च माफ

डॉ॰ हरनारायण कोकचा की लेटैस्ट पुस्तक अपटूडेट एलोपैथिक

इंजेक्शन बुक

जिसमें इंजेक्शन लगाने की सभी विधियाँ तथा विविध मशहूर कम्पनियों द्वारा निर्मित विविध रोगों के लिए लेटैस्ट इंजेक्शनों की जानकारी दी गई है। साथ ही विटामिन इंजेक्शन, मिल्क इंजेक्शन, वैक्सीनों तथा सीरमों आदि का भी विस्तार सहित वर्णन है। इंजेक्शन चिकित्सा प्रणाली पर इतनी अपटूडेट पुस्तक अन्यत्र दुर्लभ है। पृष्ठ सं॰ 384, मूल्य 12/- रुपये, डाकखर्च पृथक्।

फलों व सब्ज़ियों द्वारा चिकित्सा

(घरेलू दवाइयां)



हजारों वर्षों के अध्ययन और अनुभव से हमारे आचार्यों ने यह खोज की है कि प्रकृति-जन्य फल और सब्जियाँ न केवल पोषक तत्वों के ही स्रोत हैं, वरन् विशिष्ट ढंग और अनुपात सहित प्रयोग किए जाने पर इनसे प्रायः सभी रोगों की सफल चिकित्सा भी की जा सकती है। इस पुस्तक में इन्हीं चिकित्सकीय रहस्यों व प्रयोगों का वर्णन है। पृष्ठ 192, मूल्य 8/25 रुपये, डाकखर्च पृथक्।

संन्यासियों की गुप्त बूटियाँ

लेखक—रामनारायण वैद्य

इसमें आसानी से मिलने वाली ऐसी असंख्य जड़ी-बूटियों के गुप्त भेद हैं जिनके बल पर संन्यासियों की धाक जमी है। बांझ को पुत्र देने, सात दिन में नपुंसकता दूर करने, दमा, मधुमेह, ब्लड प्रैशर का अचूक जड़ी-बूटी द्वारा इलाज, गुप्त रोगों की चिकित्सा आदि का इसमें विस्तृत वर्णन है तथा साथ ही प्रत्येक जड़ी-बूटी का चित्र, पहचान, गुण आदि भी दिए गए हैं। पृष्ठ 490, चित्र 200, मूल्य 15/- रुपये, डाकखर्च अलग।



बगैर आपरेशन, औषधि या चश्मे के नेत्र ज्योति बढ़ाइये चश्मा उतारिये

यदि आपकी आंखें कमजोर या रोगी हैं तो नेत्र विशेषज्ञ डा॰ एम॰ एस॰ अग्रवाल द्वारा लिखित व केन्द्रीय मन्त्री श्री जगजीवनराम द्वारा प्रशंसित "हमारी आंखें" पुस्तक पढ़े जिसमें चश्मा उतारने व नम्बर कम करने की हानि-रहित विधि दी गई है। इस विधि द्वारा जो अमेरिका के डा॰ बेट्स के सिद्धान्त पर आधारित है, दूर व पास की दृष्टि, एस्टिगमेटिज्म, भेंगापन व नेत्र के अन्य रोग दूर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त मोतिया-बिंद, फूला, नीला मोतिया, रतौंधी आदि रोगों की औषध, योगासन व अन्य साधनों द्वारा चिकित्सा दी गई है। मूल्यः 10/- डाकखर्च सहित

नाड़ी ज्ञान तरंगिणी

(लेखक–रघुनाथप्रसाद सुकुल)

जिस वैद्य हकीम या डाक्टर को नाड़ी देखने का ज्ञान और अनुभव नहीं वह सफल चिकित्सक नहीं बन सकता। नाड़ी की गति देखकर रोगी के रोग और दशा का निश्चित ज्ञान हो जाता है। यह पुस्तक नाड़ी-ज्ञान से सम्बन्धित प्रत्येक विषय पर प्रामाणिक ज्ञान प्रदान करेगी। मूल्य 6/-रु॰, डाकखर्च अलग।

प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार

डॉ॰ युगलकिशोर चौधरी, एम॰ डी॰ ने हजारों-लोगों को कठिन रोगों से जैसे–दमा, लकवा, बादी, पेट के रोग, सिर दर्द, मोटापा, बुढ़ापा, नेत्र रोग, कमजोरी, पेचिश आदि रोगों से छुटकारा दिला दिया। यह चिकित्सा, दुग्ध व फल चिकित्सा, व्यायाम, उपवास, जल एवं मिट्टी चिकित्सा आदि पर आधारित है। पृष्ठ 400 मू. 12/- रु., डाकखर्च अलग।

सूर्य किरण चिकित्सा

यदि राजेश दीक्षित की लिखी यह पुस्तक आपके पास है, तो केवल सूर्य किरणों के चमत्कारी प्रभाव से तैयार किए पानी, तेल, घृत, मिट्टी, व धूप द्वारा ही आप असाध्य रोगों की चिकित्सा कर सकते हैं। मूल्य 4/50 रुपये, डाकखर्च पृथक।

स्वमूत्र चिकित्सा

मनुष्य का स्वमूत्र विविध विधियों से प्रयोग किए जाने पर उसके शरीर के किसी भी रोग को जड़ से उखाड़ फेंकने में सक्षम है यह तथ्य आयुर्वेद के अलावा अब इंगलैण्ड व अमेरिका के वैज्ञानिकों ने वर्षों के प्रयोग व परीक्षणों द्वारा सिद्ध कर दिया है। आज ही यह पुस्तक मंगाकर इस चमत्कारी खोज से लाभ उठाइए। मू. 4/50 रु., पोस्टेज अलग।

घर का वैद्य (बड़ा)

अमोलचन्द्र शुक्ल

पुस्तक क्या है? वैद्य-हकीमों और बड़-बूढ़ों के दीर्घ अनुभव सिद्ध अचूक चुटकुलों का खजाना है। अगर यह पुस्तक घर में है तो न किसी वैद्य-डाक्टर की आवश्यकता, न किसी औषधि या इंजेक्शन की। घरेलू उपयोग की साधारण वस्तुओं तथा जड़ी-बूटियों से ही छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े रोग का स्वयं इलाज करें। मूल्य 16/50, डाकखर्च पृथक्।



वी॰पी॰पी॰ द्वारा मंगाने का एक मात्र सबसे बड़ा पुस्तक भण्डार

हिन्द पुस्तक भण्डार खारी बावली, दिल्ली

फोन: 529314. 265403. 264191

500-5000 रुपये माहवार कैसे कमायें

सोप मेकर्स गाइड

ले०—सुरेशचन्द्र सहगल
पृ० 392 मू० 15/-

सनलाइट, लक्स, हमाम टाइप साबुन, टर्किश बाथ सोप, सन्तरे का साबुन, पाम-आलिव, बिनोलिया सोप, न्यूट्रल, कस्तूरी सोप, मेडिकेटिड सोप, शेविंग सोप्स व क्रीम, पारदर्शक सोप, वाशिंग पाउडर व कई प्रकार के शैम्पू, लिक्विड सोप, नरोल टाइप सोप आदि। साथ-साथ पच्चीस प्रकार के क्लीनिंग व ब्लीचिंग पाउडर बनाने की सचित्र टैक्निकल जानकारी।



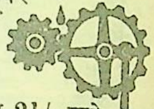
डिटरजैन्ट पाउडर, केक व एसिड स्लरी इण्डस्ट्री

ले०-आर. के. गुप्त, एस.बी. श्रीवास्तव
पृ. 208 मू० 25/50

हिन्दी की इस महान पुस्तक में बहुत थोड़ी पूंजी लगा कर सर्फ, मैजिक, विम टाइप पाउडर, डिटरजैन्ट केक, एसिड स्लरी, नील व फिनाइल आदि बनाने की पूरी टैक्निकल जानकारी, फारमूले तथा कच्चा माल व मशीनें मिलने के पते आदि दिये गये हैं। इस पुस्तक की सहायता से किफायत के साथ डिटरजैन्ट पाउडर, लिक्विड केक व एसिड स्लरी का उत्पादन कर सकते हैं।

लुब्रीकेटिंग आयल, ग्रीज़ व मोबलआयल रिफ़ाइनिंग इण्डस्ट्री

ले०-आर. के. गोयल, कैमिकल इन्जीनियर



हिन्दी की पहली प्रामाणिक पुस्तक जिसमें सभी प्रकार की ग्रीस, लुब्रीकेटिंग आयल, कटिंग आयल, पेट्रोलियम जैली, व्हाइट आयल बनाने व डीजल आयल जे०बी०ओ०, जले हुए मोबिल आयल व इन्जन आयल को दुबारा रिफाइन करने के आजमाये हुए तरीके स्माल स्केल पर छोटी मशीनों की मदद से दिये गए हैं। कच्चा माल व मशीन मिलने के पते भी हैं। मूल्य 21/- रुपये

स्माल स्केल प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज

लै०-आर.के. गोयल, कैमीकल इन्जीनियर

राष्ट्रभाषा में पहली प्रामाणिक पुस्तक जिसमें सभी प्रकार के प्लास्टिक्स का विस्तृत वर्णन, कौन से प्लास्टिक्स से क्या बनाएं, सभी प्रकार की मोल्डिंग, एक्सट्रूडर मशीनों की सचित्र जानकारी दी है। पी० वी० सी० फिल्म, पाइप, जूते, केबल, चप्पल, बोरे, खिलौने व प्लास्टिक के अन्य आइटम जैसे बाल्टी, बिजली का सामान, टेप, इण्डस्ट्रियल गुड्स, बटन, मोल्डिंग पाउडर, रेज़िन, फोम लेदर व अन्य सैंकड़ों वस्तुएं बनाने के फारमूले आदि की जानकारी दी गई है। कच्चा माल व मशीनें मिलने के पते। पृ० 224 मूल्य 21/-

इलैक्ट्रिक गुड्स मैनुफैक्चरिंग

ले०-एस०के० जैन

कण्ड्यूट पाइप, बल्ब, फिटिंग का सामान केसिंग-बोर्ड-बैटिन-राउण्ड ब्लाक आदि, बैकेलाइट के स्विच-प्लग-होल्डर-प्लग स्विच कम्बाइण्ड, VIR, CTS, PVC सभी प्रकार के केबिलों, एडहेसिव टेप, इलै० प्रेस आदि बनाने की सम्पूर्ण टैक्निकल जानकारी कच्चा माल व मशीन मिलने के पते आदि। इस पुस्तक में दिये गये निर्देशों व विधियों द्वारा इलैक्ट्रिकल सामान की कोई भी इण्डस्ट्री खोली जा सकती है। बेरोजगारी दूर करने व धनवान बनने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। मू० 18/- रुपये।

धूप-अगरबत्ती व परफ्यूमरी इण्डस्ट्री

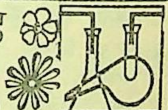
ले०-एस० सी० दूबे



विदेशों में लोकप्रिय उन अगरबत्तों, धूपबत्ती एव हवन सामग्रियों के फारमूले व बनाने की सम्पूर्ण टैक्निकल जानकारी जिनसे हजारों व्यक्ति एक्सपोर्ट करके लखपति बन गए हैं। थोड़ी पूंजी से शुरू होने वाला यह एक लाभदायक उद्योग धंधा है। सुगन्धित धूप, अगरबत्ती व हवन सामग्री तथा मच्छर भगाने की अगरबत्ती पर विशेष जानकारी। अपटूडेट टैक्निकल जानकारी देने वाली प्रामाणिक पुस्तक, परफ्यूमरी, सेण्ट आदि के बीसियों फारमूले पृ० 152, मूल्य 12/- रुपये।

माडर्न कास्मैटिक्स, परफ्यूम्स एण्ड एसैन्सेज़ इण्डस्ट्री

ले०-आर. के. गुप्ता
पृ० 336, मू० 25/50



फेस व टैलकम पाउडर; कोल्ड, वैनिशिंग, ब्लीचिंग, क्लीनजिंग व हारमोन क्रीमें; शैम्पू, शेविंग क्रीमें; प्रिशेव एवं आफ्टरशेव क्रीमें व लोशन; नेल पालिश, रूज, लिपस्टिक, ब्यूटी मिल्क; टूथ पेस्ट व टूथ पाउडर; आई-ब्रो पेंसिलें; केश-वर्धक तेल, हेयर डाईज़ व फिक्सर तथा विभिन्न परफ्यूम्स और एसैन्सेस स्माल स्केल पर बनाने की सम्पूर्ण टैक्निकल जानकारी। सैकड़ों फारमूले, कच्चा माल व मशीनें मिलने के पूरे पते।

गम एण्ड एडहेसिव इण्डस्ट्री

इस पुस्तक की मदद से प्रेशर-सेन्सिटिव टेप; रबड़ तथा लेटेक्स-युक्त एडहेसिव; कागज, ग्लास, धातु, प्लास्टिक, रबड़, लकड़ी आदि को एक-दूसरे से जोड़ने वाले एडहेसिव; आफिस-पेस्ट; बुक बाइंडिंग गम; चमड़ा व जूता उद्योग तथा कपड़ों के अनेक एडहेसिव; फोटो पेस्ट, टिस्को टाइप टेप; फेविकोल तथा मोविकोल टाइप एडहेसिव; टायर-ट्यूब, प्लाइवुड के बढ़िया सोल्यूशन; विनियर कारयूगेटेड (नालीदार) पेपर बोर्ड तथा उनके डब्बे के गम; घरेलू गोंद; सरेस आदि नाना प्रकार के गम और एडिहेसिव तैयार करने की टैक्निकल जानकारी। सैकड़ों दुर्लभ फारमूले। तैयार माल बेचने की तरकीबें, उपयोगी डायरेक्ट्री सैक्शन। कच्चा माल, मशीनें आदि मिलने के पते।

ले० -आर०के० गोयल मू० 21.00

पेंट, पिगमेंट, वार्निश एण्ड लैकर्स इण्डस्ट्री

पिगमेंट्स, ड्राइंग आयल्स व ड्रायर्स, रेजिनें, साल्वेंन्ट्स और प्लास्टिसाइजर्स, बिटुमेन, मोम और गोंद, वार्निशें, सैकड़ों प्रकार के पेण्ट्स, लैकर्स, इमलशन पेन्ट्स तथा डिस्टैम्पर्स व स्नोसम टाइप वाटर एण्ड सीमेंट पेन्ट्स की स्माल स्केल पर बनाने की सम्पूर्ण टैक्निकल जानकारी। कच्चा माल व मशीनें मिलने के पते आदि।
ले०-बाबूलाल अग्रवाल



पृ० 240, डिमाई साइज, मूल्य 21/- रुपये

राइटिंग एण्ड प्रिंटिंग इंक इण्डस्ट्री

ले०-आर.के. गुप्त व चन्द्रभान सहगल

विभिन्न रासायनिक पदार्थों द्वारा राइटिंग इंक, बाल प्वाइंट पैन इंक, स्टाम्प पैड इंक, हैक्टोग्राफ इंक, इंक पाउडर्स तथा इंक टैब्लेट्स इत्यादि बनाने की आधुनिक विधियां। उपयोगी डायरेक्ट्री सैक्शन। मू. 18/-

सुगन्धित सुपारियां व पान-मसाले 8/25

सुगन्धित तम्बाकू व ज़र्दा-किमाम 12/-

हमारी प्रकाशित 25/- रु० की पुस्तकें मंगाने पर डाक खर्च माफ



वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का एक मात्र सबसे बड़ा पुस्तक भण्डार

हिन्द पुस्तक भण्डार खारी बावली, दिल्ली-6

फोन: 529314. 265403. 264191

आपके भाग्य का सूर्य कब उदय होगा ?

व्यापार में लाभ, सर्विस में तरक्की, मन की शान्ति एवं कष्टों का कब अन्त है ? यह सब आपके हाथ पर स्पष्ट अंकित है। आप खुद अपने हाथ की रेखाओं को पढ़कर अपने भाग्य का निर्णय बड़े ही सरल तरीके से कर सकते हैं। किसी ज्योतिषी अथवा पंडित के पास जाने की आवश्यकता नहीं।

हस्त रेखाएँ पढ़कर भाग्य का हाल बताने का सरल तरीका सिर्फ १५ दिन में ही सीखिये और अपने व अपने मित्रों के हाथ देखकर भाग्य का हाल बताएं। नीचे दी गई १२ अनूठी पुस्तकें हस्त रेखा विज्ञान के जन्मदाता कीरो, सेन्ट जर्मन, बेन्हम के विख्यात ग्रन्थों व संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों पर आधारित हैं। हिन्दी में इन पुस्तकों के लेखक हैं प्रसिद्ध ज्योतिषी व भविष्यवक्ता श्री राजेश दीक्षित। कोई सी भी एक पुस्तक मंगाकर पढ़ें यदि संतुष्ट हों तो फिर बाकी मंगाएं—



आपका हाथ मूल्य 15/-
हथेली की रेखाओं के साथ-साथ हाथ, अंगूठा, उंगलियां, नाखून, हथेली की बनावट व ग्रहों के पर्वत देखकर 108 चित्रों में चरित्र, स्वभाव व अन्य अपनी भविष्य-वाणियां पढ़ें।

भाग्य रेखा मूल्य 8/25
आपके भाग्य में क्या लिखा है, किस कार्य में लाभ होगा, कर्ज से छुटकारा कब मिलेगा आदि धन सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर भाग्य रेखा में पढ़िये। 227 प्रकार के हस्त चित्रों द्वारा अपना भाग्य जानें।

हृदय रेखा मूल्य 8/25
आपकी पत्नी से निभेगी या नहीं, पत्नी कैसी मिलेगी, प्रेम में सफल होंगे या नहीं, दिल की बीमारी तो नहीं होगी आदि विषयों की जानकारी। हाथ 255 चित्रों द्वारा आपके भाग्य का निर्णय।

सूर्य रेखा (यश रेखा) मूल्य 8/25
यह रेखा जिसके हाथ में होती है भाग्य में चार चाँद लगा देती है। आपको सफलता, बड़ाई या यश प्राप्त होगा या नहीं, यह जानने के लिए सूर्य रेखा मंगाएं।

विवाह रेखा (प्रणय रेखा) मू० 8/25
आपका विवाह होगा या नहीं, विवाहित जीवन सुखी होगा या नहीं ? यह ज्ञान चित्रों द्वारा सरल भाषा में सीखें और सगे सम्बन्धियों का हाथ देखकर भविष्य-वाणियां करें और वाहवाही लूटें।

स्वास्थ्य रेखा मूल्य 8/25
बीमारी कब ठीक होगी, बीमारी व आर्थिक कठिनाइयों व दुखों से छुटकारा कब होगा। 357 प्रकार के हाथों का वर्णन जिनसे स्वास्थ्य सम्बन्धी सैकड़ों भविष्य-वाणियां कर सकते हैं।

मस्तक रेखा मूल्य 8/25
आपकी शिक्षा कितनी होगी, आप किस क्षेत्र में उन्नति करेंगे। इसका ज्ञान आपको 293 चित्रों में व 188 पृष्ठों में चित्ताकर्षक ढंग से समझाया गया है।

जीवन रेखा मूल्य 8/25
यह रेखा बीमारी, दुर्घटना व आयु की भविष्यवाणी करती है। सही मार्ग-दर्शन के लिए 'जीवन रेखा' पुस्तक, 315 चित्रों के सहित, मंगाकर पढ़ें।

स्त्री सामुद्रिक मूल्य 15/-
स्त्रियां अपना भविष्य जानने के लिए बहुत लालायित रहती हैं तथा ज्योतिषी लोग उनके हाथ देखकर भविष्य बताकर बहुत रुपया कमा सकते हैं। हिन्दी में पहली बार छपी 'स्त्री सामुद्रिक' पुस्तक में 415 चित्रों द्वारा इस गूढ़तम विषय को बहुत सरल व रोचक प्रकार से समझाया गया है। स्त्री के विभिन्न प्रकार के भेद तथा स्त्री-पुरुष दोनों के चमत्कारपूर्ण फलादेश भी इस पुस्तक में पढ़ें।

३००० पुस्तकों का सूचीपत्र

शरीर लक्षण विज्ञान मूल्य 15/-
शरीर के विभिन्न अंगों पर पाये जाने वाले तिल, मस्से, लहसन, ललाट की रेखाएं तथा शरीर के अन्य अंग आपके व्यापार, भाग्योदय, उमर, स्वभाव आदि की सही व अद्भुत भविष्यवाणियां करते हैं। यह सब जानने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। पृष्ठ 428, चित्र 31

हस्त चिह्न विचार मूल्य 15/-
त्रिभुज, चतुर्भुज, क्रास, बिन्दु, द्वीप, कोण, जल, वृत, नक्षत्र वर्ग, पशु-पक्षी, नदी, तालाब आदि चिह्न जिस रेखा के आस-पास होते हैं बड़ी खतरनाक या शुभ भविष्यवाणियां करते हैं। भाषा-शैली सरल, 755 चित्र, पृष्ठ 368।

प्रभाव रेखाएं मूल्य 15/-
हथेली पर, मुख्य रेखाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य 'प्रभाव रेखाएं जैसे मंगल, बृहस्पति मुद्रिका, शनि, सूर्य शुक्र, यात्रा, मणिबन्ध, आकस्मिक रेखाएं पाई जाती हैं, जो महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी करती हैं। 757 चित्रों में रोचक भाषा में छपी सैकड़ों भविष्यवाणियाँ।

पूरे १२



वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का एक मात्र सबसे ब



हिन्द पुस्तक

...कों पत्रव्याख्यिणी॥